ज्ञानमण्डल-ग्रन्थमाला का ८५वाँ ग्रन्थ

कुमाऊँ

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

वाराणसी
ज्ञानमण्डल लिमिटेड

मूल्य : १५)

श्रावणी, संवत् २०१५

(c) ज्ञानमण्डल लिमिटेड, कबीरचौरा, वाराणसी

प्रकाशक—ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (बनारस) १

मुद्रक—ओमप्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (बनारस) ५१००(क)–१३

प्रकाशकीय

अनन्तकालसे जिस पर्वतराज हिमालयकी शोभा लोगोंका मन मोहती आ रही है तथा प्रतिवर्ष हजारोंकी संख्यामें देश-विदेशके पर्यटक यात्रा करते हैं, उसी हिमालयका एक भव्य भाग कुमाऊँ-अंचल है, जो एक तरफ भारतसे लगा है और दूसरी ओर तिब्बत और चीनसे। भारतवर्षके लिए इस भागका जितना साम्पत्तिक और प्राकृतिक दृष्टिसे महत्त्व है, उससे कहीं अधिक सांस्कृतिक दृष्टिसे। रामायण-महाभारत तथा अन्य पुराणोंमें वर्णित किन्नर, किरात, नाग, खस आदि अनेक प्रागैतिहासिक जातियोंका इस स्थानसे घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है: किसी जमानेमें खसों, नागोंका तो पूरे प्रदेशपर एकाधिपत्य रहा है। शतियोंतक शासन करनेवाली इन जातियोंकी सभ्यता और संस्कृतिका प्रभाव समस्त पहाड़ी अंचलपर पड़ा, और वह आज भी वहाँके जनजीवनमें किसी-न-किसी रूपमें लक्षित है।

किन्तु दुःखकी बात है कि इस पहाड़ी अंचलके सम्बन्धमें हमारी जानकारी नहींके बराबर है। वस्तुतः हिन्दीमें अभीतक कोई ऐसी पुस्तक नहीं थी जो प्रामाणिक रूपसे इस सम्बन्धमें कुछ बता सकती यद्यपि यह अभाव उपेक्षणीय नहीं था। अवश्य ही अँगरेजी शासन-कालमें कतिपय अँगरेज लेखकोंने कुमाऊँपर भी लिखा, पर हिन्दी पाठकोंके लिए वह किस कामका हो सकता था।

हर्षकी बात है कि त्रिपिटकाचार्य महापण्डित राहुल सांकृत्यायनने प्रस्तुत ग्रन्थ कुमाऊँ लिखकर हिन्दीमें इस अभावको दूर किया। इस एक ही पुस्तकसे जिज्ञासु पाठकोंको समस्त ज्ञातव्य सामग्री मिल जायगी। विद्वान् लेखकने सम्पूर्ण कुमाऊँ-अंचलका खोजपूर्ण प्रामाणिक इतिहास देनेके साथ ही सैलानियोंकी सुविधाके लिए यात्रा सम्बन्धी आवश्यक विवरण भी दे दिया है। कितने दर्शनीय स्थान हैं, पड़ाव कहाँ-कहाँ है, उन पड़ावोंपर दूकानें आदि हैं या नहीं; यदि नहीं हैं तो वहाँ भोजनादिकी क्या व्यवस्था हो सकती है, किस जगह जानेके लिए कौन-सा मार्ग सरल हो सकता है, यात्रारम्भसे यात्रान्ततक क्या सुविधाएँ या असुविधाएँ उत्पन्न हो सकती हैं और उनके लिए यात्रियोंको क्या करना चाहिये आदि सारी महत्त्वपूर्ण बातोंका उल्लेख कर दिया है। पुस्तकमें आवश्यक चित्र भी दे दिये गये हैं। आशा है कि हिन्दी जगत् इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थका समुचित आदर करेगा।

—प्रकाशक

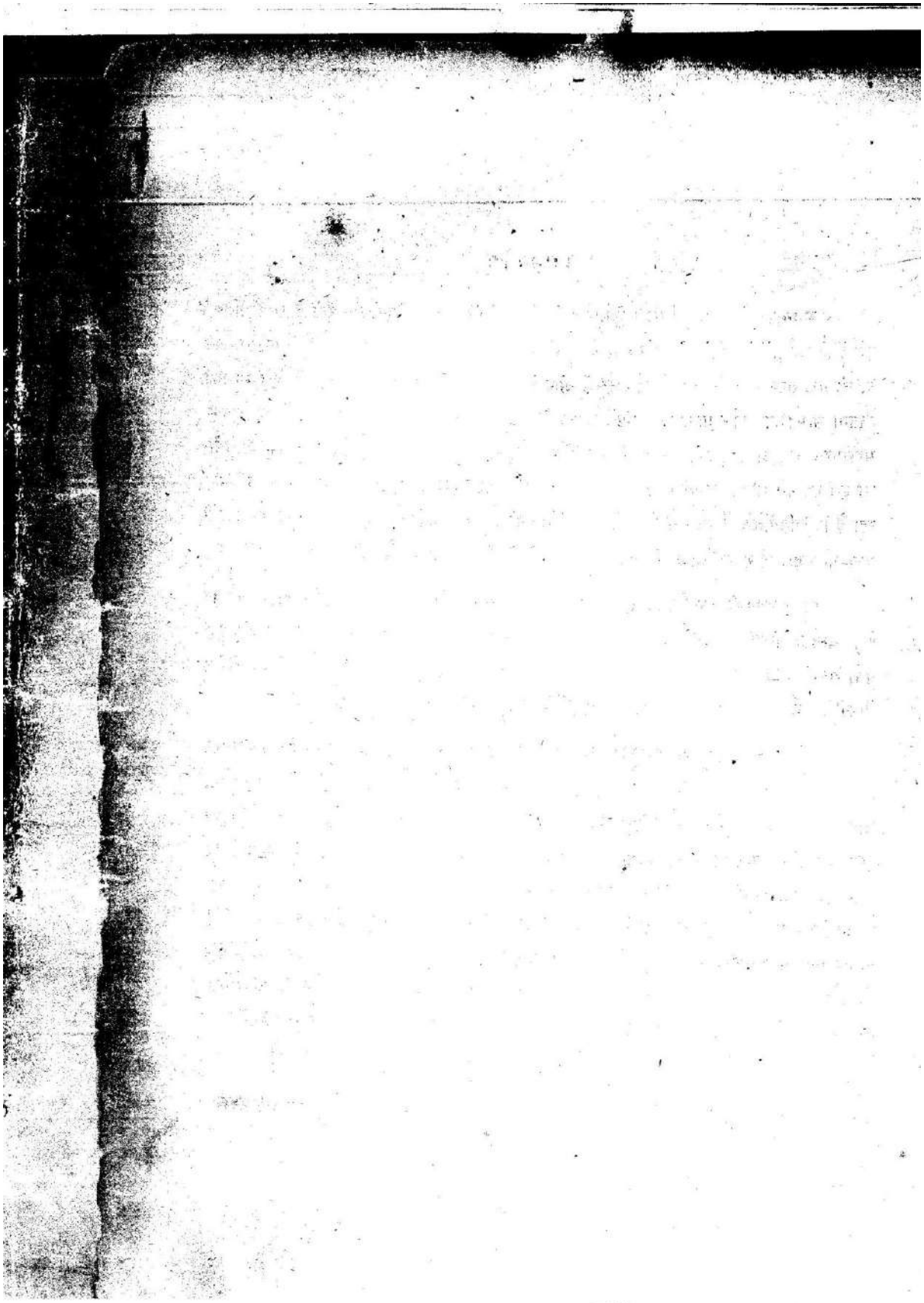

विषय-सूची

अलमोड़ा

पृष्ठ

अध्याय १—प्राकृतिक रूप ... ...

मध्य-हिमाचल १

अलमोड़ा जिला, गंगाकाली-प्रदेश, पर्वत और शिखर, नदियाँ, भूतत्त्व और खानिज, ऋतुएँ, जंगल, प्राणिजगत्,

अध्याय २—इतिहास ... ...

प्रागैतिहासिक काल २०

किन्नर किराल, खस, वैदिक आर्य,

आरम्भिक इतिहास ३२

शक, हूण, हर्षवर्धनकाल, तिब्बती शासन,

कत्यूरी वंश ३६

कत्यूरी समस्या, कत्यूरी प्रताप, कत्यूरी वंशका उद्गम, हिमाचल बौद्धसे ब्राह्मणधर्मी, कत्यूरी वंशावली, अन्तिम दिन

बहुराजकता ६०

अशोकचक्र, क्राचल्लदेव, वैजनाथ (कत्यूर)के राजा, द्वाराहाट राज्य, डोटीराज्य, सीराराज्य, सोरके राजा अस्कोटके रजवार, गंगोलीके राजा, फल्दाकोट राज्य

चन्द्रवंश ७६

प्रारम्भ, चन्दोंका उत्कर्ष, चन्दोंका अपकर्ष,

चन्दोंका अन्त, गोरखा-शासन ९७

गोरखावंशकी स्थापना, राज्यविस्तार, विजय-यात्रा कुमाऊँ विजय, गोरखा-अंग्रेज-युद्ध

अंग्रेजी-शासन १२५

अंग्रेज-शासक, राष्ट्रीयताकी लहर, शासन-विभाग

अध्याय ३—भोटान्त १३२

भोटान्त प्रदेश, व्यवसाय, प्रवास-निवास भोटान्तिक (मोन्-पा) रीति-रिवाज, जातियाँ, तिब्बतके साथ व्यापार और कर, व्यापारिक मेले, तिब्बतकी व्यापार-यात्रा, भोटान्तकी स्त्रियाँ,

अध्याय ४—निवासी १४९

लोग, भाषा, जातियाँ, धर्म-त्यौहार,

अध्याय ५—आजीविका १८१

कृषि, शिल्प-उद्योग, व्यापार, पशुपालन

अध्याय ६—यातायात १९१
रेल, सड़कें, डाकबँगले, डाक-तारघर
अध्याय ७—स्वास्थ्य और शिक्षा १९६
स्वास्थ्य, शिक्षा (स्कूल, वाचनालय आदि)
अध्याय ८—प्रसिद्ध ग्राम-नगर २२५
अलमोड़ा (नगरपालिका, आय-व्यय, जनसंख्या आदि), यातायात, अस्कोट, ऊँटाधुरा, कपकोट, गंगोलीहाट, गणाई, चम्पावत, जागेश्वर, दूनागिरि, पिठौरागढ़, रानीखेत आदि

नैनीताल

अध्याय ९—प्राकृतिक रूप २३९
सीमा और क्षेत्रफल, प्राकृतिक विभाग, पर्वतश्रेणियाँ, जलाशय, खनिज, ऋतु आदि, जंगल, प्राणिजगत्,
अध्याय १०—शासन-प्रबन्ध २५०
रुहेला-आक्रमण, विभाजन, स्थानीय शासन (आय-व्यय आदि)
अध्याय ११—निवासी २५६
जनसंख्या, भाषा, जातियाँ, धर्म
अध्याय १२—आजीविका २६०
कृषि, बागवानी, उद्योग, व्यापार,
अध्याय १३—यातायात २६४
रेल, सड़कें, घाट, डाकबँगले, डाकखाने
अध्याय १४—शिक्षा २६८
प्राइमरी, मिडिल स्कूल आदि
अध्याय १५—प्रसिद्ध ग्राम-नगर २७३
आगरपट्टी, बाजपुर, उज्जैन, काठगोदाम, नैनीताल, पर्वतपात, ताल, शिखर, यात्रा, ठहरनेके स्थान, खुरपाताल, भवाली
परिशिष्ट १—यात्राओंकी तैयारी २९७
यात्रा-माहात्म्य, यात्रा, नौकर, सवारी, परिधान, आवश्यक वस्तु, यात्रामें, कलाकी वस्तुएँ, फोटोग्राफी
परिशिष्ट २—यात्राएँ ३०६
मानसरोवर-यात्रा, अलमोड़ासे अन्य यात्राएँ
परिशिष्ट ३—कत्यूरी-भूमिकी यात्राएँ ३३१
अलमोड़ा, बैजनाथ, बागेश्वर, द्वाराहाट
परिशिष्ट ४—जनसाहित्य ३४५
गद्य, पद्य
परिशिष्ट ५—सांस्कृतिक समझौता ३५६

अध्याय १

अलमोड़ा

प्राकृतिक रूप

मध्य-हिमाचल—

१. अलमोड़ा ज़िला—मानसरोवरसे लगा हिमालयका यह भाग भारतके लिए सांस्कृतिक, साम्पत्तिक और प्राकृतिक सौन्दर्यकी दृष्टिसे बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। आजकल यह कुमाऊँ कमिश्नरी (अलमोड़ा, नैनीताल, गढ़वाल, टिहरी) और मेरठ कमिश्नरीके देहरादून जिलेमें बँटा है—टिहरी पहिले रियासत थी, किन्तु अब वह उत्तरप्रदेशका एक जिला है। हिमालयके इस भागके अलमोड़ा, गढ़वाल और टिहरी ही जैसे जिले हैं, जिनकी सीमा तिब्बत (चीन जनप्रजातन्त्र) से मिलती है।

मध्य-हिमाचलमें कुमाऊँ कमिश्नरीके चार जिले और देहरादून जिला, एवं उनके १०,४५८ गाँव तथा १८ नगर सम्मिलित हैं। इसका क्षेत्र-फल आदि निम्नप्रकार है—

जिला		क्षेत्र-फल (वर्गमील)	जनसंख्या (१९३१)	आय (रुपये) (१९३०)
कुमाऊँ	अलमोड़ा	५,९३०	५,८३,०००	२,६०,०००
	नैनीताल	२,६५८	२,७७,०००	५,८२,०००
गढ़वाल	गढ़वाल	५,६२९	५,३४,०००	२,४३,०००
	टिहरी	४,५१६	४,००,०००	६,१४,०००
	देहरादून	१,१९३	२,३०,०००	१,५७,०००
		१९,९२६	२०,२४,०००	१८,५६,०००

२. गंगाकाली-प्रदेश—यह प्रदेश उत्तर-अक्षांश २८°.४९ तथा ३०°.४९ और देशान्तर ७९°.२ तथा ८१°.३१ के बीचमें अवस्थित है। इसकी भूमि १,००० से २५,६६० (नन्दादेवी) फुट तक ऊँची है। इसके उत्तरमें तिब्बत, दक्षिणमें नैनीताल जिला, पूरबमें काली (शारदा) नदी पार नेपाल और पश्चिममें गढ़वाल जिला है। तराईका थोड़ासा भाग (तनकपुर–भाबर) पहिले इस जिलेमें था, जो सन् १९१० में नैनीतालमें मिला दिया गया और अब यह सारा जिला पहाड़के ऊपर है। जिलेका एक तिहाई भाग सनातन-हिमालयके भीतर पड़ता है। यहीं **नन्दाकोट** और **पंचचूली** के उन्नत हिमशिखर हैं। जिलेका क्षेत्रफल ५,३५५ वर्गमील था, (सन् १९२० के परिमापानुसार क्षेत्रफल ३४,३०,००० एकड़, गाँवके कागजोंके अनुसार ३४,२७,००० एकड़) जिलेमें ३०,६३,००० एकड़में पहाड़ और जंगल तथा २,९५,००० एकड़ ही कृषिकी भूमि थी।

३. पर्वत और शिखर—जिलेके उच्चतम शिखर तिब्बती सीमान्तके हिमाचलश्रेणीसे २० से ३० मील दक्षिणकी ओर हटकर अवस्थित हैं। ये एकबद्ध पंक्तिमें न होकर विशाल खड्डों द्वारा एक दूसरेसे पृथक् हैं। नन्दादेवीका मुख्य शिखर (२५,६६० फुट) तो गढ़वाल जिलेमें है, किन्तु

उसकी एक पूरबी चोटी (२४,३७९ फुट) दोनों जिलोंके सीमान्तपर है। सबसे पूर्ववाला शिखर **त्रिशूल** (२२,३६९ फुट) भी सीमान्तपर अवस्थित है, जिसे २१,००० फुट ऊँची एक पर्वतबाहु नन्दादेवीसे मिलाती है। इसी पर्वतबाहुसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर एक पर्वतश्रृंखला जाती है, जिसपर **पिंडारी-हिमानी** (२०,७४० फुट) और **नन्दाकोट** शिखर (२२,५३० फुट) हैं। नन्दादेवी पर्वतश्रृंखला उत्तरकी ओर **उंटाधुरा** (ऊँट-जोत) की ओर चली गयी है, जिसपर २१,७७२ तथा २२,९४० और २०,३४४ फुट ऊँचे शिखर हैं।

नन्दादेवी शिखरमालासे पूर्व **गोरी** और **धौली** नदियोंके बीच २२,६६१ फुट ऊँचा **पंचचूली** शिखर है। स्तूपाकार सुन्दर मुख्य शिखरके प्रत्येक कोनेपर उसी तरहके चार और हिमशिखर हैं, जिनकी उँचाई २०,७००-२०,७८३-२१,११४ और १९,९२३ फुट है। उत्तरकी ओर **ब्यांस** में **बुधी** के ऊपर २०,४५५ फुट ऊँचा **रिंगनाजोङ्** शिखर है।

तिब्बतको भारतसे पृथक् करनेवाली गिरिमाला १८,००० फुट ऊँची है। भारतसे तिब्बत (मानसरोवर) जानेके लिए कहीं भी १६,८०० फुट (लेपूलेख) से कमकी जोत नहीं पार करनी पड़ती; बल्कि अधिकांश तो १७,५०० फुट ऊँची हैं। इन जोतोंमें कुछ हैं—**वल-छा, शलशल, मढ़ी, तिङ्-जंग-ला** तथा **नीती-ला**।

शिखरोंकी उँचाई की तुलनाके लिए देखिये—

	फुट
चामोलुङ्-मा (एवरेस्ट)	२९,००२
के. २	२८,२५०
खङ्छेन्-जुंगा (कन्चनजंगा)	२८,१४६
मकलू	२७,७९०
टी. ४५	२६,८६७
धौलागिरि	२६,७९५
,,	२६,६५८
नंगा-पर्वत	२६,६२०

नैनीतालसे दिखाई देनेवाले हिमशिखरोंकी उँचाई और दूरी निम्नप्रकार है—

शिखर	उँचाई (फुट)	दूरी (मील)
नन्दादेवी LVIII	२५,६६१	
नन्दादेवी LIX	२५,५८७	
कामेत LXVII	२५,३७३	
नन्दादेवी LVII	२४,४१७	
त्रिशूल (पश्चिम) LXII	२३,३८२	
नम्पा	२३,३५२	
बदरीनाथ LXIX	२३,२१०	९३
त्रिशूल (पूर्व) LXI	२३,०९२	
केदारनाथ LXXII	२२,७९०	
पंचचूली	२२,६६१	
थर ला-सागर LXXIV	२२,६२८	८२९

थर-ला-सागर LXXIII	२२,५८२	
नन्दाकोट LVI	२२,५३८	
बदरीनाथ LXX	२२,५११	
बदरीनाथ LXXI	२२,३४७	
त्रिशूल (पूर्व)	२२,३४२	
जौली	२१,७८४	१०६
नीलकंठ LXVIII	२१,७१३	८२
नौलफू	२१,५८०	१८२
बन्दरपूँछ LXXVII	२०,७३१	२२
स्वर्गरोहिणी LXXIX	२०,४०५	
वास (श्रीकान्त) LXXVI	२०,१४९	
जमनोत्री LXXVIII	२०,९३८	

अल्मोड़ासे तिब्बत जानेकी जोतोंकी ऊँचाइयाँ निम्नप्रकार हैं—

	फुट		फुट
ट्रेल	१८,५५०	छलदू (किउगर)	१७,४००
जयन्ती	१८,४००	लेलोंङ्	१७,४००
खङ्-री-बिङ्-री	१८,०५०	क्याङ्-गुर	१६,८००
मङ्-शङ्	१८,०५०	टिङ्कर-लिपू	१६,८००
चिरचुन (पूर्व)	१७,८७५	सिआला	१६,५५०
घाटा मेमिन	१७,७००	लिपूलेक	१६,५००
बलचा (अनला) धुरा	१७,५५०	अमलंग्-ला	१६,४००

मानसखण्डके कुछ स्थानोंकी ऊँचाई—

राकसताल	१५,०००
गरतोक	१४,२४०
रम्येलिङ्	१४,०००
पुलिङ्	१३,८००

वैसे यहाँ सैकड़ों हिमानियाँ (ग्लेसियर) हैं, जिनमें मिलम, पिण्डारी (२०,७४० फुट), पंचचूली मुख्य हैं। मिलम हिमानी २५ मील चली गयी है, पिण्डारी २ मील लम्बी और ३००-४०० गज चौड़ी है। कोई कोई हिमानियाँ सैकड़ों फुट मोटी हैं।

४. **नदियाँ**—सरयू, घाघरा और गंगाकी शाखाएँ इस जिलेकी जलवाहिकाएँ हैं।

(१) **काली**—मूलधारा इसकी **कुठी-यङ्ती है**, जो कालापानी नदीसे मिलनेके बाद काली नदीके नामसे पुकारी जाती है। कुठी-यङ्तीके किनारे किनारे मङ्-शङ् अथवा लङ्प्या (१८,१५० फुठ) जोतों द्वारा तिब्बतमें पहुँचा जा सकता है। कालापानीके तटसे लिपूलेख-जोत मानसरोवरका द्वार है। कालापानी अपने निचले भागमें नेपालकी सीमा हो आगे काली नदीके नामसे सारे जिलेकी पूरबी सीमा बन जाती है। कालीमें आगे दाहिनी ओरसे दर्मा (गंगा), गोरी, सरजू और

कुरियाला नदियाँ आकर मिलती हैं। बर्मदेवके पास काली पहाड़ छोड़ देती है। आगे इसका नाम शारदा हो जाता है, जिससे शारदा नहर निकली है। यही आगेकी घाघरा है।

(२) **पूर्वी-रामगंगा**—नन्दाकोटके पहाड़ोंसे निकलती है और आगे अकुला, गौमतीको लेती, सरजूके नामसे काली नदीमें जा मिलती है।

(३) **पिन्डार**—यह पिन्डार हिमानीसे निकल कर सुन्दरधुंगा और भलंगंगाको लेती गढ़वालमें चली जाती है।

(४) **पश्चिमी रामगंगा**—यह गढ़वालसे आकर जिलेके पश्चिमी भागमें होती नैनीताल और मुरादाबाद जिलोंमें चली जाती है।

५. **भूतत्त्व और खनिज**—जिलेके दक्षिणी सीमान्तकी पहाड़ियाँ शायद आयुमें बहुत पुरानी हैं। वहाँ फोसीलहीन, स्लेट क्वार्ट्ज तथा कहीं-कहीं विशाल चूना-शैल पाये जाते हैं। मुख्य हिमशिखरमालाकी केन्द्रीय धुरीवाले प्रदेशमें कहीं-कहीं आग्नेय संगखारेका विशाल समूह पाया जाता है। इसी केन्द्रीय धुरीके उत्तरकी ओर सामुद्रिक स्तरवाले पत्थरोंकी विशाल श्रेणी चली गयी है, जिनमें निम्न-सिलूरियन चट्टानें भी हैं। यह भूभाग अपनी भूतत्त्वीय समृद्धिमें भारतमें अद्वितीय है।

(१) **ताम्बा**—अपनी खनिज सम्पत्तिके लिए हिमाचलका यह भाग पहिलेसे ही प्रसिद्ध रहा है। सन् १८१५ में अंग्रेजोंका अधिकार होते ही उनका ध्यान इस ओर गया, और उसी सन्में सिरा और गंगोलीकी खानोंकी ताम्बेकी धून[1] परीक्षार्थ कलकत्ताकी टकसालमें भेजी गयी। किन्तु वह लाभदायक नहीं मालूम हुई। फिर एक खनिजविशेषज्ञ लेडलाको सन् १८१७में जाँचके लिए भेजा गया, जिसकी रिपोर्ट खो गयी। सन् १८२६में कप्तान हर्बर्टने सोना पाये जानेकी बात करते हुए अपनी रिपोर्टमें लिखा—"सीसा और लोहा तो यहाँ है ही," ताम्बा इस प्रदेशमें बहुतायतसे मिलता है और आयका अच्छा साधन बन सकता है। निस्सन्देह ताम्बा यहाँ काफी परिमाणमें मौजूद है और लोहेकी तो ठीक व्यवस्था भर करनेकी आवश्यकता है। फिर तो वह इंग्लैण्डसे भी अच्छी किस्मका पैदा हो सकता है।" सन् १८३८में कप्तान ड्रमंडने गंगोलीमें राई, और बाराबीसीमें सिराकी ताम्बेकी खानोंपर अपनी रिपोर्ट दी। उस समय अब भी वहाँ काम हो रहा था, बेलार, शोर गुरुंग और छिकाकोलीकी प्राचीन ताम्रखनियाँ तबतक बन्द हो चुकी थीं। राई धून (ताम्रपाषाण) पीली गन्धकित था, जिसमें ३०% ताम्बा था।

सिराखान सिरा पर्गनाकी बाराबीसी पट्टीमें राई गाँवसे कुछ दूर एक ऊँचे पहाड़ीके उत्तर ओर अवस्थित है। ड्रमंडके यहाँ जानेके समय खान मुँहके भीतर ३३ कदमतक चली गयी थी। यहाँकी धून भी राईके किस्मकी, किन्तु अधिक कड़ी थी। उस समय धून खोदनेके लिए लकड़ीके बेंटमें लगी एक पतले मुँहकी कुदाली, मामूली हथौड़ा और एक लोहेका छड़ बस यही हथियार थे। खोदकर धूल और धूनको चमड़ेपर रखकर खानके मुँहपर खींच लाया जाता था। स्त्रियाँ कड़े लोहेपर रखका हथौड़ीसे तोड़ पानीकी धारपर ले जा उसे टोकरियोंमें रखकर धोती थीं। ड्रमंडकी सिफारिशपर कार्निश (इंग्लैण्ड)के एक खनक विल्किनने अपने देशके तरीकेसे काम शुरू किया, किन्तु सफलता नहीं मिली। अंग्रेज सरकारने कामको यहीं छोड़कर छुट्टी ले ली। बैटनके बन्दोबस्तके समय (सन् १८४२ ई०) राई और सिराकी खानोंसे १०१ और ८५ रुपयोंकी वार्षिक आय थी। सिराका प्रबन्ध सीधे सरकारके हाथमें था। बैटनने खानकी दुर्व्यवस्थाका कारण मजूरोंका अभाव बतलाया—"खसियोंने

१. कुमाऊँमें ओर (धातुपाषाण)को धून कहते हैं, और मध्यप्रदेशमें धाउ (=धातु)।

सारा काम अगरियोंके हाथमें छोड़ दिया। अगरियोंकी संख्या मृत्यु और काम छोड़कर भागनेके कारण कम होती गयी। जो बचे भी हैं, वे भी बकलोलपनके रोगसे पीड़ित हैं।"

हिमालयके इस भागमें ताँबेकी खानें निम्नलिखित स्थानोंमें पायी जाती हैं—

कुमाऊँमें—

खान	परगना या पट्टी	खान	परगना या पट्टी
राई	गङ्गोली पर्ग० (पिराइट)	बुजुल	बेल पट्टी
सिरा	सिरा पर्ग०	रथायत	,,
गौल	खराही पट्टी	तब्बा खान	गंगोली पट्टी
सोरगुरंग	,,	चीनका काली	गिवाँड़ पट्टी
हवाल बाग	,,	बेलेर	,,
गणाई	अठगाँव पट्टी	शोर	,,
फडियाली	,,	कैमाखेत	काली कुमाऊँमें लढ़ियाके पूर्व-तटपर

(२) लोहा—बैटनके समय (सन् १८४८-५६ ई०) खराहीकी लोहेकी खानोंमें काम बन्द-सा हो चुका था। चौगरखामें १३ स्थानोंमें लोहा निकाला जाता था, और मिलता तो वह इस परगनेमें बहुत-सी जगहोंमें था। दारुन के झेराटोली स्थानमें चुम्बकीय धूल भी मौजूद थी। आधुनिक ढंगसे तैयार किये गये अधिक कड़े लोहे जब सस्तेमें मिलने लगे, तो यहाँके पुराने ढंगसे तैयार किये गये घटिया तथा मँहगे लोहेको कौन पूछता? तो भी पल्लागिंवाड़में खटसारीमें बहुत अच्छे लोहेकी खानें थीं, जो बहुत पीछेतक हिम्मत किये रहीं। इसका एक कारण यहाँ अनाजका बहुत सस्ता होना था। रानीखेतकी छावनीने जब अनाजको खींचना शुरू किया, तो सस्ती मजदूरी नहीं रह सकी। सन् १८७३ के बन्दोबस्तमें वहाँकी जमीन खनकोंके हाथमें बन्दोबस्त कर दी गयी। खनक धरतीका अवलम्ब या खानके ठेकेदारोंके हाथसे निकल गये। तो भी कुछ मात्रामें लोहा यहाँ निकलता ही रहा। सन् १८९१ में इस खानने ५४ रुपया सरकारको रायल्टी दी थी, जो १८९२में ५४, १८९३में ४७, १८९४में १३६, और १८९५में ७८ रुपया रह गयी। राजस्वकी कमीके कारण १८९५में खान बन्द कर दी गयी। लोहारोंकी जीविका चली गयी, जिसके लिए सन् १९००में फिर उसे खोल दिया गया। लोहारोंको प्रतिभट्ठी ५ रुपया कर देना पड़ता था। उन्हें सरकारी जंगलसे काठ-कोयला चौथाई दाम-पर मिल जाता था। जंगलकी भारी क्षति देखकर सन् १९०५के बाद ठेका देना बन्द कर दिया गया। १९०५से पहिले लोग (पट्टी खराही), रामखोली (पट्टी रीठागढ़), मोट और मुटकन्या (दोनों-पट्टी दारुन)की लोहेकी खानें चल रही थीं, यद्यपि उनकी उपज बहुत कम—सन् १९०३में १६ मन और १९०४में ९४ मन—थी। निर्माणका ढंग पुराना था, जिससे १०० मन धूनसे ढाई मन ही लोहा निकल पाता था। पीछे कई अंग्रेज कम्पनियोंने कोशिश की, किन्तु ईंधनकी कमी तथा पहाड़ोंके यातायातकी कठिनाईके कारण आधुनिक ढंगसे कारखानों को स्थापित करना सम्भव नहीं हुआ। आज इस जिलेका ताम्बा-लोहा भूमिमें छिपा नदियोंकी पनबिजलीसे बने बिजलीके भट्ठों और रज्जुमार्गों एवं मोटर-सड़कोंकी सहायतासे नये ढंगके कारखानोंके स्थापित किये जानेकी प्रतीक्षामें है। पीनेके पानीमें थोड़ेसे आयडीनके योगसे इलाकेसे घेघे तथा बकलोलपनको दूर किया जा सकता है और इन धातुओंसे हिमाचल प्रदेशकी सम्पत्तिको बढ़ाकर लोगोंके जीवन-स्तरको भी ऊँचा किया जा सकता है। लोहा निम्नलिखित स्थानोंमें मिलता है—

कुमाऊँमें	पट्टी	परगना	जिला
मुनिया	लखनपुर	चौगरखा	अलमोड़ा
दिगढिया	दारुन	,,	,,
झीरा टोली	,,	,,	,,
जलाल	रंगोर	,,	,,
दिगढिया	,,	,,	,,
लोब (लोभ)	खराही	,,	,,
मीलम	मल्ला-जोहार	,,	,,
चितेली	गिंवाड़	पाली	,,
सिरौली	,,	,,	,,
खेतसारी	,,	,,	,,
सीमलखेत	,,	,,	,,
गूडी	,,	,,	,,
बैलगाँव	,,	,,	,,
बोनीगढ़			,,
मेहलचौरी			,,
तिलवारा			,,
लुगथान	मल्ला-कत्यूर		,,
बराँव (१)	बराँव	गंगोली	,,
खैरना			,,
सीमलखा			,,
उचाकोट			,,
लूसगनी	आगर	रामगढ़	नैनीताल
नथुआ कान	,,	,,	,,
गुल्ला	,,	,,	,,
सतबुग्गा	,,	,,	,,
मंगलालेख	तल्लाराव		,,
देहचौरी			,,
रामगढ़			,,
खुरपाताल			,,
सयलगढ़		कटौली	,,

(३) **सोना**—यह अलकनन्दा (गढवाल), पिंडार, सोना (गढवाल) गङ्गा (लछमन-झूलासे ऊपर) और रामगङ्गा (सोनाके सङ्गमसे थोड़ा नीचेतक) पाया जाता है। कहीं-कहीं न्यारिये बालू धोकर सोना निकालते हैं।

(४) **सीसा**—सन् १९०१में पट्टी बराँवके रतौली गाँवके लोगोंने सीसाकी खोज करनेकी आज्ञा माँगी। खोज करनेपर पिराइट लौह तथा क्वार्ट्ज-सहित गेलेना (मिश्रित सीसे)की धून मिली। आज्ञा भी मिल गयी, किन्तु गरीब ग्रामीण आजके प्रतियोगिताके युगमें कैसे वहाँ कोई क्षमताशाली कारखाना खोल सकते थे? सीसेकी खानें निम्नलिखित स्थानोंमें मिलती हैं—

कुमाऊँमें—

धिरती	(मिलम और नीतीके नीचे)
राल्म्	(गोरीके तटपर)
वंसकुम	(”)

(५) **हरताल**—जिलेके उत्तरी भागमें मुंसियारीके पास तथा अलमोड़ाके समीप भी हरताल मिला है।

(६) **ग्रेफाइट**—अलमोड़ा नगरसे उत्तर कालीमाट पर्वत तथा नगरके सामने वानिनी-देवीकी पर्वतबाहुपर पेंसिल बनाने तथा दूसरे कामोंमें आनेवाली यह धातु मिलती है।

(७) **शिलाजीत**—अर्थात् पत्थरकी लाख (शिलाजतु) चट्टानोंमें गोंदकी भाँति निकलती है। यह वस्तुतः अल्मुनि-गान्धेत ९५%, लौह परोषिद ३% और सिलेक्स १% का मिश्रण है। कितनी ही दवाओंमें इसका उपयोग होता है। कुमाऊँमें अनेकत्र तथा गढ़वालमें पैनखण्ड और नागपुर परगनोंमें शिलाजीत मिलता है।

(८) **फिटकरी**—अलमोड़ा नगरके नीचे कोसीमें यह धातु मिलती है। नैनीताल-खैरना सड़कपर जाक गाँवमें भी इसका उद्गम है।

(९) **गन्धक**—कुमाऊँ, गढ़वाल दोनोंमें प्राप्य है।

कुमाऊँमें—

मुंसियारी	रामगंगा नदीकी अंगनाईमें
गंजिया नदीमें	
नैनीताल	चश्मोंमें
नरगोली	”
काठगोदाम	”
मैयार	(जौनसार, टौंसके तटपर सीसेके साथ)

(१०) **जिप्सम्**—रासायनिक खादके लिए आवश्यक पदार्थ है।

कुमाऊँमें छखाता में तथा कालाढूंगी–नैनीतालवाली सड़कपर नीहालु पुलके पास मौजूद है। **गढ़वाल** में पनाई, नगरासू (अलकनन्दा-तट) में तथा देहरादूनमें सहस्रधारा (लछमन-झूला) और सालकोटमें प्राप्य है।

(११) **कोयला**—निम्नलिखित स्थानोंमें मिला है—

कुमाऊँमें—

रानी-बाग	हलद्वानीके पास	६०% कार्बन
बाराखेरी	भमौरीके पास	
भीमताल		पीट (कोयला)

(१२) **गृहनिर्माण-सामग्री**—मकान बनानेके लिए अच्छे पत्थर प्रायः सारे जिलेमें सुलभ हैं। चीड़की लकड़ी धरन, किवाड़ आदिके बनानेके काम आती है। तूनकी माँग बहुत है, किन्तु वह दार्जलिङ्के पहाड़ोंकी भाँति यहाँ सुलभ नहीं है। देवदारका उपयोग ऊपरी भागोंमें कुछ होता है। छतके लिए स्लेट, फटे पत्थर या टीनका उपयोग होता है। अलमोड़ाके पास बलधोती, देवलघरके पास पलारी और मल्लाचौकोटमें जौरासीमें स्लेट निकाला जाता है। चूना पत्थरकी अच्छी खानें खराही (बागेश्वरके पास), गिरदाचीना और महाकुल (गिवाँड़)के पास हैं।

६. **ऋतुएँ**[1]—तिब्बती सीमासे २०-३० मील दक्षिण जिलेकी हिमालयश्रेणी है। इन दोनोंके बीचका प्रदेश तिब्बत जैसा है, अर्थात् पर्वत जंगलरहित और उपत्यकाएँ चौड़ी। हिमालयश्रेणीके दक्षिणकी ओर जाड़ा, गरमी, बरसात तीनों ऋतुएँ मैदानकी भाँति पायी जाती हैं, जो निम्नप्रकार हैं—

ऋतु		मास	राशि	प्रारम्भ तारीख
रुरी	वसंत	चैत	मीन	१५ मार्च
		वैशाख	मेष	१४ अप्रैल
	ग्रीष्म	जेठ	वृष	१५ मई
		आसाढ़	मिथुन	१६ जून
चौमास	वर्षा	सावन	कर्क	१७ जुलाई
		भादो	सिंह	१८ अगस्त
	शरद	असोज	कन्या	१८ सितम्बर
		कार्तिक	तुला	१७ अक्तूबर
ह्यूँ	हेमन्त	मंगसिर	वृश्चिक	१७ नवम्बर
		पूस	धनु	१६ दिसम्बर
	शिशिर	माँ	मकर	१५ जनवरी
		फागुन	कुम्भ	१३ फरवरी

सितम्बरके मध्य या अन्तमें आकाश निरभ्र और वायुमण्डल स्वच्छ होता है।
अक्तूबर-नवम्बर—आकाश स्वच्छ और शान्त, रातमें ओस अधिक।
दिसम्बर—रातको काफी पाला पड़ता है।
जनवरी-फरवरी—सरदी अधिक (कभी-कभी ५००० फुटसे ऊपर बरफ और नीचे वर्षा)।
मार्च-अप्रैल—गरमी बढ़ने लगती है, हवा शुष्क हो जाती है।
मई-जून—गरमीके दिन, वर्षा कम, ऊँचे पहाड़ोंमें ओलोंकी वर्षा।
जूनके उत्तरार्धसे मानसूनका जोर बढ़ने लगता है।
जुलाई-अगस्त—वर्षाका समय।
१०००-५००० फुटकी ऊँचाईतक मई-जूनमें गरमी तेज होती है।
५००० फुटसे ऊपर गर्मीका मौसिम बहुत अनुकूल होता है।

जिलेके दक्षिणी भागमें ५००० फुटसे नीचे शायद ही कभी बरफ पड़ती है, किन्तु उत्तरी भागमें ५००० फुटतक बरफ पड़ती देखी जाती है, जिसका कारण अक्षांश और हिमालयश्रेणीकी समीपता है। १०,००० फुटसे अधिक ऊँचे स्थानोंमें मध्य-नवम्बरसे मध्य-अप्रैलतक भूमि बरफसे ढँकी रहती है। हिमरेखा **यहाँ ऊपर उठती हुई गरमीमें १८,००० फुटपर** जा पहुँचती है वैसे सनातन-हिमरेखा १६,००० फुटसे १७,००० फुटपर है।[2]

---

१. कुमाऊँमें शक संवत्का चलन है।

२. बरजीखड़ जोत (नन्दाकोट और पंचचूली शिखरोंके बीच) १५,४०० फुटतक अगस्त १८४८ में हिमका नाम नहीं था, १७,००० फुटपर भी वह पर्याप्त नहीं थी। ऊँटा-धूरा जोत (१,७०० फुट) पर दक्षिणी चढ़ाईके ऊपरतक सितम्बर १८४८ में जेनरल स्टेचीने बरफ नहीं देखा,

(१) वृष्टि—तराई (तनकपुर) में वृष्टि जहाँ ९८ इंच होती है, वहाँ अलमोड़ा और रानीखेतमें वह ४० इंचे। सारे जिलेकी मध्यम-वृष्टि ६० इंच है। पर्वतोंकी जड़ और हिमालयकी जड़में वृष्टि सबसे अधिक होती है।

अलमोड़ा नगर भीतरी पर्वतश्रृङ्खलामें दक्षिणमें, नगरश्रेणी, पश्चिममें सियाहीदेवी पर्वत और पूर्वमें कालीमाट पर्वतसे घिरा ५,९०० फुटकी ऊँचाईपर है। यहाँ वार्षिक वृष्टि ४० इंच है, जब कि बाहरी पर्वत-श्रेणीमें ६,५०० फुटपर अवस्थित नैनीतालमें वह उससे दूनी (८० इंच) होती है। बेनीनाग और चौकुरीमें ७२ और ९२ इंच वर्षा होती है, और धरचूलामें ४४ इंच। सबसे अधिक वर्षा जूनसे सितम्बरतक होती है। इसके अतिरिक्त जाड़ोंमें भी कुछ वर्षा हो जाती है। कहावत है—"ह्यूँ हिमाल, चौमास माल", जिसके अनुसार जाड़ोंकी वृष्टि हिमाल (उत्तर) से आती है, और वर्षाकी नीचे देश (दक्षिण) से। अगस्त-सितम्बरकी वर्षा किसानोंके भाग्यका निर्णायक है। उनकी कहावतके अनुसार इन महीनोंमें रातको दिखाई देते हर एक तारेपर १०० खर (=५० टन) अनाज नष्ट होता है। अलमोड़ा और रानीखेतके कुछ वर्षोंकी वर्षाकी औसत (इंच) निम्नप्रकार रही—

अलमोड़ा

१८९२	५४·४	१९२१	५१·२७	१९२८	३४·४६
१८९४	९०·०	१९२५	४२·१८	१९३०	३०·६०
१८९६–१९०० (औसत)	६१·२			१९२६–३० (औसत)	६७·५
					३९·५४

रानीखेत

१९२१	७२·६५	१९२६	४८·१५	१९३०	३८·९३
१९२३	४३·५१	१९२८	४१·८१	१९३१	४९·८०
१९२४	७७·२०	१९२९	४७·४४	१९२१–२५ (औसत)	६४·३०
				१९२६–३१ (औसत)	४८·४०

मिलममें मुश्किलसे ५ इंच वर्षा होती है।

उन्नतांशोंके अनुसार वर्षाकी मात्रा भी देखिये—

स्थान	उन्नतांश (फुट)	वार्षिक (इंच)
ठाकुरद्वारा	७२०	४४·५४
देववंद	८७०	३१·०४
सहारनपुर	९५०	३६·७६
रुद्रपुर	७२०	४३·९१
काशीपुर	७५०	४३·९१
रुड़की	८९०	४१·४५
हलदवानी	१४३०	७४·०६
हरद्वार	११००	४५·६९
श्रीनगर (गढ़वाल)	१७००	३६·६३

हिमरेखा १८,८०० फुटसे ऊपर थी; वनस्पति जोतके ३००–४०० फुट (१७,००० फुट) पर थी।

कालसी	२,०००	८२'३३
देहरादून	२,२३०	७४'८६
पालमपुर	४,०००	११८'००
कलिम्पोङ्	४,०००	८०'००
धर्मशाला	४,४९०	१२३'२
पौडी	५,३५०	५०'२२
अलमोड़ा	५,४९०	३८'९४
पिठौरागढ़	५,५००	४८'९२
चम्पावत	५,५५०	५६'५५
मसूरी (फेडालिस स्कूल)	५,८५०	१४२'२५
रानीखेत	६,०६९	४८'२८
मसूरी अस्पताल	६,५५०	९५'२३
नैनीताल	६,६००	९०'९४
दार्जलिङ्	६,८००	१२६'००
शिमला	६,९५०	८८'६
चकराता	७,९५२	६२'२३
लंढौर	७,५११	८७'१३
नीती	११,४६०	५'५
लेह	११,५३८	१'३२

कुमाउँ और गढ़वालमें उन्नतांश (उँचाई) के अनुसार वर्षा निम्नप्रकार होती है—

उन्नतांश (फुट)	वर्षा (इंच)	उन्नतांश (फुट)	वर्षा (इंच)
८००	४३	७,०००	८८
१,०००	६०	८,०००	५२
२,०००	१२५	९,०००	२७
३,०००	९५९	१०,०००	१४
४,०००	१६१	११,०००	७
५,०००	१४९	१२,०००	४
६,०००	१२२		

(२) तापमान—अलमोड़ा जिलेकी भूमि १,००० से २५,००० फुटतक उँची है, (अक्षांश २८°·४९ से ३०°·४९ के भीतर है) किन्तु उँचाईका प्रभाव यहाँके तापमानपर अधिक पड़ता है। उत्तरके शीतल भूखण्डमें उष्णतम मासोंमें भी वार्षिक माध्यम तापमान ५०°(१० सेन्टीग्रेड) रहता है। ५,००० फुटसे नीचेके स्थानोंका तापमान उष्णतम समय (मध्य-जून) में ९४° से ११०° होता है। प्रति १,००० फुटकी उँचाईपर ३'० के हिसाबसे तापमान गिरता है। कुछ उँचाइयोंपर तापमान निम्नप्रकार पाया जाता है—

उँचाई	न्यूनतम	अधिकतम	मध्य-जाड़ा
५,९४९ (अलमोड़ा)	४०	९०	...

५,९८० (रानीखेत)	२६	८७·८	...	
७,०००			४०	
९,०००			३२	

कुछ स्थानोंके भिन्न मासोंके तापमानोंकी तुलना कीजिये—

	उन्नतांश (फुट)	जनवरी	अप्रैल	जुलाई	नवम्बर	वर्ष
बरैली	५६८	५७·३	८३·४	९०·३	६६·५	७५·८
रुड़की	८८७	५६·७	८१·५	९०·८	६५·०	७४·९
श्रीनगर (गढ़वाल)	१,९५०	...	७१·०	८४·०	...	...
कालसी	२,०००	५८·३	७७·७	८६·०	६३·२	७१·८
देहरादून	२,२३२	५४·८	७३·१	८४·९	६३·५	७०·६
हवालबाग	४,११४	४७	६६·०	७६·०	६०·०	६५·८
धर्मशाला	४,४९५	४४·६	६८·३	७५·७	५७·७	६२·५
पीडी	५,३५०	...	६०·०	७३·०	...	...
अलमोड़ा	५,५४६	४६·३	६४·७	७५·०	५७·९	६३·२
लोहाघाट	५,६४९	४४·५	६०·९	७१·०	५१·९	५९·४
मसूरी (२)	५,८५०	४५·६	६३·५	७०·५	५६·६	५९·६
रानीखेत	६,०६९	४८·८	६५·२	७१·३	५५·७	६०·४
नैनीताल	६,४६३	४२·८	६०·४	६९·१	५२·७	५८·२
मसूरी (१)	६,९३७	४१·५	५९·६	६८·५	५२·३	५६·७
चकराता	७,०५२	४१·६	५९·६	६८·७	५२·२	५६·३
लंढौर	७,५११	३७·८	५६·३	६८·५	४९·४	५५·२
कनम	९,२९६	२८·८	४६·६	६३·७	४२·६	४९·४
कैलङ्	१०,२४२	२४·०	४७·०	५४·०	३७·०	४४·९
नीती	११,४६४	...	...	...	...	...
लेह	११,५३८	१७·६	४०·१	५३·६	३०·७	३९·३
स्पिति	१३,०००	१७·५	३७·५	५६·९	२२·५	३७·२

(३) शीतकटिबन्ध—जोहार, दरमा और मल्ला-दानपुरके परगने १३,००० फुटसे अधिक उँचाईपर हैं। वहाँका जलवायु **(क)** ध्रुवकक्षीय है—१३,००० फुटसे ऊपर जाड़ा लम्बा और गरमी छोटी होती है, जिसके कारण अभी बर्फ पूरी तौरसे पिघलने भी नहीं पाती कि नयी बर्फ पड़ जाती है। शीतकी अधिकतासे वहाँ वनस्पतिका अभाव-सा है।

(ख) तुन्द्रा—हिमानियाँ (ग्लेसियर) तथा हिमाच्छादित शिखरोंके दक्खिनकी ओर साइबेरियाकी तुन्द्राकी भाँति आठ मास धरती बरफसे ढकी अर्थात् गर्मीमें बर्फके पिघल जानेपर भी कुछ ही इंचों नीचे धरती हिमित रहती है। तुन्द्राकी ही भाँति यहाँ कुछ झाड़ियाँ तथा छोटे-छोटे पौधे पाये जाते हैं।

(ग) बुगाल—हिमाचलीय तुन्द्राके नीचे १०,०००–१३,००० फुटपर घाससे ढकी ढलानें हैं, जिन्हें पयार या बुगाल (बुग्याल) कहते हैं। यही अजपालों तथा मेषपालोंका स्वर्ग है। यहाँ मार्चसे बर्फ पिघलने लगती है, फिर हरी घासोंका मखमली फर्श बिछ जाता है। अप्रैलसे ही यहाँ भोटान्तिक मेषपाल अपनी भेड़-बकरियोंको लेकर जम जाते हैं।

(घ) तैगा—६,०००–१०,००० फुटकी ऊँचाईपर हिमालयकी तैगा है, जहाँ देवदार, वज्र-काष्ठ (ओक) ब्रोंसके जंगल हैं। यहीं जिलेके भातकोट, ऐरदेव, दूनागिरि, सियाहीदेवी, देवीधुरा, ध्वज, मनीला, जौरासी और चौबटियाके रक्षित वनखण्ड हैं। इन पहाड़ोंके उत्तरी भागपर सूर्यकी किरणें बहुत कम समयतक रहती हैं, जिससे वहाँ धरतीमें नमी अधिक बनी रहती है, यही कारण है जो यहाँके पर्वतोंके उत्तरी पार्श्व जंगलदार होते हैं।

७. जंगल—हिमालयका वनस्पतिक्षेत्र निम्न वृक्षभूमियोंमें बँटा है—

फुट	वृक्ष
४,००० तक	शालकी सीमा, हलदू, तून, साई, धौरी
५,०००	चीड़की बहुतायत
६,०००	देवदारका आरम्भ, बंज, ब्रोंस (लाल)
७,०००	चीलका अन्त, बंज, ब्रोंस, साईप्रसकी बहुतायत
८,०००	बंजका अन्त, कठोर बंज तथा पद्म, हिमाचलीय सिल्वरफर
९,०००	तिलोंज और खरसू
१०,०००	साइकामोर, ब्रोंस, पंगार (चेस्टनट), घास-ढलान आरम्भ
११,०००	घास-ढलान अधिक, पद्म, हिमाचलीय सिल्वरफर, राघ, थनेर
१२,०००	भुर्ज और चीला
१३,००० (से ऊपर)	वनस्पतिका अभाव।

(१) क्षेत्रविभाजन—देशमें जंगलको सदासे राज-सम्पत्ति माना जाता रहा है। कुमाऊँ जंगल डिवीजन (भुक्ति) में सन् १८७७ में ६७५ वर्गमील जंगल था, जिसमें २९०·५७ वर्गमीलपर लोगोंके चराई-काठकटाई आदिके कुछ अभिलिखित अधिकार थे, जिनको अलग कर देनेपर ३८४ वर्गमील राजकीय जंगल था। सन् १८७८ में ३८·६७ वर्गमील और निकाल दिया गया। इस प्रकार ६३५·८३ वर्गमीलको २६ फरवरी १८७९ की अधिसूचनाके अनुसार रक्षित वनखण्ड घोषित किया गया। तो भी जंगलके पासके गाँवोंको चराई, काठ-ईंधन तथा दूसरी जंगलीय उपजके उपभोग-का काफी सुभीता दिया गया। १ जुलाई १९०१ को कुमाऊँ जंगल-डिवीजनका क्षेत्रफल ५१० वर्गमील था, जिसमेंसे २७७ वर्गमीलपर लोगोंका अभिलिखित अधिकार था और २३३ वर्गमील अधिकारमुक्त।

१० मार्च १९२० से अलमोड़ा जिलेका जंगल निम्नलिखित तीन डिवीजनों और १४ रेंजोंमें विभक्त हुआ—

	वर्गमील
१. रानीखेत डिवीजन—	२८५
(१) लोहवा	
(२) जौरा	
(३) दूराहाट	
(४) सिउनी	
(५) रानीखेत	

२. केन्द्रीय अलमोड़ा डिवीजन— २९९
(६) अलमोड़ा
(७) सोमेश्वर
(८) देवलधार
(९) गोरखेत
(१०) कापकोट
३. पूर्वी अलमोड़ा डिवीजन— ६२७
(११) पिठौरागढ़
(१२) जोगेश्वर
(१३) बेनीनाग
(१४) लोहाघाट

१२११ वर्गमील

३,००० फुटकी उँचाईतक जंगलोंमें शालजातीय वृक्षोंकी प्रधानता है, साई और हलदू भी वहाँ कम मिलते हैं। ऊपरी उँचाइयोंपर चीड़, बंज (बान, बज्राँठ—वज्रकाष्ठ) की अधिकता पायी जाती है।

पहिले जंगलकी कटाई सुव्यवस्थित तरीकेसे नहीं होती थी। सन् १८९४ से नयी व्यवस्था काममें लायी जाने लगी। अबसे ६ फुटकी मोटाईका शाल वृक्ष काटने लायक माना गया, वृक्षकी आयु कमसे कम डेढ़ सौ वर्षकी होनी चाहिये। खैरके लिए चार फुट और हलदूके लिए ७'५ फुटकी मोटाई ठीक समझी गयी। सन् १८७६ से जंगलोंकी अग्निसे रक्षाका काम भी आरम्भ किया गया और सन् १९०१ तक ६५% जंगल अग्नि-रक्षित कर दिये गये। इसके लिए जंगलमें जगह-जगह ५० से १०० फुटके गलियारे वृक्षोंसे रहित कर दिये गये, जिसमें कि एक ब्लाकमें लगी आग दूसरेमें न जा सके।

(२) **आय**—सन् १८१७-१८ में सारे कुमाऊँ डिवीजनके जंगलोंसे सरकारको २४८१ रुपयेकी आय हुई थी, जो मुख्यतः चराईके करके रूपमें थी। सन् १८१८-१९ में वह ३,२००, और १८२८-२९ में ४,०२५ हो गयी। जंगलकी आय तब अधिक बढ़ी, जब कि सन् १८६१ से सरकारने अविवेकपूर्ण कटाई द्वारा जंगलोंके उच्छेदके डरसे उनकी रक्षा करनेकी ओर ध्यान दिया। सन् १८५९-६८ में ७ लाखकी आय हुई, अर्थात् वार्षिक आय ७०,००० रुपया। सन् १८६८ में मेजर पियर्सन जंगलोंके प्रथम कन्जर्वेटर नियुक्त हुए, और ५ सितम्बर १८७७ को जंगलोंको राजकीय जंगल घोषित कर दिया गया। सन् १८६९-८० तक वार्षिक औसत आय २,१९,२५२ रुपया थी। पीछेका आय-व्यय निम्नप्रकार है—

सन्	आय	व्यय
१९१७–१८	१,०७,८८४	७,०९,०५०
१९१९–२०	२,१६,८२३	९,३६,४६७
१९२०–२१	५,८९,८०१	७,६९,१३१
१९२१–२२	८,८८,२३८	७,०५,३१८

(३) **नगरके पासके जंगल**—अलमोड़ा नगरके पूर्वमें बलधोती और उत्तरपूर्वमें कालीमठके जंगल क्रमशः ४९३ और ४६० एकड़के हैं। बलधोतीकी घेराबन्दी सन् १८७५ में करके चीड़ बो दिया गया था। पीछे जिलाके अधिकारियोंने इसे जंगलविभागको सौंप दिया। जंगलविभागने सन् १८८८

और १८९२ में दूसरे वृक्षोंके बोनेकी भी परीक्षा की, किन्तु प्रधानता चीड़की रही। कालीमठमें पुराने जंगलका भी कुछ अवशेष बच रहा था, जब कि उसे रक्षित वन बनाया गया। सन् १८९४ में वहां चीड़की बोआई आरम्भ हुई। बलघोती जंगलका एक और भी लाभ है, अल्मोड़ा नगरके जलका मुख्य उद्गम इसीकी छायामें है।

(४) **रानीखेत जंगल**—यह जंगल (२८५६ एकड़) रानीखेत और चौबटियाकी छावनियोंके बीचमें अवस्थित है। इसका प्रबन्ध छावनी मजिस्ट्रेट (कटक दंडाधिकारी)के हाथमें है। इसका उपयोग मुख्यतया रानीखेतके ईंधन और घासके लिए होता है। इस जंगलमें चीड़की प्रधानता है।

शाल, हल्दू, धौरी (शाल) काष्ठोपयोगी मुख्य वृक्ष निचले उन्नतांशोंमें पाये जाते हैं।

(५) **वृक्षभेद**—कुमाऊँमें पाये जानेवाले वृक्ष मुख्यतया निम्नलिखित जातिके हैं—

(क) सूचीपत्रक वृक्ष

कैल (गढ़) (Pinus Excelsa)
चिल्ल
चीर (चीड़, क्षीर) (Pinus longifolia)
थनेरा (Taxus Vaccata)
देवदार (Cedarus Deodarum)
धूप या धूपरी (Juniper Excelsa)
स्यौंजा, स्यौंता या कोलेचा (Pinus Gerardiana)
रघा (Abies Wabbiana)
राई (Abies Smithiana)
सुराई (Cupressus Torulosa, Cypress)

(ख) काष्ठछालोपयोगी वृक्ष

अखरोट, अखोड (Juglaus regia)
अल्मोड़ा या मिल्मोड़ा (Rumex hestilus)
ऐरा (Caesalpinia Sepiaria)
कटौंज (Castancopsis tribuloides)
करौंज
किल्मोड़ा (Berberis Asiatica)
खरशू (Quercus Semicarpifolia)
गुइया (V. Cotinipolium)
चिम्मल राता
च्यूरा
तिलौंज (Quercus dilatala)
तून (Cedrela Toona)
तेजपात (Cinnamonum Tamala)
निंगल या बाँसी (Arundinaria falceta Bamboo Cane)
पपड़ी
पाँगर (Chestnut)
फलेल (Bassia Butyrcea)
फल्याँट (Quercus annulata)
फुङ् (भोट) (Satyrium Nephalense, Orchids)
फ्याँट
बहेरा (Terminalia belerica)
बाँझ, (बाँज, या बान) (Quercus incana)
बिचैण
बिच्छू, आँवा (Cirarolinia Heterophylla)
बुरौंज (बुराँज, बुराँस या गुराँस) (R. Campanulatum Rhodendron)
भाँग (Cannabis Sativa)
भाँग, गुर (Cannabis Female)
भाँग, फूल (Cannabis Male)
भेकुल
भोज या भुर्ज (Betula Bhojpatra)
भौर
भ्यौंल
मजीठी (Rubia Cordofolia)
मालू या मालफत
रतपा
रियाँज (Quercus lanata)
रीठा
लाजवन्ती (Mimosa Pudica)
लिंगुड़ा (Asplenium Polipoiides)

शिलिङ् (Olea Acuminate) हर्रा (Terminalia Chebula)
सेत बड़ुवा हल्दू (Adina Cordofolia)
स्याज (बांज)

(ग) उद्यान फल

अंगूर पयँ या गिलास
अनार (दाडिम) फलोंदे (Strawberry)
आड़ू लेपचा (Gooseberry)
आलूचा लोकाट (Eriobotrya Japonica)
आलूबुखारा सेब
नासपाती

(घ) वन्य फल

आँचू (हिंसालू) पयँ (पदम, पयूँ)
काफल (Fragasia Indica) बादाम भोटिया
कीमू (कीम्बू) बमौरा
कुशम्यारु या चीलू बिही (Cydonia vulgaris)
खजूर बेड़ू (अंजीर)
गूलर वनमूली
गेठी मेहल
घिंघारु स्यूँता (चिलगोजा)
च्यूरा हिसालू काला (Rubus Punicalatus)
तीमिल हिसालू लाल (Rubus Punicalatus)
नींबू

(६) कुछ वृक्ष—शाल वैसे ४,००० फुटकी उँचाईतक पाया जाता है, यद्यपि इसके लिए अधिक अनुकूल स्थान तराई है। काली नदीकी उपत्यकामें शालवृक्ष मल्ला-असकोट जैसे ठण्डे स्थानमें भी पाये जाते हैं, किन्तु वहाँ वह उतना विशाल नहीं होता। शालकी-सी ही जलवायुको तून, साई और खरिक भी पसन्द करते हैं। भ्यूलका वृक्ष बड़े उपयोगका है। इसके पत्तोंको ढोर बहुत पसन्द करते हैं, और तरुण टहनियोंकी छाल रस्सी बनानेके काममें आती है। आम, बरगद, पीपल, शीशम ३,००० फुटकी उँचाईतक पाये जाते हैं। गोरी और काली नदियोंके संगमसे ऊपर जौलजीबी (२,१०० फुट) और बलुवाकोट (३,००० फुट) के पास एक ही प्रदेशमें अत्यल्प और अत्यधिक सभी प्रकारकी ऊँचाइयोंके होनेके कारण वहाँ मैदानी शीशमसे हिमाचलीय देवदारतकके वन मिलते हैं।

(क) चीड़—६,००० फुटतक इसका क्षेत्र है। बहुत धूपवाले पर्वतापार्श्वपर १,६०० फुट तक इसकी गति है; किन्तु दक्षिणी पार्श्वमें यह ७,२०० फुटतक मिलता है। चीड़ अपने साथ किसी दूसरे वृक्ष-वनस्पतिका रहना पसन्द नहीं करता, इसीलिए जंगलोंमें चीड़के वृक्षोंके नीचे सिर्फ उनकी अपनी ही पत्तियाँ बिछी मिलती हैं। गाँवके लोगोंके घरोंमें चीड़की लकड़ी बहुत काम आती है और यदि पानीमें न पड़े, तो चिरस्थायी भी होती है। इसके स्लीपर नदियोंमें बहाकर नीचे भेजे जाते हैं। हरे वृक्षके हीरको भी निकालकर मोमबत्तीकी तरह जलाया जा सकता है, यद्यपि वह धुआँ बहुत देता है। पेड़ोंको एक जगह छीलकर रबरकी भाँति टिनके डब्बे टाँग दिये जाते हैं, जहाँ रस (गन्दाबिरोजा)

जमा हो जाता है, इसीसे टरपेन्टीन (ताड़पीन) बनाया जाता है। सिन्नी और रानीखेत रेंजोंके चीड़ोंके जंगलोंके तृतीयांशको टरपेन्टीनके लिए रखा गया है। अलमोड़ा रेंजमें विनसार रक्षित वनका भी एक तिहाई इस कामके लिए है। सन् १९०८ में १,६९,५५३ वृक्षोंसे १३,४०१ मन गन्दाबिरोजा (लीसा या लासा) निकाला गया था, जिसपर १८,६३८ रुपये खर्च आये थे, (इसमें भवाली फैक्टरीतक ढो ले जानेका खर्च भी सम्मिलित है)। वृक्षको पाँच वर्षतक लगातार पाछा जाता है, फिर उसे १० वर्षकी छुट्टी दे दी जाती है। इतने समयमें घावकी जगह छाल जम जाती है। वयस्क वृक्षोंपर छेनेका प्रभाव काठके लिए अच्छा होता है, किन्तु तरुण वृक्षोंको कुछ हानि पहुँचती है। गन्दाबिरोजासे वार्निश, टरपेन्टीन तथा दूसरी कितनी ही चीजें बनायी जाती हैं।

(ख) बान (ओक)—यह ४,००० फुटसे ऊपर, विशेषतः ६,००० से ८,००० फुटपर अर्थात् चीड़से परे पाया जाता है। इसका काष्ठ बहुत कठोर होता है। जान पड़ता है इसीके कारण इसे वज्र कहा जाने लगा, जो बिगड़कर पश्चिमी हिमालयमें बान, यहाँ बंज और नेपालकी भाषामें बज्राँठ (वज्रकाष्ठ) हो गया। अपनी दृढ़ताके कारण इस वृक्षका काष्ठ यूरोपमें सदियोंतक जहाजोंके बनानेमें इस्तेमाल किया जाता था, किन्तु हमारे यहाँ जबतक बिजलीसे चलनेवाले आरे काममें नहीं लाये जायेंगे, तबतक इसकी लकड़ी केवल कोयले और ईंधनके लिए ही इस्तेमाल होती रहेगी। बर्फ पड़नेवाली जगहोंमें बानके सदाहरित कँटीले पत्ते जाड़ोंमें ढोरोंको भूखों मरनेसे बचाते हैं। ८,००० फुटसे ऊपरकी जगहोंमें बानका स्थान उसकी और कड़ी जातिका वृक्ष तिलौंज (Quercus dilatala) तथा करसू लेते हैं। इनका काष्ठ भी बान जैसा ही होता है, किन्तु उतना गाँठवाला न होकर सरल होता है। यदि मैदानमें इन्हें भेजा जा सके, तो ये बड़े उपयोगी सिद्ध होंगे। १०,००० फुटकी ऊँचाई तक पांगर (चेस्टनट) मिलती है।

(ग) रघा, चील, थनार, सुराई—रघाके सूचीपत्रीय वृक्ष ७,५०० से ११,००० फुटकी उँचाईपर मिलते हैं। परिपक्व वय होनेपर यह १५० फुट ऊँचा और मोटाईमें १२ फुट घेरेका होता है। इसका काष्ठ चीड़ जैसा होता है, किन्तु दुर्गम और दुर्बल स्थानोंपर होनेसे उतना काममें नहीं आ सकता। रघाकी बराबरकी उँचाईपर ही चील, थनार और सुराईके भी सूचीपत्रक वृक्ष होते हैं। सुराई (साईप्रेस) कभी-कभी अत्यन्त विशाल होता है। इसका काष्ठ दृढ़, कठोर और चिरस्थायी होता है, किन्तु अपने-आप नदीमें बहके जाना इसके लिए कठिन है। इन सूचीपत्रक वृक्षोंके क्षेत्रमें झाड़ीवाले ब्रोंस भी मिलते हैं, जिनके पुष्पगुच्छ लाल, नीले तथा शुद्ध श्वेत आदि अनेक रंगोंके होते हैं।

(घ) भुर्ज—इस वृक्षको सबसे ऊँची जगहोंमें १३,००० फुटकी उँचाईपर मजेमें शाखा फैलाये देखा जाता है। भुर्ज एक तरह यहाँके वृक्ष-क्षेत्रकी सीमा है।

(ङ) देवदार—यह मुख्यतः गंगाके पश्चिमका वृक्ष है। काली कुमाऊँमें कुछ जगह देवदार मिलता है, बाकीको जंगलविभागने बीज मँगाकर लगाया है।

(७) फलोद्यान—यहाँ बहुत तरहके फलवृक्ष मिलते हैं। ३,००० फुटतक मैदानी जामुन और आम पाये जाते हैं। इससे ऊपर जंगली सेब, नासपाती, गिलास (चेरी), खूबानी, आड़ू, अंजीर, काफल, रसभरी, ब्लैकबरीके फल होते हैं। गूजबरी (लेपचा) और काले, लाल, सफेद करंट हिमरेखाके पास पाये जाते हैं; ग्रामीण लोग आड़ू, खूबानी, नारंगी और केले लगाना अधिक पसन्द करते हैं। अलमोड़ा बिनसार जलना, देवधार तथा कुछ अन्य जगहोंमें फलोद्यान लगे हैं, जहाँ अच्छी जातिके फल पैदा होते हैं। अखरोट, जंगली और उद्यानीय दोनों प्रकारके होते हैं, जंगली अखरोटकी गिरी बेकामकी होती है। हिमके परे मोटिया बादाम (हेजूल) पाया जाता है।

चौबटिया फलोद्यान—रानीखेत-चौबटिया पहाड़पर (६,१०० फुटकी उँचाई) पर यह बाग ५० एकड़में अवस्थित है। इसका आरम्भ १८६९ ई० में हुआ था। यहाँ सेब, नासपाती, आड़ू, खूबानी, गिलास, स्ट्राबरी, लेपचा, अंजीर, तूत, ब्लैकबरी, फलोदके फल लगे हुए हैं। यहाँसे इन फलोंकी कलम भी मिल सकती है। इनके अतिरिक्त देवदार, अखरोट, पाँगरकी पौधें भी मिलती हैं। उद्यानकी स्थापनाके बाद मिस्टर क्रा इसके प्रबन्धक नियुक्त हुए जिनके समयमें सवा लाख पौधें लोगोंमें वितरित की गयी थीं। किन्तु लोगोंकी दिलचस्पी नहीं देखी गयी, जिससे पौधें बेकार गयीं। १८९० के बाद पौधें आधे दामपर लोगोंको तथा सार्वजनिक विभागोंको मुफ्त दी जाने लगीं। १८९४ से पूरा दाम लिया जाने लगा। २० वर्ष पहले बागको फलोंसे ढाई-तीन हजार रुपयेकी आमदनी हो जाती थी।

८. प्राणिजगत्—**(१) पशु**—अलमोड़ाकी पूर्वी सीमा काली नदी (उर्फ सरजू, उर्फ शारदा, उर्फ घाघरा) पूर्वी और पश्चिमी हिमालयकी सीमा है। यहाँ तराईसे सनातन हिमाच्छादित शिखरोंतककी भूमि तीन प्राणिक्षेत्रोंमें विभक्त है—(१) २ हजार फुटकी उँचाईतक उष्ण कटिबन्ध है, (२) उपोष्ण कटिबन्ध २ से ६ या ७ हजार फुटतक और (३) ६–७ हजार फुटसे ऊपरका शीत कटिबन्ध शीतप्रधान देशोंके प्राणियोंका वासस्थान है।

(क) हाथी—केवल भावर (तराई) में मिलता है, किन्तु यह इलाका सन् १९१० में इस जिलेसे निकालकर नैनीतालमें मिला दिया गया, इसलिए हाथीको अलमोड़ाका जानवर नहीं कह सकते।

(ख) मृग—साँभर १० हजार फुटकी उँचाईतक मिलता है। पहाड़का साँभर—जिसे यहाँ जडाऊ कहते हैं—अधिक बड़ा और मोटा होता है, यद्यपि घने जंगलमें रहनेके कारण उसका शिकार आसानीसे नहीं होता। चित्तल हरिण केवल भावरमें ही मिलता है। बारहसिंगा अक्तूबर-नवम्बरमें सींगका छिलका छोड़ता है। काकड़ हरिण (Barking deer) १० हजार फुटतक पाया जाता है। ३ से ६ हजार फुट तो इसके लिए बहुत अनुकूल स्थान है। काकड़ दो फुट उँचा, देखनेमें बहुत सुन्दर लगता है। नरके ऊपरी जबड़ेमें मजबूत खाड़ होती है, जिससे वह घाव कर सकता है। कस्तूरा मृग ८ हजार फुटसे ऊपर जंगलोंकी सीमातकमें पाया जाता है। कस्तूरीका इसकी नाभिमें अभाव-सा होनेके कारण अब इसके शिकारकी ओर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता। कस्तूरा २० इंचतक ऊँचा होता है। इसकी पीठपर कड़े, खड़े बाल होते हैं। सींग नहीं होते, किन्तु नर कस्तूराके मुँहमें तीन इंच लम्बी निर्बल खाड़ होती है। लोग इसे जालमें फँसा लेते हैं।

(ग) अज-मेष—गुराल बकरी ३ से ९ हजार फुटतक, कभी-कभी ११ हजार फुटपर भी पायी जाती है। नरके सींग छ इंचतकके होते हैं और मादाके दो इंच। आम तौरसे गुराल तीन-चारके झुंडमें रहते हैं, किन्तु बलिष्ठ गुराल अकेला रहना पसन्द करता है। कितनी ही बार यह कई गोलियाँ खाकर भी नहीं मरता। थर ७ से १२ हजार फुटकी उँचाईतक मिलता है। नरकी अपेक्षा मादाके सींग अधिकतया १३-१४ इंच लम्बे होते हैं, और बाल घुटनोंतक लटकते रहते हैं। इससे कुछ छोटा खरथर निचले स्थानोंमें रहता है। सराउ गुरालवंशीय है, किन्तु कदमें वह करीब-करीब थर जैसा होता है। यह दुर्लभ जानवर बड़े दुर्गम स्थानों, घने जंगलोंमें रहता है। कड़ी उतराईमें भी यह बहुत आसानीसे छलांग भर सकता है। इसके सींग ९-१० इंचके होते हैं। बढ़ाल (जंगली भेड़) गढ़वालमें जितना मिलता है, उतना अलमोड़ामें नहीं। हिमरेखासे नीचे १० से १६ हजार फुटकी घासवाली ढलानें इसे बहुत पसन्द हैं। नरके सींग २५ इंच लम्बे होते हैं। इसका मांस बहुत स्वादिष्ठ होता है।

(घ) हिंस्र-पशु—बाघ—यह तनकपुरकी तराईमें मिलता है, किन्तु कभी-कभी पहाड़में १० हजार फुटतक भी मिला है। अधिक भीतरी पहाड़वाले बाघ तराईमें नहीं जाते, उन्हें शायद गर्मी बर्दाश्त नहीं होती। पहाड़ी बाघ तराईवालेकी अपेक्षा अधिक तगड़ा होता है, इसके बाल अधिक लम्बे और घने तथा पूँछ छोटी किन्तु अधिक घने बालोंवाली होती है। १९वीं सदीके आरम्भमें बाघोंके उपद्रवके कारण कत्यूर और गंगोलीके इलाके निर्जन हो गये थे। कहावत थी—'खटयारीका साग, गंगोलीका बाघ'। बाघकी कमी हो जानेके कारण अब उसके मारनेपर सरकारी इनाम नहीं मिलता। बाघ अब बागेश्वर उपत्यकामें ही कभी-कभी प्राप्त होता है।

चीता—पहाड़में इसे बाघ या बघेरा कहते हैं। यह सारे जिलेमें साधारण तौरसे पाया जाता है तथा बड़ा ढीठ और खूँख्वार जानवर है। ढोर, भेड़, बकरी इसके मुख्य भक्ष्य हैं। कुत्ता इसे बहुत पसन्द है। आदमीका खून मुँहमें लग जानेपर यह नरभक्षक बाघसे भी अधिक भयंकर हो उठता है। यह कभी-कभी बस्तीमें दिनमें भी घुस जाता है। लोग जालमें फँसाकर इसे मारते हैं।

बर्फानी चीता—हिमशिखरमालासे दक्षिणमें यह शायद ही कभी देखा जाता है। बढ़ालोंके रहनेके पहाड़ोंमें अवश्य एक-दो बर्फानी चीते पाये जाते हैं। शिकारके जानवरोंका यह भयंकर शत्रु है। इसका मुलायम बाल पीली जमीनपर मटमैली धारी लिये होता है, पेटके रोम सफेद होते हैं, इसके चर्मकी बड़ी माँग है।

जिलेमें तीन जातिकी जंगली बिल्लियाँ भी मिलती हैं।

(ङ) रीछ भालू—यह २ हजार फुटतक पाया जाता है। किन्तु पर्वतश्रेणीके भीतर कभी नहीं पाया जाता। चींटी, कीड़े-मकोड़े, फल-मूल और मधु इसके मुख्य भक्ष्य हैं। किन्तु मांससे भी इसे परहेज नहीं है। हिमालयका काला भालू जिलेमें सब जगह मिलता है। बर्फानी जगहोंमें जाड़ोंके सारे समयमें यह छमासीमें संज्ञाहीन पड़ा रहता है, वैसे वर्षा छोड़ दूसरे समय बहुत कम दिखलाई पड़ता है। निचले पहाड़वाले काले भालू जाड़ोंमें तराईमें चले जाते हैं। ये वृक्षपर अच्छी तरह चढ़ सकते हैं। फल-मूल इसके भक्ष्य हैं और मडुआ (रागी) तो इसे सबसे प्रिय है। बिनसार तथा दूसरी जगहोंमें बगीचोंको यह बहुत हानि पहुँचाता है। कभी-कभी ढोरों तथा भेड़-बकरियोंको भी मारता और खा जाता है। इसकी दर्शन और श्रवणशक्ति बहुत तीव्र होती है। खतरा देखनेपर यह आदमीके ऊपर हमला कर बैठता है। इसका आक्रमण अधिकतर सिर और चेहरेपर होता है। लाल भालू अधिक दुर्लभ है और दरमा, जोहार और बाँसमें ही जंगलके ऊपरी भागोंमें—मानवकी पहुँचसे दूर—पाया जाता है। घास, लता, कन्दमूल और कीड़े-मकोड़े इसके मुख्य खाद्य हैं, किन्तु कभी-कभी पशुओंको भी मारकर खाते देखा गया है। इसकी घ्राणशक्ति तीव्र होती है किन्तु वही बात दर्शन और श्रवणशक्तिके बारेमें नहीं कही जा सकती। दिसम्बरसे मार्चतकके महीने इसकी लम्बी निद्राके हैं। यह डरपोक जानवर है।

(च) अन्य जन्तु—लकड़बग्घा और भेड़िया पहाड़में बहुत कम मिलते हैं। कोई (जंगली कुत्ते) झुंडमें घूमते जिलेके सभी भागोंमें मिलते हैं, साँभर और चित्तल हरिण इनके प्रिय शिकार हैं। ये अपने शिकारको घेरकर पेट या पिछले शरीरपर आक्रमण करते हैं।

(छ) सुअर आदि—जंगली सूअर १० हजार फुटतक पाये जाते हैं। पहाड़ोंमें बानके वृक्षकी छाल इसे बहुत प्रिय है। छतरैला (Pine marten) अहेरोंका ध्वंस करता है, ऊदबिलाव मछलियोंका। यहाँ लंगूर और लालमुँहे बानर बहुत मिलते हैं और फसलोंको भी बहुत बरबाद करते हैं। सीमाके पासवाले भागोंमें तिब्बती न्यान (भेड़), क्याङ् (जंगली गदहे) और याक (चमरी) भी आ जाती हैं।

(२) पक्षी—मैदानी पक्षियोंके अतिरिक्त यहाँ ठण्ढे मुल्कोंके पक्षी भी होते हैं। बाज, शाही, लोहर, गिद्ध जैसे मैदानी पक्षी आम तौरसे मिलते हैं। ठण्ढे मुल्कोंके पक्षी कोयल, खंजन, अबाबील, गौडिल्ला, कठफोरा, लहटोरा, पीलक, थरथरकम्पनी यहाँ मिलते हैं। शिकारकी चिड़ियोंमें रामचकोर १२ हजार फुट, भड़कीला चकोर ८ से १२ हजार फुट, कोकिला या पोकरा ६ से १० हजार फुट और दुर्लभ चीडचकोर ५ से २० हजार फुटतक पाये जाते हैं। साधारण तीतर ६ हजार फुटतक अतिसाधारण हैं। चकोरोंमें काला चकोर ६ हजार फुटतक मिलता है। म्योरा घने जंगलोंमें रहता है। बर्फानी चकोर बढ़ालके स्थानोंमें होता है। बर्फानी तथा दूसरे कबूतर भी होते हैं और तलही चिड़ियाँ कभी-कभी साइबेरियासे आ नदियोंपर रुकती हैं।

(३) मछली—यहाँके सभी जलाशयों और नदियोंमें बहुतायतसे मिलती हैं और सभी जातिके लोग इसे खाते हैं। बड़ी जातिकी मछलियोंमें महशीर और कलाबंस हैं। गुंचा (गोंइजा) सरयूके गहरे जलमें पायी जाती है। रोहू कम किन्तु चिलवा बहते पानीमें झुंडकी झुंड मिलती हैं। पहाड़में मछलियोंका जीवन कठिन है। गर्मीके समयमें वह अंडा देने ऊपरकी ओर दौड़ती हैं।

(४) सरीसृप—३४ जातिके साँप इस जिलेमें मिलते हैं, जिनमें सिर्फ आठ विषधर हैं। गेहुँअन ६ हजार फुटतक अक्सर मिलता है। करइत निचले पहाड़ोंतक ही रहता है। राज-गेहुँअन दस हाथतक लम्बा पाया जाता है। रसल-करइत (Viper) ६ हजार फुटतक अक्सर मिलता है, २० हाथतकका अजगर पहाड़ोंमें दुर्लभ है। गिरगिट हाथ-डेढ़-हाथतक लम्बे मिलते हैं।

जोंकें भी जिलेमें बहुत पायी जाती हैं, विशेषकर वर्षाके समय बानके जंगलोंमें तो इनका ही राज होता है।

अध्याय २

इतिहास

प्रागैतिहासिक काल—

१. **किन्नर-किरात**—गढ़वाल-कुमाऊँमें—और पश्चिमी हिमालयकी भी यही बात है—आज जिन जातीय तत्वोंको देखा जाता है, वही पहिले यहाँ मौजूद नहीं थे। कुमाऊँ-गढ़वाल और किन्नरके तिब्बती सीमान्तोंपर जो हमारे भोटान्तिक भाई आज मंगोल-मुखमुद्रामें ही नहीं, कितने ही भाषामें भी मिश्रित या शुद्धरूपमें तिब्बती पाये जाते हैं वे वहाँ छठीं शताब्दीतक ऐसे नहीं थे। सातवीं-आठवीं सदीमें तिब्बती लोग पश्चिमी हिमालयमें फैले। लदाख और बल्तिस्तानमें तिब्बती भाषाका प्रसार इसी समय हुआ और उनका प्रभाव भाषा और मुखाकृतिपर इतना पड़ा कि आज इस भूभागको 'छोटा तिब्बत' माना जाता है। हम आगे बतलायेंगे कि तिब्बती (भोट) जातिके पश्चिमाभिमुख प्रसारके बहुत पहलेसे गिलगित और काराकुरमतकका प्रदेश खश-दरद लोगोंका था, जो दोनों एक ही वंशके थे। ईसापूर्व द्वितीय सहस्राब्दीके प्रारम्भमें खश लोग पूर्वी मध्य-एशिया (काशगर, खोतान) की ओरसे आये। उनसे पीछे वैदिक आर्य उत्तरी भारतके मैदानों (कुरु-पंचाल) से हिमालयमें पहुँचे। इन दोनों जातियोंके आनेसे बहुत पहले एक जाति हिमाचलमें रहती थी, जिसे हम किन्नर-किरात जाति कह सकते हैं। किन्नरों और किरातोंके पारस्परिक सम्बन्धको ठीकसे बतलाना आसान नहीं है। किन्नरोंका देश एक समय हिमाचलमें गंगाके पनढरसे पश्चिममें सतलज और चन्द्र-भागाके पनढरतक फैला हुआ था और किरात गंगाके पनढरके पूर्वी छोरको लिये सारे नेपालतक थे। १८वीं सदीमें कोसीसे पूर्वमें बसनेवाली जातियाँ राई, लिम्बूयाखा, किरात कही जाती थीं। गोरखा-जुमलाके बीचके प्रधान निवासी मगर और गुरंग जातियोंको यद्यपि किरातमें नहीं गिना जाता था, किन्तु मानवतत्वकी दृष्टिसे यह भी उसी विशाल किरात जातिका अंग थीं। कालीके पश्चिमी तटपर (अस्कोटमें) अब भी राजी (राजकिरात) उसी किरात जातिके अवशेष हैं।

किन्नर और किरात (राजी) दोनों भाषाओंमें संस्कृतज और तिब्बती शब्दोंकी अधिकता पायी जाती है; किन्तु साथ ही उनमें उभयभिन्न एक तीसरी भाषा भी तल्लटके रूपमें विद्यमान है।

(१) किरात (राजी) भाषा—राजी लोग अस्कोट(अलमोड़ा)में बड़ी पिछड़ी अवस्थामें रहते थे। उनकी भाषाके कुछ नमूने देखिये—

(क) क्रियासूची[1]

आयो—जोत (कि.)	कानि—आया (कि.)
आयो चि वियन्—जोत आये (कि.)	किन—होओ (")
ईर्—गा (भविष्य)	कुने चि—,—हो (")
ईस—सो जा (कि.)	कै (पुवाँन)—हो गया (")
ईस जियर कै—सो जाते हैं (कि.)	कै हिन—हो गयी (")

१. कुमाऊँका इतिहास (श्री बदरीदत्त पांडे कृत) पृष्ठ ५२०-२३ [यहाँ संकेत है—कि = किरात, किन् = किन्नर, ति = तिब्बती, हि = हिन्दी आर्य, त = तमिल (द्रविड)]

खोअन कै—खुल गया (कि.)
गा—हिन—जायेंगे (")
गुन—हैं (")
गुनी—करै (")
घत—जा (")
चि—भूतकालिक प्रत्यय (")
चिकुने—हो (")
चि-गुनी—क्या करैगा (")
चि-जानी—खाया (")
चि-भीरे—आये हैं (कि. ति.)
छुजो—बैठो (कि. ति.)
छ्वै—बैठा (कि. ति.)
जा—खाना (ति.)
जानी—खा लिया (")
जारी । ति—खायेगा (")
जाबरे—खाता हूँ (")
जिगर—जात (कि.)
ठाडी—खडा (हि.)
ता—लो (कि.)
तारा कौनी—हल्ला मत कर
तु-ओर—पीता हूँ (ति.)
तुङ्—पी (ति.)
तुवाँ बोये—पीते हो (ति.)
पीय कुनास—आ रहा है (कि.)
पुबाँन कै—हो गयी (कि.)
बयाँ—दो (")
बये—देते (कि.)
बयेर—देवै (कि.)
बियन—आये (कि. किन्)
बीयर—आता हूँ (कि.)
भैकर—माँगते हैं (कि.)
यकी—उठ (ति.)
लाप अ—लाओ (कि.)
लो—आ (कि.)
सीयन—मरना, मर जायेगा (ति.)
स्यकारलम्—पहचानते हैं (कि.)
हना पौस्याँ—मँगाया (कि.)
हनावनी—मरता है तू (कि.)
हरै कोकि—पहचानते हो (कि.)
हानोन्—मारूँ (हि.)
हियन—होना (हि.)
ह्वैस्पकौनी—पहिचान (कि.)

(ख) शब्दसूची

कपाअख—कपास (हि.)
खोत—अच्छा (कि.)
गजिरौ—रातमें (")
गरा—धान (")
घुमड़—गेहूँ (हि.)
चअना—चना (")
चंजि—छोटा (ति.)
चीईणा—चीना (हि.)
तिलङ्—तिल (")
ती—पानी (कि. किन्)
दरो—चावल (कि.)
देव—वर्षा (हि.)
नामक—नाम (हि.)
नीक—अच्छा (हि.)
पया—लड़का (कि.)
पित्तअ—लोबिया (हि.?)
बडहर—भटमास (हि. ?)
बरी—बड़ी (हि.)
बाघो—बाघ (हि.)
भाट्ट—ब्राह्मण (")
भात्त—भोजन (")
मँदुवा—मँडुवा (")
माँअख—माष (")
माख्र—मसूर (")
मांदीदरो—सवाँ (?)
म्हे—आग (ति.)
याङ्—राह (ति.)
हलङ्—हल (हि.)

(ग) अव्यय-सर्वनाम

अगरा—देरी
अतर—अब
आख्—कौन (कि.)
इचे—इतने
कताई—किसलिए (हि.)
किनाचि—कब
किनौ—कब
कीले—कल
कीलेक—कल
कोता—वहाँ
ग्वथा—कहाँ
(वैला चिगुनिर—क्या करता है)
च्या—क्यों
जीवक—परसों

दे—रविवार
किलेक—सोमवार
नीव—मंगल
कुँव—बुध

ग—एक
नी—दो (ति., नी)
खुङ्—तीन (ति., सुञ्)
पारी—चार (हि.)
पाँच—पाँच (हि.)
तुरकौ—छ (कि.)

हित ला—यहाँ आ।
कोता घत्—वहाँ जा।
ग्वथा माँ चिपीयन—कहाँसे आये ?
ग्वथा जिगार—कहाँ जाते हो ?
ना बयाँ—मुझे दो (त., किन्)
दे हाँ चिजानी—आज क्या खाया ?
भात्त जा—भात खाओ (हि. ति.)
भात्त कै जानी—भात खा लिया

ता—मत
दे—आज (ति.)
ना—मैं (त.)
नी—तुम (त.)
भायर—बाहर (हि.)
माँ—से (कि.)
हँकताई—क्यों (")
हँक—हाँ (")
हा—क्या (")
हाँ—क्या (")
हाँ—नहीं (कि.)
हाँकु चि—क्यों (")
हित—यहाँ (हि.)
हियन—कब (कि.)

(घ) दिननाम

पारीख—बृहस्पति
पाँच—शुक्र
खात्रव—शनिवार

(ङ) संख्या

खात्त—सात (हि.)
आट्ठ—आठ (हि.)
नौव—नौ (हि.)
दख—दस (हि.)
डाक—सौ

(च) कुछ वाक्य

ती तुङ्—पानी पी। (किन्. ति.)
ठाडी किन—खड़ा
नीक चिकुनै—अच्छे हो।
म्हे बयाँ—आग दो।
निम् क्यनर—तुम्हें देता हूँ। (त.कि.)
हाँ बयाँ—नहीं देता। (कि., किन् .)
गाजिरौ कै खोअन—रात खुल गयी।
ती लापअ—पानी लाओ।

नु जावरे—खाता हूँ।
कै इस् जियर—सो जाते हैं।
निङ् पया किनौ हियन्—तेरा लड़का कब हुआ ?
ना बरी गुन—हम बड़े हैं।
नी चीचंजी गुन—तुम छोटे हो।
नी हँक ची ट्रकर—तुम क्या माँगते हो।
हँक हाँ चिगा—क्यों नहीं आते ?
निङ् मेताङ् कुनीले—तेरी स्त्री है।
नी सियन्—तू मरेगा। (त. ति.)
होना चिगुनिर—मारूँ तो क्या करेगा ?
नी कुच्या हनावनी—क्यों मारता है ?
भायर भाट्ट पीयकुनास—बाहर ब्राह्मण आ रहा है।
हम् बयेर—क्या देवे ? (किन्)
ईस हँक तै हना पौस्याँ—इन्होंने क्या मँगाया ?
किना चि बियर—कब आवेगा ?
इचे कताई हना पौस्याँ—इतना किसके लिए मँगाया ?
हम् घैला चिगुनिर—क्या करता है ?
आखू बियन्—कौन आया ?
आखू कानि—कौन आया ?
निङ् हा नामक—तेरा क्या नाम (त.,कि., हि.)
अतर अगरा कै हिन किलेक गहिन—अब देर हो गयी, कल आवेंगे।
नी चे हरैकोकि – तुम पहिचानते हो।
गजिरौ ता घत बाघो ति जारी—रातको बाहर मत जा, बाघ खायेगा।
देवलागो कोनेर भीतर ला—वर्षा हो रही है भीतर आ।
नी खोत छुजी—अच्छी तरह बैठो।

राजी (राज-किरात) भाषाकी कोई कथा या गीत हमारे सामने नहीं है, इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि इस भाषामें कितने प्रतिशत हिन्दू-आर्य, तिब्बती और मूल किरात भाषाके शब्द हैं। संख्यावाची ११ शब्दोंमें दो–नी, खुङ् (सुङ्, सुम) और म्हें (मे–आग) तिब्बती, ती (जल) किन्नर और किरात भाषाओंमें समान है। धातुओंमें किराती बीयन (आता है) और किन्नर बीतोक (आयेगा) एकार्थवाची हैं। सम्भव है राजी भाषाके विस्तृत संग्रहमें किन्नर-किरातके और भी समान शब्द मिलेंगे। सर्वनामोंमें ना (मैं), नी (तुम) तमिल भाषामें मिलते हैं। यह आश्चर्य करनेकी बात नहीं, उत्तरी भारतकी भाषाओंमें पिल्ला, मीन आदि कितने ही द्रविड भाषाके शब्द मौजूद हैं और मानवतत्वके अनुसार उत्तरप्रदेश-बिहारके लोगोंमें आर्यद्रविड शरीराकृतिकी प्रधानता है।

(२) किन्नर-भाषा—किन्नर और किरात एक ही मूल भाषाकी शाखाएँ हैं, यह ऊपरके कितने ही उदाहरणोंसे मालूम होगा; यद्यपि इसका यह अर्थ नहीं कि किरात-भाषाने हिन्दू-आर्य और तिब्बती भाषासे काफी नहीं लिया। तुलनाके लिए यहाँ हम किन्नर (कनौरी) भाषाके भी कितने ही शब्द देते हैं[1]—

अग—गुफा
अते—भाई
अपी—दादी
ओरचस्—बढई
कङ्—बेटा
कर—भेड़ा
का—अखरोट
कुई—कुत्ता
कुक—उल्लू
कुम—तकिया
क्यङ्—चिनगारी
क्यलमङ्—देवदार
क्युच—चूहा
खतुच—दुलहा
खलङ्—गाय
खस—भेड़

1. विस्तारके लिए देखिये लेखकका 'किन्नर देश', पृष्ठ ३८३-४४३।

खो—हरिण
गस—परिधान
गारङ्—नदी
गुजेर—मच्छर
गुद—हाथ
गोलिङ्—कुदाल
ग्यदुर—अँगीठी
चीसङ्—आटा
छङ्—बालक
छटोच—टोकरी
छतक—डंस
छतगढ—जलपात
छद—दामाद
छेचस—स्त्री
छेचाच—तरुणी, बालिका
जू—बादल
टका—बत्थू
टलङ्च—चमड़ा
ठंटी—चबूतरा
ठनङ्—बर्फ
डना—टीला
डंवर—देवता
डेखराच—तरुण
डेखरस—पुरुष
डोमङ्—लोहार
तिक—चकोर
तिपलोक्च—मेंढक
तिशम्—जोंक
ती—जल
तुरप्यातच्—चमगादड़
तेते को—परदादा
तेत—नाना, दादा
थितफलच—शिशु
दमसू—बैल
दाओचो—बहिन
दाच—पात
दुसरङ्—चिमनी
नङ्—थाली
नाने—मामी
पद—भुर्ज
पिङ्—गाल
पिशी—बिल्ली
मुशमिक—बोना
प्याच्—धुन
प्वम्—हिम
फोच—गदहा
बङ्—पैर
बनिङ्—बर्तन
बरमिक्—मीसना, मसलना
बस—मधु
बाखोर—बकरी
बेरशा—डंडा
बोद—छाल
बोम—पथ
मन—मादा
ममा—फूफा
मल—चाँदी
मे-रक—अग्निपाषाण, चकमक
यङ्—मक्खी
यालू—गुलाब
रग्—पत्थर
रङ्—घोड़ा
रिग्—जूँ
रिम्—खेत
रु—ससुर
रुजा—बूढ़ा
रोच—कस्तूरा (हरिण)
रोन—लोहा
लस्त—कुल्हाड़ी
लान—वायु
लानिङ्—लता
लानिक्—काटना
लिम्—कैलू
लोमिक—ओखाना

लीलाच—आँधी	सावनिक—भूतनी
लुम—आँधी	सुट—खटमल
लेमा—गँडासा	सोफोक—बिच्छू
वन—भाप	सोत—जस्ता
वल—शिखर	सोलिच—पौधा
शग—कंगुनी	स्कन—साग
शङ्—कंकड़	स्क्यो—नर
शू—देवता	स्तुकुच—नाक
श्पक—पिस्सू	स्पाच—पौत्र
सखुल—भाथी	होङ्—कीट
सग—हीर	होम—रीछ

किन्नरकी प्राचीन भाषामें शू (सू) देवतावाचक शब्द है, जिसमें हिन्दू-आर्य 'महा' लगाकर महासू बनाया जो जौनसारका सबसे बड़ा तथा किन्नरका एक देवता है। गढ़वालके बहुतसे ग्रामोंके नामोंमें सू (धरासू) और स्यूँ शब्द आते हैं; जैसे बारहस्यून पर्गनेकी पट्टियोंके नाम हैं—

१. अस्वल स्यूँ	८. नापई स्यूँ
२. इदवाल ,,	९. पटवाल ,,
३. कंदवाल ,,	१०. बंगार ,,
४. कफोल ,,	११. बनेल ,,
५. खाट ,,	१२. मन्यार ,,
६. गगवार ,,	१३. रावत ,,
७. नांदल ,,	१४. सितोन ,,

डाक्टर पातीराम[1] ने स्यूँको सिंहका अपभ्रंश माना है और श्री शालिग्राम वैष्णवने[2] सीमाका अपभ्रंश। बारह-स्यूँ बहुत ही घना आबाद इलाका (२११ वर्गमील, जनसंख्या ५८,१७१) उत्तर और पश्चिममें अलकनन्दा तथा दक्षिण और पूर्वमें क्रमशः संयुक्त नयार एवं पश्चिमी नयारसे घिरा है, 'यहाँके गाँव बड़े और लोग बहुसंख्यक एवं परिश्रमी हैं।'[3] गढ़वाल जिलेका मुख्य स्थान पौड़ी इसी पर्गनेमें है। स्यूँको किन्नर-किरातका शब्द मानना अधिक युक्तियुक्त मालूम होता है।

(३) नाग—हिमाचलके आदिम निवासियोंकी ही वस्तुतः किन्नर, किरात और नाग अलग अलग शाखाएँ थीं।

ह्वीलरने अपने 'भारत-इतिहास'में नागोंके बारेमें लिखा है—

'गढ़वालमें नागोंका सम्बन्ध हम नागपुर और उरगम् पट्टियाँ पाते हैं। सार्वजनिक परम्परा बतलाती है कि अलकनन्दा-उपत्यकामें नागोंकी बस्तियाँ थीं, पाण्डुकेश्वरमें शेषनागकी पूजा की जाती है। रतगाँवमें भेकलनाग, तलोरमें संगलनाग, मरगाँवमें बनपुरनाग, जेलम (नीती)में लोहँडियानाग, नागनाथ (नागपुर)में पुष्करनाग पूजे जाते हैं।' पौड़ीके पास नागदेवकी पूजा होती है। बहुतसे

1. Gaswal: Ancient & Modern p. 220.
२. 'भूगोल जिला गढ़वाल' पृष्ठ ३७।
3. Gazet. p. 149.

गाँवोंमें यहाँ 'नागराज तोक' नागोंके मन्दिरोंके ही अवशेष हैं। नागपुर, दसोली और पैनखण्डा नागोंके गढ़ थे—उरगम् (पैनखण्डा)में बोरचानाग, नागपुरमें वासुकी और पुष्करनाग और दसोली में तक्षकनागकी अब भी प्रतिष्ठा कम नहीं है। प्रागार्यकालीन नागोंके बहुतसे गढ़ भारतके और भागों (राजगृह आदि) में मिलते हैं, हो सकता है हिमाचलके इस भागके कितने ही पुराने गढ़ इन्हीं नागोंके बनाये हुए हों।

(४) किरात-भूमि—ताल्मीने भी जमुनासे शारदातकके प्रदेश (गढ़वाल-कुमाऊँ) को किरातोंका निवास तथा तंगण प्रदेश कहा है। तंगण या टंगण प्रदेश अपनी छोटी जातिके मजबूत टांघनों (घोड़ों) के कारण बहुत प्रसिद्ध था। आज भी टंगणी नामकी एक चट्टी चमोलीसे १८ मील ऊपर तथा जोशीमठसे १५ मील नीचे मौजूद है, लेकिन ये तंगण किरात नहीं, खश थे।

केदारखण्ड खसमण्डल बननेसे पूर्व किरातमण्डल था, यह केदारखण्डके निम्न श्लोकों (अध्याय २०६) से भी मालूम होता है—

तस्मिन्नेव महाक्षेत्रे हिमवदाश्रमे मुनेः। वशिष्ठो मुनिशार्दूलोऽरुन्धत्या च समन्वितः ॥१॥
ययौ महादेवमनाः संयतात्मा दृढव्रतः। चकार वसतिं तत्र भिल्लानां निचयैर्युतः ॥२॥
रेमे सोऽपि किरातैश्च सन्ध्यास्नानपराङ्मुखः। मृगमांसाशनो नित्यं कृष्णकम्बलकञ्चुकः ॥४॥

महाभारत (वनपर्व, अध्याय १४०) में भी किरात-तंगण निवासका वर्णन है—

किराततंगणाकीर्णं पुलिन्दशतसंकुलम्। हिमवत्यवरे जुष्टं पिकाश्चर्यसमाकुलम् ॥२५॥
सुबाहुश्चार्पिता दृष्ट्वा पूजया प्रतिगृह्णतः। विषयान्ते कुलिन्दानामीश्वरप्रीतिपूर्वकम् ॥२६॥

हिमवान्के इन किरातोंका परिचय महाकवि कालिदास (चौथी सदी)को भी था। शायद उन्हें भारतकी सबसे ऊँची चोटी नन्दादेवीकी निवासिनी नन्दा पार्वतीका पता था और कुमारके सम्भव (जन्म) को उन्होंने यहीं माना था। उन्होंने किरातोंका वहाँ स्मरण किया है—

इदं तुषारस्रुतिधौतरक्तं यस्मिन्न दृष्ट्वा पिहितद्विपानाम्।
विदन्ति मार्गं नखरन्ध्रमुक्तैर्मुक्ताफलैः केशरिणां किरातैः ॥६॥
भागीरथीनिर्झरसीकराणां वोढा मुहुः कम्पितदेवदारुः।
यद्वा पुरान्विष्ट मृगैः किरातैरासेव्यते भिन्नशिखण्डिबर्हः ॥७॥

२. खस—ऋग्वेदकालीन पितापुत्र पंचालराज दिवोदास-सुदासका शम्बर आदि जिन असुर-राजाओंके साथ युद्ध हुआ था, वे हिमाचलके इसी किन्नर-किरात-भिल्ल-नाग जातिके सरदार थे; किन्तु, यह संघर्ष भीतरी हिमालयमें न होकर पंचाल (रुहेलखण्ड) से मिलते पहाड़ी इलाकेमें हुए होंगे। पहाड़में बसनेके लिए वैदिक आर्य बहुत पीछे आये। उनके आनेसे पहिले ही उन्हींके भाईबंद खश (खस) मध्य-एशियाके पहाड़ों ही पहाड़ आकर गिलगितसे काली नदी और पीछे नेपालके पूर्वी सीमान्त-तक फैल गये। 'आज भी खस पहाड़में अपनी संख्याके कारण बहुत महत्व रखते हैं।'[1]

(१) संस्कृतमें खस—'केदारे खसमण्डले' की उक्तिके अनुसार केदारखण्ड खसदेशका पर्याय है। गंगाकी मुख्यधारा यद्यपि भागीरथीको माना जाता है, किन्तु जलकी मात्रा एवं लम्बाईको देखनेपर अलकनन्दा और उसकी भी ऊपरी धारा सरस्वतीको—जो माणा जोतसे निकलती है—गंगा मानना होगा। भारतकी सबसे पुनीत नदीका उद्गमस्थान होनेसे केदारखण्डकी महिमा अधिक होनी ही चाहिये। किन्तु इतिहासकी ठोस सामग्री—मूर्ति, अभिलेख आदि हमें चौथी सदीसे आगे नहीं ले जाते। भाषाकी दृष्टिसे गढ़वाल और कुमाऊँकी आजकी भिन्नता काफी पुरानी मालूम होती है और

१. All India Gaz, p. 112.

इसी तरह इन दोनों देशोंका राजनीतिक विलगाव भी पहलेसे रहा है, किन्तु यह भेद खश-काल, कत्यूरीकालमें भी उतना नहीं रहा होगा; तो भी आशा रखनी चाहिये कि कूर्मांचल-केदारखण्डमें केवल शकों, गुप्तों, भोटों, कत्यूरियोंके शासनकालमें ही राजनीतिक एकता रही होगी। कुमाऊँमें पीछे चन्द्रवंशने इस एकताको कायम किया। बाकी समयोंमें देश सदा छोटी-छोटी ठकुराइयोंमें बँटा रहा। खसोंकी निवासभूमि बहुत विशाल रही है, जिसमें किसी समय काशगर (खशगिरि)से लेकर प्रायः सारा हिमालय सम्मिलित रहा।

महाभारतमें युधिष्ठिरके यज्ञमें भेंट लेकर आनेवालोंमें खशोंका उल्लेख है[1]—

मेरुमन्दरयोर्मध्ये शैलोदां अभितो नदीम्। एते कीचकवेणूनां छायां रम्यामुपासते ॥२॥
खसा एकासना ह्यर्हा, प्रदरा दीर्घवेणवः। पारदाश्च कुलिन्दाश्च तंगणाः परतंगणाः ॥३॥
तद्वै पिपीलकं नाम उद्धृतं यत् पिपीलिकैः। जातरूपं द्रौणमेयं अहार्षुः पुंजशो नृपाः ॥४॥
पार्वतीयं बलिं चान्यं आहृत्य प्रणताः स्थिताः। अजातशत्रोर्नृपतेर्द्वारि तिष्ठन्ति वारिताः ॥५॥

[मेरु और मन्दर (दोनों पर्वतों)के बीच शैलोदा नदीके किनारे कीचक (नामक) बाँसोंकी रम्य छायामें खस, एकासन, अर्ह, प्रदर, दीर्घवेणु, पारद, कुलिन्द, तंगण, परतंगण लोग बसते हैं, ये राजा (युधिष्ठिर) के यज्ञमें पिपीलिकाओं (चीटियों) द्वारा निकाले पिपीलक नामक सुवर्णको द्रोण-द्रोण भर पुंजशः लाये।...वे पार्वतीय उपायनोंको लिये शत्रुहीन राजा (युधिष्ठिर)के द्वारको घेरे प्रणत खड़े थे।]

आज भी खस लोग इसी नामसे काँगड़ासे नेपालतक पुकारे जाते हैं। कुलिन्द>कुनेत>कनेत शिमला और कुल्लूके पहाड़ोंमें खसोंके ही पर्याय माने जाते हैं। तंगण जाति और नगरका नाम कत्यूरी अभिलेखोंमें आया है। आज भी गढ़वाल और अलमोड़ाके राजपूतोंकी एक जाति 'टंगणिया'[2] है। पुरानी तंगण और परतंगण जाति अकलनन्दा तथा मन्दाकिनीकी ऊपरी उपत्यकाओंमें रहती थी, जहाँ पहले किरातोंका प्राधान्य था।

महाभारतके युद्धमें खश लोग सात्यकि (कौरवपक्षीय) के साथ लड़े थे[3]। मनु[4] ने खशोंको क्षत्रियसे शूद्र हो जानेका फतवा देते कहा है—

शनकैस्तु क्रियालोपाद् इमाः क्षत्रियजातयः। वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥४३॥
पौण्ड्रकाश्चौड्रद्रविडाः कम्बोजा यवनाः शकाः। पारदाः पह्लवाः चीनाः किराता दरदाः खशाः॥४४॥

[पौण्ड्र, ओड्र, द्रविड़, कम्बोज, यवन, शक, पारद, पह्लव, चीन, किरात, दरद और खश, ये क्षत्रिय जातियाँ संसारमें क्रियाभ्रष्ट होने तथा ब्राह्मणोंका दर्शन न पानेसे धीरे-धीरे शूद्र हो गयीं।]

यद्यपि यहाँ तथा अन्यत्र तंगणों, कुलिन्दों, दरदोंको खशोंसे अलग गिनाया गया है किन्तु वस्तुतः ये जातियाँ भी विशाल खश-जातिकी ही अंग थीं।

महाभारतमें खश आदि ऐतिहासिक जातियोंकी उत्पत्तिके बारेमें बतलाया गया है कि जब वशिष्ठकी गाय नन्दिनीको उनके प्रतिद्वन्द्वी गाधिसुत विश्वामित्रने जबर्दस्ती ले जाना चाहा तो नन्दिनीने अपनी रक्षाके लिए इन जातियोंको अपने भिन्न-भिन्न अंगोंसे उत्पन्न किया—

असृजत् पल्लवान् पुच्छात् प्रस्नवाद् द्रविडान् शकान्। योनिदेशाच्च यवनान् शकृतः शबरान् बहून्॥३५॥

१. सभापर्व, अध्याय ५२।
२. देखिये, परिशिष्ट ४।
३. महाभारत द्रोणपर्व १२१।४३, उद्योगपर्व १६०।१०३।
४. मनुस्मृति, अध्याय १०।

सृजतश्चासृजत् कांश्चित् शबरांश्चैव पार्श्वतः । पौण्ड्रान् किरातान् यवनान् सिंहलान् बर्बरान् खसान् ।
चिबुकांश्च पुलिंदांश्च चीनान् हूणान् सकेरलान् । ससर्ज फेनतः सा गौः म्लेच्छान् बहुविधानपि ॥३७॥
—आदिपर्व, अध्याय १७६

अन्यत्र भी—

गान्धरान् मद्रकान् मत्स्यान् त्रिगर्तान् तंगणान् खशान् ॥१८॥
—कर्णपर्व, अध्याय ८

और कल्किपुराणमें—

खशकाम्बोजकान् सर्वान् शबरान् बर्बरानपि ॥३२॥
मरुः खशैश्च काम्बोजैः युयुधे भीमविक्रमैः । देवापिः समरे चीनैर्बर्बरैः तंतणैरपि ॥४१॥
तृतीयांश, अध्याय ६

इन उद्धरणोंसे पता लगता है कि ईसाकी आसन्नपूर्व और पश्चात्की शताब्दियोंमें हमारे इतिहास-भूगोलके जानकारोंको खशोंका परिचय था ।

(२) रोमक लेखक और खश—रोमक इतिहासकार प्लीनी (७९ ई०) ने खशोंके बारेमें लिखा है—'सिन्धु (Indus) और जमुना (Jomanes) के बीचकी पहाड़ी जातियाँ खश (Cesi) और क्षत्रियाणी (खत्री Cetriboni) हैं, जो जंगलोंमें रहती हैं ।'

ऐसे और उद्धरणोंपर भी विचार करते हुये अट्किन्सनने लिखा है[1]—

'प्लीनीके अनुसार उस समय खश लोग अपने वर्तमान निवास कुमाऊँ और नेपालसे बहुत पश्चिममें रहते थे और टौंस तथा शारदा (काली) के बीचकी भूमि (गढ़वाल-कुमाऊँ) में तंगण और किरात रहते थे ।'

तालमी (८७-१६५ ई०) को उद्धृत करके अट्किन्सनने फिर लिखा है[2]—

'वह (१) दर्दोंको सिन्धुके उद्गमके पास और (२) कस्पेरोई (Kasperaioi)को झेलम, रावी, चनाबके उद्गमोंके पास रखता है, (३) कुलिन्द व्यास-सतलज-यमुना-गंगाके उद्गमोंके पास रहते थे, जिनका देश कुलिन्द्रिन (Kulindrine) कहलाता था । इनमेंसे पहिले (दर्द) अस्तोर और गिलगितमें आज भी बसते हैं, दूसरे कस्पेरोई कश्मीर (उपत्यका) और सतलजके बीचके निवासी थे और तीसरे (कुलिन्द) सतलज और गंगाके बीचके थे ।'

गिलगितसे जोजीलातकके निवासी आज भी दरद कहे जाते हैं । उक्त डाँड़ेके उस पार कस्पेरोई या कश्मीरी झेलम (वितस्ता) की उपत्यकामें रहते ही हैं । उनसे पूर्व चनाबतक (कश्तवार और चम्बा) की जातियाँ खशोंके अन्तर्गत हैं, यद्यपि खश नामका पूरा प्रयोग उससे पूर्व कुल्लू-काँगड़ासे लेकर नेपालतक ही आजकल होता है । कुल्लूके कुनेत (कुलिन्द) लोग आज भी खसिया और राव दो श्रेणियोंमें विभक्त हैं । कुनेत या कनैत (कुलिन्द) नाम आजकल कश्तवार-चम्बासे शिमला और कनोर (ऊपरी सतलज) तक ही अधिक प्रचलित है, किन्तु यह लोग खसिया या खोसिया नामसे भी प्रसिद्ध हैं, जिससे स्पष्ट है, कुनेत या कुलिन्द भी खशोंमेंसे ही थे ।

अट्किन्सनने फिर लिखा है[3]—

'गंगा तटवासी जातियोंमें सबमें उत्तरमें तंगणोंका स्थान था और वह सरबू (पालीमें सरभू

१. Himalayan Districts, Vol. II. p. 355.
२. वही ।
३. वही, पृष्ठ ३५६ ।

और आधुनिक शारदा)के ऊपरी भागमें रहते थे।' आज भी इस भूमिमें हिमालयके अच्छे टाँघन पैदा होते हैं। खशोंकी एक उपजाति आज भी 'टंगणिया' मौजूद है, जोशीमठ और चमोलीके बीच टंगणी नामकी एक चट्टी भी है। पाण्डुकेश्वरमें प्राप्त एक ताम्रलेखसे मालूम होता है कि कत्यूरी राजा ललितशूर (९वीं सदी) ने तंगणपुर और अन्तरांग नामक दो जिलों (विषयों)की कुछ भूमि बदरीनाथके ब्राह्मणोंको दी थी। इनमेंसे कुछ भूक्षेत्रोंके दक्षिणमें गंगा बहती थी, इसलिए ये जिले गंगाके ऊपरी भागमें अवस्थित थे। वहींके एक दूसरे ताम्रपत्रमें बुद्धाचल और काकस्थलका भी उल्लेख है। काकस्थल 'केदारखण्ड'में उल्लिखित काकाचल ही है, जो भागीरथी और अलकनन्दाके संगम (देवप्रयाग) के पास था। इस प्रकार तंगणपुरको आसानीसे हम गंगाकी ऊपरी तटभूमि तथा अन्तरांगको भागीरथी और अलकनन्दाके बीचका द्वीप मान सकते हैं।

कत्यूरी राजधानीके तंगणपुर, सुभिक्षपुर, कार्तिकेयपुर भिन्न-भिन्न नाम थे जो सम्भवतः वर्तमान जोशीमठ थी। इसलिए बुद्धाचल या 'केदारखण्ड' का बौद्धाचल पैनखण्डामें ही कहीं बौद्धोंका कोई पवित्र पर्वत था।

(३) खश पामीरतक—खश, खस और कश एक ही शब्दके भिन्न-भिन्न उच्चारण हैं। नेपालसे कश्मीरतककी प्रभावशाली जातियाँ अब भी खश या कश (कश्मीरी) ही पुकारी जाती हैं। तिब्बती भाषामें कश्मीर और कश्मीरियोंको खछे कहते हैं, जो खशका ही बिगड़ा रूप है। आजकल वहाँ खछे मुसलमानका पर्याय माना जाता है, जिसका कारण यही है कि तिब्बती लोगोंने मुसलमानोंको पहले-पहल कश्मीरियों (खशों)के रूपमें देखा। हमारा भी मुसलमानोंसे घनिष्ठ परिचय तुर्कोंके रूपमें सर्वप्रथम हुआ था, इसलिए तुर्क शब्दको कबीरने (हिन्दू-तुरक) मुसलमानका पर्याय मान लिया।

कश्मीरसे आगे चित्राल और कश्कर (उत्तरी और दक्षिणी)के इलाकों तथा यस्सन और मस्तूजके इलाके हैं, जहाँके निवासी खो कहे जाते हैं। कश्मीरकी भाँति कश्करमें भी वही कश या खश शब्द जुड़ा हुआ है। इस प्रकार नेपालसे दरदोंकी पश्चिमी सीमा (गिलगित) तक आज भी खस जातिका निवास है।

अट्किन्सनने खशों, कश्करके खो लोगों और काबुलके कटोरोंको एक बतलाते हुए लिखा है[1]—

'वे (खश) एक ऐसी जातिके अंग हैं, जिसने हिमालयके भिन्न-भिन्न भागोंपर अपनी छाप छोड़ी है।...इनका तथा पश्चिमी हिमालयकी जातियोंका एक ही उद्गम है। कालान्तरमें यह महाजाति राजनीतिक कारणों तथा दूसरी जातियोंके घुस आनेपर भिन्न-भिन्न लोगोंमें बँट गयी। इनमेंसे कुछ मुसलमान हो गये, कुछ बौद्ध रहे, और...कुछ ब्राह्मणिक प्रभावोंके कारण धर्म, आचार तथा भाषामें हिन्दू हो गये।...सभी जानते हैं, कि मानवधर्मशास्त्र (मनुस्मृति)के कर्ताओं द्वारा शास्त्रीय रीतिसे स्थापित जातियोंके लिए सम्मान, धन, शक्ति वंशपरम्परासे प्राप्त (होती) है, इसलिए वह (खश) अपना सम्बन्ध अपनेसे किसी उच्चतर वंशसे जोड़ना चाहते हैं। आज भी ध्यानसे देखनेपर उन नियमोंको काम करते देखा जाता है, जिन्होंने सैकड़ों वर्षोंके भीतर आदिम पहाड़ी जातियोंको अच्छे हिन्दुओंके रूपमें परिणत कर दिया। एक सम्पन्न कुमाउँनी संगतराश आसानीसे एक निम्न राजपूत खसियाकी लड़कीसे ब्याह कर सकता है, और एक सफल खसिया किसी देशागत शुद्ध राजपूतकी लड़की मोल ले ब्याह कर सकता है। ये लोग दिनों-दिन अधिकसे अधिक कट्टर होते जा रहे हैं।...उत्तरमें तिब्बतसे और दक्षिणमें मैदानसे जो (विजेता) जातियाँ आ घुसती रहीं, वह या तो पचर बनकर (अलग जातिके

1. Himalayan Districts, Vol. II pp. 440-41.

रूपमें) यहाँ रह गयीं, अथवा खसियोंके ऊपर छा गयीं—कहींपर उन्होंने विजित जातियोंके साथ व्याहसम्बन्धसे और कहीं अवैध सम्बन्धसे रक्तसम्मिश्रण कर डाला। इन्हीं कारणोंसे कहकरके खोभों और कटोरों अथवा कुमाऊँके कत्यूरी और खसियोंके बीच सम्बन्ध स्थापित करना सम्भव नहीं है; दोनों एक हैं, इसे माननेके काफी प्रमाण हैं।'

हिमालयकी भिन्न-भिन्न जातियों और प्रदेशोंके सम्बन्धमेंकी पौराणिक जनश्रुतियोंके आधारपर अट्किन्सनकी राय है[1]—

'विलमित और अस्तोरके निवासी दरद हैं, यह प्रसिद्ध ही है। खशीर भी कुनुओंकी भाँति खशोंकी एक शाखा हैं, जिन्हें प्लीनीने कशिरी (Casiri) कहा है। वराहसंहिता (बराहमिहिर) के नामोंको लेनेपर हम तंगणोंके बाद ऊपरी टौंसके तटपर कुलूत और सारिलोंको पाते हैं, फिर बनदेश (आता) है, जो कि आजकलका जमुनाके पासका इलाका (जौनसार) है। फिर भागीरथी-उपत्यकामें स्वेन्-चाङ्का ब्रह्मपुर (बाडाहाट या उत्तरकाशी), तब दार्वाद या दारुदेश अलमोड़ाके पासको इलाका है, जिसके पास जगेसरके समीप पूर्वकालमें अवस्थित आम्रवन था और फिर राजकिरातोंका देश।... मार्कण्डेयपुराणमें ब्रह्मपुरका उल्लेख है, जिसके एक ओर वनराष्ट्र था और दूसरी ओर एकपद, खस और सुवर्णभूमिके प्रदेश थे। सुवर्णभूमि या स्वेन-चाङ्का सुवर्णगोत्र तिब्बतका ङ-री-को र्-सुम (मानसरोवर) प्रदेश है, जो गढ़वाल और अलमोड़ाके उत्तरमें अवस्थित है।'

इस प्रकार उस महाजातिका हमें पता लगता है, जो किन्नर-किरात जातिकी प्रधानताके बाद उनकी भूमिमें फैलकर धीरे-धीरे सर्वेसर्वा बन गयी। भारतके अन्यत्रके उदाहरणोंसे यह समझना मुश्किल नहीं है कि पहले आये खशों और उनके बाद आये वैदिक आर्योंने किन्नर-किरातोंको एक आत्म-सम्मानयुक्त स्वतन्त्र जाति न रहने दे उन्हें डोम (शिल्पकार) जातिमें परिणत कर दिया, अथवा जंगलोंमें भागनेके लिए मजबूर किया। खस और वैदिक आर्य जातियोंमें आसानीसे समझौता हो गया, क्योंकि वे मूलतः एक ही जातिकी शाखाएँ थीं और दोनोंकी मिली शक्ति ही किरातोंको पूरी तौरसे दबा सकती थी।

(४) खशोंकी समाधियाँ—खश और शक मूलतः एक जाति थी, यह हम आगे बतलायेंगे। शकोंकी भाँति खशोंमें भी मुर्दोंको सामर्थ्यानुसार अच्छी प्रकार समाधि देनेकी प्रथा थी। महान् शक सामन्तोंकी जो समाधियाँ दक्षिणी रूस और अल्ताईमें मिली हैं, उन्हें देखनेसे छोटे रूपमें मिश्रकी पुरानी समाधियाँ याद आती हैं। हिमालयके ये पशुपाल खश उतने समृद्ध नहीं थे तो भी कोई आश्चर्य नहीं होगा, यदि खश सरदारोंकी कुछ बड़ी कब्रें भी मिलें।

खशोंके विस्तारके अनुरूप ही ये कब्रें लदाख, लाहुल, चम्बा, कनौर (किन्नर) से कुमाऊँके डाराहाट, बैजनाथ, बागेश्वरतक मिलती हैं। आजकल मुसलमानोंमें कब्र देनेका रवाज देखकर लोग इन्हें भी उन्हींके साथ जोड़ते हैं; लेकिन इन कब्रोंमें कुछ विशेषता है, जो मुसलमानी कब्रोंसे इन्हें पृथक् करती है। किन्नर (कनौर) में लिप्पा, कनम्, स्पूसे आगे तिब्बती सीमान्तपर अवस्थित भारतके अन्तिम गाँव नम्ग्यातक यह कब्रें मिली हैं। मुसलमानी कब्रोंसे भिन्नता यह है कि इनमें शवके सिरके पास मद्य और भोजनके दो बर्तन अवश्य रखे मिलते हैं। दोनों बर्तन प्रायः मिट्टीके होते हैं, किन्तु कुछ बड़ी कब्रोंमें धातुके बर्तन भी पाये गये हैं; लिप्पाकी एक बड़ी कब्रमें मुझे भोजनपात्र काँसेका अर्धगोल कटोरा मिला था। लिप्पाकी एक कब्रको मैंने खोदकर देखा था, उसका शव दीर्घकपाल था, जब कि आजकल वहाँ मध्यकपाल तथा आयतकपाल लोग ही मिलते हैं। उक्त कब्रका मुर्दा घुटने

१. Himalayan Districts, Vol. II p. 362.

मोड़कर लिटाया हुआ था। शायद और जगहोंमें भी घुटने-मोड़ कब्रें मिलें, किन्तु अभी यह कहना मुश्किल है कि सभी खश कब्रें घुटने-मोड़ हुआ करती थीं। लिप्पाकी काँसेकी बर्तनवाली कब्रमें नीचे उतरनेके लिए उसकी दीवारमें तीन-चार खुड्डियाँ बनी थीं। छोटी कब्र कोनोंपर छँटी चौकोर थी। चारों ओर अनगढ़ पत्थरकी पट्टियोंको खड़ा कर दिया गया था और ऊपर चौड़ी पट्टियोंसे पाट दिया गया था। पहलेसे ही मुसलमान कब्रें मान लेनेसे द्वाराहाट, बैजनाथ, बागेश्वरकी कब्रोंकी जाँचपड़ताल नहीं की गयी। गगास नदीके किनारे भी ऐसी कब्रें मिलती हैं, जिनमें बर्तन मिलते हैं, ऐसा मुझे एक सज्जनने बतलाया। यदि सावधानीसे खोज की जाय तो गिलगितसे नेपालतकके सारे प्राचीन खस-प्रदेशमें दीर्घकपाल खशोंकी अशनपानके दोनों पात्रोंके साथ कब्रें मिलेंगी।[1]

३. वैदिक आर्य—किरातों और खशोंके बाद वैदिक आर्योंकी पहिली लहर मैदानसे पहाड़ोंकी ओर बढ़ी। पंचाल नामसे प्रख्यात त्रित्सु अपने नामसे बसी पंचालभूमिके स्वामी होते हिमालयके सानुमें पहुँच गये। पंचालके इन त्रित्सुओंको मैदानी भूमि बिलकुल जनशून्य जंगलके रूपमें नहीं मिली। उन्हें यहाँ द्रविड़ और पहाड़ोंके नजदीक पहुँचनेपर किरातोंसे मुकाबला करना पड़ा। यह कहना कठिन है कि ईसापूर्व द्वितीय सहस्राब्दीके मध्यके पंचालराज दिवोदास तथा तत्पुत्र सुदासका जिस शम्बर असुरसे मुकाबला हुआ, वह मैदानी द्रविड़ था अथवा किरात। वैदिक आर्योंके साथ संघर्षसे पराजित होनेपर असुर सामन्तोंको भी पहाड़ोंकी शरण लेनी पड़ी होगी। शम्बरके पहाड़ी दुर्गोंपर आक्रमण करनेमें सुदासको जो लोहेके चने चबाने पड़े, वह यही बतलाता है कि ये असुर अविकसित अवस्थाके किरात न हो द्रविड़ (असुर) ही रहे होंगे। द्रविड़ों और किरातोंके सम्पर्कके बारेमें राजी (किराती) भाषाकी तुलनामें हम बतला चुके हैं।

शम्बरके पहाड़ी दुर्ग पंचाल (वर्तमान रुहेलखण्ड)के उत्तर होनेसे गढ़वाल-कुमाऊँके ही पहाड़ोंमें रहे होंगे। सम्भव है, मैदानमें परास्त असुर इन दुर्गोंमें आश्रय ले आर्योंकी बस्तियोंपर आक्रमण किया करते हों जिसके लिए दिवोदास-सुदासको इन दुर्गोंपर आक्रमण करना पड़ा। इसका प्रमाण नहीं मिलता कि वैदिक आर्योंने अपने लोगोंको वहाँ बसानेके लिए इन दुर्गबद्ध असुरोंसे लोहा लिया। वैदिक साहित्यमें हिमालयमें आर्योंके बसनेका कोई उल्लेख नहीं मिलता, उसके विरुद्ध हम यहाँ मध्यकालतक ही नहीं, आज भी खशोंकी प्रधानता देखते हैं। दिवोदास-सुदासके समय चाहे खश पंचालके उत्तरवाले हिमाचलमें नहीं पहुँचे हों, किन्तु अन्तमें वे ही किरातप्रधान इस प्रदेशको खसदेश बनानेमें सफल हुए।

महाभारतमें हिमाचलके इस खण्डका अनेक बार उल्लेख इतना ही सिद्ध करता है कि महाभारतके संग्रहके समय (ईसापूर्व द्वितीय शताब्दी)में लोग इस प्रदेशसे परिचित हो गये थे। परिचित

१. Atkinson. Vol. II. p. 512 n. 'The only tradition regarding the Mughals is that certain tombs lined with and covered by large tiles and stones have been found at Dwarahat and Bageswar and are assigned to a Mughal tribe, who are said to have held central Kumaon for twenty years.··At different places in Lahul old tombs have been found and the local traditions point to a people beyound Yarkand as the builders of there tombs.' और 'कुमाऊँका इतिहास' पृष्ठ ६३७—'कुछ कब्रें ईंटोंकी बनी हुई बागेश्वर व द्वाराहाटमें पायी गयी हैं, जिनको पुरातत्ववेत्ता मुगलोंकी कब्रें कहते हैं, किन्तु यहाँपर ये साधुओंकी समाधियाँ मानी जाती हैं।'

तो वह बुद्धकालमें भी थे और हिमवन्तकी ऋषियोंकी निवासभूमि कहा जाता था। इस समयतक यह खश देश बन चुका था। फिर रंग-रूपमें एकसे इन ऋषियोंके खशोंमें भी भक्त हो सकते थे। महाभारत या बादके भी कितने ही समयोंतक कुरु या पंचालके किसी प्रतापी राजा ने जमुनोत्री या बदरीनाथतक अपना सीधे राज्य स्थापित कर लिया होगा, यह आशा नहीं रखनी चाहिये। मुस्लिमकालके उदाहरणसे हम इतना ही मान सकते हैं कि पहाड़के शासक अपने प्रतापी दक्षिणी पड़ोसीको अपने देशकी कुछ सौगात दे देते होंगे, जिससे पंचाल या कुरुके छत्रधारीको पूरा सन्तोष हो जाता होगा।

आरम्भिक इतिहास—

१. शक—वैदिक आर्योंका कम प्रवेश तथा खशोंके हिमाचलके इस भागमें छा जानेकी बात हम कह चुके। मौर्योंके समय, जब भारतके बहुत बड़े भागका एकीकरण हुआ, हिमाचलके छोटे-मोटे शासकोंने उपायन भेजकर अधीनता स्वीकार की होगी, इसमें सन्देह नहीं। कालसी (देहरादून) में अशोकके शिलालेखसे भी अनुमान होता है कि हिमाचलके वाणिज्यद्वारोंके महत्वको मौर्यशासक समझते थे और उन्होंने हिमालयसे नजदीकका सम्बन्ध स्थापित किया था। मौर्योंके उत्तराधिकारी ग्रीकोंका पश्चिमी भारतपर तबतक अधिकार रहा, जबतक कि ईसापूर्व प्रथम शताब्दीमें शकोंने उनके शासनको समाप्त नहीं कर दिया। जौनसार (देहरादून) और जौनपुर (टेहरी) के लोगोंकी रूपरेखा, रीतिरवाज, वेशभूषाको देखकर जौनको यवन (ग्रीक) से जोड़नेका लालच हो आता है, किन्तु अधिक प्रमाणोंके अभावमें ऐसा निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है। जौनसार-जौनपुरके यमुनाके समीप होनेसे 'जौन' जमुनाके लिए है यद्यपि इससे जौनसारी लोगोंकी समस्या हल नहीं हो जाती। जौनसारी स्त्रियाँ ऐसे कोट अपनी जातीय पोशाकके तौरपर पहिनती हैं, जो मध्यएशियामें कूचाके पुराने तुखारियोंसे मिलती है। क्यों यहाँकी स्त्रियाँ मिलनेपर चुम्बन द्वारा स्वागतप्रदर्शन करती हैं, यह भी विचारणीय बात है।

यवनानी प्रभाव—कुमाऊँ गढ़वालमें जोशीमठ और पाण्डुकेश्वरकी कुछ मूर्तियोंपर ग्रीक प्रभाव बतलाया जाता है। यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, किन्तु जिस समयकी ये मूर्तियाँ हैं, उस समयतक ग्रीककलाको बहुत मोड़ोंके बाद पहुँचना पड़ा, फिर प्रभावकी बात तभी कही जा सकती है, जब कि वह असन्दिग्ध रूपमें दिखाई पड़े।

यवनोंकी अपेक्षा शकोंका प्रभाव यहाँ अवश्य स्पष्ट है, और यह माननेके लिए भी काफी प्रमाण मिलेंगे कि यहाँ शकोंका शासन ही नहीं रहा, बल्कि एक प्रतापी वंशको भी शकोंने ही प्रदान किया। शक मूलतः खशोंके ही वंशके थे। खस>खश शब्द ही उलटकर शख>शक हो जाता है। प्राचीन खशोंके प्रथम हिमालयअभियानके बहुत समय बाद हूणोंकी हारके कारण १७० ई० पू० के आसपास शक अपने मूलस्थान पूर्वी सिङ्क्याङ्को छोड़नेके लिए मजबूर हुए और धीरे-धीरे आगे बढ़ते १३० ई० पू० में वह वाह्लीक (बाख्तर) से ग्रीकोंको हटाकर वहाँके स्वामी बन गये। वहाँसे ई० पू० प्रथम शताब्दीमें वह सिन्ध पंजाब अफगानिस्तान सहित पश्चिमी भारतके शासक हो गये। ये शक घुमन्तू कबीले थे। इनमें सम्राट् और सामन्त ही नहीं थे, बल्कि उनकी सेना थी, उनका ओर्दू—घुमन्तू परिवार-समूह—जो अपने पशुओं, डेरों और सारे परिवारके साथ वैसे ही चलता था, जैसे आजके उनके वंशज गद्दी और गूजर पशुपाल। कालान्तरमें इन शक ओर्दुओंका बहुत-सा भाग राजपूत, गूजर, जाट अहीरके रूपमें जहाँ मैदानी भूभागमें बस गया, वहाँ कुछ पहाड़की ओर भी चला आया; जहाँ उनके पुराने बन्धु खश शताब्दियों पहिलेसे बस चुके थे और जिनके साथके पुराने सम्बन्धको वह कुछ जानते भी

थे। गुप्तों या हूणों द्वारा शकोंकी प्रभुताके नष्ट होनेपर (चौथी सदीमें) कितने ही शक राजकुमार और सामन्त आगे आनेवाले हेफ्ताल(श्वेत-हूण) मिहिरकुलकी भाँति हिमालयके भिन्न-भिन्न दुर्गम स्थानोंमें शरण लेनेके लिए मजबूर हुए होंगे।

शकोंकी शाखा कुषाणवंशके सम्राटोंपर भारतीयताका गहरा रंग चढ़ चुका था। कुषाण सम्राट् कनिष्क बौद्धधर्मके लिए द्वितीय अशोक माना गया है। उसके उत्तराधिकारी तो और भी भारतीयता-को अपनानेमें आगे बढ़े। कनिष्कके उत्तराधिकारी थे—

कनिष्क	७९–१०६ ई०
वसुष्क	१०६–१४ ई०
हुविष्क	११४–५२ ई०
वासुदेव	१५२–७६ ई०

कनिष्कके उत्तराधिकारियोंमें वासुदेव जैसा नाम ही नहीं मिलता बल्कि उनके सिक्कोंपर ब्राह्मणिक देवताओंके लाञ्छन बतलाते हैं कि कितनी जल्दी ये हिन्दू बन गये—वासुदेवके सिक्केकी भाँति ही कत्यूरी ललितशूरके ताम्रलेखपर भी नादिया बैल बना पाया जाता है। शायद उनकी इसी ब्राह्मण-भक्तिको देखकर भागवतमें लिखा गया—

किरातहूणांध्रपुलिन्दपुल्कसा आभीरकंका यवनाः खसादयः।
येऽन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयाः शुध्यन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः॥
—स्कंध २, अध्याय ४

और इसी भावको लेकर गोस्वामी तुलसीदासने कहा—

स्वपच सबर खस जमन जड, पाँवर कोल किरात।
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात॥

शकोंके कुमाऊँ-गढ़वालके साथके सम्बन्धकी बड़ी परिचायक उनकी सूर्यप्रतिमाएँ हैं। शक लोग अपने वंशज अन्-ईसाई रुसियोंकी भाँति सूर्यके परम उपासक थे। अपनी जैसी बूटधारिणी सूर्यकी द्विभुज मूर्तियाँ शकोंने ही भारतमें पहिलेपहिल स्थापित कीं। मार्तण्ड (कश्मीर)से कटारमल (अल-मोड़ा)तक ऐसी अनेक प्रतिमाएँ स्थापित हुई थीं। आज भी कुमाऊँ-गढ़वालमें निम्नलिखित सूर्य-मन्दिर मौजूद हैं—

स्थान	जिला (पर्गना या पट्टी)	देवताका नाम
बेलार (बेल)	,, (गंगोली)	आदित्य
पभाई (")	,, (")	आदित्य
रमक	,, (महार, काली-कुमाऊँ)	आदित्य देउ
नैनी	,, (लखनपुर, चौगरखाँ)	आदित्य
जगेश्वर	,,	आदित्य
जोशीमठ	गढ़वाल	सूर्यनारायण

शकीय ढंगकी सूर्यमूर्तियोंवाले देवालय भारतमें अन्यत्र भी अपना विशेष ऐतिहासिक महत्त्व रखते हैं, जो यहाँ खशदेशमें तो वह शकोंके व्यापक प्रभावकी प्रतीक हैं। कत्यूरी राजवंश मूलतः शक-वंशसे सम्बन्ध रखता था, यह हम आगे बतलायेंगे। गढ़वालके पश्चिममें सतलजके तटपर निरतका प्राचीन सूर्यमन्दिर उसी शक बूटधारी सूर्यका है, और वह आठवीं-नवीं सदीके बादका नहीं हो सकता, अर्थात् वह कत्यूरी वंशके आरम्भिक कालका है। और यदि ललितशूरके ताम्रलेखमें अधिक अति-

अत्युक्तिसे काम नहीं लिया गया है, तो हो सकता है, निरंतका सूर्यमन्दिर विशाल कत्यूरी राज्यका ही एक स्मृतिचिह्न है—कत्यूरी राज्यकी पश्चिमी सीमा सतलज थी, यह परम्परा भी मिलती है।

शकोंका कुमाऊँ-गढ़वालसे विशेष सम्बन्ध था, इसमें संदेह नहीं; शायद पहाड़में देशसे अधिक शक-शालिवाहन संवत्का प्रचार तथा गढ़वाल और अल्मोड़ाके हालके राज्यवंशोंका शालिवाहनसे सम्बन्ध भी उसी बातकी पुष्टि करता है।

२. हूण—हूण वस्तुतः भारततक नहीं पहुँचे, तो भी कैदार, तोरमान, मिहिरकुलके कबीलोंको ईरानकी भाँति हमारे यहाँ भी हूण समझ लिया गया था, यद्यपि वे हूण नहीं थे। हूणोंसे उनका इतना ही सम्बन्ध था कि शकोंके प्रायः सभी कबीलोंके अपनी जन्मभूमि(शकद्वीप)को खाली कर आनेपर भी यह (हेफताल) शक कबीला वहीं सदियोंतक किसी तरह बना रहा, और पाँचवीं सदीमें ही किसी कारणसे मजबूर होकर उसे मध्यएशियाकी ओर भागना पड़ा। वहाँ कुषाण साम्राज्यको ध्वंस करते, ४५५ ई० में स्कन्दगुप्तको हराते वह भारत पहुँच गये। इनके राजा तोरमान (मृ. ५०२ ई०)का विशाल राज्य कस्पियन समुद्रसे मध्य-भारततक फैला हुआ था। उसने ग्वालियरमें सूर्यका एक सुन्दर मन्दिर बनवाया था। उसके पुत्र मिहिरकुल (रविकुमार)ने मगधतक आक्रमण किया और ५३४ ई० में मालवेश्वर यशोवर्मा तथा मगधेश्वर बालादित्यकी सम्मिलित शक्तिसे पराजित होकर ही उसे भागकर कश्मीरमें शरण लेनी पड़ी। तोरमान और मिहिरकुलके शासनकालमें हिमालयका बहुत-सा भाग उनके हाथमें रहा होगा।

३. हर्षवर्धनकाल—मिहिरकुलकी पराजय (५३३–३४)के बाद उत्तरी भारतके प्रधान राजवंश थे—थानेश्वरके वर्धन, गुप्तोंके उत्तराधिकारी मागधगुप्त और कान्यकुब्जके उत्तराधिकारी मौखरी और सौराष्ट्रमें वलभीवंश। मिहिरकुल ५३७ ई० तक कश्मीरमें शासन करता रहा। मध्य-हिमालय (कुमाऊँ-गढ़वाल)के माण्डलिक राजा मौखरियों या वर्धनोंके अधीन रहे होंगे। मौखरि ईशानवर्मा (५५४ ई०) अपनेको आन्ध्र (चालुक्य), गौड़ (गुप्त), सूलिक विजेता कहता है, फिर वह अपनी राज्यसीमाको हिमालयमें बढ़ाये बिना कैसे रहा होगा? हर्षवर्धनकी भगिनी राज्यश्रीका पति ग्रहवर्मा अन्तिम मौखरि राजा था। उसकी मृत्यु मालवराजसे लड़ते हुई थी, जिसका कि बदला लेनेके लिए गये हर्षवर्धनके अग्रज परमसौगत राज्यवर्धनको गौड़ाधिपति शशांकने छलसे मार डाला (६०५ ई०)। हर्षवर्धन (६०५–४७ ई०) उत्तरी भारतका अन्तिम चक्रवर्ती थानेश्वर (वर्धन) और कान्यकुब्ज (मौखरि) दोनों राज्योंका स्वामी था। उत्तरमें हिमालयसे लेकर सौराष्ट्र और गौड़ (बंगाल) तकपर उसका शासन था। ६०५ ई० के कुछ ही समय पूर्व हर्षके पिता प्रभाकरवर्धनकी मृत्यु हूणों (हेफतालों)से लड़ते रणक्षेत्रमें हुई थी, जिसका अर्थ यही है कि मिहिरकुलके हारकर कश्मीर भाग जानेपर भी अभी श्वेतहूणोंका बल पंजाब-सिन्धमें खतम नहीं हुआ था। अब वहाँ शायद श्वेतहूणोंका स्थान तुरुष्कोंने ले लिया था, जिन्हें कि हमारे लोग श्वेतहूण ही समझ रहे थे।

हर्षवर्धनका शासन (६०५–४७ ई०) बड़ी शान्ति और समृद्धिका काल था। इसी समय चीनी पर्यटक स्वेन्-चाङ् भारतभ्रमणके लिए आये थे। इस वक्त हिमालयमें ब्रह्मपुरका राज्य था। स्वेन्-चाङ् ६३४ ई० में थानेश्वर (स्थाण्वीश्वर) से सुघ्न[1] होते गंगापार कर मन्दावर (बिजनौर) गये। उन्होंने मायापुर (हरद्वार) का वर्णन किया है, पो–लो–कि–मो–पुला (ब्रह्मपुर) मन्दावर (बिजनौर)से ३०० ली (५० मील) उत्तर था। ब्रह्मपुरका राज्य ४,००० ली (६६० मील) लम्बा चौड़ा था। स्वेन्-चाङ् ने यह भी लिखा है कि ब्रह्मपुर राज्यके उत्तरमें सुवर्णगोत्र (सु–फ–ल–न–

१. जिला सहारनपुर।

ङु–त–लो) या सुवर्णभूमि है, जहाँपर अच्छी जातिका सोना निकलता है। यह वर्तमान् ङ्–री–कोर्–सुम् (मानसरोवर-प्रदेश) था, इसमें सन्देह नहीं, जहाँ कि महाभारतके अनुसार पिपीलिक (चींटी) सुवर्ण निकलता था। पिपीलिक सुवर्णकी कहावत रोमक लेखकोंको भी मालूम थी। कनिंघमने ब्रह्मपुरको कत्यूरी राजधानी लखनपुर या वैराटपट्टन माना है, किन्तु वह बाडाहाट भी हो सकता है, जिसके उत्तरमें ङ्–री–कोर्–सुम् मौजूद है, और जहाँ सिन्धु-उपत्यकामें अब भी खोदकर सोना निकाला जाता है। ब्रह्मपुर, हर्षवर्धनके अधीन रहा होगा।

४. तिब्बती शासन (६५०–८५० ई०)—हर्षवर्धनकी मृत्यु (६४७ ई०)के बाद उसका विशाल साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। इसी समय पश्चिममें ईरानको निगलकर अरबकी (इस्लामिक) शक्ति पूर्वकी ओर बढ़नेका ख्याल कर रही थी। किन्तु वह हिमालयमें काबुल-कश्मीरतक, सो भी बहुत पीछे पहुँच सकी। लेकिन उसी समय उत्तरमें तिब्बतमें एक नयी शक्ति प्रकट हो रही थी। मोङ्–चन्–स्गम्–पो (६२९–४९ ई०) ने एक नये साम्राज्यकी स्थापना की, जो पश्चिममें प्रायः गिलगित, उत्तरमें तरिम् तथा ह्वाङ्होकी उपत्यकाओं, पूर्वमें चीनके कुछ भीतरसे लेकर सारे हिमालयमें फैल गया। करीब दो शताब्दियों-तक इस राज्यके प्रभावमें आसामसे गिलगिततक सारा हिमालय रहा—यहाँके निवासियोंकी भाषा-पर तिब्बती भाषाका और मुखोंपर मंगोल-मुखमुद्राकी छाप इन्हीं दो शताब्दियोंमें चिरस्थायी रूपसे पड़ी। इस वंशके राजा और उनके समसामयिक उत्तर-भारतीय राजा निम्नलिखित प्रकार थे—

भोट(ल्हासा)	कन्नौज	मगध
१. (खी) स्रोङ्–ब्चन् (६२९)	हर्षवर्धन (६०५–४७)	
२. मङ्–स्रोङ्–मङ्–ब्चन् (६५०)	भंडीवंश (६५०–७८३)	
३. (खी) दुस्स्रोङ् (६७६)		
४. (") ल्दे–ग्चुग्–ब्र्तन् (७०४)		
५. (") स्रोङ्ल्दे–ब्चन् (७५५)		१. गोपाल (७६५)
		२. धर्मपाल (७७०)
६. (") मु–ने–ब्चन्–पो (७८०)	१. वत्सराज (७८३)	
७. जु–चे–ब्चन्–पो (७९७)		
८. (खी) ल्दे–स्रोङ् (८०४)		
९. (")ग्चुग्–ल्दे–ब्चन् (८१४)	२. नागभट्ट (८१५)	३. देवपाल (८१५)
१०. (गुलङ्)दर्–माद्बुदुम् ब्र्तन्(८३६)	३. भोज (८३६)	
११. ओद्–स्रुङ् (८४१)		४. विग्रहपाल (८५४)
१२. खोर्–वा–ब्चन्		५. नारायणपाल (८५७)

हर्षवर्धनके सेनापति भंडीके वंशको हर्षवर्धनके साम्राज्यका उत्तरी भाग (हिमालय भी) मिला। किन्तु वहाँ उत्तरी प्रतिद्वन्द्वीके सामने वह देरतक न टिक सका होगा, विशेषकर हर्षवर्धनके उत्तरा-धिकारी बन बैठे अर्जुनकी जैसी दुर्गति तिब्बती सेनाने चीनीदूतकी हिमायतमें आकर किया था, उससे भी यही मालूम होता है कि हिमालयका यह भाग बड़ी आसानीसे ल्हासाके अधीन हो गया होगा। ६४०–७८० तक ल्हासा साम्राज्य एक दुर्धर्ष शक्ति थी। तिब्बती इतिहासके अनुसार इस समय सारे हिमालयके राजा तिब्बतके सामन्त रहे। खि-स्रोङ्ल्दे–ब्चन्का काल (७५५–८०) ल्हासा साम्राज्यकी प्रभुताका मध्याह्न था, जब कि ७६३ ई० में विजयिनी तिब्बती सेना चीनकी राजधानी छङ्–आन्में प्रविष्ट हुई थी। ८३९ से तिब्बतकी शक्तिका ह्रास होने लगा—ग्लङ्–दर–माके

नीतिविरोधी कार्योंके कारण राजशक्ति निर्बल होने लगी और उसके उत्तराधिकारी ओद्-ख्रुदेस (ओदुम्बर) के समय ८४८ ई० में थाङ्-सेनाने तिब्बतको बुरी तरह हराया। अन्तमें ८६६ ई० में ठङ्गुर (तुर्क) सेनानायक बुक्कुने हरिम उपत्यका (सिङ्-क्याङ्) परसे तिब्बतके अधिकारको समाप्त कर दिया।

७६३ ई० में जिस समय तिब्बती सेना चीनकी राजधानीमें प्रविष्ट हुई, (खी) ख्रोङ्-ख्रुदे-बचन् (७५५–८० ई०) जैसा शक्तिशाली शासक ल्हासामें राज्य कर रहा था। इसीने नालन्दाके महान् आचार्य शान्तरक्षितको बुलाकर धर्मप्रचार करानेके साथ तिब्बतके सर्वपुरातन विहार सम्-ये की स्थापना की। इस समय भंडीवंशने हिमालयको ल्हासासे छीन लिया होगा, यह सम्भव नहीं है। ७८३ में भंडीवंशके दो दावेदारों—चक्रायुध और इन्द्रायुध—का पक्ष लेकर गुर्जर प्रतिहार देवशक्ति वत्सराज (७८३–८१५) और मगधराज धर्मपाल (७७०–८१५) सद्बलबल कन्नौज पहुँचे थे। जिसमें पहिले धर्मपालका पल्ला भारी मालूम होता दिखाई दिया, किन्तु बीचमें राष्ट्रकूट ध्रुव (७८०–९४) आ धमका। अन्तिम परिणाम वत्सराजके अनुकूल हुआ। इस झगड़ेके समय ल्हासाका क्या रुख था, यह बतलाना मुश्किल है, ल्हासाकी शक्ति इस समय क्षीण नहीं हुई थी, यह स्मरण रखना चाहिये।

धर्मपाल और उसके प्रतापी पुत्र देवपाल (८१५–५४) दोनों हिमालय-विजयका दावा करते हैं। धर्मपालकी कन्नौजमें आरम्भिक सफलता उसके दावेको कुछ सम्भव अवश्य बनाती है। किन्तु उसी समय ल्हासाकी चीनमें सफलता और सिङ्-क्याङ्पर दृढ़ अधिकार होना, यह भी ध्यानमें रखनेकी बात है। चीनी इतिहासके अनुसार ८३९–८४८ ई० ही ऐसा समय है, जब कि तिब्बतका भाग्यसूर्य गिरने लगा। इस समय कन्नौजपर प्रतिहार, भोज प्रथम (८३६–९२)का दृढ़ शासन था। जान पड़ता है इसी समय हिमाचल तिब्बतके हाथसे निकल गया।

कत्यूरी वंश—

१. कत्यूरी समस्या—(१) समय—कत्यूरी हिमालयका प्रथम ऐतिहासिक राजवंश है, किन्तु इसके आरम्भिक राजाओंका काल और वंशोद्गम ऐतिहासिकोंके लिए एक बड़ी समस्या है। कत्यूरी और पाल अभिलेखोंकी अत्यधिक समानतासे इतना ही मालूम होता है कि कत्यूरी प्रशस्ति-लेखकोंको आदिम पालोंके अभिलेखोंका भलीभाँति परिचय था। यह होना कठिन नहीं था, क्योंकि धर्मपाल और उसके पुत्र देवपाल केदारखण्ड विजय करनेका दावा करते हैं। कन्नौजपर राष्ट्रकूट ध्रुवके आ कूदनेसे पहले धर्मपालका वहाँके झगड़ेमें सफलतापूर्वक हस्तक्षेप इसे सम्भव भी कर देता है। आखिर गुप्तों तथा हर्षवर्धनके समय केदारखण्ड उन्हींका था। हर्षवर्धनके उत्तराधिकारी भंडीवंशके लिए ल्हासा-साम्राज्य बाधक था। नारायणपाल (८५७–९११) के समकालीन प्रतिहार राजा महेन्द्रपाल (८९२–९१३) का राज्य श्रावस्तिभुक्ति[1]तक था, यह दिघवा-दुबौली (सारन, बिहार) में प्राप्त महेन्द्र-पालके ताम्रलेखसे सिद्ध है। श्रावस्तिभुक्तिकी सीमापर गण्डक-पार तीरभुक्ति (तिरहुत) पालोंकी थी, जो हिमालयसे मिली हुई थी। ८४१ में ग्लङ्-दर्-माके समय तिब्बती राज्यकी स्थितिके डाँवाडोल होते ही देवपाल (८१५–५४) और भोज प्रथम (कन्नौज) को हिमालयकी ओर हाथ बढ़ानेमें कोई बाधा नहीं थी। हो सकता है, इस समय देवपालने नेपालको अपने प्रभावमें कर लिया हो। और उसकी या भोजकी शहसे कत्यूरी वसन्तनदेवने केदारखण्डमें अपना पैर मजबूत किया हो। इस प्रकार हम इतना तो अनुमान कर सकते हैं कि ८५० ई० के आसपासके कत्यूरी-राजवंशने अपना राज्य

१. सरयू-गंगा-गण्डकसे घिरा हिमालयके दक्षिणका प्रदेश।

हिमालयमें स्थापित किया। वसन्तनकी आठ तथा सलोणादित्यकी पाँच—इन तेरह पीढ़ियोंको एक दूसरेका उत्तराधिकारी और एक शताब्दीमें छ राजाओंका होना मान लें, तो तेरह कत्यूरी राजाओंका शासनकाल ८५०–१०५० ई० तक रहा होगा। यह माननेमें अभिलेखोंकी लिपिके कालसे कोई विरोध नहीं होता। प्रश्न इतना ही है कि कत्यूरियोंके दक्षिणी पड़ोसी प्रतिहार, भोज प्रथम (८३६–९२), महेन्द्रपाल प्रथम (८९२–९१४) और महिपाल प्रथम (९१४–४५) बड़े ही प्रबल शासक थे, उनके शासनकालमें कत्यूरी राजा कैसे हस्तिबल और उष्ट्रबलके स्वामी हो मैदानी प्रदेश (वर्तमान रुहेलखण्ड तथा मेरठ कमिश्नरियों) पर प्रभाव रख सकते थे। यही नहीं, केदारखण्ड भी कैसे प्रतिहारोंके प्रभावसे मुक्त रह सका होगा? यदि महिपाल (९१४–४५) के बाद कत्यूरियोंकी शक्तिको बढ़ी मानें, तो ९५०–११५० ई० इस राजवंशका शासनकाल मानना पड़ेगा, जो लिपि आदिके ख्यालसे पीछे पड़ जाता है। हमें तो ८५०–१०५० ई० ही कत्यूरियोंका शासनकाल मालूम होता है। प्रतिहारोंके प्रभावकी संगतिके लिए वसन्तन (८५०–७० ई०) से इष्टगण (९३०–४८) तकको प्रतिहारोंका सम्मानित सामन्त मान लेनेसे काम चल जायेगा। इन राजाओंका अपना कोई अभिलेख भी नहीं है, जिसमें हस्तिबल, उष्ट्रबल आदिकी बात हो।

(२) कत्यूरी अभिलेख—कत्यूरियोंके पाँच ताम्रपत्र और एक शिलालेख मिले हैं, जिनका विवरण निम्नप्रकार है—

प्राप्तिस्थान	अभिलेख	राजा	काल	राजधानी	राज्यसंवत्
१. पाण्डुकेश्वर	ताम्र	ललितशूर	(९४५–६०)	कार्तिकेयपुर	२१
२. ,,	,,	,,	,,	,,	२२
३. बागेश्वर १	शिला	भूदेव	(९६०–८०)	—	—
४. बालेश्वर	ताम्र	देशट	(१०१५–३०)	कार्तिकेयपुर	५
५. पाण्डुकेश्वर	,,	पद्मट	(१०३०–४५)	,,	२५
६. ,,	,,	सुभिक्षराज	(१०४५–६०)	सुभिक्षपुर	४

(३) वंशपरम्परा—इनमें पहिले तीन अभिलेखोंके अनुसार वंशवृक्ष निम्नप्रकार है—

१. वसन्तन = सज्यनरा
|
.....
|
२. खर्पर = ...
|
३. अधिधज = लद्धा
|
४. त्रिभुवनराज = ...
|
५. निंवर्त = नाशू
|
६. इष्टगण = वेगा
|

७. ललितशूर = लया
|
८. भूदेव = ...

शेष तीन अभिलेखोंका वंशवृक्ष है—

१. सलोणादित्य = सिंहवली
|
२. इच्छट = सिन्धु
|
३. देशट = पद्मल्ल
|
४. पद्मट = ईशाल
|
५. सुभिक्षराज = ...

दोनों परम्पराओंका परस्पर सम्बन्ध क्या था, इसका उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु अधिकतर सम्भावना यही है कि द्वितीय परम्परा पहलीकी उत्तराधिकारिणी थी। दोनों परम्पराओंके अभिलेखोंकी लिपि कुटिला है, जो ९वीं-१०वीं सदीके पालवंशी अभिलेखोंमें तथा कुछ पीछेके तिब्बतसे प्राप्त ताल्पत्रोंमें मिलती है। दोनों एक ही कत्यूरी वंशके थे, दोनों परम्पराओंके चार अभिलेखोंमें राजधानी कार्तिकेयपुर थी। भूदेव अपने पिता ललितशूरसे अलग अपनी राजधानी ले गया होगा, इसकी सम्भावना बहुत कम है। सुभिक्षराजने अपने पिता पद्मटदेवकी राजधानी कार्तिकेयपुरको ही, जान पड़ता है, अपने नामपर सुभिक्षपुर कहा।

(४) कत्यूरी-समसामयिक राजा—कत्यूरियोंके समसामयिक पड़ोसी राजाओंका थोड़ा-सा वर्णन ऊपर आ गया है। उनकी परम्परा निम्नप्रकार है—

कत्यूरी (जोशीमठ)	भोट (ल्हासा)	प्रतिहार (कन्नौज)	पाल (मगध)
१. वसन्तन ८५०	११. ओद्-स्रुङ् ८४१	३. भोज I ८३६	४. विग्रहपाल I ८४५
२. खर्पर ८७०	१२. खोर्-वा-चन् (ङरी)		५. नारायण ८५७
३. अधिधज ८९७			
४. त्रिभुवनराज ८९५	१३. ञि-म-मगोन	४. महेन्द्रपाल I ८९२	
		५. भोज II	
५. निर्वर्त ९१५		६. महिपाल I ९१४	६. राज्यपाल ९११
६. इष्टगण ९२०			७. गोपाल II
		७. महेन्द्रपाल II ९४५	
७. ललितशूर ९४५		८. देवपाल II ९४८	
		९. विनायकपाल ९५३	
८. भूदेव ९६०		१०. महिपाल II ९५४	
	१४. क्र-शिस्-स्दे	११. वत्सराज II ९५५	
		१२. विजयपाल ९६०	

९. सलोणादित्य ९८०	१५. खोर–स्दे		८. विग्रहपाल II ९९२
१०. इच्छट १०००	१६. नागराज		९. महिपाल I
११. देशट १०१५	१७. खोड्–स्दे	१३. राज्यपाल १०१८	
	१८. ल्ह–स्दे	१४. त्रिलोचन १०२७	
१२. पद्मट १०३०	१९. ओद्–स्दे	१५. यशपाल १०३०	१०. नयपाल १०४०
१३. सुभिक्ष १०४५			११. विग्रहपाल III
		(गहरवार वंश)	१२. महिपाल II १०८२
		१. चन्द्रदेव १०८०	१३. शूर १०८२
	२०. चे–स्दे १०७६		१४. राम १०८४
		२. मदनचन्द्र ११००	
		३. गोविन्द १११४–५५	१५. कुमार ११२६
			१६. गोपाल III ११३०
			१७. मदनपाल ११३०.
		४. विजयचन्द ११५५	१८. गोविन्दपाल १९५०.
		५. जयचन्द ११७०–९३	

२. कत्यूरी प्रताप—(१) ललितशूर—वसन्तन कत्यूरी वंशका संस्थापक होनेसे विशेष महत्त्व रखता है। जैसा कि पहले कहा, गूलङ्–दर्मा और उसके पुत्र ओद–स्रुङ्के समयकी भोट-साम्राज्यकी निर्बलतासे लाभ उठाकर पालों या प्रतिहारोंके बलसे उसने भोटशासनको हटाकर अपना राज्य स्थापित कर लिया। अभिलेखोंमें भूरिभूरि प्रशंसा यही बतलाती है कि उसने महिपाल प्रथम (९१४–४५) का सामन्त होना अस्वीकार कर दिया। ललितशूर कत्यूरीवंशका सबसे प्रतापी राजा था और इसीका अभिलेख सर्वपुरातन भी मिलता है। दसवीं सदीके मध्यमें उत्तरकी भोट और दक्षिणकी प्रतिहार-राजशक्ति बहुत निर्बल हो गयी थी, ऐसे समय ललितशूर अपने हस्तिबल, उष्ट्रबल, अश्वबल और लड़ाकू पैदल सेनाको लेकर नीचे देशकी विजययात्रा कर सकता था। शायद ऐसी यात्राका स्मरण फरिश्ताने[1] पर्वतीय राजाके दिल्ली-विजयके रूपमें किया। पालअभिलेखोंमें वंशसंस्थापक गोपालकी उपमा पृथुसे दी गयी है, वही उपमा ललितशूरकी भी है, जिससे उसके बड़े विजेता होनेका आभास मिलता है।

देवपालके अभिलेखमें 'भोट' और 'लासत' नामोंसे तिब्बतका उल्लेख आया है। किन्तु कत्यूरी लेखोंमें आंध्र, द्रविड़तकके विजयकी झूठी डींग मारनेपर भी पड़ोसी भोटका नाम न आना खटकता-सा है। सम्भवतः ललितपुत्र भूदेवने (९६०–८०) अपने वागेश्वरवाले शिलालेखमें जो अपने परम मित्र 'किरातपुत्र' का उल्लेख किया है, वह कोई तिब्बत-जातीय सामन्त था, अथवा वागेश्वर इलाकेमें ही रहता कोई किरातसामन्त था।

(२) कत्यूरी अभिलेख—ललितशूरके दोनों ताम्रलेख पाण्डुकेश्वरमें हैं, जिनमें उसके २१वें राज्य संवत्का अभिलेख निम्नप्रकार है—

(क) ललितशूरका ताम्रलेख—(१) स्वस्ति (!) श्रीमत्कार्तिकेयपुरात् सकलामरदितितनुज-मनुजविभुभक्तिभावभरभारानमितोत्तमाङ्गसङ्गिविकटमुकुटकिरीटविटङ्ककोटिकोटिशोऽनेक-ना-(२) ना-

१. Atk, Vol. II. p. 450.

नायकप्रदीपद्वीपदीधितिपानमदरक्तचरणकमलामलविपुलवहलकिरणकेशरासारसारिताशेषविशेषमोषिघन -
तमस्तेजसस् स्वर्धुनीधौतजटा-(३) जूटस्य भगवतो धूर्ज्जटेः प्रसादान् निजभुजोपार्ज्जितोर्ज्जित्यनिर्ज्जित-
रिपुतिमिरलब्धोदयप्रकाशदयादाक्षिण्यसत्यसत्त्वशीलशौचशौर्यौदार्यगाम्भीर्यमर्यादार्यवृताश्चर्य (४) कार्य-
वर्यादिगुणगणालंकृतशरीरः महासुकृतिसन्तानबीजावतारः कृतयुगागमभूपालललितकीर्तिः नन्दाभगवती-
चरणकमलकमलासनाथमूर्तिः श्रीनिम्बरस् तस्य तनय(५) स् तत्पादाध्यातो राज्ञी महादेवी श्रीनाशूदेवी
तस्यामुत्पन्नः परममाहेश्वरः परमब्रह्मण्यः शितकृपाणधारोत्कृत्तमत्तेभकुम्भाकृष्टोत्कृष्टमुक्तावलीयशःपताका-
(६)च्छायचन्द्रिकापहसिततारागणः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीमद् इष्टगण देवस् तस्यपुत्रस्
तत्पादानुध्यातो राज्ञी महादेवी श्रीवेगदेवी तस्यामुत्पन्नः परममा(७)—हेश्वरः परमब्रह्मण्यः कलिकलङ्क-
पङ्कातङ्कमग्नधरण्युद्धारधारितधौरेयवरवराहचरितः सहजमतिविभवविभुविभूतिस्थगितारातिचक्रप्रतापदहनः
(,) अतिवैभवसम्भारारम्भ-(८) संभृतभीमभृकुटिकुटिलकेसरिसटाभीतारातीभकलभभरः अरुणारुण-
कृपाणबाणगुणप्राणगणहठाकृष्टोत्कृष्टसलीलजयलक्ष्मीप्रथमसमालिंगनावलो(९)—कनवलक्ष्यसखेदसुरसुन्दरी-
विधूतकरस्खलद्वलयकुसुमप्रकरप्रकीर्णावतंससम्बर्द्धितकीर्तिबीजः पृथुरिव दोर्द्दण्डसाधितधनुर्मण्डलबलावष्ट-
म्भृवश(१०)-वशीकृतगोपालनानिश्चलीकृताधराधरेन्द्रः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीमल्ललित-
शूरदेव (:) कुशली अस्मिन्नेव श्रीमत्कार्त्तिकेयपुरविषये समु(११)-पागतान् सर्व्वानेव नियोगस्थान्
राज-राज(ा)नकराजपुत्रासृष्ट(राजा-) मात्यसामन्तमहासामन्तठक्कुरमहामनुष्यमहाकर्तृकृतिकमहाप्रतीहार-
महादण्डनायकमहाराज प्रमातारश(१२)-रभङ्ग कुमारामात्योपरिकदुस्साध्यसाधनिकदशापराधिकचौरोद्धर-
णिकशौल्किकगौल्मिकतदायुक्तकविनियुक्तकपट्टकोपचारिकशेषभंगाधिकृतहस्त्यश्वोष्ट्र(१३)-बलव्यापृतक-
दूतप्रेषणिकदण्डिकदण्डपाशिकगमागमिकशार्ङ्गिकभित्वरमाणकराजस्थानीयविषयपतिभोगपतितरपत्यश्वपति-
खण्डरक्षप्रतिशूरि(१४)-कस्थानाधिकृतवर्त्मपालकोट्टपालघट्टपालक्षेत्रपालप्रान्तपालकिशोरबडवागोमहिष्य-
धिकृतभट्टमहत्तमाभीरवणिक्श्रेष्ठिपुरोगान् अष्टादशप्रकृ(१५)-त्यधिष्ठानीयान् खशकिरातद्रविडकलिङ्ग
गौड़हूणोड्रमेदान्ध्रचाण्डालपर्यन्तान् सर्व्वसम्बासान् समस्तजनपदान् भटचटसेवकादीन् अन्याँश्च कीर्ति-
तान् अकीर्तितान् अस्म(१६)-त्पादपद्मोपजीविनः प्रतिवासिनश्च ब्राह्मणोत्तरान् यथार्हं मानयति बोधयति
समाज्ञापति (–) अस्तु बस् सम्विदितम् उपरिनिर्दिष्टविषये गोरुन्नासायां प्रतिबद्ध खषियाक-परिभुज्य-
मानपल्लिका तथा पणिभूतिकायां प्रतिबद्ध गुग्गुलपरि(१७)-भुज्यमान पल्लिकाद्वयं एते मया मातापित्रोरा-
त्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये पवनविघट्टिता(१८)-श्वत्थपत्रवच्चलत्तरंगजीवलोकमवलोक्य जलबुद्बुदाकार-
मसारं वायुर्दृष्ट्वगजकलभकर्णाग्रचपलताञ्चालक्ष्यत्वापरलोकनिःश्रेयसार्थसंसारार्णवोत्तरणार्थञ्च(१९)पुण्ये-
हनि उत्तरायणसङ्क्रान्तौ गन्धपुष्पधूपदीपोपलेपननैवेद्यवलिचरुनृत्यगेयवाद्यसत्रादिप्रवर्तनाय खण्डस्फुटित-
संस्करणाय अभिनवकर्मकरणा(२०)-य च भृत्यपदमूलभरणाय च गोरुन्नासायां महादेवी श्रीसामदेव्या
स्वयं करापितभगवते श्रीनारायणभट्टारकाय शासनदानेन प्रतिपादिताः प्रकृतिपरिहारयुक्ताः (२१)
प्रचाटभटाप्रवेशाः अकिञ्चित्प्रग्राह्याः अनाच्छेद्या आचन्द्रार्क्कक्षितिस्थितिसमकालिकः विषयाद् उद्धृत-
पिण्डास्थसीमागोचरपर्यन्तस् सवृक्षारामो ह्रदप्रस्रवणोपे(२२)-तः देवब्राह्मणभुक्तभुज्यामानवर्जिताः
यतस् सुखं पारम्पर्येण परिभुञ्जतश् चास्योपरिनिर्दिष्टैर् अन्यतरैर्व्वा धरणविधारण परिपन्थनादिको-
पद्रवो मनागपि न कर्त(२३)-व्यो नान्यथा द्रुहतो महान् द्रोहिस् स्याद् (।) इति प्रवर्द्धमान्विजय-
राज्यसम्बत्सर एकविंशतिमे २१ माघवदि३ (।) दूतकोत्र महादानाक्षपटलाधिकृत श्रीपीजकः।
लि(२४)-खितमिदं महासन्धिविग्रहाक्षपटलाधिकृत श्रीमद् आर्यटवतुना (।) टंकोत्कीर्णा श्रीगङ्गभद्रेण।

बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः (।)
यस्य यस्य यदा भूमिस् त(२५)स्य तस्य तदा फलं।

सर्व्वान् एतान् भाविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्रः (')
सामान्यो यं धर्म्मसेतुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः (॥)

स्वदत्ताम् परदत्ताम् वा यो (२६) हरेत वसुन्धरां ।
षष्टिम्वर्षसहस्राणि स्वविष्ठ्या जायते कृमि (:) ।
भूमेर्दाता याति लोके सुराणां हंसैर्युक्तं यानमारुह्य दिव्यं (।)
लौहे कुम्भे तैलपूर्णे सुतप्ते भूमे (२७) हर्ता पच्यते कालदूतैः ।

षष्टिम्वर्षसहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति भूमिदः (।)
आच्छेत्ता चानुमन्ता च तान्येव नरके वसेत् ।
गामेकाञ्च सुवर्णञ्च भूमेरप्येकमङ्गुलम् (।)
हृत्वा नर(२८)कमाप्नोति यावद् आहूतिसंप्लवं ।

यानीह दत्तानि पुरा नरेन्द्रैर्दानानि धर्म्मार्थयशस्कराणि (।)
निर्म्माल्यवान्तप्रतिमानि तानि को नाम साधुः पुनराददीत ।
अस्मत्कुल(२९)क्रममिमं समुदाहरद्भिर् अन्यैश्च दानमिदमभ्यनुमोदनीयं (।)
लक्ष्म्यात् तडित्सलिलबुद्बुदचञ्चलाया दानं फलं परयशः परिपालनञ्च ।
इति कमलदलोद(३०)-विन्दुलोलमिदमनुचिन्त्य मनुष्यजीवितञ्च ।
सकलमिदमुदाहृतञ्च बुद्ध्वा नहि पुरुषैः परकीर्तयो विलोप्याः ॥
(राजमुद्रामें नन्दीके साथ लेख है—)
श्री निम्बरस् तत्पादानुध्यातः
श्रीमद् इष्टगणदेवः तत्पादानुध्या (तः)
श्रीमल्ललितशूरदेवः क्षितीशः ।
इसका अर्थ है—

(स्वस्ति ! श्रीमत् कार्तिकेयपुरसे···भगवान् धूर्जटिकी कृपासे निज-भुज द्वारा उपार्जित···नन्दा भगवतीके चरणकमलके कमलकी शोभासे सनाथ मूर्ति श्रीनिंबर (थे) । उनके तनय···रानी वेगदेवीसे उत्पन्न परममाहेश्वर (परमशैव) परमब्रह्मण्य (परमब्राह्मणभक्त) परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर (महाप्रभु) श्रीमान् इष्टगणदेव (थे) । तिनके पुत्र रानी महादेवी वेगदेवीसे उत्पन्न परममाहेश्वर (परमशैव) परमब्रह्मण्य···पृथुसमान···परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीमान् ललितशूरदेव कुशल पूर्वक (हैं और वह) इसी श्रीमत् कार्तिकेयपुरके बीच आये सभी आज्ञानुवर्त्तियों—राजा, राजानक, राजपुत्र, आसृष्ट, राजामात्य, सामन्त, महासामन्त, ठक्कुर, महामनुष्य, महाकर्ता, कृतिक, महाप्रतीहार, महादण्डनायक, महाराजप्रमातार, शरभंग, कुमारामात्य, उपरिक, दुस्साध्यसाधनिक, दशापराधिक, चौरोद्धरणिक, शौल्किक, गौल्मिक, तदायुक्तक, विनियुक्तक, पट्टकोपचारिक, आशेषभंगाधिकृत, हस्ति-अश्व-उष्ट्र-सेनाव्यापृतक, दूतप्रेषणिक, दण्डिक, दण्डपाशिक, गमागमी, शाङ्गिक, अभित्वरमाणक, राजस्थानीय, विषयपति, भोगपति, तरपति, अश्वपति, खंड(वन)रक्ष, प्रतिशूरिकस्थानाधिकृत, वर्त्मपाल, कोट्टपाल, घट्टपाल, क्षेत्रपाल, प्रान्तपाल, किशोर वडवाधिकारी, गाय–भैंस–अधिकारी, भट्ट, महत्तम, आभीर, वणिक्, श्रेष्ठी आदि प्रजाओंके अठारह अधिष्ठाताओंको खश, किरात, द्रविड, ओड्र (ओडिया), मेद, आंध्र, चंडाल, तक सभी संवासोंको, समस्तजनपदोंको, भट, चट, सेवक आदि उक्त-अनुक्त हमारे चरणकमलके दूसरे आश्रितोंको, प्रतिवासी, ब्राह्मणों आदिको यथायोग्य मानते सम्बोधित

करते आज्ञा देते हैं—"तुमको ज्ञात हो कि उपर्युक्त (कार्तिकेयपुर) विषय (जिले)में गोरुन्नासासे सम्बन्धित, खत्तियों द्वारा उपभोग की जाती पल्लिका (गाँव) तथा पणिभूतिकासे सम्बन्धित गुरुगुलों द्वारा उपभोग की जाती दो पल्लिकाओं—इन(तीनों)को मैंने माता-पिता तथा अपने पुण्य और यशकी वृद्धिके लिए, संसारको पीपलके पत्तेके समान चलायमान देखकर··· और संसार-समुद्रसे उतरनेके लिए पुण्य-दिन उत्तरायण(मकर)संक्रान्तिको गंध, पुष्प, धूप, दीप, उपलेपन, नैवेद्य, बलि, चरु, नृत्य, गीत, वाद्य, सत्र आदिके चलानेके लिए, टूटे-फूटेकी मरम्मत तथा नयी इमारतके बनानेके लिए और भृत्यों, चरणाश्रितोंको पोसनेके लिए गोरुन्नासामें महादेवी श्रीसामदेवी द्वारा बनवाये श्रीनारायण भगवान्‌के लिए (ताम्र) शासन द्वारा प्रदान किया। (उक्त सम्पत्तिपर) न प्रजाका अधिकार, न प्रचाट-भट (सिपाही सैनिक)के प्रवेश योग्य, न कुछ भी लेने योग्य, न छीनने योग्य है (।)···इति प्रवर्द्धमान विजय-राज्य-संवत्सर २१ माघ वदि३ (।) यहाँ (इस ताम्रपत्रके लिए राजा द्वारा प्रेषित) दूतक महादान (दानविभाग)के अक्षपटलाधिकारी श्रीपीजक (हैं)। इस (ताम्रशासन)को लिखा महासन्धिविग्रह (विदेशमन्त्री) के अक्षपटल(अभिलेख विभाग)के अधिकारी श्रीमान् आर्यटवतु (और) खोदाई की श्रीगंगभद्रने।···

(इस ताम्रशासनकी गोल तथा नन्दी-लांछित मुद्रापर तीन पंक्तियाँ लिखी हैं—)

"श्री निंवर, उनके पदानुचर
श्रीमान् इष्टगणदेव, उनके पदानुचर
श्रीमान् ललितशूरदेव क्षितीश।"

(ख) भूदेवका शिलालेख (बागेश्वर)—ललितशूरके पुत्र भूदेवने सिंहासनारोहणके चौथे वर्ष दानपत्र रूपमें बागेश्वरके मन्दिरमें एक शिलालेख लगाया था, जो कितने ही साल हुए, गुम हो गया। अटकिन्सनने उसका जो अंग्रेजी अनुवाद अपने ग्रन्थमें छापा है, उसका पुनर्भाषान्तरण निम्नप्रकार है[1]—

"नमः स्वस्ति इस सुन्दर मन्दिरके दक्षिणभागमें विद्वद्रचित राजवंशावली उत्कीर्ण है।

"जन्तुजालध्वंसक रम्य ग्राममें पत्रुपडिदलके निनूननुति नामक द्वारपर अवस्थित परदेवको नमस्कार।

"परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर मसंतन[2] देव नामक राजा हुए। उनकी पतिपरायणा पत्नी रानी सज्यनरा देवीमें उत्पन्न पुत्र परमसम्मानित श्रद्धाभाजन अतिविभवसम्पन्न परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीमान्···हुए। परमेश्वर (शिव) के पूजार्थ अनवरत वृत्तिप्रदाता, जय-कूलभुक्तिकी ओर जानेवाले कई सार्वजनिक मार्गोंके निर्माता, अंवलिपालिकाके व्याघ्रेश्वरदेवके पूजार्थ गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-अनुलेपन-द्रव्योंके दाता और युद्धोंमें त्राता थे। उन्होंने अपने पिता (वसन्तनदेव) द्वारा वैष्णवोंको प्रदत्त शरणेश्वर ग्राम और पुष्पादि द्रव्य उसी देव(व्याघ्रेश्वर)को प्रदान किया, (तथा) सार्वजनिक मार्गोंके किनारे गृह (पांथशालाएँ) बनवाये। उनकी कीर्ति यावच्चन्द्रदिवाकर अचल रहेगी।

"उनके पुत्र···परमभट्टारक परमेश्वर खर्परदेव हुए। उनके पुत्र उनकी पतिपरायणा पत्नी··· में उत्पन्न वित्तविद्यामानसमन्वित तत्पादानुध्यात परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीमान् अधिधज हुए। उनके पुत्र उनकी पतिप्रिया रानी लद्धादेवीमें उत्पन्न कर्म-धन-मान-बुद्धि-सम्पन्न त्रिभुवन-

१. Vol. II. pp 69–79; J. A. S. B. VII P. 1056.
२. वसंतन।

राजदेव हुए। उन्होंने उन देव (व्याघ्रेश्वर)को जयकूलमुक्तिका गाँवमें दो द्रोण[1]का नय नामक उर्वर खेत प्रदान किया, तथा उन्हीं देव(व्याघ्रेश्वर) की पूजाके लिए उसमें गन्धादि द्रव्योंके उत्पादन करनेकी आज्ञा दी। यह भी विदित हो, कि उन(त्रिभुवनराज)के परममित्र किरातपुत्रने उक्त देव तथा गम्बियपिण्ड देवताके लिए ढाई द्रोण भूमि दान दी। अधिपजके दूसरे पुत्रने भरके[2] देवताको एक द्रोण भूमि दी तथा दो···(बीघा) भूमिके दानका संवत् ११ में शिलालेख करवाया। उसने व्याघ्रेश्वरदेवको एक द्रोण और चण्डालमुण्डा देवीको १४···(खण्ड) भूमि प्रदान की और व्याघ्रेश्वर-देवके सम्मानमें एक प्याऊ स्थापित किया। यह सब भूमिखण्ड व्याघ्रेश्वरदेवकी पूजाके लिए दान दिये गये।

"दूसरे भी दाक्षिण्य-सत्य-सत्त्व-शील-शौच-शौर्य-औदार्य-गाम्भीर्य-मर्यादा-आर्यवृत्त-आदिगुण-गणालंकृत, सुदर्शन नन्दन-अमरावती-नाथ-चरण-कमल-पूजार्थ-धृत-शरीर निंवर्त नामक राजा हुए, जो अपने अनेक स्वच्छ सुन्दर वृहद् रत्नों—कृष्णसर्पक्रीड़ित-उज्ज्वल-केशरपुष्पों द्वारा अन्य-भास्वर-द्रव्य निष्प्रभकारक गंगा-परिशुद्ध जलसे उज्ज्वल-जटा-युक्त शिरवाले कोटिवरद धूर्जटिके प्रसादसे स्वकरधृत धनुषके बल द्वारा सदा (रणमें) विजयी गौरांग, सुवर्णवर्ण, सकल-स्वशत्रु-गण-पराजेता, सर्व-सुरासुर नर-बुधजन-पूजामें सदा बद्धादर और विनम्र थे। यशानुष्ठानोंसे उद्भूत उनका यश सर्वत्र गाया जाता था।

"तिन (निवर्त)के पुत्र उनकी पतिपरायणा अग्रमहिषी दासूदेवीमें उत्पन्न तत्पादानुध्यात परम-भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीमान्···इष्टगणदेव हुए। तिनके पुत्र पतिव्रता स्वपत्नी धरादेवीमें[3] उत्पन्न तत्पादानुध्यात परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीमान् ललितशूरदेव हुए। तिनके पुत्र पतिभक्ता स्वपत्नी लयादेवीमें उत्पन्न परमभट्टारक परमेश्वर श्रीमान् भूदेवदेव हैं। वह परमब्राह्मणभक्त, बुद्धश्रवण(०श्रमण)-शत्रु, सत्यप्रिय, सुन्दर, विद्वान्, सदा धर्मानुष्ठानतत्पर हैं। उनके पास कलि नहीं फटक सकता। वह सुवर्णवर्ण तथा उनके नेत्र नील-सरोज-सम-सुन्दर तथा चपल हैं। उनके सुवर्णवर्ण चरणोंमें प्रणत राजसमूहके मुकुटोंकी मणियोंके शब्दोंसे बहुधा उनके श्रवण पीड़ित रहते हैं। उनके महान् शत्रुने अन्धकारको ध्वस्त कर दिया। उन्होंने अपने कृपापात्र अनुचरोंको वृत्ति प्रदान की···"

(३) पालों-कत्यूरियोंके अभिलेखोंकी तुलना—पालवंशी (१) देवपाल (८१५–५४)के मुँगेरवाले[4] तथा (२) नारायणपाल[5] (८५७–९११ ई०)के ताम्रलेखोंकी भाषा, लिपि तथा पदाधिकारियों की (३,४) ललितशूर[6], (५) पद्मट[7] और (६) सुभिक्षराज[8]के ताम्रलेखोंसे मिलानेपर जो समानता दीख पड़ती है, वह आकस्मिक नहीं हो सकती; विशेषकर जब कि वही समानता प्रतिहारोंके अभिलेखोंमें नहीं मिलती।

---

१. पौन एकड़।
२. भटकू।
३. वेगदेवी—ललितशूरके (पांडुकेश्वर १) ताम्रपत्र में।
४. मुँगेर ताम्रपत्र (As. Res. I. p. 123)।
५. भागलपुर ताम्रपत्र (J. A. S. B. XLVI. I p. 384)।
६. पाण्डुकेश्वर १, २।
७. पाण्डुकेश्वर ताम्रपत्र।
८. पाण्डुकेश्वर ताम्रपत्र।

(क) अधिकारियोंकी सूची—

		१ देवपाल	२ नारायण	३ ललित	४ पद्म	५ सुभिक्ष
अभित्वरमाणक	आवनदूत				३५	
अमात्य राज-	राजमन्त्री	३	३	५	५	५
अश्वपति	सवारनायक			४०	४०	४१	३४
अश्वबलाधिकृत	सवारसेनापति	२६	२६	२८	२८	२७	२०
आभीर	अहीर			४९	४९	५२	४५
आयुक्तक तद्-	तदर्थ-कर्मिअर	२४	२४	२३	२३	२२	१४
उपचारिक पट्टक-	अभिलेख अधिकारी			२६	२६	२५	१८
उपरिक	प्रदेशाधिपति	१३	१३	१७	१७	१६	
उष्ट्रबलाधिकृत	ऊँट-सेनापति	२६	२६	२८	२८	२७	२०
किशोर-अधिकृत	खच्चर अधिकारी (?)	२७	२७	४७	४७	५०	४३
किशोर घडवा-गो-							
महिष्यधिकृत	खच्चर···अधिकारी	२७	२७	४७	४७	५०	४३
कुमारामात्य	जिला अधिपति	९	१२	१६	१६	१५	
कोषपाल	खजाञ्ची	२२	२२	४३	४३	४४	३७
क्षेत्रपाल	कृषि अध्यक्ष		२०	४५	४५	४६	४९
खड्गिक	खड्गधारी			३४	३४	३४	२७
खण्डपति	वनपाल	२३	२३			३९	३२
खण्डरक्षास्थानाधिपति				४१	४१	४२	३५
गमागमिक	दूत	२९	२९	३३	३३	३३	३६
गो-अधिकृत	गो-अफसर	२७	२७	४७	४७	५०	४३
गौल्मिक	सिपाही	१९	१९	२२	२२	२१	१३
घट्टपाल	डाण्डेका रक्षक			४४	४४	४५	३८
चौरोद्धरणिक	चोरनिग्राहक	११	१५	२२	२०	१९	१३
ठक्कुर	खश-सामन्त			८	८	४८	४१
तरपति	घाट-अधिकारी	३२	३०	३९	३९	४०	३३
दण्डनायक महा-	महामजिस्टेट	५	११	१२	१२	९	९
दण्डपाशिक	पुलिस	१७	१७	३२	३२	३१	२४
दाण्डिक	दण्डधारी	१६	१६	३१	३१	३०	२३
दुःसाध्यसाधनिक	पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट	८	१०	१८	१८	१७	
दूतप्रेषणिक	दूतप्रेषक	२८		३०	३०	२९	२२
दोषापराधिक	पुलिस-पर्यवेक्षक	१४	१४	१९	१९	१८	
नियोगस्थ	शासननियुक्त			१	१	१	१
पट्टक	अभिलेख अधि०			१५	२५	२४	१७
पट्टकोपचारिक	,,—अधिकारी			१५	२५	२४	१७
प्रकृत्यधिष्ठानीय	(१८)१८ प्रजाधिष्ठाता			५२	५२	५५	४८

प्रतिहार महा–	महाअंगरक्षक	६	८	११	११	१०	१०
प्रमातार	सर्वेयर	१०		१४	१४	१३	
प्रान्तपाल	सीमारक्षकअधिकारी	२१	२१	४६	४६	४७	४०
भट्टमहोत्तम				४८	४८	५१	४४
भोगपति	उपरिक			३८	३८	३८	३१
महामनुष्य	ग्रामनायक			९	९	४९	४२
महाराज				१३	१३	१२	
महिष्यधिकृत	भैंस अफसर	२७	२७	४७	४७	५०	४३
राजन्यक	रैनका, राजकुमार	१	१	३	३	३	३
राजपुत्र	राजपूत	२	२	४	४	४	४
राजस्थानीय							३
राजा				२	२	२	२
वडवा-अधिकृत	घोड़ी अफसर	२७	२७	४७	४७	५०	४३
वणिक्	व्यापारी			५०	५०	५३	४६
वर्त्मपालक	मार्गरक्षक			४२	४२	४३	४६
विनियुक्त		२५	२५	२४	२४	१३	१५
विषयपति	कुमारामात्य	३१	३१	३७	३७	३७	३०
विषयव्यापृतक	जिला-सचिव					३२	२५
व्यापृतक	सचिव			२९	२९	२८	२१
शरभंग		११		१५	१५	१४	
शौल्किक	कर-अफसर	१८	१८	२१	२१	२०	१३
श्रेष्ठी	नगरसेठ			५१	५१	५४	४७
सामन्त				६	६	६	६
सामन्त महा-		७	६	७	७	७	७
सामन्ताधिपति महा-						११	११
सौधभंगाधिकृत	महल इञ्जीनियर			२७	२७	२६	१९
हस्तिबलाधिकृत	गज-सेनानायक	२६	२६	२८	२८	२७	२०
हस्त्यश्वोष्ट्रबलाधिकृत	गज-अश्व-ऊँट अधि०	२६	२६	२७	२८	२७	२०

(ख) अभिलेखोंमें आये भौगोलिक नाम—कत्यूरियोंके अभिलेखोंमें बहुतसे स्थानों और भूभागों तथा जातियोंके नामोंका उल्लेख है, जिनमेंसे बहुत कमका पता लग सका है। 'मानसखण्ड' में भी बहुतसे भौगोलिक नाम आते हैं, किन्तु वह अभिलेखोंसे बहुत पीछेकी कृति है। यहाँ नामोंकी सूची दी जाती है[1]।

---

1. यह अभिलेखोंके संकेत हैं: ल१—ललितशूर (पाण्डुकेश्वर १), ल२—ललितशूर (पाण्डुकेश्वर२), भू—भूदेव (वागेश्वर), देश—देशट (बालेश्वर), पद्म—पद्मदेव (पाण्डुकेश्वर ३), सुभि—सुभिक्षराज (पाण्डुकेश्वर २), देव—देवपाल (मुँगेर)।

(१) भौगोलिक नामसूची

नाम	कहाँ	अभिलेख	राजा
अण्डारिगनिक	रत्नावलीसे पूर्व	पाण्डुकेश्वर ४	सुभि
अन्तग	(भरोसिक)	,,	,,
अंतरंग (प्रदेश)[१]	में पेट्टक[२]	,, ३	पद्म
अम्बलिपालका	(में व्याघ्रेश्वर)	बागेश्वर	भूदेव
आदित्य (प्रदेश)	में पेट्टक...	पाण्डु ४	सुभि
इच्छावल	शीलादित्य	,,	,,
इजर	में जातिपोतक	,,	,,
इन्द्रवक		पाण्डुकेश्वर २	ल२
इहंग	योशिक (जोशीमठ)	,, ४	सुभि
ईशाल	में यमुनाग्राम	बालेश्वर	देश
उंगक	भरोसिक	पाण्डु ४	सुभि
कटनसिला	घरनाग	,,	,,
कटुस्थिक	में दारक	,,	,,
कंडायिक	सुभट्टकमें	,,	,,
कथासिल	आदित्य	,,	,,
करनसिल	घरनाग	,,	,,
कर्कटथल	,,	,,	,,
कार्तिकेयपुर		पाण्डु १	ल १
खोटाखोट्टनक	शिलादित्य	,, ४	सुभि
गंगा	रत्नावलीसे उत्तर	,,	,,
गंगारक	सोशीजीवक पास	,,	,,
गंगोधारिक	घरनाग	,,	,,
गोचिंगटक	में यच्छसद्दा	,,	,,
गोदोधक	पैरी	,,	,,
गोरुन्नासा		,, १	ल १
घरनाग	योशिक[३]	,, ४	सुभि
जयकूलमुक्ति		बागेश्वर	भू
जातिपतोक	इजरमें	,,	,,
तंगणपुर[४]		पाण्डु ३	पद्म
,,		,, ४	सुभि

१. अलकनन्दा और भागीरथीके बीचका दोआबा।

२. पेट्टक, कथासिल, न्यायपट्टक, बन्दीवल।

३. इसी प्रदेशमेंसे धारुमेंगक, सिदारा, बलीवर्दशिला, इहंग, रुल्लथ, तिरिंग, कटनसिल, गंधो-धरिक, पूग, कर्कटथल, द्राक्षीमूलक ये।

४. अलकनन्दा-भागीरथी-संगमसे ऊपर अलकनन्दाकी उपत्यका।

तपोवन		,,	२	ल २
तमेहक	रत्नावली पास	,,	४	सुभि
तल्लासाट	विहान्दक	,,		,,
तिरिंग	घरनाग	,,		,,
तुंगादित्य[1]	रणदावक	,,		,,
थपलियासारी	इन्द्रवक पास	,,	२	ल २
दारक	कटुस्थिकामें	,,	४	सुभि
दालीमूलक	घरनाग	,,		,,
दावक	तुंगादित्यमें	,,		,,
दुज्जन	भरोसिकामें	पाण्डु	४	सुभि
दुर्गाभट्ट	हर्षपुर	,,		,,
न्यायपट्टक	आदित्य	,,		,,
पणभूतिक		,,	१	ल १
पर्वभानु	उंगक	,,	४	सुभि
पूग	घरनाग	,,		,,
पेट्टक	आदित्य	,,		,,
पैरी	का गोदोघ	,,		,,
बदरिकाश्रम[2]	तंगणपुरमें	,,		,,
बन्दीवल	आदित्य	,,		,,
बलीवर्द	घरनाग	,,		,,
बरियाल		,,		,,
भरोसिक	सिट्टक[3]	,,		,,
मिहलक	शिलादित्य	,,		,,
भेटसारी		,,		,,
महाराजियक	शिलादित्य	,,		,,
यच्छसद्दा	गोचिंगाटक	,,		,,
यमुना		बालेश्वर		देश
योशिक[4]	घासमेंगक	पाण्डु	४	सुभि
रत्नावली[5]	सडायिक पास	,,		,,
रुल्लनाथ		,,		,,
लोहरस	तुंगादित्य	,,		,,

१. रणदावक और लोहरस में।

२. बदरीनाथ।

३. सिट्टक, उसोक, विजत, दुज्जन, अंतग, वाचटक, वराह भूमि।

४. योशिक (जोशीमठ) में, धारुमेंगक, सिद्दारा, वलीवर्दशिला, इहंग, रुल्लथ, तिरिंग, कटन-सिल, गंधोधारिक, पूग, कर्कटथल, द्वालीमूलक।

५. इसकी सीमा थी : पूर्वमें—अंदारिगनिक; पश्चिममें—संकट; दक्षिणमें—तमेहक (सेनयिक)

वनोलिक		,,	,,
वञ्छतक	विन्धिमालका पास	,,	,,
जातिपतोक	इजर	,,	,,
वराह	भरोसिक	,,	,,
वाचाटक	,,	,,	,,
विजट	,,	,,	,,
विधिमालका		,,	,,
विहान्दक		,,	,,
व्याघ्रेश्वर	अंवलिपालिका	बागेश्वर	भू
शिला		पाण्डु ४	सुभि
शिलादित्य[1]		,,	,,
शीरा	वेनवक	,,	,,
संकट		पाण्डु ४	सुभि
सदायिक	रत्नावली	,,	,,
सटिकतोक		,,	,,
सत्रकपुत्र	समिजीय	,,	,,
सरना	सुभट्टक पास	,,	,,
सामिजीय	सत्रकपुत्र	,,	,,
सिट्टक	भरोसिक	,,	,,
सिदारा	योशिका	,,	,,
सिला		,,	,,
सुभट्टक	सरना पास	,,	,,
सेनायक	तमेहक	,,	,,
सोशीजीवक	गंगारक पास	,,	,,
हर्षपुर		,,	,,

(२) जाति नामसूची

आन्ध्र	पाण्डु १,२	ल १,२
,,	बालेश्वर	देश
,,	पाण्डु ४	सुभि
आन्ध्रक	मुंगेर	देव
ओड्र	पाण्डु १,२	ल १,२
,,	पाण्डु ३	पद्म
,,	पाण्डु ४	सुभि
कलिंग	पाण्डु १,२	ल १,२
,,	बालेश्वर	देश

१, इसमें थे—इच्छावल, खोरोखोट्टनक, मिहलक, महाराजविक।

कलिंग	पाण्डु ३	पद्म
,,	मुँगेर	देव
किरात	पाण्डु २	ल २
,,	,, ३	पद्म
,,	,, ४	सुभि
खष (खश)	,, १,२	ल १,२
,,	बालेश्वर	देश
,,	पाण्डु ३	पद्म
,,	,, ४	सुभि
,,	मुँगेर	देव
गौड	पाण्डु १,२	ल १,२
,,	बालेश्वर	देश
,,	पाण्डु ३	पद्म
गौड	,, ४	सुभि
,,	मुँगेर	देव
चंडाल	पाण्डु १,२	ल १,२
,,	बालेश्वर	देश
,,	पाण्डु ३	पद्म
,,	,, ४	सुभि
,,	मुँगेर	देव
द्रविड़	पाण्डु १,२	ल १,२
,,	,, ३	पद्म
,,	,, ४	सुभि
भोट	मुँगेर	देव
मेद	पाण्डु २	ल २
,,	बालेश्वर	देश
,,	पाण्डु ३	पद्म
,,	,,	सुभि
,,	मुँगेर	देव
लासत	,,	,,
हूण	पाण्डु २	ल २
,,	,, ३	पद्म
,,	,, ४	सुभि
,,	मुँगेर	देव

(ग) 'मानसखण्ड'के भौगोलिक नाम—

अगस्त्येश्वर	अगस्त्यमुनि (मन्दाकिनी तट)
अग्नितीर्थ	अग्निकुण्ड

अमुरगिरि
आकाशगंगा
ऋषिकेश
कर्णप्रयाग
कल्पस्थल
कल्पेश्वर लिंग
कषाय
कात्यायनी (श्यामा)
कालीक्षेत्र
काली
कूर्म-शिला
कूर्माचल
केतुमान्
केरलगि
कौशिकी
क्षीर गंगा
खेचर तीर्थ
गणनाथ
,,
गर्ग (पर्वत)
गार्गी
,,
गालव
गुप्तवाराणसी
गोदावरी
गोपेश्वर
गोपीवन
गोरक्षाश्रम
गोस्थल
गोस्थल-क्षेत्र
गंगाद्वार
गंगेश्वर
गंडकी
गौरी गिरि
घोघेश्वर
चक्रेश्वर
चतुर्दंष्ट

कुमाऊँ
जाह्नीसे ऊपर (तल्ला-डोरामें)
तुङ्गनाथसे निकली नदी (आगास)
हृषीकेश
कर्णप्रयाग

उरगम् गाँवमें
कशार (कलमटिया-शिखर, अलमोड़ा)
सियाही देवी (अलमोड़ा)
काल बंगवारा
कैल गंगा
कानादेव पहाड़ (पट्टी चरालमें छीरापानीके पास)
कुमाऊँ
गोरीफाटमें एक पर्वतबाँही
छे-छल (ब्यांस)
कोसी नदी
मन्दाकिनीकी ऊपरी धारा
खोजरनाथ (मानसरोवर)
अलमोड़ा जिलेमें
ब्यांसमें
गागर
गौला
गगास नदी
ऋषि
गुप्तकाशी (भारी गाँव)
(गाँव)
(गाँव)
गोपाई
त्रियुगी
गोपेश्वर
गोथल (मल्ला-नागपुर)
हरद्वार
फलासी (तल्ला-नागपुर)
गिधिया (काली कुमाऊँ)
डोल्मा-ला (?)
नीलङ् के ऊपर (माना रुदता, जाट-संगम)
विकिया साईं में नौलेश्वर
चौदंस प्रदेश

चन्द्रभागा	चन्द्रभागा
चन्द्रशेखर	
चर्मण्वती	मैना नदी (उरगम्)
चंडीश	शिवगण
चित्रशिला	रानीबागके पास
जीवार	जोहार
ज्योतिर्धाम	जोशीमठ
ज्वाला तीर्थ	ज्वालामुखी
टंकर	जागेश्वर पहाड़
तक्षक	सर्पगाँव (सोमेश्वर समीप)
तत्क्षेत्र	पिंडार पार
तपोवन	जोशीमठके पास
तमसा	टौंस नदी (देहरादून)
तारक	तारकधुरा (भोट-मार्ग)
तृषि	नैनीताल
तंकर	जागेश्वर
तंकरा	,,
त्रिविक्रमनदी	सिनी (त्रियुगी-पास)
दक्षतीर्थ	
दमयन्तीसर	रानी दमयन्तीका ताल (नैनीताल)
दारक (शिखर)	संथोली दरकोट
दारु	
दारुकावन	जागेश्वर
दारुण	दारुन (गंगोली)
दारुन	जागेश्वर पहाड़
दुर्गेश्वर	भ्युँखी गाँव
दुःशासनेश्वर	सुकोचर (पट्टी अठागुलीमें, बसुलीसेरके पास)
देवकी	दबका नदी
देवीकुण्ड	नागनाथके पास (वि० नागपुर)
द्रुणिन	द्वाराहाटके परे
द्रोण	दूनगिरि (द्वारा)
नन्दप्रयाग	नन्दकिनी-अलकनन्दा-संगमपर
नलकुण्ड	नलपटन
नवकोण सरोवर	नौकुचिया
नागपुर	नाकूरी (पर्गना दानपुर)
नाला	कैलास पर्वतमालाका शिखर
नीलगिरि	कोकसका डंडा (बागेश्वर)

पंचशिरा	पंचचूली
पंचसरोवर	कालीह्रद, कामह्रद, पद्मह्रद
पताका	ध्वज पहाड़ (पट्टी खरायत)
पाटन	बालेश्वरसे ऊपर
पाण्डुस्थान	पाण्डुकेश्वर (गढ़वाल)
पावन (पहाड़)	पट्टीमाली (शिरा)
पिंडारक	पिंडार नदी
पिनाकीश	पिननाथ (बैजनाथके पास)
पुष्कर	त्रिशूलका एक शिखर
पुष्करशिखर	पोखरी गाँवके ऊपर (वि० नागपुर)
पुष्पभद्र	भीमतालकी नदी
पुलोमा शिखर	दरमा-ब्यांस विभाजक गिरि-दण्ड
फाल्गुण तीर्थ	सोमेश्वरके पास
बाल-खिल्य	सुसवा नदी (देहरादून)
बिन्ध्य	अगरगार
ब्रह्मकपाल	बदरीनाथके पास चट्टान
ब्रह्मद्वार	ब्रह्मकण्ठी
ब्रह्मपुत्रस्थान	बान-उपत्यकामें
ब्रह्म-सरोवर	मानसरोवर
भिल्ल क्षेत्र	भिलंगना-उपत्यका (टिहरीमें त्रियुगीसे पश्चिम)
भीम-सरोवर	भीमताल
भीमसेन	भीम उडियार (गुफा)
भुवनेश्वर, पाताल-	(पट्टी बरौंवमें)
भृगुतुंग	पोखरी (पट्टीमेरङ्)
मणिभद्रा	महादेवसर (प० दसोली)
मन्धाता	उखीमठ मंदिर
मर्कतेश्वर	माको गाँव (तुंगनाथके पंडोंका)
मल्लनारायण	मूलेन (पिंडारीके मार्गमें सुरिङ्से ऊपर)
मल्लिका	माला गाँवके पास
मल्लिकादेवी	नदीकी चट्टान
मल्लिकार्जुन	अस्कोटमें
महापन्थ	केदारके ऊपर शिखर-हिमानी
महाभद्र	मल्ली-दसोलीमें
महिषमर्दनी	त्रियुगी गाँव
माध्वी	नलपटनसे उत्तर
मानस	मानसरोवर (मि-फम्-छो)
रतीश्वर	गोपेश्वरसे नीचे, त्रिशूल-संगमपर

अलमोड़ा	पश्चिमी रामगंगा
रथवाहिनी	अलमोड़ा मिशन स्कूलसे निकली धारा
रम्भा	रासी तरसाली गाँव
राजराजेश्वरी	कुहुरिया ताल
रामसरोवर	राकस ताल
रावणह्रद	लछमन झूला
लक्ष्मण-स्थान	लातूर नदी (टिहरी)
लास्यतरंगिणी	भदकोट
लोध्रशिखर	लोहाघाट नदी
लोह	कटारमल्ल सूर्यमन्दिर.
वरादित्य	अग्नितीर्थ (गौरीकुण्ड)
वह्नितीर्थ	टिहरीमें
वागलक्षेत्र	व्याघ्रेश्वर
वागेश्वर	उत्तरकाशी
वाराणसीक्षेत्र	विधोन
विद्रोण	त्रियुगी-मन्दाकिनी-संगम
विनायकद्वार	राना (डोरा-मल्ला)के पास
विभाण्डेश्वर	विरहगंगा
विरहवती	
विल्वेश्वर	
विष्णुगंगा	अलकनन्दा
विष्णुतीर्थ	यमुना-तमसा-संगम (कलसीके पास)
वेणु	वेनशिखर (आदिबदरीके पास)
वेतालीन	खमगढ़
वैतरणी	कुदरीगढ़
व्याघ्रेश्वर	वागेश्वर
व्यासाश्रम	व्यांस
शतद्रु	सतलज
शम्भु	गुरला (?)
शाकम्भरी-क्षेत्र	टिहरीमें
शारदा	करनाली नदी
शाली	सुवाल नदी
शाल्मलि	सालम
शिवकुण्ड	मध-मन्दाकिनीके संगमपर
शीतवनि	कोटा (दून)
शेषनाग	नागमन्दिर
शेषेश्वर	टिहरीमें
सरयू	करनाली नदी

सरस्वती	सुन्दर दुंगा
सारा	लोहबाकी नदी
सिद्धकूट	नागसिद्ध
सीता-ह्रद	कुहुरियाके समीप (अब शुष्क)
सूर्यकुण्ड	बागेश्वरसे सरयूपार
सौम्यकाशी	गुप्तकाशी
स्वयम्भू	सिंतोला (अलमोड़ा-समीप)
स्वर्गारोहणी	महापन्थके ऊपरके शिखर-समूह
हरिद्रानदी	जलमाल (सिनीगढ़)
हरिणकाली	गत्-क्युत्-छो, गोर, ग्यल-छो, छोल-गन (रावण०)
हंसतीर्थ	कानदेव
हिरण्यगर्भ	गौरीकुण्ड
हेमशृंग	नागशिखर

३. कत्यूरी वंशका उद्गम—परम्पराके अनुसार इस वंशका संस्थापक वासुदेव और समापक वीरदेव था। दोनोंका नाम किसी अभिलेखमें नहीं है। आश्चर्य तो यह है कि ये नाम दोनों वंशावलियोंमें भी नहीं हैं। बैजनाथके मूर्तिसंग्रहालयमें दो शिलालेखोंमेंसे एकमें 'महाराजाधिराज परमभट्टारक श्री लखनपाल देव'के भूमिदान, तथा 'वैद्यनाथ कार्तिकेयपुर'का उल्लेख है। यहीं रुद्रपालदेव, त्रिभुवनपालदेवके नाम भी उल्लिखित हैं, जिनका भी पता दोनों वंशावलियोंमें नहीं है, किन्तु उनके बारेमें कहा जा सकता है, कि डोटी और अस्कोट शाखाके अतिरिक्त पाली (द्वारा)की भाँति बैजनाथमें भी कोई कत्यूरी शाखा राज करती होगी, लखनपाल उसी शाखाका राजा था।

(१) कत्यूरी और शक—शत्रु द्वारा पदच्युत राजाओं अथवा राजवंशजोंका दुर्गम पर्वतोंमें शरण लेना इतिहासमें बहुत देखा जाता है। श्वेत-हूणोंने जब बलख और मध्य एशियाके कुषाण राजाओंको परास्त किया, तो उन्होंने दरवाज, बदखशाँ आदिकी दुर्गम पहाड़ियोंमें शरण ली और वहाँके सीधेसादे निवासियोंकी श्रद्धा तथा शक-घुमन्तुओंकी सहायतासे वे छोटे-मोटे राज्य स्थापित करनेमें सफल हुए। यही अवस्था हूणों तथा दूसरे शत्रुओंके प्रहारसे भारतीय शक-शासकोंकी भी हुई होगी। डोटी और अस्कोटकी वंशावलीमें कत्यूरियोंका मूलपुरुष शालिवाहन माना गया है। गढ़वालकी दो वंशावलियों (विलियम्स और अल्मोड़ाकी)में भी क्रमशः आठवें तथा ग्यारहवें राजा शालिवाहन हैं। यद्यपि शालिवाहन आन्ध्र-शातवाहनोंका नाम है, जो कितने ही समयतक शकोंके प्रतिद्वन्द्वी तथा सम्बन्धी भी रहे, किन्तु जिस तरह शकोंके शकाब्दको शालिवाहन शकाब्द भी कहा जाता है, वैसे ही शकके लिए शालिवाहनका प्रयोग किया जा सकता था। इससे भी प्रबल प्रमाण हैं, कत्यूरियोंके शकोंसे सम्बन्धका शकों जैसी बूटधारी सूर्यकी मूर्तियाँ, जो कटारमल, बैजनाथ, बागेश्वर, द्वारहाट सभी जगहोंमें बहुतायतसे मिलती हैं।

(२) काबुली कटोर और कत्यूर—कत्यूरको कार्तिकेयपुर या कार्तिकपुरका अपभ्रंश माना जाता है। किन्तु कार्तिकपुर>कत्तियउर>कत्तिउर>कत्यूर अधिक स्वाभाविक है। कत्यूरका कभी-कभी कटार भी हो जाता है, यह कटारमल्लके प्रसिद्ध सूर्यमन्दिरके नामसे प्रकट होता है। अटकिन्सनने लिखा है[1]—"(कश्कर) ऊपरी कुनार—उपत्यकाकी चित्राल, यस्सन और मस्तूज रियासतोंका नाम

१. Atk. Vol. II. p. 381.

है।···इन रियासतोंके शासक आज भी कटोरवंश के हैं, (जिनमें) खुशबख्तिया शाखा यस्सन और मस्तूजमें रहती है और शाहकटोर शाखा चित्राल में।···अभिलेखोंसे आठवींसे सोलहवीं सदीतक एक वंशकी परम्परा प्राप्त होती है, जिससे कि अनेक छोटे-छोटे राजवंश इन पहाड़ोंमें जा फूटे। कुमाऊँके खसिया-कत्यूरीके उद्गमके लिए हमें सिन्धुपारके इन पहाड़ी खसिया-कटोरोंकी ओर देखना होगा।" लेकिन कत्यूर और कटोरसे सम्बन्ध स्थापित करनेके लिए यह आवश्यक नहीं है कि हम कत्यूरोंको सिन्धुपारसे आया मानें, और न यही आवश्यक है कि कटोरोंको खश माना जाय। खश और शक एक ही जातिकी दो लहरें हैं, जिनमें शक ईसापूर्व प्रथम शताब्दीमें भारतमें आये, जब कि खश आर्योंके हिमालयमें फैलनेसे भी पूर्व यहाँ फैल गये थे। कटोर और कत्यूर खशोंसे अपनी आत्मीयता भले ही समझते हों, विशेषकर खशोंके देशमें आके बस जानेपर, किन्तु वह वस्तुतः शकोंकी कुषाण-शाखाके अन्तर्गत थे, तभी उनका सम्बन्ध शक-शालिवाहन—कनिष्कसे जोड़ा जा सकता है। शब्द-साम्य, सूर्यपूजा-साम्य आदिसे कत्यूर और कटोर एक हो सकते हैं।

काबुल मुसलमान—अटकिन्सनकी संचित[1] सामग्रीका सारांश है—"मुसलमान ऐतिहासिकोंके अनुसार काबुलमें कटोरमान-वंशका राज्य था। इसके राजाओंमें एक वासुदेव था, जिसका उत्तराधिकारी कनक अन्तिम राजा हुआ। जोशीमठ (प्रथम कार्तिकेयपुर) के कत्यूरीवंशके संस्थापकका नाम भी वासुदेव था। पाँचवीं सदीके मध्यमें कस्पियनसे यमुनातकका भूभाग श्वेतहूणों (हेफतालों) के हाथमें था, छठी सदीके मध्यमें काबुलतकका उनका राज्य तुर्कोंने ले लिया, और भारतमें भी मिहिरकुलको पराजित हो काश्मीरमें शरण लेनी पड़ी। इसी समय काबुलपर तुर्कोंका शासन स्थापित हुआ होगा। प्रारम्भिक मुसलमान भूगोलज्ञोंके लेखोंसे पता लगता है कि उनके समयमें काबुल—जिसे अल्बरूनी कपिशा[2] भी लिखता है—के निवासी हिन्दू और शासक तुर्क (मुसलमान नहीं) थे।" इतिहासकार हस्तखी (९१५ ई०) लिखता है—"काबुलका दुर्ग अपनी दृढ़ताके लिए प्रख्यात है, जिसपर पहुँचनेका एक ही मार्ग है। वहाँ मुसलमान भी हैं, किन्तु अधिकांश नगरमें हिन्दके काफिर रहते हैं। काबुलकी ओर मुसलमानोंका प्रथम आक्रमण ६४४ ई० में खलीफा उस्मानके इराकी क्षत्रप अब्दुल्लाके समय हुआ था, किन्तु गाजी अब्दुर्रहमान ६६१ ई० में ही काबुल पहुँच सका, जब कि उसने वहाँके राजा (काबुलशाही) को बन्दी करके मुसलमान बनाया, किन्तु राजाने फिर इस्लामको छोड़ मुसलमानोंको मार भगानेके लिए भारतके राजाओंसे प्रार्थना की। उसने प्रायः अपने सारे राज्यको स्वायत्त करना चाहा, किन्तु अरब सेनाके सामने परास्त हो उसे वार्षिक कर देना स्वीकार करना पड़ा। ६८३-८४ ई० में काबुलके राजाने कर देनेसे इन्कार किया, जिसपर अरबोंने आक्रमण कर उसे मार डाला। इसके बाद भी संघर्ष बन्द नहीं हुआ, कभी काबुलका राजा बिलकुल स्वतन्त्र हो जाता और कभी करद बन जाता। ६९७-९८ में राजा रत्नपाल (रनविल)ने मुसलिम सेनाको बुरी तरह हराया और अरब सेनापतिको अपने प्राण बड़े मँहगे मोल लेना पड़ा। अब बगदादके अब्बासी खलीफोंका शासन था, जिसकी स्थापनामें सबसे भारी हाथ ईरानी हुज्जाजका था। हुज्जाजने ७००-१ ई० में बदला लेनेके लिए अब्दुर्रहमानके नेतृत्वमें एक बड़ी सेना काबुल भेजी, जो राजा-काबुलको हरानेमें सफल हुई, किन्तु हुज्जाजने विजयी सेनापतिका जैसा स्वागत-सम्मान करना चाहिये था, नहीं किया, क्योंकि उसने स्थायीरूपसे काबुलपर अधिकार नहीं कर लिया। अब्दुर्रहमानने काबुलके राजासे समझौता करके विद्रोह किया, किन्तु असफल हो आत्मघात करनेके लिए बाध्य हुआ। भावी खलीफा मामून जब

१. Atk. Vol. II PP. 382, 984, 430-43.

२. अलहिन्द।

खुरासानका गवर्नर था; उसी समय काबुलपर अधिकार करके राजाको मुसलमान बनाया, किन्तु यह विजय भी अस्थायी थी। बगदादी खलीफोंके साम्राज्यके ध्वंसके बाद स्थापित होनेवाले खुरासान—मध्यएशियाके शासक याकूब लैस-पुत्रने ८६९-७० में काबुलपर अधिकार कर उसके राजाको बन्दी बना लिया। यह विजय कुछ स्थायी जरूर थी, किन्तु अन्तिम नहीं। बरूनीके अनुसार कनक कटोरमान वंश तथा काबुलका अन्तिम राजा था। उसे वह तुर्क-वंशका बतलाता है। बरूनीकी जन्मभूमि खारेज्म कई सदियोंतक तुर्कोंके शासनमें रही, वह उनके चेहरे-मुहरेसे भली प्रकार परिचित था, इसलिए वह कटोरमानोंको तुर्क कहनेमें गलती नहीं कर सकता, किन्तु इसमें सन्देह है कि छठी सदीसे चार सदियोंतक अन्य हिन्दुओंमें ब्याह-शादी करके भी कटोरमान अपनी तुर्की (मंगोली) मुखमुद्राको कायम रख सके होंगे। कटोरमान कनकसे राज्य ब्राह्मणमन्त्री कलारके हाथमें चला गया, जिसके उत्तराधिकारी भीम, जयपाल, आनन्दपाल और निरंजनपाल थे। निरंजनपाल १०२१ में गद्दीपर बैठा, जिसके पाँच साल बाद उसका पुत्र भीमपाल राज्यारूढ़ हुआ।

पहलेके मुसलमान सुल्तान काबुलसे दूर रहते थे; किन्तु ९६१ ई० में गजनीके (तुर्क) सुल्तान अल्प-तगिन (सिंहकुमार) ने गजनीमें अपना राज्य स्थापित किया। इसी समयसे बौद्धों और ब्राह्मण-धर्मियोंपर जबर्दस्त अत्याचार होने लगा। जिससे वह या तो मुसलमान हो गये, अथवा पहाड़ों या भारतकी ओर भाग आये। यही अवस्था उसके उत्तराधिकारी सुबुक-तगिन तथा तत्पुत्र महमूद गजनवीके समय भी रही। महमूदके पुत्र मसऊद (१०३२ ई०) के समय एक नवमुस्लिम बने हिन्दू तिलकने सभी हिन्दू कटोरोंको सुल्तानके अधीन बनाया।

तैमूरने १४०८ ई० में कटोरोंपर आक्रमण किया था। उस समय काबुल उपत्यकामें कटोर ही नहीं, तुर्क, ऐमक>ऐबक (मंगोल) और अरब भी निवास करते थे, तो भी अधिकांश निवासी ताजिक थे, जैसा कि आज भी पासकी कोहदामन (कपिशा) उपत्यकामें हैं। उत्तर-पूर्वके पहाड़ोंमें तब भी काफिर, कटोर और गवरक रहते थे। इस समय कटोरोंकी भूमि कश्मीरसे काबुलतकके पहाड़ोंमें फैली हुई थी। जहाँगीरके समय (१६१९ ई० में) यह प्रदेश—पकली सरकार (जिले)—उत्तरमें कटोर प्रदेश, दक्षिणमें घक्कर, पूरबमें कश्मीरी पर्वतों और पश्चिममें अटक-बनारससे घिरा कहा गया है। आजकल कटोर गिलगित, दरेल, और चित्रालके इलाकोंका नाम है, जैसा कि पहले कहा गया, खुशवख्तिया कटोर यस्सनके शासक हैं, और चित्रालके महतर (राजा) शाहकटोर हैं। गिलगितका अन्तिम राजा श्री बुद्धदत्त भी शाहकटोर-वंशी था।

कत्यूर, (कार्तिकपुर)—जिस तरह पहाड़ोंमें काबुल-गिलगित-काश्गरसे कुमाऊँ और आगेतक खश, कश, या शक जातिका विस्तार रहा, वही बात यदि उनके उत्तराधिकारियों कटोरों और कत्यूरोंके समय हो, तो कोई आश्चर्य नहीं है। कुषाण-शकोंके सिक्कोंपर कार्तिक (कार्तिकेय या स्कन्द) की भी मूर्ति रहती थी, इसलिए उनके वंशज अपने वंश-गौरव तथा वीरत्वकी सूचनाके लिए यदि देव-सेनानीके नामपर अपनी राजधानीको कार्तिकपुर या कार्तिकेयपुर कहें, तो स्वाभाविक ही है। प्रथम कार्तिकेयपुर जोशीमठमें था, जिसके पतनपर यह नाम कत्यूरवंशजोंकी नयी राजधानी वैद्यनाथ और गोमती-उपत्यकाके लिए व्यवहृत होने लगा।

४. हिमाचल बौद्धसे ब्राह्मणधर्मी—वासुदेव (८५० ई०) को परम्परा कार्तिकेयपुर तथा कत्यूरीवंशका संस्थापक बतलाती है और यह भी कि वही बौद्धसे ब्राह्मणधर्मी बना। अभिलेखोंमें प्राप्त तेरह राजाओंमें उसका नाम नहीं मिलता। वसन्तनदेवको वासुदेव मान लेनेपर पहले कहे अनुसार वह कन्नौजके राजा भोज प्रथम (८३६–९२) और पालवंशी विग्रहपाल (८४५–९७) का

समकालीन होगा। भोटके शासनका जुवा फेंकनेका काम शायद इसीने किया, यह कह आये हैं। यह भी सम्भव है कि किसी कटोरवंशीके इस भूभागमें आ जमनेमें भोटसाम्राज्य कारण बना हो, क्योंकि भोटसाम्राज्य कटोरोंके देश गिलगित (उत्तरकटोर) तक फैला हुआ था, जहाँपर कि अरब और भोट-राज्योंकी सीमाएँ मिलती थीं। वासुदेव 'गिरिराज चक्रचूड़ामणि'की उपाधिसे विभूषित किया गया है। शंकराचार्य (७८८-८२० ई०) वासुदेव या वसन्तनके समकालीन हो सकते हैं। परम्परा शंकराचार्यके हिमालयके इस भागमें आनेकी भी बात कहती है। आनेपर वह वसन्तन या वासुदेवके समय आये होंगे; किन्तु यह कोरी कल्पना है कि शंकरने भारतके और स्थानों तथा यहाँसे भी बौद्धोंका उच्छेद किया। बागेश्वर (व्याघ्रेश्वर), बैद्यनाथ आदिकी शिवमूर्तियों और लिंगोंसे पता लगता है कि यहाँका माहेश्वर सम्प्रदाय, लकुलीशोंका था, जिसका गुर्जर-प्रतिहार कालमें उत्तरभारतमें सर्वत्र जोर पाया जाता था। इनके शिवलिंगको पूरे शिश्नका रूप देनेकी कोशिश की जाती थी। अभिलेखोंमें कत्यूरी राजाओंने अपनेको 'परममाहेश्वर' लिखा है, और उनके समयकी शिवमूर्तियाँ उन्हें लकुलीशपंथसे जोड़ती हैं। नवीं शताब्दी भारतके बहुतसे भागोंमें बौद्धधर्मके ह्रासकी शताब्दी नहीं मानी जा सकती। इसी समय पूर्वभारतमें नालन्दा, विक्रमशिला जैसे विश्वविख्यात बौद्ध विद्यापीठ दूर-दूरतक ज्ञान-विज्ञानका प्रसार कर रहे थे। हाँ, सिन्धु, मुलतानपर एक शताब्दीके मुसलिम-शासनके कारण वहाँ ब्राह्मण और बौद्ध दोनों धर्मोंकी क्षति जरूर हुई थी। हिमालयमें कश्मीर अब भी बौद्ध गढ़ था, जहाँके पण्डितोंने संस्कृतसे तिब्बतकी भाषामें सैकड़ों अनमोल ग्रन्थोंका अनुवाद करनेमें भारी सहायता की। यदि हिमालयके इस भागमें बौद्धधर्मका ह्रास हुआ और उसका स्थान ब्राह्मणधर्मने लिया, तो इसका कारण शंकराचार्य नहीं थे, उनका तो यहाँ उस समय नाम भी लोग नहीं जानते होंगे।

वस्तुस्थिति यह थी; कम या अधिक दो शताब्दियोंसे इस भागपर विदेशी भोटदेशियोंका शासन था, जिसमें कभी-कभी जन-साधारणपर अत्याचार तथा तिब्बतियोंके बौद्ध होनेके कारण बौद्धोंके प्रति पक्षपात एवं ब्राह्मणोंके प्रति कुछ उदासीनता भी रही होगी। ब्राह्मणोंके वर्णाश्रम-साम्राज्यसे दूर रहनेसे उन्हें कुछ लेना-देना नहीं था, इसलिए वह अपना देश छोड़ आये कुषाणोंकी भाँति उनके फन्देमें फँसनेके लिए मजबूर नहीं थे। जब तिब्बती राज-शक्ति विकेन्द्रित होने लगी, केदारखण्डपरसे उसका दबाव हटने लगा और यहाँ शक्ति हथियानेके लिए विदेशी (भोट) क्षत्रप तथा स्वदेशी सामन्तोंका द्वन्द्व मचा, उस समय विदेशी बौद्ध सत्ताधारियोंके हिन्दुत्वको स्वीकार न करनेके कारण भोटक्षत्रपका बल निर्बल रहा होगा और स्वदेशीय जातीयताके समर्थक सामन्तोंका बल मजबूत। इस प्रकार राजनीतिक युद्धमें जौके साथ घुनकी भाँति बौद्धधर्म पिस गया होगा। इसी समय शक-वंशीय कत्यूरी वासुदेवने हवाका रुख देख बौद्धधर्म छोड़ ब्राह्मणधर्मकी शरण ली होगी, भोटशासनको उठानेमें सहायताकी होगी, और इस प्रकार अलकनन्दाकी घाटीका एक ठाकुर सारीकेदार-कुमाऊँ भूमिका राजा बन गया होगा।

ऐतिहासिक परिस्थिति बतलाती है कि यहाँ नवीं शताब्दीतक बौद्धधर्मका अच्छा प्रचार रहा होगा। यह आश्चर्यकी बात है कि कुमाऊँमें बौद्धधर्मके पुरातात्विक चिह्नोंका सर्वथा अभाव-सा मालूम होता है। बैजनाथ (अलमोड़ा)की जिस मूर्तिको लोग बुद्धकी मूर्ति बतलाते हैं, वह कुबेर या भैरवकी मूर्ति है, बुद्धकी हर्गिज नहीं। द्वाराहाट (द्वारा)में दसवीं-बारहवीं सदीकी एक पीतल तथा कई पाषाणकी जैन-मूर्तियाँ विद्यमान हैं, किन्तु वहाँ भी कोई बौद्धमूर्ति नहीं दिखलाई पड़ती। सिर्फ बागेश्वरकी दो पाषाणमूर्तियाँ बुद्धमूर्ति-सी मालूम होती हैं जो किसी जलते मन्दिरमें रहीं। सामनेसे एक

मोटे स्तरके टूट कर निकल जानेसे वह इतनी विरूप हो गयी हैं, कि पद्मासनके साथ भूमिस्पर्शमुद्राकी रूपरेखा ही से उनके बुद्धमूर्ति होनेका सन्देह होता है। उनसे यह भी मालूम होता है कि इस स्वदेशी-विदेशीके कलहमें नगरों, ग्रामोंमें आग लगाकर जो ध्वंसलीला हुई थी, उसके शिकार मन्दिर और विहार भी हुए थे। यह भी कुमाऊँमें बौद्धमूर्तियोंके अभावका कारण हो सकता है। वैसे तिब्बतके विहारोंके देखनेसे मालूम होता है कि उस समय केदारखण्डके बौद्धविहारोंकी मूर्तियाँ भी पत्थरकी नहीं बल्कि अधिकतर धातु, काष्ठ और मिट्टीकी रही होंगी। धातुमूर्तियाँ तो कत्यूरीकालके पीछेके संघर्षोंमें नष्ट हुई होंगी। काष्ठमूर्तियाँ लंकादहनसे कैसे बच पातीं? मिट्टीकी मूर्तियाँ तो स्वतः भंगुर होती हैं, उनकी रक्षाके लिए किसी गोबी या तकलमकानकी बालुकाराशि यहाँ नहीं थी।

५. कत्यूरी वंशावली—सुभिक्षराज (१०४५–६५)के बादका मौन शायद कत्यूरी शक्तिके ह्रासका सूचक है, तो भी उनके आधुनिक उत्तराधिकारियोंकी परम्परा बतलाती है कि तेरहवीं सदीके अन्तमें मूलवंशका अन्तिम बिखराव हुआ, जब कि डोटी, अस्कोट, पाली (द्वाराहाट)में स्वतन्त्र कत्यूरी शासक देखे जाते हैं।

दोनों परम्पराओंके अनुसार राजा शालिवाहन वंशके प्रथम पुरुष थे। यह बात भी अपने भीतर ऐतिहासिक महत्त्व रखती है कि जहाँ सारे उत्तरभारतमें विक्रमी संवत्का प्रचार था, वहाँ हिमाचलमें शकसंवत्की आज भी प्रधानता है। शकसंवतीय दक्षिणापथकी भाँति यहाँ सौरपंचांग चलता है। मैदानके वैस राजपूत भी अपना पूर्वज शालिवाहनको मानते हैं, और डोटीके रैनकाके उत्तराधिकारी नेपालके डोटीवाले अपनेको शालिवाहन वंशज तथा वैस राजपूत भी कहते हैं। यहाँ हम डोटी, अस्कोट और पालीके घरानोंसे प्राप्त राजावलिको देते हैं, डोटीकी परम्पराके ३९ राजाओंकी जगहपर अस्कोटने ४८ राजा दिये हैं—

डोटी[1]	अस्कोट[2]	पाली	अभिलेख
१. शालिवाहनदेव	१. शालिवाहन	,,	,,
२. शक्तिवाहनदेव	२. संजय	,,	,,
	३. कुमार	,,	,,
३. हरिवर्मदेव	४. हरित सिंह	,,	,,
४. ब्रह्मदेव	५. ब्रह्म	,,	,,
	६. शक	,,	,,
५. वज्रदेव	७. वज्र	,,	,,
	८. धनंजय (?)	,,	,,
६. विक्रमादित्यदेव	९. विक्रमादित्य	,,	,,
	१०. सारंगधर	,,	,,
७. धर्मपालदेव	११. धर्मपाल	,,	,,
८. नीलपालदेव	१२. नीलैपाल	,,	,,
९. मुंजराजदेव		,,	,,
१०. भोज	१३. भोजराज	,,	,,
	१४. विनयपाल	,,	,,

१. Atk., Vol. II, pp. 530-31.
२. वही, pp. 531–32.

		पाली	अभिलेख
	१५. मुजनपाल	,,	,,
११. समरसिंहदेव	१६. समरसी	,,	,,
१२. असलदेव	१७. असल	,,	,,
	१८. अशोक	,,	,,
१३. सारंग्यदेव	१९. सारंग	,,	,,
	२०. नज	,,	,,
	२१. कामजय	,,	,,
१४. नकुलदेव	२२. शालिनकुल	,,	,,
	२३. गणपति	,,	,,
१५. जयसिंहदेव	२४. जयसिंह	,,	,,
	२५. संकसर	,,	,,
	२६. सनेस्वर	,,	,,
१६. अनिजलदेव	२७. क्रसिदिघ्य	,,	,,
१७. विद्याराजदेव	२८. विधिराज	,,	,,
१८. पृथिवीश्वरदेव	२९. पृथिवीश्वरे	,,	,,
१९. चनपालदेव	३०. बलाकदेव	,,	,,
२०. असन्तिदेव	३१. असन्तिदेव	१. असन्तिदेव	,,
२१. वसन्तिदेव	३२. वसन्तिदेव	२. वसन्तिदेव	१. वसन्तनदेव (८५०–७०)
२२. कटारमल्ल	३३. कटारमल्ल		२. खर्परदेव (८७०–९०)
	३४. सोतदेव	३. सोतदेव	
२३. सिंहमल्लदेव	३५. सिंहदेव		
२४. फनिमल्लदेव	३६. कीना	४. फेनब	
२५. निफि	३७. रानाकीना		३. निम्बर (९१५–३०)
२६. निलपरायदेव	३८. निलपराय		
२७. वज्रबाहुदेव	३९. वज्रबाहु		
२८. गौरांगदेव	४०. गौर		
२९. सीयमल्लदेव	४१. सकिल		
३०. ईलराजदेव	४२. इतिनराज		
३१. नीलराजदेव	४३. तिलंगराज		
३२. फटिकसिलाराजदेव	४४. उदकसिला		
३३. पिथियराजदेव	४५. प्रीतम		
३४. धामदेव	४६. धाम	५. धामदेव	
३५. ब्रह्मदेव	४७. ब्रह्मदेव	६. ब्रह्मदेव	
३६. त्रिलोकपालदेव	४८. त्रिलोकपाल देव	३. असनदेव	
३७. निरंजनदेव	४९. अभयपाल (१२७९ ई०)	अभयदेव	
३८. नागमल्ल देव	५०. निर्भयपाल	५. निर्भयदेव	
३९. अर्जुनशाही	५१. भारतीपाल	६. भारतीपाल	

डोटी और अस्कोटकी राजावलियोंमें भेद होते भी कितने ही नामोंमें समानता है, अन्तिम राजाओंमें पालीवंशावली भी साथ देती है, किन्तु अभिलेखोंमें आये १३ कत्यूरी राजाओंको इनसे मिलाना बहुत कठिन है।

६. अन्तिम दिन—यद्यपि वीरदेवका नाम न किसी अभिलेखोंमें मिलता है, न कत्यूरी वंशकी किसी प्रचलित वंशावलीमें ही, तो भी परम्परा इसे ही महान् कत्यूरी वंशका अन्तिम राजा बतलाती है। इसके अत्याचारोंकी कितनी ही कथाएँ प्रसिद्ध हैं। आज भी देवताके सिरपर आनेके समय देव-वाहन कहता है—

'हंकारो[1], तुम्हारा बाबा जिस ऊँचा गढ़[2] नीचा बनाया।
नीचा गढ़ ऊँचा बनाया, मार गढ़ मैदान बनाया।
हंकारो, तुम्हारा बाबा सुलटी नाली ले लिंछा[3], [4]।
उलटी नालीले दिंछा[5] तरणी[6] तिरिया र्‌होण [7]नि दिना[8]।
वरुणी-वाकरी र्‌होण नि दिना।
महाराजनके राजा[9] पेड़ोंपर फलफूल निर्‌होण दिना।
हंकारो तुम्हारा बाबा, मान चवाँणीको घट रिड्‌यो छा।
बाँजा घटकी भाग ल्ही छा[10]।

उस समय प्रजापर होते अत्याचारकी इस कहानीका अर्थ है—राजाकी बखारसे कूटनेके लिए लोगोंको धान तौलते समय नाली[11]को उलटकर पेंदीकी ओरसे नापा जाता और कूटकर आनेपर चावल-को नालीको सीधा करके नाप लिया जाता। तरुणी स्त्रियोंको राजा जबर्दस्ती पकड़वा मँगाता, और किसीके घर बकरी भी नहीं बचने पाती। महाराजाधिराज किसीके पेड़पर फल-फूल भी नहीं रहने देता था। कौसानीके पास अब भी एक निर्झरका नाम 'हथछिना' है, जहाँसे सीधे जानेपर भी ३–४ मील दूर राजान्तःपुर (हाट) तक स्त्री-पुरुषोंकी कतार खड़ी कर दी जाती, क्योंकि महाराजा झरनेका ताजा पानी पीना चाहते थे। ये लोग झरनेका पानी कलशमें भरकर उसे एक हाथसे दूसरे हाथमें थमाते राजाके पास पहुँचा देते थे। वीरदेवके बारेमें यह भी कहा जाता है कि उसने धर्मविरुद्ध अपनी मामी तिलोत्तमादेवीको रख लिया था।[12] प्रजा उसके अत्याचारसे त्राहि-त्राहि कर रही थी। जब वह पालकी (डाँडी) पर चलता, तो उसके डण्डेको ढोनेवालोंके कन्धेपर छेदकर चमड़ेके भीतरसे

१. पुकारी।
२. महल या दुर्ग।
३., ४. सो लेते थे।
५. देते थे।
६. तरुणी।
७. रहने।
८. देने।
९. कत्यूरी महाराजाधिराज।
१०. दूसरी भी कहावत है—"बाँजा घटकी भाग उघौनी, बाझी गैकी दूध छीनी।
उलटी नाली भर दीनी, कणक बनै लीनी।
११. मापका एक पात्र जिसमें दो सेर अन्न समाता है।
१२. 'मामी तिले धारो बोला'

डलवाता। दो द्रोनेवालोंने इस अत्याचारीका अन्त करनेका निश्चय कर लिया, और जिस समय राजाकी सवारी एक खड्डके किनारेसे गुजर रही थी, दोनोंने डाँडी लिये-दिये खड्डमें छलाँग मार दी।

वीरदेवके बाद कत्यूरी राज्य छिन्न-भिन्न होकर अपने खानदान और बाहरवालोंमें बँट गया। गढ़वाल अलग हो गया। (१) कत्यूरी ब्रह्मदेवने काली कुमाऊँ (काली उपत्यका) का शासन सँभाला। इसका दुर्ग सुईमें था। (२) दूसरी, शायद जेठी शाखा, डोटीमें शासन करने लगी, (३) तीसरी अस्कोट चली गयी। (४) चौथी बारामंडल (अल्मोड़ा इलाकेमें) राज करने लगी। (५) पाँचवीं शाखा कत्यूर (बैजनाथ-बागेश्वर) और दानपुर पर्गनोंकी शासक हुई। (६) छठी शाखाका राज्य द्वाराहाट और लखनपुरमें था।

बहुराजकता (११९०-१४०० ई०)—

१. अशोकचल्ल (११९१ ई०)—शायद वीरदेवके भी बाद त्रिलोकपाल अन्तिम कत्यूरी राजा था, जिसका एक (ज्येष्ठ) पुत्र निरंजनदेव डोटीमें रहा और दूसरा अभयपाल १२७९ ई० में अस्कोट चला गया। किन्तु अभिलेखों द्वारा हमें मालूम है कि ११९१ ई० में अनेकमल्लने कत्यूरियों-की भूमिको विजय किया, अर्थात् इस नेपाली विजेताने उस साल कत्यूरी राज्यका ध्वंस किया जिसके दो साल बाद (११९३ ई०) में उसके दक्षिणी महान् पड़ोसी कन्नौजके गहरवार वंशका ध्वंस मुहम्मद गोरीने किया।

अशोकचल्ल या अनेकमल्लकी विजयके परिचायक दो अभिलेख मिलते हैं—(१) गोपे-श्वरमें १६ फुट लम्बे विशाल लौह-त्रिशूलपर उत्कीर्ण है, और (२) बाराहाट (उत्तर-काशी) में २१ फुट लम्बे पुराने अष्टधातुके त्रिशूलपर। गोपेश्वर चमोलीसे तीन मील दूर, केदारनाथसे आनेवाली सड़कपर है, अर्थात् कत्यूरियोंकी पुरानी राजधानी जोशीमठ (कार्तिकेयपुर) से ३१ मीलपर। कत्यूरी लेखोंमें यही प्रदेश तंगण कहा गया है, जिसका परिचायक चमोलीसे[1] अगले पड़ाव पीपलकोटीसे ऊपर-की तीसरी चट्टी तंगणी अब भी मौजूद है। गोपेश्वर और बाराहाटके अभिलेखोंसे मालूम होता है कि बारहवीं सदीके अन्तमें अशोकचल्ल का अधिकार अलकनन्दासे भागीरथीतककी सारी भूमि—**केदारभूमि**—अर्थात् आजके प्रायः सारे टेहरी और गढ़वाल दोनों जिलोंपर था। गूगे (पश्चिमी मानसरोवर प्रान्त) के भोटनृपति परमभट्टारक नागराज द्वारा बनवायी बुद्धकी भव्यमूर्ति बाराहाटमें आज भी दत्तात्रेयके नामसे पूजी जा रही है, जिससे पता लगता है कि ग्यारहवीं शताब्दीके आरम्भमें ही **भल्याणा** तककी भागीरथीउपत्यका कत्यूरियोंके हाथसे निकल गयी थी।

(१) गोपेश्वरमें अभिलेख—अशोकचल्लने अपने गोपेश्वरके अभिलेखमें लिखा है[2]—

"ओं स्वस्ति। जिसकी प्रतापाग्निने उसके शत्रुओंकी तलवारोंको भस्म कर दिया, जिस (के पदों) की नखमणि शत्रु-राजाओंकी वधुओंके ललाटसिंदूरसे रंजित है, जो अपनी कीर्तिके गाम्भीर्य और विस्तारमें सागर-सा है, जिसके पादुकापीठके रत्नोंकी प्रभा शत्रु-मित्र-राजगणकी भास्वर शिरोमणियोंके किरणजालसे चारों ओर उद्भासित है, जो नृपगजोंका सिंह, वेतालके (राजा) **विक्रमादित्य**की भाँति **दानवभूतल** (भोट ?) का राजा है, जो नारायणकी भाँति सर्पराज-गरुड-वाहन तथा शक्तिसम्पन्न

१. बदरीनाथमार्गपर अलकनन्दाके किनारे।
२. As Res XI P. 477.

है, उसी गौडवंशोद्गत वैराथकुलतिलक, अभिनव बोधिसत्त्वावतार अवनीपतितिलक परमभट्टारक महाराजाधिराज श्रीमान् अशोकचल्लने अपनी सर्वगामिनी वाहिनीसे केदारभूमिको जीता। जीते भूभागको अपना प्रदेश बना, युद्धसे निवृत्त हो उस पृथिवीपतिने यहाँ पद्मपाद-राजायतन बना स्वभोग्य सर्ववस्तुसे अलंकृत कर दान और भोज दिये। शकसंवत् गताब्द १११३ (११९१) और मानतः··· गतदिनांक गणपति १२, शुक्रवासर नवमी चन्द्र ···लिखितं मल्लश्री राजमल्ल, श्रीईश्वरीदेव, पण्डित श्रीरंजनदेव, और श्रीचन्द्रोदय सेनापति सेनानायकके साथ।"

(२) गोपेश्वरमें एक और विशाल लौहत्रिशूल है, जिसपर द्वाराहाटवाले छन्दोंमें अनेकमल्लका निम्न लेख है[1]—

"यशस्वी महाराजा अनेकमल्लने अपने दिग्विजयका विस्तारकर महादेवके इस पुण्यस्थानपर स्तम्भ-लांछनके नीचे स्वविक्रमजित जगत्के प्रभुओंका सम्मेलन किया।···और इस प्रकार इस विजय-स्तम्भको पुनः स्थापित कर कीर्ति प्राप्त की। परास्त हुए योग्य शत्रुको ऊपर उठाना पुण्यकर्म है।"

(२) **वाराहाट** (उत्तरकाशी) के २१ फुट लम्बे पीतलके विशाल त्रिशूलके बारेमें (अट्किन्सनके अनुसार) स्थानीय परम्परा कहती है कि इसे किसी तिब्बती (भोट) राजाने स्थापित किया और यह प्रदेश पहिले तिब्बतके अधीन था। परम्परा क्या, जैसा कि अभी कहा गया, वहाँ दत्तात्रेयके नामसे अब भी पूजी जाती बुद्धमूर्तिपर भोटराज नागराजका लेख 'चम्-बो नगरजइ थुब-प' (भट्टारक नागराजके मुनि) भी वाराहाटके भोट-राज्यके अन्तर्गत होनेकी पुष्टि करता है। कमिश्नर ट्रेलने त्रिशूलके अभिलेखकी प्रतिलिपि (कलकत्ता) एशियाटिक सोसायटीके पास भेजी। डा० व० ह० मिलने अपने अध्ययनका जो परिणाम सोसाइटीके जर्नलमें[2] प्रकाशित कराया, वह पूर्ण नहीं है तो भी उसका कुछ अंश निम्न प्रकार है—

"(१)···यस्य तत् कर्म यच्छृङ्गोच्छितं दीप्तं···(२) ग्रीष्मसूर्य-सी पृथिवीरसशोषिणी असंख्य सेना द्वारा उन्नत-वैभवशाली तत्पुत्र सिंहासनपर बैठा। उसने अपने धनुषको नवाये बिना लोभ-त्याग सुमंत्रणासे शासन किया। उदारचरित नामसे पहिले ज्ञात, सर्वधर्मकृत्यपटु उसने परमशक्तीश्वरकी भाँति अपने विरोधियोंकी पंक्ति, उनके रथादिको चूर्ण कर छिन्न-भिन्न कर दिया (३) पितुः पुत्रस्य (पिताके पुत्रका)···तिलकं यावदंकेपि धत्ते तावत् कीर्तिः सुकीर्तयोरक्षाभयी तस्यास्तु राज्ञः (तिलकको जबतक धारण करता है, तबतक उस राजाकी कीर्ति और सुकीर्ति रक्षित रहे।)"

(३) **तत्कालीन मानसप्रदेश**—यह अनेकमल्लके बहुत पहिलेका लेख है।

अनेकमल्ल कहाँका राजा था? जहाँतक उसके अपने अभिलेखोंसे पता लगता है, वह दानव-भूतलका स्वामी गौड़ वंशोद्भूत वैराथकुलका तिलक था। यह तीनों बातें नेपालके लिच्छवियों या किसी और राजापर नहीं घटतीं। दानवभूतल नाम 'हूणदेश' (पश्चिमी तिब्बत) पर घट सकता है, किन्तु पश्चिमी तिब्बतके भोट राजाओंको गौड़वंशी कहना कठिन है। बारहवीं सदीमें मल्लनामधारी राजा आजके पश्चिमी नेपालमें होते थे और पड़ोसके गूगे (पश्चिमी मानसरोवर प्रदेश) में प्रायः इसी समय मल्लनामधारी राजा थे, और वह वाराहाटमें बुद्धमूर्ति अतएव विहार स्थापित करनेवाले राजा नागराजके ही वंशज थे[3]—

---

१. Atk. Vol. II, p. 515 (डाक्टर मिलके अंग्रेजी अनुवाद से)।
२. J. A. B. S. Vol. V, pp. 34-48, plate IX.
३. 'तिब्बतमें बौद्ध-धर्म' (मेरा)।

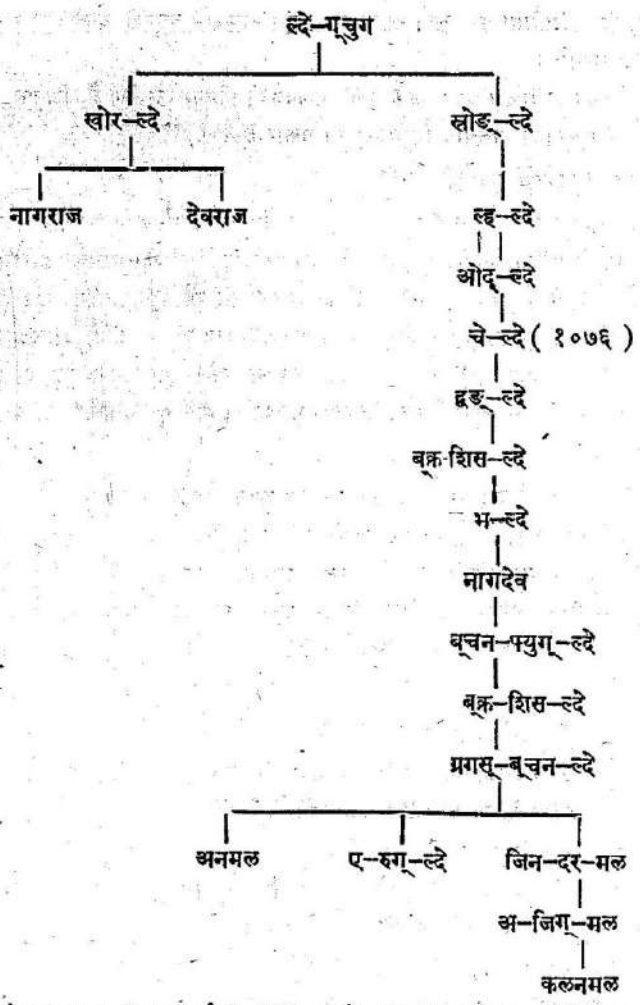

चे-ल्देका समय (१०७६ ई०) निश्चित है, जिससे आठवीं पीढ़ीमें अनमल हुआ था, अर्थात् आठ पीढ़ियोंके लिए १२५ वर्ष लेनेपर अनेकमल्ल और अनमल्लका समय एक हो जाता है। जो भी हो, यह विचारणीय बात है, कि इधर पास ही शङ्गुङ् (थोलिङ्) के इलाकेमें मल्लनाम-धारी राजा बारहवीं सदीके अन्तमें होते थे,[1] और पश्चिमी नेपालमें पर्वत, गलकोट आदिके भी राजा मल्ल कहे जाते थे।

२. काचल्लदेव (१२२३ ई०)—अनेकमल्लके बत्तीस वर्षों बाद इस नये विजेताके कुमाऊँमें आनेका पता लगता है। काचल्लके नेपाली होनेका पता नेपालके इतिहाससे[2] लगता है। वैस ठाकुरोंके राज्यके समय नेपालमें टोलों-मुहल्लोंतकके राजा हो गये थे। कान्तिपुर (काठमांडव)

१. Atk. Vol. II 515 n. "the term 'Raika' or 'Raiska' is an old title in the Malla family and its branches to the present day."
२. Atk. Vol. II p. 515.

में १२ राजा थे, जिन्हें झिनिमथकुल कहा जाता था। इन ठाकुरोंने बहुतसे बौद्ध विहार बनवाये, तथा उनमें वृत्तिबन्धान लगाये।

क्राचल्लदेवका अभिलेख बालेश्वरके उसी ताम्रपत्रकी पीठपर उत्कीर्ण है, जिसपर कत्यूरी राजा देशटदेवका लेख है। लेखका अनुवाद निम्नलिखित प्रकार है—

"सिद्धि हो। **भरोत** राज्यकी समृद्धि।

"युद्धमें बलाद् आकृष्ट उसके भटोंके भालों द्वारा निहत-निपातित शत्रुगजोंके कपालसे बिखरे अनर्घ मोतियों द्वारा प्रभासित, नाकपति द्वारा ही जेय विजयशील स्वस्वामिके द्वारा सदा दृढ़ीकृत, गोब्राह्मण-हित-रक्षा-प्रवणा जो श्रीमती **शिरा** स्वर्गका शासन कर रही है। उसका पुत्र महावीर राजा **क्राचल्ल** हुआ, जो सभी शस्त्रधारियों और शास्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ-प्रमुख तथा शीलदानपरायण था। पृथिवीपति क्राचल्लदेव नवोद्गतदंत-दंतीसे भाला, खड्ग और पाश द्वारा युद्ध करनेमें पाण्डवोंकी भाँति अद्भुत था। वह परम-सौगत[1] **जिनि**-कुल-कमलका प्रभास्वर दिवाकर आयुधशक्तिमें और पराक्रममें भयंकर था।

"परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीमान् **क्राचल्लदेव** नरपतिने अपने १६वें विजय-राज्य (संवत्सर) में अधिकृत क्षेत्रमें हथियारोंसे अपने सारे शत्रुचक्रको परास्त किया, और विध्वस्त कीर्तिपुर (कार्तिकेयपुर)के राजाओंको नष्ट कर वहाँ अपना अधिकार स्थापित किया। फिर उसने पुराने राजाओं द्वारा प्रदत्त भूमिका निरीक्षण किया और उन सभीको उनके धनागमके साथ अब परमवन्दनीय एकरुद्र श्री बालेश्वर ···(के पूजाधिकारी) वंगज ब्राह्मण भट्टनारायणको··· योगक्षेमार्थ यह दान किया।"

(यहाँ राजाकी भगिनीका यह श्लोक है—)

"मेघ भूरिशः वर्षाजलको पर्वतों और नदियोंपर फैलाते हैं,
किन्तु जगत् अह्लादके यह कीर्ति त्रिभुवनमें फैलती है।"

(फिर महारानीका यह श्लोक है—)

"दानादि गुण श्रेष्ठ हैं, किन्तु वह और भी श्रेष्ठ है, जो स्वधर्म-
परायणा सदा स्वपतिभक्ता है, क्योंकि कालमुख भक्षक है।"

श्री याहड़देव माण्डलिक	श्री विद्याचन्द्र माण्डलिक
श्री चन्द्रदेव ,,	श्री जयसिंह ,,
श्री हरिराज राउत्त राज	श्री जीहलदेव ,,
श्री अनिलादित्य रा० रा०	श्री वल्लालदेव ,,
श्री विनयचन्द्र माण्डलिक	श्री मूसदेव ,,

—इन अपने पारिषदों तथा मित्रामात्योंसे मन्त्रणाकर और अपने कर्तव्य कर्मपर विचारकर (क्राचल्ल-देवने) उपरोक्त दान नैयायिक, तान्त्रिक, पारिषद् सत्पुरुष, क्षांत, विवेकी, इस कलियुगमें गद्य-पद्य-काव्य-रचना प्रख्यात कवि, कृत्यानुष्ठानपरायण, जातकफलगणनादिचतुर, शकुनशास्त्रपटु, लोकप्रसिद्ध **नन्दपुत्र** (भट्टनारायण) को प्रदान किया।

"उक्त दान-भूमिका सीमान्त निम्न प्रकार है, पूर्वमें **स्वहारगाडी**, दक्षिणमें **कहुडकोड**, पर्यन्त, पश्चिममें **तलकोटा** तक और उत्तरमें **लघौल** तक। इस प्रकार चतुःसीमाबद्ध, **कोनदेवमें**

१. परमबौद्ध।

कुमाऊँके कुछ दृश्य

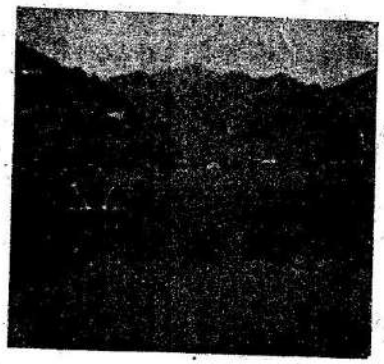

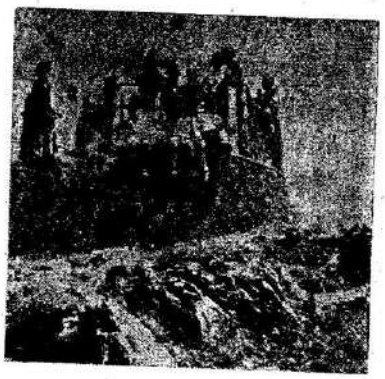

कुमाऊँ—बस्ती

कुमाऊँ—बस्ती

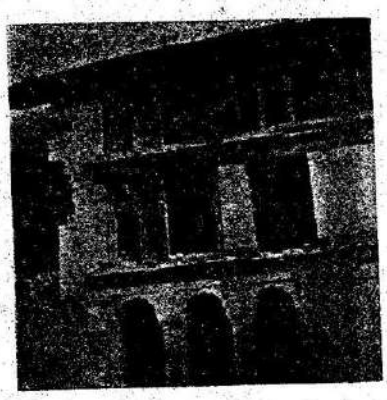

कुमाऊँ—पुराना घर

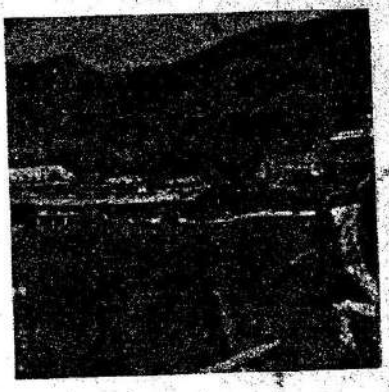

कुमाऊँ—पर्वतीय बस्ती

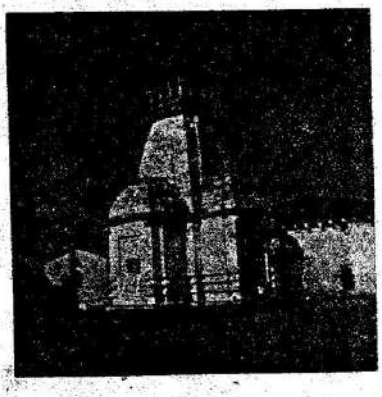

कुमाऊँ—मन्दिर

कुमाऊँ—प्राकृतिक दृश्य

अवस्थित आकर–नदीतट–जंगल, तथा उनकी उपजको इस दानपत्र द्वारा (हमने) यावच्चन्द्र-दिवाकर सदाके प्रवर्तित रहनेके लिए दे दिया।

सभी शक्तिशाली (राजा) जो समय-समयपर मेरे
वंशमें पैदा होंगे, तथा दूसरे भूपति इस (दानकी) सदा रक्षा करें।
श्रीकाचल्लदेवस्य यावद् अम्भोजिनीपति।
विहरतु भुवि तावत् कीर्तिरस्य नृपकुमुदाकरस्य।

(जबतक कमलिनीपति सूर्य हैं, तबतक इस नृपकमलाकर श्रीकाचल्लदेवकी कीर्ति पृथिवी-पर विहरे।)

सौन्दर्यमें चन्द्र और रतिपति समान, दरिद्रोंके लिए कल्पतरु, रघुमणिसे वीरतागुणमें, सभामें भवानीपतिके सर्वगुणोंवाला, धनुर्धरत्वमें स्वयं भीष्म-राम-सा, न्यायमें धर्मसुत (युधिष्ठिर)-सा काचल्ल था कलियुगमें शत्रुगजनिषूदन।

हमारे मित्र मित्रतामें दृढ़ रह पावें समृद्धि।
सदा वर्षभर भूपाल न्याय-शासन करें भूपर।
रहे सदा चतुर्विध राजनीति नववधू-सी तुम्हारे साथ।
चापार्धमणिशेखर देव दें सौभाग्य मानवोंको।

(इति) शक संवत् ११४५ (सन् १२२३) पौष कृष्ण द्वितीया सोमवासर कर्कमें चन्द्र, धनुमें सूर्य, शनि उसीका अनुगामी, कन्यामें मंगल, वृश्चिकमें वृहस्पति और शुक्र, कुम्भमें बुध, मेषमें Ascending node, और दक्षिणपूर्वमें Discending node-दूलू[1] समीपस्थ श्रीसम्पन्न नगरमें लिखित। सर्वजगत्का मंगल हो।"

काचल्ल जिनिकुलोत्पन्न तथा सम्भवतः दूलूका निवासी था। वह बौद्ध था, किन्तु संकीर्ण साम्प्रदायिकताका शिकार नहीं, इसीलिए बालेश्वर महादेव तथा ब्राह्मण पुरोहितको यह दान करते उसे संकोच नहीं हुआ। उसके दस सचिवोंमें माण्डलिक जिहलदेव और जयसिंहदेव खसिया राजा जीहल और जय मालूम होते हैं। दो राउत्त हरिराज और अनिलादित्य डोमकोटवालों जैसी उपाधि रखते हैं। श्रीचन्द्रदेव, विनयचन्द्र और विद्याचन्द्र चन्द्रनामधारी चन्द्रवंशके राजाओंका उपनाम धारण किये हैं।

३. वैजनाथ (कत्यूर) के राजा—पिछले पृष्ठोंमें बतलाया गया है कि कत्यूरियोंकी आदि राजधानी कार्तिकेयपुर (कत्यूर) जोशीमठ था। राजधानी बन जानेपर पीछे वैजनाथका नाम भी कत्यूर पड़ा। वैजनाथमें मौजूद राजा लखनपालदेवके शिलालेखमें 'वैद्यनाथ कार्तिकेयपुर' नाम आया है। अनेकमल्ल या कृपाचल्ल जैसे प्रबल शत्रुके प्रहारके बाद कत्यूरी राजा पुराने कत्यूर (जोशीमठ) से भाग गये। वैजनाथ सुरक्षित स्थान है, इसमें सन्देह नहीं, और आज भी वैजनाथ और जोशीमठके बीच बहुत चालू रास्ता है। वैजनाथसे एक मीलपर गोमती-पार गरुड़तक मोटरके आ जानेपर अब तो जोशीमठ होते बदरीनाथके लिए बहुत-सा माल गरुड़से ढोकर उसी पुराने रास्तेसे जा रहा है। पुराने कार्तिकेयपुरसे वीरदेवको भागना पड़ा था या किसी औरको, यह कहा नहीं जा सकता। साथ ही दानपुर पर्गनेकी कत्यूर और दानपुर पट्टियोंकी उर्वर भूमिको पहिले हड़प लेने तथा वंशोच्छेदके कारण वैजनाथकी कत्यूरी शाखाके बारेमें, सिवाय अतिरंजित अत्याचारोंके, मौखिक ऐतिहासिक सामग्री भी बहुत प्राप्य नहीं है, जिससे कि इस शाखाके बारेमें अधिक कहा जा सके। वैजनाथके विस्तृत ध्वंसावशेषों,

१. दूलू पश्चिमी नेपालका एक मण्डल है।

वहाँके भव्य मन्दिरों तथा सुन्दर पाषाणमूर्तियोंके देखनेसे यह प्रथम कार्तिकेयपुरके समयमें ही द्वितीय कार्तिकेयपुर हो गया हो, तो कोई आश्चर्य नहीं। यह कत्यूर पर्गना गढवालकी सीमापर है, जहाँ श्रीजयवल्लभ ममगाइकी भाँति कितने ही गढवाली परिवार यहाँ आकर बस गये हैं। पुराने नगरके स्थानपर आज गोमती नदीके बायें तटपर कई गाँव हैं। अन्तःपुरकी जगहको हाट (तेलीहाट) कहते हैं। सामने गोमती-पार शेलीहाट है। जान पड़ता है, नगर नदीके दोनों तटोंपर बसा था और गरुड़तक चला गया था। नगरके पूर्वमें गोमतीके मोड़का स्थान देवालयोंके लिए सुरक्षित था। वैजनाथका मन्दिर तथा कुछ और मन्दिर वहाँ अब भी मौजूद हैं। कत्यूरियोंके समय **लकुलीश** सम्प्रदायके शैव सन्त यहाँके प्रधान पुजारी थे। पीछे जंगम आये। पासके छोटे मन्दिरके पत्थरपर खुदा है—'भयंकरनाथ जोगी'। इसी कालकी लिपिमें कटारमलके मन्दिरके पीछे भी खुदा हुआ है—'जंगम राउल जोगी' और 'जोत राउल जोगी'। वैजनाथ मन्दिरके आजके गिरिनामापर पुजारी शंकरगिरिकी सन्तान हैं, जिनका कि पासमें ३० घरोंका एक गाँव बस गया है। १९वीं सदीके आरम्भमें जब गोरखा कुमाऊमें आये, तो रुहेलों द्वारा ध्वस्त-भ्रष्ट होनेके कारण मन्दिर उजाड़ पड़े थे। गोरखा-शासक हरद्वारमें हरकी पैड़ीके पास ही दास-दासियोंकी बकायदा बाजार लगवाया करते थे, वहींसे उन्होंने शंकरगिरिको बुलाकर उन्हें वैजनाथकी पूजा सुपुर्द की। वर्तमान महन्त श्यामगिरि शंकरगिरिकी पाँचवी पीढ़ीमें हैं—

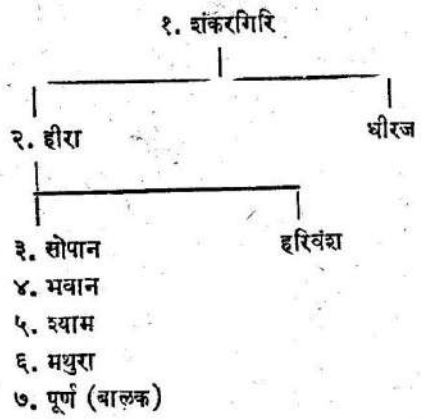

तलीहाटमें राजाके चौपड़ खेलनेका चबूतरा अब भी बतलाया जाता है। गाँवके घरोंके पत्थर पुरानी इमारतोंसे निकालकर लगाये गये हैं। गाँवके भीतर लक्ष्मीनारायण और राकरस मन्दिर हैं। लक्ष्मीनारायणके मन्दिरकी दीवारपर उत्कीर्ण लेख[1] "श्री शाके १२२४ (१३०२ ई०) राजा हमीरदेव, लिंगराउदेव अरालदेई गंगोली सोवर्ण कलस चढ़ायो" से यही पता लगता है, कि तेरहवीं सदीके अन्तमें यह मन्दिर अच्छी अवस्थामें था, और गंगोलीके राजाको केवल सुवर्ण-कलश चढ़ानेकी ही जरूरत जान पड़ी। इसपर 'रावल पाल्ह १४२२' (१५०० ई०) का भी एक लेख है। रावल सम्भवतः आजकी भाँति उस समय भी मन्दिरोंके महन्तको कहते थे। गाँवसे बाहर खेतोंमें सत्यनारायणका ध्वस्तप्राय मन्दिर किन्तु अखण्डित विष्णुमूर्ति है। मूर्ति चौदहवीं, पंद्रहवीं सदीकी होगी। पासमें थोड़ा ही हटकर कुछ पत्थरोंके ढेरमें मृत्युंजयका बड़ा लिंग भी अवस्थित है। मन्दिर ध्वस्तप्राय-सा रहा होगा, जब कि उसके पत्थरोंको १९१४ में गोमतीके लोहेके झूला पुलमें लगा दिया गया।

१. 'सन् १३५२'—कुमाऊँका इतिहास, पृष्ठ २५८।

वैजनाथ मन्दिर जान पड़ता है, देवालयोंका झुरमुट था। मुख्य मन्दिरका अब निचला अंश ही बच रहा है। मन्दिरके बाहर अष्टभुजा देवीकी अतिसुन्दर पाषाणमूर्ति है। २९ मूर्तियों और शिलालेखोंको इकट्ठा करके पुरातत्वविभागने गोदाममें रख दिया है। शिलालेखोंमेंसे एकमें 'महाराजाधिराज परमभट्टारक श्रीलखनपालदेव' का भूमिदान उल्लिखित है। दूसरे लेखमें राजा त्रिभुवनपाल देव और 'वैद्यनाथ कार्तिकेयपुर' तथा 'वामनदेव' का भी उल्लेख है।

पण्डित रामदत्त त्रिपाठीकी पुस्तिकासे पण्डित बदरीदत्त पाण्डेने उद्धृत करते लिखा है[1]—"इन्हीं (कत्यूरियों)के वंशमें त्रिभुवनराजदेवने बागेश्वरके नाम दो ग्राम अर्पण किये···राजा त्रिभुवनदेवकी छठी पीढ़ीमें इन्द्रपालदेव राजा हुए थे। इनकी रानी दमयन्तीने चौघाड़पाटामें उद्यान लगाया, जो अब 'रानीबाग' कहा जाता है। इसीके निकट दमयन्तीताल भी है।

"राजा इन्द्रपालके पुत्र राजा लक्ष्मणपालदेवने संवत् १०५५ में काले पत्थरमें लक्ष्मीनारायणकी मूर्ति बनवाकर वैद्यनाथमें रखी थी, जो अब गणनाथ मन्दिरमें है।

"पश्चात् राजा लक्ष्मणपालके राजा उदयपाल, वसन्तपाल, बलीनिकुलपाल, विजयपालने अपने नामसे संवत् १०८०–११३६ के लगभग वैद्यनाथमें मन्दिर बनवाये।"

ये नाम वैद्यनाथ-कार्तिकेयपुरके कत्यूरी राजाओंके हैं, इसमें सन्देहकी कम गुंजाइश मालूम होती है। किन्तु, त्रिपाठीजीके दिये संवतोंमें सन्देह मालूम होता है। इधरके लेखोंमें संवत् नहीं, शाकेका प्रयोग ही देखा जाता है। मूर्ति-गोदामका त्रिभुवनपालदेववाला शिलालेख उक्त त्रिभुवनपाल-देवका होगा। लक्ष्मणपाल शिलालेखवाले महाराजधिराज परमभट्टारक श्रीलखनपाल होंगे, जिनके काले पत्थरवाली मूर्तिका शक संवत् लेनेपर उनका काल १०९७ ई० हुआ। वैद्यनाथके निम्नलिखित राजा ज्ञात हैं—

त्रिभुवनपाल
इन्द्रपाल
लखनपाल (१०९७ ई०)
उदयपाल (११५२ ई०)
वसन्तपाल
बलीनिकुलपाल
विजयपाल (१२०८ ई०)
सुखलदेव (१५९७ ई०)

वैजनाथके अन्तिम कत्यूरी राजा शायद सुखलदेव थे, जिनके साथ इस राज्यका उच्छेद सोलहवीं सदीके अन्तमें कैसे हुआ, यह आगे कहेंगे।

इन्हीं कत्यूरियोंके राज्यमें बागेश्वर आजकी भाँति पहिले भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा होगा, जहाँ भोट-भोटान्त, कटेहर तथा कुमाऊँ-गढ़वालके पण्योंका विनिमय होता रहा होगा। बागेश्वरमें लकुलीशोंके लिंग तथा मुखलिंग मिलते हैं।

४. द्वाराहाट राज्य—द्वाराहाट पाली-पछाँव पर्गनेका केन्द्र रहा है, रानीखेतके बस जानेके बाद उसका महत्त्व जाता रहा। आज भी बदरीनाथसे लौटनेवाले कितने ही तीर्थयात्री इधरसे गुजरते

१. कुमाऊँका इतिहास, पृष्ठ २२४।
२. नैनीतालसे काठगोदाम जानेवाले पुराने रास्तेपर एक गाँव; काठगोदामसे तीन मीलपर।

हैं, किन्तु उन्हें यह पता नहीं कि किसी समय यहाँ एक दूसरी द्वारा (द्वारिका) बनने जा रही जिसके लिए कोशी और रामगंगा नदियोंकी यहीं आकर मिलनेकी सलाह भी हो गयी थी, कोशीने अन्तमें धोखा दिया।

द्वारा (द्वाराहाट) कितने ही समयतक एक समृद्ध राजधानी रही, इसका परिचय आ वहाँ मौजूद दो दर्जनसे अधिक पाषाण-मन्दिर दे रहे हैं।

पण्डित रामदत्त त्रिपाठीने द्वाराके बारेमें लिखा[1] है—

"कत्यूरी राजाओंने द्वाराहाटमें द्वारिका भी बनवानी चाही और गुर्जरदेवके समय (संवत् ११७९ (१२५७ ई०) की कालिकादेवीकी मूर्ति अबतक टूटी-फूटी द्वाराहाटमें विद्यमा इसी बीच वहाँपर शीतलादेवीकी भी स्थापना हुई।

(शक) संवत् १२३८ (१३१८ ई०) राजा सुधारदेवने दूनागिरिमें देवीकी मूर्ति स्थापित (शक) संवत् १२४० (१३१८ ई०) में द्वाराहाटमें भी बदरीनाथका मन्दिर बनवाया। रा (वर्तमान रानीखेत) नामक पर्वत इसी राजाकी रानी पद्मिनीका विलासक्षेत्र था।"

"राजा **मानदेवने** (शक) संवत् १२५९ (१३३७ ई०) में वासुदेव (वसी) त्रिपाठीक कत्यूरमें ग्राम दाडिमठौकको जागीरमें दे दिया। राजा सोमदेवने (शक) संवत् १२७१ (१३४९ में एक रमणीय नौला द्वाराहाटमें बनवाया और (शक) संवत् १२७६ (१३५४ई०) में गणेशक गणाई-चौखुटियामें स्थापित करायी।"

इससे द्वाराहाटके निम्नलिखित राजाओंका पता लगता है—

गुर्जरदेव	१२५७
सुधारदेव	१३१६, १३१८
मानदेव	१३३७
सोमदेव	१३४९, १३५४

द्वाराहाट पाली-पछाँवके राजाओंकी राजधानी रही। पालीके साथ 'पछाँव' और कु साथ 'काली' लगानेकी परिपाटी है, जिसकी उतनी आवश्यकता नहीं, क्योंकि पश्चिमकी पा दूसरी कोई पूर्वी पाली नहीं, न काली उपत्यकाके कुमाऊँको छोड़ दूसरा कोई कुमाऊँ पर्गना पाली-पछाँवकी राजावलि निम्न प्रकार है—

१. आसन्तिदेव
|
२. वासन्तिदेव
|
३. गौरांगदेव
|
४. श्यामलदेव
|
५. फेणवराय
|
६. केशवराय
|
७. अजबराय

१. 'कुमाऊँका इतिहास', पृष्ठ २२०-२५।

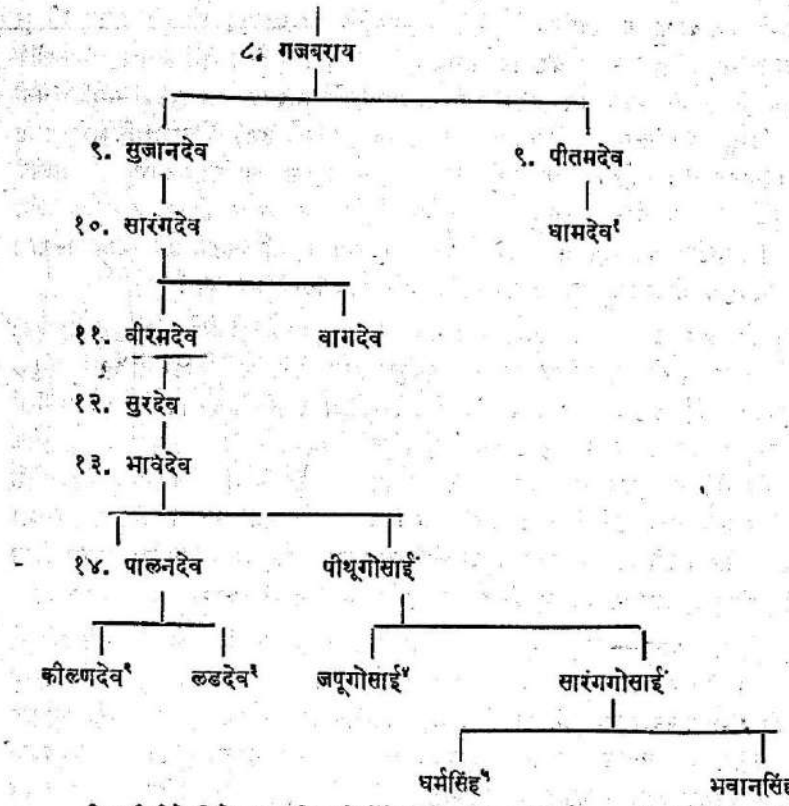

त्रिपाठीजीके दिये नाम शिलालेखोंसे लिये मालूम होते हैं, यद्यपि उन्होंने पहाड़में अधिकतर प्राप्त शक संवत्का उल्लेख नहीं किया है, जिससे विक्रम संवत्का भ्रम होता है। प्राप्त वंशावली कितनी भ्रान्त है, यह शिलालेखोंमें आये गुर्जरदेव आदिका नाम उसमें न आना ही बतलाता है। गुर्जरदेवका ध्वस्त मन्दिर अभी भी लोगोंको भूला नहीं है।

द्वाराहाटको देखनेसे आज भी मालूम होता है कि अपनी समृद्धिके समय वह वैजनाथसे (दोनोंके बीच ९-१० मीलका ही अन्तर है) कम नहीं रहा होगा। यद्यपि वैजनाथको जैसा गोमतीका जल कृषि तथा दूसरे उपयोगके लिए मिला है, वैसा द्वाराहाटके भाग्यमें नहीं था। इसके पासकी नदीका नाम चाहे क्षीरगंगा ही क्यों न हो, किन्तु वह आजकी भाँति हमेशा सींक बोरकर ही जल देती रही होगी। तो भी खेतोंसे भरी यहाँकी समतल-सी भूमि बहुत दूरतक चली गयी है। लोग कहते

१. इसने दक्षिणी गढ़वालमें राज्य किया, पतली दूनकी ओर किला बनाया। इसकी सन्तानें चन्द राजाओंके समय कुमाऊँमें आयीं।
२. चौकोटमें जसपुरके रजवारोंके पूर्वज।
३. चचणेटीसे सैण-मानुरमें आये मनुरालोंके पूर्वज।
४. उदयपुर, भटलगाँव तथा हाटके मनुरालोंके पूर्वज।
५. कहेड गाँवके मनुरालोंके पूर्वज।
६. तामाढौनके मनुरालोंके पूर्वज।

हैं, वर्षाके जलसे हम दो फसलें पैदा कर लेते हैं। राजधानीके अन्नका कष्ट बाहरसे लाकर भी दूर किया जा सकता था, किन्तु पानीका कष्ट कम बाधक नहीं रहा होगा। त्रिपाठीजीके देखे अभिलेखोंके अनुसार चौदहवीं सदीके मध्य (१३४९) में राजा सोमदेवके समयतक द्वाराहाटकी समृद्धि बनी रही होगी। किन्तु डोटी-सिराके विजेता राजा रतनचन्द (१४५०-८८) के उत्तराधिकारी राजा कीर्तिचन्द (१४८८-१५०३ ई०) ने पश्चिममें अपनी सीमा बढ़ाना आवश्यक समझा। पालीके राजाने भी युद्ध करनेमें अपनेको असमर्थ समझ अधीनता स्वीकार करना ही अच्छा समझा और बारामण्डल या डोटीके कत्यूरियोंकी गलतीको नहीं दुहराया। कीर्तिचन्द्रने उसे मान लिया। पालीराजने सल्टपट्टीके भीतर **मानिला** डाँडामें अपना महल और किला बनवाया।

शाहजहाँ और औरंगजेबके समकालीन चन्द राजा बाजबहादुरचन्द (१६३८-७८ ई०) की गढ़वालसे छिड़ी हुई थी, उस समय पालीका कत्यूरी राज्य छिन्न-भिन्न होकर दो स्याने (कुछ गाँवोंके ठाकुर) बन गये थे। दो प्रबल योद्धाओंके बीच उनकी हालत 'जिमि दसनन महँ जीभ बेचारी' सी थी। उनपर दोष लगाया गया कि उन्होंने गढ़वालियोंकी सहायता की। कत्यूरीवंशी साँवलीके बिस्ट तथा बंगारस्यूँके रौत (रावत) को बहादुरचन्दने अपनी ओर कर लिया, और पालीके स्यानोंके हाथसे कुछ गाँव निकालकर उन्हें दे बिस्ट और रावतको भी स्याना बना दिया। अब पालीमें चार स्याने हो गये। विरोध उग्र होना ही ठहरा। अन्तमें बाजबहादुरने कत्यूरियोंके किलेको उजाड़ दिया और उनकी बचीखुची राजशक्ति भी लुप्त हो गयी। इस प्रकार सल्ट भी चन्दोंके राज्यमें मिल गया।

५. डोटी राज्य—कत्यूरी राज्यके ध्वंसपर कमसे कम आधा दर्जन रियासतें कत्यूरी वंशवालोंने ही स्थापित की थीं; इनमें डोटीका राज्य बहुत पीछेतक प्रभावशाली रहा, और इसके उच्छेद करनेपर ही चन्दवंश कुमाऊँमें अपनी प्रधानता स्थापित कर सका। त्रिलोकपालके एक पुत्र अभयपाल (१२७९) ने अस्कोट शाखाको स्थापित किया और दूसरे निरञ्जनदेवने डोटी शाखाको। अस्कोटके शासक सदासे राजवार (राजकुमार) कहे जाते रहे, जब कि डोटीवाले महाराज कहे जाते थे; इससे जान पड़ता है, निरंजनदेव शायद त्रिलोचनके बड़े कुमार थे। अभयपालके काल (१२७९) से अनुमान होता है कि डोटी राज्यकी स्थापना भी १२७९ ई० के ही आसपास हुई। डोटीकी राजपरम्परा निम्न प्रकार है[1]—

१. निरंजनदेव	१०. मन्धाता शाही
२. नागमल्ल (१४६१ ई०)	११. रघुनाथ ,,
३. अर्जुनशाही (१४६२ ई०)	१२. हरि ,,
४. भूपतिशाही	१३. कृष्ण ,,
५. हरि ,,	१४. दीप (१ देव) शाही
६. राम ,,	१५. विष्णु ,,
७. पवर ,,	१६. प्रदीप ,,
८. रुद्र ,,	१७. हंसध्वज ,,
९. विक्रम ,,	

शाही उपनाम स्थिर नहीं मालूम होता, क्योंकि हरिशाही (५) को हरिमल्ल भी कहा गया है[2]।

१. Atk. Vol. II p. 531.
२. Atk. Vol. II p. 551.

डोटीके[1] राजाकी उपाधि रैनका-राजा थी, और उसके सामन्त भी राजा कहे जाते थे। इस वंशके छोटे कुमार 'मल्लशाही' कहे जाते थे। तेरहवीं सदीमें, जब कि कत्यूरी राज्य छिन्न-भिन्न हो गया और डोटी राज्य दक्षिणी कुमाऊँमें स्थापित हो गया था, 'चन्द' वंशका प्रथम ऐतिहासिक राजा थोहर (थोर) चन्द डोटीका एक सामन्तमात्र था। डोटीकी प्रधानताको चन्द राजा पन्द्रहवीं सदीके मध्यतक मानते रहे जब कि भारतीचन्द (१४३७-५० ई०) ने कर देना बन्द कर दिया। युद्ध छिड़ना आवश्यक था। भारतीचन्दने अपनी राजधानी चम्पावत (काली कुमाऊँ) से एक बड़ी सेना ले काली नदीके किनारे बाली-चौकड़में डेरा डाल डोटीके आसपासवाले प्रदेशमें लूट-मार आरम्भ कर दी। यह युद्ध बारह सालतक रहा। कहते हैं, इसी समय वहाँ सैनिकोंने अस्थायी तौरसे जिन स्त्रियोंके साथ सम्बन्ध स्थापित किया था, वह 'कटकाली' (कटकवाली) कही गयीं। इन्हींकी सन्तान 'नायक' हुई, जिनके यहाँ हालतक लड़कियाँ वेश्या बनती थीं। इस दीर्घकालव्यापी युद्धका निर्णयात्मक फैसला तभी हुआ, जब कि भारतीचन्दका पुत्र रतनचन्द कटेहर (रुहेलखण्ड) की सेना ले पिताके सहायतार्थ पहुँच गया। डोटी राजाकी हार हुई और वह युद्धक्षेत्रसे भाग गया। अब (१४५० ई० के आसपास) चन्द राजा स्वतन्त्र नरेश बन गये।

अभी भी रैनका राजाकी शक्ति पूर्णतया नष्ट नहीं हुई थी। १४६१ में भारतीचन्दकी मृत्युके बाद उसने फिर काली कुमाऊँ (चन्दोंके राज्य) पर अपने प्रभुत्वका दावा किया। इस समय नागमल्ल रैनका राजा था, जिसने शाही राजाको हटाकर गद्दी खुद सँभाल ली थी, जिससे पुराना रैनका भागकर चम्पावत आ गया था। रतनचन्दने नागमल्लको हराकर शाही राजाको राज दे दिया। आगे चन्दोंकी शक्ति बढ़ती गयी और डोटी राजाको कालीके पूर्वके प्रदेश (आजकल नेपालमें) पर ही सन्तोष करना पड़ा, तो भी अभी रैनकाने कुमाऊँके लोभको छोड़ा नहीं था। १६८० ई० में रैनका राजाने गढ़वालसे मिलकर काली-कुमाऊँपर आक्रमण कर चम्पावतपर अधिकार कर लिया, किन्तु यह सफलता दो वर्षसे अधिक नहीं रही और रैनकाको हटना पड़ा।

रैनका देवपाल राजा उद्योतचन्द (१६७८-९८ ई०) का प्रतिद्वन्द्वी तथा औरंगजेबका समकालीन था। उसने उद्योतचन्दको गढ़वालमें फँसे देखकर काली-कुमाऊँपर आक्रमण किया। किन्तु चन्द-सेनाने उसे (१६८५ ई० में) हराकर काली-पार खदेड़ दिया। यही नहीं, उसने रैनकाके ग्रीष्म-वासस्थान अजमेर[2] पर दखल कर लिया। रैनका सेती नदीके तटपर पहाड़की जड़में अवस्थित दिपाइलके अपने शीत-वासस्थानमें भाग गया, किन्तु दो वर्ष बाद वहाँसे भी भागकर मैदानी इलाकेकी राजधानी खैरागढ़में शरण लेनी पड़ी। उद्योतचन्दने १६८८ में खैरागढ़पर भी अधिकार कर लिया। देवपाल रैनकाने चन्द राजाकी अधीनता मान, कर देना स्वीकार किया।

रैनकापर चन्दोंकी यह विजय बहुत बड़ी विजय थी, जिसका राजधानी अलमोड़ामें बड़ा उत्सव मनाया गया। इसके उपलक्ष्यमें एक नया राजप्रासाद बनवाया गया, जिसके स्थानपर आजकल अलमोड़ाका मिशन-स्कूल है। इसी विजयके स्मरणमें त्रिपुरसुन्दरी, उद्योतचण्डेश्वर और पर्वतेश्वरके मन्दिर भी अलमोड़ामें बनाये गये। लेकिन, १६९६ में फिर रैनकाने सन्धि भंग कर दी। राजा उद्योतचन्दने स्वयं सेना ले काली-पार हो डोटीपर आक्रमण किया। हुन्दोलधुरा और कुमाऊँ सीमाके बीच जुराइलमें युद्ध हुआ, जिसका कोई निर्णय नहीं हो सका। उद्योतचन्द झीझाड़के जोशियों—

१. डोटीमल्ली आज फल्दाकोट पर्गनेकी एक पट्टी है, जिसके मुख्य गाँव हैं, बैना, मनारी और पांडेकोटा।

२. आजकल चौंतारा (गवर्नर) का निवासस्थान, हुन्दोलधुराके पास।

मनोरथ और शिरोमणि—को सेना-संचालनका भार दे और भी सेना जमा करने अलमोड़ा चला आया। कुछ ही समय बाद मनोरथ युद्धक्षेत्रमें मारा गया और बाकी सेनाको बुरी तौरसे फँसी देख राजाको लौटा आना पड़ा। उद्योतचन्द डोटीके रैनकाके पास युद्धमें असफल हो १६९८ में मर गया। उसके पुत्र ज्ञानचन्द या गरुड़ ज्ञानचन्द (१६९८-१७०८ ई०) को भी पिताके नामपर पड़ी इस कालिमा-को तुरन्त धोनेका ख्याल छोड़ना पड़ा। इसी समय पश्चिममें गढ़वालके अभियानमें सफलता प्राप्त करनेके बाद ज्ञानचन्दने डोटीके भावर और तराईको लूट-पाटकर ध्वस्त किया। यह डोटी रैनका और चन्दोंका अन्तिम संघर्ष था। अठारहवीं सदीके उत्तरार्धमें गोरखावंशके प्रभुत्वके स्थापित होनेके पूर्व पश्चिमी नेपालके वैश्य-राजाओं—दूलू, डोटी, जुमला, और अचाम—मेंसे डोटी एक था[1]। नेपालके गोरखा राजा पृथिवीनारायणशाहकी मृत्युके समय (१७७५ में) पश्चिमी नेपाल अभी गोरखा राज्यमें सम्मिलित नहीं हुआ था।

पृथिवीनारायणके उत्तराधिकारी रणबहादुरशाहके शासनकाल (१७७९ ई०) में, जब कि उसके चचा बहादुरशाहका प्रताप फैला, पश्चिमी नेपालके साथ डोटी भी गोरखा-राज्यका अंग बन गया।

६. सीरा-राज्य—सीरा-वंश डोटीके कत्यूरी-वंशकी ही एक शाखा थी। इसकी राजावलि निम्नलिखित प्रकार है—

१. अधिरावत	१२. राजमल्ल	
२. भीष्मरावत	१३. कल्याणमल्ल	
३. शक्तिरावत	१४. जुरबानमल्ल	
४. धीरमल्ल	१५. अर्जुनमल्ल	
५. जगातीमल्ल	१६. नाममल्ल	
६. कुरुपालमल्ल	१७. बलिनारायणमल्ल	
७. रिपुमल्ल	१८. डुगरा बसेडा	खश[2]
८. भूपतिमल्ल	१९. मदनसिंह बसेडा	
९. भारतीमल्ल	२०. रायसिंह बसेडा	
१०. दातामल्ल	२१. शोभामल्ल	
११. आनन्दमल्ल	२२. हरिमल्ल (१५६७ ई०)	

सीरा कालीके पास अवस्थित आज भी एक छोटा-सा पर्गना है, जिसकी मुख्य नदी पूर्वी रामगंगा है। डिंडीहाट (८००० फुट) यहाँकी मुख्य बस्ती है, जहाँ रैनका राजा जाड़ोंमें घमतप्पीके लिए आया करते थे। दिगतड़[3] पाटाके ऊपर पश्चिम ओर पहाड़पर रैनकाकी राजधानी सीराकोट थी। यहाँ पुराने दुर्ग, देवी तथा भैरवके मन्दिरोंके खँडहर हैं। इस दुर्गको पुरुष (पुराखू) फत्तने जीतकर सीरा-राज्यका ध्वंस किया।

कल्याणचन्द (१५६०–६५ ई०) चन्दोंका एक प्रतापी राजा था, उसकी रानी डोटीकी

१. काली नदीके तटसे पूरब-पश्चिमी नेपालके चौबीसी राज्योंके नाम थे—अचाम, दूसनिया, उरगा, कंशका, गुटिमा, गोलाम, चीली, जसेरकोट, जुमला, जोहार, डोटी, दरकोट, दरमा, दूलू, धानी, धुलेक, प्युठन, प्रीसिंग, मस्कोट, राघन और सतून।

२. सीराके ही बसेडा राजपूत।

३. यहाँ लिखतड़, धिंगतड़, पीपलतड़, दुबतड़, भमतड़, बलतड़. जैसे तड़-अन्त बहुतसे स्थान हैं।

राजकुमारी थी। सीराकी जनाकीर्ण उर्वरभूमिपर उसकी दृष्टि थी। उसने अपने भाई रैनका राजासे सीरा दहेजमें माँगा। भाईने शोरका पर्गना दे दिया। बहिन उससे सन्तुष्ट नहीं हुई। कल्याणचन्द सीराको बिना लिये ही मर गया, इसपर रानीने तबतक सती होनेसे इन्कार कर दिया, जबतक कि उसका पुत्र सीरा विजय नहीं कर लेगा। माताके उकसानेपर रुद्रचन्दने सीरापर चढ़ाई की, किन्तु रैनका राजा हरिमल्लने उसे बुरी तरह हराया। इसी समय रुद्रचन्दको एक साधनसम्पन्न ब्राह्मण **पुरखू** (पुरुष) पन्तका पता लगा। पुरखू गंगोलीमें रहते थे। राजाके बहुत जोर देनेपर उन्होंने चन्द-सेनाका सेनानी बनना स्वीकार किया। पुरखूने तीन बार सीराकोटपर चढ़ानेकी कोशिश की, किन्तु असफल रहे। अन्तमें पुरखूकी सेना तितर-बितर हो गयी। हरिमल्ल पीछा कर रहा था। पुरखू मारे-मारे फिर रहे थे। कहावत है, पुरखू भूखे एक बुढ़िया ब्राह्मणीके घर गये, बुढ़ियाने केलेके पत्तेपर खीर रखके दिया। पुरखू पन्त खीरको पत्तेके बीचसे खाने लगे, किनारेकी खीर खिसककर जमीनपर गिरने लगी बुढ़ियाने कहा—"त्वील नीखै जाणी खीर, परखू पन्त लै नी ली सकी सीर।" (तुझे खीर खाना नहीं आता, पुरुष पन्तको सीराकोट जीतना नहीं आता) और बतलाया कि खीर पत्तेकी चारों तरफसे खानी चाहिये, इसी तरह पुरखू पन्तको सीधे सीराकोटपर आक्रमण न कर उसके चारों ओर नाकेबन्दी करनी चाहिये। पुरखूने वैसा ही किया, और रैनका राजा हरिमल्ल सीराकोट छोड़ डोटीमें भाग गया। सीराके लोग अब भी पुराने राजवंशकी भक्ति नहीं छोड़ना चाहते थे, इसलिए रुद्रचन्दने दूसरे स्थानोंके लोगोंको लाकर वहाँ बसा दिया। हरिमल्लकी सन्तान डोटी (नेपाल) में अब भी मौजूद हैं।

रुद्रचन्दने पुरखू पन्तको बहुतसे गाँव दिये। यह दानपत्र भाद्र शुक्ला ९ शनिवार सन् १५८१ में लिखा गया था, जिसकी कुछ पंक्तियाँ हैं—

"राज्यके भूमिविजयी, मन्त्रियोंमें सबसे योग्य और श्रेष्ठ डोटी राजाके गर्वभंजक, शत्रुमर्दन-केसरी, विद्वानोंमें परमविद्वान् पुरुषोत्तमको।"[1]

७. सोरके राजा—सोरके बम, वर्मा या ब्रह्म राजवंश भी डोटीकी ही शाखा थी। कुछ बम राजाओंके नाम ये—

१. कराकील बम	५. ज्ञानी बम
२. काकील बम	६. शक्ति बम
३. चनरी बम	७. विजय बम
४. अरकी बम	८. हरि बम

इनकी राजधानी पिठौरागढ़के पास उदयपुर थी, किन्तु जाड़ोंमें ये घमतप्पीके लिए रौलपट्टीमें रामेश्वरकी ओर बैलोरकोटमें जाया करते थे, जहाँ अब भी इनके महलोंके खँडहर मौजूद हैं।

पन्द्रहवीं सदीके महत्त्वाकांक्षी क्षुद्र राजवंशोंमें डोटीसे निकला यह वंश भी था। डोटीके विध्वंसके बाद भारतीचन्दके पुत्र रतनचन्द (१४५०-८८ ई०) ने सोरको भी जीत लिया। बमोंके एक राज-कर्मचारी जैंदा किरालकी मनोरंजक कहानी आज भी प्रसिद्ध है। वह किरी गाँव पट्टीका बलदिया (बन्दोबस्ती अफसर) था। पर्गनेकी नयी नापी करके उसने मालगुजारी बढ़ा दी। लोगोंमें हाहाकार मच गया। लोगोंने उसकी स्त्रीके पास झूठी खबर पहुँचायी कि जैंदा मारा गया। स्त्री सती होनेके लिए तैयार हो गयी। लोगोंने सलाह दी, यदि तू पतिके कागजोंको भी लेकर सती हो जाय, तो पतिकी सद्गति हो जायगी। सतीने वैसा ही किया। तबसे कहावत चली—

1. Atk. Vol. II p. 552.

"मरि गयो जैंदा जलायी हालि वै। जसि-जसि सोरयाल कू नी तसि-तसि भै।"

(जैंदा मर गया और उसकी वही जलायी गयी; सोरवालोंने जैसा-जैसा कहा, वैसा-वैसा हुआ।)

८. अस्कोटके रजवार—अस्कोटवंश कत्यूरीवंशकी शाखा है, कत्यूरी राजा त्रिलोकपालके पुत्र अभयपालने १२७९ में कत्यूरसे आकर अस्कोटमें एक छोटेसे राज्यकी स्थापना की। यहाँके शासकोंकी उपाधि रजवार हुई। अस्कोट अष्टकोटका अपभ्रंश है। आठ कोटोंमें एक चम्पाचल या लखनपुरकोट था, जिसके पास बगरीहाट नगरके ध्वंसावशेष हैं। चम्पाचलपर रजवारके कुलदेवता (महादेव) का मन्दिर है। इनकी राजावलि निम्न प्रकार है—

४८. त्रिलोकपाल[1]

४९. अभयपाल (१२७९)		निरंजनदेव (डोटी)
५०. निर्भयपाल	८८. सुततिपाल	९९. भ्रमैपाल
५१. भारतीपाल	८९. अच्छपाल	१००. अच्छरपाल
५२. भैरवीपाल	९०. तिलोकपाल	१०१. विजयपाल
५३. भूपाल[2]	९१. सूरपाल	१०२. महेन्द्रपाल
८१. रतनपाल	९२. जगतीपाल	१०३. बहादुरपाल
८२. संखपाल	९३. पीरोजपाल	१०४. पुष्करपाल
८३. श्यामपाल	९४. राइपाल	१०५. गजेन्द्रपाल
८४. सैपाल	९५. महेन्द्रपाल	१०६. भूपेन्द्रपाल
८५. सुरजनपाल	९६. जयन्तपाल	१०७. विक्रमबहादुरपाल
८६. भूजयपाल	९७. वीरबलपाल	(वर्तमान)
८७. भरतपाल	९८. अमरसीपाल	

अभयपालकी सन्तानका डोटीके रैनका राजासे पहिले क्या सम्बन्ध था, इसके बारेमें यही कहा जा सकता है कि शायद पहिले भी रजवार अपनेको रैनकाके अधीन समझते थे, क्योंकि पिछले

---

१. देखिये पृष्ठ ५९।

२. भूपालके बादके तीस अनुल्लिखित राजाओंके नाम पण्डित रुद्रदत्तके अनुसार निम्न प्रकार हैं, किन्तु इनमेंसे अधिकांश आगे आ गये हैं—

१. धर्मादेव	११. सूरजपाल	२१. महेन्द्रपाल
२. ब्रह्मदेव	१२. भोजपाल	२२. जैंथपाल
३. असनदेव	१३. भद्रपाल	२३. वीरबलपाल
४. अभयदेव	१४. शिवरतनपाल	२४. अमरसिंहपाल
५. निर्भयदेव	१५. अच्छपाल	२५. अभयपाल
६. भारतीपाल	१६. त्रैलोक्यपाल	२६. उच्छवपाल
७. भैरवपाल	१७. सुन्दरपाल	२७. विजयपाल
८. रतनपाल	१८. जगतीपाल	२८. महेन्द्रपाल
९. श्यामपाल	१९. पीरोजपाल	२९. हिम्मतपाल
०. साहिपाल	२०. राइपाल	३०. दलजीतपाल

समयमें सीराकी भाँति अस्कोटके शासक (रजवार) भी अपनेको डोटीके अधीन मानते थे। उस समय जोहार और व्यांसके भोटान्तिक इलाकोंपर इन्हींका शासन था। कालीसे पश्चिम डोटीके प्रभावसे समाप्त होनेके बाद अस्कोटके रजवार चन्दोंके अधीन हो गये। गोरखाकालमें वह गोरखोंको ४००) वार्षिक कर देते थे, जो अन्तमें २,०००) कर दिया गया था। अस्कोटमें उत्तराधिकार सिर्फ ज्येष्ठ पुत्रको मिलता था, जिसके अनुसार गोरखा-शासनमें पुराने रजवार विजयपालके मरनेपर पहिले भाई रुद्रपाल फिर बेटे महेन्द्रपालको रजवार बनाया गया था। अंग्रेजोंने पहिले तो दोनोंको माना था, किन्तु रुद्रपालसे मुकदमा होनेपर १।३ हिस्सेके साथ अंग्रेजोंने पुत्र महेन्द्रपालको रजवार माना गया। तबसे महेन्द्रपालकी ज्येष्ठ सन्तान एकमात्र रजवार मानी जाने लगी।

रजवारकी सम्पत्तिका बँटवारा होता रहा, किन्तु १८५५ में रजवार पुष्करपाल बाकी हिस्सोंको खरीदनेमें सफल हुए। तबसे वही सारे अस्कोटके जमींदार हो गये।

९. गंगोलीके राजा—बागेश्वरसे नीचे **सरयू** और पूर्वी **रामगंगा** के नीचे गंगोली रमणीय भूप्रदेश है, जिसके बारेमें कविवर गुमानीने कुमाउँनी भाषामें लिखा है—

"केला, निम्बू, अखोड़, दाडिम, रिखू, नारिंग, आदो दही,
खासो भात जमालिको कलकलो भूना गडेरी गवा।
च्यूडा सद्य उत्योल दूध बाकलो घ्यु गायको दाणोदार,
खाँनी सुन्दर मौणियाँ घबड़वा गंगावली रौणियाँ।"

चन्दोंके प्रतापसे पहिले गंगोलीका एक राजा था, जिसकी राजधानी माणिकोटमें होनेसे उसे मणिकोटी-राजा भी कहा जाता था। मणिकोट गाँवमें पुराने महलोंकी टूटी-फूटी सीढ़ियाँ तथा ध्वस्तप्राय मन्दिर अब भी दिखाई पड़ते हैं। मणिकोटसे थोड़ा पश्चिम गंगोलीहाट था, जो अब भी एक अच्छा खासा बाजार है। यहाँ मिडिल स्कूल, डाकबँगला, डाकघर भी हैं।

मणिकोटके निम्न लिखि राजाओंका पता मिला है—

१. कर्मचन्द	५. पुण्यचन्द
२. सीतलचन्द	६. अनीचन्द
३. ब्रह्मचन्द	७. नारायणचन्द
४. हिंगुलचन्द	

गंगोलीके राजा हमीरदेवने १३०२ ई० (शाके १२२४) में तलीहाट (वैजनाथ) के लक्ष्मीनारायण मन्दिरपर स्वर्ण-कलश चढ़ाया था, यह हम बतला आये हैं,[1] हमीरदेवका नाम इस सूचीमें नहीं है। शायद हमीरदेवके वंशको हटाकर प्यूठन (डोटी) से आये कर्मचन्दके वंशने अपना राज्य स्थापित किया हो। इस उर्वर-भूमिके शासक डोटीके रैनका राजाके अधीन थे। राजा नारायणचन्दके समय राजा कल्याणचन्द (१५६०–६५) को बहाना मिल गया। उसने गंगोलीको हड़प लिया और राजवंशी डोटी चले गये। गंगोलीके मन्त्री पहिले उप्रेती ब्राह्मण होते थे। [illegible] छल कर राजा कर्मचन्दको शिकार खेलते समय मरवा दिया और कह दिया कि राजाको बाघ खा गया। रानीने उप्रेतीको हटा अपने पुत्रको पन्तके हाथमें सुपुर्द कर सती होते समय कहा—"मेरा पति

१. इस कालके दूसरे अभिलेख हैं—गंगोलीहाटके जाह्नवी नौलेमें सन् १२६४ का एक शिलालेख, और कल्हण पण्डितकी स्त्री सुभद्राका १३६५ ई० का गौरीमहेश्वर (वैजनाथ) के भोग-मन्दिरका शिलालेख।

यदि बाघसे मारा गया, तो यहाँके लोग भी बाघसे मारे जायँ। पिछली शताब्दीके आरम्भतक यहाँ बाघ बहुत होते थे। कहावत थी—

"खत्याड़ी साग, गंगोली बाग।"

१०. फल्दाकोट राज्य—रानीखेतसे दक्षिण अलमोड़ा जिलेका यह सबसे छोटा पर्गना (केवल १५ वर्गमील) है, किन्तु जनसंख्या १९०१ में भी १,५८,१४३ थी, जो कि भूमिकी उर्वरताका भी प्रमाण है। किरातीचन्दके समय (१४८८–१५०३) तक यहाँके खाती राजाने अपनी स्वतन्त्रता कायम रखी थी। यद्यपि पहिले संघर्षमें ही राजा मर गया, लेकिन वीर खाती लोग तलवार म्यानमें रखनेके लिए तैयार नहीं थे। 'पहाड़में खाती, देशमें हाथी' की कहावत इन्हींकी शूरताके कारण मशहूर हुई। किरातीचन्दसे लड़ते-लड़ते खातियोंने अपनेको नष्ट कर दिया और उनके उजड़े गाँवों और खेतोंको आबाद करनेके लिए किरातीचन्दको दूसरे स्थानोंसे लोगोंको ले आना पड़ा।

११. खस राजा (८६९–१०६५ ई०)—कत्यूरी राज्यके छिन्न-भिन्न होनेके बाद जहाँ और राजपूत जातियोंने अपना-अपना राज्य कायम किया, वहाँ संख्यामें सबसे अधिक खस भी पीछे नहीं रहे। कहते हैं, निम्नलिखित १५ खस राजाओंने ३०० वर्षोंतक काली-कुमाऊँपर शासन किया—

	राज्यारम्भ सन्	वर्ष		राज्यारम्भ सन्	वर्ष
१. बीजड़	८६९	२०	९. गुणा	९६८	१९
२. जीजड़	८८९	७	१०. पीडा (वीडा)	९८७	९
३. जाजड़	८९६	१९	११. नागू	९९६	१९
४. जड़	९१५	९	१२. भागू	१०१५	११
५. कालू	९२४	५	१३. जयपाल	१०२६	१६
६. कल्सू	९२९	११	१४. सैपाल (सैनपाल)	१०४२	१२
७. जाहल	९४०	२०	१५. इन्द्र (इमि)	१०५४-६९	१५
८. मूल	९६०	८			

कालीकु-माऊँके खस राज्यके उच्छेदके बाद भी दानपुर पर्गनेमें खसोंका शासन रहा, जिन्हें परास्त करनेमें चन्दोंको कम कठिनाई नहीं उठानी पड़ी। दानपुरके राजाका वंश दाणूवंश कहा जाता था। वस्तुतः दानपुरियोंका संघटन कुछ जनजातिके जनतन्त्रताके ढंगपर था।

चन्द्रवंश (१४००-१७९० ई०)—

१. प्रारम्भ—दो सौ वर्षोंतक कुमाऊँमें बहुराजकताका दौर-दौरा रहा। देश बहुतसे टुकड़ोंमें बँटा हुआ था, किन्तु यह अवस्था सदा नहीं रह सकती थी, छोटी-छोटी मछलियोंको निगलकर किसी बड़ी मछलीका अस्तित्व ही हिमाचलके इस बड़े भागको बाहरी शासनके जूयेके नीचे जानेसे बचा सकता था, और यह बड़ी मछली थी चन्द (चन्द्र) वंश। यह वंश कुमाऊँका अन्तिम स्वदेशी राजवंश था, जिसके बाद भारतके स्वतन्त्र होनेपर ही सारे देशके साथ कुमाऊँ अपना भाग्य-विधाता बन सका। चन्दोंकी राजावलि निम्न प्रकार मिलती है—

१. सोमचन्द
२. आत्मचन्द
३. पूर्णचन्द
४. इन्द्रचन्द
५. संसारचन्द
६. सुधाचन्द
७. हमीरचन्द (हरिचन्द)
८. वीणाचन्द (१५. खसिया राजा ८६९–१०६५ ई०)
९. वीरचन्द

१०. रूपचन्द	१०८०–९३ ई०	३७. (१५) कीर्तिचन्द	१४८८–१५०३
११. लक्ष्मीचन्द	१०९३–१११३	३८. (१६) प्रतापचन्द	१५०३–१७ ई०
१२. धर्मचन्द	१११३–२१ ई०	३९. (१७) ताराचन्द	१५१७–३३ ई०
१३. कर्मचन्द (कूर्मचन्द)	११२१–४९ ई०	४०. (१८) मानिकचन्द	१५३३–४२ ई०
१४. कल्याणचन्द (वल्लालचन्द)	११४०–४९ ई०	४१. (१९) कल्याणचन्द (३)	१५४२–१५५१
१५. नामीचन्द (निर्भयचन्द)	११४९–७० ई०	४२. (२०) पुनीचन्द (पूर्णचन्द१)	५५१–५५ ई०
१६. नरचन्द	११७०–७७ ई०	४३. (२१) भीष्मचन्द	१५५५–६० ई०
१७. नानकीचन्द	११७७–९५ ई०	४४. (२२) बालो कल्याणचन्द	१५६०–६८ ई०
१८. रामचन्द	११९५–१२०५	४५. (२३) रुद्रचन्द	१५६८–९७ ई०
१९. भीष्मचन्द (भीषमचन्द)	१२०५–२६ ई०	४६. (२४) लक्ष्मीचन्द	१५९७–१६२१
२०. मेघचन्द	१२२६–३३ ई०	४७. (२५) दिलीपचन्द	१६२१–२४ ई०
२१. ध्यानचन्द	१२३३–५१ ई०	४८. (२६) विजयचन्द	१६२४–२५ ई०
२२. परबतचन्द	१२५१–६१ ई०	४९. (२७) त्रिमलचन्द	१६२५–३८ ई०
२३. (१) थोहरचन्द	१२६१–७५ ई०	५०. (२८) बाजबहादुरचन्द	१६३८–७८ ई०
२४. (२) कल्याणचन्द (२)	१२७५–९६ ई०	५१. (२९) उद्योतचन्द	१६७८–९८ ई०
२५. (३) त्रिलोकचन्द	१२९६–१३०३ ई०	५२. (३०) ज्ञानचन्द	१६९८–१७०८
२६. (४) डमरुचन्द	१३०३–२१ ई०	५३. (३१) जगतचन्द	१७०८–२० ई०
२७. (५) धर्मचन्द	१३२१–७४ ई०	५४. (३२) देवीचन्द	१७२०–२६ ई०
२८. (६) अभयचन्द	१३४४–७४ ई०	५५. (३३) अजीतचन्द	१७२६–२९ ई०
२९. (७) ज्ञानचंद(गरुडज्ञानचंद)	१३७४–१४१९	५६. (३४) कल्याणचन्द (५)	१७२९–४७ ई०
३०. (८) हरिहरचंद (हरीचंद)	१४१९–२० ई०	५७. (३५) दीपचन्द	१७४८–७७ ई०
३१. (९) उद्यानचन्द	१४२०–२१ ई०	५८. (३६) मोहनचन्द	१७७७–७९ ई०
३२. (१०) आत्मचन्द (२)	१४२१–२२ ई०	५९. (३७)प्रद्युम्नशाह(प्रद्युम्नचंद)	१७७९–८६ ई०
३३. (११) हरीचन्द (२)	१४२२–२३ ई०	६०. मोहनचन्द (दूसरी बार)	१७८६–८८ ई०
३४. (१२) विक्रमचन्द	१४२३–३७ ई०	६१. (३८) शिवसिंह (शिवचन्द)	१७८८ ई०
३५. (१३) भारतीचन्द	१४३७–५० ई०	६२. (३९) महेन्द्रचन्द	१७८८–९० ई०
३६. (१४) रत्नचन्द	१४५०–८८ ई०		

(१) थोहरचन्द (१२६१–७५)—इस सूचीके सोमचन्दसे परबतचन्दतकके प्रथम बाईस राजाओंकी ऐतिहासिकता सिद्ध करना बहुत कठिन है। १८१३ ई० में श्री ब. फ्रेजरने श्री हर्षदेव जोशीके साथ विचारविनिमयके बाद कम्पनी-सरकारको लिखा था—"(चन्दवंशका) प्रथम राजा थोहरचन्द जो राजपूत जातिका था, १६-१७ वर्षकी आयुमें झूसीसे लाया गया। उसके उत्तराधिकारी पुत्र, पौत्र और प्रपौत्र हुए। परम्परा उच्छिन्न हो जानेके बाद थोहरचन्दके भाई ज्ञानचन्दके वंशजको झूसीसे लाकर गद्दीपर बिठाया गया[1]···अधिक शुद्ध वंशावलिके अनुसार वह था (गरुड़) ज्ञानचन्द, जो १३७४ ई० में गद्दीपर बैठा। थोहरचन्दका राज्य १२६१ में आरम्भ हुआ। थोहरचन्द (१२६१–७५) के बाद अभयचन्दतक (१२९६–१३७४) के पाँच राजाओंके बारेमें कोई बात मालूम नहीं होती···किसी-किसी परम्परामें तो (गरुड़) ज्ञानचन्द (१३७४–१४१९) को थोहरचन्दका

१. Atk. Vol. II. p. 503.

उत्तराधिकारी माना गया है, फिर तो थोहरचन्दका समय चौदहवीं शताब्दीका मध्य मानना पड़ेगा। चन्द-राजाओंका सबसे पुरातन अभिलेख विक्रमचन्द (१४२३-३७) का १४२४ ई० का मिलता है। इसलिए परम्परामें आये सभी काल पक्के नहीं कहे जा सकते।

कहते हैं, चन्दोंके पूर्वज सोमचन्द पहिले कुमाऊँकी लोहाघाट-उपत्यकामें सुईके राजा द्वारा १५ एकड़ भूमि पा दामादके तौरपर बस गये थे। यह बात थोहरचन्दके झूसीसे आकर बसने-पर भी लागू हो सकती है, अर्थात् तेरहवीं या चौदहीं सदीके मध्यमें थोहरचन्द पहाड़में जामाताके रूपमें आकर सुईमें बस गये। सुईमें आज भी एक पुराने सूर्यमन्दिरका ध्वंसावशेष मौजूद है, जिससे जान पड़ता है कि शक (शालिवाहन-वंशज वैस) राजपूत पुराने कत्यूरियोंके शासनकालमें भी इस स्थानका महत्त्व था। पीछे शासनकेन्द्र डोमकोट (दोनकोट)में परिवर्तित कर दिया गया। जहाँके शासक राजवंशी खसिया ठाकुर थे। चन्दोंके प्रथम पुरुषने दहेजमें मिली १५ एकड़ भूमिमें एक राजकुंगा (राजदुर्ग) बनाया, यही पीछे चम्पावतके नामसे प्रख्यात हुआ और अलमोड़ाके राजधानी बनने (१५६० ई०) से पहिलेतक चन्दोंकी राजधानी रहा।

(२) महरा और फरत्याल—चन्दोंके राज्यारम्भके समय कुमाऊँके प्रभावशाली व्यक्ति मारा (**महरा**) और **फरत्याल** दो दलोंमें विभक्त थे। महरोंका प्रधान ग्राम कोट था और फरत्यायालोंका डुंगरी (सुईके पास)। सम्भवतः इन दोनों दलोंकी प्रतिद्वन्द्वितासे भी चन्दवंशको शक्तिसंचय करनेमें सहायता मिली। प्रथम चन्द-राजाओंके मन्त्री (दीवान और बख्शी) इन्हीं गाँवोंके मुखिया (बूढ़े) होते थे। उनके दरबारी जोशी, बिस्ट और कनौजिया पाँड़े (मुदलिया) थे। सैनिक, असैनिक प्रशासन जोशियोंके हाथोंमें था, जो चन्दवंशके अन्ततक वैसा ही रहा। बिस्ट और पाँडे ऊँची जातिके ब्राह्मण माने जाते थे, और राजाके गुरु, पुरोहित, व्यास और वैद्य इन्हींमेंसे होते थे। थोहरचन्दकी सन्तान जब राज्यको काफी बढ़ा लेनेमें सफल हुई, तब भी वह अपनेको डोटीके रैनका राजा (महाराजा) के अधीन मानती थी, यह हम देख आये हैं। आरम्भिक चन्द-राजाओंमें-से ही किसी (इन्द्रचन्द ?) के समय तिब्बतसे लाकर रेशमके कीड़ोंका पालना काली-कुमाऊँमें शुरू किया गया, जो गोरखा-शासनकी स्थापनासे पूर्वतक चलता रहा।

तेरहवीं-चौदहवीं सदीमें चन्दवंशके संस्थापित हो जानेके बाद भी कत्यूरी बैजनाथ, द्वाराहाट, डोटीमें शासन कर रहे, यह पहिले बतलाया जा चुका है।

(३) (गरुड़) ज्ञानचन्द (१३७४-१४१९ ई०)—(क) कटेहर—ज्ञानचन्द चाहे थोहरचन्दका प्रथम उत्तराधिकारी हो या उससे छठाँ, इसके समयसे कुमाऊँके तमसाच्छन्न इतिहासपर कुछ प्रकाश पड़ने लगता है। अबतक चन्दोंने अपने राज्यको काफी बढ़ा लिया था। उनके दक्षिणमें कटेहर (रुहेलखण्ड) का राज्य था। कन्नौजकी प्रधानताके दिनों (छठींसे बारहवीं सदीतक) गंगाके उत्तरका यह (प्रसिद्ध उत्तरपांचाल देश) एक गुमनाम-सा इलाका रह गया था। मुसलमानोंने जब तेरहवीं सदीमें अन्तर्वेदको ले लिया, तो गंगापारका यह इलाका मुस्लिम-शासित प्रदेशके स्वतन्त्रचेता सामन्तोंका शरणस्थान बन गया और कटेहरी राजपूतोंकी प्रधानताके कारण इसका नाम भी **कटेहर** पड़ गया, जिस नामसे कि वह अठारहवीं सदीके मध्यमें रुहेलोंके प्रभावशाली बननेतक प्रख्यात रहा। दिल्लीके सुल्तान गंगा-पार भाग आये—कटेहरियोंको चैनसे कब रहने देनेवाले थे, विशेषकर जब कि अपने छोटे-छोटे स्वार्थों और राजसत्ताको अक्षुण्ण बनाये रखने तथा पारस्परिक वंशागत दुश्मनीके कारण वह मिलकर मुसलमानोंसे मुकाबिला करनेको तैयार नहीं थे। तेरहवीं सदीके अन्तमें नासिरुद्दीन महमूद और गयासुद्दीन बलबनने कटेहरियोंकी काफी मरम्मत की, किन्तु क्षुद्र-स्वार्थ शिक्षा लेने कहाँ

देता है ! दिल्लीके प्रहारसे बचनेके लिए उनमेंसे कितनोंने रामगंगा (पश्चिमी) पार हो तराईके गहन वनको अपना आश्रयस्थान बनाया। सदियोंसे उजाड़ पड़े इस देशमें धीरे-धीरे खेत बनने लगे, गाँव बसने लगे, गोठ स्थापित होने लगे। मनचले सैयदोंने जब यहाँ कटेहरियोंके इलाकेमें मनमानी करनी चाही, तो कटेहरियोंने उन्हें तलवारके घाट उतार दिया। फिर क्या था, फीरोजशाह तुगलकने प्रति वर्ष गाजियोंकी सेना भेजकर काफिरोंके इस इलाकेको तबतक बरबाद करते रहनेका हुकुम दिया, जबतक कि सैयदोंके खूनका अपराधी समर्पित न कर दिया जाय। १३८५ ई० तक यह ध्वंस-लीला जारी रही। भारी संख्यामें रहते भी बिखरे हिन्दू सब तरहका अत्याचार सहते रहे। इस समय बदाऊँसे १४ कोसपर अवस्थित बिसौली मुसल्मानी राज्यकी सीमान्तीय छावनी थी, जिसे 'आखिरीनपुर' (अन्तिमग्राम) भी कहा जाता था।

(ख) दिल्ली दरबारमें—मुसलिम सेनाके दबावके कारण कटेहरियोंकी तराईकी ओरके प्रसारने उन्हें कुमाऊँके पास पहुँचा दिया। आजकी भाँति तब भी जाड़ोंमें पासके पहाड़ी लोग अपने पशुओंको लिए 'घमतप्पी'के लिए तराई-भाबरमें जाया करते थे। इनका और नीचेसे तराईकी ओर बढ़ आये कटेहरियोंका तनाव स्वाभाविक था, और फिर कटेहरियोंके शत्रु दिल्लीके सुल्तानकी ओर कुमाऊँका ध्यान जाना जरूरी था। ज्ञानचन्दने दिल्ली दरबारमें पहुँचकर सुल्तानकी छत्रच्छाया तथा तराई भाबरकी जागीर पानेकी प्रार्थना की। दिल्ली सुल्तान (मुहम्मद तुगलक ?) ने अपने शत्रु कटेहरियोंके प्रतिद्वन्द्वीका स्वागत किया और उसे साथ लिये तराईमें शिकार खेलने गया। ज्ञानचन्दने एक बड़ी चिड़िया—गरुड़को बड़ी चतुराईसे बाणविद्ध किया। सुल्तानने उसी समय ज्ञानचन्दको गरुड़ ज्ञानचन्द बना दिया और साथ ही उसे तराई-भाबर दे दिया। गरुड़ ज्ञानचन्दके दीर्घशासनमें चन्दवंशकी शक्ति कुछ बढ़ी। किन्तु, पहाड़में अभी भी वह डोटी महाराजाका करद सामन्त था। उसके राज्यकी उत्तरी सीमा सरजूतक और दक्षिणी तराईतक पहुँचती थी। इसी तरह पूर्वमें काली नदीसे पश्चिममें कोसी और सुबाल्तक उसका राज्य था। सरजूसे उत्तर गंगोलीके मणकोटी-राजा शासन करते थे, और सिरा, शोर, अस्कोट, तथा भोटान्त (जोहार और दरमा) पर डोटीके महाराजा रैनका राजाका आधिपत्य था। चौदस जुमलाके (पश्चिमी नेपाल)के राजाके हाथमें था। कत्यूर (वैजनाथ) स्युनर और पाली (लखनपुर, द्वाराहाट) में कत्यूरी वंशकी शाखाएँ राज कर रही थीं। काठी (खाती) राजा फल्दाकोटके शासक थे, और रामगढ़ तथा कोटा खसिया राजाके थे।

(४) उद्यानचन्द (१४२०-२१ ई०)—गरुड़ ज्ञानचन्दके बाद उसके पुत्र हरिहरचन्दने कुछ महीनों राज्य किया, फिर उसका पुत्र उद्यानचन्द गद्दीपर बैठा। मुसलिम इतिहासकार, मुहम्मद तुगलकके चीनपर सेना भेजनेकी बात करते हैं, जिसका अर्थ है तिब्बतपर मुसलमानोंकी चढ़ाई। उसके लिए कई रास्ते हो सकते थे, किन्तु काली-उपत्यकाका रास्ता ही सबसे सरल और नजदीकका था, इसमें सन्देह नहीं। उस समय मुसलिम सेनाने पहाड़ी काफिरोंके मन्दिरोंको लूट और ध्वस्त कर पुण्यार्जनका मौका हाथसे नहीं जाने दिया होगा। सम्भवतः कत्यूरी कालके भव्य देवालयों और अद्भुत देवमूर्तियोंको इसी समय नष्ट-भ्रष्ट किया गया होगा। उद्यानचन्दने बालेश्वरके प्रसिद्ध मन्दिरका जीर्णोद्धार किया और उसकी प्रतिष्ठाके लिए कुंजशर्मा तिवारीको गुजरातसे बुलाया। कुंजशर्माकी सन्तानोंका अलमोड़ाको (१५६० ई०) चन्दवंशकी राजधानी बनानेमें बहुत हाथ था। उद्यानचन्दके एक वर्षके शासनके बाद आत्माचन्द तथा तत्पुत्र हरिचन्दने भी एक-एक वर्ष ही राज्य किया। उद्यानचन्दका एक दानपत्र (१४२४ ई०) कुलमणि पाण्डेके नाम प्राप्त हुआ है।

(५) विक्रमचन्द (१४२३-३७ ई०)—उद्यानचन्दने बालेश्वरके मन्दिरका जीर्णोद्धार पूरा

नहीं कर पाया था, जिसे विक्रमचन्दने किया। कुंजशर्माके नाम दिये हुए उसके दानपत्रमें लिखा है—

"ओम् श्री विजयमस्तु। शाके १३४५ आषाढ़ी पौर्णमासीको विष्णुके शयनकालमें पृथ्वीपति चूड़ामणि सत्यसंध राजाने कूर्मविषय (राज्य)की चम्पावत नगरीमें कुंजशर्मा ब्राह्मण और महेश्वरी-को भूमि प्रदान की।''' विक्रमचन्द कल्पद्रुमके समान हैं। उन्होंने अपनी तलवारसे राजगणको जीता, श्री काचल्लदेवकी दी हुई भूमिको प्रदान किया तथा नागभवनसे पृथ्वीके उद्धार करनेवाले हरिकी भाँति मन्दिरके पुननिर्माणका संकल्प किया।

"साक्षी-माधो, सेज्याल, प्रभु, विष्णु, जदुमदगनि, वीरसिंह, गँभारी, जैलू बैज्याल। लेखक रुद्रमत्तशर्मा पन्तनवीसी चारथान कछहरीमें शुभं। रैकू'''रामपाटणीमें यह ताम्रपत्र बनाया"[1]।

२. **चन्दोंका उत्कर्ष—(१) भारतीचन्द (१४३७–५० ई०)**—विक्रमचन्दके भतीजे भारतीचन्दने चचाके विरुद्ध सफल विद्रोह किया। चन्दवंशके भाग्य-सूर्यको मध्याह्नपर पहुँचानेमें उनका बहुत हाथ था। उसने डोटीके जूयेको उतार फेंका, जिसके कारण बारह वर्षोंतक डोटीके साथ लड़ाई लगी रही। इस समय चिरप्रोषित सैनिकोंकी कामतृप्तिके लिए नियुक्त स्त्रियाँ कैसे नायक जातिके उत्पादनका कारण हुईं, यह हम कह आये हैं। डोटीको पराजित करनेके लिए देशसे युवराज रतनचन्द द्वारा संघटित कटेहरी सेना भी लायी गयी थी। डोटीने पराजय और चम्पावत राज्यकी स्वतन्त्रताको स्वीकार किया। कुछ समय बाद (१४५० ई०) भारतीचन्दने अपने योग्य पुत्र रतनचन्दके लिए गद्दी छोड़ दी। भारतीचन्दका देहान्त १४६१ में हुआ।

(२) रतनचन्द (१४५९–८८ ई०)—रतनचन्दने अपने पिताके कार्यको और आगे बढ़ाया। उसने जागेश्वरके प्रसिद्ध मन्दिरको कई गाँव दान किये। १४६१ में भारतीचन्दके मरनेके बाद डोटीके अवैध राजा (नागमल्ल) ने फिर एक बार काली-कुमाऊँको अपनी अधीनतामें लानेकी कोशिश की। रतनचन्दने नागमल्लको युद्धमें परास्त कर उसे मार डाला और राज्य शाही[2] राजाको लौटा दिया। रतनचन्दकी विजययात्रा जुमला, बुजान और थलतक हुई। उसने वहाँके राजाओं—जगनाथ भट, खड़कूसिंह महरा तथा शोरसिंह महराको अधीनता स्वीकार करने एवं प्रति वर्ष एक मृग-नाभि, एक धनुष, एक बाणपूर्ण तर्कश, एक बाज और एक घोड़ा भेंट देनेके लिए मजबूर किया। यह भेंट अठारहवीं सदीके मध्यतक आती रही, जबतक कि ये राज्य गोरखाराज्यमें विलीन नहीं हो गये। कुछ संघर्षके बाद रतनचन्दने कुछ समयके लिए शोरके बम-राजाके राज्यको भी हस्तगत करनेमें सफलता पायी।

(३) किराती(किर्ति)चन्द (१४८८–१५०३ ई०)—पिता, पितामहकी भाँति किराती-चन्द एक बहादुर योद्धा और चतुर शासक था। अभी अलमोड़ा चन्दोंके हाथमें नहीं आया था और वह मुख्यतः काली-कुमाऊँ (चम्पावत) के शासक थे। अलमोड़ाके पास बदनीदेवीके पूर्वमें विसौदसे एक कत्यूरी-वंशज राजा वीरसिंहदेवकी राजधानी थी, जिसका शासन सुवाल नदीतक था। एक दूसरा कत्यूरी राजा नदीकी दूसरी तरफ शासन करता था जिसका एक किला खगमारा (वर्तमान अलमोड़ाका एक भाग) था। सुवाल (शाल्मलि) नदीके पास एक ध्वस्त मन्दिरमें १२०७ ई० का अर्जुनदेवका अभिलेख मिला है और स्वयं अलमोड़ा पर्वतपर १३४८ ई० का निरयपालका लेख है। ये दोनों कत्यूरी राजा थे। उद्यानचन्दने बालेश्वरके मन्दिरका जीर्णोद्धार कर उसकी प्रतिष्ठाके लिए गुज-राती ब्राह्मण श्रीचन्द्रको न बुला उनके पुत्र सुखदेवको बुलाया। पिताने इसे अपना अपमान समझा

१. Atk. Vol. II. p. 524.
२. अर्जुनशाहीके वंशज।

और वह चम्पावत छोड़ वारामण्डलके लिए चल पड़े। विसौदमें राजाने श्रीचन्दकी बड़ी खातिर की। श्रीचन्दने राजाके पूछनेपर कहा—"आपका दुश्मन विजयी होगा।" इसपर राजा खगमाराको श्रीचन्दको दे स्यूनरा चला गया। किरातीचन्दने सुवालके बायें तटके इलाकेको जीत लिया, किन्तु वह इतनेसे सन्तोष करनेवाला नहीं था। उसने खगमाराकोटको छीनके स्यूनरापर भी अधिकार कर लिया। राजाने बोरारूमें मुकाबला करना चाहा, किन्तु क्षणिक सफलताके बाद उसे भागना पड़ा। कत्यूरियोंके प्रति पीढ़ियोंकी भक्तिको न हटा पानेपर किरातीचन्द कैरारू और बोरारू पट्टीके खूनसे खूब हाथ रँगा, और उनके उजड़े गाँवोंमें काली-कुमाऊँसे अपने अनुयायियोंको लाकर बसा दिया। अब पाली-पछाँव (लखनपुर)के कत्यूरियोंपर आक्रमण करनेके लिए मैदान साफ था। वहाँके राजाने बिना लड़े अधीनता स्वीकार कर ली। और सल्ट पट्टीमें (मानिलमें) अपने लिए कोट बनाया, जहाँ उसके वंशज काफी समयतक रहे। किरातीचन्दने बड़ी निर्दयतापूर्वक फल्दाकोटके काठियोंका भी संहार किया, यह हम बतला आये हैं। कोटा और कटौलीको भी लेनेमें उसे कठिनाई नहीं हुई और अन्तमें माल (निम्न) भूमिपर अधिकार कर जसपुरके पास उसने अपने नामसे किरातीपुर बसाया। कत्यूर (वैजनाथ), दानपुर, भोटान्त, सिरा, शोर और मणकोटी (गंगोली) के अतिरिक्त सारे कुमाऊँपर अब चन्द-वंशकी ध्वजा फहरा रही थी।

किरातीकी मृत्युके बाद उसका पुत्र प्रतापचन्द (१५०३–१७) गद्दीपर बैठा। उसने नये प्रदेशोंकी विजयके स्थानपर अपने शासनको मजबूत बनानेकी कोशिश की। उसके पुत्र ताराचन्द (१५१७-३३ ई०) ने भी कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया।

(४) माणिकचन्द (१५३३-४२)—इस समय दिल्लीमें सूर-वंशका राज्य था। इसलाम शाहके प्रतिद्वन्द्वी खवास खाँने १५४१ ई० में कुमाऊँकी तराईको अपना अड्डा बनाया, जहाँसे वह दिल्ली-अधीन प्रदेशमें घुसकर लूट-मार मचाता था। नियाजीने इसलाम शाहके विरुद्ध विद्रोह किया, खवास खाँने उसके मददगार होते ही अम्बालाके युद्धमें इसलिए उसका साथ नहीं दिया कि वह इसलाम शाह ही नहीं, सूरवंशके भी विरुद्ध था। तो भी इसलाम शाहके साथ उसका स्थायी समझौता नहीं हो पाया और उसने फिर तराईसे लूटपाट शुरू की। शाही सेना द्वारा दबाये जानेपर उसने कुमाऊँके राजा (माणिकचन्द) की शरण ली। इसलाम शाहने सम्भलके सूबेदार ताज खाँ किरानीको उसके विरुद्ध भेजा। ताज खाँने भय, प्रलोभन दिखलाकर चाहा कि माणिकचन्द खवास खाँको बाँधकर उसके पास भेज दे; किन्तु राजाने स्पष्ट कह दिया—"शरणागतको कैसे मैं बेड़ी पहिनाकर तुम्हारे पास भेज सकता हूँ। जबतक शरीरमें प्राण है, मैं ऐसा महापाप नहीं कर सकता।" इधरसे असफल होकर इसलाम शाहने अपनी शपथों और प्रतिज्ञाओं द्वारा खवास खाँके मनको फेरनेमें सफलता पायी। राजाके मजग करनेपर खवास खाँने नहीं माना। आत्मसर्पण करते ही ताज खाँने उसका सिर कटवा, खालमें भुस भरवाकर दिल्ली भेज दिया। मुसलमान इतिहासकारोंने भी कुमाऊँ, राजाकी इस सत्य-प्रतिज्ञता और उदारताकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

माणिकचन्दके उत्तराधिकारी तत्पुत्र काली कल्याणचन्द (१५३२-४१ ई०) तथा पूरनचन्द या पुनी (१५४१-४५ ई०) का शासन विशेष महत्त्वका नहीं रखता। उनके बाद भीष्म या भीखमचन्द गद्दीपर बैठा।

(५) बालो कल्याणचन्द (१५६०-६५ ई०)—भीखमचन्द भी कोई विशेष शासक या योद्धा नहीं था। निस्सन्तान होनेके कारण उसने ताराचन्दके पुत्र कल्याणचन्दको—जिसे बालो कल्याणचन्द भी कहते हैं—गोद लिया। डोटीकी ओरसे गड़बड़ी मची, जिसे दबानेके लिए युवराज बालो

कल्याणचन्दको भेजा गया। इसी समय पाली और स्यूनरामें भी गड़बड़ी शुरू हुई। भीष्मचन्दको प्रतीत होने लगा कि राजधानी चम्पावत एक छोरपर है; वहाँसे राज्यके पश्चिमी भागपर नियन्त्रण रखना कठिन होगा। उसने खगमाराकोट (अल्मोड़ा) को राजधानी बनाया। भीष्मचन्द खगमाराकोटमें निश्चिन्त सो रहे थे, इसी समय रातको अचानक खसिया सरदार गजवाने आक्रमण कर राजा और उसके अनुचरोंको मार डाला। किन्तु, खसिया सरदारकी यह सफलता क्षणिक सिद्ध हुई। खबर मिलते ही बालो कल्याणचन्दने डोटीवालोंसे सुलह कर ली और खगमाराकोट तथा खसिया दुर्ग रामगढ़को हाथमें करके बापके खूनका भयंकर बदला लिया।

बालोने खगमारापर्वतको अलमोड़ाके नामसे (१५६० ई० में) अपनी राजधानी बनायी, तभीसे अलमोड़ा कुमाऊँकी राजधानी बन गया। ब्राह्मण श्रीचन्दको कत्यूरी राजाके नामसे अलमोड़ा (बिजौरा) का फल दिया जाता था। कहते हैं उसीके नामपर नगरका यह नाम पड़ा। श्रीचन्दको जो भूमि दानमें मिली थी, उसमेंसे कुछ छोड़कर बाकीको लेके राजाने **नैलके पोखर**के पास अपने लिए महल बनवाये। महलके पासकी कितनी ही भूमिमें दरबारियों, परिजनों तथा चम्पावतसे राजाके साथ आये जोशी लोगोंके घर बन गये। चौतरा ब्राह्मण चम्पावत छोड़कर नहीं आये। राजधानी बनते ही राजाकी महत्वाकांक्षाका पहिला शिकार मणकोटी राज्य (गंगोली) हुआ। फिर कल्याण-चन्दकी गृध्र-दृष्टि सीरापर पड़ी। रानी डोटीकी कन्या थी। उसने अपने पितृकुलसे सीराको दहेजमें माँगा, किन्तु शोर मिला। सीराके लिए किस तरह उसके पुत्र रुद्रचन्दको लड़ना पड़ा, यह पहिले कह आये हैं। दानपुरके उर्वर इलाकेमें सदा परस्पर लड़ते हर गाँवके स्वतन्त्र खसिया ठाकुरोंको हराना मुश्किल नहीं था, इस प्रकार दानपुरको लेते सीमा भोटान्ततक पहुँच गयी। चन्द राजाओंने अब यह अपनी नीति बना ली थी कि नये जीते इलाकेके गाँवोंमें जहाँ-तहाँ अपने छुटभइयों (रौतेलों) को बसा दिया जाय—कत्यूरियोंकी भी कुछ ऐसी ही नीति थी। इस प्रकार चन्द्र-वंशज भूमिपतियोंका एक जाल सारे राज्यमें बिछता चला गया, जिसने चन्दोंके शासनको स्थायित्व देनेमें बहुत सहायता की। बालो कल्याणचन्दका शासन राज्य-विस्तार तथा कुमाऊँकी एकता स्थापित करनेमें बड़ा महत्त्व रखता है।

(६) रुद्रचन्द (१५६५-९७ ई०)—रुद्रचन्दका वही समय है, जब कि अकबर भारतके बहुत बड़े भागका शासक था। पिताकी योग्यता इसमें नहीं थी, वह अन्तःपुरिकाओं और पुरोहितोंके हाथका खिलौना था, इसने संन्यासी रामदत्तके आदेशानुसार गाड़कर छिपाये एक विशाल शिवलिंग-को जमीनसे निकालकर बालेश्वरके मन्दिरमें स्थापित किया और मन्दिरके खर्चके लिए हर गाँवसे एक नाली (दो सेर) अनाज पानेका बँधान कर दिया, जिसके लिए कहावत मशहूर हुई—'जौ रुद्रचन्दके आली, तौ रामदत्तके नाली' (यदि रुद्रचन्द्रको सुन्दरियाँ मिलीं, तो रामदत्तको नाली भर अन्न)।

कुमाऊँमें एकताबद्ध शासन स्थापित करनेमें, जो-जो कठिनाइयाँ पड़ीं उनके कारण उसकी समृद्धि बहुत सीमित ही रही होगी, तो भी 'फरिश्ता'[1] कुछ और ही लिखता है—"कुमाऊँके राजाका राज्य बहुत विस्तृत है, उसके देशकी मिट्टीके टीलोंके धोनेसे काफी परिमाणमें सोना निकलता है। वहाँ ताँबा भी है। यह राज्य उत्तरमें तिब्बत और दक्षिणमें सम्भलतक जो कि हिन्दुस्तानमें है—फैला हुआ है। इसकी सेनामें ८० हजार पैदल और सवार सैनिक हैं। दिल्लीके बादशाह भी इसका बहुत सम्मान करते हैं। उसके पास अपरिमित खजाना है। कुमाऊँके राजाओंमें यह नियम चला आया है, कि अपने पूर्वजोंकी निधिमें हाथ न लगायें। विश्वास है कि जो कोई अपने पिताके खजानेमें हाथ

१. यह इतिहास १६२३ ई० में समाप्त हुआ। लेखक दक्षिण—बीजापुर—का था।

लगायेगा, वह दीन और दरिद्र हो जायगा। इस प्रकार आजकल कुमाऊँके पुराने राजाओंके छप्पन खजाने मोहरबन्द मौजूद हैं।" यह अतिशयोक्ति है, इसमें सन्देह नहीं, तो भी यह नीचेके लुटेरोंको निमन्त्रण देनेके लिए पर्याप्त थी।

(क) टुकड़िया हुसेन खाँका आक्रमण—काँठगोला (आधुनिक शाहजहाँपुर)का अकबर शाही हाकिम हुसेनखाँ टुकड़िया एक कश्मीरी धर्मान्ध मुसलमान था। कहते हैं, उसने लाहौरका हाकिम रहते समय एक बार भूलसे किसी हिन्दूको सलाम कर दिया। मालूम होनेपर उसने हुकुम दे दिया कि हर हिन्दूको अपने कन्धेपर कपड़ेका एक टुकड़ा रखकर चलना चाहिये। टुकड़ेका चलन करनेके लिए उसका नाम ही टुकड़िया पड़ गया। १५६९ ई० में वह लखनऊका हाकिम था। इसी समय उसकी नौकरी जाती रही। बेकार टुकड़ियाको कुमाऊँके राजाके खजानेकी अतिरंजित कथा सुननेको मिली। उसके मुँहमें पानी भर आया, और 'एक पन्थ दो काज'का ख्याल कर उसने खजाना लूटनेके साथ साथ कुमाऊँके प्राचीन हिन्दू मन्दिरों और देवमूर्तियोंको नष्टकर पुण्य लूटनेका भी इरादा कर लिया। इतिहासकार बदाउनीके अनुसार—"देवालयोंको ध्वस्त करने तथा मूर्तियोंके तोड़नेके इरादेसे वह चल पड़ा। उसने सुन रखा था कि इन मन्दिरोंकी ईंटें चाँदी-सोनेकी हैं। उसके कानमें भनक आयी थी कि वहाँ अपार खजाने हैं।...हुसेन खाँने राजा-रंका—(डोटीके रैनका राजा) के राज्यके कसबे बज्रेल तथा वहाँसे राजधानी अजमेरतक सारे इलाकेको लूटकर उजाड़ दिया। इस जगह सोने चाँदीकी खाने हैं, रेशम, कस्तूरी तथा तिब्बतकी सभी पैदावार वहाँ प्राप्त है, तिब्बत वहाँसे दो दिनका रास्ता है।" लेकिन टुकड़ियाको अन्तमें निराश होना पड़ा। अन्नका अकाल पड़ गया। जान लेकर पीछे भागते गाजियोंका कुमाऊँनियोंने पत्थरों और दूसरी चीजोंकी वर्षा करके संहार किया, और टुकड़ियाके गाजियोंमेंसे बहुतोंको शहादतका प्याला पीनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। जहर-बुझे बाणोंसे घायल कितने ही तो पाँच-छ बरस पीछेतक मरते रहे।

इस अभियानसे लौटनेके बाद हुसेन खाँके अकबरी दरबारसे काँठ-गोलाके हाकिमका पद मिला। तराई और पर्वतपाद अब भी उसकी लूटमारके क्षेत्रमें थे, कुछ वर्षों बाद १५७५ ई० में उसने फिर धर्मान्धोंकी एक भारी जमात ले पूर्वी दूनपर चढ़ाई की। वहाँके मन्दिरों मूर्तियोंको तोड़ा। गाँवों-को उजाड़ा और बहुत-सा धन तथा बगलमें एक गोली लेकर लौटा। अकबरके सहिष्णुशासनके मध्याह्न-कालमें भी हिन्दुओंपर टुकड़िया जैसे शासक ऐसा अत्याचार करते रहे, यह आश्चर्यकी बात मालूम होगी। बहुत शिकायतोंके बाद टुकड़िया बुला लिया गया, और नृशंस गाजी थोड़े ही समय बाद पुराने घावसे मर गया। अकबरके एक सरदार अम्बाके सुल्तान इब्राहीमको कुमाऊँ तथा दामनेकोह (तराई) जीतनेका श्रेय मुसलमान इतिहासकारों द्वारा दिया जाता है।

रुद्रचन्द स्वेच्छासे १५८८ ई० में अकबरके दरबारमें गया था। इस समय बादशाहके लिए लायी भेंटमें एक चमरी (याक) तथा एक कस्तूरी-मृग भी था। कस्तूरा पीछे मर गया। जहाँगीरने अपने संस्मरणमें लिखा है—"लक्ष्मीचन्दके पिताने स्वर्गीय शाहकी सेवामें उपस्थितिके समय राजा टोडरमलके पुत्रको उपस्थित रहनेके लिए प्रार्थना की थी, जो स्वीकृत हुई।" रुद्रचन्द्रने वीरबलके पुत्रको अपना पुरोहित बनाया। चन्द-वंशके शासनके अन्ततक वीरबलके वंशज हर साल अपनी दक्षिणा लेने अलमोड़ा आया करते थे।[1]

(ख) सरकार कुमाऊँ—'आईन-अकबरी'के अनुसार अकबरके समय कुमाऊँ सरकार (जिले)में २१ महाल थे, जिनका राजस्व ४,०४,३७,७०० दाम[1]–२०,२१,८८५ रुपया था। चार

१. २० दोहरा दाम = १ रुपया (द्राख्म (ग्रीक) द्रम्म>दम्म>दाम।

महालोंसे कोई राजस्व नहीं मिलता था। कुमाऊँ शाही सेनाके लिए ३,००० सवार और ५०,००० पैदल देता था। महाल इस प्रकार थे—

महाल	राजस्व (लाख दाम)	महाल	राजस्व (लाख दाम)
१. औदान	४	१२. जरदा	३
२. भुकासी		१३. जाँव	२५
३. भकसा	४	१४. चोली	०
४. बस्तरा	२	१५. सहजगढ़ (जसपुर)	०
५. पञ्चोत्तर	४	१६. गजरपुर (गदरपुर)	०
६. भकई देवार	२	१७. द्वाराकोट (ठाकुरद्वारा)	०
७. भकती (नानकमता)	११	१८. मलवारा (तराई)	२५
८. भूरी	०	१९. मालाचोर	५०, ३७७
९. रतिला	१०, २५	२०. सीताचोर	
१०. छटकी	४	२१. कमूस	
११. जगराम	५		

(ग) कुमाऊँ राज्यका विस्तार—रुद्रचन्दके शासनमें कुमाऊँ राज्य-विस्तारमें अपनी चरम-सीमापर पहुँच गया था। उसने अपने नामसे रुद्रपुर बसाया, हर परगनेपर एक-एक अधिकारी नियुक्त किये, जिनमें काशीनाथ अधिकारी भी एक थे, जिन्होंने आधुनिक काशीपुरको बसाया। दरबारसे लौटनेपर रुद्रचन्दने अलमोड़ाके किलेको बनाया, जिसमें आजकल सरकारी कचहरियाँ हैं। रुद्रचन्द स्वयं सुपठित था। उसने संस्कृतके अध्ययनको प्रोत्साहन देनेके लिए कितने ही विद्यार्थी कश्मीर और काशी भेजे। भूमाप और भूकरके प्रबन्धमें उसके अन्धे पुत्र शक्ति गोसाईंने बहुत सहायता की। उसके मन्त्री और मुख्याधिकारी थे। सीलखोलाके जोशी, रतगल्ली तथा अधिकारी बिस्ट और द्वाराहाटके साहु। उसके दानपत्रों तथा अभिलेखोंमें कुछ है—

१५६५ ई०	देवीदत्त चौधुरी-परिवार
१५६८ ई०	वृद्धकेदार मन्दिर
१५७५ ई०	आनन्द पाण्डे
१५९४ ई०	चामीके पाण्डे
१५९६ ई०	कृष्णानन्द जोशी-परिवार

रुद्रदत्तने ही माताकी प्रेरणा द्वारा तथा परखू (पुरुषोत्तम) पन्तके योग्य सेनापतित्वसे सीरा विजय की, यह बतला चुके हैं।

(घ) गढ़वालसे संघर्ष (१५९७-१६२१ ई०)—सीरा-विजयके बाद रुद्रचन्दने अपने सेनापति परखूपन्तको गढ़वालके राजाके इलाके बधानगढ़ (पिंडार-उपत्यका) पर अधिकार करनेके लिए भेजा। पिंडारका रास्ता सोमेश्वर तथा कत्यूर (वैजनाथ) उपत्यकासे था। कत्यूरपर पुराने कत्यूरी वंशके राजा सुखलदेवका अधिकार था। सुखलदेवकी प्रार्थनापर गढ़वालके राजा दुलाराम शाहने सहायता देनेका वचन दिया और उसने अपनी एक सेना ग्वाल्दम, दूसरी गणाई भेजी तथा बधानगढ़की ओरके डाँडों (जोतों) को दखल कर लिया। सेनापति परखू (पुरुषोत्तम) पन्त सेना ले तब भी कत्यूर होते पिंडार-उपत्यकामें पहुँचे। उनके पीछेका रास्ता काट दिया गया। पुरुषोत्तम पन्त ग्वालदमके पास लड़ते हुए मारे गये। उनके मारनेवाले एक पड़ियार राजपूतने पन्तके सिरको श्रीनगरमें

गढ़वालके सूजाके पास पहुँचाया, जहाँ उसे इसके लिए पुरस्कृत किया गया। इस खबरको सुनकर रुद्रचन्द स्वयं सेना लेकर आगे बढ़ा। पहिले उसने कत्यूरी राजा सुखलदेवको उसके परिवार-सहित पकड़ लिया। रतू नामक एक बूढ़ा (ग्राम-अधिकारी) कत्यूरी राजाको जमानत देकर अपने यहाँ ले गया। कत्यूरी राजाके न लौटनेपर रुद्रचन्दने दुबारा आक्रमण किया। वैजनाथके पास लड़ाई हुई, जिसमें सुखलदेव मारा गया और उसका परिवार निर्वासित कर दिया गया। सारी कत्यूर-उपत्यका उजाड़ दी गयी। इस प्रकार पुरुषोत्तम पन्तकी हत्याका बदला लिया गया।

रुद्रचन्द १५९७ ई० में मरा। १५६७ (शाके १४२९) से १५९६ (शाके १५१८) के बहुतसे अभिलेख इस राजाके मिले हैं।

(७) लक्ष्मीचन्द (१५९७-१६२१ ई०)—रुद्रचन्दका ज्येष्ठ तथा योग्य पुत्र शक्ति गोसाईं नेत्रहीन होनेसे गद्दीपर नहीं बैठ सकता था, इसलिए गद्दी लक्ष्मीचन्दको मिली। शक्ति गोसाईंने पिताके समयकी भाँति भाईके शासनकालमें भी राज्यकी अभिवृद्धिके लिए कोई कसर उठा नहीं रखी। सरदार, फौजदार तथा नेगी इन तीन श्रेणियोंमें राज्यके अधिकारियोंका विभाजन उसीने किया। सरदार दीवानी अधिकारी होते, फौजदार सैनिक, नेगी दोनों विभागोंके सहायक अधिकारी थे। राजकीय भोजनशाला आदिके खर्चके लिए भी उसने गाँव निश्चित कर दिये थे। अलमोड़ाके पासवाले लछमीना और कपीना जैसे उसने कितने ही फलोद्यान लगवाये, जिनमें वरिया (लोग) काम करते थे। हिमालयसे लेकर अलमोड़ातकके कितने ही गाँव हिंउपाल बनाये गये, जिनका काम था राज-भोजनालयके लिए बर्फ (हिम) पहुँचाना, सेनाके खर्चके लिए **बीसी बन्दूक**के नामसे भूमि अलग कर दी गयी थी। सारी भूमि सर्वे कर डाली गयी, जिसमें कि कोई कर देनेसे बच न जाय। कहते हैं, इसी समय मकानोंपर फसल बोनेकी प्रथा चली, क्योंकि मकानोंकी छतें ही बिना सर्वेकी तथा कर-मुक्त थीं।

लक्ष्मीचन्दने भी बापके आरम्भ किये गढ़वालके अभियानको जारी रखा, किन्तु उसकी सेनाको अन्तिम बार छोड़ बराबर असफल ही लौटना पड़ा। दरमाकी सीमातक पहुँचना तथा तिब्बतसे व्यापार-की व्यवस्था करना भी इसी राजाके शासनमें हुआ। तिब्बतके लिए यह ऐसा समय था, विशेषकर पश्चिमी तिब्बतके लिए, जब कि सारा देश सैकड़ों छत्रपतियोंने बाँट रखा था।

लक्ष्मीचन्दने जहाँगीरके दरबारमें हाजिरी दी थी। जहाँगीरने इसके बारेमें लिखा है—"यह पहाड़ी राजा मेरे लिए बहुत प्रकारकी पहाड़की दुर्लभ वस्तुएँ लाया, जिनमें सुन्दर सुदृढ़ टाँघन-गूँठ, कितने ही बाज और शिकरे, बहुत-सी मृगनाभियाँ, नाभिसहित कस्तूरीका एक पूरा चमड़ा भी था। उसने कई तरहके खाँड़े और कटारें भी पेश कीं। पहाड़ी राजाओंमें यह सबसे धनी है और कहा जाता है कि इसके राज्यमें सोनेकी खान है।"

लक्ष्मीचन्दकी मृत्यु (१६५१ ई०) के बाद तत्पुत्र दलीपचन्द (१६२१-२४), तथा तत्पुत्र विजयचन्द (१५२५ ई०) ने थोड़े-थोड़े समय राज्य किया। विजयचन्द शोरके तीन पुरुषों—सुखराम खड़कू, पीरू गोसाईं तथा विनायक भटके हाथका कठपुतली हो एक सालतक राजा रहा। १६२५ ई० (शाके १५४७) को दामू पांडेके नाम इसका भूमिदानपत्र मिला है। विजयचन्दका ब्याह अनूपशहर (बुलन्दशहर) के प्रसिद्ध बडगूजरवंशमें हुआ था। विजयचन्द अपने तीनों मन्त्रियोंका कैदी था। लक्ष्मी-चन्दके एक पुत्र नील गोसाईंने विरोध किया, तो उसे अन्धा कर दिया गया और तीनोंने विजयचन्दके सभी नजदीकी सम्बन्धियोंको मरवाना शुरू किया। लक्ष्मीचन्दके २१ पुत्रोंमें एक विमलचन्द गढ़वाल भाग गया। नील गोसाईंके पुत्र बाजको—जो पीछे बाजबहादुरचन्दके नामसे प्रसिद्ध हुआ—महलकी एक दासीने लेकर राजपुरोहित तिवारीकी स्त्रीको दे दिया। सुखराम खड़कू भंगके नशेमें मस्त हो

एक संत राजान्तःपुरमें घुस गया, जहाँ रातको उसे मार डाला गया। महरों और फुरत्यालोंको यह घटना अत्यन्त असह्य हो उठी, किन्तु उनमेंसे हर एक दलने अलग-अलग व्यक्तियों (विमलचन्द और गारायणचन्द) को राजा बनाना चाहा। महरा अपने उमीदवार विमलचन्दको लेकर पहिले किलेमें पहुँच गये, और शुभमुहूर्त न होनेपर भी उसे उन्होंने तुरन्त गद्दीपर बैठा दिया।

विमलचन्दका भी हाथ विजयचन्दकी हत्यामें समझा जाता था, तो भी उसने हत्यारोंको दण्ड दिया। सुखरामका वध किया गया, विनायक भट्ट अन्धा कर दिया गया और पीरू गोसाईंको प्रयाग ज्ञा अक्षयवटके नीचे आत्महत्या करनेको दण्ड हुआ। नरोत्तम जोशी (झीझाड़) और दिनकर जोशी (गल्ली) वजीर और चौधुरी बनाये गये और बिट्ठल गोसाईं दीवान। साहू और रतगल्ली पूर्ववत् अभिलेख-अधिकारी रहे। नलू कथायतके उत्तराधिकारी महलके दरोगा हुए। विमलचन्दकी कोई सन्तान नहीं थी। गोदके लिए लड़का ढूँढ़ते समय तिवारीके यहाँ पले लड़केका पता लगा। बहुत शपथ करनेपर तिवारीके यहाँसे विमल बाजाको ले आया, और उसे अपना दत्तकपुत्र बनाया।

(८) बाजबहादुरचन्द (१६३८-७८ ई०)—(क) दिल्ली दरबारमें—यह शाहजहाँ और औरंगजेबका समय था। सभी स्थानोंकी भाँति यहाँ विशेषकर तराईमें जनसंख्या बढ़ी थी। लोगोंके श्रमके कारण तराईकी सम्पत्ति इतनी बढ़ गयी थी कि वहाँसे नौ लाख रुपया राजस्व आता था, जिसके कारण उसका नाम नौलखा महाल पड़ गया। किन्तु कटेहरवाले इस समृद्धिको नहीं देख सकते थे। उन्होंने कुमाऊँके तराईवाले इलाकेके गाँवोंको दखल करना शुरू किया। पिछले बीस सालके चन्दोंके निर्बल शासनने उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित किया। बाजा, शाहजहाँके दरबारमें दिल्ली गुहार ले गया। मुजरा और भेंटके बाद बादशाहका हुकुम हुआ कि गढ़वालके विरुद्ध भेजे जाते अभियान (१६५४-५५) में खलीलुल्ला खाँके साथ तुम भी शामिल हो जाओ। बाजाने ऐसी बहादुरी दिखलायी कि दिल्ली लौटनेपर बादशाहने उसे 'बहादुर'की उपाधि तथा नगारा प्रदान किया। लेकिन, बाजबहादुर कोरी उपाधिसे सन्तुष्ट रहनेवाला नहीं था। अन्तमें चौरासी महालपर उसका अधिकार स्वीकार करके मुरादाबादके संस्थापक तथा सूबेके सूबेदार रुस्तम खाँको राजाकी सहायता करनेका फरमान निकाला गया। तराईसे अपने शत्रुओंको खदेड़कर बाजबहादुरने वहाँ बाजपुर बसाया।

बाजबहादुरने शाही अभियानमें योग देकर, गढ़वालके साथकी उस शत्रुताको जारी रखा, जिसका अन्त तबतक नहीं हुआ, जबतक कि चन्दवंशका उच्छेद नहीं हो गया, और गढ़वालने भी परतन्त्रताका जूआ अपने गलेमें डाल नहीं लिया। बाजबहादुरने लोहबा और बधाण (पिंडारउपत्यका) पर सफलतापूर्वक आक्रमण किया, और गढवालके महत्त्वपूर्ण किले जूनागढ़पर अधिकार कर लिया। इसी विजयके उपलक्षमें उसने गढवालसे नन्दादेवीकी मूर्तिको लाकर उसे अलमोड़ाके पुराने किलेमें स्थापित की, पीछे जिसे ट्रेलने वहाँसे हटाकर वर्तमान मन्दिरमें स्थापित करवाया।

दिल्ली-दरबार जानेका खर्च—१६५६ ई० में बाजबहादुरके शाहजहाँके दरबारमें जानेका खर्च इस प्रकार लिखा मिला है[1]—

"शाके १५७८ वैशाख सुदी ३ गुरौ श्री राजा बाजबहादुरचन्ददेवकी चलाई दिल्ली दरबार भई।

पेशकशको साज—

श्री पातशाही ज्यू साहीजादाको	तैका (रुपया)
१००१ मोहर दरी १४½ अदपाई आनु	१४,५३१

१. 'कुमाऊँका इतिहास' पृष्ठ २९४-९६।

३००० रुपया नजरिको		३,०००
दो खाँडा औलिया म्यान सुनुका कटाउका १५२ म० ५ नं० म्यान		१,८१९
पाँच कटारा औली मुट्ठा सुनुका एक खण्ड मुट्ठा ५ का श्री सुधाका १२३ म० ४ मुट्ठा ५ का२ म. कोथी२		१,०५४
चार कटारी सुनुका मुट्ठाका		१९६० ४आ०
नौ गूँठ साजका ४३७म० १२० सिरछाल गजगाह गूँठका		४२७रु०
१५९ म. १०गूँठ२ साज सिरछाल २ गजगाह २साल २ का २७७३२० गूँठ७सात७माला गूँठको अलमोड़ावाली चौकी ५ का ३५ म० ७-का ७९३ म० ११२॥)		४२७ ई०
७ खाँडा और नानाका ४१म० ६ २० वीनातइनाल		४९८
२ हातीको साज मोल		५,०००
१ हाती मोल		८,०००
२ टूल हातीकी मोल ली दीनी		२५४रु० ८आ०
९ कटारा		११९
२ कटारा दरी १०		२०
२ कटारा दरी १२		२४
५ कटारा लींगवानी दरी१५		७५
१ हाती गजराज घरको दीनु		१०,०००
९ गूँठ[1]		१,३८०
चंचल १	२२५	
नवाबवालो१	१००	
सौकावालो१	१७५	
भाग्यूत भण्डारीवालो	१००	
रामकृष्णवालो१	२००	
संगराम गुसाईवालो	१५०	
मलयागर नेगीवालो	१५०	
नन्दनकुँवरवालो१	१४०	
ग० ५३ मखमल		१२४
२ फुँदना		३९रु० १२आ०
चारजामा गदी वागडोर		४४
९ चँवर वडी गुंठनमें दरी गजगाह		९०
२ खाँडा वडा आँवली		२,०००
७ खाँडा नाना दरी ३०		२१०
कस्तुराकी मौर खड़ी रुपाकी का० ३ म० ५ न०		३
		१३,८९०रु० १२आ०
	जोड़ ऊपरको	४०,४२७

१. टाँघन।

बेगमको—

१०१ मुहर	१,४५३
रुपैया	५००
साहिजादा दाराशाहको पेशकश वैशाख ३ रवौ –१०१ मोहर	१,४५३
रुपैया नजरको	१,०००
१ गूँठ सुनुका राजको सिरछाल गजगाह	
मालादारी १२९का० ७८ म० ५	९४३
४ गूँठ और सुनुका सातका	१,६७६
१३९ म० ६ सिरछाल गजगाह दरी १२	
४ माला अल्मोड़ावालीका २१ म० ५	२५७
१ खाँडा नाना वीना चाकी तइनाल	५७०
१ खाँडो बड़ो अवलिया	१००
५ गूँठ (ठाँघन)	५६०

महेसपन्थवालो१	१७५
बीसी गुसाईं वालो१	१२५
मुस्की केशव विष्टवालो१	९०
जरदा१	९०
देउतवालो१	८०

१६४० से १६७५ तकके बहुतसे दानपत्र इस राजाके प्राप्त हुए हैं।

(ख) तिब्बतपर अभियान—बाजबहादुरका काल वह समय है, जब कि घाटी-घाटीके राजाओंकी सत्ता तोड़कर मंगोल-सेनाने एकताबद्ध कर तिब्बत देशको प्रथम शासक दलाईलामा (पंचम) सुमतिसागर (लोबजङ्-ग्यम्छो १६४२–८२ ई०) के हाथमें दे दिया। पश्चिमी तिब्बत (मानसरोवर प्रदेश) के साथ भारतका व्यापारिक सम्बन्ध, तथा मानसरोवरमें भारतीय तीर्थयात्रियोंका यातायात बराबरसे चला आता था। तिब्बत और कुमाऊँके बीचमें भोटान्तका प्रदेश—दोनोंके बीच सम्बन्ध जोड़नेकी कड़ी—आजकी भाँति तब भी था, साथ ही उस समय इसे तिब्बत (हूणदेश)के भीतर माना जाता था। उसे लेकर दोनों देशोंका मनमुटाव रहता था, जिसका बुरा फल व्यापारियों और तीर्थाटकों-को भुगतना पड़ता था। बाजबहादुरने (१६७० ई०)में जोहारके रास्ते पश्चिमी तिब्बतपर आक्रमण कर तग्–ला-खर (०कोट = व्याघ्र-घट्ट-प्रासाद) पर अधिकार कर लिया। अब भी वहाँके दुर्गके एक टूटे अंशको बाजबहादुरका काम बतलाया जाता है। बाजबहादुरने कुमाऊँ और तिब्बतके बीचके सभी घाटों (जोतों) पर अधिकार कर लिया। उसीकी स्थापित की हुई स्वाभाविक सीमा आज भी हमारी सीमा है। मानसरोवरके तीर्थयात्रियोंके खर्चके लिए भोटान्तके पनछू आदि पाँच गाँवोंको उसने दान दिया। बाजबहादुरको तिब्बतमें फँसा देखकर गढवालने अपने हाथसे छीने इलाकोंको लौटाना चाहा, किन्तु वह सफलता तभीतक रही, जबतक कि बाजबहादुरने तिब्बतके साथ अनुकूल सम्बन्ध स्थापित कर उस ओर मुँह नहीं मोड़ा। १६७४ ई० में बाजबहादुरने व्यांस (भोटान्त) को भी अपने राज्यमें मिला लिया।

बाजबहादुरके अन्तिम दिनोंके बारेमें कहावत है—

'बरस भया अस्सी, बुद्धि गयी नस्सी'

बुढ़ापेमें वह सन्देहकी बीमारीका शिकार हो गया, दूसरेकी बात क्या, स्वयं अपने युवराजपर सन्देह कर उसने उसे गंगोली भेज दिया।

(ग) सुलेमान शिकोह शरणागत—'शाहजहान तजी दुनियाई, औरंगजेबकी फिरी दुहाई'। औरंगजेबके द्वारा दाराका वध करा दिये जानेपर उसके पुत्र सुलेमान शिकोहने इधर-उधर भागते कुमाऊँमें शरण ली। औरंगजेबकी धमकीके सामने बाजबहादुर कैसे खड़ा रह सकता था। उसने शाहजादेको बहुत-सी भेंट दे गढवालकी ओर भेज दिया। गढवालके राजा पृथिवीशाहकी शामत आती, यदि वह सुलेमान शिकोहको शरण देता। उसकी इच्छाके विरुद्ध शाहजादेको गिरफ्तार करके राजा जयसिंह (जयपुर) के पुत्र रामसिंहके हवाले कर दिया गया। शाहजादेको ले जाकर ग्वालियरके किलेमें रखा गया, जहाँ दिसम्बर १६६० ई० को औरंगजेबने उसे मरवा दिया।

(९) उद्योतचन्द (१६७८–९८ ई०)—बाजबहादुरके पुत्र उद्योतचन्दको गद्दीपर बैठते ही डोटी और गढ़वालके राजाओंसे भिड़ना पड़ा। डोटीके रैनकाने १६८० में पूर्वसे आक्रमणकर चम्पावतपर अधिकार कर लिया और पश्चिमसे गढ़वालने आकर दूनागिरि और द्वाराहाटको ले लिया, किन्तु अन्तमें कुमाउँनियोंने दूना और द्वाराको लौटा लिया। इन दोनों राजाओंसे रक्षाके लिए पश्चिममें दूनागिरि और द्वारामें तथा पूर्वमें शोर, चम्पावत और वर्मदेवमें सैनिक छावनियाँ कायम की गयीं। उद्योतचन्द गंगातटपर तीर्थाटनके लिए गया था, उसी समय डोटीके रैनका देवपालने आक्रमण कर दिया था, किन्तु उसकी सफलता क्षणिक रही। अनेक युद्धोंमें हराते उद्योतचन्दने १६८८ ई० में उसे खैरागढ़ (अवध)में जाकर अन्तिम हार दें, कर देनेके लिए मजबूर किया।

हिन्दी (ब्रजभाषा) के महान् कवि मतिराम शिवाजीके पौत्र साहूजीके दरबारी कवि थे, उन्होंने उद्योतचन्दकी प्रशंसामें लिखा था—

"पुराण पुरुषके परम दृग दोऊ करत बेदबानी यूँ पढ़ गयी।
वे दिवसपति वे निशापति जोतकर काहूकी बढ़ाई ना बढ़ गयी।
सूर्यके घरमें कर्ण महादानी भयो याहू सोच समझ चित चिन्तासों मढ़ गयी।
कर्णके भोजके विक्रमके प्रबन्ध सुनो, किस भाँति कवित्तको आगे लीजियतु है।
कवि मतिराम राजसभाके सिंगार हम, जाके बैन सुन पीयूष पीजियतु है।
एकके गुनाह नरनाह श्री उदोतचन्द, कविनपै एतो रोष कहा कीजियतु है।
काहू मतवारे एक अंकुस न मान्यो तो, द्विरद दरबारनतें दूर कीजियतु है।"

कहते हैं, उद्योतचन्दने अपने दरबारी कवि मदनसे रुष्ट होकर किसी कविको भी दरबारमें न आनेकी आज्ञा निकाली थी। मतिरामकी उक्त कविता सुनकर उसने उन्हें बुला एक हाथी और दस हजार रुपये इनाम दिये।

उद्योतचन्दके समय दन्या और झीझाड़के जोशियोंका जोर था, वही दीवान थे—भवदेव जोशी सचिव थे, नायब दीवान एक चौधुरी थे।

३. चन्दोंका अपकर्ष—उद्योतचन्दने जीवनकालमें अपने पुत्र ज्ञानचन्द (१६९८–१७०८ ई०) को राज्य सौंप दिया था, जिसका अधिकतर समय गढ़वालके साथके संघर्षमें बीता। यही अवस्था तत्पुत्र (५३) जगतचन्द (१७०८-२०) के शासनमें भी रही। इसका परिणाम था, (५४) देवीचन्द (१७२०-२६) के समयसे कुमाऊँकी राजशक्तिका ह्रास तथा गढ़वालका बधाण और लोहबाको लौटा लेना।

(१) देवीचन्द (१७२०-२६ ई०)—शक्तिके निर्बल हो जानेपर भी देवीचन्द अपनेको

बाजबहादुरसे कम नहीं समझता था। इस झूठी अहम्मन्यताको उसके दरबारी भी प्रोत्साहन देते थे। साथ ही झूठी प्रशंसासे पुलपुला होकर वह दानी कर्ण बनना चाहता था, जिससे खजाना खाली हो गया—कहा जाता है उस समय राजकोषमें साढ़े तीन करोड़ रुपये थे। अपने नामका संवत् चलानेकी धुनमें उसने लोगोंको ऋणसे उऋण करनेके लिए एक करोड़ खर्च कर डाला। उसे दिग्विजयी चक्रवर्ती बननेकी भी धुन हुई। उसने अफगान जेनरल दाऊद खाँको अपने यहाँ रख लिया और मुहम्मदशाह-के विरुद्ध दिल्ली तख्तके दावेदार सबीरशाहका पक्ष लिया। बादशाहसे विरोध होना भी जरूरी था। दिल्लीसे अज्मतुल्ला खाँको दबानेके लिए भेजा गया। नगीनामें युद्धके समय दाऊद खाँ रिश्वत लेकर अज्मतुल्लाकी ओर हो गया। कुमाऊँनी सेना बुरी तरह हारी। देवीचन्दने ठाकुरद्वारा भागकर जान बचायी। लोभी दाऊद खाँ बातमें फँसकर राजाके पास आया, और अपने अनुचरोंके साथ मारा गया।

(२) खिलौने राजा—देवीचन्द कोटाके इलाकेमें देवीपुर बसाकर वहाँ सुरा और सुन्दरियोंकी आराधनामें लगा। वहीं १७२६ में मन्त्रियोंने उसे मरवा डाला। अब मन्त्रियोंके लिए एक खिलौनेकी आवश्यकता थी। कटेहरके राजा नरपत सिंहने ज्ञानचन्दकी लड़की ब्याही थी, जिससे अजीत सिंह पैदा हुआ था। मन्त्रियोंने उसे माँगकर अजितचन्दके (१७२६-२९ ई०) के नामसे गद्दीपर बैठाया। लेकिन तीन वर्षमें वह उससे भी ऊब गये और १७२९ के आरम्भमें उसे मरवाकर मन्त्रियोंने स्वाभाविक मृत्युका बहाना करके नरपति सिंहसे दूसरा लड़का माँगा। उसने उत्तर दिया—"मेरे लड़के बकरे नहीं हैं, कि उन्हें मैं इस प्रकार बलि चढ़ानेके लिए देता जाऊँ।" अन्तमें मन्त्रियोंने १८ दिनके बालक बालो कल्याणचन्दको गद्दीपर बैठाया, जिसका पिता होनेसे अजितचन्दने इनकार कर दिया था, और जिसके कारण उसकी हत्या की गयी। महरा और फरत्याल दोनों प्रभावशाली दलोंने इस अनीतिको देखकर मतभेद भुला इन मन्त्रियोंसे पिण्ड छुड़ानेकी ठान ली। उन्होंने ढूँढ़कर डोटीमें रहते नारायण-चन्दके वंशज कल्याणचन्दको प्राप्त किया, और उसे अलमोड़ा लाकर गद्दीपर बिठाया।

(३) महरा और फरत्याल-दल—कुमाऊँके यह बहुत पुराने राजनीतिक दल थे। कहते हैं, वीरचन्दने चम्पावतमें अपनी सत्ता कायम करते ही ये दो दल कायम किये। पुराने समयमें पाँच-पाँच पंच होते थे—महरा, फरत्याल, देव, ढेक और करायत। राजाने उन्हें दोको चुनकर देनेको कहा जिसपर उन्होंने एक महरा और एक फरत्यालको चुन दिया। तबसे ही इनकी प्रधानता आरम्भ हुई। पीछे इन दोनोंमें भी शक्ति हस्तगत करनेके लिए संघर्ष होता रहा और कभी किसी दलके हाथमें प्रभुत्व रहा; कभी किसीके। उस समय महरोंका मुख्य गाँव कोट था और फरत्यालोंका दूनागिरि (सुईके पास)। इन्हीं गाँवोंके प्रमुख सर्वप्रथम दीवान (मन्त्री) और बख्शी (सेनापति) होते थे।

(४) मुगल साम्राज्यका अन्त—दिल्लीके साथ कुमाऊँके सम्बन्धके बारेमें, पहिले जहाँ-तहाँ कहा जा चुका है। तुगलकोंके समय कुमाऊँपर मुसलमानोंका आक्रमण हुआ था। अकबरके समय पैसेके लोभी हुसेन खाँ टुकड़ियाने काफिरोंके धर्मको उखाड़ फेंकनेका प्रबल प्रयत्न किया। १७०७ में औरंगजेबके मरनेके बाद मुगल-साम्राज्यमें जो उथल-पुथल मची, उसका प्रभाव शक्तिहीन होते कुमाऊँपर भी तेजीसे पड़ा। इसीलिए यहाँ उसके सम्बन्धमें कुछ कहना जरूरी है। औरंगजेबकी मृत्यु (१७०७ ई०)के बाद मुगल-शक्तिका ह्रास बड़ी तेजीसे होने लगा। पहिलेसे ही मुगल दरबारमें चार दल थे—(१) तूरानी, (२) ईरानी, (३) अफगान (पठान) और (४) हिन्दुस्तानी। औरंगजेबके बाद प्रथम दल (तूरानी) का मुखिया कमरुद्दीन था, जो पीछे चिंकिलिच खाँ और अन्तमें निजामुल्मुल्क बना। इसके पूर्वज मध्य एशियाके तुर्कमान थे। कमरुद्दीन पहिले गोरखपुरका सूबेदार था।

फर्रुखसियरके राजच्युत होनेके समय वह मुरादाबादका[1] फौजदार था। लेकिन उसे भावी रुहेलखण्ड बनानेका सौभाग्य न मिला। यही अपनी कार्यभूमि दक्षिणमें स्थिर कर हैदराबादका प्रथम निजामुल्मुल्क आसफजाह बना। सैयद-बन्धुओंकी मृत्युके बाद निजामका चचा महामन्त्री बना। उसके मरनेपर १७२२ में निजाम भी एक साल महामन्त्री रहा। मुगल भी मध्य एशियाके तुर्क थे। इसलिए तूरानी दल शाही दल कहा जा सकता था। यहाँ यह बात स्मरण रखनी चाहिये कि बाबर वस्तुतः तैमूरके पुत्रोंके खानदानका अतएव तुर्क था। केवल बड़ा बनके रोब जमानेके लिए ही उसने अपने पैतृक खानदानकी जगह चंगेज-वंशजा माँके खानदान (मुगल, मंगोल) का नाम अपने साथ जोड़ना शुरू किया।

ईरानी दल एक तरह शीयोंका दल था, जिसमें पीछे मुर्शिदाबाद और लखनऊके भावी नवाब सम्मिलित थे। हिन्दुस्तानी दलके मुखिया अब्दुल्ला खाँ और हुसेन अली खाँ सैयद-बन्धुओंके नामसे प्रख्यात दिल्लीके हर्त्ता-कर्त्ता थे। इनका मूलस्थान मेरठके पास था, किन्तु इन्होंने दिल्ली छोड़ अपने लिए किसी लखनऊ या हैदराबादकी नवाबी नहीं तैयार की। औरङ्गजेबकी मृत्युके बादकी डेढ़ दशाब्दियाँ सैयद-बन्धुओंके शासनकी थीं। फर्रुखसियरको इन्होंने गद्दीपर बिठाया था और जब पसन्द नहीं आया, तो (१७ फरवरी १७१८ ई०) उसे उतारकर दूसरे कितने ही तबतक खिलौनोंको शाह बनाते रहे, जबतक कि मुहम्मदशाहके जमानेमें दोनोंकी हत्या नहीं हो गयी।

पठानोंने अवधके पश्चिम गंगाके दोनों पार (प्राचीन पंचालमें) अपने लिए भूमि तैयार की। गंगाके दक्षिण फर्रुखाबाद[2] बंगश पठानोंका केन्द्र था और गंगासे उत्तरके बड़े भूभागको रुहेलोंने हथियाया, जो पीछे उन्हींके नामपर रुहेलखण्ड कहा जाने लगा (जिसका अन्तिम अवशेष रामपुरकी रियासत हालमें ही स्वतन्त्र भारतमें विलीन हुई है।) इन पठानोंके बारेमें 'मुताखरीन'का लेखक लिखता है—"अफगानोंको न दिल होता है, न दिमाग। बड़े लालची होते हैं, नमकका हक अदा करना नहीं जानते। अफगानसे झगड़ा करना बर्रेके छत्तेमें हाथ डालना है। अगर कोई अफगान मारा जाय तो उसका फिरका उस बातको कभी नहीं भूलता। चाहे कितना ही समय क्यों न बीत जाय, मौका मिलने-पर वह बदला लेकर ही रहता है।"[3]

इसमें शक नहीं, यहाँ अतिरंजनसे काम लिया गया है। यह इतिहासकार स्वयं ऐसे दलका था, जिसका पठानोंसे विरोध था।

अवधके सूबेदार सआदत अली खाँका भांजा और दामाद मंसूर पीछे सफदरजंगके नामसे प्रसिद्ध हुआ। १७४८ में निजामुल्मुल्कके चचेरे भाई कमरुद्दीन खाँके मर जानेपर सफदरजंग[4] दिल्लीका महामन्त्री भी बना, किन्तु दलबन्दियोंमें निभ न सका और १७५३ में बगावत करके वह अवध चला आया। अपने स्वार्थोंके लिए तूरानी और ईरानी दल विशेष तौरसे मराठोंसे मदद लेना चाहते थे। सफदरजंगने मराठोंको बुलाकर फर्रुखाबादके बंगश पठानोंको समाप्त कर दिया, और द्वाबाको मराठों तथा अपनेमें बाँट लिया। मराठे रुहेलोंकी भूमिमें भी पहुँचने लगे थे, किन्तु अब एक विदेशी शक्ति (अंग्रेज) बीचमें आ कूदे या निमन्त्रित किये गये थे। १७५४ में सफदरजंगकी मृत्यु हुई और उसका बेटा शुजाउद्दौला अवधका नवाब हुआ। इसके दो साल बाद (१७५६)में अलावर्दी खाँके

१. शाहजहाँके पुत्र मुरादके नामपर बसा।
२. फर्रुखसियरके नामपर बसा।
३. 'जगत सेठ' (श्री पारसनाथ सिंह) पृष्ठ २००।
४. नयी दिल्लीके पास सफदरजंग मद्रसा इसी द्वारा स्थापित हुआ।

मरनेपर उसका दामाद सिराजुद्दौला मुर्शिदाबादका नवाब बना। अगले ही साल (१७५७) पलासी की लड़ाईमें छलसे विजय प्राप्तकर अंग्रेजोंने १९० सालोंके लिए देशपर अपना प्रभुत्व जमा लिया। इस अवस्थासे लाभ उठानेमें पश्चिमी पड़ोसी क्यों पीछे रहते? ईरानके शाहके सेनापति तुर्कमान नादिर कुली या नादिरशाहने १३ फरवरी १७३९ को कर्नाल पहुँच दिल्लीकी सेनाको करारी हार दी। अवधका सूबेदार सआदतअली खाँ घायल हुआ। ९ मार्च १७३९ को नादिर दिल्लीमें दाखिल हो दो महीने वहाँ रह कत्लेआम और लूटका बाजार गर्म करता रहा। मुगल शक्तिको अन्तिम प्रहार दे तख्ताउस तथा अपार सम्पत्ति ले नादिर ५ मई १७३९ को दिल्लीसे विदा हुआ।

मराठोंको इसी समय उत्तरमें और आगे बढ़नेका मौका मिला, और जैसा कि ऊपर कहा गया, सफदरजंगने उनकी मददसे द्वाबा और रुहेलखण्डके पठानोंको दबाया। तुर्कमान नादिरशाहकी लूटको देख अफगान अहमदशाह अब्दाली (दुर्रानी) क्यों चुप रहता, जब कि उत्तरभारतके एक बड़े इलाकेपर उसके भाईयों-बंशजों और रुहेलोंका अधिकार था। १७४८, १७४९ और १७५१ तक पंजाब और मुलतानपर उसने अधिकार कर लिया, चौथी बार गाजीउद्दीनके महामन्त्रित्वके समय १७५६ के अन्तमें उसने और आगे कदम बढ़ाया, और पानीपतमें मराठोंकी सेनाको भी हराकर १७५७ की जनवरीमें वह दिल्लीमें दाखिल हुआ। वहाँ जो कुछ हाथ लगा, उसे तथा रंगीले मुहम्मदशाहकी दो तरुण विधवाओंको भी लेके काबुल लौट गया। दो साल बाद १७५९ में वह फिर दिल्लीकी सूखी हड्डियोंको चिचोड़ने वहाँ पहुँचा।

अहमदशाह अब्दालीके आक्रमणके समय सहारनपुरके एक रुहेले नजीब खाँ[1] (नजीबुद्दौलाने) अपना गढ़ बना लिया था। वह अब्दालीका कृपापात्र भी था। १७५७ की लड़ाईमें उत्तरमें मराठोंकी शक्तिको बहुत धक्का लगा। १७४२ में जहाँ मुर्शिदाबाद मराठोंके आक्रमणक्षेत्रमें था, वहाँ १७५७ में अंग्रेज उसके संरक्षक बन बैठे थे। देशकी यह अवस्था थी, जिसके भीतरसे हमें कुमाऊँको देखना है।

(५) कल्याणचन्द (१७३०-४७)—कल्याणचन्दने दिल्लीके सैयद-बन्धुओंका अनुकरण करनेवाले विष्टी—मानिक और पूरन—को उनके परिवार सहित मरवा दिया। गरीबीमें पले कल्याणचन्दको डर था कि कहीं दूसरा चन्दवंशी दावादार न उठ खड़ा हो, इसलिए दानपुरसे कोटा और पालीसे काली-कुमाऊँतक जहाँ भी कोई चन्दवंशिक हाथ आया, उसे मरवा डाला। शिवदेव जोशी (झीझाड़) उसके विश्वासपात्र मन्त्री थे, जिसे उसने तराईका राज्यपाल बनाया, अवधके मन्सूरअली खाँ (सफदरजंग) ने कुमाऊँकी तराईपर हाथ साफ करना शुरू किया था, इसीलिए वहाँ एक कुशल शासककी आवश्यकता थी। दाऊद खाँकी हत्यासे पड़ोसी पठान भी कुमाऊँको क्षमा करनेवाले नहीं थे। हिम्मतसिंह गोसाईं ने—जिसे रुहेले दुलीचन्द कहते थे—अन्धा किये जानेपर भागकर आँवलाके रुहेला नवाब अलमुहम्मद खाँके पास शरण ली। लेकिन नवाबकी मददसे कुछ करनेके पहिले ही कल्याणचन्दके आदमियोंने नवाबके डेरेमें ही परिवार सहित उसे मार डाला। यह कारण था कुमाऊँपर रुहेलोंके भीषण आक्रमणका, जिसके कारण आज भी वहाँके बहुतसे मन्दिर ध्वस्तप्राय तथा खाली पड़े हैं।

(क) रुहेला-आक्रमण (१७४३-४४)—अपने कैम्पके भीतर इस तरहके हत्याकाण्डसे क्रुद्ध हो नवाब अलीमुहम्मदने हफीज[2] रहमत खाँ, पायन्दा खाँ, और बख्शी सरदार खाँके आधीन दस हजार

१. इसीने नजीबाबाद बसाया।

२. १७७४ में हफीज रहमत खाँ लखनऊ नवाबकी सहायताके लिए भेजी गयी अंग्रेजी सेनासे लड़ते मारा गया।

सेना कुमाऊँको ध्वस्त करनेके लिए भेजी। शिवदेव द्वारा नियुक्त काशीपुरके शासक रामदत्त अधिकारीने लिखा कि रुपया दे देनेपर रुहेले कुमाऊँपर आक्रमण नहीं करेंगे, किन्तु दरबारियोंने कल्याणचन्दको कह दिया—'शिवदेव अपना ऋण अदा करनेके लिये रुपया मँगा रहा है।' रुहेलोंने रुद्रपुरमें शिवदेवको हरा दिया। हफीज रहमतने रुद्रपुरमें अपना अफसर रखकर कुमाऊँपर भीतर धावा बोल दिया। बीजीपुर (चौखाता) और भीमतालके नीचेके पहाड़ोंपर रुहेलोंका अधिकार हो गया। कल्याणचन्दने अब शिवदेवकी सहायताके लिए सेना भेजी, किन्तु वह बीजीपुरमें रुहेलोंका एक प्रहार भी सह न सकी। रुहेले पीछा करते रामगढ़, प्यूरा होते अलमोड़ाके पास सुवाल नदीके किनारे पहुँचे। हफीज रहमतको पास आया देख कल्याणचन्द गैरसेन (लोहबाके पास) की ओर भगा, जहाँसे उसने गढ़वालके राजासे सहायता माँगी।

रुहेलोंका अलमोड़ेपर कब्जा हो गया। उन्होंने वहाँके मन्दिरोंकी सभी मूर्तियाँ तोड़ डालीं, मन्दिरोंमें गायका खून छिड़ककर उन्हें भ्रष्ट कर दिया। सोने-चाँदीकी मूर्तियाँ और आभूषण तो गला ही डाले गये, साधारण धातुकी मूर्तियाँ भी नहीं बचने पायीं। इसी ध्वंसलीलाके कारण कुमाऊँमें १७४३ से पहिलेकी कोई मूर्ति या मन्दिर आज सुरक्षित रूपमें नहीं पाया जाता। भीमताल, कटारमल, अलमोड़ा, द्वाराहाट, लखनपुर आदिमें आज भी प्राप्य नकटूटी अंगभंग मूर्तियाँ रुहेलोंके कृत्योंकी परिचायक हैं। यागेश्वरका प्रसिद्ध मन्दिर, कहते हैं, इसलिए बच गया, कि वहाँ मधुमक्खियोंने रुहेलोंपर हमला कर दिया। गढ़वालकी सेनाके साथ कुमाउँनियोंने रुहेलोंपर आक्रमण कर दूनागिरि तथा द्वाराको खाली करा लिया किन्तु कैरारुसे रुहेल सेनाने आकर उन्हें बुरी तरह हराया। गढ़वालकी राजधानी श्रीनगरपर भी आक्रमण करनेकी धमकी देनेपर गढ़वालियोंकी अक्ल ठीक हुई। कल्याणचन्दने सारी ध्वंसलीला करवाके अन्तमें तीन लाख देना स्वीकार किया। तब सात महीने रहनेके बाद बाराखेरीमें एक छोटी सेना रखकर रुहेले कुमाऊँसे चले गये। नवाब अलीमुहम्मदको यह पसन्द नहीं आया। वह कुमाऊँपर स्थायी अधिकार स्थापित करना चाहता था। उस समय जिस तरह भाग्यका जुआ खेला जा रहा था, समय पड़नेपर पहाड़की शरण बहुत उपयोगी सिद्ध होती।

(ख) दक्षिणसे संघर्ष—नादिरशाह दिल्ली लूटकर चला गया था। मुहम्मदशाह उसे सम्मानपूर्वक बिदाकर यद्यपि फिर अपने 'रंगीला' नामको चरितार्थ कर रहा था, किन्तु शाही सेना तो मौजूद थी ही। दिल्लीपर इरानी दलका प्रभाव था। पठानोंके लिए अच्छा अवसर तभी होता, जब कि नादिरशाह या अहमदशाह अब्दालीका आक्रमण होता। दिल्लीने इधर पठानोंको लाल-लाल आँखें दिखायी थीं, रुहेला सरदार नजीब खाँने तीन ही मास बाद शरणस्थानके तौरपर बाराखेरीकी छावनीको मजबूत किया, और आगे भी मैदान साफ करनेके लिए कोशी तथा काली नदियोंके किनारे-किनारे पहाड़के भीतर सेना भेजी। शिवदेव इसपर मजबूर होकर १७४५ ई० में बाराखेरीके पास रजब खाँकी रुहेला सेनाको परास्त कर मैदानकी ओर भगा दिया, बाकी रुहेले भी स्थिति प्रतिकूल देख पहाड़ छोड़कर चले गये। अफगानोंके अत्याचारसे तंग आकर कटेहर (पीछे रुहेलखण्ड) के हिन्दू राजाओंने नवाब अवध (सफदरजंग) के पास गुहार भेजी। खजाना खाली था। कल्याणचन्दने भेंटके लिए यागेश्वर मन्दिरके आभूषणोंको लेकर मुहम्मदशाहके दरबार (दिल्लीमें) पुकार की। राजाने वजीर कमरुद्दीन (तूरानी दल) की कृपासे रंगीले बादशाहके दर्शनका सौभाग्य प्राप्त किया। बादशाहने उसे तराईकी सनद प्रदान की। लौटते समय बदरीनाथमें कल्याणचन्दने धन्यवाद देनेके लिए कमरुद्दीनसे भेंट की। वहाँ पासमें ही सफदरजंगका भी डेरा था। दोनोंकी प्रतिद्वन्द्विताका ख्याल करके कल्याणचन्दने वजीरको न नाराज करनेके लिए सफदरजंगसे भेंट नहीं की, जिसका परिणाम

हुआ, सफदरजंगसे दुश्मनी और तराईकी सनदका केवल कागजपर ही रह जाना। शिवदेवने दिल्लीतककी पुकारको व्यर्थ देखकर हथियारसे फैसला करना चाहा, जिसका फल सफदरजंगका बन्दी होना छोड़ और कुछ नहीं हुआ। मुहम्मदशाहके बहुत जोर देनेपर सालभर बाद शिवदेव जोशी मुक्त हुए और नवाबने तराई लौटा दी।

कल्याणचन्द अन्तमें अन्धा हो गया। उसने शिवदेव जोशीको अलमोड़ा बुलाकर अपने तरुण पुत्रको उसके हाथमें सौंप दिया, वही कल्याणचन्दके मरनेके बाद १७४७ ई० में दीपचन्दके नामसे राजा हुआ।

(६) **दीपचन्द (१७४७-७७ ई०)**—अब कुमाऊँकी सारी राजशक्ति शिवदेव जोशी (झीझाड़) के हाथमें थी। उसने अपने पुत्र जयकृष्ण जोशीको अलमोड़ा, और अपने चचेरे भाई हरिराम जोशीको काशीपुरका शासन सौंप दिया, और स्वयं भी जाकर रुद्रपुरमें अवस्थान किया। हरिरामकी कर्तव्यहीनता देख उसे हटा, बाजपुरके ब्राह्मण शिरोमणि दासको काशीपुरका शासक बनाया, जिससे हरिरामके साथ विरोध हो गया। जनवरी १७६१ में पानीपतमें लड़नेके लिए दिल्लीसे बुलावा आनेपर हरिराम जोशी तथा वीरबल नेगी कुमाऊँनी सेना लेकर वहाँ पहुँचे थे। नजीबुद्दौला भी वहाँ गया था, जिसकी अनुपस्थितिमें मराठोंसे नजीबाबादकी रक्षाका भार शिवदेवके पुत्र हर्षदेव जोशीने लिया था। कुमाऊँका ध्वंसक वही हफीज रहमत पानीपतके युद्धक्षेत्रमें कुमाऊँनी सेनाका सेनापति था। पानीपतमें दिल्ली सेनाकी हार हुई और अब्दाली जीता।

४. चन्दोंका अन्त—(१) महरा और फरत्याल—शिवदेव जोशी महरा दलका मुखिया था। शासनकी बागडोर अधिक समयसे महरोंके हाथमें थी। फरत्यालोंने उन्हें हटानेका निश्चय किया, और दीपचन्दके मुकाबिलेमें अमरसिंह रौतेलाको सिंहासनका दावेदार खड़ा किया, शिवदेवने इस विद्रोहको दबा दिया; किन्तु इसी समय उसके अपने बन्धु तथा महरा-दलके ही जयकृष्ण जोशीने फरत्यालोंसे मिलकर गढ़वालके राजा प्रदीपशाहको कुमाऊँपर आक्रमण करनेके लिए उकसाया। **तनवा-धौंद** (बिचला चौकोट) में लड़ाई हुई, प्रदीपशाहकी हार हुई और उसे शिवदेवकी शर्तोंपर सन्धि करनेके लिए मजबूर होना पड़ा।

हरिराम जोशी शिवदेवको क्षमा करनेको तैयार नहीं था, यद्यपि शिवदेवने उसे दूसरा पद देकर सन्तुष्ट करना चाहा, अन्तमें खुलकर संघर्ष शुरू हो गया। अन्तिम युद्ध ब्यांसके सिरा (गंगातट)में हुआ, जिसमें हरिरामका पुत्र जयराम मारा गया। हरिरामने अपनेको शिवदेवके हाथोंमें सौंप दिया। हफीज रहमतने दोनोंमें मेल करवाया। शिवदेवके दुश्मनोंकी कमी नहीं थी, जिनमें दनिया जोशी सबसे आगे थे, शिवदेवको षड्यन्त्रका पता लग गया और उसने अगुओंको बोरोंमें जिन्दा बन्द करके बड़ी निर्दयतापूर्वक बागेश्वरसे ऊपर सरयूकी खौलती धारमें फेंकवा दिया। विद्रोह बाहरसे दब गया, किन्तु भीतरसे असन्तोष कई गुना बढ़ गया। काली-कुमाऊँके फरत्यालोंका एक नेता चौकी गाँवका बूढ़ा (नम्बरदार) रायमल भागकर डोटी चला गया। १७६४में कुमाऊँमें नौकरी करते नगरकोटी (काँगड़ा) सैनिकोंके विद्रोहको दबानेका प्रयत्न करते अपने दो पुत्रोंके साथ शिवदेव मारा गया। अब उसका पुत्र जयकृष्ण जोशी प्रधानमन्त्री बना, किन्तु ढाई मास बाद ही षड्यन्त्रोंसे तंग आकर वह अलमोड़ा छोड़कर चला गया।

(२) **मोहनचन्द (१७७७–७९)**—अब बाजबहादुरके एक गुमनाम प्रपौत्र (बाजबहादुर> पहाड़सिंह>हरिसिंह>मोहनसिंह) का भाग्य चमका। वह बख्शी (सेनापति) बना दिया गया और राजा का दासेरक भाई किसनसिंह प्रधानमन्त्री,। जयकृष्णके विरुद्ध षड्यन्त्र करनेमें प्रमुख भाग लेनेवाली रानी

शृङ्गारमंजरीका प्रेमी परमानन्द विष्ट उपराज बना। परमानन्दने अपने रास्तेमें बाधक देख मोहन सिंहको बख्शीपदसे हटा दिया। मोहन सिंहने बिसौलीके रुहेला सरदार नवाब दुन्दू खाँके पास शरण ली। दुन्दू खाँने रुहेला सेना लेकर मोहन सिंहके लिए कुमाऊँपर आक्रमण किया और शक्ति मोहन सिंहके हाथमें चली आयी। उसने अपने शत्रु परमानन्द विष्टको मरवाया और कुछ ही समय बाद रनिवासमें स्वयं घुसकर रानी शृङ्गारमंजरीको चोटीसे पकड़कर खिड़कीके बाहर, पहाड़से नीचे फेंक दिया।

हफीज रहमतको मोहन सिंह पसन्द नहीं था, उसने शिवदेवके पुत्र हर्षदेव जोशीको बुलाकर दीपचन्दका उद्धार करनेके लिए कहा। जोशी मोहन सिंहको मार भगानेमें सफल हुआ। मोहन सिंह पहिले जाबिता खाँ (नजीबुद्दौलाके पुत्र) के यहाँ गया, फिर वहाँसे निराश होकर अवध (लखनऊ) पहुँचा, अब हर्षदेव दीवान (मन्त्री) और लक्ष्मीपति जोशी बख्शी बने। किशन सिंहके उपराज रहनेपर जयकृष्णने उसके नीचे काम करनेसे इनकार कर दिया, इसलिए सेनापति (बख्शी) तथा दीवान दोनों पद हर्षदेवके हाथमें रहे, हरिराम जोशीका पुत्र मनोरथ जोशी रुद्रपुरका सरदार बनाया गया, काशीपुरका शासक अब दीवान शिरोमणिदास था। थोड़े ही समयमें उसके मरनेके बाद उसके पुत्र नन्दरामको काशीपुरका शासक बना दिया गया किन्तु वह सन्तुष्ट नहीं था।

चारों ओरसे निराश हो मोहन सिंहने जयकृष्ण और हर्षदेवसे क्षमा माँगी। जयकृष्णने उसे बुला लिया। रास्तेमें नन्दराम और उसके भाई हरगोविन्दको षड्यन्त्रमें शामिल करते मोहन सिंह अलमोड़ा पहुँचते ही जोशी-बन्धुओंकी भी सहमतिसे शासनसूत्र हाथमें लेनेमें सफल हुआ। जयकृष्ण और हर्षदेव अब भी सलाहकार थे। जयकृष्णने तराईको नन्दरामके हाथसे निकालकर कुमाऊँमें लानेकी राय दी। मोहन सिंह दोहरी चाल चल रहा था—इधर जयकृष्णको आदमी और पैसेसे मदद देता रहा और उधर नन्दरामको उकसाता भी रहा। चिलकिया और काशीपुरके बीच हलदुवामें युद्ध हुआ। जयकृष्णकी हार हुई, किन्तु वह बच निकला। हर्षदेवको भी भागकर पाली (पछाऊँ) में शरण लेनी पड़ी। मोहन सिंहने राजा दीपचन्द और उसके दो लड़कों— उदयचन्द और मुजान सिंह गोसाईं—को सीराकोटमें कैद कर दिया। किन्तु, जबतक जोशी-बन्धु रास्तेसे नहीं हटाये जाते, तबतक मोहन सिंहके हाथमें शक्ति सुरक्षित नहीं थी। उसने अपना मायाजाल फैलाया। जयकृष्ण उसकी बातमें आ गया। कुम्हारखेतमें सलाहके लिए आमन्त्रित होकर आनेके समय मोहन सिंहके आदमियोंने जयकृष्णको मार डाला। अलमोड़ा आनेपर हर्षदेव भी संयोगसे वहीं था। मोहन सिंहने उसे भी मरवा दिया होता, किन्तु उसके सहोदर लाल सिंहके आग्रहपर मृत्युदण्डको आजन्म कारावासमें परिणत कर दिया गया। इसी समय (१७७७ के अन्तमें) दीपचन्द अपने दोनों लड़कोंके साथ सीराकोटमें मर गया—कहते हैं, मोहन सिंहने उन्हें भूखा रख करके मरवाया।

मोहन सिंहने मोहनचन्दके नामसे अपनेको कुमाऊँका राजा घोषित किया। उसने अपने भाई लाल सिंह और पतियाके मधुसूदन पाण्डेको बख्शी तथा दीवान नियुक्त किया। नन्दरामको लिख भेजा—"अब पहाड़ हमारा और काशीपुर तुम्हारा है। गुलारघाटी हमारी सीमा रहेगी।" ऐसे कुटिल कुचक्री, निष्ठुर आदमीका नन्दरामको भी विश्वास नहीं हुआ और उसने लखनऊ जाकर तराईको नवाबके हाथमें अर्पण कर दिया। नवाबने उसे सारी तराईका आमिल बना दिया। मनोरथ जोशीका अभी भी रुद्रपुरपर अधिकार था। नन्दराम मोहन सिंहसे कम दावपेंच नहीं जानता था। उसने मिल-कर मनोरथ जोशीपर आक्रमण करनेके लिए मोहन सिंहको तैयार किया। अब मनोरथ दोनोंसे लड़नेको तैयार हो गया, तो उससे मीठी बातें करके अपनेको मोहनचन्दका शत्रु होनेका विश्वास दिला उसे बुला भेजा। बाजपुरमें नन्दरामसे मिलनेके लिए वह थोड़ेसे आदमियोंके साथ गया, तो वहीं उसका

काम तमाम कर नन्दरामने रुद्रपुरको भी अवध-नवाबकी ओरसे ले लिया। इस प्रकार लड़ाई परसे कुमाऊँका अधिकार खतम हो गया, और १८०२ तक वह अवधके अधीन रही, जब कि अंग्रेजोंने उसपर अधिकार किया। तो भी नन्दरामका भतीजा तथा हरगोविन्दका पुत्र शिवलाल वहाँका जमींदार बना रहा।

मोहन सिंहने फिर खूनकी होली खेलनी शुरू की। दरबार आते समय रास्तेमें नगरके पासके एक देवदारुके नीचे लक्ष्मीपति जोशी मार डाले गये। शिवदेव जोशीके सगे सम्बन्धियोंको चुन चुनकर मारा और सताया जाने लगा। गढ़वालके राजा ललितशाह तथा डोटीके राजाका ध्यान इधर गया। हर्षदेवसे जेलमें ही सलाह हो गयी। १७७९ में ललितशाह काफी सेना लेकर 'लोहबा'के रास्ते द्वारापर चढ़ आया। मोहनचन्द अपने आचरणसे लोगोंका विश्वास खो चुका था, ललित सिंहके अधीन सेना भेज उसने हर्षदेवको बुलाकर पुराने शत्रुके विरुद्ध मैदान लेनेकी प्रार्थना की। हर्षदेव ऊपरी मनसे स्वीकृति दे अभी प्रस्थानकी तैयारी ही कर रहा था, कि बागवाली पोखरकी लड़ाईमें कुमाऊँनी सेनाकी पूर्ण पराजयकी सूचना मिली। मोहनचन्दने भागनेमें ही कुशल देखा और स्वयं भागते हर्षदेवको भी चलनेको कहा, किन्तु वह नहीं गया। लखनऊसे हताश हो मोहनचन्दने रामपुरके रुहेला नवाब फैजुल्ला खाँके यहाँ शरण ली, जहाँ लाल सिंह भी अपने अनुयायियोंके साथ आ मिला।

(३) प्रद्युम्नचन्द (१७७९-८६)—ललितशाहने हर्षदेवको बुला मँगाया, और उसकी सलाहसे अपने एक लड़के प्रद्युम्नको चन्दोंकी गद्दीपर प्रद्युम्नचन्दके नामसे बिठा दिया। हर्षदेव जोशी, जयानन्द जोशी और गदाधर जोशी राज्यके प्रधान अधिकारी बने। ललितशाह थोड़े ही समय बाद मर गया और जयकीर्तिशाह श्रीनगर (गढ़वाल) की गद्दीपर बैठा। प्रद्युम्नचन्दसे उसका झगड़ा उठ खड़ा हुआ। जयकीर्तिने ज्येष्ठ होनेके नाते प्रद्युम्नचन्दसे अधीनता स्वीकार करनेकी माँग की, किन्तु कुमाऊँने कभी गढ़वालकी अधीनता स्वीकार नहीं की थी। हर्षदेवने नवाब फैजुल्ला खाँको लिखा कि मोहन सिंहकी सहायता न की जाय। रुहेलोंका सितारा अब जोरपर नहीं था। इसलिए वहाँसे निराश हो मोहनचन्द प्रयागमें जा नागासाधुओंको लालच दे अपने साथ लाया—नागा कुछ समयोंसे सैनिक तौरसे संघटित हुए थे। १४०० नागोंकी पलटन अपने महन्तोंके साथ कोशीके रास्ते कुमाऊँमें घुसी और बदरीनाथ यात्राके बहाने वह अलमोड़ाके नीचे सुवाल तथा कोशीके संगमपर घुस गयी। हर्षदेवने भेंट लेकर लौट जानेके लिए दूत भेजकर समझाया, किन्तु नागोंने नहीं माना और कुमाऊँनी सेनापर आक्रमण कर दिया। ७०० नागे वहीं खेत रहे, बाकी भाग गये। तभीसे यह कहावत चली—

'जोगीका बाबूको कटक क्या धरियो छियो।'

प्रद्युम्नचन्द और जयकीर्ति शाहका झगड़ा उग्र रूप लेना चाहता था। हर्षदेव स्वयं कुछ सेना ले समझाने-बुझानेके लिए गढ़वालकी ओर गया और जयकीर्तिसे मुलाकात करनी चाही। उसका विश्वास नहीं करना ठीक निकला। जब उसने अचानक हर्षदेवपर आक्रमण किया, तो लेनेके देने पड़े। जयकीर्तिशाहका पीछा करती कुमाऊँनी सेनाने लूटते-पाटते श्रीनगरको ले लिया। जयकीर्तिशाह इसी समय बीमार होकर मर गया। प्रद्युम्नने अपने दूसरे भाई पराक्रमको पहिले जयकीर्तिके विरुद्ध तैयार किया था, किन्तु अब उसे स्वयं लालच हो आया, और वह गढ़वालकी गद्दीपर बैठ गया। हर्षदेवने सारी शक्ति लगायी, किन्तु नन्दराम, मोहन सिंह और पराक्रमशाहकी सेनाओं एवं अपने कुमाउँनियोंकी उपेक्षाके कारण-उसे पालीके नैथाना दुर्गके पास हार खानी पड़ी। मोहनचन्द फिर कुमाऊँका शासक बन गया।

(४) मोहनचन्द पुनः (१७८६-८८ ई०)—पास-पड़ोस तथा दिल्लीतककी सेनासे निकले

भाड़ेके सैनिक उस वक्त मिलने सुलभ थे, इसलिए उन्हें भरती करनेमें मोहन सिंहको कठिनाई नहीं हो सकती थी। लेकिन अब सैनिकोंको रुपया देना था। मोहनचन्दने महरा और फरत्याल दोनोंसे ४ लाख रुपया वसूल किया। हर्षदेवने गढ़वाल राजासे सहायता भेजनेके लिए बहुत कहा और यह भी बतलाया कि मोहनचन्द तुम्हारे प्रतिद्वन्द्वी पराक्रमशाहकी पीठपर है। किन्तु, कोई फल नहीं निकला। अन्तमें हर्षदेवने स्वयं सैनिक संग लेकर मोहनचन्दपर चढ़ाई कर दी। इवालबागमें दोनोंकी मुठभेड़ हुई। मोहनचन्दकी हार ही नहीं हुई, बल्कि वह अपने भाई लाल सिंहके साथ बन्दी बना। पहिलेके उपकारके लिए हर्षदेवने लाल सिंहको क्षमा कर दिया, और मोहनचन्दको हीरा डुँगरीकी एक धर्मशाला-में ले जाकर मार डाला। मोहनचन्दका ज्येष्ठपुत्र विष्णु सिंह लड़ाईमें काम आ चुका था, दूसरा लड़का महेन्द्र सिंह भागकर रामपुरके नवाबके पास चला गया। हर्षदेव विजेताके रूपमें अलमोड़ामें प्रविष्ट हुआ। उसने प्रद्युम्नचन्दको राज सँभालनेके लिए गढ़वाल खबर भेजी, किन्तु प्रद्युम्नके लिए कोई आकर्षण नहीं था कि वह गढ़वाल छोड़कर अलमोड़ा आये।

(५) शिवचन्द (१७८८ ई०)—हर्षदेव जोशी किसी चन्दके नामपर भले ही शासन कर ले किन्तु वह अपना राजवंश कुमाऊँमें नहीं चला सकता था। हर्षदेवने उद्योतचन्दके वंशज एक रौतेला शिव सिंहको शिवचन्दके नामसे राजा बना दिया। राज्य 'जोसियाली' था। अभी जोशी अपना हाथ मजबूत नहीं कर पाये थे कि लाल सिंहने रामपुरके नवाबकी सहायतासे कुमाऊँपर चढ़ाई कर दी। प्रद्युम्नशाहने हर्षदेवकी सहायता की और उसके भाई पराक्रमशाहने लाल सिंहकी। तारीफ यह कि प्रद्युम्न और पराक्रम दोनों भाई अब एक ही जगह श्रीनगरमें बड़े मेल-जोलसे रहते थे। हर्षदेव हार खाकर शिवचन्दको लिये श्रीनगर भाग गये। पराक्रमशाह द्वारा समर्थित मोहनचन्दका पुत्र महेन्द्रचन्दके नामसे कुमाऊँकी गद्दीपर बैठा।

(६) महेन्द्रचन्द (१७८८-९०)—इसे ही कुमाऊँका अंतिम राजा बनना था। पहिलेके पड़ोसी रुहेले और अवधके नवाब अब अंग्रेजोंके प्रतापके सामने क्षीण होते जा रहे थे। रुहेला विजेता नजीबुद्दौला १७७० में मर चुका था। उसके पुत्र और पौत्र जाबिता खाँ और गुलामकादिर अपने पूर्वजका स्थान लेनेकी योग्यता नहीं रखते थे। इसी समय पूर्वी पहाड़ोंसे एक प्रचंड आँधी उठी, जिसने दार्जलिंगसे काँगड़ातक सारे हिमाचलपर अपना प्रभुत्व जमा लिया, और एक बार तो विश्वास होने लगा कि पहाड़में अंग्रेजोंका रास्ता सर्वदाके लिए रोक दिया गया। किन्तु, अब यह यन्त्रयुग था, केवल सूझ, साहस और निर्भयतासे विजयलाभ नहीं हो सकता था। कुमाऊँको गोरखा-ग्राहने एक बार निगल लिया, किन्तु अन्तमें उसे अंग्रेजोंने वमन करवा कर ही छोड़ा।

१७९० तक कुमाऊँका राज्य-प्रबन्ध बहुत कुछ पुरानी शासनप्रणालीसे होता रहा। जिस तरह चन्द पुराने कत्यूरियोंके राज्यके उत्तराधिकारी थे, वैसे ही उनका राज्य-प्रबन्ध भी उसी परम्परापर चलता आ रहा था। मुसलमानोंके सम्पर्कसे कुछ नामों और पदोंमें परिवर्तन होनेपर भी प्राचीन प्रणाली टूटी नहीं थी।

गोरखा-शासन—

१. गोरखावंशकी स्थापना—(१) बहुराजकता—कुमाऊँपर गोरखा-शासनके बारेमें कहनेसे पहिले गोरखा जातिके बारेमें कुछ कहना आवश्यक है। गोरखा-शासनसे पहिले नेपालका भूभाग बहुतसे छोटे-छोटे राज्योंमें बँटा हुआ था, हर एक उपत्यका नहीं, उसके कुछ गाँवोंके ठाकुर अपनेको स्वतन्त्र राजा मानते थे। कभी-कभी कोई सरकंडेकी आगकी तरह जगा भी, तो उसके बुझनेमें देर न लगी। ऐसे ही एक विजेता क्राचल्लदेवके बारेमें हम कह चुके हैं, जो दूलू (कर्नालीकी

एक शाखा कोदी नदीके बायें तटपर अवस्थित आधुनिक दुल्लु दैलेख) का शासक था। वस्तुतः गोरखा-शासन द्वारा मेची (दार्जलिङ् जिला)से काली नदीतकके हिमाचलीय भूखण्डके एकताबद्ध होनेसे पहिले वह मुख्यतः तीन भागोंमें विभक्त था—

(१) गुरुंग—मगर भूमि, जो गण्डककी प्रधान शाखा त्रिशूली गंगासे काली नदीतक थी। इसमें भी गुरुंग पश्चिममें थे और मगर पूर्वमें। सीहानचौक, अजीरगढ़ आदि गुरुंग प्रदेशमें थे, और ढोर भीरकोट, शतहू, गरहू आदिमें मगरोंकी प्रधानता थी।

(२) कोसीकी सबसे पश्चिमी शाखासे लेकर वर्तमान दार्जलिङ्के पासतक किरात प्रदेश था। राई, याखा, लिम्बू—इन किरात जातियोंमें भी लिम्बू सबसे पूरबमें रहते थे।

(३) कोसी और त्रिशूलीके पनढरके बीचका छोटा-सा भाग वास्तविक नेपाल था।[1]

यद्यपि किरात शब्द पीछेके समयमें राई-याखा-लिम्बूके लिए ही प्रयुक्त होता रहा, किन्तु प्राचीन खशों—जो पीछे काली पार गये तथा मैदानसे पहाड़में आये कुछ और जातियों—को छोड़कर यहाँकी सारी जातियाँ किरातवंशसे सम्बन्ध रखती हैं। गुरुंग और मगर तो किरात हैं ही, स्वयं नेपाल उपत्यकाके निवासी नेवार भी मूलतः किरातवंशी हैं, जिन्होंने ही इस देशको अपना नाम (नेवार-नेपार) नेपालको दिया। सारे हिमालयकी तराईमें रहनेवाले थारु, पूर्वके मेची, पश्चिमके भोगता, अस्कोटके राजी, यहाँतक कि ऊपरी सतलजके कनौर (किन्नर) भी उसी विराट किरात जातिके अंश हैं, जिसके अवशेष आज भी मलाया, बर्मा (केरेन या तलेङ्), इन्डोचीनतकमें मौजूद हैं। खश पश्चिममें पहाड़ ही पहाड़ बढ़े, यह हम बतला चुके हैं, किन्तु कालीके पूर्व वह अपेक्षा बहुत पीछे पहुँचे। उनकी प्राचीन बस्तियोंके लिए हमें नेपालमें भी खशोंकी अपनी विशेष समाधियों (कब्रों)का पता लगाना होगा। भिन्न-भिन्न भाषाओंके रहते भी आज खसकुरा (गोरखा भाषा) कालीसे मेचीके किनारेतक बोली जाती है।

(क) २४ गढ़—जैसे गढ़वालकी एकताके पहिले यहाँ ठाकुरोंके ५२ गढ़ थे, उसी तरह गोरखों द्वारा एकीकृत होनेके पहिले वर्तमान नेपालके पश्चिमी भाग (करनालीसे पूर्व) में २४ राजा थे, जिनके कारण इसे चौबीसी (प्रदेश) कहा जाता था। गढ़ोंके नाम पाँच स्रोतोंसे निम्नलिखित प्रकार हैं—

किर्कपैट्रिक (१८११)	हेमिल्टन (१८१९)	रिपोर्ट (१८८४)	गुर्खा (१९१८)	नेपालको इतिहास
१. लमजुङ्	०[2]	०	०	०
२. तनहूँ	०	०	०	०
३. गलकोट	०	०	०	०
४. पर्वत	मलेबम	०	०	पर्वत
५. नुवाकोट	नयाकोट	०	०	नुवाकोट
६. पुन	पोइन	पैन	पयुङ्	पैय्यूं
७. गरहू	०	०	०	०

१. 'पूर्वस्यां कौशिकी पुण्या सर्वपापविनाशिनी। गंगा त्रिशूलगंगाख्या प्रतीच्यां दिशि संस्थिता॥ उत्तरस्यां दिशि तथा सीमा शिवपुरी मता। दक्षिणस्यां दिशि नदी पवित्रा शीतलोदका॥ एतन्मध्ये महापुण्यं नैपालं क्षेत्रमीरितं।' —स्कन्दपुराणे, नेपाल-माहात्म्य।

२. (०) का अर्थ है पूर्ववत्।

८. रीसिङ्	पोइन	पैन	पयुङ्	पैय्यूँ
९. धीरिङ्	०	०	०	०
१०. पालपा	०	०	०	०
११. गुल्मी	०	०	०	•
१२. मुसीकोट	०	०	•	०
१३. प्यूठान	०	०	०	•
१४. इस्मा	०	०	०	०
१५. भीरकोट	०	०	०	०
१६. धुरकोट	०	०	०	०
१७. विघा	अर्घा	०	०	०
१८. लटहूँ	सतहूँ	लटहूँ	०	सतहूँ
१९. कास्की	०	पोखरा	कास्की	०
२०. खाँची	खाची	०	पोखरा	खाँची
२१. ढोर	०	०	सतहूँ	ढोर
२२. दाङ्	गोर्खा	सतहूँ	बटौल	खुप्रीकोट
२३. झिली	तार्की	बटौल	कैरवे	भिंप्रीकोट
२४. सल्यान	गजरकोट	कैरवी	देउराली	गजकोट

श्री सूर्यविक्रम ज्ञवाली[1]के मतसे गोरखा कास्कीके तथा बुटवल पाल्पाके अन्तर्गत था। वस्तुतः इस सूचीके बाईस ही राज्य[2] थे—

(१) लमजुङ्	(१२) मुसाकोट
(२) तनहूँ	(१२) इस्मा
(३) गलकोट	(१४) प्यूठान
(४) पर्वत	(१५) भीरकोट
(५) नुवाकोट	(१६) धुरकोट
(६) पुन	(१७) अर्घा
(७) गरहू	(१८) सतहूँ
(८) रीसिङ्	(१९) कास्की
(९) धीरिङ्	(२०) खाँची
(१०) पाल्पा	(२१) ढोर
(११) गुल्मी	(२२) सल्याण

इनमें सप्तगण्डकी (त्रिशूलीसे बदयारतकके पनढर) में मल्ल, सेन-ठकुरी, और साही-ठकुरी वंशके राजाओंके राज्य निम्नलिखित प्रकार थे—

पर्वत गलकोट	मल्ल

१. 'पृथिवीनारायण शाह' पृष्ठ १९।

२. 'उस समय बाईस-चौबीस राज्य जुमलाके अधीन थे।'—'रामशाहको जीवन-चरित्र', पृष्ठ ६–७।

तनहूँ, रीसिड्	तनहूँ	सेन-ठकुरी	
पाल्पा, गुल्मी अर्घा, इस्मा	पाल्पा		
ढोर, भीरकोट, सतहू, गरहू	खान्छा	साही-ठकुरी	
नुवाकोट, कास्की, लामजुङ्	मीचा		

चौबीसी राजाओंमें सरयू (काली–करनाली)की भूमिके जुम्ला, दुलू, और डोटी जैसे प्रभावशाली राजाओंको नहीं लिया जाता था—डोटीके रैनका-राजा पुराने कत्यूरी वंशके थे, दुलूवाले मल्ल और जुम्लाके भी मल्ल (?) थे। काली-करनाली भूमिके राज्य सप्तगण्डकीकी अपेक्षा कुमाऊँसे ज्यादा सम्बन्ध रखते थे। नेपालके एकीकरणके लिए सप्तगण्डकीके चौबीसी राज्योंका ही नहीं बल्कि पूर्वमें सप्तकौशिकी (किरात), नेपाल, सप्तगण्डकी और काली-करनाली तकके छोटे-बड़े राज्योंको ध्वस्त करना पड़ा। यह काम साही-ठकुरी वंशने किया।

(ख) साही-ठकुरी—दुनियामें सभी जगह प्रभुत्वसम्पन्न होनेपर अपनी वंशावली 'ठीक' करनेकी आवश्यकता होती है, अर्थात् नये राजवंशको किसी प्राचीन प्रतिष्ठाप्राप्त राजवंशसे सम्बन्ध जोड़ना पड़ता है। ईरानके हालके ही रजाशाहको अपने साधारण ईरानी तुर्क-कुलपर सन्तोष नहीं हुआ और उसने अपने वंशको पहलवी (प्राचीन पार्थिय-वंशी) बना डाला। इसी तरह पहाड़में भी हुआ है। रामपुर विशेरका राजवंशको अपने कनौरवंशको छिपानेके लिए प्रद्युम्न और अनिरुद्धके साथ सम्बन्ध जोड़नेकी आवश्यकता पड़ी। यही बात नेपालकी साही-ठकुरीवंश (और पीछे जंगबहादुरके राणावंश) के साथ हुई। 'खान्छा' (ज्येष्ठ) और 'मिचा' (कनिष्ठ) वस्तुतः मगर[1] (किरात) भाषाके शब्द हैं, यह भी उसी तथ्यको बतलाते हैं; यद्यपि पीछेकी वंशावलियोंमें साही-ठकुरी वंश-कर्ता भूपाल-को चित्तौड़के राणावंशकी उज्जैनमें गयी शाखावाले विक्रम राजाका कनिष्ठ पुत्र माना गया है। जेठा ब्रह्मणिक था, किन्तु 'चित्रविलास' की वंशावलीमें क्रम है—

१. जिल्ल	६. ब्रह्मणिक
२. अजिल्ल	७. मन्मथ
३. अटल्ल	८. जैनखान
४. तुथाराज	९. सूर्यखान
५. विभिकिराज	१०. मीचाखान

ये नाम और खान उपाधि भी चित्तौड़से सम्बन्धकी बातके बारेमें भारी सन्देह पैदा करते हैं। साही-ठकुरीवंश सम्भव है, एक खशवंश रहा हो, किन्तु उसका विवाह-सम्बन्ध मगर लोगोंसे भी होता था। पाल्पाके सेनवंशी अभयराणाके बारेमें उल्लेख है—

"एतत्सुतो रूपनारायणेत्यादि महाराजाधिराज श्रीमदभयराणा। तेनैव···पलपायां वसतिः कृता।

१. 'पृथिवीनारायण शाह' पृष्ठ २५ टिप्पणी।

स मकवानपुरवासि-गजलक्ष्मणसिंहनाम्नो मगरमहीपालस्य कान्तिमती नाम्नीं कमनीयतमां कन्यां मकवानी नाम्नीं विधिनोपयेमे।"

वंशावली जोड़नेवालोंके पुराने शाके (संवत्) संदिग्ध हैं, तो भी उनके अनुसार सन् १४९५ ई० (शाके १४१७) में भूपाल उज्जैनसे आकर खिलुंगमें भूमि आबाद करके बसा। उसकी सन्तान निम्नप्रकार हुई।

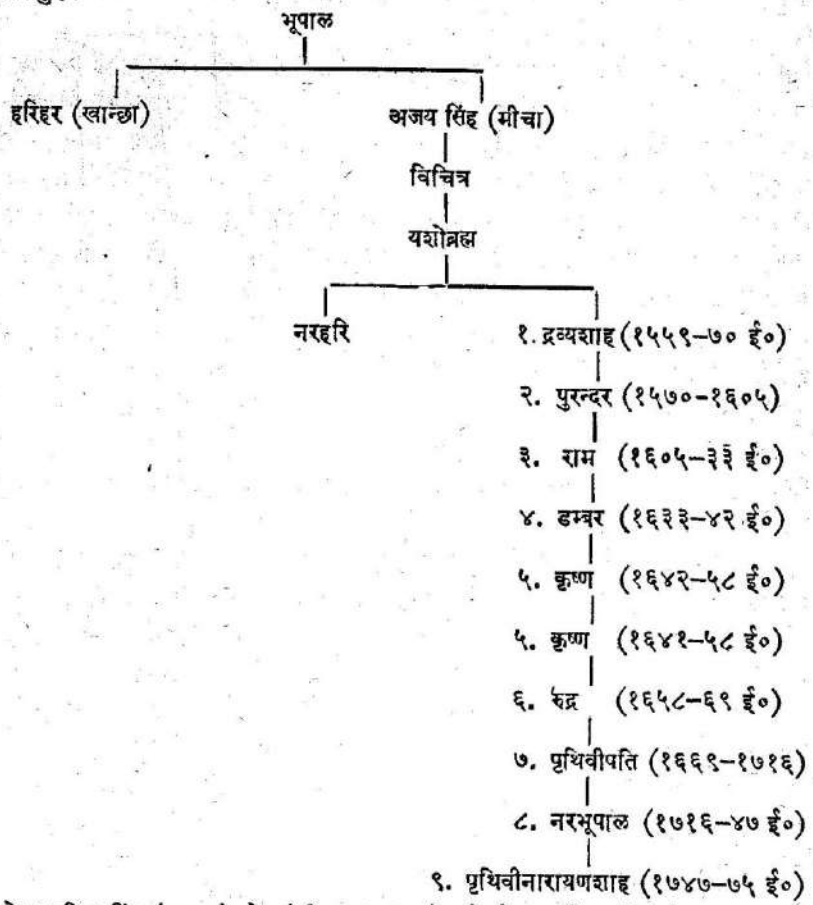

जेठा हरिहर सिंह (खान्छा) ढोर (पश्चिम ३ नम्बर), भीरकोट, सतहूँ, गरहूँ (पश्चिम ४ नम्बर) पर अधिकार कर मगरान्त (मगरोंकी भूमि) का राजा बना, और छोटा अजय सिंह (मीचा) नुवाकोटको जीतकर वहाँका राजा अजयसिंहके पुत्र विचित्र खानने नुवाकोटसे उत्तर-पूर्वके कास्की प्रदेशको भी अपने राज्यमें मिला लिया। विचित्रका पुत्र यशोब्रह्म कास्कीके पूर्वके लमजुङ् प्रदेशका राजा बना। यशोब्रह्मका ज्येष्ठ पुत्र नरहरिशाह लमजुङ्की गद्दीपर बैठा। कनिष्ठ पुत्र नरपतिशाह था और मझला द्रव्यशाह। द्रव्यने गोरखापर अधिकार किया और उसके पुत्र रामशाहने वस्तुतः एकीकरणका कार्य आरम्भ किया, जिसे सफलताके पास पहुँचानेका श्रेय पृथिवीनारायणशाहको है।

(२) द्रव्यशाह (१५५९-७०)—उस समयके राज्य दस-पाँच हजार आदमियोंकी ठकुराई थे। ये आपसमें लड़ते-भिड़ते रहते थे। चौदहवीं सदीमें कुमाऊँ, पन्द्रहवीं सदीमें

गढ़वालमें जैसे ठकुराइयोंका जमाना खतम हुआ, वही बात सोलहवीं सदीमें हिमाचलके इस अंचलमें शुरू हुई, यद्यपि ऐसा काम पहिलेसे ही योजना बनाकर कहीं नहीं हुआ। इन ठकुरी राजाओंका काम केवल राज्यसे नहीं चलता था, इसलिए वे पशुपालन और खेती भी करते थे। द्रव्यशाह बचपनमें गोठमें गायोंकी चरवाहीका काम करता था। कहते हैं, वहीं गुरु गोरखनाथ (देवपालके समकालीन ९वीं सदीके गोरक्षपा) ने उसे राजा होनेका वरदान दिया। किन्तु असल वरदान था, पोखराके खण्डका (खस) राजाके प्रति लोगोंका असन्तोष। वहाँकी तागाधारी खस और मतवाली (मद पीनेवाली मगर-गुरुंग दोनों जातियाँ उससे असन्तुष्ट थीं। पण्डितनारायण अर्ज्याल (कुमाऊँनी–?) और गणेश पाण्डे (पालपासे आगत) दोनों गुरु-शिष्योंकी चाणक्यनीति इस काममें सहायक हुई। गणेश पाण्डेने गोरखा और लमजुङ् एक करना शुरू किया। सन्देह न हो, इसके लिए गणेशने लमजुङ्के तार्कू गाँवके पन्तकी लड़कीसे ब्याह कर लिया। मतवाली (मगर) दल पहिलेसे ही रुष्ट था, पाण्डेने तागाधारी (जनेवधारी) दलको भी खण्डकाके विरुद्ध कर दिया। नारायण अर्ज्यालकी लमजुङ्में पहिलेसे ही बड़ी प्रतिष्ठा थी। सब ठीकठाक हो जानेपर अर्ज्यालने तागाधारी दलके नेता गणेश पाण्डे और मगरनेता गंगाराम रानाको भेजकर यशोब्रह्मसे द्रव्यशाहको माँग लिया। यशोब्रह्मने भगीरथ पन्त, सर्वेश्वर खनाल, केशव बोहरा और मुरली खवास (खवासे) के साथ द्रव्यशाहको भेजा। इन्होंने गोरखा राज्यसीमाके पासके गाँव छोप्राकमें अपना अड्डा बनाया। गोरखा नगरके उत्तर-पश्चिम गुरुङ् लोगोंका लीगलीगमें अपना गणराज्य था। ये लोग प्रतिवर्ष एकत्र हो बलपरीक्षा करके सबसे बलीको अपना राजा बनाते थे। इसी कामके लिए बिना विशेष हथियार लिये गुरुङ् लोग वहाँ जमा हुए थे। इसी समय द्रव्यशाहके लोगोंने आक्रमण कर दिया। गुरुंग हारे और लीगलीगकोटको खाली पा राजसिंहासनपर द्रव्यशाह बैठ गया।

खण्डका राजासे अब सीधे युद्ध चलने लगा, किन्तु सफलताप्राप्तिमें कुछ समय लगा। एक रात द्रव्यशाहको नारायण अर्ज्याल, गणेश पाण्डे, भगीरथ पन्त, गंगाराम राना (मगर), मुरली खवास, सर्वेश्वर खनाल, गजानन भटराई और केशव बोहराने गोरखाके पुराने दरबार तल्लाकोट[1] में राजसिंहासनपर बैठा दिया—गणेश पाण्डे राजपुरोहित हुए। ऊपरी गोरखा नगरको जीतना अब भी बाकी रहा। खण्डका दुर्गबद्ध होकर बैठा था। उसे द्वन्द्वयुद्धपर राजी किया गया। द्रव्यशाहने उसे मार डाला। भादो कृष्णाष्टमी बुधवार रोहिणी नक्षत्र शाके १४८१ (सन् १५६९ ई०) को द्रव्यशाहका राज्याभिषेक राजगुरु नारायण अर्ज्यालने किया। यशोब्रह्मके बाद ज्येष्ठ पुत्र नरहरिशाह लमजुङ्का राजा बना। छोटा भाई होनेके कारण उसने द्रव्यशाहको अधीनता स्वीकार करनेके लिए कहा। इनकार करनेपर लड़ाई शुरू हो गयी, जिसके कारण द्रव्यशाह अपने राज्यका अधिक विस्तार नहीं कर सका। तो भी गोरखाकी सुरक्षाके लिए गुरुंगोंके अजीरगढ़ और सिहानचोकपर अधिकार करना आवश्यक था। सिंहानचोक गोरखा नगरसे पाँच कोस उत्तर था। उसे द्रव्यशाहने पहिले दखल किया। अजीरगढ़ गोरखासे ७-८ कोस उत्तर दरौंदी उपत्यकामें पहाड़के ऊपरी भागमें था।

द्रव्यशाह[2] ११ वर्ष राज्य करके सन् १५७० (शाके १४९२) में मरा। द्रव्यशाहके पुत्र पुरन्दर

१. गोरखाके पहाड़के ऊपर नीचे उपल्लोकोट और तल्लोकोट दो दरबार थे, उपल्लोकोटमें प्राचीन दरबार तथा मनोकामना देवी और गोरखनाथके मन्दिर हैं। उपल्लोकोटसे पोखरी थोकतक गोरखा नगर है।

२. चित्रविलास कृत रामशाहकी राजवंशावलीका कुछ अंश इस प्रकार है—
'इह खलु जगति श्री मेदपाटात् प्रसिद्धाच्छ्रुत-मुनिवर-सिद्धाच्चित्रकूटात् सुकूटात्।
मनसि कृतसुमन्त्रो राजपुत्रः सपुत्रोऽगमदधिसुखधामं सद्विरामं नु कश्चित् ॥२॥

या पूर्णशाहने अकबरके समय १५ वर्ष राज्य करके १६०५ ई० में शरीर छोड़ा। उसके बड़े लड़के छत्रशाहके छ ही महीनेमें मर जानेपर छोटा रामशाह गोरखाकी गद्दीपर बैठा।

२. राज्यविस्तार—(१) रामशाह (१६०५-३३)—गोरखा-राज्यको एक ठकुरी-राज्यसे उठाकर बड़ा राज्य बनानेका श्रेय रामशाहको ही है। रामशाहने अपनी शक्तिको सुव्यवस्थित करके आगे बढ़ना चाहा। द्रव्यशाहके समयके विश्वसनीय वंश—पाण्डे, पन्त, अर्ज्याल, खन्दाल, राना, बोहराके उसने छ थर (पद) स्थापित किये। राजकाजमें उनकी सम्मति सर्वोपरि मानी गयी। लमजुङ्के साथका वैमनस्य अब भी चला आ रहा था। रामशाहने तीन-चार लड़ाइयोंके बाद लमजुङ्को जीत लिया। अब गोरखा-राज्यकी पश्चिमी सीमा मरस्याङ् नदी हो गयी। लमजुङ्वालोंने गोरखा शहरसे १५ कोस उत्तर वारपाकके राजाको उभाड़ा। दाँव-पेंचकी लड़ाईमें जल्दी सफलताकी आशा न देख रामशाहने धोखेसे काम लेना चाहा और वारपाकेके राजा घले (गुरुंग-मगर) चाग्या और स्यरतानके राजा सुरतानको मित्रताकी रसम अदा करनेका निमन्त्रण दिया। सीधे-सादे भले लोग विश्वास करके बिना हथियार आये। रामशाहके आदमी छिपे तौरसे हथियारबन्द थे। चाग्या और सुरतान भी निहत्थे थे। गंगाराम राना आदिने चाग्यापर तलवार चलाकर उसे मार डाला, और सुरतान गोरखा नगरके पूर्व ओर गदीखोलाके पार सरसल्यान भाग गया। रामशाहकी सेनाने पहिले वारपाक जीता फिर स्यरतानको भी। इसके बाद वारपाक और स्यरतानके घले लोगोंने अपने अठारह सौ खोलों (इलाकों)

तद्गोत्रे जितभिल्ल देशनिचयः श्री जिल्ह राजोऽभवद्
राज्ये कार्यदृढः प्रजापरिवृढो जातो जिताख्यस्ततः ॥
सर्वाशाजिद् अटल्ल राजनृपतिः तस्मादकस्मादभूत्।
तत्पुत्रः सुकथापृथाश्रुतिरतिस् तूथादि राजस् तथा ॥३॥
यस्यांग प्रभवोऽभवद् विविकिराट् सम्राट् प्रणीतिप्रियस्।
तद्गेहे हरिराज राज्य तिलको भूमिं बुभोजेश्वरः ॥
तस्माद् ब्रह्मणिको बभूव नितरां गोब्राह्मणप्राणपस्।
तद्भू मन्मथराज-भूपतिरसौ यस्मान्नरेशाधिपः ॥४॥
तस्माद् भूपतिनायकः पतिरतिः श्री जैनखानोऽधिपस्।
तस्मात् सूर्यनिभः प्रभुः समजनि श्रीसूर्यखानाह्वयः ॥
तस्यात्मप्रभवः कृतातिविभवो मीखादिखानोऽभवत्।
तज्जः सज्जधनुर्धनुर्धरवरः खानो विचित्रो विभुः ॥५॥
चित्रो वैचित्रिरासित् तदनु मनुजपः श्री यशोब्रह्मशाहिर्।
ब्रह्मज्ञानी सुदानी धनद इव धनी तत्सुतो द्रव्यशाहिः ॥
तूर्णं चक्रेऽरिचूर्णं तदधिपतनयः पूर्णकृत् पूर्णशाहिः।
पूर्णांशोऽतोऽधुनाऽसौ विलसति ससुतो रामवद् रामशाहिः ॥६॥
कृता चित्रविलासेन कारिता रामशाहिना
राजवंशावली भूयाद् अभितो वृद्धिभामिनी ॥७॥

यहाँ उदयपुरकी वंशावलीमें राणा कुम्भकर्ण (कुम्भा) की परम्पराके—कुम्भकर्ण>अयुत>परवर्म>कविवर्म>यशवर्म>उदुम्बरराय>भट्टराय>जिल्लराजको मिलानेका प्रयत्न किया गया है।

को भी समझा-बुझाकर रामशाहके अधीन करवा दिया। इस प्रकार उत्तरमें भोटकी सीमातक गोरखा-राज्यका विस्तार हुआ। गोरखोंकी महत्त्वाकांक्षा और बढ़ी और वह भोटके भीतर वैरङ् (जोङ्) के भीतर घुस गये। किन्तु चाङ् (मध्य तिब्बत) की सेनासे हार तथा अपने सेनापति भवानी पाण्डे और पिरू रानाको खोकर उन्हें रोसी (रसुवा) में भाग आना पड़ा। आज भी भोट और नेपालकी वही सीमा है, जिसे रामशाहने स्थापित किया था।

पुराना शत्रु सुरतान भागकर सरसल्यानके राज्यमें बसेरी (बस्यारी) गाँवमें जा बसा था। उसके पीछे पड़ी गोरखा सेनाको मन्त्री गणेश पाण्डेको खोनेके सिवा कुछ हाथ नहीं आया। "मन्त्री मरवाकर कैसे तुम भाग आये" कहकर रामशाहने फटकारा, किन्तु उसे मालूम हो गया कि सरसल्यानसे लड़ना हँसी-खेल नहीं है। पूरी तैयारीमें कुछ समय लगा, फिर गन्दी नदी पारकर सल्यानियोंसे लड़ाई शुरू हुई। वहाँका घले (गुरुंग) राजा मारा गया और सरसल्यानपर गोरखा-ध्वजा फहराने लगी। बस्यारीको हाथमें करनेमें कठिनाई नहीं हुई। यहाँसे बूढ़ीगण्डक पार हो गोरखाके दक्षिण-पूर्वमें अवस्थित खरी[1]को भी घले लोगोंसे छीन लिया। फिर रामशाहकी सेना वहाँसे दक्षिण-मैधी (घले) को जीत गोरखासे नुवाकोट जानेके रास्तेमें चरंगे[2] (घले) को जा दबाया। फिर बूढ़ीगण्डक और त्रिशूलीके बीच निवारचोकपर अधिकारकर, बीचके इलाकोंको जीतती, गोरखा सेना धादिङ् पहुँची। राजा रोहिदास मारा गया और धादिङ्पर गोरखोंका अधिकार हो गया। कुछ ही समय बाद फिरकेप भी ले लिया। आखिरी लड़ाई रामशाहको तनहूँके विजयके लिए करनी पड़ी। गोरखा शहरके पश्चिम मर्स्याङ् नदीके पार तनहूँ जिला और शहर है, जहाँ उस समय सेन-ठकुरी राजा तुलासेनका शासन था। राजा हारकर रिसिङ् भाग गया।

रामशाहने २८ वर्ष राज्यकर १६३३ ई० में शरीर छोड़ा। मृत्युके समय उसका राज्य उत्तरमें चेपे और दक्षिणमें मर्स्याङ् नदीतक था, तथा गोरखासे पूर्वमें धादिङ् और उत्तरमें भोटके रसुवा स्थानतक।

पर्वत, पालपा, जुमला तथा नेपालके नेवार राजाओंसे रामशाहका मैत्री-पूर्ण सम्बन्ध था। जुमला सीयापति, पर्वत (राजमल्ल) और पालपा (मुकुन्दसेन) के राजा रामशाहके यज्ञमें आये थे। यह भी कहा जाता है कि सप्त-गण्डकीसे पश्चिममें जुमलाके राजा सीयापतिकी प्रधानता थी। जुमलाका राज्य काली गण्डकी और करनालीके बीचमें था। इसके उत्तरमें हिमालयश्रेणी तथा तिब्बत और दक्षिणमें दुलू-दैलखका राज्य था। बाईसे-चौबीसे उसकी अधीनता स्वीकार करते थे, और भोट प्रान्तके भीतर भी उसका राज्य दूरतक था। धवलागिरि (एवरेस्टके बाद दूसरा सर्वोच्च तथा नन्दादेवीसे भी ऊँचा शिखर) से दक्षिण, कालीगण्डकसे पश्चिम मेयाङ्दीसे पूर्व और गलकोटसे उत्तरवाले भूभागमें उस समय पर्वतका राज्य था, जिसकी राजधानी धोरल मलेबम (बेनी-शहर) मेयाङ्दी और कालीगण्डकीके संगमपर बसी थी, उस समम पर्वतका राजा राजमल्ल था।

रामशाहके बाद डम्बरशाह (१६३३–४२), कृष्ण (१६४२–५८) और रुद्रशाह (१६५८–६९) के शासनके समय कोई विशेष बात नहीं हुई, फिर रुद्रशाहका पुत्र पृथिवीपतिशाह राजा हुआ।

(२) पृथिवीपतिशाह (१६६९–१७१६)—पिछले तीन शासकोंकी निर्बलतासे लाभ उठाकर गोरखाके पुराने शत्रु लमजुङ्वाले गोरखाको दबाते हुए दरौंदीके किनारेतक पहुँच गये। पृथिवीपतिने छलसे काम लिया और अपने छोटे लड़के रणदुल्लशाह, एवं गौरेश्वर उपाध्याय और

१. वर्तमान १ नम्बर जिला धादिङ् तहसील नुवाकोटमें।
२. वही जिला सल्याण तहसील नुवाकोटमें।

बलि उपाध्याय कडरियाको निकाल दिया। तामजुङ्ने उनपर विश्वास कर गोरखासे जीते प्रदेशका शासक रणदुल्लशाहको नियुक्त कर दिया, जिसने उसे अपने बापको दे दिया। उसके बड़े भाई तथा उत्तराधिकारीको उसकी नीयतपर सन्देह हुआ, और रणदुल्लशाहने आत्महत्या कर ली। उत्तराधिकारी वीरभद्र भी पहिले ही मर गया था। कुछ समय बाद पृथिवीपति भी (१७१६) मर गया। उत्तराधिकारके लिए कुछ झगड़ा हुआ, किन्तु अन्तमें वीरभद्रके पुत्र नरभूपालको सिंहासनपर बैठा दिया गया।

(३) नरभूपालशाह (१७१६-४२)—नरभूपालसे भी काम नहीं सँभला। द्रव्यशाहके समय मगर लोगोंको दरबारसे सम्मान और दायित्वपूर्ण पद मिलते आ रहे थे। नुवाकोटके अभियानकी असफलतासे चिढ़कर सेनापतिपद जयन्त राना (मगर) को पदच्युत कर पन्तको दिया गया। यही बात एक और मगर अमात्यके साथ हुई। इससे मतवाली और तागाधारी जातिका झगड़ा उठ खड़ा हुआ। जयन्त रानाने विजेता काठमांडूके राजा जयप्रकाशमल्लकी शरण ली। दरबारी लोग पागल-से हो गये, नरभूपालको हटानेकी सोच रहे थे। इसी समय ज्येष्ठ रानी चन्द्रप्रभावतीने नरभूपालको नजरबन्द करके राजकाज खुद सँभाल लिया।

नरभूपालने १७३७ में नुवाकोटपर आक्रमण किया था, जिसमें पाटनके विष्णुमल्लकी सहायता मिल जानेसे काठमांडूके राजा जयप्रकाशमल्लने गोरखा-सेनाको करारी हार दी। नेपालके तीसरे राजा भादगाँवके रणजितमल्लने पारस्परिक शत्रुता तथा गोरखोंसे मैत्री होनेके कारण युद्धमें तटस्थता रखी। पाँच वर्ष बाद नरभूपाल मर गया और बीस वर्षकी अवस्थामें पृथिवीनारायणको गोरखाका सिंहासन मिला।

३. विजय-यात्रा—(१) पृथिवीनारायणशाह (१७४२-७५)—रामशाहके बाद फिर अब गोरखाका भाग्य चमका। १७४२ में गोरखा राज्यकी सीमा थी—उत्तरमें हिमालय, दक्षिणमें सेती नदी, पूर्वमें त्रिशूल-गण्डकी और पश्चिममें डांडेमें चेपे और नीचे मरस्याङ् नदी।

(क) नेपाल-उपत्यका—नेपाल-उपत्यका सदियोंतक एक राजनीतिक इकाई रही। अन्तिम मल्ल-वंशके शासनमें भी १४५७ ई० तक सारे नेपालका एक राजा यक्षमल्ल था। उसने बेवकूफीसे नेपालको अपने तीन लड़कोंमें बाँट दिया। (१) जेठे रायमल्लको भादगाँव (तातगाँव) मिला, मझले रणमल्लको बनेपा तथा सातगाँव और छोटे रतनमल्लको काठमांडू मिला। पाटन काठमांडूके राजाके अधीन था, किन्तु, राजा शिव सिंह मल्लके समय (१५८५-१६१४) उसके पुत्र हरि सिंहने जाकर वहाँ अपना स्वतन्त्र राज्य कायम कर लिया। आगे चलकर बनेपाको भादगाँवने ले लिया, और उपत्यकामें भादगाँव, पाटन और काठमांडूके तीन राजा रहे। १७२२ में काठमांडूका राजा महीन्द्रमल पाटनका भी राजा था। पहिले विभाजनमें भादगाँवकी प्रधानता थी, और बनेपा तथा काठमांडूका स्थान गौण रहा। किन्तु आगे चलकर काठमांडूकी प्रधानता स्थापित हो गयी। भादगाँव और काठमांडूकी प्रतिद्वन्द्विता और शत्रुता बराबर रही। पाटन जब स्वतन्त्र होता, तो वह भी काठमांडूका विरोध करता। काठमांडू और पाटन अल्पजला वाग्मतीके आरपार हैं। भला ऐसे दो स्वतन्त्र प्रतिद्वन्द्वी राज्य कैसे नेपाल-उपत्यकाकी रक्षा कर पाते? वैसे नेपाल ईसवी सन्के आरम्भ ही सोर हिमाचलमें संस्कृति-कला कौशलका केन्द्र रहा, तिब्बतके सभ्यतामें पदार्पण करते ही सातवीं सदीके मध्यसे वह तिब्बतके व्यापारका केन्द्र भी बन गया। इस प्रकार नेपाल-उपत्यका एक बहुत ही समृद्ध प्रदेश था।

नुवाकोटकी लड़ाईके कारण काठमांडूसे गोरखा-राजाकी शत्रुता थी, किन्तु भादगाँव उसका

मित्र था, जिसे और दृढ़ करनेके लिए १७३२ में नरभूपालने अपने पुत्र पृथिवीनारायण (जन्म-२७ दिसम्बर १७२२) को १० वर्षकी उम्रमें भादगाँव भेज दिया, जहाँसे तीन बरस बाद वह गोरखा लौटा।

(ख) काशी-यात्रा—पिताकी हारका दाग धोनेके लिए पृथिवीनारायणने उतावलेपनसे काम लिया और नुवाकोटकी चढ़ाईमें फिर उसे हारना पड़ा। पृथिवीनारायणको पता लग गया, कि जबतक अच्छे हथियार और सैनिकशिक्षाका प्रबन्ध नहीं होता, तबतक कुछ नहीं हो सकता। रूसके जार पीतरको भी ४० साल पहिले यही अनुभव हुआ था और उसने इसके लिए पश्चिमी यूरोपकी यात्रा की थी। पृथिवीनारायणको यूरोपका क्या पता था? अभी पलासीके निर्णायक युद्धमें भी एक दर्जन बरसोंकी देर थी, इसलिए अंग्रेजोंका महत्त्व पूरी तरह मालूम नहीं हुआ था, किन्तु नेपालके तीन वर्षके वासमें उसने रोमन कैथलिक साधुओंको देखा था, गुण तो और भी सुना था। इसलिए हथियारके जोगाड़के लिए पृथिवीनारायणने काशीयात्राका निश्चय किया। उस समय, जब कि रेल-तार-डाक आदिका कोई प्रबन्ध नहीं था, एक तरुण पहाड़ी राजाके लिए यह कम साहसकी बात नहीं थी। शायद कुछ ऐसा भाव मनमें तब भी काम कर रहा था, जब कि पृथिवीनारायणका ब्याह बनारस जिलेके बैसराजपूत अहिमान सिंहकी लड़कीसे किया गया था। पीछे पृथिवीके दूसरे भाईबन्दोंकी भी शादी इन्हीं अहिमान सिंहके परिवारमें हुई थी; इन्द्रजीत सिंहकी कन्याका ब्याह कीर्तिमहोद्दामशाहके साथ, शिवदत्त सिंहकी कन्याका दलमर्दनशाहके साथ (१७४४ में) हुआ।

पृथिवीनारायणने तीर्थ-व्रतकर बन्दूक-बारूद खरीदा तथा हथियार और सैनिक-शिक्षाके ज्ञाताओंका प्रबन्धकर स्वदेशका रास्ता लिया। गोमती-पार नवाब सआदतअली खाँका राज्य था। पृथिवीनारायण जब गोमती पार होने लगे, तो कर उगाहनेवालोंने रोका। कहासुनी होनेपर जब शुल्कग्राहियोंने आदमियोंसे घिरवाया, और पृथिवीनारायणके घोड़ेकी लगाम पकड़ी, तो मामला बढ़ना ही था। पृथिवीनारायणके आदमियोंने हाथ छोड़ दिया। अब नवाबकी सेनाको भय लगा और पृथिवीनारायणने भेस बदल लिया। दूसरे भी किसी तरह छिप-छिपाकर गोरखपुर पहुँचे।[1] खैर, वहाँसे जब वह बुटवल आया, तो वहाँ फिर पालपाके राजकुमारोंसे झगड़ा कर बैठा 'यौवनके उन्मादमें मनुष्य भले-बुरेका विचार नहीं करता।'

लेकिन अब पृथिवीनारायणको विजयाभियान करना था। उसकी अनुपस्थितिमें रणरुद्रशाह (सौतेले चचा) और गणेश पाण्डेकी सन्तान कालू पाण्डेने काम ठीकसे सँभाला था। पृथिवीनारायणने कालू पाण्डेको अपना प्रधानमन्त्री—क-जी—बनाया। उसने फिरंगी ढंगके हथियारों और गोलाबारूदोंके लिए कई कारखाने खोले, जिनमें नीचेके चतुर कारीगर नियुक्त किये। शेख जबर मुहम्मद तकी और भैरव सिंह जो नीचेसे बुलाये गये थे—गोरखा सैनिकोंको बन्दूक चलानेकी विद्या सिखलाने लगे।

(ग) नेपाल-विजय—उस समय भोट और भारतका व्यापार नेपालके रास्ते नेपालियोंके द्वारा होता था, जिससे नेपाल बहुत समृद्ध था। नेपाली (नेवार) राजाका टंक (रुपया) भी भोट (तिब्बत) में चलता था। तिब्बत और तद्द्वारा चीनकी सहानुभूति नेपालके साथ थी, इसलिए पृथिवीनारायणको बहुत सोच-समझकर आगे कदम बढ़ाना था। गोरखा-राज्यके पड़ोसी पालपा, तनहूँ, लमजुङ्, कास्कीके राजा भी भोटसे अच्छा सम्बन्ध रखते थे, इसलिए नेपालके विरुद्ध वह सहायता देनेको तैयार नहीं थे। किन्तु, अब नेपाल-उपत्यका कई राज्योंमें बँटी थी। अकबरके समयमें

---

१. नुवाकोट-दरबारके शिलालेखमें है—
'शंकरीय-नगरीं प्रतियातो, शुल्कहारिषु विधित्सुरनिष्टम्।
योऽवधीत् पथि तुरुष्कनरेशान् तस्य को न कथयेद् गुणचर्चाम्॥'

नेपाल-उपत्यका चार राज्योंमें विभक्त हो गयी थी, पीछे भादगाँवने बनेपाको अपने राज्यमें मिला लिया और इस प्रकार पृथिवीनारायणके समय वहाँ तीन राजा थे। १७२२ में पाटनका राज्य काठमांडूके राजा महीन्द्रमल्लके हाथमें आ गया। काठमांडू अब भादगाँवकी भाँति ही शक्तिशाली था। दोनों राज्योंमें भारी शत्रुता थी। गोरखोंका झगड़ा काठमांडूसे था, इसलिए 'शत्रुका शत्रु मित्र होता है', के न्यायसे गोरखा और भादगाँवमें बड़ी मैत्री थी, जिसके ही कारण पृथिवीनारायणको उसके पिताने भादगाँव शिक्षा-दीक्षाके लिए भेजा था।

नुवाकोट काठमांडूसे ९ कोस उत्तर एक छोटी (२॥×१ कोस) उपत्यका है, किन्तु अपनी उर्वरता तथा भोटके व्यापार-मार्गपर होनेके कारण बड़ा महत्त्व रखती थी। १७३७ में पृथिवीनारायणका बाप नरभूपाल नुवाकोट जीतनेमें असफल रहा और उसे जगज्जयमल्ल (मृत्यु १७३५) के उत्तराधिकारी जगप्रकाशमल्ल (काठमांडू) से करारी हार खानी पड़ी थी, जिसके लिए गोरखास्वामी द्वारा अपमानित होनेपर मगर-सेनापति कजी जयन्त राना जयप्रकाशके पास चला गया। अरु (पहाड़ी) और मगर योद्धा जयप्रकाशमल्लके पास भी थे, किन्तु नेवार राजाओंकी सबसे भारी निर्बलता थी आपसी फूट। गद्दीपर बैठते ही अपने भाई राज्यप्रकाशको जयप्रकाशने राज्यसे निकाल दिया। राज्यप्रकाशने पाटनके राजा विष्णुमल्लकी शरण ली और उनके मरनेपर कुछ समय वह पाटनका राजा भी हुआ। जयप्रकाशकी उद्दण्डतासे तंग आकर दरबारियोंने उसे हटा उसके छोटे भाई नरेन्द्रप्रकाशको राजा बनाया। उसने राज्यके कुछ भागोंपर चार महीना राज्य भी किया। इस प्रकार जयप्रकाशके शासनमें काठमांडू भीतरी कलहसे और जर्जर हो गया था। ऐसे समय १७४४ ई० में पृथिवीनारायणने अपने नवशिक्षित सैनिकों तथा नये हथियारोंके साथ नुवाकोटपर आक्रमण कर दिया। नुवाकोट-विजयमें बहुत कठिनाईका सामना नहीं करना पड़ा। नेपाल-तिब्बतके व्यापारका ऐसा महत्त्वपूर्ण स्थान गोरखोंके हाथमें चला जाना नेपालके लिए भारी क्षति थी। हारके बाद जयप्रकाशमल्लने और भी पागलपन दिखलाना शुरु किया। दरबारियोंने १७६६के आश्विन महीनेमें उसके बालक पुत्र ज्योतिप्रकाशको राजा घोषित किया। चार बरसतक जयप्रकाश प्राण बचाता भादगाँव और पाटनमें छिपता फिरा। १७५० में देवपाटनमें गुह्येश्वरी मन्दिरमें वह साधुके वेशमें रह रहा था, उसी समय काठमांडूकी सेनाने उसे घेर लिया, किन्तु जब अपने राजाको उस अवस्थामें न देखा, तो सेनाने उल्टा पक्षमें होकर जयप्रकाशको राजा बनाया।

पृथिवीनारायण काठमांडू-राज्यके इलाकोंको दखल करता आ रहा था। आगे बढ़ते-बढ़ते उसने देवरालीको लेकर ञेनम् (कुल्ती) होकर तिब्बत जानेवाले मार्गको काट दिया। नेपाल अब भोटके व्यापारसे वंचित हो गया था। इसलिए भादगाँवको भी गोरखा-मैत्री मँहगी मालूम होने लगी। सीधे आक्रमणका अवसर न पा पृथिवीनारायणने कौटिल्यनीतिका सहारा लिया। सन्धिके लिए आया गोरखा-प्रतिनिधिमण्डल जब षड्यन्त्र करने लगा, तो जयप्रकाशने भी प्रतिनिधिमण्डलको सीधे प्राणदण्डका हुक्म दे दिया। पृथिवीनारायणके दूतोंने झूठे पत्र लिखकर कितने ही दरबारियोंको जयप्रकाशकी क्रोधाग्निमें जलानेमें सफलता पायी। जयप्रकाशने भी 'शठे शाठ्यं', करते पृथिवीनारायणके पुत्र सिंहप्रतापको ब्राह्मणोंकी मददसे पकड़ना चाहा, किन्तु षड्यन्त्रका पता लग गया, और सात जैसी-प्रमुखोंने प्राणसे हाथ धोया। तबसे जैसियोंको ब्राह्मणके अधिकारसे वंचित कर दिया गया—उनकी पावलगी नहीं होती, उन्हें राजाको सलाम करना पड़ता है। वह पुरोहिताई नहीं कर सकते।

१७५५ में पृथिवीनारायणने काठमांडूकी ओर हाथ बढ़ाते हुए काठमांडूसे २ कोस दक्षिण पहाड़पर बसे कीर्तिपुरपर आक्रमण किया। सेनाका नेतृत्व स्वयं प्रधानमन्त्री कालू पाण्डेने लिया, यद्यपि पहिले

उसने इसे अच्छा नहीं समझा था। युद्ध घमासान हुआ। ४०० गोरखोंके साथ कालू पाण्डे मारे गये। पाटन इस समय काठमांडूसे अलग था। जयप्रकाशके अत्याचारोंसे आशंकित वहाँके दरबारियोंने पाटनको पृथिवीनारायणको देना चाहा, किन्तु उसने अपने भाई दलमर्दनशाहको भेज दिया। पृथिवीनारायणके घेरेसे तबाह नेवार लोग कैसे दलमर्दनके शासनको बर्दाश्त करते? १७६६ में उसे हटाकर दरबारियोंने नरसिंहको गद्दीपर बैठाया।

कीर्तिपुरकी हारके बाद पृथिवीनारायण चुप नहीं बैठा रहा। १७५९में शिवपुरी पृथिवीनारायणके हाथ आयी और १७६१ में कविलासपुर। अगले साल पृथिवीनारायणने मकवानपुरके पुराने राज्यको अपने हाथमें किया—मकवानपुर काठमांडूसे दक्षिण-पश्चिम तथा हटौड़ासे ४ कोस पूर्वमें है। मकवानपुरका राजा दिग्बन्धसेन पृथिवीनारायणका साला था, किन्तु इससे क्या? अंग्रेज अब तराईमें पहुँच गये थे। उनकी सहानुभूति नेवार राजाओंके प्रति थी, मकवानपुर ले लेनेपर लड़ाईके लिए जरूरी सहायता नेपालको नहीं मिल सकती थी, यही कारण था मकवानपुरपर हाथ साफ करनेका। भादो (१७६२) में यह लड़ाई हुई जिससे गोरखा सेनाके ५०-६० आदमी मारे गये और मकवानी ३–४ सौ। पलासीके युद्धमें अंग्रेज विजयी हुए थे, तो भी मुर्शिदाबादके नवाब मीर कासिमने ऐंठ नहीं छोड़ी थी। मकवानपुरपर गोरखोंका अधिकार उसे पसन्द नहीं आया और वह सेना ले बेतिया पहुँचा जहाँसे अपने सेनापति गुर्गीन खाँके नेतृत्वमें एक सेना १७६३ के आरम्भमें मकवानपुर भेजी। पृथिवीनारायणने भी खबर पा सहायक सेना भेजी, जिसके सेनापतियोंमें एक रामकृष्ण कुँवर भी था। इसी वंशमें आगे जंगबहादुर आजके राणा हैं। नवाबकी सेनाकी हार हुई और पृथिवीनारायणको बहुत-से नये किस्मके हथियार हाथ लगे।

पृथिवीनारायणकी सफलताओं—विशेषकर मकवानपुर-विजयसे उसके पासके चौबीसी राजा चिन्तित हो उठे। उनमें गोरखा वंशका सगोत्री लमजुङ्का राजा प्रधान था। पृथिवीनारायणको पहिले इनसे भुगतना आवश्यक जान पड़ा। १७६३ में कई युद्धोंमें पृथिवीनारायणने उन्हें परास्त किया। अब फिर पृथिवीनारायणने पूर्वकी ओर मुँह फेरा। इसी साल फरपिंग (कीर्तिपुरसे एक कोस दक्षिणपूर्व) पर भी गोरखोंका अधिकार हो गया। पृथिवीनारायण जिस समय कीर्तिपुरपर आक्रमण करनेके लिए तैयार था, इसी समय फिर चौबीसी युद्धके लिए लौटना पड़ा। कीर्तिपुरपर दुबारा आक्रमण करके पृथिनीनारायणको हार खानी पड़ी, किन्तु गोरखोंने अब उसकी घेरा-बन्दी कर डाली थी, उसका बाहरी दुनियासे कोई सम्बन्ध नहीं रहने दिया था। अन्तमें १७६५ के चैत्रमें कीर्तिपुरके लोगोंने पृथिवीनारायणके हाथमें आत्मसमर्पण कर दिया। इन वीर शत्रुओंके साथ बदला पृथिवीनारायणने उनकी नाक कान काट कर लिया—जिसका वजन १७ धरनी था।[1] कपूचिन् साधु जेजपके अनुसार कीर्तिपुरपर अधिकार करनेके दो दिन बाद नुवाकोटसे पृथिवीनारायणकी आज्ञा पाकर सूरप्रतापशाहने वहाँके निवासियोंकी नाक-कान कटवायी।

मकवानपुरपर भी अधिकार हो जानेपर नेपालका व्यापार भारतसे रुक गया। अंग्रेज कम्पनीको यह बर्दाश्त नहीं हो सकता था। १७६७ में जयप्रकाशमल्लने बेतियाके अंग्रेज अफसर गोल्डिंगसे

१. 'पृथिवीन्द्रवर्णनोदयम्' काव्यमें लिखा है—

'सर्वान् दुर्गवरान् स भूपतिवरो भित्वा चतुर्दिक्-स्थितान्,
रम्यं कीर्तिपुरेति विश्रुतपुरं जग्राह भूरिश्रवाः।
हत्वा शत्रुमनश्विनः कतिपुनः प्रच्छिद्य नासादिकं,
कृत्वा काँश्च विरूपिणः कुपुरुषान् कीर्त्तिस्वरूपं द्विषः॥'

सहायता माँगी। वहाँसे पटना होते इसकी सूचना गवर्नरके पास पहुँची। गवर्नरने धमकीसे काम न होते देख २१ जुलाई १७६७ को अन्तिमेत्थं भेजा और अक्तूबर १७६७ में कप्तान किनलोक सेना लिये खल भी पड़े। नेपालमें ईसाई धर्मके प्रचार करनेवाले कपूचिन साधु तथा नेपाल-भारत-भोटके तत्कालीन बड़े व्यापारी नागा गोसाईं भी आग भड़कानेमें हाथ बँटा रहे थे। किनलोक जनकपुर होते पहाड़में सिन्धुली गढ़ी पहुँचा। लड़ाईमें अंग्रेजोंकी हार हुई। किनलोक किसी तरह जान बचाकर भागनेमें सफल हुआ। दो वर्षतक मकवानपुरकी तराईको अंग्रेजोंने अपने हाथमें रखा, पीछे पृथिवीनारायणके साथ झनड़ा न मोल लेनेमें ही खैरियत समझ उसे लौटा दिया।

१७६८ के भादोकी अनन्तचतुर्दशी नेवार (नेपाल-उपत्यकावासी) जातिकी कालरात्रि है। इसी दिन उनका इन्द्रयात्राका त्यौहार था। आठ दिनतक राजा-प्रजा नाच-शराबमें ही बिताते थे। १५ सितम्बर (अनन्तचतुर्दशी) १७६८ की आधीराततक सारा काठमांडू, राजासे रंकतक शराबमें बेसुध नाच-गान कर रहा था। इसी समय गोरखाली सेनाने तीन तरफसे हमला कर दिया। पृथिवीनारायण स्वयं एक टुकड़ीके साथ हनुमान-ढोका पहुँचा। लोगोंमें भगदड़ मच गयी। जयप्रकाश-ने भागकर पाटनमें शरण ली। हनुमान-ढोकामें जयप्रकाशका सिंहासन सजाया हुआ था, पृथिवीनारायण जाकर सिंहासनपर बैठ गया। १७६८ के पौषमें पृथिवीनारायणने पाटनमें भी सदलबल प्रवेशकर सिन्दूरयात्रा (उत्सव) कराया। पाटनपर अधिकार कर पृथिवीनारायणने वागभैरव मन्दिरके पास बसे कपूचिन साधुओंको उनके नेवार अनुयायियोंके साथ बाहर चले जानेकी आज्ञा दी। वह आकर बेतियामें बस गये, जहाँ अब भी उनकी सन्तानें हैं।[1]

अब जयप्रकाशमल्ल और तेजनरसिंह (पाटन) भागकर भादगाँव पहुँचे। १७७१ के कार्तिक महीनेमें पृथिवीनारायणने भादगाँवपर आक्रमण कर दिया। मामूली प्रतिरोधके बाद गोरखा सेना नगरमें घुस गयी। तीनों राजा बन्दी हुए। कुछ दिनों बाद आहत जयप्रकाशमल्ल मर गया, तेजनरसिंह कैदमें रहा। भादगाँवके राजा रणजितमल्लको अपने पुराने सम्बन्धका स्मरणकर पृथिवीनारायणने काशीवास करनेकी अनुमति दी, जहाँ रहते उसकी मृत्यु हुई।

अब समृद्ध संस्कृत सम्पन्न प्राचीन नेपाल-उपत्यका पृथिवीनारायणके कदमोंमें थी। हनुमान-ढोकाके हातेमें पृथिवीनारायणने वसन्तपुर दरबार नामक ९ तल्लेका महल बनवाया।

(घ) सप्तगण्डकी विजय—सप्तगण्डकी प्रदेशके लमजुङ्, पर्वत आदि चौबीसी राज्योंके साथ अभी संघर्ष बन्द नहीं हुआ था। नेपाल-विजयके बाद १७७० में पृथिवीनारायणने गोरखासे पश्चिमके इस भूभागकी ओर अपने राज्यका विस्तार करना चाहा। एकके बाद एक रीसिङ्, धीरिङ्,

---

१. १६५८ में साधु गेब्रीलने धर्मप्रचारार्थ सबसे पहिले नेपालमें प्रवेश किया। १६६१ से ईसाईधर्मका प्रचार होने लगा, जब कि चीनसे ल्हासा होकर लौटे ग्रूबर और दोरविल दो ईसाई साधु जेनम् (कुल्ती) से होते नेपाल पहुँचे। किन्तु बाकायदा मिशनकी स्थापना अठारहवीं सदीके आरम्भसे हुई। उस समय कपूचिन (कैथलिक) साधुओंका अड्डा पटनामें था। वहींसे दिसम्बर १७१४ में ल्हासाके लिए जाते साधु होरस अपने दो साथियोंके साथ नेपालमें अगस्त १७१२ तक ठहरे। नेवार राजाओंको पादरियोंकी ओर सहानुभूतिका कारण यूरोपके युद्धयन्त्रों-की श्रेष्ठता थी। १८ नवम्बर १७६७ तक ५९ नेपाली ईसाई हुए थे, जिनमें २० कृस्तान मातापिताकी सन्तान थे। १० फरवरी १७६९ को ईसाई साधुओंने अपने अनुयायियोंके साथ नेपाल छोड़ा। इससे पहिले १७४५ (अप्रैल) में उन्हें राजाज्ञासे मजबूर होकर ल्हासा छोड़ना पड़ा था।

भीरकोटको जीत गृहकोटमें तनहूँके राजाको हराया। फिर गरहूँ, पैयूँ, धुवाँकोटको जीतनेके बाद अपने भिरगन्तु लमजुङ्को हराकर वहाँके राजकुमारको पकड़कर नेपाल भेजा—काठमांडू (नेपाल) अब गोरखा राजधानी बन चुका था। इतना हो जानेपर चौबीसी राजाओंको अक्ल आयी, और उन्होंने मिलकर गोरखोंसे लोहा लिया। गोरखा-जेनरल सरदार कहरसिंह बस्नेत खेत आया, और काजी वंशराज पाण्डे घायल होकर बन्दी बना। पृथिवीनारायण सप्तगण्डकी जीतनेमें असफल रहा।

पश्चिममें हार खाकर १७७० में पृथिवीनारायणने सप्तकौशिकी या किरातदेशकी ओर सेना भेजी। किरातोंके साथ तीन लड़ाई अरुण नदीके किनारे हुई, जिसकी सफलताके बाद १७७३ में अरुण नदीतक गोरखा राज्यकी सीमा बढ़ गयी। अब लगते हाथों उदयपुर गढ़ीके चौदण्डी राजा कर्णसेनको हराकर उसे मोरंग माँगनेके लिए मजबूर किया। आगे अरुण और तमोर नदियोंके बीच तथा किरातदेशसे उत्तर लिम्बुआन (लिम्बू लोगोंका देश) गोरखा-सेनाका लक्ष्य बना। यह छोटा-सा प्रदेश दस सरदारियोंमें बँटा था, जिसके कारण इसका नाम दस-लिम्बू पड़ा था। यहाँके शासक लोगोंने स्वयं अधीनता स्वीकार की, जिसका एक कारण पूर्वमें सिक्किम राजाका उनपर होता रहता प्रहार भी था। अब गोरखा-राज्य पूर्वमें तमोर नदीके दाहिने तटपर पहुँचकर सिक्किमकी सीमासे मिल गया।

सेनोंका राज्य मकवानपुरसे तिस्तातक था। शुभसेनकी मृत्युके बाद उसका राज्य उसके दो पुत्रों मानिकसेन और महीपतिसेनमें बँट गया। इसमें कमला नदीसे पश्चिमका भाग मानिकसेनको मिला था, जिसे कि पृथिवीनारायण जीत चुका था। चौदण्डी राजा कर्णसेन भागकर महीपतिसेनके राज्य (मोरंग) में शरणागत हुआ। वहाँ उसने राजाको मरवाकर गद्दी सँभाल ली। मोरंगकी अपने उत्तरी पड़ोसी सिक्किमसे भी अनबन थी, उधर महीपतिसेनके मारे जानेपर पृथिवीनारायणने २७ मई १७७३ के अपने पत्रमें वारन हेस्टिंगजको लिखा कि 'मोरंगका राजा हमारा सम्बन्धी था। उसके हत्यारे तथा राज्य हड़पनेवाले कर्णसेनको दण्ड देनेके लिए हम मजबूर हैं।' मोरंग विजय करनेके बाद अभिमानसिंह बस्नेतको वहाँका शासक बनाया गया। मोरंगकी आपसी फूटसे लाभ उठाकर इसी समय सिक्किमने कनकाई और तिस्ताके बीचका भाग अपने हाथमें करके तराईतक अपनी सीमा बढ़ा ली। सिक्किम भी अब पृथिवीनारायणकी आँखोंमें काँटेकी तरह चुभ रहा था। युद्धकी तैयारी भी हो गयी थी, किन्तु जनवरी १७७५ ई० में पृथिवीनारायणकी मृत्युके कारण युद्ध नहीं हो सका—सिक्किमकी पीठपर तिब्बत भी था, इसलिए भी पृथिवीनारायणको जल्दी युद्धारम्भ करनेका साहस नहीं हुआ।

पृथिवीनारायण एक दूरदर्शी योद्धा था। यद्यपि वह आवश्यकतासे अधिक क्रूर तथा कलछलमें बहुत नीचेतक उतरनेको तैयार रहता था। पश्चिममें चौबीसी और पूर्वमें सिक्किमको जीतनेका उसका संकल्प पूरा नहीं हुआ, किन्तु उसने अपने पैतृक राज्यको पश्चिममें मरस्याङ् नदीसे पूर्वमें कनकाई नदीके तटतक, एवं उत्तरमें हिमालयसे दक्षिणमें तराईतक फैला दिया। वह धर्मके बन्धनोंकी भी परवाह नहीं करता था। कपूचिन साधुओंको नेपालसे निकालना धार्मिक असहिष्णुताके कारण नहीं हुआ, बल्कि यूरोपीय मिशनरियोंकी राजनीतिमें दखल देनेके कारण। उस समय संन्यासी अखाड़ेके गोसाईं सारे भारत और हिमालयके पासतकके सफल व्यापारी थे। व्हासामें उनका बहुत मान था, अंग्रेजोंसे भी उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। इसके कारण वह भी पृथिवीनारायणके कोपके भाजन हुए थे। इतने युद्धोंको चौके-चूल्हेकी पाबन्दीके साथ जीता नहीं जा सकता था, इसलिए पृथिवीनारायणने व्यवस्था दे दी थी कि कपड़ा पहिने भात पकाकर खाया जा सकता है।

(२) रणबहादुरशाह—(क) पश्चिम विजय—पृथिवीनारायणकी मृत्युके बाद १० जनवरी १७७५ को उसका ज्येष्ठ पुत्र सिंहप्रताप केवल दो वर्ष दस महीना राज्य करके मर गया। इसके शासनमें तनहूँ राज्यके दक्षिणका भूभाग-कपिलास-गोरखा-राज्यमें मिलाया गया। बापके मरनेके बाद उसका ढाई वर्षका पुत्र रणबहादुरशाह गद्दीपर बैठाया गया। सिंहप्रतापको हटाकर [illegible] गद्दी सँभालनेके लिए षड्यन्त्र करनेवाला उसका भाई बहादुरशाह देशसे निर्वासित हो बेतियामें रहता था। वह तुरन्त नेपाल पहुँचा, और अभिभावकताके लिए उससे और सिंहप्रताप की रानी राजेन्द्रलक्ष्मी-से झगड़ा हुआ। दरबारियोंकी सहायतासे राजेन्द्रलक्ष्मीका पल्ला भारी [illegible] इस घरू झगड़ेसे फायदा उठानेके लिए १७७९ में चौबीसी राजाओंने आक्रमण कर दिया [illegible] गोरखा-शासक सजग थे। शत्रुओंसे मुकाबिला करनेके लिए २१ वर्षीय [illegible]ण अमरसिंह थापाके नेतृत्वमें सेना भेजी गयी। उस समय किसे मालूम था कि यह रक्षार्थ सैनिक यात्रा गोरखा राज्यको काँगड़ातक पहुँचानेका महाभियान सिद्ध होगी, और अमरसिंह गोरखोंका सबसे बड़ा जेनरल बनेगा। चौबीसी राजाओंके सरगना, लमजुङ्, पर्वत और तनहूँ थे। ताकूघाटमें पर्वत और लमजुङ्की सम्मिलित सेनाकी हार हुई, जिसमें लमजुङ्के सेनापति बलिभंजन और भक्ति थापा बन्दी हुए। बलिभंजन कैदमें मर गया, किन्तु भक्ति थापा पश्चिमके दिग्विजयमें अमरसिंहका दाहिना हाथ बना। १७८२ में लमजुङ् गोरखा राज्यमें मिला लिया गया। १७८५ में पश्चिमी नुवाकोट हाथमें कर धुर्वाकोटके युद्धमें हराकर पैयूँको भी ले लिया। पालपासे लड़ाई करते नेपाली सेनाने सतहूँ, भीरकोट और रीसिङ्को विजय किया। इसी समय (१७८५ या १७८६) में रानी राजेन्द्रलक्ष्मीकी मृत्यु हो गयी। मैदान साफ देख बेतियासे आकर बहादुरशाहने बालक रणबहादुरकी अभिभावकता सँभाली। राजेन्द्रलक्ष्मी द्वारा आरब्ध अभियानको बहादुरशाहने आगे बढ़ाया। इस्मा, वाङ्लुङ्, पर्वत, प्युठान सर करनेके बाद अमरसिंहके नेतृत्वमें नेपाली सेनाने दैलख (दुल्) पर आक्रमण किया, और सुरखेतकी विजयके बाद गोरखा सेना करनाली-के किनारेतक पहुँच गयी। वहाँसे दक्षिण पश्चिममें बढ़ते डुमराकोट और तारिमघाटकी लड़ाइयोंमें हराकर उसने आछाम और डोटी ले लिये। इस प्रकार १७८९ या १७९० में गोरखा सीमा आजकी भाँति काली नदीतक पहुँच गयी।

काली-पार कुमाऊँमें 'घरका भेदिया' हर्षदेव गोरखोंको बुलानेके लिए अधीर था। १७९० में गोरखोंने अलमोड़ापर अधिकार किया। और बादमें कैसे गढ़वाल उनके हाथमें आया इसे आगे बतलायेंगे।

रणबहादुरशाहको बहादुरशाहकी अभिभावकता अब पसन्द नहीं थी, उससे छुटकारा पानेके लिए उसने एक दिन चचाको पकड़कर जेलमें डाल दिया, वहाँ वह १७९५ में मर गया। इसी साल एक मैथिल ब्राह्मणी कान्तवतीसे[2] रणबहादुरको एक पुत्र हुआ, जिसका नाम गीर्वाणयुद्धविक्रमशाह पड़ा। रणबहादुर अपने इस ब्राह्मणीपुत्रको गद्दीपर बैठानेके लिए उतावला था, क्योंकि वह समझता था कि पीछे लोग इसमें बाधक होंगे। १७९७ में रणबहादुरने गद्दी त्याग उसपर गीर्वाणको बिठाया

१. पृथिवीनारायणके सेनापतियोंमें सिहानचोकके एक किसान रंजेका पुत्र भीमसेन थापा था, जो पीछे सिहानचोकको शासक बनाया गया। इसीका पुत्र अमरसिंह था, जिसका जन्म १७४९ और मृत्यु १८१६ में हुई।

२. सन् १७९७ ई० (शाके १७१९ विभवनाम संवत्सर माघ कृष्ण १४ सोमवार) में 'रणबहादुर शाह···कनिष्ठ पत्न्या श्रीकान्तवती देव्या निज भर्तृविक्रमार्जित कूर्माचल शतौली' ताम्रपत्र लिखितको केदारनाथको भूमिदान दिया था, ताम्रपत्र ऊखी मठमें अब भी मौजूद है।

और वह स्वयं स्वामी निर्गुणानन्द बन संन्यास धारण कर पाटनमें रहने लगा। ब्राह्मणी रानी थोड़े समय बाद मर गयी, जिससे निर्गुणानन्द विक्षिप्त-सा हो गया, और जिन देवी-देवताओंने स्वामिनीको बचानेमें सहायता नहीं की, उनके मन्दिरोंको वह नष्ट-भ्रष्ट करने लगा। यही नहीं, आगे उसने राज्यको फिर लौटा पानेका भी प्रयत्न किया जिसपर अधिकारियोंने पकड़कर उसे बन्द करना चाहा। रणबहादुर नेपालसे भागकर १८ अप्रैल १८०१ को बनारस पहुँचा। गीर्वाणयुद्धकी अभिभाविका रानी सुवर्णप्रभा और प्रधानमन्त्री दामोदर पाण्डे हुए। कम्पनीकी सहायतासे रणबहादुरको बनारस-में रोक रखनेके लिए नयी सरकारने अक्तूबर १८०१ में मित्रता और व्यापारकी सन्धि की। अप्रैल १८०२ में कप्तान नाक्स अंग्रेजी दूत बनकर नेपाल पहुँचा, किन्तु दरबारी सन्धिका विरोध कर रहे थे, जिसके कारण नाक्सको मार्च १८०३ में नेपाल छोड़कर चले जाना पड़ा। सालभर बाद जनवरी १८०४ में लार्ड वेलेस्लीने सन्धिपत्र नामंजूर कर दिया। रणबहादुरका रास्ता खुल गया। रणबहादुर-से मुकाबिला करनेके लिए दामोदर पाण्डे थानकोटमें सेना लेकर पड़ा था; किन्तु पृथिवीनारायणके पौत्र—अपने राजा—को सामने देखकर सेना उसीकी तरफ हो गयी। दामोदर पाण्डे और उसके बड़े लड़केने कैद होकर प्राण गँवाये। प्रधानमन्त्रीका पद भीमसेन थापाको मिला। चौतरिया (राजवंशीय) दलसे युत हुआ, थापादलके हाथमें शक्ति आयी। अमरसिंह थापाका ज्येष्ठ पुत्र रणध्वज भी भीमसेनका सहकारी बना। पगला रणबहादुर और भी क्या क्या करता, किन्तु १८०५ के आरम्भमें दरबारमें ही रणबहादुरको उसके सौतेले भाई शेरबहादुरने मार डाला। शेरबहादुर भी वहीं मार डाला गया। ऐसा अच्छा अवसर हाथसे न जाने दे, भीमसेन थापाने अपने प्रतिद्वन्दी चौतरिया दलवाले विदुरशाही, नरसिंह काजी, त्रिभुवन काजी आदिको मार डाला। रणबहादुरकी छोटी रानी ललित त्रिपुरसुन्दरी अब बालक राजाकी अभिभाविका बनी।

(ख) काँगड़ातक—थापादलने पश्चिमकी स्थगित विजययात्राको फिरसे आरम्भ किया। गढ़वाल-विजयके बाद १८०४ में देहरादूनतक नेपालका शासन स्थापित हो चुका था। नेपाल राज्यकी सीमा वहाँ यमुना और टौंस नदी थी। सालभरके भीतर नेपाली सीमा पहाड़में सतलजके किनारे पहुँच गयी। सतलज पार काँगड़ाका राज्य था। उसका राजा संसारचन्द रणकुशल और चतुर राजनीतिज्ञ था। इसी समय पंजाबमें रणजीत सिंह भी कदम जमा रहा था, किन्तु १८०४ ई० तक उसका प्रभुत्व मैदानी प्रदेशतक ही सीमित रहा।

गढ़वालके पड़ोसी राज्य सिरमौर (नाहन) का राजा कर्मप्रकाश नेपालका मित्र था, इसलिए सतलजकी ओर बढ़नेमें उसकी ओरसे रुकावट नहीं हुई। सिरमौरसे उत्तर जुब्बल भी उसके अधीन था, इसलिए वहाँ भी स्वागत ही स्वागत था। क्यूँथल, बघाट, कूथर, कनियाँ, भज्जी, धामी, बुघाट, महलोग, कोठी, कियारी, कोटीगुरु और ठियोग छोटी-छोटी ठकुराइयाँ थीं, जिनको हस्तगत करनेमें गोरखोंको कठिनाई नहीं पड़ी। बिसहर (रामपुर) के राजाने कुछ विरोध किया, किन्तु अन्तमें उसे भागकर कन्नौजमें शरण लेनी पड़ी। संसारचन्द भी राज्यविस्तारका कम मनसूबा नहीं रखता था। १८०३ में जलन्धर द्वाबापर उसने आक्रमण किया था, किन्तु सिखोंसे हारकर भागना पड़ा। फिर उसने सतलजके दाहिने तटपर अवस्थित सुकेत, मण्डी तथा चम्बा आदिपर हाथ साफ किया। इस-पर वहाँके बहुतसे राजाओंने बिलासपुर (कहलूर) के राजा महान्चन्दको अमरसिंह थापाके पास सहायता माँगनेके लिए भेजा। ये राजा थे—

१. राजा भूप सिंह (गुलेर)
२. राजा उमेद सिंह (जसवन)
३. राजा गोविन्दचन्द (दातारपुर)
४. राजा गोविन्द सिंह (सीबा)

५. राजा जीत सिंह (चम्बा)
६. राजा विक्रम सिंह (सुकैत)
७. राजा विक्रम सिंह (कुल्लू)
८. राजा वीर सिंह (नूरपुर)
९. राजा महेन्द्र सिंह (बिसौली)
१०. राजा···(कटलेहर)
११. राजा महान्चन्द (कहलूर)

कालीके पश्चिम अमर सिंह थापाका शासन था। काँगड़ाकी ओर बढ़ते समय कुमाऊँको अमर सिंहने अपने पुत्र रणजोर सिंह और वीरभद्र कुँवरके हाथमें छोड़ा। गढ़वालके हर्ताकर्ता वीरभद्रका पिता चन्द्रवीर कुँवर और सुब्बा सूरवीर खत्री नियुक्त हुए। नेपालसे काजी नयन सिंह थापा सेना लेकर क्युँथलके रास्ते हिरूर (नालागढ़) होते विलासपुरमें अमर सिंहसे जा मिले। १८०५-६ के जाड़ोंमें गोरखा-वाहिनी जिवरी (सुकैत) और विलासपुर (कहलूर) में सतलज पार हुई। यहीं उधरके राजा सदलबल आ मिले। सतलजके किनारे महलमोरीमें पहिली भिड़न्त हुई। संसारचन्दकी हार हुई। आगे बढ़ती गोरखा सेनाने नदौंवमें १२ वर्षसे संसारचन्दके बन्दी मण्डीके राजा ईश्वरी सेनको मुक्त कर उसे अपना सहायक बनाया। इसी तरह सतलजपारके राज्य कटलेहरको भी उसके वंचित राजाको देकर अमर सिंहने अपनी ओर किया। संसारचन्दने तिरा-सुरजनपुरमें मुकाबला करना चाहा, किन्तु वहाँ भी हार खानी पड़ी। फिर उसने काँगड़ाके अजेय दुर्गका सहारा लिया। सचमुच ही प्रकृति और मानवीय हाथोंने इसे दुर्जेय बना दिया था। किन्तु पासकी ज्वालामुखी पुरी गोरखोंके हाथमें चली गयी। यहीं इधरके उपर्युक्त राजाओंने अमर सिंहके दरबारमें हाजिरी दे नेपालकी अधीनता स्वीकार की। गोरखा-सेनाने काँगड़ा-दुर्गको जीतनेका बहुत प्रयत्न किया, किन्तु परिणाम प्रधानमन्त्री भीमसेन थापाके भतीजे नयन सिंह तथा और सैनिकोंको बलि चढ़ानेके अतिरिक्त कुछ नहीं हुआ। अब गोरखों-ने घेराबन्दी करनेका रास्ता लिया। १८०६ में रणजीत सिंह ज्वालामाईके दर्शनको आये। संसारचन्द-ने पाँच लाख रुपया देनेकी बात कहकर उसे अपनी ओर करना चाहा, जिसपर अमर सिंहने उतना रुपया देकर रणजीत सिंहको उधर जाने नहीं दिया। काँगड़ाका सारा राज्य जब नेपालियोंके हाथमें था, किन्तु काँगड़ा-दुर्गमें वृद्ध संसारचन्द अब भी आत्मसमर्पण करनेको तैयार नहीं था। इससे नेपाली सेनाकी धाक कम होने लगी, और उसके अधीन राजा सिर उठानेके लिए मुस्तैद दीखने लगे। सिरमौरके राजाको इसके लिए अपने राज्यसे हाथ धोना पड़ा।

अगले तीन सालोंमें रणजीत सिंहकी शक्ति और बढ़ी, किन्तु सीमा, मैदानमें सतलजके किनारे अंग्रेजी सीमाके पास आ जानेसे झगड़ेका डर मालूम होने लगा था, जो अप्रैल १८०९ की अमृतसरकी सन्धि द्वारा हट गया—दोनोंने सतलजको सीमा मान लिया। अब रणजीत सिंहको पूर्वकी ओर राज्य-विस्तारका मौका नहीं रह गया और उसने पहाड़की ओर मुँह किया। संसारचन्दने कुछ मोलभावके बाद काँगड़ा-किलेको रणजीत सिंहको देना स्वीकार किया। पश्चिमके पहाड़ी राजाओंकी भी आँखें खुलीं और उन्होंने भी गोरखोंको छोड़ रणजीत सिंहकी शरणमें जाना बेहतर समझा। संसारचन्द कुशलपूर्वक अब किलेसे बाहर निकल गया था। सिक्ख सेनाने काँगड़ामें अवस्थित गोरखोंपर आक्रमण किया। दोनों ओरसे बहुतसे सैनिक हताहत हुए, अन्तमें २४ अगस्त १८०९ को काँगड़ा छोड़कर अमर सिंहको चला जाना पड़ा। नेपालके पश्चिमाभिमुख प्रसारका रास्ता रुक गया—रणजीत सिंह पत्थरकी चट्टान बनकर उसके रास्तेमें खड़ा हो गया। इसके कारण गोरखा सेनाका रोब बहुत कम हो गया। अब भी मौकेकी ताकमें अमर सिंह सतलज और जमुनाके बीच इलाकोंमें तैयारी कर रहा था। उसने अर्कीमें अपनी छावनी डाल वहाँसे कुमाऊँतक रास्ता तैयार कर जगह-जगह रक्षा-दुर्ग बनवाये। सन् १८११ (चैतबदी ३ संवत् १८६८) में अमर सिंहको काजीकी पदवी मिली।

यह कह आये हैं कि १७७८ में पिताके मरनेपर रणबहादुरशाह (१७७८–१८१५) गोरखाका राजा हुआ, किन्तु राजमाता इन्द्रलक्ष्मीने अभिभाविकाके तौरपर शासनकी बागडोर अपने हाथमें रखी। रणबहादुरके चचा बहादुरशाहने १७७९ में इन्द्रलक्ष्मीको मरवाकर स्वयं अभिभावक पदको सँभाला। पृथिवीनारायणका यह कनिष्ठ पुत्र ठीक अर्थोंमें अपने पिताका उत्तराधिकारी था। उसने पिताके अपूर्ण कामको बहुत आगेतक बढ़ाया। थोड़े ही समयमें लमजुङ् और तनहनको लेते क्रमशः उसने चौबीसी राजाओं (कश्की, पर्वत रीसिंग, सतहू, इस्मिया, मस्कोट, दरकोट, उरगा, गुटिमा, जुमला, रघान, दरमा, जोहार, प्यूठन, घानी, जसेरकोट, चीली, गोलम, अछाम, धुलेक, दुल् और डोटीको आत्मसात् कर पश्चिममें अपनी सीमा काली और उसकी शाखातक पहुँचा दिया।

४. कुमाऊँ-विजय—गोरखोंसे कुमाऊँकी कमजोरियाँ छिपी नहीं थी। ऊपरसे हर्षदेव जोशी जैसा घरका विभीषण अपनी वैयक्तिक महत्त्वाकांक्षाकी पूर्तिके लिए गोरखोंको सहायता देनेके लिए तैयार था। १७९० ई० में गोरखा सेनाने चौतरिया बहादुरशाह, क-जी जगजीत पाण्डे, अमर सिंह थापा और सूरवीर थापाके अधीन कुमाऊँपर चढ़ाई कर दी। महेन्द्रचन्द और उसके चाचा लाल सिंह इस टिड्डीदलका मुकाबला नहीं कर सकते थे, और १७९० के आरम्भ (चैत)में अलमोड़ापर गोरखा-ध्वजा फहराने लगी। हर्षदेव अब अलमोड़ामें थे।

कुमाऊँको लेकर ही गोरखोंको सन्तोष नहीं हुआ। अगले साल (१७९१) गढवालपर भी उनका अभियान हुआ, किन्तु अभी गोरखा लंगूरगढके आगे नहीं बढ़ सके। लंगूरगढकी गढवाली सेनाने सालभरतक मुकाबला किया। आखिरी प्रहारकी तैयारी होने ही लगी थी कि नेपालपर चीनी आक्रमणकी खबर आयी। १७८१ में चेचकसे पणछेन-लामाके पेकिंगमें मर जानेपर टशील्हुन्पो विहारमें आपसी झगड़े शुरू हुए, जिसमें एक पक्षने नेपालको निमन्त्रित किया। किन्तु १५,००० टंका वार्षिक भेंट देनेकी बात करके गोरखोंको भीतर आनेसे विरत कर दिया गया। प्रतिज्ञात रकम जब नहीं आयी, तो १७९१ में गोरखा-सेनाने तिब्बतके भीतर घुसकर टशील्हुन्पो तथा दूसरे कितने ही विहारों और नगरोंको लूटा। यह खबर चीन गयी। वहाँसे एक बड़ी सेना नेपालकी गोशमालीके लिए भेजी गयी। चीनी सेना दुर्गम पहाड़ों तथा सुदीर्घ मार्गको पार करती काठमांडूके पास पहुँच गयी। गोरखा सरकारको हर्जाना तथा लूटी चीजोंको लौटाकर सन्धि करनी पड़ी, जिसके अनुसार तबसे नेपाल बराबर चीनके पास अपना कर भेजता रहा। चीनके इसी आक्रमणकी खबर पाकर गोरखा-सेनाको लंगूरगढका घेरा उठाना और अलमोड़ाको भी छोड़ना पड़ा। गोरखोंने हर्षदेवको भी साथ ले जाना चाहा, किन्तु हर्षदेव उनकी आँख बचाकर जोहार पहुँच गया। जोहारियोंने अपने दल (फर-त्याल) के शत्रुको पकड़कर महेन्द्र सिंह-लाल सिंहके हाथमें देना चाहा, किन्तु हर्षदेवने पकड़कर ले जानेवाले पदम सिंहको सिंहासनका लोभ दिखलाकर श्रीनगर पहुँचनेमें सफलता पायी।

चीनके साथ सन्धि हो जानेके बाद गोरखे अलमोड़ा लौट आये। गढवालको भी उनका डर था। हर्षदेव इस समय गढवाल-राजाके सहायक बने हुए थे। महेन्द्रचन्दने दो बार कुमाऊँको लौटानेका प्रयत्न किया, किन्तु महरा और हर्षदेव उसके विरुद्ध गोरखोंकी सहायता कर रहे थे, फिर सफलताकी क्या आशा हो सकती थी?

१७९२ में गोरखा-सेनाने लंगूरगढका घेरा उठा लिया, किन्तु वह अब भी गढवालमें लूट-पाटसे बाज नहीं आती थी। गाँवों और नगरोंके लूटने-जलानेके साथ साथ वह वहाँसे पकड़कर लाये बन्दियोंको दास बनाकर बेच दिया करती थी। १८०३ में गोरखा-सेनाने गढवालको अपने हाथमें करनेके लिए आक्रमण कर दिया। श्रीनगर भादो अनन्तचतुर्दशी संवत् १८६० (१८०३ ई०) के

भूकम्पसे भारी क्षतिग्रस्त हुआ था, इसलिए प्रद्युम्नशाहने उसे छोड़ वाराहाट (उत्तरकाशी)में मुकाबला करना चाहा ; किन्तु उसे हारकर देहरादूनकी ओर भागना पड़ा। गोरखोंने पीछा करते अक्तूबर १९०९ में देहरादूनके गुरुद्वारेपर अधिकार कर लिया। प्रद्युम्नशाहने लंढौराके गूजर राजा रामदयाल सिंहकी मददसे एक बार फिर गढवालके लौटानेका प्रयत्न किया, और देहराके पास खरबारमें लड़ते हुए जनवरी १८०४ में मारा गया। इस प्रकार १८०४ के आरम्भमें गढ़वाल गोरखोंका हो गया। गोरखा विजययात्रा कैसे पश्चिममें काँगड़ा, पूर्वमें दार्जलिङ्तक हुई, यह लिखा जा चुका है।

(१) **प्रबन्ध**—नेपाल दरबारमें दो दल राजशक्ति हाथमें लेनेकी कोशिश किया करते थे—(१) चौतारा (चौतरिया) दल अपने नामानुसार (चबूतरा, सिंहासन) राजपुत्रों तथा राजसम्बन्धियोंका दल था ; (२) थापा दल अपनी सैनिक सफलताओंके कारण आगे आ गया था। कुमाऊँका शासन पहिले जोगामल्ल सूबा (१७९१–९२) के हाथमें रहा, फिर १७९३ में काजी[1] नरशाहीका अत्याचारी शासन आरम्भ हुआ। नरशाहीके अत्याचारोंकी खबर काठमांडूतक पहुँची और उसे हटाकर अजब सिंह खवास थापा उसकी जगह भेजा गया। बहादुरशाह १७७९ से अधिकारारूढ़ था, किन्तु १७९५ में उसे उसके अधीनस्थ प्रबल राणाने पदच्युत कर दिया। इसी समय उक्त चौतरिया और थापा दलका जन्म हुआ। गोरखा-विजयमें थापाका प्रमुख हाथ था, इसलिए राजशासनसे कबतक राजपुत्र और राजसम्बन्धी उन्हें वंचित रखते ! १७९५ में थापा दलके अमर सिंह थापा तथा उसके सहायक गोविन्द उपाध्याय और सेनानायक भक्ति थापा कुमाऊँके शासक बन कर आये। १७९७ में चौतरिया बम (भीम) शाह और उसका भाई रुद्रवीर शाह कुमाऊँके शासक थे। १८०३ से १८१५ तक हस्तिदलशाह (कुछ अन्तरके साथ) और सरदार भक्ति थापाका कुमाऊँके शासनसे सम्बन्ध रहा। १८०६ से गोरखा-शासनके अन्ततक बमशाह कुमाऊँका राज्यपाल रहा। अबतक नेपाली शासन लूटखसूटका शासन था। बमशाहने देखा कि इस तरहका शासन शासक और शासित दोनोंके स्वार्थोंके विरुद्ध है। पिछले १५ सालोंके गोरखा-शासनने गावोंको उजाड़कर जंगल बना दिया था। उसने विश्वास पैदा करनेके लिए सरकारी नौकरी तथा सेनामें कुमाउँनियोंको लेना शुरू किया। १८१४ में दो-तिहाई गोरखा सेना कुमाउँनियों-गढ़वालियोंकी थी, यद्यपि उनकी गणना नियमित सेनामें नहीं, स्थानीय मिलिसियामें थी। कुछ कुमाऊँनी सैनिक अफसर भी बनाये गये थे। बमशाहने गोरखा अफसरोंकी जागीरोंमें होती धाँधली और निष्ठुर शोषणको भी बन्द करनेका प्रयत्न किया।

वह दासताका युग था। गोरखा-शासकोंकी आमदनीका एक अच्छा साधन कुमाऊँनी-गढ़वाली दास-दासियोंका क्रय-विक्रय था। हरद्वारमें उन्होंने एक बड़ा दास बाजार कायम कर रखा था, जिसके बारेमें एक प्रत्यक्षदर्शी अंग्रेज रेपरने १८०८ में लिखा था—"हरकी पौड़ीकी ओर आनेवाले घाटेकी जड़में गोरखा चौकी है, जहाँपर पहाड़से दासोंको लाकर बेचनेके लिए प्रदर्शित किया जाता है—तीनसे तीस वर्षके स्त्री-पुरुष दोनों जातिके। ये बेचारे अभागे सैकड़ोंकी संख्यामें प्रतिवर्ष बाजारमें बेच दिये जाते हैं। यह दास पहाड़के भीतरी सभी भागोंसे लाये जाकर हरद्वारमें दससे डेढ़ सौ रुपयेकी दरसे बेचे जाते हैं।" सात वर्ष बाद गोरखा-शासनके अन्तके समय यात्रा करते ज. ब. फ्रेजरने अन्दाज लगाया था कि गोरखा-शासनकालमें दो लाख दास बेचे गये। यह ठीक है कि दासताके लिए हम केवल गोरखोंको दोषी नहीं ठहरा सकते। अभी अंग्रेजों द्वारा दासप्रथाको निषिद्ध करनेमें भी तीन दशाब्दियोंकी देर थी।

---

१. यह अरबी काजी (न्यायाधीश) नहीं बल्कि तिब्बती क-ज़ी (कलोन-जी) मन्त्रिचतुष्टयसे निकला है।

(२) कर-भार—समकालीन कवि गुमानीने गोरखोंकी कर-सम्बन्धी नीतिके बारेमें लिखा था—

"दिन-दिन खजानाका भारका बोकनाले,
शिव-शिव चुलिमें बाल नै एक कैका।
तदपि मुलुक तेरो छोड़ि नै कोइ भाजा,
इति वदति गुमानी धन्य गोरखालि राजा।"

१८१२ में गोरखोंको लाखों रुपयेकी आय निम्नलिखित करोंसे हुई थी—

भू-कर	८५,५२५	सलामी-नजराना	२,७४३
घीकर	२,२५२	मिझारी (चमारोंसे)	६३१
टाँड (चरखा-तकली-कर)	९०,७४१	सोनिया फागुन	१,३६०
व्यापार-चुंगी	७,५००	खान-चुंगी	२,४००
काठ बाँस-चुँगी	१,२००	अन्य	१६२
जुर्माना, कुर्की	२,५००		

इससे बारह वर्ष बाद (१८२३ में) कुँमाऊकी जनसंख्या १,३५,००० थी।

५. गोरखा-अंग्रेज युद्ध (१८१४-१५ ई०)—(१) आक्रमण—दार्जलिंगसे शिमलातक दाड़ और कुछ भाग तराईका भी नेपाल राज्यमें था। उधर दक्षिणसे अंग्रेज भी बढ़ते-बढ़ते हिमालयकी जड़में पहुँच गये थे और उनकी भूख तृप्त होनेवाली नहीं थी, विशेषकर हिमालयके विलायत जैसे ठंढे स्थानों और वहाँकी सुननेमें आती बहुमूल्य खनिज-राशि (सोनाचाँदी) भी उनके लोभको बढ़ा रही थी। ऐसी अवस्थामें अंग्रेजोंको बहानाभर चाहिये था। वह नेपालसे हिमालयके अधिकसे अधिक भागको छीन लेनेपर तुले हुए थे। अंग्रेजोंने गोरख युद्धका कारण बतलाया था[1]—"१८१४ में नेपाल-युद्धके आरम्भ होनेसे पूर्व कितने ही वर्षोंसे गोरखालियोंने हिमालयकी जड़में अवस्थित ब्रिटिश भूभागपर छोटे-मोटे कितने ही हस्तक्षेप किये थे।...सबसे अधिक गम्भीर हस्तक्षेप गोरखपुर जिलेके बुटवल पर्गनेमें हुए। १८४० में बुटवलपर गोरखालियोंने यह कहकर कब्जा कर लिया कि यह तो-पाल्पा राजाका है, जिसका राज्य अब नेपालमें चला आया है। मामूली विरोध करनेके सिवाय हमारी तरफसे कुछ नहीं किया गया।...१८१२ में वहीं और भी हस्तक्षेप गोरखालियोंकी ओरसे हुए, जिसपर हमारी सरकारका ध्यान उधर गया।...लिखा-पढ़ी चली, किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। इसपर गवर्नर-जनरल लार्ड हेस्टिंग्सने अप्रैल १८१४ में विवादास्पद भूभागपर अधिकार करनेका हुक्म दिया, और वह काम निर्विरोध पूरा हो गया।"

और दूसरे कारणोंको अंग्रेजोंके १ नवम्बर १८१४ के युद्ध-घोषणापत्रमें इस तरह बतलाया गया है[2]—"

"...जब कि ब्रिटिश सरकारका आचरण नेपालके साथ सदा न्याय और सहिष्णुताके सिद्धान्तके अनुसार रहा, वहाँ सारी विश्वस्त सीमा-रेखा[3]पर ब्रिटिश सरहदके भीतर एक भी ऐसा जिला नहीं है, जिसमें माननीय कंपनीके राज्यके भीतरके निश्चित किसी भूमिको गोरखालियोंने हड़पा

---

१. Atk. Vol II pP. 629—30.
२. वही pp. 630—31.
३. दार्जलिंगसे शिमलातक।

और कब्जा न कर लिया हो।[1] नेपालियोंके ऐसे अनुचित दखलका सवाल पूर्णिया, तिरहुत, सारन[2], गोरखपुर और बरेलीके जिलों एवं जमुना तथा सतलजके बीचके संरक्षित विभागमें पैदा हुआ है। वहाँकी हर एक घटना ब्रिटिश सरकारकी नरमी तथा सहिष्णुता एवं नेपालियोंकी उद्दण्डता तथा आक्रामक नीतिका प्रमाण है।"

हेस्टिंग्सकी आज्ञासे १८१४ के अप्रैलमें अंग्रेजी सेनाने बुटवलपर अधिकार कर लिया। उस वक्त नेपाली चुप रहे, किन्तु २९ मई १८१४ को उन्होंने अंग्रेजी अधिकारियोंको मार भगाया। इसपर अंग्रेजोंने १ नवम्बरको युद्ध-घोषणा कर दी।

नेपाली सेनाके बारेमें अंग्रेजोंकी राय क्या थी, इसका निदर्शन नेपाल-युद्धके एक अंग्रेज कप्तान हियूरसीका एक पत्र है[3]—"गोरखाली कमाण्डर अज्ञ, कुटिल, धोखेबाज, अविश्वसनीय और अत्यन्त हठधर्मी होते हैं। वह विजय और युद्धमें सफलताके बाद खूनके प्यासे तथा क्रूर एवं पराजयके बाद नीच तथा घृणास्पद बन जाते हैं। उनकी किसी सन्धि या शर्तपर विश्वास नहीं किया जा सकता। वह अपने सैनिकोंको लाल वर्दी पहिना पथरकलासे हथियारबन्द कर हमारे निचले अफसरोंके नामों की नकल करते, अपनेको हमारी सरकारका अंश बतलाते, चीन सरकारको आँख दिखाते हैं। हमारी सरकारके सामने वह चीनी रीतिनीतिकी नकल करते, हमारे हृदयमें यह बैठाना चाहते, मानो वह चीनके अंग हैं। उनके सैनिकोंके पास हथियार निर्बल हैं, सिंदे तथा होलकरके सैनिकोंसे उनकी तुलना नहीं हो सकती।"

अंग्रेजी सेनाने चार स्थानोंसे नेपाली राज्यके ऊपर आक्रमण किया। सबसे अधिक सेना (पहिले ८००० फिर १३०००) मेजर-जेनरल मार्लेकी कमाण्डमें बिहारसे राजधानी काठमांडूकी ओर रवाना हुई। गोरखपुरसे आगे बढ़नेवाली ४००० सेनाका संचालक मेजर-जेनरल ब्रूड था। मेजर जेनरल गिलेस्पीको ३५०० सेना ले देहरादूनपर अधिकार करनेका काम सौंपा गया था। पश्चिमी छोरपर सतलज-जमुनाके बीच मेजर-जेनरल अक्टरलोनीने चढ़ाई की। जेनरल गिलेस्पीकी सेना पश्चिमी गोरखा-सेनाके बीचमें घुसकर गोरखा-राज्यको दो टुकड़े कर देना चाहती थी, किन्तु गोरखोंने दिखला दिया कि कप्तान हियरसीकी राय उनके बारेमें गलत थी। यहाँके अंग्रेज सेना-नायकके कौशलके बारेमें एक अंग्रेज लेखकको स्वीकार करना पड़ा।[4]—"जेनरल गिलेस्पीकी सैनिक काररवाई अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुई, किन्तु वह अपमानजनक नहीं थी; क्योंकि उस जेनरलने कमसे कम अपनेको निर्भीक तथा उत्साही सैनिक साबित किया।"

१९ अक्टूबर १८१४ को गिलेस्पीकी सेना सहारनपुरसे रवाना हुई। तिमली और मोहनके घाटोंमें सिवालक पार हो दोनों सेनाएँ २४ अक्टूबरको देहरादूनमें जाकर मिल गयीं। यहाँ आनेमें उन्हें कोई कठिनाई नहीं हुई, किन्तु देहरादूनसे साढ़ेतीन मील उत्तरपूर्वमें अवस्थित **खलंगा**[5] (नलपानी) के मामूलीसे दुर्गमें स्थित तीन-चार सौ नेपाली सैनिकोंने वीर बलभद्र थापाके नेतृत्वमें अंग्रेजोंको

१. औबरके अनुसार १७८७ से १८१२ के बीच गोरखोंने ऐसे दो सौ गाँव दखल कर लिये।
२. उस समय चम्पारण जिला सारनके ही भीतर था।
३. Atk. Vol II p. 625.
४. Atk. Vol II p. 635. "The operations of general Gillespie were most unfortunate but they were not disgraceful, for he showed himself to be at heart a brave and zealous soldiers."
५. खंलगा नेपालीमें सैनिक कैम्पको कहते हैं; जिसे अंग्रेजोंने कलंगा बना दिया।

महीनेभर नाकों चने चबवाते जो वीरता दिखलायी, उसने सिद्ध कर दिया कि भारत वीरविहीन नहीं है। २५ अक्टूबरको कर्नल माबीने कुछ छ-पौंडी तथा दो हवाइजर तोपोंसे कलंगा दुर्गको सर करना चाहा, किन्तु कुछ ही गोलोंके चलानेपर प्रयत्न व्यर्थ मालूम हुआ, और सेना देहरादून लौट आयी। २६ अक्टूबरको जेनरल गिलेस्पीने सेना-संचालन अपने हाथमें ले लिया; किन्तु, वह बलभद्रके बहादुरोंका कुछ न बिगाड़ सका। ३१ अक्टूबरको बड़ी जबरदस्त तैयारीके साथ गिलेस्पीने आक्रमण किया। "वहाँ जब कि वह एक हाथमें टोपको हिलाते दूसरेमें तलवार लिये अपने आदमियोंको प्रोत्साहन दे रहा था, इसी समय उसकी छातीमें एक गोला लगा, और वह वहीं मरकर गिर पड़ा, उसके साथ ही उसका प्रतिहार ओहारा मारा गया तथा कितने ही अफसर घायल हुए।[1]"

(२) **गोरखा-वीरता**—अंग्रेजी सेनाने दिल्लीसे सहायता आ जानेतकके लिए आक्रमणको रोक दिया। प्रायः एक मास बाद २४ नवम्बरसे दुबारा आक्रमण शुरू हुआ। उन्हें तबतक सफलताकी आशा नहीं थी, जबतक कि किलेके बाहरसे मिलनेवाले **पानीके** झरनेसे दुर्गरक्षकोंको वंचित नहीं कर दिया जाय। प्यासकी मार गोलोंसे भी बुरी थी, सिंह बलभद्र ३० नवम्बरकी रातको अपने ७० साथियोंके साथ अंग्रेजोंकी सैन्यपंक्तिको चीरते निकल गया। आगे बलभद्र और उसके साथियोंने जौनागढ़में जाकर अंग्रेजोंके नाकों दम किया। फिर वह जेठकमें लड़े। उसके भी हाथसे निकल जानेपर ये स्वतन्त्रताप्रेमी बहादुर, रणजीत सिंहकी सेनामें सम्मिलित हो गये। अन्तमें अफगानोंके साथ लड़ते बलभद्र और उसके साथी वीरगतिको प्राप्त हुए। हिमाचलके इन वीरपुत्रोंका सम्मान उनके शत्रुओंने भी किया। खलंगामें आज भी दो स्मारक खड़े हैं, जिनमें एक जेनरल गिलेस्पीका है, और दूसरा वीर बलभद्र और उसके साथियोंका। उसपर लिखा है[2]—

"हमारे वीर विरोधी दुर्गपाल बलभद्र[3] और उसके वीर गोरखोंके सम्मानमें यह उत्कीर्ण है, जो कि पीछे रणजीत सिंहकी नौकरीमें रहते अफगान तोपखानेके सामने एक-एक करके मर गये।"

इसी स्मारककी दूसरी ओर लिखा है—

"इस कब्रके ऊपरी पर्वतके सर्वोच्च स्थानपर खलंगा (कलंगा) दुर्ग खड़ा था, जिसे ३१ अक्टूबर तथा २७ नवम्बरके दो आक्रमणके बाद ब्रिटिश सेनाने १८१४ को कब्जा करके पूर्णतया भूमिसात् कर दिया।"

प्रत्यक्षदर्शी अंग्रेज ज० ब० फ्रेजरने कलंगा दुर्गका उस दिनका दयनीय दृश्य निम्नप्रकार वर्णित किया है[4]—

"उस दिन (३० नवम्बर १८१४) सवेरे मेजर केलीने किलेमें घुसकर उसपर अधिकार कर

---

१. Atk. Vol II p, 637.

२. "This is inscribed as a tribute of respect for our gallant adversary. Bulbudder, commander of the fort, and his brave Gurkhas, who were afterwards, while in the service of Ranjit Singh shot down in their ranks to the last man by Afghan artillery."

३. अहिराम कुँवर गोरखा राजा नरभूपाल (पृथिवीनारायणके पिता) के सरदार थे, जिसके एक पुत्र रामकृष्णको प्रपौत्र जंगबहादुर (१८४६-७७ ई०) नेपालके वर्तमान राणा-शासनके संस्थापक हुए, अहिरामके दूसरे पुत्र जयकृष्णके पुत्र तथा गढ़वालके शासक चन्द्रवीरके पुत्र बलभद्र थे।

४. Atk. Vol. II pp. 638, 639.

लिया।···दुर्गका सारा भूभाग कसाईखाना बना हुआ था, जहाँ हत और आहत, एवं फटते गोलों द्वारा छिन्न-भिन्न अंग बिखरे पड़े थे। जो अब भी जीवित थे, वे बड़े हृदयद्रावक स्वरमें पानी माँग रहे थे। उनके मुँहमें कई दिनोंसे एक बूँद भी पानी नहीं गया था। दुर्गन्ध वहाँ भयंकर थी। पहिले मारे गयोंमें कितनोंके शरीर अच्छी तरह दफनाये नहीं गये थे।···हमारे अफसरोंने ध्वंसावशेषोंके भीतर अंशतः आच्छादित कितने ही मुर्दोंके अवशेष तथा कपड़े पाये।···गोले-गोलियोंसे मारी गयी बहुत-सी स्त्रियोंके शरीर मिले। भुरता हो गये, तो भी जीवित लड़के भी पाये गये। एक स्त्रीका एक पैर उड़ गया था, उसे अस्पताल भेजा गया, जहाँ वह बच गयी। एक छोटा बच्चा मिला, जिसकी दोनों जाँघोंसे गोली पार हो गयी थी, वह पूर्णतया स्वस्थ हो गया। एक तीन-चार वर्षका सुन्दर लड़का अक्षत मिला, जिसका बाप सूबेदार मारा गया था, और उसे दुर्गमें ही गाड़ दिया गया था।···९० से अधिक मुर्दोंको हमारे देशी सैनिकोंने जलाया।···जिस दृढ़संकल्पताके साथ एक छोटी-सी टुकड़ीने इस छोटी-सी चोटीको अपेक्षाकृत इतनी बड़ी सेनाके सामने एक महीनेसे अधिक समयतक हाथसे जाने नहीं दिया, उसकी प्रशंसा हरेक आदमी करे बिना नहीं रहेगा, विशेषकर जब कि पिछले दिनोंके भीषण दृश्योंको सामने रखा जायगा। उनके सामने निहत साथियोंका हृदयवेधक दृश्य, उनकी स्त्रियों और बच्चोंकी यातना, सहायताकी सब ओरसे निराशा थी। इसके कारण इस प्रकार दृढ़तासे लड़नेका—(कर्त्तव्यपालन)के अतिरिक्त और कोई कारण नहीं हो सकता था। ये अपने कर्त्तव्यके प्रति अत्यन्त भक्त थे। मुहासिरेके समय कलंगाके सैनिकोंने अपने उच्च चरित्रको प्रकट किया है। दूसरी जगह गोरखोंका चाहे कोई रूप देखा गया हो, किन्तु यहाँ घायलों तथा बन्दियोंके साथ क्रूरता नहीं की गयी, जहरीले बाण नहीं इस्तेमाल किये गये, कूएँके पानीमें विष नहीं डाला गया, बदलेकी निकृष्ट भावना उन्हें प्रभावित करते नहीं देखी गयी। उन्होंने मनुष्यकी भाँति हमारे साथ न्यायोचित ढंगसे लड़ाई की, और लड़नेके समयके बीचवाले विश्रामके वक्त ऐसी उदार नम्रता दिखलायी, जो कि अधिक प्रबुद्ध जातिके ही अनुरूप हो सकती है। हत या आहत शरीरको अपमानित करनेकी तो बात ही क्या, उन्होंने तो उन्हें तबतक वहीं चुपचाप पड़ा रहने दिया, जबतक कि उन्हें वहाँसे उठा नहीं लाया गया। उन्होंने किसी शरीरकी चीजें छीन कर उसे, जैसा कि आमतौरसे होता है, नंगा नहीं किया।···तोपें चल रही थीं, इसी समय एक आदमी दुर्गकी टूटी जगहसे हाथ हिलाते आगे बढ़ता दिखाई पड़ा। तोपें थोड़ी देरके लिए रोक दी गयीं, और वह आदमी हमारे तोपखानेके पास आया। वह एक गोरखा सैनिक था, जिसका निचला जबड़ा गोलेसे चूर हो गया था और वह साफ तौरसे अपने शत्रुसे (चिकित्सा सम्बन्धी) सहायता माँगने आया था। उसे तुरन्त सहायता दी गयी और जब उसे अस्पतालसे छोड़ दिया गया, तो फिर उसने अपनी सेनामें आकर हमसे लड़नेकी इच्छा प्रकट की।"

जिस समय फ्रेजरने यह पंक्तियाँ लिखी थीं, तबतक गोरखा सैनिक अंग्रेजी साम्राज्यके महत्त्वपूर्ण सेनांग नहीं बन पाये थे। इस युद्धने अंग्रेजोंको समझनेका मौका दिया, और उन्होंने हमारे ही रक्तमांस—इन हिमाचलपुत्रोंको हमारी हथकड़ियोंको मजबूत रखनेका साधन बनाया। आज भी हमारी सरकार वीर नेपाली प्रजाके स्वतन्त्रता-संग्राममें उदासीन ही नहीं है, बल्कि नैतिक समर्थन देते हुए रक्तचूषक राणा-शासकोंके साथ हाथ मिलानेमें गौरव मानती है, और अप्रत्यक्षरूपेण साम्राज्यवादकी रक्षाके लिए गोरखा सैनिकोंको भाड़ेपर मलाया तथा ब्रिटेन द्वारा परतन्त्र किये दूसरे देशोंमें खून बहानेके लिए चाकरी करनेका समर्थन कर रही है। हिमाचल भारतका अभिन्न अंग है। गोरखा-वीरताका अभिमान हमारा अपनी जातिका अभिमान है, इसलिए खलंगाके वीरोंका स्मारक हमें अपनी ओरसे नये सिरेसे बनाना होगा। उनका सबसे बड़ा स्मारक तो

हो सकता है—नेपाली जनताका दासताकी कड़ियोंको तोड़कर उसे स्वेच्छापूर्वक भारतसंघमें सम्मिलित होने देना।

(३) बमशाहकी देशभक्ति—कुमाऊँमें भी नेपाली शासकोंकी कर्तव्यपरायणताका प्रमाण मिला। बमशाह चौतरिया[1] पार्टीका था, जब कि केन्द्रमें शासनसूत्र उस समय थापा दलके हाथमें था। बमशाह इससे सन्तुष्ट नहीं था। अंग्रेजोंने चाहा, कि उसे लालच दे बिना लड़े ही कुमाऊँपर अधिकार कर लें, विशेषकर कलंगाकी घटनाने हेस्टिंग्सको सामकी नीति अपनानेके लिए मजबूर किया था। दिल्लीके रेजीडेन्ट मेटकाफने इस कामके लिए बंगाल सिविल सर्विसके ई० गार्डनरको मुरादाबाद बातचीत करनेके लिए भेजा। मुरादाबादसे सम्बन्ध स्थापित करनेमें असफल हो गार्डनर काशीपुर पहुँचा, किन्तु पता लगा, "(बमशाह) नेपालकी भीतरी राजनीतिसे चाहे कितना ही असन्तुष्ट क्यों न हो, वह देशके साथ विश्वासघात नहीं कर सकता। अँग्रेजोंको यह साफ मालूम होने लगा, कि बमशाहसे विश्वासघातकी आशा छोड़ अपने-बलबूतेपर भरोसा रखना चाहिये।"[2]

(४) हर्षदेव जोशीकी वसीयत—एक ओर हम बलभद्र थापा और बमशाह जैसे आदमियोंको देखते हैं, तो दूसरी ओर हर्षदेव जोशीकी वैयक्तिक स्वार्थान्धताका तिकड़म अन्ततक जारी रहते भी देखते हैं। गोरखा-राज्यके स्वागत करनेवालोंमें वह प्रथम थे, किन्तु जब उनकी आशा नहीं पूरी हुई, तो वह अँग्रेजोंकी सहायताके लिए तैयार थे। हर्षदेव भावोंको जाननेके लिए उनकी निम्न-लिखित वसीयत भी मदद कर सकती है[3]—

"तर्जुमा चिट्ठी हिन्दी मोहरे जोशी हर्षदेव वालिदम्के बरबख्त बूदन् बैकुण्ठवासी बअहिलकारान खुद दादा रफ्ता बूदन्द मय-बिरादरान निज्द फिदवी रसीदा अस्त फ़कूत।

"नकल याददाश्त जोशी ज्यूने बरबख्त बैकुण्ठवासी होनेके औलाद अपनेके वास्ते अहवाल हक्की लिखाकर सौंपना अहिलकार अपनोंके किया।

"मर्कूमा अष्टमी सुदी आषाढ़ संवत् १८७२ विक्रमाजीत बमुकाम श्रीगणनाथ संवत् १८७१ आश्विन्य सुदी पडेवाके रोज (१) बहुक्म कम्पनी-बहादुर कैसे मिस्टर विलियम फ्रेजर साहबबहादुरने बीच कनखलके हवेली भागमल खत्रीकीमें दस्तगीरी हमारीकी, वास्ते करने फतेह मुल्क कोहिस्तानके। उस बख्तमें साहब ममदूहने फरमाया : जो कुछ कि मुद्दा, तुम्हारे दिलमें कम्पनीके घरसे वसूल करने वास्ते तुम चाह रखते हो, सो अर्ज करो, (वे) बाद फतेह होनेके वसूल होंगे करके साहबके हुक्म दिये जाने पर (राजा, राजपंचों मुल्क-मुमय्योंको) की और औलाद-अपनीकी बेहतरीके वास्ते तफसील बमूजिब मैंने मुद्दआ अर्ज की सो साहब ममदूहने कबूल की। बाकी मुद्दा हुक्म-कम्पनी ही हमको मुकर्रर (मंजूर) होगा।

"यह कहके हुक्म अपनी तरफसे दिया—

"अव्वल—कि इजूजत तुम्हारी कम्पनीके घरसे मुआफिक राजाओंके मय फर्जन्दान होगी।

"दोयम—हुक्म जर्नैली तुम्हें मिलैगा।

"सोयम्— गढ व कमाऊँ निज तुम्हारी ही (सम्पत्ति) है, इससे सिवाय जो मुल्क कोहिस्तान अमलदखल कम्पनीकेमें आवेगा, उसका बन्दोबस्त मार्फत तुम्हारे होगा।

---

१. चौतरिया पृथिवीनारायणके खान्दानके राजवंशीय कुमार थे, और थापा साधारण जनतामेंसे आये सैनिक, जिनकी ही सहायतासे वस्तुतः पृथिवीनारायणका राज्य स्थापित हुआ था।

२. Atk. Vol. II p. 649.

३. कुमाऊँका इतिहास, पृष्ठ ४३५–३७।

"यह जो हुक्म मिस्टर विलियम फ्रेजर साहबबहादुरके देनेसे हमराह गार्डनर साहबबहादुरके होकर मुल्क कुमाऊँ के तईं जो कुछ खैरख्वाही मुझ ग़रीबसे बनी, सो जहाँ-आलममें रोशन है। बीच अलमोड़ाके नक्कारा फतेहका कम्पनीका बजाय करके उम्र मेरीने वफा न दिया। अब मैं बैकुण्ठवासी होता हूँ। मेरी हक्की हकदार औलाद मेरी मार्फत साहबबहादुरकेसे (और अर्ज करले पास मिस्टर गार्डनर साहबबहादुरकैसे) भी कम्पनीके घरसे वसूल कर ले। मुद्दा यह तमाम इक्कीसोंकी थी, बेहतरी तमाम मुल्ककी और अपनी करके बीच दरे-दौलत कम्पनी अंगरेजबाहादुरकी खैरख्वाहीके तईं मशगूल रहना। अगर इस बातके वास्ते कायमियतकी जाँफिशानी औलाद मेरी न करे (तो) भला नहीं होगा। लेकिन हकदारोंको हक सरकार न पहुँचायेगी, तो अर्ज मेरी औलादकी साहबा लोग न सुनके दुरुस्ती मुआफिक मेरी अर्ज की हुईके न कर देवें, तो मैं दामनगीर आकबतमें हूँगा। और किताब दिखाई, उसमें साहब-ममदूहने लिखा दिखलाया। हकदार कदीमी मेरे तईंको सबका ठहराया बतलाया। अव्वल मुद्दा गद्दीकीमें तकरार भी किया। तफसील मुद्दा हीज़देह (अठारह शर्तोंका विवरण)—

(१) गद्दी राजकुमाऊँकी कायम हो।
(२) मुआफिक बजुर्गान हमारोंके मुआफिक इज्जत उस जगह कायम हो।
(३) जमींदारी बखशी हुई राजाओंकी हमारे तईं, सो हमको मिले।
(४) मिल्कियत ब्राह्मणोंकी बतौर साबिक कायम होवे।
(५) जो कुछ वास्ते देवतोंके रुपया-जमीन जो साबिकसे कायम है, सो बहाल रहे।
(६) बदस्तूर-साबिकके खायकार कुमाऊँके तराईकी गढवालकी कायम रहे।
(७) कानूने कुमाऊँ कि इब्तदायसे ताल्लुक बुजुर्ग हमारेके रहे, सो अब भी कायम रहे।
(८) इन्साफ माफिक धर्मशास्त्रके हो।
(९) बन्दोबस्त गोरखालियोंका बन्द होकर माफिक राजाओंके बन्दोबस्त हो।
(१०) गोवध कभी नहीं हुआ, अब भी न हो।
(११) जल हिन्दू मुसलमानका जुदा-जुदा रह आया है, सो ही अब भी रहे।
(१२) बिछौना हिन्दू-मुसलमानोंका जुदा-जुदा ही रहः है, सो अब भी रहे।
(१३) हुरमत इज्जतदारोंकी मुआफिक आगेके रहे।
(१४) मजहब जो धर्मशास्त्रका चला आया है मुआफिक उसकेमें फर्क न पड़े।
(१५) आदमी पहाड़का गरीबशुदा है, औरतें इस मुल्ककी किसीके बहकावटीसे बदईमान न हों।
(१६) गोरखोंकी बिद्दतसे ब्राह्मण इस मुल्कसे चले गये हैं, सो आबाद हों।
(१७) मकान-देवतोंमें सिवाय कदीमके जानेवालोंके और कोई न जाये।
(१८) बेटा बड़ा हमारा कैद गोरखालीकेमें है, मवाजिश कम्पनीकीसे छूटे।"

हर्षदेव जोशी जैसा आदमी स्वार्थान्ध हो बच्चों-जैसे विश्वासके साथ इतनी बातें करे यह विश्वास करना मुश्किल है। उनके नादान वंशज भले ही ऐसी जाली वसीयतमें इस तरहकी बकवास कर सकते हैं, किन्तु अपनी जन्मभूमि और लोगोंके लिए हर्षदेवके ये भाव बिलकुल नहीं थे, जो कि बमशाहने अपने नेपालके प्रति दिखलाये। कुमाऊँका यह 'अर्ल वारविक' अद्वितीय बुद्धि और प्रभाव रखता था, यह तो अंग्रेजोंने भी स्वीकार किया है। कप्तान हियरसीने १८१४ में ब० फ्रेजरको जोशीका परिचय निम्नलिखित शब्दोंमें दिया था—"यह पुरुष (हमारे लिए) एक पक्का साधन है। इसके नामसे गोरखाली काँपते हैं। कुमाऊँमें इसका सम्बन्ध ६००० पुरुषोंसे है। यह अब ६८ वर्षका है, किन्तु अब भी सक्रिय एवं उत्साहपूर्ण हैं तथा इसकी सभी हड्डियाँ स्वस्थ हैं। सभी पहाड़ी

राजाओंपर—सतलजसे परे भी—इसका प्रभाव है।" फ्रेजरने लिखा था—"यद्यपि दुर्भाग्य तथा दरिद्रताके कारण वह (हर्षदेव) अत्यन्त उदास रहता है, किन्तु अब भी उसका दिमाग सक्रिय, कर्मठ और उद्योगपरायण है।"[1]

अट्किन्सनका विचार था[2]—"हर्षदेव जोशीकी सहायतासे कुमाऊँनी लोग हमारे साथ हुए। उसका प्रभाव अब भी बहुत था और उसने ब्रिटिश सरकारकी योजनामें पूरी तौरसे सहायता की।"

(५) **कुमाऊँके लिए युद्ध (१८१५ ई०)**—कुमाऊँपर अंग्रेजोंने दो तरफसे चढ़ाई की। ९ फरवरी (१८१५) को पहिली सैनिक टुकड़ीने कुमाऊँके लिए प्रस्थान किया। उसका काम था, रुद्रपुर और भमोरी होते भीमतालकी ओर बाराखेरीके किलेपर अधिकार करते रामगढ़ तथा प्यूरामें ले०-कर्नल गार्डनरकी सेनासे—जो ही मुख्य सेना थी—मिल जाना। गार्डनरकी सेना १२ फरवरीको कन्यासी, १३ को चिलकिया, १४ को मसोत बिना किसी बड़े विरोधके पहुँच गयी। आगे अंग्रेजी सेना कोसी-उपत्यकासे अलमोड़ाकी ओर बढ़ी किन्तु गोरखा-सेनासे सीधे भिड़नेकी जगह उसने चौमुहा या चौमुखिया (६३५४ फुट)को जा लिया। गोरखा-सेनाको कमपुर (रानीखेत)से हटानेके लिए गार्डनर २८ फरवरीसे २२ मार्चतक टक्कर मारता रहा—रुहेले अब अंग्रेजोंकी सहायता कर रहे थे। अलमोड़ा और कमपुर (रानीखेत)के बीच सियाहीदेवी (७१८६ फुट) एक बड़े ही सैनिक महत्वका स्थान था, किन्तु उसकी रक्षाका गोरखोंने कोई प्रबन्ध नहीं किया था। अंग्रेजोंने उसे २३ मार्चको ले लिया। गोरखा-सेना अब अलमोड़ातक मुकाबला नहीं कर सकती थी। अलमोड़ासे सात मीलपर अवस्थित, अपने सूर्यमन्दिरके लिए प्रसिद्ध, कटारमलमें लड़ना व्यर्थ समझकर गोरखा-टुकड़ी हट गयी और अलमोड़ासे दो मील नीचे सितोली पहाड़ीपर खड़ी हुई। अट्किन्सनने लिखा है[3]—"यह स्वीकार करना पड़ेगा कि अंग्रेजोंकी सफलताका कारण उनका अपना कौशल और साहस नहीं था, जितना कि शत्रुकी कमजोरी।"

अलमोड़ाके पासतक गोरखोंके इस तरह बिना लड़े पीछे हटनेसे कुमाउँनियोंपर बुरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने गोरखोंका साथ देना हारी बाजी समझा। उधर हर्षदेवका प्रभाव अंग्रेजोंकी ओर काम कर रहा था, इसी समय काली-उपत्यकामें होकर आगे बढ़नेवाली कप्तान हियरसीकी—जिसने **सैनिक तौरपर बहुत निकम्मा बतलाया** था—सेनाके हारने तथा बहादुर कप्तानके बन्दी **गोरखोंको** बननेकी खबर अलमोड़ासे बमशाहने भेजी। हियरसी (हरसे)ने १५०० सेनाके साथ फरवरीके मध्यमें पीलीभीतको छोड़ा था। १३ को उसने पहाड़की जड़में बिलहरीको दखल किया। उसने हर्षदेवकी घोषणाओंको लोगोंमें बाँटा, जिससे कुछ ही दिनोंमें एक सौसे अधिक कुमाऊँनी अंग्रेजी सेनामें भरती हो गये। लेकिन आरम्भिक कुछ सफलताओंके बाद जब बमशाहका भाई हस्तिदल डोटी और अचामकी सहायक सेनाके साथ ३१ मार्चको काली पार हुआ, तो हालत बदल गयी। चम्पावतसे ५ मील उत्तर-पूर्व खिलपातीके पास अंग्रेजी सेनासे मुकाबला हुआ। "हरसेके आदमियोंने गोरखालियोंके आक्रमणको रोकनेका शायद ही कोई प्रयत्न किया। गोरखोंकी विजय जल्द ही और पूर्णरूपेण हुई। कप्तान हरसे घायल होकर बन्दी हुआ।"[4]

---

१. Atk. Vol. II p. 646.

२. Atk. Vol. II p. 654.

३. Atk. Vol. II p. 654. "It must be admitted that the success of the British was brought about more by the weakness of the enemy than by any skill and courage of their own."

४. वही, पृष्ठ १६२।

लेकिन गोरखोंने इस बड़ी विजयका जितना फायदा उठाना चाहिये था, नहीं उठाया। ८ अप्रैल (१८१५) को कर्नल निकल्सन नयी सेना लेकर कटारमल पहुँचा, और उसने सारी सेनाका सञ्चालन अपने हाथमें ले लिया। उधर हस्तिदल भी अलमोड़ा पहुँच गया। २३ अप्रैलको गणनाथके मन्दिरके पास दोनों सेनाओंमें भिड़न्त हुई, जिसमें वीर हस्तिदल मारा गया। ज० ब० फ्रेजरके अनुसार "हस्तिदलकी मृत्युसे शत्रु ने एक अत्यन्त महत्त्वशाली, कर्मठ और साहसी अफसरको खो दिया।··· वह नेपालके राजाका चचा (या मामा) था, उसकी प्रतिभा तथा सद्गुण अपने उच्च-कुलके अनुकूल थे।"[1]

(क) युद्धका गोरखा-वर्णन—युद्धके बारेमें बमशाहने जो पत्र मलौंवके नेपाली सेनानायकको भेजा था, उसमें लिखा था—"२२ अप्रैलको गणनाथके डाँडेपर लड़ाई हुई। नौ सिपाहियोंके साथ हस्तिदल और जयरोखा काजी निहत हुए, दूसरे कितने ही घायल हुए। शत्रुका एक कप्तान और कुछ सिपाही मारे गये। शत्रुकी सेना कटारमलमें थी, जिसकी कुछ टुकड़ियाँ सियाहीदेवी और धामसमें भी थीं। उसके २५०० आदमी फतेहपुर पर्वतपर जमा थे, जिनसे हमारे बागेश्वरके रास्तेको खतरा हो गया था। इसीलिए मैंने अपने भाई हस्तिदलको गणनाथ भेजा था। उसकी और जयरोखाकी मृत्युसे शत्रुका उत्साह बढ़ गया, किन्तु मैंने सेनाको बड़े अच्छे ढंगसे जहाँ तहाँ बैठा रखा है। २५ तारीख मंगलको गोरोंको आगे रखे (देशी) पल्टन तथा आठ हाथियोंपर तोपोंको रखे आक्रमण करनेके लिए **सितौली**की ओर बढ़ी। कप्तान अंगदने मुझे (इसकी) सूचना दी। इसलिए केवल एक **पट्टी** अपनी रक्षाके लिए रख मैंने उसकी सहायताके लिए भवानीबख्शकी कम्पनी भेज दी। और अधिक नहीं भेज सकता था, क्योंकि उससे चारुलेख तथा लालमण्डीमें रंगेलूकी चौकियाँ कमजोर हो जातीं। शत्रुके इजार पत्थरकलोंकी गोलियोंकी बौछार हमारे आदमी बर्दाश्त नहीं कर सके, और उन्होंने अपने मोर्चे छोड़ दिये। नरशाह चौतरियाने गोले-गंठेके साथ दूसरी ओर जाकर पूरा जोर लगाया, किन्तु हमारे एक पत्थरकलेकी जगह उनके बीस हम पर गोली-वर्षा करने लगे। वहाँ ठहरना असम्भव था।

"शत्रुने नगरतक हमारा पीछा किया। मैंने लालमंडी और नन्दादेवीके किलोंको हाथमें रखनेका निश्चय किया। इसी बीच कुछ अफसर तथा डाँडीमें कप्तान अंगद निचले रास्तेसे आये। मैंने ३० आदमियोंको हाथमें तलवार लेकर हमला करनेकी आज्ञा दी। लेकिन शत्रुने दीपचन्दके मन्दिरपर अधिकार कर लिया था, जहाँसे उसने किलेपर निरन्तर गोलाबारी जारी रखी। मैंने भण्डारी काजीको कलमटियापर सैनिक जमा कर रातको मातलदेवीके ऊपरकी हरीडुंगरीपर हमला करनेकी आज्ञा दी। इस आक्रमणसे शत्रुका एक लेफ्टिनेंट और ९८ आदमी मारे गये, हमने भी सूबेदार जबर अधिकारी तथा मस्तराम थापाको खोकर उस स्थानपर अधिकार कर लिया। २० मिनट बाद कर्नल गार्डनर और कर्नल निकल्सनका भाई दूसरे गोरोंके साथ आ पहुँचे। लड़ाई फिर शुरू हुई, जिसमें सरदार रणसूर करकी कुछ जमादार तथा ४५ वीरोंके साथ मारे गये और हमारे बाकी लोगोंमें शायद ही कोई घायल हुए बिना रहा। कर्नल गार्डनर तथा निकल्सनका भाई घायल हुए। मैंने जसमदन थापाके अधीन कुमक भेजनेकी आज्ञा दी। कुछ आदमी भाग गये, दूसरोंमें भी उन्हींके अनुसरण करनेका लक्षण मालूम होने लगा, इसलिए कुमक आगे नहीं बढ़ सकी। सारी रात गोलाबारी होती रही। प्रातःकाल भण्डारीके बचे-खुचे आदमी सितौलीकी ओर हटे और शत्रु किलेकी ओर घूम पड़ा। खाइयोंसे फिर दोनों तरफसे भीषण गोलाबारी शुरू हुई। हमने गोलेके अतिरिक्त पत्थर भी लुढ़काये। रात दिन एक क्षणके लिए भी तोपोंने गोला छोड़ना बन्द नहीं किया, स्त्री-पुरुष-जानवर सभी गोलोंके

1. Atk. Vol. II pp. 665-66.

खतरेमें थे। कप्तान हरसेने हमें बारूदखाने तथा राजाके असबाबको हटा देनेकी सलाह दी। मैंने जवाब दिया, जो कुछ बचाया जा सके वह अच्छा है, और उससे कहा कि युद्ध-विरामके लिए लिखा-पढ़ी करें। इसी बीच मैंने चामू भण्डारीको बुलवाया और परिस्थितिपर विचार किया। हमने सोचा, गोला-बारूदका भारी ढेर हमारे पास जरूर है, किन्तु स्थानीय भरतीके सिपाही बिलकुल बेकार हैं। जिनपर हमें विश्वास था, जब उन्होंने ही गाढ़ पड़नेपर विश्वासघात किया, तो क्या किया जा सकता है? असली गोरखाली ही नमकहलाल सिद्ध हुए और केवल भारदारों (अफसरों) पर ही विश्वास रखा जा सकता है। इसपर मैंने सोचा कि हमें अपने स्वामीकी शक्ति और सम्पत्तिको नष्ट तथा तितर-बितर नहीं करना चाहिये, और गार्डनरको बुलाकर बैठक करनेका निश्चय किया। वर्तमान झगड़ेके कारणोंके बारेमें गार्डनरसे पूछनेपर उसने उत्तर दिया कि बुटवलके तहसीलदारकी हत्याने गवर्नर-जनरलको बहुत रुष्ट कर दिया और इसके लिए उसने बड़ी भारी तैयारी की। उसका ख्याल है कि हमारे साथ मेल-जोल करनेका प्रयत्न बेकार है, यदि कुछ शर्तोंके साथ हमारे मतभेद दूर किये जा सकें तो अच्छा—"कालीपार हट जाओ और एक अधिकारप्राप्त प्रतिनिधि गवर्नर-जेनरलके पास भेजनेके लिए अपनी सरकारको लिखो।" इसीके अनुसार मैंने (नेपाल) लिखा है और बातें ठीकठाक हो रही हैं। अब अंग्रेजों तथा गोरखालियोंके बीच मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो गया है। इसलिए तुम अपनी सेना पश्चिमसे हटा लो। हम कालीके पूर्वी किनारे जा रहे हैं। तुम लड़ाई बन्द कर जनरल अक्टरलोनीके साथ शान्तिकी शर्तें ठीक करो। अपने साथ अपनी सेना तथा सैनिक-सामान ले आओ। फिर हम मिलकर अपनी सरकारको लिखकर गवर्नर-जनरलके पास एक वकील भेज सब बातें ठीक करनेकी सिफारिश करेंगे।"

इस प्रकार (९ फरवरीसे) थोड़ेसे संघर्षके बाद २७ अप्रैल १८१५ को लड़ाई बन्द करनेके पत्रपर गार्डनर, बमशाह, चामू भण्डारी और जसमदनके हस्ताक्षर हो गये। १५ मई १८१५ को मलाँव दुर्गमें नेपाली सेनापति अमरसिंह थापाने अक्टरलोनीके साथ लड़ाई बन्द कर आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार कालीके पश्चिम कुमाऊँ, गढ़वाल, शिमला, काँगड़ातक फैले नेपालका राज्यांश अंग्रेजोंके हाथ चला गया। राजगुरु गजराज मिश्र वकील बनाये गये, जिन्होंने २ दिसम्बर १८१५ को अंग्रेजों साथ सन्धि कर ली। उसके अनुसार प्रायः सारी तराई—कालीसे पश्चिमका पहाड़ी प्रदेश एवं भेची नदीसे पूर्वका पहिले सिक्किमराजाका इलाका—अंग्रेजी सरकारको मिल गया। यह भी स्वीकार किया गया था कि एक ब्रिटिश रेजिडेन्ट काठमांडूमें रहेगा जिसका परिणाम वही होता, जो कि भारतकी दूसरी देशी रियासतोंका हुआ। किन्तु वह नहीं हो सका। फरवरी १८१६ में फिर एक बार झड़प हुई। किन्तु, अन्तमें राजगुरु गजराजके माने समझौतेको स्वीकृत किया गया। १८१७ में व्यांस-परगनेमें कालीके पूर्वके **टिनकर** और **चड्रु** दो गाँवोंपर नेपालके दावेको मान लिया गया, किन्तु कुटी और नामी गाँवोंपर उसे नहीं माना गया, जो तबसे अबतक कुमाऊँके भीतर हैं।

(ख) चीनसे सहायता-याचना—१८१५ तक चीनकी शक्तिका उतना ह्रास नहीं हुआ था। अंग्रेजोंके प्रहारसे संत्रस्त राजा-नेपालने उस समय चीन सम्राट्के पास निम्नलिखित आवेदनपत्र भेजा था—

"मैं चीन सम्राट्के अधीन हूँ। मेरे राज्यपर आक्रमण करनेका कोई साहस नहीं कर सकता। जब किसीने मेरे राज्यमें घुसनेकी कोशिश की, तो आपकी दया और संरक्षणसे मैं उसे दुर्गत करके भगानेमें सफल हुआ। लेकिन अबके एक शक्तिशाली भयंकर शत्रुने मुझपर आक्रमण किया है। मैं आपके अधीन हूँ और आपकी रक्षा और सहायताका भरोसा रखता हूँ। कंकासे सतलजतक सौ कोसमें हमारे

बीच युद्ध हो रहा है। भोट (तिब्बत) ले लेनेके मंसूबेसे वह नेपालको ले लेना चाहता है, इसीलिए झगड़ा खड़ा करके उसने युद्ध घोषित कर दिया। पाँच या सात बड़े-बड़े युद्ध हो चुके हैं, किन्तु सौभाग्य तथा महामान्य सम्राट्की महिमासे २०,००० शत्रुओंको नष्ट करनेमें सफल हुआ हूँ। किन्तु शत्रुके पास सम्पत्ति और साधन बड़े हैं। उसने एक कदम भी पीछे हटे बिना सारे नुकसान सह लिये हैं बल्कि बहुत-सी कुमक लगातार पहुँच रही है तथा उसने सभी ओरसे मेरे देशपर आक्रमण कर रखा है। यद्यपि मैं पहाड़ और मैदानसे एक लाख सैनिक प्राप्त कर सकता हूँ, किन्तु वेतन दिये बिना उन्हें रख नहीं सकता। वेतन देनेकी पूरी इच्छा रखता हूँ, किन्तु वैसा करनेके लिए मेरे पास साधन नहीं है। बिना सिपाहियोंके मैं शत्रुओंको भगा नहीं सकता। गोरखालियोंको अपना करद समझिये, सोचिये कि अंग्रेज नेपाल और भोटको जीतना चाहते हैं। इन कारणोंसे, इतने रुपयोंसे मदद कीजिये कि हम सेना भरती कर आक्रमणकारियोंको भगा सकें। यदि आप रुपयेकी सहायता नहीं देना चाहते और हमारी सहायताके लिए सेना भेजना पसन्द करते हैं, तो यह भी अच्छा है। **दरमा**का जलवायु अच्छा है। आप दरमाके रास्ते आसानीसे दो-तीन लाख सेना बंगाल भेजकर कलकत्तातक अंग्रेजोंके भीतर भय और भगदड़ पैदा कर सकते हैं। शत्रुने मैदानके सभी राजाओंको अपने अधीन कर लिया है, और दिल्लीके बादशाह-के तख्तको भी हड़प लिया है। अतएव ऐसी आशा है कि वे सभी गोरोंको भारतसे निकाल बाहर करनेके लिए एक हो जायँगे। इस बातमें आपका नाम सारे जम्बूद्वीपमें प्रसिद्ध हो जायगा और आपकी जहाँ भी आज्ञा होगी, यहाँके निवासी सेवाके लिए तैयार मिलेंगे। यदि आप समझते हैं कि नेपालपर विजय और गोरखालियोंका चीन सम्राट्की छत्रच्छायासे जबर्दस्ती अलग किया जाना परममट्टारकके स्वार्थोंको कोई खास हानि नहीं पहुँचायेगा, तो मैं आपको यह सोचनेके लिए प्रार्थना करता हूँ कि बिना आपकी सहायताके मैं अंग्रेजोंको भगा नहीं सकता, और यह वही लोग हैं, जो हमारे भारतको जीत चुके हैं, और दिल्लीके तख्तको हड़प चुके हैं, और यह कि अपनी सेना और साधनोंसे उनके विरुद्ध मैं कोई सफलता प्राप्त नहीं कर सकता, और आगे दुनिया कहेगी कि चीन-सम्राट्ने अपने अधीन तथा करद (राजा)को उसके भाग्यपर छोड़ दिया। मैं संसारके दूसरे सारे सत्ताधारियोंके ऊपर चीन-सम्राट्को स्वीकार करता हूँ। अंग्रेज नेपालपर अधिकार कर बदरीनाथ, मानसरोवर तथा दिगरचा (शिगर्चे) के रास्ते ल्हासा जीतनेके लिए आगे बढ़ेंगे। इसलिए प्रार्थना करता हूँ कि आप अंग्रेजोंको लिखकर कहें कि वे आपके अधीन तथा करद गोरखा-राज्यकी भूमिसे अपनी सेनाओंको हटा लें, अन्यथा आप हमारी सहायताके लिए सेना भेजेंगे। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि पैसे या सेनाके रूपमें सहायता भेजनेमें देर न करें, जिससे कि मैं शत्रुको हटाकर पहाड़ोंपर अधिकार रख सकूँ नहीं तो कुछ ही वर्षोंमें वह ल्हासाका भी स्वामी बन जायगा।"

लेकिन चीनमें तो १८१३ से ही भयंकर गृहकलह आरम्भ हो गया था, देवपुत्र परममट्टारक मदद नेपालकी कहाँसे करते?

अंग्रेजी-शासन—

१. अंग्रेज शासक—२७ अप्रैल १८१५ को कुमाऊँपर अंग्रेजोंका शासन स्थापित हो जानेपर ई० गार्डनरने कार्यभार सँभाला। उस समय भी ट्रेल उसका मुख्य-सहायक था, जो छ महीने बाद ही गार्डनरकी जगह कमिश्नर बना दिया गया। १३ अक्तूबर १८९१ तक कुमाऊँ कमिश्नरी-में कुमाऊँ, गढ़वाल और तराईके तीन जिले शामिल थे, जब कि तराई और कुमाऊँको अलमोड़ा और नैनीतालके दो जिलोंमें बाँट दिया गया। तनकपुर-भाबर या तल्लादेश तब भी अलमोड़ा जिलेमें

रहा, जिसे २८ अक्तूबर १८९६ में नैनीताल जिलेको दे दिया गया। इसके बाद अलमोड़ा केवल पहाड़ोंका जिला रह गया। १८१५ से कुमाऊँके निम्नलिखित कमिश्नर हुए—

१. ई० गार्डनर	१८१५ ई० (प्रायः ६ मास)	११. ड० ट० राबर्ट्स	
२. ग० ब० ट्रेल	१ अगस्त १८१५–३६	१२. डेविस	
३. कर्नल गोवन	१८३६–३९	१३. ग्रेसी	
४. लशिंगटन	१८३९–४८	१४. सर जान कैम्पबेल	
५. बैटन	१८४८–५६	१५. विन्डम	१९१३–२४
६. हेनरी रामजे	१८५६–८४	१६. स्टाइफ	१९२४–३१
७. फिशर	१८८४–८५	१७. स्टब्स	१९३१···
८. रॉस	१८८५···	१८. ओयन	
९. कर्नल ग्रिग		१९. ईबटसन्	
१०. कर्नल अर्सकिन्			

गार्डनर कुछ महीने कुमाऊँमें रहा, किन्तु उस समय भी शासनका अधिक भार सहायक कमिश्नर ट्रेलके ऊपर था। गार्डनरके जानेपर पूरे बीस साल (१८३६) तक कुमाऊँपर ट्रेलका शासन था। तीन कमिश्नरोंके बाद फिर सर हेनरी रामजे २८ वर्षोंतक (१८५६–८४) कुमाऊँका सर्वेसर्वा रहा। रामजेको कुमाऊँका राजा कहा जाता था—बिरले ही कुमाऊँके राजाओंने इतने वर्षोंतक शासन किया होगा।

(१) ट्रेलशासनमें दासता—गार्डनरके समय ही २ जून १८१५ को लड़कोंके (दास) विक्रय पर ली जानेवाली चुंगी उठा दी गयी और उनका क्रय-विक्रय बन्द कर दिया गया, किन्तु १८४० तक भूमिके साथ या बिना हलिया (हलवाहा) सपरिवार बेचा जा सकता था। हाँ, गोरखा-शासनके उठते ही हरकी पौड़ी (हरद्वार) पर लगनेवाला दासोंका बाजार सूना हो गया। १८३७ में कमिश्नर गोवनने अपनी रिपोर्टमें लिखा था[1]—

"कुमाऊँमें दासता आनुवंशिक मालूम होती है। यहाँ दो प्रकारके दास हैं—(१) घरू दास जो खसिया राजपूत होते हैं, और (२) कृषिदास (हलवाहे) जो डोम (शिल्पकार) होते हैं। जान पड़ता है, यह प्रथा अत्यन्त प्राचीन कालसे चली आयी है। दास अपने भोजन, वस्त्र, घर और विवाह-व्ययमें अपने स्वामियोंपर निर्भर हैं। खेती करनेके लिए ऐसे व्यक्तियोंका क्रय अथवा अस्थायी तौरसे काममें लगाना, एवं वेश्यावृत्तिके लिए स्त्रियोंका क्रय अब भी विद्यमान है, और इसे कभी (कानूनन्) निषिद्ध नहीं ठहराया गया। यह काम बिक्रीनामा लिखकर किया जाता है। (अंग्रेजी) न्यायालय मातापिता द्वारा बेचे गये व्यक्तियोंतक ही दासताको स्वीकार करता है। दासता और मुक्तताका दावा (न्यायालयों-में) दूसरे मुकदमोंकी भाँति ही सुना जाता है।"

मिस्टर ट्रेलके शासनमें (कुछ) अच्छी बातोंके साथ काला धब्बा भी था। सन् १८२९ में सतीप्रथाके निषेधके बाद दासताके प्रथम रूपको भारतमें निषिद्ध कर दिया गया, किन्तु उसका छींटा ट्रेल-शासित भूभागपर नहीं पड़ने पाया।

(२) गुमानी कविका कुमाऊँ—कवि **गुमानी पन्त**की गोरखा-शासन सम्बन्धी कविता हम उद्धृत कर चुके हैं। उनका जन्म काशीपुरमें हुआ था। उन्होंने गोरखाली तथा अंग्रेजी दोनों राज्य देखे थे। तत्कालीन काशीपुरके बारेमें उन्होंने लिखा था—

१. Atk. Vol. III. p. 513.

"कथावाले सस्ते फिरत धर पोथी बगलमें,
लई थैली-गोली घर-घर हकीमी सब करैं।
रंगीला-सा पत्रा कर धरत जोशी सब बने,
अजब देखा काशीपुर शहर सारे जगतमें ॥१॥
जहाँ पूरी गरमागरम तरकारी चटपटी,
दही-बूरा दोने भर-भर भले ब्राह्मण छकैं।
छ है न्योतेवारे सुनकर अठारे बढ़ गये,
अजब देखा काशीपुर शहर सारे जगतमें ॥२॥
जहाँ ढेला नदी ढिग रहत मेला दिन छिने,
जहाँ पट्टी पातुर झलकत परी-सी महलमें।
तले ठोकर खाते फिरत सब गबरू गलिनमें,
अजब देखा काशीपुर शहर सारे जगतमें ॥३॥
कदी जसपुर पट्टी फिरकर कदी तो चिलकिया,
कदी घरमें सोते भर नयन भोरे उठ चले।
सभी टट्टू लादे बनज रुजगारी सब चले,
अजब देखा काशीपुर शहर सारे जगतमें ॥४॥
यहाँ ढेला नदी उत बहत गंगा निकटमें,
यहाँ भोला भोटेश्वर रहत विश्वेश्वर वहाँ।
यहाँ सण्डे दण्ड कर धर फिरें साँड़ उतही,
फरक क्या है काशीपुर[1] शहर काशी नगरमें ॥५॥"

गंगोलीके सम्बन्धमें गुमानीने लिखा था—

"कैला, निम्बू, अखोड़, दाड़िम, रिखू नारिंग आदो दही,
खासो भात जमालिको कल्कको भूना गडेरी गवा।
च्यूड़ा सद्य उत्योल दूध बाकलो घ्यू गायको दाणेदार,
खाँनी सुन्दर मौणियाँ घबड़वा गंगावली रौणियाँ ॥···
बने बने काफल किल्मड़ो छ, बाटा मणी दाड़िम काकड़ो छ।
गोठनमें गोरू लैण बाखड़ो छ, थातिमें है उत्तम उप्रड़ो छ।"

गुमानीकी निम्न कवितासे पता लगता है, अंग्रेज-नवाबोंने अलमोड़ाके मन्दिरों और महलोंकी कैसी गति बनायी थी—

"बिस्नुका देवल उखाड़ा, ऊपर बंगला बना खरा।
महाराजका महल ढवाया, बेड़ीखाना तहाँ धरा।
मल्ले महल उड़ाई नन्दा, बंगलोंसे भी तहाँ भरा।
अंग्रेजों ने अलमोड़ा[2]का नकशा और हि और करा॥

---

१. राजा बाजबहादुरके अधिकारी काशीनाथ अधिकारीने १६३९ ई० में काशीपुरको अपने नामसे बसाया था।

२. कटारमलके सूर्यमन्दिरमें बर्तन साफ करनेके लिए यहाँके लोग अलमोड़ा (भिल्मोड़ा) नामकी घासको ले जाया करते थे, जिससे उनका नाम अलमोड़िया और उनके गाँवका नाम अलमोड़ा पड़ गया।

गुमानी ऋणग्रस्त हो अर्थसंकटमें पड़े थे। उन्होंने कमिश्नर लसिंगटन (१८३९-४८) को निम्नलिखित प्रार्थना बनाकर हवालबागमें सुनायी थी—

"हुनरगाह कीना न विरसा महीना, न दौलत महीना तलबै ना न घर बर।
लगी कर्जदारी यही मर्ज भारी हरो अर्ज सारी सुनो बन्दा-परवर।
मुझे खूब रोजी इनायत करो जी खुशीसे लसिंगटन कमिश्नर बहादुर।
बड़े आप दानी करे दुआबानी हमेशा **गुमानी** खड़ा होय हाजिर॥"

(३) हेनरी रामजे (१८५६-८४)—यह लार्ड डलहौसीका चचेरा भाई तथा स्काटलैंडका निवासी था। १८३७ में सातवीं पैदल-सेनामें एक छोटा अफसर (Ensign) के तौरपर अलमोड़ा आया। यहीं कमिश्नर लसिंगटनकी कन्यासे ब्याह किया। २८ अगस्त १८४० में सहायक कमिश्नर फिलिपके मरनेपर उसकी जगह नियुक्त हुआ। सोलह वर्षतक सहायक-कमिश्नर रहकर फिर २८ वर्ष तक कमिश्नर रहा, फिर उसे क्यों न 'कुमाऊँका राजा' कहा जाय। **श्री बदरीदत्त पाण्डेने** उसके बारेमें लिखा है—"रामजे साहबको अभीतक कुमाऊँका बच्चा-बच्चा जानता है। वह यहाँके लोगोंसे हिलमिल गये थे, घर-घरकी बात जानते थे, पहाड़ी बोली भी बोलते थे। किसानोंके घरकी मँडुवेकी रोटी भी खा लेते थे और सबकी बातें सुन लेते थे, पर करते थे अपने मनकी।··· रामजे साहबने ठौर-ठौर नहरें बनवायीं, नगर बसाये तथा भाबरमें खेतीका विस्तार बढ़ाया। भाबरके शासक, इंजीनियर, जंगलात-अफसर तथा विश्वकर्मा या निर्माता वह स्वयं थे।"[1]

(४) सन् सत्तावन—१८५७ के स्वतन्त्रता-युद्धकी आग पहाड़के भीतर नहीं पहुँचने पायी, यह भी रामजेकी बुद्धिमत्ताका प्रमाण बतलाया जाता है। उस समयके कुमाऊँकी अवस्थाके बारेमें पाण्डेयजीने लिखा है—"जब गदरकी खबर फैली तो रामजे साहब गढ़वालके बर्फिस्तानमें थे। वह अलमोड़ा आये और फिर नैनीताल गये। पहली जूनको भगोड़े शरणागत बरेलीसे हलद्वानी आये। मुरादाबादके कुछ लोग कालाढुंगी पहुँचे। ६ जूनसे देशका यातायात बन्द हो गया। जुलाईमें पहाड़-पहाड़से मसूरीके साथ डाकका प्रबन्ध हुआ। कोटा, भाबर और तराईमें लूटपाट हुई। रामजे केवल हलद्वानीको बचा सके। १७ सितम्बर (१८५७) को एक हजार विद्रोहियोंने हलद्वानीपर अधिकार कर लिया, किन्तु १८ तारीखको उन्हें हटना पड़ा। १६ अक्तूबरको फिर हलद्वानी उनके हाथमें चला गया और अंग्रेज मुश्किलसे उसपर फिर अधिकार कर पाये। पहाड़में विद्रोह अधिक नहीं फैल सका।···जहाँ किसीने कुछ किया, तो उसकी चानमारी हो गयी, इससे कुछ होने नहीं पाया।"

२. राष्ट्रीयताकी लहर—सन् सत्तावनकी हलचलसे अप्रभावित पाव सदीतक यह पर्वत राजनीतिकी दृष्टिसे ठण्डा ही पड़ा रहा। अंग्रेजों तथा उनके धनी अनुचरोंके लिए अलमोड़ा, रानीखेत, नैनीताल ग्रीष्मनिवास बन गये, जहाँ खर्च होनेवाले अपार धनका कुछ छींटा पहाड़वालोंपर भी पड़ा। यहाँके ऊपरी वर्गके लोगों तथा शिक्षितोंको रोजगार मिला। शिक्षा और बढ़ी, और जीवन-संघर्ष भी। 'अल्बर्टबिल' बनने लगा, जिसमें गोरे अपराधीके मुकदमेको काले हाकिम द्वारा सुने जानेकी बात थी। गोरे इसका विरोध कर रहे थे। इस बिल (विधेयक) के समर्थनमें देशमें सभाएँ हो रही थीं। ऐसी एक सभा अलमोड़ामें भी पण्डित बुद्धिवल्लभ पन्तके सभापतित्वमें हुई। कूर्मांचलका कांग्रेससे १९१२ से पहिले कोई सम्बन्ध नहीं था। इस साल प्रयागमें सभा हुई, जिसमें कुमाऊँके प्रतिनिधि शामिल हुए। १९१६ में कुछ शिक्षित भद्रपुरुषोंने मिलकर कुमाऊँ-परिषद स्थापित की,

---

१. "कुमाऊँका इतिहास" पृ० ४५३।

जिनमें भारतके आजके गृहमन्त्री पण्डित गोविन्दवल्लभ पन्त भी थे। १९२६ ई० में यह परिषद् कांग्रेसमें मिला दी गयी, जिससे पता लगता है कि असहयोग आन्दोलन पहाड़की सर्दी हटानेमें सफल हुआ। १९२१–२२ में हजारों कुमाऊँनी भी स्वराज्यके लिए जेल गये। इसी समय (१९२१) में "बागेश्वरमें पतितपावनी सरयूके तटपर ४० हजार कूर्मांचली वीरोंने" कुली-प्रथा उठा देनेकी प्रतिज्ञा ली। आगे तो राष्ट्रीय आन्दोलनमें कूर्मांचल किसीसे पीछे नहीं रहा।

३. शासन विभाग—अलमोड़ा जिलेका शासक डिप्टी कमिश्नर (जिलाधीश) होता है। जिलेमें चार तहसीलें हैं जिनके अधिकारी तहसीलदार होते हैं। जिलेकी चारों तहसीलोंमें ११ पर्गने, १०६ पट्टियाँ और ५०६६ गाँव हैं।

तहसीलों और पर्गनोंके नाम निम्नप्रकार हैं—

तहसील	पर्गना[1]	तहसील	पर्गना
१. अलमोड़ा	दानपुर		जोहार
	बारामण्डल		दरमा
२. चम्पावत	काली-कुमाऊँ		शोर
	गङ्गोली		सीरा
३. पिठौरागढ़	अस्कोट	४. रानीखेत	पाली-पछाँव
			फल्दाकोट

पर्गनोंकी पट्टियाँ निम्नप्रकार हैं–

पर्गना	पट्टियाँ	पर्गना	पट्टियाँ
१. अस्कोट	१. अस्कोट तल्ला	३. गंगोली	१८. (१) अठगाँव पल्ला
	२. ,, मल्ला		१९. (२) अठगाँव वल्ला
२. काली-कुमाऊँ	३. (१) अस्सी		२०. (३) बड़ाँव तल्ला
	४. (२) खिलपतिफाट		२१. (४) ,, मल्ला
	५. (३) गंगोली		२२. (५) बेल
	६. (४) गुमदेश		२३. (६) भेरङ्
	७. (५) चालसी		२४. (७) पुंगराङ्
	८. (६) चार-आल तल्ला		२५. (८) रँगोड़
	९. (७) ,, मल्ला	४. जोहार	२६. (१) गोरीफाट
	१०. (८) देश तल्ला		२७. (२) जोहार तल्ला
	११. (९) पालबिलौन तल्ला		२८. (३) जोहार मल्ला
	१२. (१०) ,, मल्ला	५. दरमा	२९. (१) चौदंस
	१३. (११) फड़का		३०. (२) दरमा तल्ला
	१४. (१२) रौं तल्ली		३१. (३) ,, मल्ला
	१५. (१३) रेगड़्		३२. (४) ब्यांस
	१६. (१४) सिपटी	६. दानपुर	३३. (१) कत्यूर तल्ला
	१७. (१५) सुई-विसुंग		३४. (२) ,, बिचल्ला

१. बारहवाँ चौगरखा पर्गना १४ मार्च १९१३में तोड़कर बारामण्डल और गंगोलीमें मिला दिया गया।

परगना	पट्टियाँ	परगना	पट्टियाँ
	३५. (३) ,, मल्ला		७१. (२) कमस्यार पल्ला
	३६. (४) दानपुर तल्ला		७२. (३) कमस्यार वल्ला
	३७. (५) ,, बिचल्ला		७३. (४) खरही
	३८. (६) ,, मल्ला		७४. (५) खासपरजा
	३९. (७) दुग		७५. (६) तिखून तल्ला
	४०. (८) नाकुरी		७६. (७) ,, मल्ला
७. पाली-पछाँव	४१. (१) अठागुली पल्ला		७७. (८) दारुण
	४२. (२) ,, वल्ला		७८. (९) डोलफाट
	४३. (३) कक्कासौं तल्ला		७९. (१०) बिसौद
	४४. (४) ,, मल्ला		८०. (११) बोरारो पल्ला
	४५. (५) कालीगढ़		८१. (१२) ,, वल्ला
	४६. (६) कैरारो		८२. (१३) महरिउरी
	४७. (७) गिंवाड़ तल्ला		८३. (१४) रीठागढ़
	४८. (८) ,, पल्ला		८४. (१५) लखनपुर तल्ला
	४९. (९) ,, वल्ला		८५. (१६) ,, मल्ला
	५०. (१०) चौकोट तल्ला		८६. (१७) सालम तल्ला
	५१. (११) ,, बिचल्ला		८७. (१८) ,, मल्ला
	५२. (१२) ,, मल्ला		८८. (१९) स्युनरात तल्ला
	५३. (१३) दोरा तल्ला		८९. (२०) ,, मल्ला
	५४. (१४) ,, बिचल्ला	१०. शोर	९०. (१) खड्रायत
	५५. (१५) ,, मल्ला		९१. (२) खरकदेश
	५६. (१६) द्वारस्यूँ		९२. (३) नया देश
	५७. (१७) नया पल्ला		९३. (४) महर
	५८. (१८) ,, वल्ला		९४. (५) रावल
	५९. (१९) रिउनी		९५. (६) बल्दिया तल्ला
	६०. (२०) सल्ट तल्ला		९६. (७) ,, बिचल्ला
	६१. (२१) ,, पल्ला		९७. (८) ,, मल्ला
	६२. (२२) ,, मल्ला		९८. (९) सेटी तल्ली
	६३. (२३) ,, वल्ला		९९. (१०) ,, मल्ली
	६४. (२४) सिलोर तल्ला		१००. (११) सौन
	६५. (२५) सिलोर मल्ला	११. सीरा	१०१. (१) आठबीसी तल्ली
८. फल्दाकोट	६६. (१) कंडार खुवा		१०२. (२) ,, मल्ली
	६७. (२) चौगाँव		१०३. (३) हिंडीहाट
	६८. (३) धुराफाट		१०४. (४) बाराबीसी
	६९. (४) डोटी मल्ली		१०५. (५) माली
९. बारामण्डल	७०. (१) उच्यूर		

गणराज्य—

१५ अगस्त १९४७ को भारतको तीन टुकड़ोंमें बाँट, दोको पाकिस्तान और एकको भारतको देकर अंग्रेज हमारे देशको छोड़ गये। देशपर तबसे अपना शासन आरम्भ हुआ। २६ जनवरी १९५० को भारत गणराज्य घोषित किया गया, किन्तु है वह अब भी ब्रिटिश साम्राज्यका एक भाग; इसके लिए अंग्रेज यदि नेहरूजीके कृतज्ञ हैं, तो उचित ही है। कुमाऊँ उसी ब्रिटिश साम्राज्यके अन्तर्गत भारतका एक अंग है। आज एक कुमाऊँनी और वीर सेनापति पुरुषोत्तम पन्तके वंशज (पण्डित गोविन्दवल्लभ पन्त) भारतके गृहमन्त्री हैं। किन्तु चूजा तो अब भी अण्डेकी खोलमें बन्द है—खोल जीर्ण-शीर्ण है, यही एक आशाकी झलक है।

अध्याय 3

भोटान्त

१. भोटान्त प्रदेश—अलमोड़ामें और गढ़वालमें 'भोट' नामसे विख्यात प्रदेशको तिब्बत (भोट) नहीं समझना चाहिये। यहाँके लोग तिब्बतको हूण देश और यहाँके रहनेवालोंको 'हुनिया' कहते हैं। छठी सदीसे हूण नामकी ख्याति हमारे देशमें रही। जान पड़ता है, सातवीं सदीमें जब तिब्बती लोगोंका विस्तार मानसरोवर और इधरके प्रदेशमें हुआ, तो किसी समानताके कारण लोगोंने तिब्बतवालोंको हूण नाम दे दिया। अस्कोट (काली नदी) से कपकोटको यदि एक रेखासे मिला दिया जाय, तो कुमाऊँका इसके उत्तरवाला भाग भोटप्रदेश है। यह सारा प्रदेश १०,००० फुटसे अधिक ऊँचाईपर अवस्थित है। इसके उत्तरमें भारत गणराज्यकी सीमा चीन गणराज्यसे मिलती है, जो कि एकाध ही जगह १८,००० फुटसे कम ऊँची है। अलमोड़ा जिलेके क्षेत्रफल (५४१९ वर्गमील) का एक-तिहाई होनेपर भी इसकी जनसंख्या (१९३१ में ५८,३३०), २७,३६६ (१९२१ में) ५ प्रति-वर्गमील थी, अर्थात् जिलेका ३० वाँ भाग। अक्तूबरसे अप्रैलतक यहाँकी भूमि बर्फसे ढँकी रहती है। यद्यपि अप्रैलसे बर्फ पिघलने लगती है, किन्तु वह जूनमें ही जाकर पूरी तौरसे विलुप्त होती है। मईसे सितम्बरके बीचमें ही यहाँ वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा (!) और शरद सभी बीत जाते हैं। वर्षा तो मिलममें प्रतिवर्ष ५ इंच बहुत समझी जाती है। गर्मियोंमें भी यहाँ तापमान ४०° और ५०° के बीच रहता है।

इस प्रदेशमें सरस्वती, पश्चिमी धौली, गोरी, पूर्वी धौली और ब्यांस नदियाँ बहती हैं। इनमें पहिली दोनोंकी उपत्यकाएँ गढ़वालके माणा तथा नीतीके भोटान्तियोंकी हैं। यह भूमि बहुत-कुछ वृक्ष-वनस्पतिहीन ध्रुवकक्षीय भूभाग-सी मालूम होती है। दक्षिणकी हिमालयश्रेणियोंके कारण वर्षा यहाँ नाम-मात्र हो पाती है, इसीलिए सारे प्रदेशमें केवल ८००० एकड़ खेती—और वह भी एक-फसली हो, तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं। 'भोट' प्रदेशकी पाँचों उपत्यकाओंकी बस्तियाँ निम्नलिखित ऊँचाइयोंपर बसी हुई हैं—

	विभाग	ऊँचाई (फुट)		विभाग	ऊँचाई (फुट)
गरब्याङ्	ब्यांस	१०,३२०	मिलम	जोहार	११,७०६
कुटी	,,	१२,३३०	ल्वान	,,	१९,०००
बुङ्-नाल	दरमा	११,६५०	मरतोली	,,	११,०७०
गो	,,	११,०००	माणा	गढ़वाल	१०,५६०
			नीती	,,	११,४६४

ल्वान दुनियाकी सबसे ऊँचाईपर बसी मानव बस्ती है। हिमानियोंके निपातका भी यहाँ बड़ा भय रहता है, यद्यपि सदियोंके तजर्बेसे बस्तियाँ उनके रास्तेसे हटकर बसी हैं।

हो सकता है, यदि तिब्बतके साथ व्यापार अधिक लाभदायक न होता, तो यहाँके लोग और भी खेती करते। खेतीमें यहाँ हलकी जगह हकवौ (एक प्रकारकी पतली कुदाल) का उपयोग होता है। हलमें तो कहीं-कहीं जीवू, बैल या चमरकी जगह आदमी जोता जाता है। उपत्यकाओंके चौड़ी

होनेके कारण सीढ़ीदार खेतोंसे अधिक मैदान जैसे चौड़े खेत अधिक दिखाई पड़ते हैं, जिनको नदीके कूलोंके पानीसे फसलको बराबर सींचते रहनेकी आवश्यकता पड़ती है। बहुधा खेतोंकी बोआई जूनमें समाप्त होती है, फिर फसलके बढ़ने और पकनेके लिए मुश्किलसे चार मास रह जाते हैं। चुआ (Amaranthus), नंगा जौ या उआजौ (Hordeum himalayansa), हिमालयीय नफलगेहूँ, ओगला (कुटू), फाफड़ (मे), हरी छोटी मटर, सरसों और बकला फसलके अन्न हैं। चुआ एकड़में २० बोझतक हो जाता है। फाफड़ बीजसे तीस-चालीस गुना होता है। सितम्बरके मध्यमें फसल तैयार होती है, हँसियाका काम रिंगल (नँ॰) की दो फट्टियों रिमत्थ या सरयाथासे लिया जाता है, और जौ-गेहूँकी बालेंभर कुपुटकर पीठपर लटकते डोकेमें डाल दी जाती हैं। अभ्यस्त स्त्रियाँ बहुत फुरतीसे बाललुनाई करती हैं। दँवरीकी जगह दबला (क्रिकेटके बैट जैसे काष्ठखण्ड) से पीटकर अन्न निकाल लिया जाता है। जल्दी ही जाड़ा आनेके कारण लोगोंको नीचेकी ओर भागना पड़ता है, इसीलिए भुस या डण्ठल जमा करना बेकार समझा जाता है।

१०,००० से १२,००० फुटपर हिमालयकी घाससे आच्छादित चरभूमियाँ हैं, जहाँ अप्रैलसे सितम्बरतक भेड़ बकरियोंके लिए रामराज्य हो जाता है। यह घास (फिचीं) बहुत ही पुष्टिकारक होती है। चन्द ही दिनोंके चरनेमें जाड़ोंकी भूखी-दुबली भेड़-बकरियाँ मोटी-ताजी हो जाती हैं। मिलमवालोंके ढकुरी और रोकङ्-साईकी चरभूमियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं।

२. व्यवसाय—भोटान्तिक लोगोंकी जीविका व्यापार और पशु-पालन है, खेती तो वह यों ही कुछ कर लेते हैं। मौसिम और तापमानके परिवर्तनके साथ मिलम, मरतोली, बुरफू, गो, गरब्याङ्, कुती और नवीके लोग अपने परिवारके साथ नीचेके स्थानों—तेजम्, घरछूला, सोल्ला, थाल, गलन्ती, नीगलपानी, अस्कोट आदिमें उतर आते हैं, जहाँ उनका परिवार नवम्बरसे अप्रैलतक रहता है। इस प्रकार सिक्किमके (लाछेन्, लाछुङ्) से लेकर यहाँके भोटान्तिक प्रदेशतकके लोगोंको अपने गरमी और जाड़ोंके दो दो मकान बनवाने पड़ते हैं—नेलङ् (टेहरी) वालोंके घर तो तीन-तीन हैं। व्यापारके लिए भोटान्तिक लोग दो बार तिब्बत और दो बार नीचे (मैदान) की यात्रा करते हैं, जैसे—

अप्रैल-मई	ऊपरकी ओर व्यापारियोंकी पहली यात्रा
मई-जून	,, दूसरी यात्रा
(जून-जुलाई	उनके कमकर-असामी-भिखमंगोंकी ऊपर यात्रा)
मध्य-सितम्बर	नीचेकी ओर प्रथम यात्रा
अक्तूबर	सपरिवार अवतरण

जाड़ेके समय नीचे उतर आनेसे भोटान्तके मनुष्य और पशु हिम ऋतुके कष्टसे ही नहीं बच जाते, बल्कि वह इसी समय जौलजीबी (मार्गशीर्ष, नवम्बर), बागेश्वर (मकरसंक्रान्ति १४ जनवरी), और थाल (मध्य-अप्रैल) के मेलोंमें अपने तिब्बतसे लाये मालको बेंचते हैं।

३. प्रवास-निवास—(१) जोहार—

	हेमन्त निवास	उपत्यका नाम
१. मिलम (६०० परिवार)	तेजम्, भैंसकोट, तिमतिया, भैंसखाल, अनारकोट, क्वीती, रिथवगार, डोटीला, कनोली, धनयार, ढोलढ़ङ्गा	रामगंगा (पूर्वी), जोकुला सरजू, महारगर
२. पाछू (४० परिवार)	सुंगरही, धूरा, बरागर,	पँगराँव पर्वत
३. गंधार (३८)	थाल	रामगंगा (पूर्वी)

	हेमन्त निवास	उपत्यका नाम
४. बिल्जू (४)	डोटी, मुसरिया, चौंसाला	पँगराव
५. बुरफू (१००)	कोलिया, बसोरा, मवानी, मकुंडा, बनोरी झलोरी, पटैट	रामगंगा (पूर्वी), गोरी महारगर
६. माया (१५)	पोलिया	भुजगर
७. ल्वान (२०)	भनारी गाँव	जोंकुला
८. मरतोली (२००)	वल्क, मनारीगाँव, अमथन देवीवगाड, शिलावगाड	रामगंगा (पूर्वी), सरज
९. तोला (६००)	भैंसकोटी, गुलार, गागरपानी, घोरी-बगाड, फरसोली चुरियाँधार	भुजगर, गोरी
१०. सुमत् (४)		
११. खेलन्लच (८)	बरौन	पट्टी चौकोरी
१२. रीलकोट (८)	बैकुरी, किरई, सलिङ्	सरजू
१३. रालम (२०)		
१४. लस्पा (४०)	रवनी, पोखरी, लुमती	कम्स्यार, गोरी

(२) दरमा मल्ला—(क) धौली उपत्यका—

१. सिपू	गलन्ती	धौली
२. मरछा	,,	,,
३. तिनदङ्	कलिका	,,
४. घनकर	,,	,,
५. गो	गरबागर	,,
६. फिलिम	चरचम	,,
७. बुङ्नाल (बौन)	गौठी	,,
८. ढोतुल	दूदी	,,
९. दाकर	गरबागर	,,
१०. सुङ्नाल (सौन)	नीगलपानी	,,
११. दुगतुङ्	,,	,,
१२. बालिङ्	गलन्ती	,,
१३. नगलिङ्	,,	,,
१४. चाल	जुनीवगाड	,,
१५. स्याला	,,	,,
१६. दर १७. बनलिङ्	} स्थानपरिवर्तन नहीं	

(ख) ब्यांस (काली)—

१. कुती	घरछूला	काली
२. रुङ्कङ्	,,	,,
३. नवी	,, (नेपाल)	,,

	हेमन्त निवास	उपत्यका नाम
४. गुंजी	,, (नेपाल)	काली
५. नेपलचो	धरछूला	,,
६. गरब्याङ्	,, (नेपाल)	,,
७. बुदी	,, (नेपाल)	,,

(ग) चौदंस (निम्न-काली)—जाड़ाके बहुत कठोर न होनेसे सिरदङ् छोड़ यहाँके लोग (३०० परिवार) बारहों महीनेमें अपने गावोंमें रहते हैं। इनके गाँव निम्नलिखित हैं—

१. त्रिपती	६. सिरदङ्	११. पुनला
२. गल्लागार	७. रुङ्	१२. सूसा
३. तनकुला	८. पङ्ला	१३. रुङ्तो
४. बुङ्-बुङ्	९. गिङ्घरी	१४. पंगू
५. सिरखा	१०. बुलथिङ्	१५. रिङ्गिम्

४. भोटान्तिक(मोन्-पा)—(१) लोग—ये लोग तिब्बतके सीमान्तके दरमा और जोहार परगनोंमें रहते हैं। १९०१में इनकी संख्या १०९९ थी, पीछेकी जनगणनामें इन्हें अलग नहीं गिना गया। इसमें तो सन्देह नहीं कि उत्तरप्रदेशमें बौद्धोंकी—जो भोट-बोली-भाषी भी हैं—सबसे अधिक संख्या यहीं है। यहाँके पहाड़ी लोग इनके देशको 'भोट' कहते हैं[1] और निवासियोंको 'भोटिया'। इसीलिए ये लोग तिब्बतको भारतमें पहलेसे प्रसिद्ध नामको न पुकार 'हूणदेश' कहते हैं (प्राइमरी कक्षामें पढ़नेके समय हमारे नकशेपर भी तिब्बतके लिए हूण देश लिखा रहता था)। भोटभाषी बौद्ध गौरी, दरमा, कालीकी उपत्काओंमें एक-दूसरेसे अलग-थलग रहते आये हैं, इसलिए उनके रीतिरवाज, भाषा आदिमें भेदभाव देखा जाता है।

(२) प्रदेश—कैलास-मानसरोवरके विशेषज्ञ, प्रवासी और प्रसिद्ध पर्यटक स्वामी प्रणवानन्द-जी तिब्बत-सीमा और हिमपर्वतमालाके बीचमें बसे इन भोटान्तिक लोगोंके बारेमें लिखते हैं[2]—"धौली गंगासे लेकर भोटप्रान्त प्रारम्भ होता है। हिमालयमें भारतकी उत्तरी सीमाके निवासियोंको भोटिया नामसे पुकारते हैं। अल्मोड़ा जिलेमें सोबला (खेलासे १२ मील आगे) से भारतकी सीमातक की (१) **दरमा**[3] पट्टी, (२) धौली गंगासे बिंदाकोटतकको **चौदंस** पट्टी, (३) बिंदाकोटसे भारतकी सीमातककी ब्यांस[4] पट्टी, और (४) नेपाल-सीमापरके छङ्रु तथा टिंकरगाँव, (५) तेजमूके ऊपर भारतकी सीमातकका जोहार परगना, (६) गढ़वाल जिलेमें भविष्यबदरीसे भारतकी सीमातकका प्रदेश (नीती), (७) टिहरी रियासतके सीमान्तका नीलमगाँव—ये सब स्थान मिलकर भोट नामसे प्रसिद्ध हैं। यहाँके निवासी भोटिया कहलाते हैं। (इस) भोट और भोटियोंका भूटान या भूटानके लोगोंसे कोई सम्बन्ध नहीं है और न तिब्बत और तिब्बतियोंसे ही। ये लोग तिब्बतको हूणदेश और तिब्बतियोंको

---

१. "Bhotia mahals belonged to Tibet upto the time that Garhwal became consolidated under the chiefs of Srinager." Atk. Vol. III p. 113.

२. 'कैलास-मानसरोवर', पृष्ठ २९३-३००।

३. तिब्बती स्क्यो-ब।

४. ब्यांस तिब्बतीमें—ग्यल—ब; इसी प्रकार जोहार है क्योन-नम्, जोहारी क्योन—पा, कनौर—खूनू, कुल्लू-न्युङ्ती, लाहुल—गर-जा, मानस-ङरी।

'हूणिया' कहते हैं। मानाके भोटिया मारछा, नीतीके तोलिया (तोलचा) और जोहारके शौका या रावत कहलाते हैं।

"अलमोड़ाके दरमा, चौदंस और व्यांस तीनों भोट-पट्टियोंको मिलाकर दरमा पर्गनाके नामसे पुकारते हैं। भोटिये हिन्दूमतावलम्बी हैं और क्षत्रिय जातिके हैं। इनके नामके साथ सिंह लगा रहता है। इनमेंसे बहुतसे लोग यज्ञोपवीत धारण करते हैं और नियमित रूपसे गायत्री मन्त्र जप करते रहते हैं। हिन्दी और तिब्बतकी मिश्रित भाषा बोलते हैं। चिट्ठी-पत्री, लिखा-पढ़ी और बही-खाता नागरीमें लिखते हैं। गरमीके दिनोंमें भारतकी सीमाके अलग-अलग घाटों (जोतों या डाँडों) से होकर तिब्बत जा व्यापार करते हैं। वहाँसे ऊन, सुहागा, नमक इत्यादि तिब्बती वस्तुओंको लेकर शीतकालमें देशकी मण्डियोंमें नीचे उतरते हैं। वहाँ उनको बेंचकर देशसे कपड़े आदि सामानको लेकर फिर गरमीके दिनों-में तिब्बत चले जाते हैं; इन लोगोंमें हजारों रुपयेका व्यापार करनेवाले व्यक्ति हैं।

(३) वेष—"पुरुष पायजामा, ऊनका सफेद अँगरखा और पगड़ी पहनते हैं और अँगरखाके ऊपर एक लम्बी-सी पट्टी कमरबन्दके रूपमें बाँध लेते हैं। यह उनका जातीय पहनावा है। परन्तु वे प्रायः पायजामा, वेस्टकोट, कोट, टोपी पहिनते हैं। स्त्रियाँ घरमें अपने हाथसे बुने हुए लकीरदार और बूटेदार ऊनी कपड़ेकी लुंगी, कुरता और चोगा पहिनती हैं, चोगेके ऊपर कमरबन्द बाँधती हैं। सिरके ऊपर कपड़ेकी 'घोंघी' पहिनती हैं, जिसके ललाटके ऊपरवाले भागमें काम किया रहता है। छोटी लड़कियाँ और युवतियाँ लहँगे और रंग-बिरंगे कुरते पहिनती हैं। रुपये, अठन्नी, चवन्नी आदि चाँदीके सिक्कोंके हार और अन्य प्रकारके वजनदार चाँदीके आभूषण पहिनती हैं। इन आभूषणोंकी तौल कभी-कभी आध सेरतक होती है।

(४) स्वभाव—"भोटिया लोग बड़े हृष्ट-पुष्ट, परिश्रमी और पुरुषार्थी होते हैं। यहाँ स्त्रियोंमें परदा नहीं है, तथा वरवधूकी सम्मतिसे प्रौढ़ावस्थामें विवाह होता है, स्त्री-पुरुष त्योहार और विवाहादिके अवसरोंपर अलग-अलग कतारोंमें गाते हुए आमने-सामने होकर नाचते हैं। इस प्रकारके नृत्य हिमालय-भरमें कश्मीरसे लेकर आसामतक बौद्धों और हिन्दुओंमें प्रचलित हैं। इस प्रकारका नाच मैंने गंगोत्रीके पंडों (ब्राह्मणों) और अलमोड़ाके खश-जातिके कृषकों और क्षत्रियोंमें भी देखा है। (भोटिया) पुरुष मंडियोंमें जाकर व्यापार करते हैं, स्त्रियाँ घरोंमें रहकर हल जोतनेके अतिरिक्त खेती तथा उनके कपड़े या कम्बल बुननेका काम बड़ी फुरती और कुशलताके साथ करती हैं। जब कोई काम नहीं रहता, तो उस समय स्त्री और पुरुष ऊनकी कताईका काम करते हैं। यहाँतक कि पीठपर एक-एक मनका बोझा ढोते समय भी ऊन कातते रहते हैं। इनके ऊनी कारबारसे देशको लाभ पहुँचाने और प्रोत्साहित करनेके लिए अखिल भारतीय चर्खा संघने अपना केन्द्र अलमोड़ा जिलेके सोमेश्वर नामक स्थानमें खोलकर जोहार और चौदंसमें भी उसकी शाखाएँ खोली हैं। चार-पाँच वर्षोंसे यह कार्य चल रहा है। ये लोग प्रतिवर्ष तिब्बत जाकर तिब्बतियोंके साथ व्यापार करनेके कारण उनके साथ हिलमिल गये हैं, और उनके साथ खाने-पीनेमें संकोच नहीं करते, जैसे विलायत जानेवाले हमारे ही भाई-बंधु। जब वे नीचे देशमें लौटते हैं तो देशके लोग उनके साथ खान-पानका व्यवहार नहीं रखते।

(५) वंश—"इनकी भाषा, इनके मंगोल-स्वरूप, रीति-रवाजोंको देखकर कुछ मानवशास्त्रज्ञोंका कहना है कि ये तिब्बतसे आकर भारतकी सीमापर बसे हुए मंगोल जातिके तिब्बती हैं। मैं उनके मतसे सहमत नहीं हूँ।...तिब्बतकी सीमाके पासके निवासी होने तथा छ छ महीने व्यापारके लिए तिब्बतियोंके साथ रहनेके कारण इनकी भाषामें तिब्बती शब्दोंके समावेश होने एवं इनकी वेशभूषामें

कुछ समानता होनेमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। स्वरूपके विषयमें भी नेपालके गोरखे तिब्बतियोंसे एकदम मिलते-जुलते हैं। इनमेंसे एक तो नेपालके बौद्ध-मन्दिरोंमें दर्शनके लिए जाते हैं। फिर भी हम यह नहीं कह सकते कि नेपाली भी तिब्बती हैं। अन्तर्जातीय विवाहके कारण इनमें स्वरूप-साम्य या भाषा-मिश्रण हो सकता है। अब यह रहा कि इनका भोटिया नाम कैसे पड़ा? इनके पूर्वज कभी बौद्धमतावलम्बी रहे होंगे, अब तो ये नहीं हैं।···भोटियोंके क्षत्रिय होनेमें कोई सन्देह नहीं है।

"हाँ, आजकल ये लोग, विशेषकर जोहारके भोटिये अपने-आपको भोटिया कहनेमें हिचकिचाते तथा अस्वीकार भी करते हैं। सम्भवतः वे समझते हैं कि भोटिया कहनेसे तिब्बती या बौद्ध-मतावलम्बियोंका भाव आता है। पर अपने-आपको भोटवाली या भोटिया कहलानेमें उन्हें गर्व होना चाहिये; क्योंकि इस प्रकारसे उनका एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व है तथा उनका अलग प्रान्त है, जहाँ उन्हें विशेष सुविधाएँ हैं। भोटके निवासियोंको आयपर इनकमटैक्स नहीं लगाया जाता और वहाँ भट्टीपर शराब बनानेमें कोई प्रतिबन्ध नहीं है। तिब्बतसे लाये हुए लाखों रुपयोंके ऊन, भेड़, बकरी, सुहागा और नमक आदि वस्तुओंपर या तिब्बतको जानेवाले कपड़ेके सहस्रों गट्ठरोंपर, एक पैसा भी चुंगी नहीं देनी पड़ती। इनमें रायबहादुर किशन सिंह और रायबहादुर नयन सिंह जैसे तिब्बतके प्रख्यात अन्वेषक हुए, जिन्होंने अज्ञात तिब्बतमें सर्वप्रथम सर्वेका काम किया। अब भी इनमें कैप्टेन हमात सिंह और बाबू लक्ष्मण सिंह जैसे ब्रिटिश ट्रेड-एजेन्ट आदिके उच्चपदोंपर नियुक्त हैं।···दरमा पर्गनामें भी पण्डित गोबरिया गरब्याल एक विख्यात व्यक्ति हो गये हैं।···

"अलमोड़ा जिलेके भोटियोंमें जोहारी लोग विशेष पढ़े-लिखे हैं। इनके बाद चौदंस और ब्यांसवाले हैं। पर दरमाके भोटिये बहुत पिछड़े हुए हैं।"

"भोटप्रान्तमें मदिरा-पान, रंगबंग (रङ्बङ्) और डुडुम ये तीन प्रथाएँ प्रचलित हैं।···यह (मदिरा) जौसे निकाली जाती है।···जोहार-भोटमें मदिरापान अधिकांश बन्द हो गया। दरमामें अभी चालू है, यद्यपि चौदंस और ब्यांसमें पढ़े-लिखे बहुत व्यक्ति इस व्यसनको छोड़ रहे हैं।"

(६) **भाषा**—जोहारवालोंने अपनी पुरानी मातृभाषा[1] और बौद्धधर्मको छोड़कर पूरे ब्राह्मण-

---

१. जोहारी लोग अपने धर्म (बौद्ध) तथा पुरानी भाषाको भूल चुके हैं। पुरानी भाषाके जो नमूने मिलते हैं, उससे तिब्बती भाषासे उसका सम्बन्ध मालूम होता है—

जोहारी	हिन्दी	जोहारी	हिन्दी
यो	आना	दी	जा
छम	चलना	चें	गया
अचर याँ	अब आवेगा	चेङ् रास	आ गया
रातनी हिनी	आना चाहता है	म रा	नहीं आवेगा
मी	आदमी	रान म नीसी	नहीं आना चाहता
कुछे	स्त्री	मी जन	आदमी लोग
सेरी	बेटा	चि-मै	बेटी
आमा	मा	आपा	बाप
मै	आग	ती	पानी

ब्यांसकी भाषामें देखिये—मीना (मा), चुमै (बेटी), ती (पानी), मेदू (आग), छम (चलना); भोट-भाषाके साथ किन्नर-किरातकी तलछट यहाँ मौजूद है, जिससे इनका मूलवंश किन्नर-किरात मालूम होता है।

धर्मी चोगेको धारण कर लिया है। वह पहाड़ी बोली बोलते हैं। वैसे तिब्बत-बर्मी-भाषा-वंशकी पाँच बोलियाँ यहाँ बोली जाती थीं—

(क) रंका (या शंकिया-खून)—यह बोली सारे जोहार, गोरीफाट और मल्ला-दानपुरके चार गाँवोंमें बोली जाती है।

(ख) ब्यांसी—पट्टी-ब्यांसमें बोली जाती है, जिसके बोलनेवाले वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें १५८५ थे।

(ग) चौदंसी—बोलनेवाले १४८५ व्यक्ति चौदंस पट्टीमें रहते थे।

(घ) दरमिया—बोलनेवाले १७६१ आदमी दरमा-पट्टीमें रहते थे।

(ङ) हुनिया (या तिब्बती)—बोलनेवाले खम्पा आदि ८२० आदमी उस समय सारे जिलेमें बिखरे हुए थे।

५. **रीति-रवाज—(१) रङ्-बङ्**[1] **(स्वयंवर)**—"दरमा पर्गनेके कई गाँवोंमें ऐसे घर होते हैं, जहाँ गाँवके अविवाहित युवक-युवतियाँ एकत्र होकर प्रेमगीतके साथ नाचते हैं। किसी युवक और युवतीमें यदि प्रेम हो जाय, तो पीछेसे विवाह हो जाता है। इसको रङ्-बङ्[2] कहते हैं। यह प्रथा आजकल जोहारमें बिलकुल नहीं है; दरमामें समाज-सुधारक ठाकुर मोतीसिंहजीके उद्योगसे बहुत कुछ बन्द हो गयी है।...

(२) डुडुम—"मृतक शरीरको यहाँ डुडुम कहते हैं। मृतात्मा पुरुष हो तो चँवर बैल, स्त्री हो तो चँवर गायको लेकर उसे प्रेतात्माके प्रतिनिधिके रूपमें मृतकके कपड़े आदिसे सजाकर खूब खिलाते हैं। आखिरी दिन उस गाय या बैलको गाँवके बाहर किसी पहाड़के ऊपर छोड़ आते हैं। कुछ हूणिये ऐसे पशुओंकी ताकमें रहते हैं और पता पाते ही उनको पकड़ ले जाते हैं, और मारकर खा जाते हैं। इस प्रथाको बन्द करनेके लिए कई वर्षोंसे यत्न हो रहा है और श्राद्धके अवसरपर छोड़ी गयी चँवर गायों और बैलोंके जंगलमें पाले जानेका प्रबन्ध हो रहा है। इस सम्बन्धमें दरमा सेवासंघका प्रयत्न प्रशंसनीय है।

(३) कङ्डालीकी लड़ाई—"भोटके चौदंस पट्टीमें बारह वर्षमें एक बार यह त्योहार मनाते हैं। इस प्रान्तमें सात-आठ हजार फुटकी ऊँचाईपर 'कङ्डाली' पौधा उगता है। इसकी ऊँचाई लगभग चार-पाँच फुटतक होती है और इसमें बारह गाँठें होती हैं। यह बारह बरसमें एक बार फूलता है। यहाँके लोगोंकी धारणा है कि उस वर्ष इन फूलोंको न काटनेसे स्त्रियोंको कुछ अशुभ होता है। इस त्योहारकी कोई निश्चित तिथि नहीं होती—भाद्रपद, आश्विन या कार्तिकके महीनेमें भिन्न-भिन्न गाँववाले अपनी सुविधाके अनुसार अलग-अलग समयमें इसे मनाते हैं, जिसमें दूसरे गाँवके लोग भी त्योहारमें सम्मिलित हो सकें।

"यह लगभग एक सप्ताहतक मनाया जाता है। त्योहारके पहिले दिन मकानोंकी सफाई, लिपाई-पुताई आदि होती है। दूसरे दिन तेलमें एक प्रकारका मालपूआ बनाते हैं और प्रचुर मात्रामें जौकी शराब भी तैयार करते हैं। तीसरे दिन ग्राम-देवताकी पूजा करनेके बाद मालपूआको अपने भाई-बन्धुओंमें बाँटते हैं। चौथे दिन कङ्डालीकी लड़ाई होती है। पुरुष अपनी जातीय पोशाक—लम्बे-चोगे और पगड़ी पहनते हैं। स्त्रियाँ भी अच्छे अच्छे रेशमी वस्त्र और अनेक प्रकारके चाँदीके आभूषणोंको तथा तिब्बती जूते पहिनती हैं, जो ऊनके बने हुए घुटनेतकके होते हैं। दिनमें बारह बजेतक गाँवके

---

१. 'मानसरोवर'।

२. स्वयं-प्रभु।

लोग, सबके सब एक स्थानपर एकत्र हो जाते हैं, जिसे वे सभा कहते हैं। त्योहारके दिनोंमें कोई भी गाँवका व्यक्ति निजी व्यापार नहीं कर सकता, यदि करे तो पंचायत द्वारा उसे दण्ड दिया जाता है। हर एक घरसे एक-एक लोटा शराब लाकर सभामें उपस्थित करते हैं। तब 'परमेश्वरा' कहकर उद्घोषन करते हुए सभी लोग चावल हवामें फेंकते हैं। उसके बाद छोटे-छोटे कटोरेमें सभीको शराब बाँटी जाती है।

"लगभग एक बजेके बाद बाजे-गाजेके साथ जुलूस निकलता है। सबसे पहिले ढोल, झाँझ आदि बजानेवाले चलते हैं। उनके पीछे पुरुष लोग हाथमें तलवार और दूसरे हाथमें ढालकर लेकर चलते हैं। यदि ढाल-तलवार नहीं होती, तो एक हाथमें लाठी और दूसरे हाथमें पत्तियोंका गुच्छा लेकर निकलते हैं। उसके पीछे स्त्रियाँ एक हाथमें रेल (बुनाईके कामकी चिपटी लकड़ी) और दूसरे हाथमें रेशमी कपड़ा लेकर चलती हैं। जुलूसमें एकके पीछे एक कतार बनाकर निकलते हैं। चलते समय दाहिनीसे बाईं ओर और बाईंसे दाहिनी तरफ घूम-घूमकर नाचते हुए गाँवसे एक-दो मील बाहर एक पहाड़के छोरपर पहुँच जाते हैं और वहाँ सभी एकत्र हो जाते हैं। वहाँ सारे पुरुष तो रुक जाते हैं, किन्तु स्त्रियाँ पहाड़के ढालुओंमें, जहाँ कङ्डालीके पौधे उगते हैं, दौड़-दौड़कर जाती हैं और जंगलसे फूलों-सहित कङ्डालीकी डालें काट-काटकर अपने साथ विजय-चिह्नके रूपमें लाती हैं। इसीको 'कङ्डालीकी लड़ाई' कहते हैं। सभामें एकत्र सभी स्त्री-पुरुष एक-एक करके थोड़ी देर-तक नाचते हैं, इसके अनन्तर कतार बाँधकर पूर्ववत् नाचते हुए शामतक गाँव लौट जाते हैं। वहाँ किसी एक बड़े आदमीके घरके आँगनमें गोल बाँधकर नाचना प्रारम्भ करते हैं। नाचके साथ एक प्रकारका प्रेम-गीत रातके बारह बजे तक पहाड़ी रागोंमें गाते हुए नाचते रहते हैं। नाचते समय बायें पैरको दाहिने तथा दाहिनेको बायें तरफ करते हुए बाईं तरफका चक्कर लगाते हैं। दूर-दूरके गाँवोंके लोग भी इस मेलेको देखनेके लिए एकत्र होते हैं। कङ्डालीकी लड़ाईके पश्चात् तीन दिनतक गाँवमें दावत, खेलकूद और नाच-गाना होता रहता है। बारह वर्षमें मनाये जानेवाले इस कङ्डालीके त्योहारकी भाँति आश्विनके महीनेमें चौदंसके भोटिया लोग भी एक त्योहार मनाते हैं। भेद केवल इतना है कि प्रति वर्षके त्योहारमें कङ्डाली नहीं कटती।"

६. जातियाँ—(१) ब्राह्मण—जोहारमें ब्राह्मण, राजपूत आदि में जातिभेद फैला हुआ है। ब्राह्मणों में—

दोवेधिया
पाठक
कराखेती
नौरगी
पोलचाल
उपाधिया
दरमोला

(२) राजपूत—

जनपानी
तोलिया (जुमलासे आये)
भरतोलिया (बनारसके भट्ट)
बिरजूवाल
बुरफू
मिलम
नमजलु
घमिगाँव
साईनामी
खिलौंच
नितवाल
महता
अस्टवाल
कुंकिया

साईं	शुमत्याल
रिलकोट	तामाक्याल
चुलकोट	जोश्याल
रिंगू	भोट्याल
लस्पा	ल्वाल
मानी	पंक्ति
पापढां	हरखोट
रालम	धाप
घोडफटा	

सबसे गरीब **दरमा पट्टी**में ब्राह्मण नहीं, केवल राजपूत हैं—

बौन (बौनाल)	कुनारी
दुगत	शवलाल
लामा	नोगथियाल
फीलम्	गर्गवाल
चूल	दन्तू
जुमाल	जुमकू
दुर	शौन
गो	मरछा
बुतुन	शीपू

ब्यांसमें राजपूत हैं—

गरब्या (गरब्याल)	गंजी
तिनखर	बुधी
नपलच्यु	छल्पा
नाभी	कुठी

(३) रावत शोका—ये अपने-अपने गाँवोंके नामसे अलग-अलग उपाधि रखते हैं। ये **उंटा-धुरा** जोतसे तिब्बत व्यापार करने जाया करते हैं। रावत अपने गाँवमें ब्याह नहीं करते। दरमामें जहाँ युवक युवती जवान होनेपर बहुत-कुछ अपनी इच्छा (रङ्-बङ्) से ब्याह करते हैं, वहाँ इनमें ब्याह माता-पिताकी इच्छापर होता है।

इनके यहाँ मुर्देको जलाया जाता है, किन्तु सिरकी एक हड्डी मानसरोवर (गंगामें नहीं)में डालनेके लिए रख ली जाती है। हिन्दू-देवताओंके अतिरिक्त बौद्ध-देवताओंको भी अभी छोड़ा नहीं गया है। इस विषयमें इनकी अवस्था वही है, जो किन्नर देशमें बस्पा-उपत्यकाके कनौरोंकी। धरमा (निखुरया), ह्हम्सल (बुरफूँ और तोलामें) नामक देवता पूजे जाते हैं। अचेरी (अप्सरा) सर्वत्र पूजी जाती हैं। दरमामें तुङ्ताङ् देवताकी महिमा बड़ी है। बलचन और रुनिया जेठोरा लोगोंके इष्ट हैं और मिलमवालोंके इष्ट साईं हैं। दरमा और जोहारवाले पशुओंकी बीमारी या भयके समय सिधवा-विधवा दोनों भाइयोंकी सहायता माँगते हैं।

(४) दरमा-भोटान्तिक—जैसा कि पहिले कहा, यह परगना तीन पट्टियोंमें विभक्त है—दरमा, ब्यांस, और चौदंस। इनके रीति-रवाजोंमें कुछ भेद है, किन्तु आपसमें ब्याहशादी होती है।

यहाँ बुआ और मामाकी लड़कीसे ब्याह करना वैसे ही अच्छा समझा जाता है, जैसा दक्षिणके ब्राह्मणोंमें। इनके ब्याहका अच्छा साधन है रङ्-बङ्, जिसके बारेमें हम ऊपर कह आये हैं। हर गाँवमें रङ्-बङ् कुटी नामका एक घर होता है, जहाँ स्त्री-पुरुष प्रेमगीत गाते, मदिरा और तमाखू पीते सारी रात बिता देते हैं। विवाहित-अविवाहित पुरुष तथा सन्तान न होनेतक विवाहित स्त्रियाँ भी रङ्-बङ्में सम्मिलित होती हैं। पहिले दस वर्षकी आयुके बाद कोई लड़की घरपर नहीं सोया करती थी। ऐसी कुटीका अस्तित्व छोटा नागपुर तथा आसामकी जनजातियोंमें भी पाया जाता है, यह ध्यान देनेकी बात है।

दरमाके गाँवोंमें अपने देवताके लिए एक साईं थान होता है। व्यापारके लिए जाते समय वहाँ बलि चढ़ायी जाती है। यहाँके कुछ ग्रामदेवताओंके नाम हैं—

गाँव	देवता
कुती	गुलाच
नबी	थप्पङ्
गुंजी	नमती
छङरु	मदन
गरब्याङ्	कुंगर
चौदंस	स्यङ्खे

दरमा उपत्यकावाले पंचचूलि शिखर-वासिनी मंजुला देवीके भक्त हैं, साथ वह पहाड़ी चढ़ाई-के रोगमें छानकी सहायता माँगते तथा किवाङ् रङ्छिम दोनों भाईयोंको भी मानते हैं।

७. तिब्बतके साथ व्यापार और कर—(१) रास्ता खुलना—तिब्बतके साथ व्यापार भोटान्तिक लोगोंका मुख्य व्यवसाय है, यह कह चुके हैं। भिन्न-भिन्न भागोंके भोटान्तिक लोगोंके तिब्बत जानेके अलग-अलग रास्ते हैं, जैसे—जोहारी (क) उंटाधुरा (१७,५९० फुट) जोतसे तिब्बत जाते हैं। जून, जुलाई और अगस्त इसका समय है। उंटाधुराके हिममुक्त न होनेपर वह (ख) पूर्वी मार्गको पकड़कर जंती (१७,००० फुट) तथा कुङ्री बुङ्री (१८,३०० फुट) की सीमान्त-जोत द्वारा जाते हैं। अथवा (ग) उत्तरी मार्गसे गिरथी नदी पार हो उंगी जोत तथा एक और भी छोटी जोतसे तिब्बतमें प्रवेश करते हैं। पहिले मार्गमें पड़ावके लिए अनुकूल स्थान न होनेके कारण तीन जोतोंको एक ही दिनमें पार करना पड़ता है। जोत खुलने पर दा-बाके जोङ्पोन (जिलाधिकारी) का दूत (स-तु) जोहारमें आकर इधरके गाँवोंमें पशुओंकी बीमारीके बारेमें पूछताछ करता है। बीमारी न होनेपर जोत खोलनेके कर (ला-थल्) के रूपमें ९० भेली गुड़ या ४५ रुपया (सन् १९०८ में) जोङ्पोन-के दूसरे दूत (सर जी) को दे दिया जाता है। सर-जी लदाखी कनौर, खम्पा, कुमाऊँनी तथा दूसरे अ-भोटिया लोगोंसे हर एक स्त्री-पुरुष-बच्चेपर तीन आना कर लेता है। जोहारी लोग केवल ला थल्-भर देते हैं। इस प्रकार मिलमसे उंटाधुरा होकर तिब्बत जानेवाले भोटान्तिक लोगोंको कोई और कर नहीं देना पड़ता। मिलमका मुखिया (कामिन) ला-थल् जमा करनेका काम करता है, जिसके लिए उसे तिब्बतमें यात्राके समय एक सवारीका टट्टू, एक लादनेका टट्टू तथा भोजन-चारा मुफ्त मिलता है। पहले तिब्बतसे लाये हर एक मालपर चू-थल् (दशांश) मिलमवाले कामिनको देना पड़ता था, किन्तु पिछली शताब्दीके उत्तरार्द्धमें ब्रिटिश सरकारने उसे रोक दिया। जोहारी व्यापारी पश्चिमी तिब्बतके ग्या-नी-मा (खर-गोन), चकरा, शिव-चि-लम्, ख्युङ्-लिङ्, दरछेन, और गरतोककी मण्डियोंमें व्यापार करते हैं, जिनमें ग्या-नी-मा (१६,५०० फुट) और गरतोक (१५,१०० फुट) की

मण्डियाँ सबसे बड़ी हैं।

(२) **दरमा व्यापारी**—मल्ला-दरमाके व्यापारी दरमा जोत (१८,५१० फुट) से तिब्बत जाते हैं, जो जून-जुलाई-अगस्तमें खुला रहता है। पहिले मल्ला (ऊपरी) तल्ला (निचले), अस्कोट तीनोंके लोग व्यापार करते थे, किन्तु पीछे तिब्बतने केवल मल्ला-दरमाके निवासियोंको ही व्यापार करनेका अधिकार दिया। उन्हें इसके लिए चारों थोक मिलाकर २०४ भेली गुड़ या १०२ रुपया स-थल् (भू-कर) के तौरपर देना पड़ता है। यह कर राजनीतिक पेशकार जमाकर तिब्बतमें बर-का-तर-जमके आदमीको दे देता है। बर-का-तर-जमके २०० बकरी नमकको भी तिगुने अनाजमें खरीदना पड़ता है। दरमावालोंकी मण्डियाँ हैं ग्या-नी-मा और कुन्-लिङ्।

(३) **ब्यांसी और चौदंसी**—इनके तिब्बत जानेके दो रास्ते हैं—(क) लङ्-प्या-लेग (१८,१५०) जोत जून-जुलाई-अगस्त-सितम्बरके चार महीनोंतक खुला रहता है। इसे कुती, ग्यानी मा और दर-छेन-वाले लोग इस्तेमाल करते हैं। (ख) लि-पू-लेग (१६,७८०) सबसे आसान तथा वर्षभर खुला रहनेवाला जोत है, यद्यपि दिसम्बर-जनवरीमें यात्री कम होते हैं। इस रास्तेसे तकला-कोट या दरछेन होते जाना पड़ता है। **चौदंस** के लोग भी लि-पू-लेगका ही रास्ता पकड़ते हैं। तिब्बती लोग इस रास्तेपर भारी कर लेते हैं। कुती ३५० सेर अनाज देता है। प्रत्येक गाँव तीनसे चार रुपयेतक स-थल् (भू-कर) देता है। लुग-थल् (मेष-कर) भी प्रत्येक गाँवमें डेढ़ रुपया लगता है। इनके अतिरिक्त कपड़ा, ईंधन, काष्ठ, मदिरा, साग-भाजी और सत्तू-पूरी भी देनी पड़ती है। यह सब चीजें राजनीतिक पेशकार जमा करके ले जाता है, और मल्ला-ब्यांसका तकलाकोटवालेको और तल्ला-ब्यांसका गरब्याङ्के जोङ्-पोनके अरवा[1]को देना होता है। मल्ला और तल्ला-ब्यांसके प्रत्येक गाँववाले थि-ति मग-पोनको अनाज, नकद और आहारके रूपमें ला-थल् (जोत-कर) देते हैं। तिब्बतमें घुसनेपर हमारे हर एक व्यापारीको छोङ्-थल् (पण्य-कर) भी देना पड़ता है।

इन करोंके अतिरिक्त ब्यांस और चौदंसके व्यापारियोंको तकलाकोट पहुँचनेपर वहाँके जोङ्-पोनको ४५ बक्स (प्रत्येक बक्समें ३० सेर) अनाज **नैका** देना पड़ता है। ब्यांसके कुती (गाँव) के तथा कुछ दूसरे व्यापारी भी ग्या-नी-मामें व्यापार करते भी कर तकलाकोटके जोङ्-पोनको देते हैं। वहाँ घर-का-तर-जम नकदके रूपमें कर लेता है, किन्तु कुतीवाले ला-थल् छोड़ दूसरा कर नहीं देते। हमारे भोटान्तिक व्यापारी इन करोंको देनेके लिए मजबूर हैं, क्योंकि न देनेपर तिब्बती अधिकारी व्यापार बन्द कर देंगे, जिसके कारण व्यापारियोंपर आर्थिक संकट आ जायगा। तिब्बती अधिकारियों-का दावा है कि भारतके भीतरके भोटान्तिक भी उनकी प्रजा हैं। तिब्बत बदल रहा है, वहाँके जोङ्-पोन और तर-जमकी मनमानी अब नहीं रहेगी और चीनके जन-गणराज्यका अंश होनेसे वहाँकी कम्युनिस्ट व्यवस्थाका व्यापक प्रभाव पश्चिमी तिब्बतपर भी पड़ेगा। उस समय हमारे व्यापारियोंको भी बदलना होगा, व्यापारके तरीके और लाभांश दोनोंमें। यदि दोनों देशोंके अच्छे सम्बन्ध रहे, तो पश्चिमी तिब्बतका यह व्यापार जारी रहेगा। मुमकिन है, कितनी ही चीजोंको खच्चर, घोड़े, भेड़-बकरियोंपर न भेजकर सीधे मानसरोवर-कानपुर या मानसरोवर-धारीवाल विमानसे पहुँचाया जाय। वैसी अवस्थामें हमारे भोटान्तिक भाइयोंके व्यापारको भारी धक्का लगेगा।

गढ़वालके माणा (१०,५६० फुट) और नीती (११,४६० फुट), टेहरीके नेलङ् और हिमाचल प्रदेशके कनौरके व्यापारी भी पश्चिमी तिब्बतके व्यापारके साझीदार हैं। नीतीवालोंको नीती जोत (१६,६२८ फुट) पारकर दावा और शिव-चिलम्की मण्डियोंमें जाना पड़ता है। माणावाले माणा जोत

१. सहायक या कारिन्दा।

(१८,६५० फुट) पार हो चपरङ और योलिङ्की मण्डियोंमें जाते हैं।

(४) व्यापार—हमारे देशसे तिब्बतको निर्यात की जानेवाली चीजें हैं—गेहूँ, जौ, चावल, मँडुआ, और झँगोराके अनाज एवं ताँबा, लोहा, पीतलकी चीजें, चीनी, तम्बाकू, चाँदी-सोनेकी चीजें आदि। आयातकी चीजें हैं—सोडा, सोहागा, नमक, कच्चा और बुना ऊन, चँवर, टट्टू (टाँघन) भेड़, बकरी। पश्चिमी तिब्बतके १४-१५ हजार फुट ऊँचे पथारमें अनाज नाममात्रका ही पैदा होता है, इसलिए इस प्रदेशको अन्नके लिए भारतपर निर्भर रहना पड़ता है। निश्चय ही पूर्वी तिब्बतसे महीनोंका रास्ता तै करके यहाँ अनाज भेजना तबतक आसान न होगा, जबतक सारी ब्रह्मपुत्र-उपत्यकामें मोटर-सड़क न बन जाय, जो भूमिकी स्थिति देखते हुए कठिन नहीं है। कुछ भी हो, अब तिब्बतके कम्युनिस्ट हो जानेपर हमारे व्यापारिक सम्बन्धको भी नया रूप देना होगा, तभी दोनों देशोंका लाभ और सद्भाव बना रहेगा।

इधर तिब्बतसे नमकका आयात कम हो गया है, क्योंकि देशका नमक अनाजसे तिगुना क्या, आधा भी नहीं पड़ता, और वह अच्छा शुद्ध किया भी होता है। तिब्बती सोहागेके साथ इटालियन सोहागेका मुकाबला है। ऊनका व्यापार जरूर बढ़ा है। १८४० में २२ मन ऊन तिब्बतके इस भागसे नीचे भेजा गया था, जो कि १९०७ में ११,९२५ मन हो गया—१९०७ में दो लाख और १९२३ में चार लाखका ऊन आया। कानपुरकी ऊनी मिलोंके एजेंट तनकपुरमें मौजूद रहते हैं, जो सारे ऊनको खरीद लेते हैं। तनकपुर पहुँचानेसे पहिले मुनसियारी, तेजम् और धरछूलामें ऊन रखनेके गोदाम हैं।

हर एक भोटान्तिक व्यापारीका तिब्बत अपने कारबारके लिए एक मित्र होता है, जो नीचेके अढ़तियोंकी भाँति सहायता देता है। मित्र बननेका एक विशेष संस्कार है, जिसे **सुल्जी-मुल्जी** कहते हैं और जिसमें दोनों एक प्यालेसे चाय पीते हैं।

जूनके महीनेमें भोटान्तिक व्यापारी अपनी व्यापारयात्रा शुरू करते हैं। धनी व्यापारी कुछ नकद भी साथ ले जाते हैं, नहीं तो भारतका माल और अनाज अपनी भेड़-बकरियों, घोड़े-खच्चरों यार्को-जब्बुओं, गर्जा बैलोंपर लादे उत्तरकी ओर प्रयाण करते हैं। बड़े लादू जानवर उस पार नीचे-तक नहीं जाते। व्यापार अधिक बदलनेके रूपमें होता है। बहुतसे व्यापारी तो अग्रिम भी दिये रहते हैं। बदलेमें ऊन, सोहागा आदि जो चीजें मिलती हैं, उनका भार कम होता है, इसलिए लौटते समय बहुतसे पशु खाली या हल्के होकर आते हैं। तिब्बतमें मंडियाँ बँधी हुई हैं, किन्तु पीछे व्यापारके बढ़नेके कारण नियम टूट-सा गया है और तकलाकोटकी मंडीमें सभी पहुँचना चाहते हैं। घरपर छोड़ आये मालको लेनेके लिए व्यापारियोंको तीन बार लौटना पड़ता है।

जब सर्दीका मौसम नजदीक आने लगता है, तो तिब्बतसे लाये मालको दक्षिणकी ओर पहुँचाते हैं। उपत्यकाके उपरी भागके गाँव नवम्बरके आरम्भसे छोड़ दिये जाते हैं। घरोंमें ताला और किवाड़ोंकी दरारोंको मिट्टीसे बन्द कर दिया जाता है। जबतक घरोंको बरफ ढाँक नहीं लेती, तबतक गाँवके कुछ आदमी रखवाली करते रहते हैं। बरफ पिघलनेके समय फिर उसी तरह कुछ आदमी पहिले पहुँचते हैं, जो साथ ही नंगे जौ या दूसरे अनाजको बो देते हैं।

आयात-निर्यातके सौदोंकी लिखापढ़ीके लिए मिलन और धरछूलामें लिपिक हैं। जोहारके डाँडोंसे जानेवालोंकी लिखापढ़ी मिलममें होती है, और व्यांसवालोंकी धरछूलामें। १९०७ में दो लाख रुपयोंका ऊन और उतने का ही सोहागा तिब्बतसे आया था। इसके अतिरिक्त अलमोड़ा तथा रानीखेतमें मांसके लिए बिकनेवाली कितनी ही भेड़-बकरियाँ आयी थीं। निश्चय ही इससे कहीं अधिक-का माल आता-जाता है, जो दर्ज नहीं होता।

८. **व्यापारिक मेले**—वैसे तो भोटान्तिक लोग व्यापार करने तनकपुर, हलद्वानी आदि नीचेकी मण्डियोंतक चले जाते हैं। किन्तु उनके व्यापारके मुख्य केन्द्र जिलेके भीतर जौलजीवी, बागेश्वर और थलके मेले हैं—

(१) **जौलजीवी**—पहिले बागेश्वरका मेला ही मुख्य था, किन्तु १९१४ में अगहन (मार्गशीर्ष) की प्रथम तिथिसे यह मेला लगने लगा है, जहाँ १५,००० से अधिक लोग जमा होते हैं। जौलजीवी मेला अस्कोटसे ६ मीलपर गोरी और काली नदियोंके संगमपर लगता है। कालीके पार नेपाल है। यही नेपाल, अस्कोट, जोहार और दरमाके रास्तोंका मिलनस्थान है, साथ ही तिब्बत-सीमा बहुत दूर न होनेसे तकलाकोटके तिब्बती व्यापारी भी आ पहुँचते हैं। इस प्रकार यह नेपाल, भारत तथा तिब्बत तीन राज्योंका सम्मिलित मेला भारतकी भूमिपर है। तिब्बत, भोटान्त और जुमला (नेपाल) के पण्य हैं भोटिया टाँघन। इन घोड़ोंके बाद दूसरा पण्य है, तिब्बती और भोटान्तिक ऊन, ऊनी कपड़े। नेपालसे अनाज, घी और फल मुख्यतः आते हैं। शोर, सीरा, अस्कोटके लोग अनाज तथा दूसरी खाद्य-सामग्री लाते हैं, और ईंधन जुटानेका काम दरमावालोंका है। मेलेमें दो लाखसे अधिकका माल बिक जाता है। जौलजीवीमें बागेश्वरकी भाँति कोई पुराना देवस्थान नहीं है, किन्तु महान् सरयू-की दो ऊपरी धाराओं, गोरी और कालीके संगमकी त्रिवेणी मौजूद ही है। लोग त्रिवेणी माईमें नहाने भी लगे हैं, और एक मन्दिर भी बन चला है। मनोविनोदकी भी कमी नहीं है—नेपाली, पहाड़ी, भोटान्तिक सभी गीत जमकर होते हैं।

जौलजीवीके मेलेके बाद भोटान्तिक व्यापारी भाबरके बाजारोंकी ओर जाते हैं।

(२) **बागेश्वर**—पहिले यह सर्वप्रमुख मेला था, अब उसके व्यापार-क्षेत्रमें जौलजीवीका मेला भी हिस्सा बँटाने लगा है। किन्तु साथ ही भोट, तिब्बत, नेपालका व्यापार भी कई गुना बढ़ गया है, इसलिए अधिक लाभमें ही बाँटनेकी बात है। बागेश्वर (३,१४३ फुट) अलमोड़ासे २७ मीलपर सरयू और गोमतीके संगमपर अवस्थित है। यहाँ बागेश्वर शिवका मन्दिर है। यद्यपि वर्तमान मन्दिरको राजा लक्ष्मीचन्दने १४५० ई० के करीब बनवाया, किन्तु इससे पहिले भी मन्दिर था इसमें सन्देह नहीं। कुमाऊँमें यह उत्तरकी काशी समझा जाता है। बल्कि काशी ही नहीं, काशी और प्रयाग सम्मिलित, क्योंकि सरयू-गोमतीकी त्रिवेणीपर मुण्डन, पिण्डदानादि भी होते हैं। बीस हजारसे अधिक लोग मकर-संक्रान्तिको यहाँ जमा होते हैं। वैसे तो शिवरात्रिको भी एक मेला लगता है, किन्तु बड़ा मेला वही है, जो मकरसंक्रान्तिसे एक दिन पूर्व आरम्भ होता है, और पाँच दिन रहता है। भोटान्तिक, विशेषकर जोहारी लोग इसमें व्यापारके लिए भारी संख्यामें आते हैं। ऊन, ऊनी चीजें—पट्टू, थुलमा, पंखी, चुटका(चुकट्टू), आसनी, चुंटा, पश्मीना—बहुत अच्छी-अच्छी आती हैं। तिब्बती कलाके पात्र, घण्टा आदि भी बिकते हैं। भोटिया टाँघन, भेड़-बकरियाँ काफी आती हैं। भेड़-बकरियाँ विशेषकर मांसके लिए खरीदी जाती हैं। चँवर, समूरी छाल, कस्तूरी, जड़ी-बूटियाँ, भालूकी चरबी, सोहागा, चमड़ेके थैले आदि भोटान्तिकोंकी विक्रय-वस्तुओंमें हैं। इनके अतिरिक्त दानपुरी लोग चटाइयाँ, पिटारे, टोकरियाँ आदि तरह-तरहकी रिंगल (छोटे बाँस) की चीजें बेचते हैं। लोहकार, ताम्रकार, चर्मकार भी अपनी वस्तुओंको लाते हैं। अलमोड़ाके व्यापारी कारखानोंकी बनी चीजें, कपड़े, छत्ते, अलमोनियम, लोहा, पीतल-ताँबेके बर्तन, अनाज, तेल, नमक, चाय, चीनी, मिश्री, गुड़, साबुन, दर्पण, बटन, सेप्टीपीन, क्लिप, मोजे, कमरबन्द, रुमाल, सीटी, रबर-खिलौने, ताले, ताश, चीनीबर्तन, ट्रंक, बिजली-टार्च, नकली आभूषण आदि लेकर पहुँचते हैं। पास-पड़ोसके गाँव दूध, घी, केला नारंगी, अखरोटके फलके साथ घास-ईंधन पहुँचाते हैं। तीन-चार लाखसे ऊपरका माल बिकता

कुमाऊँ—एक इमारत

अलमोड़ा—पुजारिन

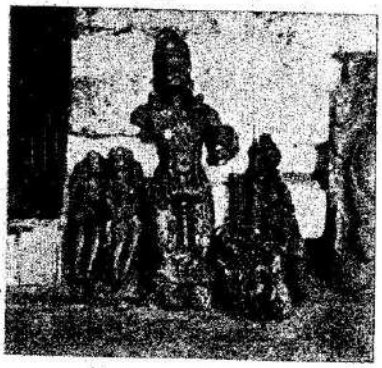

अलमोड़ा—खण्डित मूर्तियाँ

अलमोड़ा—साहित्यिकोंमें

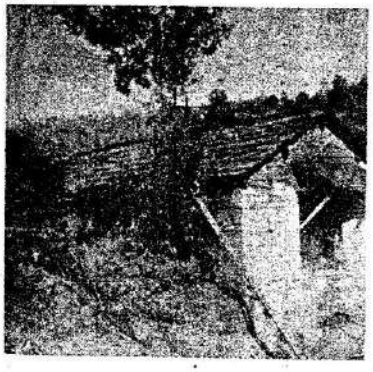

अलमोड़ा—कौसानी

अलमोड़ा—पुरानी मूर्ति

नैनीताल—तालका दृश्य

नैनीताल—रमनमाई

नैनीताल—ताल

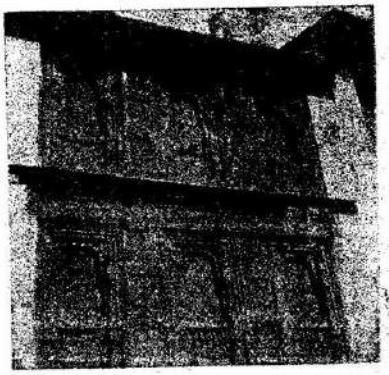

बागेश्वर—दरवाजा

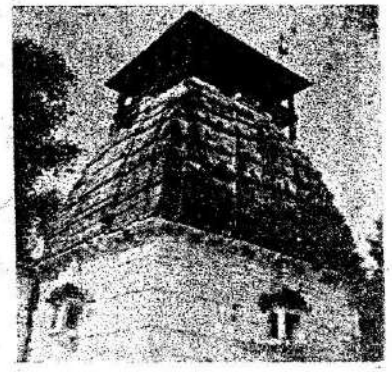

बागेश्वर—शिवालय

बागेश्वर—सुखलिंग

है। सोनपुर (हरिहरक्षेत्र) के मेलेकी भाँति यहाँ भी एक प्रकारकी वस्तुओंकी दूकानें एक जगह रहती हैं। वैसे बागेश्वरमें एक स्थायी बाजार भी है, किन्तु मेलेके समयकी चहल-पहलसे उसका क्या मुकाबला ?

रातके समय पहाड़पर हजारों जगह आग बलती दीख पड़ती है, जहाँ नर-नारी भोजनोपरान्त रात-रात नाचने-गाने, या गपशपमें लगे रहते हैं। भिन्न-भिन्न जातियोंके लोग अपने-अपने जातीय जनगीत और जननृत्यका प्रदर्शन करते हैं, जिसमें दानपुरी लोगोंकी **चाँचरी** विशेष तौरसे आकर्षक होती है। दिनमें भी लोग बाजे-गाजे, ध्वजा-पताके, ढाल-तलवारके जलूसके साथ नाचते-गाते दीख पड़ते हैं।

किसी समय बागेश्वर मेलेका भोटके व्यापार और दूसरी बातोंमें एकाधिपत्य था, किन्तु अब जौलजीवी जैसा नया प्रतिद्वन्द्वी ही नहीं खड़ा हो गया है, बल्कि मोटर आ जानेसे लोग क्रय-विक्रयके लिए नीचे रेलके किनारेके बड़े बाजारोंमें पहुँच जाते हैं; इससे यद्यपि बहुत क्षति नहीं हो पायी है, किन्तु कम्युनिस्ट तिब्बतके कुरुखपर धक्का लगनेकी सम्भावना तो है ही।

बागेश्वरके मेलेके बाद भोटान्तिक व्यापारी फिर भावर-तराईके बजारोंका चक्कर लगाने चले आते हैं, जहाँसे आकर वह थालके मेलेमें शामिल होते हैं।

(३) थाल—यह पूर्वी रामगंगाके किनारे ऐसी जगह है, जहाँ पिठौरागढ़, बागेश्वर अस्कोट और तेजमके रास्ते आकर मिलते हैं। यहाँका मेला मध्य-अप्रैलमें पूरे एक सप्ताह रहता है। यहाँ भोटान्तिक लोगोंको अपने सौदेको बेचनेका अन्तिम समय मिलता है, क्योंकि यहाँके बाद वह अपने ग्रीष्म-निवासोंमें होते तिब्बत-व्यापारके लिए जाते हैं। यह कह चुके हैं कि नीचेकी भाँति तिब्बतमें भी वे दो चक्कर लगाते हैं। मालकी खलासीका मेला होनेसे यहाँ चीजें कुछ सस्ती मिलती हैं, यद्यपि वह छँटुई अधिक होती हैं। गेहूँ, चावल आदि खाद्य-सामग्री भी उन्हें बहुत खरीदनी पड़ती है, क्योंकि इन चीजोंकी बदलाई तिब्बतमें बहुत होती है। बहुत जगह तो भोटान्तिक लोग ऊन भी पुराने भावसे लेते हैं, और अनाज भी पुराने (सस्तीके) जमानेके भावसे देते हैं।

इस मेलेमें १२,००० से अधिक आदमी सम्मिलित होते हैं। क्रय-विक्रयके अतिरिक्त यह वार्षिक हिसाब-किताबका मेला है। भोटान्तिक लोग यहीं अपने पहाड़ी मित्रोंका हिसाब बेबाक करते हैं। सरकारी मालगुजारी भी यहाँ चुकायी जाती है।

९. तिब्बतकी व्यापारयात्रा—थालके मेलेके बाद तिब्बत ले जानेके सामानकी ढुलाई शुरू होती है। भेड़-बकरियाँ, जीबू-खच्चर माल ढोनेमें भाग लेते हैं। इसके बाद दो-तीन सप्ताहके लिए पशुओंको घासकी ढलानों (बुक्यालों या पयारों) में छोड़ दिया जाता है, क्योंकि कमजोर जानवर तिब्बतकी अत्युच्च जोतोंको पार नहीं कर सकते। जोतपर पहुँचनेपर यदि किसी जानवरने कच्चाई दिखलायी, तो उसे या तो वहीं छोड़ दिया जाता है, या यदि भक्ष्य हुआ, तो मारकर मांसके रूपमें बदल दिया जाता है। यहाँकी उच्च ढलानों (बुक्यालों) की घास बड़ी टानिक है। वह दो ही सप्ताहमें मरियल जानवरको भी शेर बना देती है।

जूनके अन्तमें तिब्बत जानेकी जोतें खुलती हैं। इसी समय व्यापारी उत्तराभिमुख यात्रा शुरू करते हैं। यह पहिले बतला चुके हैं कि जोतोंकी खुलनेकी सूचना देनेके लिए तिब्बती जोङ्-पोन् (जिलाधिकारी) के आदमी आते हैं। आम तौरसे हरियालाका त्यौहार करके व्यापारी प्रस्थान करते हैं, और १–१५ जुलाईके बीच भारत-सीमान्तको पार कर लेते हैं। तिब्बतकी यात्रा हँसी-खेल नहीं है, विशेषकर पश्चिमी तिब्बतकी। राजधानी ल्हासा दूर होनेके कारण मानसरोवर

प्रदेशमें शान्ति-रक्षाका प्रबन्ध बहुत कम है, और झुंडके झुंड डाकू भोटान्तिक व्यापारियोंकी ताकमें रहते हैं। व्यापारियोंको अपनी रक्षाका भार अपने ही ऊपर लेना पड़ता है। इसके लिए उन्हें ५०-६० के साथ (कारवाँ) के रूपमें हथियार-बन्द होकर जाना पड़ता है। उनके पास सैकड़ों भेड़ें, बकरियाँ, जोबू (चमर-गायका दोगला), खच्चर, घोड़े होते हैं। यह पहिला चक्कर होता है। दूसरा चक्कर व्यापारी सितम्बरमें करते हैं। इस यात्रामें अकसर एकाध व्यापारी अपने प्राणोंसे हाथ धोते हैं। इसलिए परिवारसे बिदाई लेते समय उनके मनकी अवस्था साधारण यात्री-सी नहीं, बल्कि युद्ध-क्षेत्रोंमें जाते सैनिककी सी होती है। प्रस्थानके लिए शुभ मुहूर्त देखा जाता है। यात्रासे पहिलेकी रात पूजापाठ, अच्छे-अच्छे भोजनोंकी तैयारी, भेंट-मुलाकातमें बितायी जाती है। दूसरे दिन घरकी स्त्रियाँ और बच्चे काफी दूरतक पहुँचाने जाते हैं और चलते समय सबकी आँखें गीली रहती हैं। लेकिन, यह व्यापारी हमारे नीचेके व्यापारियों जैसे बुजदिल (बकरियोंके दिलवाले) नहीं होते, और न इन्हें केवल पहाड़ी बुद्धू या कूपमण्डूक ही कहा जा सकता है। जाड़ोंमें इनमेंसे कितने ही अलमोड़ा-रानीखेत, रामनगर-हलदवानी, तनकपुर-पीलीभीत ही नहीं, बल्कि दिल्ली-अमृतसर, कानपुर-कलकत्ता, बनारस-बम्बई और सारनाथ, बोधगया, कुशीनारातककी दौड़ लगाते हैं, जहाँ वह अपने ऊन, कस्तूरी, या दूसरी चीजोंका सौदा अथवा तीर्थ-दर्शन करते हैं।

१९२३ में तिब्बतसे २७ हजार मन ऊनका इस जिलेमें आयात हुआ, जिसमें वह ऊन भी शामिल था, जिसे भोटान्तिक नरनारी कात-बुनकर बेचते या अपने उपयोगके लिए पट्टू, थुल्मे, कम्बल आदि बनाते हैं। १२,००० से ऊपर भोटान्तिक सूत-कताईका काम करते हैं। प्रायः सभी वयस्क नर-नारी सूत कातते हैं—केवल घरमें बैठे रहते समय ही नहीं, बल्कि रास्ता चलते भी उनके हाथ में तकला घूमता रहता है, निश्चय ही इतने श्रम और समयसे और अधिक सूत काता जा सकता, यदि तकलेका स्थान चर्खा लेता, लेकिन उसे चलते-चलते नहीं चलाया जा सकता। पनबिजली यहाँके लिए दुर्लभ नहीं है। उसके उत्पादन करनेपर तो बिजली चालित चर्खे और करघे २० हजार मन ऊनको आसानीसे सुन्दर कपड़ेके रूपमें परिणत कर सकते हैं, किन्तु 'हनोज देहली दूर अस्त।' अभी तो देहलीके भाग्यविधाता जबानके घोड़ोंकी दौड़में लगे हुए हैं। शायद हम उसके लिए तैयार न होंगे, और तबतक कम्यूनिस्ट चीनका एक अंग तिब्बत उनका उस पार ही कपड़ा बना लेगा, फिर हमारे भोटान्तिक भाइयोंकी आजकी समृद्धि सपनेकी बात हो जायगी, और दरिद्रता-ग्रस्त बेकार भोटान्तिकोंके शरीर और मनको भी यदि साम्यवाद अपनी ओर खींचनेमें सफल हो, तो इसमें आश्चर्य क्या है। चीनके साथ हमारी सरकारका जो मैत्रीपूर्ण भाव अब है, यदि वह ऐसा ही कायम रहा, तो तिब्बत और भारतके व्यापारकी धारामें कभी रुकावट नहीं होगी। लेकिन मैत्रीभाव रखते हुए भी हालमें जो गलत रास्ता भारत सरकारने तिब्बतके सम्बन्धमें लिया था, उससे हमारी ही हानि होनेवाली थी। यदि भारतका आग्रह न हुआ होता, तो कबके सारे तिब्बतमें कम्युनिस्ट छा गये होते। उस समय, पश्चिमी तिब्बतमें अनिश्चित अवस्था नहीं रहती। भारतके आग्रहपर कम्युनिस्ट सेनाने तिब्बतमें आगे बढ़ना बन्द कर दिया। पश्चिमी तिब्बतमें साधारण अवस्थामें भी तिब्बती डाकुओंके उपद्रवको तिब्बती अधिकारी रोक नहीं सकते, और भोटान्तिक व्यापारियोंको बहुत-कुछ अपने बलपर अपनी रक्षा करनी पड़ती थी। इधर तो कम्युनिस्टोंके सम्बन्धमें जो उड़ती खबरें तिब्बतके पश्चिमी सीमान्तके अधिकारियोंके पास पहुँची थीं, उनके कारण उनका दिमाग बहुत परेशान था। वह अपने पैरको ठोस धरतीपर नहीं पाते थे। बहुतोंने तो अपने परिवारको भी भारतीय सीमान्तके भीतर भेज रखा था। ऐसी अवस्थामें इस साल डाकुओंका जोर

ज्यादा बढ़ जाय, तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं थी। इस साल हमारे व्यापारियोंको आत्म-रक्षाके लिए भारी तैयारीके साथ जाना था। लेकिन हमारी नौकरशाहीका तो अपना वही पुराना रास्ता है। भोटान्तिक व्यापारियोंने बन्दूकें माँगीं, तो लाइसेन्स देनेमें दिक्कत डाली गयी। माणाके तीन सौ परिवारोंके लिए जहाँ १५-२० बन्दूकोंकी आवश्यकता थी, वहाँ उन्हें तीन बन्दूकें मिलीं, और छ महीनेके लिए बन्दूक पीछे ५०-५० कारतूस दिये गये। बन्दूकोंको लानेके लिए लोगोंको बरेली जानेके लिए मजबूर होना पड़ा। क्या पहाड़में ही बन्दूक ले जा करके दे दिया जाता, तो बुरा होता? सरकारको तो चाहिये था, कि वह उनके गाँवोंमें ले जाकर उपर्युक्त संख्यामें बन्दूकोंको वितरित करती। उसने और रुकावटें और परेशानियाँ पैदा कीं। कम्युनिस्टोंके न आनेसे जो परिस्थिति पश्चिमी तिब्बतमें हुई, उसकी जिम्मेवारी हमारी सरकारके ऊपर भी है। समझमें नहीं आता कि सर्वप्रभुत्वसम्पन्न गणराज्य घोषित करनेके बाद अपनी जनताको निःशस्त्र रखनेकी क्या आवश्यकता? जब अंग्रेजोंका शासन था, उस वक्त तो कांग्रेस प्रस्तावपर प्रस्ताव पास कर रही थी कि भारतके हर एक नागरिकको हथियार बाँधनेकी स्वतन्त्रता होनी चाहिये, और हथियार कानूनको उठा देना चाहिये। भारतके स्वतन्त्र होनेपर अब भी हथियार कानूनको कायम रखके देशकी जनताको निःशस्त्र रखना ईमानदारीका परिचायक नहीं हो सकता। १९५१ की व्यापारयात्रामें यदि हमारे व्यापारियोंको जनधनकी हानि उठानी पड़ी, तो उसका दोष हमारी सरकारपर था।

उत्तरी सीमान्तपर साम्यवादका आना निश्चित है, और उसके साथ ही भोटान्तका भविष्य आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संघर्षोंसे भरा मालूम होता है।

१०. भोटान्तकी स्त्रियाँ—डाक्टर स. द. पन्त[1] ने माना है—"भोटिया (भोटान्तिक) लोगोंमें विशेषकर दारमा, ब्यांस, और चौदंसके लोगोंमें स्त्रियोंका महत्त्वपूर्ण स्थान है। गर्मियोंमें सभी कार्यक्षम पुरुष व्यापारके लिए तिब्बत चले जाते हैं, और जाड़ोंमें नीचेके बाजारोंमें। इसलिए इस समय सारेके सारे कामका भार स्त्रियों के ऊपर होता है। इस समय घरबारके सभी कारबारका वही प्रबन्ध करती हैं, कठिन समस्याओंका हल निकालती हैं, और अपने ही भरोसे महत्त्वपूर्ण कार्योंके सम्बन्धमें स्वयं निर्णय करती हैं। यह जिम्मेवारीकी शिक्षा उन्हें स्वावलम्बी तथा योग्य गृहस्वामिनी बना देती है।"

ऊनकी बुनाई मुख्यतः स्त्रियोंका काम है, जिसमें मर्द भी कभी-कभी सहायता करते हैं। स्त्रियाँ अपने बुने कपड़ेका जो चाहें सो कर सकती हैं। खेतीका काम नहींके बराबर होनेसे दूसरी पहाड़ी स्त्रियोंकी भाँति उन्हें मर-मरकर खेतोंमें खपनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। तिब्बतमें वह व्यापारके लिए नहीं जातीं, यह ठीक है; किन्तु जौलजीवी जैसे मेलोंमें वह क्रय-विक्रयमें सीधे भाग लेती हैं। पहाड़ी और नीचेकी स्त्रियोंकी भाँति उन्हें पुरुषोंका बचा-खुचा भोजन नहीं खाना पड़ता। वहाँ सारा परिवार—स्त्री-पुरुष-बच्चे एक साथ भोजन करते हैं। उनके जैसे अर्ध-घुमन्तुओंको यात्रापर रहते बारी-बारीसे खानेके लिए समय भी तो नहीं होता। ठंढे मुल्कमें रहनेके कारण ऊनी कपड़ा पहनना उनके लिए अनिवार्य है, और वस्त्रके लिए पुरुष अपनी बुनकर स्त्रियोंके अधीन हैं। सर्दीने ही मजबूर किया है कि वहाँ नंगे पैर न घूमा जाय। भोटान्तिक नारियाँ भी तिब्बती स्त्रियोंकी भाँति बिना जूतेके नहीं रहतीं। यहाँकी स्त्रियाँ शरीरसे अधिक हट्टी-कट्टी तथा अपनी दक्षिणी पड़ोसिनोंसे अधिक स्वतंत्रता रखती हैं। वहाँ स्त्री-पुरुषोंके खुले मिलने, साथ नाचने-गाने-पीनेमें वैसी बाधाएँ नहीं हैं। पर्दा तो वह जानती ही नहीं। "तरुण-तरुणी हाथमें हाथ मिलाये या कमर में हाथ डाले खड़े या टहलते तथा हँसते,

[1] "The Social Economy of the Himalayas" pp. 187—92.

चुम्बन करते आम देखे जाते हैं। वह सदा नम्र और प्रसन्न रहती हैं। लज्जा, भीरुता उन्हें छू नहीं गयी है। साधारण हालतमें भी वह मुस्कराती रहती हैं।" अलमोड़ाके दूसरे भागोंकी स्त्रियोंकी स्थिति अर्धघुमन्त मोटान्तिक स्त्रियोंसे बहुत हीन है।" बेचारी अलमोड़ाकी स्त्रियाँ खटनेके लिए ब्याही जाती हैं। हल जोतना छोड़ उन्हें ही सारा खेती का काम करना पड़ता है। सारे पहाड़में जिस आदमीके पास अधिक खेत हैं, उसके पास एकसे अधिक स्त्रियाँ भी होंगी। खेतका काम अधिक होनेसे उसे अधिक स्त्रियोंको ब्याहना पड़ता है। पहाड़ी किसानके लिए दो पत्नी तो पहिली आवश्यकता है। उसकी स्त्रियोंसे धनसम्पत्तिकी नाप होती है। स्त्रियाँ इसीलिए यहाँ वस्तुतः बर्तन-भाँड़ेकी तरह खरीदी जाती हैं। उससे पैदा हुई सन्तानमें लड़कियोंको वह नफेमें बेंच देता है।"

पहाड़की स्त्रियोंका जीवन अत्यन्त कठोर है, इसलिए आश्चर्य नहीं यदि आत्महत्यामें ७५% स्त्रियोंकी संख्या है।

अध्याय ४

निवासी

१. लोग—अंग्रेजोंके हाथमें आनेपर अलमोड़ा-नैनीतालके जिलोंका एक ही जिला कुमाऊँ था। नैनीताल जिला १८९१ में बना। कमिश्नर (आयुक्त) ट्रेलने १८२१ में गृहगणना करायी थी। प्रत्येक गृहमें ६·५ व्यक्ति सम्मिलत थे। इस हिसाबसे आजके अलमोड़ा जिलेमें उस समय १,३५,५०० आदमी रहते थे। आगे जनसंख्या निम्नप्रकार बढ़ी—

(१) जनसंख्या—

		पुरुष	स्त्री
१८२१	१,३५,५००	—	—
१८७२	३,५४,५७९	—	—
१८८१	३,६०,९६७	१,८५,६४१	१,७५,३२६
१८९१	४,१६,८६८	२,११,०६८	२,०५,८००
१९०१	४,५५,८९३	—	—

१९२१, १९३१, १९४१ में जनसंख्या निम्नप्रकार थी—

तहसील		जनसंख्या	मुस्लिम
रानीखेत	१९२१	१,६७,८०४	८३७
	१९३१	१,७८,१७६	१,१३२
	१९४१		
अलमोड़ा	१९२१	१,६७,४०२	१,४५२
	१९३१	१,६८,८१७	१,४८२
	१९४१		
पिठौराढ	१९२१	९८,४०२	२८३
	१९३१	१,२१,४०३	३९६
	१९४१		
चम्पावत	१९२१	९६,७३०	४५१
	१९३१	८६,९०६	१४८
	१९४१		
सम्पूर्णजिला	१९२१	५,३०,३३८	३,०२३
	१९३१	५,८३,३०२	३,१५८

जिलेमें प्रतिसहस्र जन्म-मृत्युकी संख्या निम्न प्रकार रही—

सन्	प्र.स. जन्म	प्र. स. मृत्यु
१९१२	४१·२९	२८·५३
१९१४	४०·८६	२६·२५
१९१८	४२·६१	४३·८३
१९२१	३३·०५	४६·४६

१९२२	२८'११	३१'७७
१९२५	३९'४३	२२'९१
१९३०	४५'७०	२५'०९
१९३२	४३'२९	२१'९२
१९३३	४४'४	१६'६

(२) आबादीकी घनता—चौड़ी और उर्वर उपत्यकाओंमें खेतीका सुभीता अधिक होनेसे वहाँ आबादी बहुत घनी देखी जाती है। सुआल, रामगंगा (पूर्वी), गगास और बनाऊकी उपत्यका अर्थात् पालीपछाँव (५०० वर्गमील) एवं बारामंडल (४०० वर्गमील) के दोनों परगनोंमें जिलेकी आबादीके आधे आदमी बसते हैं। इन दोनों परगनोंके ९०० वर्गमीलमें १६८'५ वर्गमील (१०८ वर्ग-मील पाली) खेतकी जमीन है। बारामंडलके लोध, मंसारी, कौसानी, तथा पालीके गिंवाड़ जैसे गाँव बड़े ही उर्वर खेतोंके धनी हैं। अपनी उर्वरताके कारण ही बोरारु, तिखुन, स्युनराकी ७००० नाली (१ नाली = २४० वर्गगज) भूमि ३७०३८ (१९२१) जनोंका पोषण करती है। गिंवाड (पश्चिमी राम-गंगा उपत्यका) में २३२९२ और कत्यूर (गोमती, सरजू) में ८४४३१ जनोंके निवासस्थान हैं। शोर तो कुमाऊँका बखार है, विशेषकर मध्यशोर, जिसमें महार, खेती, बलदिया, सौनअखरायेतके गाँव हैं। पालीके चौकोट, ककलासौन और दोरा भी कम आबाद नहीं हैं।

१९०१ में प्रतिवर्गमील ८६ की बस्ती थी, जिलेके ५३९० वर्गमील क्षेत्रफलमें १९३१ की ५'८३ लाख जनसंख्या बतलाती है कि उस समय प्रतिवर्गमील १०८ आदमी बसते थे। पिछले बीस सालोंमें जनसंख्या और बढ़ी है, इसमें सन्देह नहीं। इस शताब्दीके आरम्भमें प्रतिग्राम ९२ बसनेवाले आदमियोंका औसत था। इस प्रकार यहाँके अधिकांश गाँव छोटे-छोटे हैं। गाँव मुख्यतः पर्वतवाही पर बसा होता है, जिनके ऊपर और नीचे खेत होते हैं। दूरसे देखनेमें पर्वतके गाँव अच्छे और स्वच्छ मालूम होते हैं, किन्तु सारे भारतके गाँवोंकी गन्दगी यहाँ भी देखनेमें आती है। लोग पाखाना बनाने-की आवश्यकता नहीं समझते, और घरोंके पासकी जगह और गलियोंको ही पाखानेका स्थान समझते हैं। आज एवरक्लीन ढंगके सस्ते और स्वच्छ पाखाने लगवाये जा सकते हैं, किन्तु अभी इस ओर ध्यान नहीं है। सारा गोबर और कूड़ा-करकट घरोंके पास सालभर पड़ा रहता है, जिसके कारण बरसात-में इतनी मक्खियाँ भिनकती हैं कि वहाँ ठहरना मुश्किल हो जाता है।

यहाँ घरको 'कुड़,' उसके नीचेके खण्डको 'गोठ,' बराण्डेको 'गोठमाल,' ऊपरी तलको 'मझेल,' उसके खुले बरांण्डेको 'चाख,' छतको 'पारवी,' सदर द्वारको 'खोली', कमरेको 'खण्ड' कहते हैं। आगे पत्थरसे पटे आँगनको 'पटांगन,' पीछेके भागको 'कराडी' कहा जाता है। एक साथ कई मकान होनेपर उसे 'बाखली' कहते हैं। रास्तेको 'गौन', 'गधेट' या 'बाट' कहा जाता है।

(३) भाषा—अलमोड़ा और नैनीतालकी भाषा **मध्यपहाड़ीकी** कुमाउँनी बोली है, जो पूर्वी पड़ोसी नेपालीसे अधिक मिलती है। गढवाली—"कख बिटी आउँदा," कुमाउँनी—"कहूँ जना छै," नेपाली—"कहाँ जानछौ"। १९०१की जनगणनामें ९४'६७% लोग कुमाउँकी भाषा बोलते थे। उत्तरमें हिमपर्वतमाला और तिब्बती सीमाके बीचके भोटान्तिक भोटभाषा भी बोलते हैं। अलमोड़ा, चग्पावत, शोर, पाली, दानपुर पर्गनोंकी बोलियोंमें थोड़ा अन्तर है और शिल्पकार लोगोंकी बोलियोंमें भी दूसरोंकीसे कुछ फर्क रहता है। शिक्षाका माध्यम यहाँ हिन्दी है और इस प्रदेशने सुमित्रानन्दन पंत (जन्म कौसानी) जैसे हिन्दीके युग-प्रवर्तक कविको प्रदान किया है। नेपालसे आकर बस गये—विशेषकर सैनिक पेंशनर—गोरखाली (नेपाली) भाषा बोलते हैं।

(क) भाषा-भेद—कुमाउँनी, गोरखाली या हिन्दी हिन्द-आर्यभाषा वंशकी शाखाएँ हैं, इसलिए कोई आश्चर्य नहीं, यदि यहाँके लोग अपनी मातृभाषाके साथ हिन्दी भी बोलते हैं। हिमालयके निवासी भोटान्तिक तिब्बती (भोट) भाषाकी बोलियाँ बोलते हैं। यह कह आये हैं कि उन्हें तिब्बत-वासियोंसे अलग करनेके लिए हुनिया (हूण) और इनके देशको हुनदेश कहा जाने लगा। हो सकता है, इसका कारण ऐतिहासिक हो। हम जानते हैं खश, कश (कश्मीर, कशगर) और शक एक ही विशाल जातिके वाचक हैं। शक लोग ईसापूर्व १७० के आसपास हूणोंके प्रहारके कारण अपने देश (पूर्वी मध्य-एशिया)को छोड़नेके लिए बाध्य हुए थे। खसिया-परम्परा तभीसे हूणोंसे परिचित थी, उसी नामको नवागंतुक तिब्बतवालोंको दे दिया गया। यह कुछ अंशमें ठीक भी है, क्योंकि तिब्बती (बोद्पा) लोग हूणोंसे समीपता रखते थे। भोटान्तिक लोगोंकी बोली दरमा और जोहार पर्गनोंसे भेद रखती है। आर्य और भोट भाषाओंके अतिरिक्त किसी समय यहाँ किरात-किन्नर भाषा भी बोली जाती रही, जिसके बोलनेवाले (राजी) १९०१ में २२ थे।

(ख) पहाड़ी बोलियाँ—पहाड़की निम्न १४ बोलियोंको हिन्दी और नेपालीके साथ तुलना करनेपर मालूम होगा कि यहाँकी बोलियोंका नेपाली (गोरखा) भाषासे नजदीकका सम्बन्ध है—

(१) हिन्दी—एक समयमें दो विख्यात शूरवीर थे। एक पूर्व दिशाके कोनेमें, दूसरा पश्चिम दिशाके कोनेमें रहता था। एकका नाम सुनकर दूसरा जल-भुन जाता था। एकके घरसे दूसरेके घर जानेमें बारह वर्षका मार्ग चलना पड़ता था।

(२) अलमोड़िया—कै समयमें द्वी नामि पैक एक पूरब दिशाका कुणमें दोहरो पछोंका कुणमें रौं छिया। एकका नाम सुणिबेर दोहरो रीसमें भरियो रौ छिया। एकका घर बटि दोहराको घर बार वर्षको बाटो टाड़ छियो।

(३) नेपाली—कुनै दिनमाँ दुईटा बलिया जोधा थिये। यौटाक पूर्व दिशामाँ रहन्दथ्यो। यौटाको नाम सुनी अर्को रिस गर्थ्यो। यौटाको घर अर्कोको घरबाट बार बर्खमाँ पुग्थ्यो।

(४) अलमोड़ा शिल्पकार बोली—कै जमाना माँजी दुई नामवर पैक जन थीणी भड़-कौनी छिया। एक पूर्व दिशाका कूँणा माँजी दुँहरो पच्छिम दिशाका कूँणा माँजी रौ छियो। एकको नाम सुणीबेर दुहरो रोशका मारा जलनछियो, एकको घर बटी दुहरोको घर बार वर्षका बाटा दूर माँजी छियो।

(५) भाबरकी कुमाऊँ-बोली—यक् तकम् द्वी परख्यात पैक छिया। यक पूरबका कुंनम् रन् छिया दूसरो पछिमका कुंनम् रन् छिया। यकको नौं सुनी दूसरो जली पाकी रन् छियो। यकका घर है दूसरोको कुड़ो बार वर्षको बाटो छियो।

(६) काली-कुमाऊँ बोली—कै वक्तमें द्वी जन बड़ बीर छ्या,। एक जन पूर्वका कुनामें, दूसरो पछिमका कुनोंमें रौं छौ। एकको नाम सुनीबेर दोसरो भारी रीसको जल छौ। एकका घर हे दोसराका घर बार वर्षका बाटा दूर छौ।

(७) डोट्याली बोली—कोई एक जुगमँइ दुये पैकैला नाऊँ चल्याका थ्या। एक पुरुब दिसाका कोनामा रहन्थ्यो, दुसरो पैक्यालो पच्छिम दिसाका कोनामा रहन्थ्यो। एकका नाम सुनीबेर दुसरो बहुतै रीस करन्थ्यो एकको घर हैबेर दूसराको घर बार बरसको बाटो थ्यो क्या।

(८) शोरकी बोली—कै बखतमें द्वी बड़ा जोधा छ्या, एक पूर्वका कोनमें दूसरो पच्छिमक कोनमें रौं छ्यो। एकको नाम सुनिबेर दूसरो जलछ्यो। एकको घर दूसराका घर बटि बार वर्षको बाटो छ्यो।

(९) जोहार (भोटान्त) की बोली—क्वै दिनन् या द्वी बड़ा हामदार भअड़ छिया। एक

पूर्वका क्वाणा माँ हुहरो पछिमका क्वाणा माँ रौं थी। एकक नौ सुणिबेर दुहरो जलन् थी। हौर एकक कुंड़ो बटि दुहराको कुंड़ा बार वर्ष टार थी।

(१०) दानपुरकी बोली—पैल बखतमाई दो देखा भड छिलो। येक हाडि पूर्व दिशाक छोड़ माँ दूसरो पछिमाक दिशाक छोड़ माँ रोहिलो। याकक नाम सुणबेर लौं दूसरो आगझै लागि जानी हाड़ि। याकक घर लो दूसराक घर बटी बार बर्षक बाटो छिलो।

(११) द्वाराहाटकी बोली—कै दिनामें द्वी गाहिन पैक छिया, येक पूर्वका कूणामें रहन् छियो, दूसर पच्छिमका कूणामें रहन् छियो। येकक नाँ सुणीबेर जल छियो। येक क धूंयाल दुहरक धूंयाल है बेर १२ वर्षक बाटमें छि।

(१२) लोहवा (गढवाल) की बोली—कै जमानामा दुई आदमि बड़ा नामि भड़ छ्या। येक पूर्व दिशाका कोणामाँ रन् छ्यो, दोशरो पच्छिम दिशाका कोणामा रन् छ्यो। एकाकौ नौ सुणि किन दोशरो जलछ्यो। येका डेरासे दोशरो डेरो बार बरशका रास्ता छ्यो।

(१३) श्रीनगर (गढवाल) की बोली—पहला जमानामाँ द्वि नामी वीर छ्या। एक पूर्वका दिशाका कोणमा रहन्दो छ्यो, दुसरा पच्छिम दिशाका कोणमा रहन्दो छ्यो। एकको नाम सुणीक दूसरो जल्दो छ्यो। एकको घर दूसराका घरते बारा वर्षको बाटो छ्यो।

(१४) टिहरी (गढवाल) की बोली—पल एक जमानामा द्वि ख्यात भड़ थया। एक पूरबका दिशाका कोणमा रहन्दो थयो और और दूसरो पच्छिम दिशाका कोणमा रहन्दो थयो। एकको नउँ सुणिक दूसरो जल्दो थयो। एकको घर दूसराका घरने बार वर्षका रस्तापर दूर थया।

(१५) बोगसा (तराई) बोली—किश ही जवानीमें दो याशाहर पैक अयानी वीर थे। एक पूरब दिशाके कोणेमें दूसरा पच्छिम दिशाके कोणेमें रह हो। एको नाम सुनकर दूसर जर हो। एकके घर सै दूसरेका घर बार बरस राहो दूरे पर था।

(१६) थारु (तराई) बोली—एक समयमें दो नामी देवता है। एक (ससुर) अगारकी दिशाके कोनेमें राहत हो और एक पछारकी दिशाके कोनेमें राहत हो। एकको नाम सुनके दूसरो गुमा है जात रा है। एकके घरसे दूसरेको घर बार बरसकी राहमें हो।

३. जातियाँ—यहाँके हिन्दू मुख्यतः दो भागोंमें बँटे हैं—ब्राह्मण, राजपूत, जिन्हें बीठ या विष्ट भी कहा जाता है। जो सम्भवतः वैदिक विट् या विश्से है, और डोम, खस राजपूत अलग माने जाते थे, और खश् ब्राह्मण भी थे, किन्तु अब यह भेद बहुत कुछ मिटता गया है, और शायद ही कोई अपनेको खसिया कहना स्वीकार करे। खसिया लोग पहिले जनेऊ नहीं पहनते थे। पीछे एक बार तो जनेऊ लेना हिन्दूमात्रने आवश्यक माना, यद्यपि अब वह श्रद्धा उतनी नहीं है। बीठ (खस) लोग अपने 'ठाटों' या मूल-स्थानोंको नामके साथ कभी-कभी लगाते हैं, जैसे, नैनवाल (नैली), बरगाली (बरगाल) पधोलिया (पधोली), पलियाल (पाली)। खस ब्राह्मण हल जोतनेके कारण हलवाले ब्राह्मण भी कहे जाते रहे, और पितलिया ब्राह्मण भी, शायद खरा सोना न होने या पीतलका जनेऊ पहिननेके कारण। खस लोग पूर्वी मध्य-एशियामें (कजाकस्थान) तक फैले शक या खस-द्वीपसे आयोंसे भी पहिले पहाड़ ही पहाड़ आये, यह हम कह आये हैं।

(१) ब्राह्मण—

इनकी संख्या १९२१ की जनगणनामें थी—

	पुरुष	स्त्री
१,२६,२७२	६२,७३९	६३,५३३

आज कोई ब्राह्मण अपनेको खसिया कहनेको तैयार नहीं हैं। कुलीन (चौथानी) ब्राह्मण अपनेको पीछे देशसे आया बतलाते हैं। पन्त लोगोंका कहना है कि उनके पूर्वज जयदेव २१ पीढ़ी पहिले कोंकणसे यहाँ आये, और राजाने उन्हें गंगोली परगनेमें **उपरारा** गाँव दान दिया। ये ब्राह्मण केवल पुरोहिताई और पंडिताईतक ही अपनेको सीमित नहीं रखना चाहते थे, जैसा कि परखू (पुरुषोत्तम पन्त) के जीवनसे मालूम होता है। परखू राजा रुद्रचन्द्रके सेनापति थे, और गढ़वालियोंसे युद्ध करते काम आये। जयदेव पंतके वंशज हमारे मुख्य मन्त्री पण्डित गोविन्द वल्लभ पंत हैं। पांडे लोग अपनेको कोट-काँगड़ा तथा मध्यदेशसे आया बतलाते हैं। काँगड़ासे आये राजाके पुरोहित हुए, और नीचेवाले रसोइया। **जोशी** चन्दवंशी राजाओंके साथ झूसीसे आये, किन्तु जोशी और झूसी झूठा शब्दसाम्य है। इसमें सन्देह नहीं कि कुमाऊँके अन्तिम राजवंश (चन्दवंश) के शासनकालमें जोशियोंके हाथोंमें शासनकी बहुत अधिक शक्ति रही—विशेषकर सत्रहवीं-अठारहवीं सदीमें। अंग्रेजी शासनकालमें भी जोशी बड़े-बड़े सरकारी पदोंपर पहुँचे। इन्हींमेंसे झीजाड़के एक जोशी (पूरनचन्द जोशी) बारह बरसों-तक भारतकी कम्युनिस्ट पार्टीके प्रधान मन्त्री रहे। शिवदेव जोशी अन्तिम कालमें राजाओंके बनाने बिगाड़नेवाले थे। हर्षदेव जोशी गोरखाविजयके अभिभावक थे। **तिवारी** अधिकतर किसान, पुरोहित, अध्यापक और सरकारी नौकर हैं। उपरेती, उपाध्याय, पाठक, दुगाल, भट—ये भी ब्राह्मणोंके उपनाम हैं। ब्राह्मणोंमें कुछके मूल गाँव हैं—

पंत	गंगोली, स्युनराकोट
जोशी	सेलाखोला, गल्ली, चीनाखान, झीजाड, दनिया
पांडे	पटिया

ऊँची जातिके ब्राह्मण सदा कुमाऊँ (कूर्मांचल) राजा या अंग्रेजी सरकारके बड़े-बड़े अफसर हो नगरोंमें रहते रहे। गाँवोंमें ब्राह्मण खेतीके साथ-साथ जोतिषी, वैद्य और पुरोहितका काम करते रहे।

पहाड़के ब्राह्मणोंमें सबसे बड़ी संख्या खसिया ब्राह्मणोंकी है, जो प्रायः सारे ही किसान हैं, बहुत थोड़ेसे ही उनमें गाँवके साधारण देवताओंके पुजारी हैं।

ब्राह्मणोंकी उपजातियाँ—

कुमाऊँके ब्राह्मणोंकी उपाधियाँ और आस्पद निम्नलिखित हैं—

प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद	प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद
अकुराल	,,	इडाकोटी	
अघोई	मिश्र	उपधिया	(जोहार)
अचरिय (आचार्य)		उपध्याय	खेती
अधिकारी[1]		,,	दुग
अनरणी	उपाध्याय	,,	बैध (सीसा)
अनरौला	भट्ट	,,	सौज्याल विष्ट
अवस्थी	ओस्ती, वोस्ती	उप्रेती	चौकी गाँव
असपाड़ा	तिवाडी	उलटणिया	
आगौ	पन्त	ओझा	झा
आचार्य		ओस्ती	अवस्थी
इजटा	मिश्र	ओली	पांडे

१. काशीराम अधिकारीने काशीपुर बसाया।

प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद
ओलिया	उपाध्याय
कठौलिया	तिवाडी
कनसेरी	मिश्र
कनेली	ज्योतिषी
,,	मिश्र
कन्याणी	भट्ट
कन्याल	उपाध्याय
,,	कफडी
,,	जातलोहनी
कपकोटी	उपाध्याय
कपुली	भट्ट
कपोली	
कफडी	कन्याल
कफलटी	मिश्र
कवड़ताल	
करंडिया	
करगेती	ज्योतिषी
,,	मिश्र
करागेती	(जोहार)
कश्मीरी	मिश्र
काणखेती	
कापडी	भट्ट
किमाडी	
कुकरेती	मिश्र
कुमया	उपाध्याय
,,	काना
,,	मिश्र
कुलेठा	पुनेठा
,,	मिश्र
,,	भट्ट
कुसौलिया	
कोटगाडा (०गाडो)	उपाध्याय
कोठारी	दीक्षित
,,	भट्ट
कोठ्यारी	
कोणाखेती	

प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद
क्वेराला	भट्ट
खटकीनी	जोशी
खडेरी	
खरख्वाल	मिश्र
खराल	उपाध्याय
खोली	जोशी
खुनौलिया	
खेती	उपाध्याय
खोली	,,
गड़मोलिया	मिश्र
गडियाल	,,
गड़ियूडा	भट्ट
गडौली	पांडे
गरवाल	मिश्र
गुनी	मिश्र
गुराणी (०नी)	
गुरेलो	भट्ट
गोठलिया	जोशी
गोताड़ी	चौबे
गोलनासरी	भट्ट
गौल हरडिया	
गौली	पांडे
ग्वालकोटी	मिश्र
घघौली	
घिलडियाल	
घुगत्याल	मिश्र
चंदोला	मिश्र
चनौलो	
चपड़वाल	जोशी
चरमाल	,,
चरम्याल	,,
चहज	,,
चहजी	
चहाली	भट्ट
चिमखोला	मिश्र
चिमरिया	

प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद
चिलवाल	ज्योतिषी
चौड़ासी	चौसजी
चौडियाल	भट्ट
चौथिया	
चौनिया	मिश्र
चौनील	तिवाडी
चौल्या	चौबे
चौलेटा	जोशी
छतगुली	
छतगुली	ओझा
छिमवाल	चौबे
,, (नेगी)	,,
छुपका	आदिगौड़
जखोली	मिश्र
जेग्यूडिया	पाराशर
जोशी	उरग
,,	कत्यूर
,,	खरही
,,	,, कन्याल
,,	खेई
,,	गल्ली (आंगरस)
,,	गित्वाल (भारद्वाज)
,,	गैरखेती
,,	चीनाखान (गौतम)
,,	जावन्याल
,,	झीझाड़ (गर्ग)
,,	डूँगा कन्याल
,,	बन्या (उपमन्यु)
,,	दिगौंबी
जोशी	धुरियाल
,,	नैशी
,,	पतडिया
,,	पोखरी
,,	बिसौंत
,,	मेरंग (कौशिक)
,,	मकड़ी

प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद
जोशी	मसमोली
,,	मंटा
,,	लटौला
,,	सिलवाल
,,	सिणै (गल्ली)
,,	सीरा (पाल)
,,	सैजाँ
,,	स्यूनरा
झिरौटिया	
टकवाल	मिश्र
टुरेडा	पोकाला
डंगवाल	उपाध्याय
डढुला	मिश्र
डालोकोटी	
डिगरिया	मिश्र
डुनियाल	
डुंगराकोटी	गौड़
डुंगरियाल	मिश्र
ढोलिया	,, (भट्ट)
ढुंगसिला	
दैला	
ततराड़ी	
तलड़िया	मिश्र
ताँखोलो	
तेलिया	
त्याड़ी (तिवाड़ी, त्रिपाठी, त्रिवेदी)	
,,	डढ़ोली
,,	खरही
त्रिपाठी	गौतम
थपस्याल	उपाध्याय
,,	बौरारौ
,,	सतरासी
दड़मवाल	मिश्र
दंढभाउलो	
दंतोलिया	उपाध्याय
दफौट	जोशी

प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद	प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद
दरमोला	(जोहार)	पचोली	(गौड़)
दुगाल	भट्ट	पडलिया	मिश्र
,,	भारद्वाज	पढौला	ज्योतिषी
,,	(दुर्गपाल)	पतडिया	उपाध्याय
दुबेनिया		पनेरु	,,
दुमका	भट्ट	पन्त	कुडकोली
दुमुका	उपाध्याय	,,	खरदी
देव खोलिया	(धोखोलिया)	,,	गौखुरी
देवली	पांडे	,,	डूंगाकन्याल
देनी	जोशी	पन्त	पाराशर
दोबेधिया	(जोहार)	,,	भारद्वाज,
घगौलो			नाथू (पौराणिक)
घनखोला	भट्ट	,,	,, भवदास (सेनापति)
घनेला	मिश्र	,,	,, श्रीनाथ (राजगुरु)
घरियाल		,,	वाशिष्ट
घसकौड़ी	उपाध्याय	,,	शर्मा (वैद्य)
धुरकी	भट्ट	,,	हटवाल (भारद्वाज)
धौणिया	तेवाड़ी	पपनै	भट्ट
धौलखनी	मिश्र	पारणी	मिश्र
धौलाद्री	जाल (बौरारौ)	पाटिया	कसौन
नगीला		पाठक	(जोहार)
नदोलिया	मिश्र	,,	काश्यप
नहरगी		,,	दसौली
नागाई	मिश्र	,,	पठक्यूडा (शांडिल्य)
नागिल (०लो)	(जोहार)	,,	सौजा
,,	उपाध्याय	,,	हाट
,,	जोशी	पांडे	कुलेटा
नन्वाल	मिश्र	,,	खोर (भारद्वाज)
नेवालिया		,,	खोला
नैठा	पाठक	,,	गुरेल
नौगाई	मिश्र	,,	छचार
नौटियाल	,,	,,	काना ? (छाना)
नौलिया	मिश्र	,,	ढोली गाँव
नौरगी	जोशी	,,	देवलिया (गौतम)
नौरगी	(जोहार)	,,	नायल
पचोलिया	उपाध्याय	,,	पतेलखेत

प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद
पाँडे	पल्यूँ
,,	पाटिया
,,	पारकोटी
,,	बड़खेडा (काश्यप)
,,	बयाला
,,	बेलकोट
,,	बैड़ती
,,	मझेंडा
,,	मंडलिया
,,	मनोलिया
,,	मेलटी
,,	ह्यिचोडी
,,	वत्स भार्गव
,,	सीमाल्टीय (काश्यप)
,,	रस्यारा
पासदेव	
पुठणिया	
पुंडोला	मिश्र
पुनेठो कुलेछो	
पैठाण	जोशी
पोखरिया	
पोथिड्	
पोलचोल	गढमौलिया (जोहार)
पोसालिया	
पौकाल	
फुलपतिया	
फुलारा (०रो)	मिश्र
बगडवाल	
बगुनी	(गौड़)
बगोली	,,
बगौनिया	मिश्र
बमोरिय	
बघाणी	भट्ट
बचखेती	,,
बजखेती	ज्योतिषी
बजेडिया	

प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद
बटगली	भट्ट
बड़सीची	गौड़
बडुवा	भट्ट
बनौला	
बमनपुरी	गौड़
बरतोला	जोशी
बलिया	,,
बसगाई	
बसेल	पांडे
बसोटी	मिश्र
बसौला	मिश्र
बहेडिया	
बाछनी	मिश्र
बाडवे	जोशी
बाराकोटी	उपाध्याय
,,	जोशी
बालतोड़ी	
बास्ते	भट्ट
बिछराल	
बिरौड़िया	
बिलवाल	
बिष्ट	मंगोली
,,	गडेरा
,,	डडया
,,	सौज्याल
बिस्टाल	भट्ट
बुधाणी (०णा)	उपाध्याय
,,	बालसाणी
बिनवाल	
बिमली	मिश्र
बेडिया	कारनाटक
बेलवाल	
बैने	उपाध्याय
भटगाई	
भट्ट	
,,	उपमन्यु

प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद	प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद
भट्ट	काश्यप	मौतौड़ी	जोशी
,,	खेतीगाँव	रतखनिया	मिश्र
,,	विशाड	रमक	,,
,,	विसौत	रिखाड़ी	पन्त
,,	भारद्वाज	रुवाली	मिश्र (बरतोला)
,,	विश्वामित्र	रैगुणी	उपाध्याय
भदरिया		रैनोडी	
भनौलीय	मिश्र	रैल्कोट	जोशी
भट्वाल	,,	लोहनी	उपाध्याय
भाट	फुटसिला	लौकोटी	मिश्र
,,	भट्ट	वूस्ती	अवस्थी (अस्कोट)
मंगोलो		वैद्य	अनूपशहर (उपाध्याय)
मढवाल[1]	भारद्वाज	शिवनाई	
मंटनिय		संगरौलिया	
मध्योलिय	ज्योतिषी	संगवाल	(गौड़)
मनटणिया (निया[1])	उपाध्याय	सती	मिश्र
मनरिया	भट्ट	सनवाल	पांडे
मनौलिया	मिश्र	समकूजा	चनोलो
मन्यूटिया	,,	सरणी	तेवाड़ी
ममगाई		सांगडी	पन्त
ममिवाल		सिटौला	मिश्र
मलटणियाँ		सिमलटिया	देवलिया
मलसुनी	ज्योतिषी	सिरोलिया	
मश्याल	मिश्र	सिलकोटी	मिश्र
मातोलिया		सीरा वैद्य	उपाध्याय
मिश्र	उपमन्यु	सुनौली	,,
मिसर	दिवदिया (दिवतीया)	सुल्याल	जोशी
मुनगली		सुयाल	
मुराडी	भट्ट	सूपी	पांडे
मुलगडी		सेलिया	मिश्र
मेजडा	पांडे	सेलौटो	
मेलकनिया	उपाध्याय	सेटो	
,,	मिश्र	स्याकोरी	
मेसमौली	जोशी	स्यूरिया	मिश्र

१. कहा जाता है—द्वाराहाटमें बौद्ध ब्राह्मणोंके हाथसे लेकर इन्हें वहाँके बदरीनाथका पुजारी बना दिया गया।

प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद	प्रसिद्ध आस्पद	द्वितीय आस्पद
स्यूरी	ज्योतिषी	हतेली	मिश्र
हटवाल[1]		हरिबोला	उपाध्याय
हतवाल		हिंगचुड़िया	,,

जयदेव-पन्तका वंश-वृक्ष :—

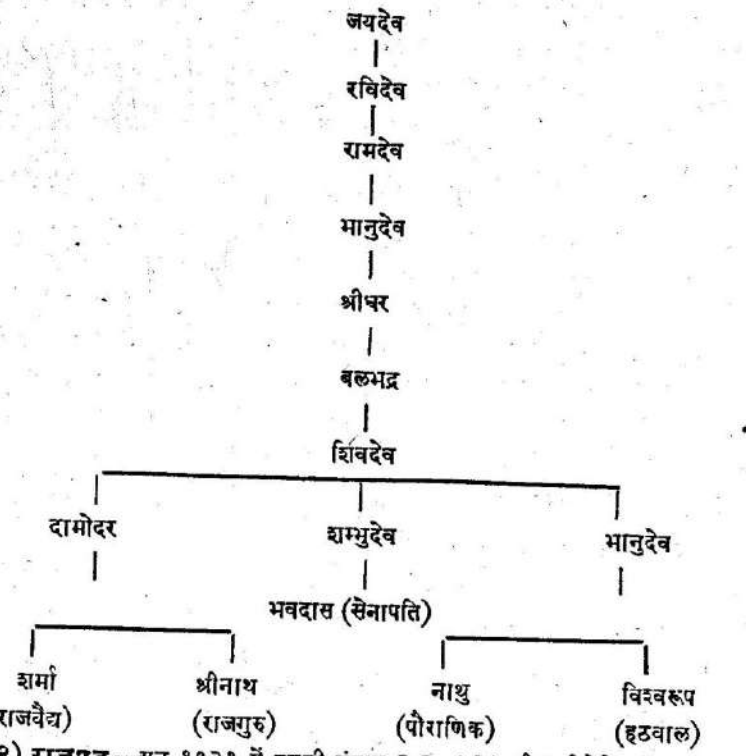

(२) **राजपूत**—सन् १९२१ में इनकी संख्या २,६०,५३६ थी। नीचेके प्रसिद्ध राजपूत यहाँ मुश्किलसे १० सैकड़ा हैं।

(क) कत्यूर-वंशज—सबसे ऊँची श्रेणीके राजपूत 'रजवाड़' और 'मनुराल' हैं। ये दोनों ही सूर्यवंशी कत्यूरी (वैस) राजाओंके वंशके हैं, जिनका उत्तरी कुमाऊँ (और गढ़वाल भी) पर पीछेतक शासन रहा। **रजवाड़** वंशके जसपुर (बिचला चौकोट) और अस्कोट (जिलेके पूर्वी छोरपर) में अविभाज्य राज्य रहे। अन्तिम कत्यूरी राजा वीरदेवको हटाकर चन्द राजाओंने राज ले लिया, तो उसके वंशज पालीमें बस गये, ये ही मनुराल (मनराल) कहे जाते हैं। मनुराल नाम पड़नेका कारण मिकियासेनमें पल्ला नयाके मनिला शिखर अथवा वल्ला साल्टमें उसी पर्वतमें अवस्थित **साईं मनूर** गाँव बतलाया जाता है। इनके पास चन्द राजाओं और गोरखा राजाकी दी हुई सनदें हैं। जसपुरके रजवाड़के हाथमें गढ़वालका जंगली इलाका था, जो अबतक अलमोड़ाके बिचला कोटमें है।

१. द्वाराहाट, तेलीहाट, सेलीहाट, गाँवहाट, बाड़ाहाट, डिंडीहाट, गंगोलीहाट, बगड़ीहाट जैसे कस्बोंके ब्राह्मण।

मनुराल्के हाथमें अब भी अधिक इलाके हैं। बिचला कोट ही नहीं, वल्ला साल्ट और गिवाँडमें उनकी बहुत-ही थोक-दारियाँ (जमींदारियाँ) हैं। तमाधौंदके मनुरालों और जसपुरके रजवाड़ोंके मुखिया आज भी **सयाना** कहे जाते हैं, जो मानमें थोकदारीसे भी बड़े हैं। सैनिक सेवाके लिए जागीरें उन्हें मिली थीं। इनकी थोकदारियाँ पालीके पच्छिममें अवस्थित हैं। यह झगड़ेका इलाका है, और यहीं उनका महत्त्वपूर्ण किला जुनियागढ है। गढ़वाल कुमाऊँके सीमान्तके झगड़ोंके खतम होनेके साथ मनुरालों और रजवाड़ोंका भी महत्त्व कम होता गया और अब तो उत्तरप्रदेशमें जमीदारीके भाग्यके साथ यहाँकी थोकदारीका भी फैसला हो रहा है।

(ख) चन्दवंशज—रौतियाल चन्दवंशके छुटभइयोंमें थे। इन्हें चम्पावत (राजधानी) से दूर जागीरें मिलीं—बारामंडल, चौगरखा और पालीमें गाँव दिये गये। पडियार वंशी रावत और दोसाध बिस्ट दूसरी राजपूत जातियाँ हैं।

(ग) खसिया—राजपूतों (खसिया[1]) में कुछकी उपाधियाँ रावत, बिस्ट और नेगी है। नेग उत्तरप्रदेशमें ऐसे दिये जानेवाले धनको कहते हैं, जो बहिन, आदि सम्बन्धियों तथा नाई, कुम्हार आदि लोगोंको ब्याह-शादी आदिके समय दिया जाता है। नेग पानेवालोंको नेगी कहते हैं। पहाड़में काली नदीसे सतलजतक नेगी उपाधिका व्यवहार अमात्य जैसे अर्थमें आता है। रामपुर बिशहर रियासतमें बिस्ट भी पहिले किन्नर जातीय राजमन्त्रीको कहा जाता था। नेगी और बिस्टकी उपाधियाँ मूलतः खसोंसे सम्बन्ध रखती थीं। पीछे गढ़वाल और कुमाऊँमें सैनिक अधिकारियोंको कहा जाता था। गढ़वालमें नेगियोंकी संख्या अधिक है। खस राजपूतोंमेंसे कुछके नाम हैं—बोरा (बोरारावके), कैरा (कैरारावके), महार (महारके) और हित। खसोंके ८८९ वंश बतलाये जाते हैं। देशमें तो कहावत है, 'धान और राजपूतोंकी जातिकी संख्या नहीं है।'

(घ) खसोंका विधान—यह बतला चुके हैं कि हिमाचलके बड़े भागका नाम 'खस देश' यथार्थ है। आज भी यहाँके अधिकांश लोग खस हैं, यद्यपि ब्राह्मणोंकी जात-पाँतका प्रभाव अधिक व्यापक हो जानेसे अब **सभी अपनेको राजपूत कहते हैं**[2]।

---

१. "नेपालमें राजपूतोंके बाद खस, फिर गुरुंग, फिर मंगर तब सुनार श्रेष्ठ गिने जाते हैं"···पंजाबके पहाड़ी इलाकों (काँगड़ा) में खस लोग कनैत कहलाते हैं।
"पश्चिमकी ओर जो मुल्क नेपाल और कश्मीरके बीचमें हैं,···प्राचीन हिन्दू ग्रन्थोंमें उन्हें खस देश माना गया है। यहाँ के निवासी खसिया कहे जाते हैं। यह जाति राजपूतोंसे कुछ कम समझी जाती है···थापा, घराँती, कारकी, रायमाजी, बसनेत, बिस्ट, राणा, खड़का, खस जातिके है, पर यह जनेऊ पहनते हैं और क्षत्रियोंकी तरह रहते हैं···भीमसेन और अमर सिंह थापा··· खस जातिके थे। थापा दो प्रकारके हैं—खस और रंगू। घराँती भी दो प्रकारके हैं। खस और भुजेला रायमाजी भी दो प्रकारके हैं—खस और मंगर। माझी और धीवर भी खस थे, जो हिन्दू बनाये गये···कुमाऊँ और नेपालके लोग खसिया तथा खशदेशवासी कहलाते थे। बाहर मैदानसे आये लोग इसे नहीं मानते।"—The kingdon of Nepal (by F. Hamilton.)

२. "बहुतसे पढ़े-लिखे (ब्राह्मण) लोग खस या खसिया कहनेसे नाराज होते हैं। धनी लोग अपनेको राजपूत या ठाकुर कहते हैं। सन् १८७२ ई० में १,२४,३८३ आदमियोंने अपनेको खस लिखवाया था। सन् १८८१ में खसिया (खस) और राजपूत—सब राजपूतोंमें गिने गये।—अटकिन्सन, कुमाऊँ इतिहास, पृष्ठ ५४५।"

किन्तु आज भी ब्राह्मणोंकी मिताक्षरीय व्यवस्था तथा खस रीति-रवाजोंमें भारी अन्तर है। यथा—

खस	ब्राह्मणिक
उपपति (टेकुआ) भाईकी विधवाको रख लेना।	उपपति तथा विधवा विवाहका निषेध
स्त्रीको धनसे खरीदना	स्त्रीके लिए धन नहीं देना
बिना संस्कारके भी विवाह	विवाह-संस्कार तथा आँचल आवश्यक
विवाह-विच्छेद अनुचित नहीं	विवाह-विच्छेदका निषेध
ढाँटी विवाह अनुचित नहीं	ढाँटी विवाह अनुचित
जनेऊ आवश्यक नहीं	जनेऊ आवश्यक

खसोंकी कुछ प्रथाएँ हैं—

(i) **घरजँवाई**—रखा जा सकता है, फिर सम्पत्तिमें लड़की का ही अधिकार होगा। लड़केको दान-पत्र करनेपर ही कुछ मिलेगा। विधवा भी घरजँवाई रख सकती है, किन्तु दामादोंकी अनुमति बिना पैतृक सम्पत्ति उसे नहीं मिलेगी। वैध, अवैध—दोनों प्रकारकी सन्तानोंको उत्तराधिकार सम्मान होगा।

(ii) **जेठों (जेठांश)**—जेठे भाईको और भाइयोंसे थोड़ा अधिक अंश कहीं-कहीं मिलता है।

(iii) **झटेला**—दूसरे घरमें चली गई स्त्रीके पहिलेके पतिकी सन्तानें भी साथ जानेपर जायदादमें अधिकार पाती हैं।

(iv) **सौतिया बाँट**—पहिले रवाज था कि अनेक पत्नियोंकी सन्तानोंमें पैतृक सम्पत्तिके समान बँटवारेकी जगह उत्तराधिकार सौतोंमें बराबर बँटता था।

(v) **टेकुवा**—विधवा या अविधवा स्त्री अपने घरमें किसी पुरुषको पति करके बैठा लेती है, उसे टेकुवा कहते हैं। टेकुवाको घरकी सम्पत्तिमें अधिकार नहीं मिलता, किन्तु उसकी सन्तानको घरकी सम्पत्तिमें समान अधिकार मिलता है।

राजपूतोंमें बहुतसे शकोंकी सन्तानें हैं, खस उसी शकवंशकी एक ज्येष्ठ शाखा थी, यह बतला आये हैं, इसलिए राजपूत और खस मूलतः एक ही हैं।

(ङ) **शाह**—सन् १९०१ की जनसंख्यामें ३,१११ बनिया लिखे गये थे, जिनमें अधिकांश अग्रवाल थे, जो व्यापारके सिलसिलेमें यहाँ बसे। अब संख्या और बढ़ी होगी।

अलमोड़ा और द्वाराहाटके शाह भी बनिया कहे जाते हैं, किन्तु उन्हें इसमें आपत्ति है। पहाड़के बड़े व्यापारी तथा नैनीताल, रानीखेत, अलमोड़ा जैसे शहरोंमें बहुत-सी बड़ी-बड़ी कोठियोंके ये ही मालिक हैं। अलमोड़ाके सरकारी खजानेके खजांची साह ही होते आ रहे हैं। सन् १८५७ के विद्रोहमें सहायता देनेके उपलक्ष्यमें अंग्रेजोंने उस समयके खजांची जयसाहको जागीर दी थी। जयसाहने अपनी सारी सम्पत्ति खजांचीपदकी जमानतके तौरपर सरकारको दे दी। तबसे खजांचीपद जयसाहके वंशका खानदानी हो गया। साह लोग उच्च राजपूतोंकी लड़कियोंसे विवाह कर लेते हैं, किन्तु अपनी लड़कियाँ उन्हें नहीं देते। कुछ लोगोंका कहना है कि वह वस्तुतः टेहरी या नेपालके [illegible] वंशकी भाँति शाह पदवी रखते हैं, जिसका वैश्य साहुसे सम्बन्ध नहीं है।

रजवार रौतेले जैसे उच्च राजपूतवंशोंकी कन्याओंसे ब्याह करना बतलाता है कि साह लोग राजपूतोंमेंसे हैं, और शायद अपने धन, विद्या, प्रभावके कारण अपनी अलग इकाई रखनेकी जिद

ही इन्हें अलग रूप देनेमें कारण हुई। इनके भेद हैं—कुमर्य्या, खोलभितरिया, गंगोला, चौधुरी, जगाती (०काती) टुलघरिया, तौला और सलीदगढ़िया।

राजकाज हाथसे निकल जानेपर शकराजवंशी शाही लोगोंने व्यापारका काम सँभाला हो यह असम्भव नहीं है। आखिर अग्रवाल भी चौथी सदी तक 'जयमंत्रशाली' यौधेय क्षत्रिय थे, जो अपने गणराज्यके ध्वंसके बाद वैश्य-वृत्ति स्वीकार करनेके लिए मजबूर हुए। साह या साही पदवी शक राजाओंमें प्रचलित थी, जो पीछे उनके वंशज छोटे-छोटे राजाओंमें (गिलगितमें आठवीं सदीतक) और पामीरमें सोवियत क्रान्ति (१९१७ ई०) तक रही।

राजपूतोंकी उपजातियाँ

कुमाऊँके राजपूतोंकी सूची निम्नलिखित प्रकार है[1]—

अंगलिया	पड्यार	कठोड़िया	(पीलीभीत)
अठार	(अवधके)	कठोलिया	कठेरिया (पीलीभीत)
अदकरिया		कडवाल	(झाँसी)
अदगारी	ठाकुर (बनारस)	कडाकोटी	हरनौली (गढ़वाल)
,,	(पंजाब)	,,	(ककलासौ)
अधिकारी	बिस्ट	कडायत	(नेपाल)
अलमिया	(नेपाल)	कंडारी	(गढवाल)
असगोला	(कन्नौज)	कनवाल	(कन्नौज)
असपाल		,,	(नेपाल)
असवाल	पँवार	कनारी[3]	
,,	नागवंशी (गढवाल)	कणोनिया	बिस्ट (कन्नौज)
आगरी		कनौजी	दानव (गढ़वाल)
इजराल		कनौली	
उनीणी	बिस्ट, चन्द्र (कन्नौजी)	कन्याल	(राजपुताना)
उलसै		कपकारी	शाही (नेपाल)
ऐटारही	रौतेले (नेपाल)	कपकोटी	(दक्षिण)
ऐटारी		,,	(दानपुर)
ऐठाणी	(कानपुर)	कफलिया	राणा (चित्तौड़)
ऐडा	पँवार	कमनाल	
ऐडी		करम्याल	
ककड़वाल	(झाँसी)	करौला	नेगी (गढ़)
कठायत	कठेड़िया	कापड़ी	
कठैत[2]	(रुहेलखंड)	काफिला	रौतेला (धारा)
कठैत	(नेपाल)	कारकी	राणा (चत्तौड़)
,,	(पंजाब)	,,	,, (नेपाल)

१. कोष्ठकमें मूलस्थान।
२. काथी (०ठी) वंश।
३. कुमारी वंश तो नहीं?

कारकी	(दानपुर)
,,	(सूर्यवंशी)
कालाकोटी	कत्यूरी (दुग)
कालामुनिया	(भोटान्त)
कुच्याल	(डोटी)
कुफाल रफाल	
कुमदल	
कुमया	बिस्ट (पंजाब)
कुमय्या (कुमैया)	साह
कुमलती	
कुमलतिला	राणा (चित्तौड़)
कुमाल्टा	
कुलौला	(अवध)
,,	(गढ)
कुँवर	(सूर्यवंशी, अयोध्या)
,,	खवास (झूसी)
,,	गौतम (झूसी)
,,	,, (नेपाल)
,,	धाणिक (धारा)
,,	भवाल (नेपाल)
,,	(सूर्य०, नेपाल)
,,	(नेपाल)
,,	रौतेला (अवध)
कैडा	चौहान
कोटगाडी	
कोटने	बिस्ट (नेपाल)
कोटलिया	ठाकुर (माध्यन्दिन)
कोटिया	
कोटौला	बिस्ट (नेपाल)
कोट्यूडी	
कोठयाल	कुँवर (नेपाल)
कोतलिया	
कोपाल	(कन्नौज)
कोरंगा (कौ०)	पँवार (धारा)
,,	(दानपुर)
कोलसारा	
कोलोला	रावत (अवध)
कोस्याडी	
कोस्यारी	(सूर्य०, नेपाल)
क्वीरा	(कन्नौज)
क्वीरा	रावत, ठाकुर (बनारस)
क्वीरा	बिस्ट (पंजाब)
खटगिड़िया	
खड़का	
खडायत	(कालीकुमार)
,,	पाल (अवध)
खडी	
खडैबिरु	ठाकुर (अवध)
खत्री	नेगी
खनवाड़ी	चौहान (दिल्ली)
खनी	(नेपाल)
खरक्वाल	
खवास	कारकी (नेपाल)
खाती	(सूर्य०, फल्दाकोट)
,,	राठौर (झाँसी)
खेतोला	
खोलभितरिया	साह
ख्यूँसाल (०ली)	(गढ़)
गंगोला	
,,	साह
गढ़होली	
गडसेरा[1]	साह
,,	ठाकुर
गडिया	(दानपुर)
,,	(सूर्य०, गढ़)
गुखवाल	
गुटपडी	
गुडयाल	(राजपूताना)
गुरंग	थापा (नेपाल)
गुरौ	

१. गहडवार (?)

गुलेरिया[1]	डोगरा	चौधरी	पँवार (झाँसी)
गैड़ा (०ढा)	राणा (चित्तौड़)	,,	,, (पंजाब)
गैडा	बिस्ट (सूर्य०, चित्तौड़)	,,	(राजपुताना)
गैलकोटी	(नेपाल)	चौधरी	साह (द्वाराहाट)
गोलदा[2]	नेगी (पंजाब)	चौना	(नेपाल)
गौड[3]		चौनाल	
गौणी		चौबिया	
घिलोल		चौमवाल	
घुगत्याल	(नेपाल)	चौहान[5]	घुंघुटिया, खनपाड़ी
घुंघटिया	चौहान	छलाल	(घर सजानेवाले)
घुडकौड़ा	(गढ़वाल)	छुटौला	
घूडाल		छुरौला	(कन्नौज)
घोका	(देवचेली सन्तान)	जखवाल	(कनौज)
चकाना	जाट (बदायूँ)	जगरिया	
चनरा		जंगलिया	पड्यार
चनार		जगाती (०काती)	साह
चन्द	(अलमोड़ा)	जनौटा	
,,	(काशीपुर)	जंताल	(अवध)
चम्याल	बहादुर (नेपाल)	जमनाल	डोगरा
चरक	बोरा (जाट, पंजाब)	जराल	
चरम्याल		जलाल[6]	(अवध)
चल्यूड़ी		,,	(रुहेलखंड)
चहजी		जाट[7]	चकाना, बोरा
चाड[4]		जिनौला	(झाँसी)
चिरोला	पंच पुरबिया	,,	रावत (नेपाल)
चिलवाल		जिवाल	
चोरमी		जीना	(रुहेलखंड)
चौडिया	(भोटान्त)	जेस्टा	दानव (गढ़वाल)
चौतार		जोल्याल	
चौशिया	(नेपाल)	जोलाडा	(धारा)

१. गहलौत (?)
२. गोहिल (?)
३. गौडवंश।
४. चावडा (?)
५. चौहान वंश (?)
६. झाला।
७. जाटवंश।

ज्वाल	
झाड़खंडी कुँवर	रावत (झाँसी)
झिगरिया	(नेपाल)
झिजरिया	
झिंजरिया	
झुन्याल	(रुहेलखंड)
टकवाल	
टंगणिया	
टनिया	बदायूँ
टकुली	(दानपुर)
,,	पँवार (धारा)
,,	रावत (गढ़)
ठठवाल	(मस्खरे)
ठठेरा	
ठठोला	
ठुलघरिया	साह
डँगरियाल	(पंजाब)
डंगवाल	(राजपूत)
,,	राणा (चित्रकूट)
डंगसारी	
डंगसिल	(पंजाब)
डंडिया	
डंडरी	(गढ़)
डंडवाल	
डंसीला	राणा (चित्त०)
डंहिला	
डंहैली	
डांगी	ठाकुर (गढ़)
डिगारी	(अवध)
,,	(पंजाब)
डिवारा	
डुंगरियाल	(अवध)
डुंगस्याल	
डुक्या	
डोगरा	(पंजाब)
डोटियाल (०टयाल)	ठकुरानी (नेपाल)
,,	राणा (चित्तौड़)

डोटियाल (०टपाल)	राणा (नैपाल)
	(दानपुर)
डोलिया	ठाकुर (अवध)
,,	(नेपाल)
ढंगसिल	यादव (पंजाब)
ढटोला	ठाकुर (मध्य देश)
ढिमवाल	
ढंगसिल	साह
ढेक	झाँसी
,,	(पंजाब)
ढोकरी	
तडाकी (०गी)	कायस्थ (झूसी)
तड़याल	
तढयाल	(नेपाल)
तढियाल	(गढ़वाल)
ततराड़ी	
ततवान	(तप्त जल-विधायक)
तपसी	भनारी बगर
,,	(योगी)
तम्बोली	
तरसलिया	
तरसाल	
तला टा	
तलोटा	घटरी पँवार (दिल्ली)
,,	,, (नेपाल)
ताडी	(गढ़वाल)
तिपोला	रौतेला (झाँसी)
तिल	
तिलला	(कन्नौज)
तोला	साह
थपल्याल	रावत (गढ़वाल)
थापा	(नेपाल)
थैत	(नेपाल)
टडमवाल	(दाडिमदायक)
दनपुरिया	
दफोटी	
दसौनी	(नेपाल)

दहेवा	(नेपाल)	नगोलिया	कमनाल
दाणो (दानव)	(दानपुर)	नगरकोटिया	डोगरा
,,	(बम्बई)	नगरकोटी	नेगी (राणा, चित्तौड़)
दानव (दाणो)		,,	(पंजाब)
दानी		नयाल	पँवार (धारा)
दिगौड़ा	गुसाईं (कन्नौज)	,,	राणा (चित्तौड़)
दिठाला	(दानपुर)	नाई	
दुणिया		विनौटिया	बिस्ट (राजपूताना)
देउवा	पंचपुरबिचा	नेगी	काश्यप
देव	(नेपाल)	,,	खनवाडी (चौहान, दि०)
देवली		,,	चौहान (गढ़)
देववा[1]	देव (सिंध)	नेगी	गुलरिया (मिया)
दोसाँध	दोसान	,,	गोलदार (पंजाब)
द्यो (द्योवा)	(नेपाल)	,,	गौतम
द्योसाल	(गढ़)	,,	नौधरिया (कन्नौज)
धंगौला		,,	पहला (गढ़वाल)
धणिक		,,	,, (पंजाब)
धनकी		,,	पुरणिया (पंजाब)
ध्योला	देव (धारा)	,,	भंडारी (पंजाब)
धमस्याल		,,	भारद्वाज
धमाड़ा	(गढ़)	,,	रघुवंशी (झूसी)
धयाड़ा	(गढ़)	,,	शांडिल्य
धाणिक	कुँवर (फारा)	,,	हरनवाल (चौहान)
धात्री	,, (नेपाल)	नेनिया	अधिकारी
धामी	ठकुरानी	नेरिया	
,,	राणा (चित्तौड़)	नेवे	(राजपूताना)
धारकोटी		नैक	(पंजाब)
धुगत्याल	(नेपाल)	नैलवाल	
धुरियाल		नौणिया	यादव (धारा)
धोकती		,,	,, (पंजाब)
धोकरी		नौनिय	बिस्ट
धोबी		नौलिया	(अवध)
धोनी	(झूसी)	नौल्या	डोटी
,,	(पँवार), झूसी	नौधरिया नेगी	(कन्नौज)
धौल्याड़ी		न्योलिया	
नखुरिया		पंच पुरबिया[2]	

१-२. देउपा, सोराडी, पुसचूड़ा, चिराल, पेडरु ।

अलमोड़ा			
पछै रावत	(धारा)	बगडवाल	ठाकुर (नेपाल)
पजाई	कुम्हार	बगोली	
पजै	(नेपाल)	बंगारी	पँवार (धारा)
पटवाल	ठाकुर (पंजाब)	,,	रौत (सूर्यवंश)
पंडा	(रुहेलखण्ड)	बघरी	राणा (चित्तौड़)
पडेरु	पंच पुरबिया	बजलिया	
पड्यार[1]	कत्यूर	बजेली	ठाकुर (अवध)
पतनिया		,,	(संदेश)
पतलिया	(सूर्य०, गढ़वाल)	बडिया	
पत्याल	(राजपूताना)	बणकोटी	राणा (चित्तौड़)
पनेटा	रावत, ठाकुर (पंजाब)	बतनिया	
पंदरबिरिया		बधरी	(गढ़वाल)
परेवा	(नेपाल)	बनालो	ठाकुर (अवध)
पलनी	(पंजाब)	बनिया	
पँवार[2]	नागवंशी (धारा)	बनैन	रौतेला (नेपाल)
,,	(गढवाल)	बनौला (०ली)	(नेपाल)
,, राज–	(धारा)	बम (ब्रह्म)	सौनकाला (नेपाल)
पाटडी	ठाकुर (नेपाल)	,,	सौनगोरा (नेपाल)
पाटणी	(पटना)	,,	सोर (सूर्य०)
पाणी	(दानापुर)	बरगै	
पिलख्वाल		बरौलिया	
पुरणिया	डोगरा	बर्त्वाल	पँवार
,,	(नेपाल)	बलदिया	कठेडिया
पुरचूडा	पंचपुरबिया	बलिया[3]	नेपाल
पैठाणी	चौहान (दिल्ली)	बलौलिया	
पैता	रावत (पंजाब)	बशेडा	(नेपाल)
पोखारिया		बसनाल	चौहान (दिल्ली)
,,	सोन (नेपाल)	,, नेगी	राणा (चित्तौड़)
फरत्याल	(अवध)	बसनवाले	चौहान (दिल्ली)
,,	पँवार	बसरी	(पंजाब)
,,	(सूर्यवंशी)	बसाणी	महता (नेपाल)
फीचा		बसेडा	सीरा
फूल		बसौली	
बकौरियाल		बहनाल	चौहान (दिल्ली)

१. प्रतिहार (परिहार ?)।
२. पँवार—परमार वंश।
३. बल्ला-वंश।

बहरै	(कन्नौज)	बिस्ट	सावलिया (सूर्य०)
बहरो		बुटौला	
बाक		बुड़ौड़ा	
बागडी		बुधनी	
बाघ		बुरन्याल	
बाछमी		बेदुला	राणा (चित्तौड़)
बाछिमी	(दानपुर)	बेशडा	पँवार
बानी		बेसरिया[1]	(अवध)
बाफिला	(दानपुर)	,,	(नेपाल)
बाबिला		बैडिया	(राजपूताना)
बिजपुरी (०जे०)	राणा (चित्तौड़)	बैतडा	देव (नेपाल)
बिनसरिया		बैद्राल	
बिरडिया		बैरा	(अवध)
बिरही	ठाकुर (अवध)	बैराका	
बिलवाल	(कन्नौज)	बोकड	
बिसरिया		बोखड़ा	
बिस्ट	उनीणी चन्द्र	बोटा	
,,	उनीणी (कर्नाट)	बोडुलिया	
,,	उपमन्यु	बौरा	जाड (झूसी)
,,	(कनौजिया)	,,	जाट (नेपाल)
,,	काश्यप	,,	दानव (पंजाब)
,,	कुमया (पंजाब)	,,	,, (बम्बई)
,,	ककैटने (नेपाल)	,,	(नेपाल)
,,	कोटलौ (नेपाल)	,,	बिस्ट
,,	क्वीरा (पंजाब)	बौरा	फुंगार चौकी
,,	खेडे (ठाकुर, अवध)	,,	जैता (फुंगार चौकी)
,,	(गढ़वाल)	बोलदिया	(नेपाल)
,,	गौड़ (सूर्य० चित्तौड़)	बोहरा	डोटी
,,	चौहान (दिल्ली)	,,	बिस्ट (कन्नौज)
,,	डोटी	ब्रह्मकुण्ड (मकुसी)	पँवार
,,	तिमली (गढ़वाल)	भकुंडी (ब्रह्मकुण्डी)	पँवार
,,	दोसाद, पँवार (घारा)	भकुनी खत्री	बूढ़ाथोकी (नेपाल)
,,	निनैला (राजपूताना)	भंडारी (भनारी)	चौहान
,,	बोहरा (कन्नौज)	,,	(डोटी)
,,	भारद्वाज	,, नेगी	(कन्नौज)
,,	मंगचाड़ी (झूसी)	भतरोला	

१. वैसवंश ।

मनारी (भंडारी)	राणा (चित्तौड़)
,,	(नेपाल)
,,	पँवार (धारा)
मनौला	
भवाडी	राजपूताना
भाट	(अवध)
,,	(नेपाल)
भुकाणी	
भुल्यपी	पँवार (धारा)
मोजक	(काँगड़ा)
,,	पँवार (धारा)
भौखाल	(दानपुर)
भौरियाल	
भगर	थापा(नेपाल)
मंगचाडी	बिस्ट (झूसी)
मछाड़	बगोनी (नेपाल)
मछाड़	भंडारी (नेपाल)
मछुवा	
मजिला	(नेपाल)
मटेडा	रजवार (अवध)
मणकोटी	ठाकुर (अवध)
मतलिया	
मनुराल	(उदयपुर, सूर्य०)
,,	कत्यूरी (संकाश्य)
मल्ल	(नेपाल)
मससुनी	सौन (नेपाल)
मलाडा	(अवध)
मवाला	कुँवर (नेपाल)
महत (०ता)	बनारस
महता	(झूसी)
,,	(नेपाल)
,,	पँवार (खोलिया)
,,	बसाणी (नेपाल)
महरा (मारा, माहरा)	चौहान (मैनपुरी)

महरा (मारा,माहरा)	भारद्वाज
,,	पँवार (झूसी, काश्यप)
,,	,, (मैनपुरी)
महर	(मरहटा)
,,	राणा (चित्तौड़)
महोडी [1](मुहारी)	(धारा)
महौत	(हाथीवान)
माहोडी	(अवध)
मियाँ	नौलागढ़
मिखाल	राणा (चित्तौड़)
मिराल	राठौर[1]
,,	राणा (चित्तौड़)
मुनार	(पंजाब)
मुलाणी	आट (गढ़वाल)
मुलिया	अधिकारी
मुल्या	राणा (चित्तौड़)
मुस्योनी	(नेपाल)
मेटवाल	कोस्याड़ी
,,	रावत (गढ़वाल)
मेढ	सुनार
मेर	पँवार
मौतोडी	
मौन (महत)	अधिकारी
,,	डोटी, ठाकुर
मौनी	(झाँसी)
रक्टोला	(गढ़वाल)
रजवार	कत्यूरी (अस्कोट)
,,	,, (चौकोट)
,,	,, (जसपुर)
रपकुनी	कश्मीरी (बनारस)
रफाल[2], कुपाल	
रमोला	चौहान (गढ़वाल)
रवाल[4]	रावत (अजमेर)
राछोड़े	ठाकुर

१. मोहिल (?)।
२. राठौर वंश।
३.–४. रजपाली वंश (?)।

राजकोली	(तूँतवा)	शोका	(अजवधिक)
राजी		शौन	पँवार (धारा)
राणा	(चित्तौड़)	सतपोला	(राजपूताना)
रावत		सत्याल	(अवध)
,,	(गुमदेव)	समाल	राणा (नेपाल)
,,	जिनौला (नेपाल)	सम्मल	(साँवलिया)
,,	झाडखंडी कुँवर (झांसी)	सलडिया[1]	
,,	पायक (डुंगराकोट)	सलदिया[1]	
,,	पैता (पंजाब)	सलनी	(कन्नौज)
,,	रवाज (अजमेर)	सलाल	
रावत, राजी		सलिया[3]	
रिखड्या	(डोटी)	सलीमगढ़िया	साह
रिठाल	पँवार	सलौणा (०ना)	(झाँसी)
रैक्वाल	(सूर्य०, डोटी)	,,	(नेपाल)
रोडियाल	ठकुरानी	सिमलगौवा	यादव (पंजाब)
रौडियाल	देव (नेपाल)	सिराडी	
रौत		सिराल[4]	गढ़
रौतेला	ऐटारटी (नेपाल)	सिलवासी	
,,	कत्यूरी (खरकू)	सिला	
,,	चन्द्र (काश्यप)	सुतारा	
,,	निपौला (कासी)	सुयाल	(नेपाल)
,,	वाफिला (धारा)	सुराणी	
,,	चन्द्र (मणिकोटि)	सेंजाली	(अवध)
रौत्याडी		सेटी	(नेपाल)
रौन		सेलदार	(धारा)
रौल		सेलाकाटी	(नेपाल)
रौलगुनयाल	(डोटी)	सेलिया	
लड़वाल	(झाँसी)	सोरागी	(दानपुर)
लाड	ठाकुर (नेपाल)	सोराडी	देव (नेपाल)
लामाकोटी		सोरोडी	पंच पुरबिया
लूल		सौन	(अवध)
लोडियाल	राना (चित्तौड़)	,,	राणा (चित्तौड़)
शालनी	पँवार	,,	(नेपाल)
शाही	(नेपाल)	सौनकाला	बम (नेपाल)
शूरानी	पँवार	सौनगोरा	

१.–३. सरविया वंश (?)।
४. सिलार वंश।

स्याँलिया		हरडा	
स्यूँतरी	(धारा)	हरनवाल	
स्यूनिया	अधिकारी	हरनवाल	नेगी चौहान (गढ़वाल)
स्यूनी		हीत	कुरुवंशी (झाँसी)
स्योतरी	(धारा)	,,	,, (नेपाल)
हरकाटिया	मोटान्त	होलरिया	

पृथ्वीराज रासोके अनुसार राजपूतोंके ३६ मुख्य वंश हैं—

रवि, शशि, जादववंश, ककुथ, परमारु तोमर।
चाहुवान, चालूक्य, छन्द, सीलार, अमियवर।
दोयम्त, मकवान, गरुअ, गोहिल, गोहिल पुत।
चावोठक, परिहार, राव राठौर रोसजुत।
देवरा टाँक, सेंधव, अनिग, योतिक, सेंगर दधिघट।
कार दपाल, कोटवाल, हुल, हरितट, मौर, कमाप, भट।
धान्यपाल नीकुंभ वर राजपाल कविनीस।
काल छुरकके आदि लौ बरने वंस छतीश।

छत्तीसवंश हैं—सूर्यवंश १०, चन्द्रवंश १०, ऋषिवंश १२ और अग्निवंश ४। ये निम्नलिखित समूहोंमें विभक्त हैं—

१ कछवाहा (सूर्यवंशी)
२ कमारी (ऋषिवंशी)
३ काथी (सू०)
४ गहडवार (चन्द्रवंशी)
५ गहलौत (ऋ०)
६ गूजर बढ (ऋ०)
७ गोहिल (सू०)
८ गौड (ऋ०)
९ चावडा (सू०)
१० चौहान (अग्निवंशी)
११ जाट (चन्द्र०)
१२ जोहिया (ऋ०)
१३ झाला (चन्द्र०)
१४ डोडा (ऋ०)
१५ तक्षक (सू०)
१६ तोमर (चन्द्र०)
१७ दावी (देवी, चन्द्र०)
१८ दाहिमा [ऋ०)
१९ दाहिया (ऋ०)
२० निकुंभ (सू०)
२१ परमार (पँवार, अ०)
२२ परिहार (प्रति०, अ०)
२३ बल्ला (सू०)
२४ बैस (सू०)
२५ मोहिल (चन्द्र०)
२६ यदु (चन्द्र०)
२७ रजपाली (चन्द्र०)
२८ राठौर (ऋ०)
२९ सरविया (सू०)
३० सिकरवार (ऋ०)
३१ सिलार (ऋ०)
३२ सूर्यवंशी (सू०)
३३ सेंगर (ऋ०)
३४ सोमवंशी (चन्द्र०)
३५ सोलंकी (अ०)
३६ हंस (हून, चन्द्र०)

(च) भोटान्तिक—या 'भोटिया' लोगोंके बारेमें हम अन्यत्र कह चुके हैं, १९२१ में इनकी संख्या २७,३६६ थी।

(छ) नायक—वंशानुगत वेश्यावृत्तिके लिए यह जाति प्रख्यात थी, किन्तु पिछले कितने ही वर्षोंमें सुधारका काम बहुत आगे बढ़ा और अब न वेश्यावृत्ति की जाती है, न कोई अपनेको नायक कहता है।

(ज) राजी (रावत) यह पुरानी जाति खसों-आर्यों-भोट लोगोंसे भी पहिलेसे पहाड़में बसी—१९०१ में २२ की ही संख्यामें थी। अब शायद वह भी न हो, कमसे कम शुद्धरूपमें। किरात या किन्नरवस्तुतः अलमोड़ाकी सभी जातियोंमें घुल-मिलकर अपने पृथक् अस्तित्वको खो चुके हैं। पूर्वी नेपालमें गुरुङ्, राई, लिम्बू यह तीन किरात जातियाँ अब भी प्रधानता रखती हैं।

(झ) शिल्पकार—सन् १९२१ में जिलेमें १,०८,६५९ शिल्पकार (डोम) थे। खसियोंकी बस्तियोंमें सभी जगह डोम पाये जाते हैं। ये उनकी सेवकाई करते आये हैं। युगोंसे खेत रखने नहीं पाते थे और सदा मजूरी या शिल्प द्वारा जीविका करते आये। डोम नाम इन्हें बड़ी जातिवालोंने दिया है, जिसका वह आपसमें प्रयोग नहीं करते। तल्ली (निचली) **जात** या बाहर (बाह्य) **जात**का व्यवहार वह जरूर करते हैं। देशमें डोम जिस अर्थमें व्यवहृत होता है, उससे इन जातियोंका सम्बन्ध नहीं है, यह इसीसे मालूम होगा कि इनके भीतर ओड (बढ़ई), टमटा (कसेरा) जैसी जातियाँ भी सम्मिलित हैं। वस्तुतः दक्षिण-भारतकी भाँति यहाँ भी वर्णव्यवस्था चरम जकड़बन्दीको पहुँची हुई थी। दुर्गम पहाड़ों तथा यहाँवालोंकी वीरता-निर्भीकताके कारण अन्ततक मुसलमान अपना शासन यहाँ जमा नहीं सके, जिसके कारण नहीं हो सका, नहीं तो यह जकड़बन्दी शिल्पकारोंको मैदानी जुलाहोंकी भाँति इस्लामकी गोदमें जाकर बैठा देती। इधर कट्टरता कम हुई है, किन्तु कुछ ही। शिल्पकारोंके उत्थानके लिए आर्यसमाजने पिछले वर्षोंमें बड़ा प्रयत्न किया है, किन्तु आर्यसमाजी स्वयं ब्राह्मणोंकी वर्ण-व्यवस्था नामकी सामाजिक मरण-व्यवस्थासे ऊपर नहीं उठे हैं। शायद इस जातिके कुशल दूरदर्शी नेता भीमराव अंबेडकरका बतलाया रास्ता—तथागतकी शरणागति—ही इन्हें डटकर समाजमें समान स्थान लेनेमें सहायक हो, और फिर वह डोम, शिल्पकार या हरिजन इन सभी नामोंको छोड़कर अपनेको बौद्ध कहनेमें अभिमान करें।

कुमाऊँकी भिन्न-भिन्न शिल्पकार जातियाँ निम्नलिखित प्रकार हैं —

(१) **अगारी**—यह खानों में धातुओंके निकालनेका काम करते थे।

(२) **ओड**—मुख्यतः बढ़ईका काम करते हैं, किन्तु इन्हींमें राजगीर और पत्थरकट भी शामिल हैं।

(३) **औजी**—या अज्जुक दर्जी, भूतप्रेतोंके ओझा-पुजारी एवं गायक होते रहे हैं।

(४) **कोली**—कपड़ा-बुनाई करते हैं। १८७२ में इनकी संख्या १४,२०९ थी।

(५) **चमार**—चमड़ा सिझाना और रँगना इनका काम रहा है।

(६) **चिमडिया**—खरादपर लकड़ीके बर्त्तन (ठेके, पाले, फरवे) बनाते हैं।

(७) **जोगी, डुम**—माँगने, भाग्य भाखनेका काम करते हैं। पाली-पछाँवमें इन्हें नानकशाही जोशी कहते हैं।

(८) **टमटा**—ताँबे-काँसेका काम करनेवाले ठठेरे हैं। शिल्पकार जातियोंमें यह धन और शिक्षामें आगे बढ़े हुए हैं।

(९) **ढाढी**—"खस राजपूत जो जातिच्युत कर शूद्र बनाये गये हैं।"—अट्किन्सन।

(१०) **ढोली**—ढोलक बजाकर गानेवाले, देवता बुलानेवाले औजी (दर्जी) इस नामसे पुकारे जाते हैं।

(११) **तिरुवा**—तीर बनानेवाले शिल्पकार।

(१२) **धूना (धूनाई)**—बहुत कम, केवल नगरोंमें मिलते हैं, इनका काम रुई धुनना था।

(१३) **पहरी**—चौकीदार या गुड़ैत (गोडाइत) थे, जिनका काम पहरा देना था। इन्हें गाँवमें जागीर-जमीन मिलती थी। फाँसी देनेवाले भी पहरी कहे जाते थे।

(१४) **बखरिया**—राजाओंके कालमें साईस थे।

(१५) **बडिया**—मुर्गी-सुअर पालते रहे।

(१६) **बागुडी**—बहेलियाको कहते हैं, जिनका काम शिकार करना था। 'बागुड़ा' फाँस या जालका नाम है।

(१७) **बाड़े**—देवीकी बलिके पशु, भैंसे आदिके रखनेके स्थान (बाड़ा) के रक्षक होते थे। अब दूसरे परित्यक्त-पेशेवालोंकी भाँति खेती-मजूरी करते हैं। पत्थर निकालनेका भी काम करते हैं।

(१८) **बादी**—बाजीगर, गायक-वादकका काम करते हैं। अधिकतर परिवारसहित घूम-घूमकर जीविका करते हैं।

(१९) **बारुड़ी**—रुड़ियोंकी भाँति बाँसकी टोकरी, चटाई आदि बनाते हैं।

(२०) **बाँसफोड़ (बैड़ी)**—बाँस फोड़ना, छिलना इनका काम रहा है।

(२१) **मूल**—यह देशके तेली हैं, जिनमें मुर्गी, सुअर पालनेवाले बडिया भी शामिल हैं।

(२२) **मोची**—चमड़ेके जूते आदि बनाते हैं।

(२३) **रुड़िया**—रिंगल (छोटी जातिके) बाँसकी टोकरी, चटाई आदि बनाते हैं।

(२४) **लोहार (ल्वार)**—लोहाका काम करते तथा प्रायः प्रत्येक गाँवमें पाये जाते हैं। इन्हें अपनी सेवाओंके लिए भूमि तथा अनाज मिलता है।

(२५) **हनकिया**—बहुत कम हैं, काम कुम्हारका करते हैं।

(२६) **हलिया**—इनका काम हल चलाना था, १८४० ई० तक जमीनके साथ इन्हें बेचा जा सकता था।

(२७) **हुडकिया**—हुडक बजाकर पुराने पँवारोंको गाने तथा नाचनेका भी काम करते रहे।

४. धर्म—हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम और ईसाई धर्मके अनुयायी इस जिलेमें रहते हैं। १९३१ की जनगणनामें जिलेकी ५,८३,३०२ की आबादीमें ५,७४,२६८ हिन्दू, ३,१५८ मुसलमान और ५,३७६ दूसरे धर्मानुयायी थे।

(१) **बौद्ध धर्म**—हिमालयका यह भाग बौद्धोंके लिए सदासे अत्यन्त पवित्र रहा है। बौद्ध-कालमें इसकी ऋषियों और तपस्वियोंकी भूमिकी भाँति ख्याति थी। पांडवोंको यज्ञ करानेकी जब आवश्यकता हुई तो वह यहींसे धौम्य ऋषिको ले गये थे। भारतकी प्रायः सारी पवित्र नदियाँ—गंगा, यमुना, सरयू, अचिरवती (राप्ती), मही (गंडक) यहाँसे निकलती हैं, अतः उनके उद्गमस्थानोंके प्रति सम्मान होना ही चाहिये, यद्यपि इसका यह अर्थ नहीं कि उस पुराने कालमें भी आज उद्गमस्थानके तौरपर बने तीर्थ पूजे जाते थे। गंगोत्तरी तो निश्चय ही नया तीर्थ है और गंगाकी मुख्य धार (जाह्नवी गंगा या जान्हवी) पर न होकर उसकी छोटी धारपर अवस्थित है। उसके पण्डोंके गाँव मुखवाको तो उन्नीसवीं सदीके आरम्भमें गोरखा-विजयके बाद महत्त्व प्राप्त हुआ। गढ़वालकी कितनी ही काशियों और प्रयागोंकी भी यही हालत है। वस्तुतः हिमालयके बहुत पुराने स्थान विस्मृत और प्रेक्षित हो गये, और कितनोंने नये नाम ग्रहण किये। वस्तुतः ध्यानावस्थित बुद्ध-मूर्त्तियोंके बदरीनाथ बना दिये गये। बौद्ध-धर्म जैसे-जैसे पूर्व-उत्तरकी ओर सिमटता गया, वैसे-वैसे उसके मन्दिर ब्राह्मण-मन्दिर बनते और

ब्राह्मणधर्मी होते गये। उस समय अधिकांश खस बौद्ध-धर्मी थे और आज डोम कहलानेवाली जातियाँ तो निश्चय ही बौद्ध-धर्मी रही होंगी। जिन्हें अछूत बनानेमें भी बहुत सम्भव है, उनका ब्राह्मण-धर्मका प्राबल्य हो जानेपर भी बौद्ध-धर्मसे चिपके रहना कारण हुआ हो।

उपरोक्त कथनका यह अभिप्राय नहीं है कि ईसा पूर्व पहिली-दूसरी सदीसे ईसाकी छठी-सातवीं सदीतक, जब कि बौद्ध-धर्मका प्राबल्य रहा, इस अंचलमें ब्राह्मण-धर्म और ब्राह्मण-धर्मियोंका अभाव रहा। बौद्ध-राजवंशोंसे भी ब्राह्मण-पुरोहित चिपके रहे, इसका उदाहरण हमें आज भी श्याम (थाईलैंड) में मिलता है। शंकराचार्यने सारे भारतमें बौद्धोंका उच्छेद किया, इसलिए उन्होंने ही इधर भी उनका उच्छेद कर दिया होगा, यह केवल भ्रान्त धारणा है, जिसमें सिवाय अपने आचार्यकी महिमा बढ़ानेकी कोशिशके कोई तथ्य नहीं है। हम जानते हैं कि ८वीं सदीमें जब शंकरने अपनी ऐहिक लीला समाप्त की, उसी समय नालन्दा विश्वका महान् विश्वविद्यालय था, और उसी समय वहाँके विद्वान् तिब्बत और दूसरे देशोंमें नये धर्मविजय कर रहे थे। विक्रमशिला जैसा सारे बौद्धजगत्में विख्यात होनेवाला महान् संघिक विश्वविद्यालय आठवीं सदीके उत्तरार्धमें पालवंशीय राजा धर्मपाल (७६९—८०९ ई०) द्वारा स्थापित हुआ था। बौद्धोंके बाद बारहवीं सदीतक लकुलीश शैवोंकी प्रधानता रही, शंकराचार्यकी विजय इधर बहुत पीछे हुई।

यह भी ध्यानमें रखनेकी बात है कि ७४० ई० से पूर्व-मध्य तथा पश्चिमी हिमालयमें मंगोल मुखमुद्राका अभाव था। इसलिए इधर किरातों, खसों और आर्यों (हिन्दुओं) का निवास था। तिब्बतके प्रथम सम्राट् स्रोङ्-चन्-गम्बो (६३९–६५० ई०) और उसके वंशधरोंने जब पूर्वी मध्य एशिया और गिलगितसे ले सारे हिमालयको अपने राज्यमें मिला लिया, उसी समयसे तिब्बती लोगोंका मध्य तथा पश्चिमी हिमालयमें प्रसार हुआ—पूर्वी हिमालयमें तमङ्—लेप्चा (रोङ्) जैसी तिब्बती वंशसे सम्बन्ध रखनेवाली जातियाँ भले ही इससे पहिले आ गयी हों, स्रोङ्-चन् कालमें ही तिब्बतोंने बौद्ध धर्मको दृढ़तापूर्वक अपनाया। स्रोङ्-चन् वंश (६३०–९८३ ई०) के पतनके बाद प्ल-खोर-ब्-चन्के पुत्र ञि-म गोन्ने राजधानी ल्हासासे भागकर ङ री (मानसरोवर) प्रदेशमें अपना राज्य स्थापित किया, जिसे अन्तमें उसने स्पु-रङ्-गू-गे और मर-युल (लद्दाख) के तीन भागोंमें अपने पुत्रोंमें बाँट दिया। आजके अलमोड़ा-गढ़वालका 'भोट' तथा किन्नर देश (ऊपरी सतलज) गूगेमें सम्मिलित थे, जिसकी राजधानी थोलिङ् गोम्पाके पास चप-रङ् थी। राजा ञि-म-गोन्के पौत्र खोर-ल्दे—जो पीछे भिक्षु बनकर ये-शेस्-ओद् (ज्ञानप्रभ १०४०) के नामसे प्रख्यात हुए—के पुत्र नागराज द्वारा स्थापित अति सुन्दर अष्टधातुकी बुद्धमूर्ति अब भी बाडाहाट (उत्तरकाशी)में दत्तात्रयके नामसे पुज रही है, जिससे सिद्ध होता है कि कमसे कम ११ वीं सदीके मध्यत बाराहाट और धरासूतकका प्रदेश गूगेके राज्यमें था। यही बात दारमा-जोहार आदि इधरके भोटान्तिक प्रदेशोंका भी उस समय रहा होगा इसमें सन्देह नहीं। और यदि पुराने मन्दिरों तथा हस्तलिखित बौद्ध ग्रन्थोंकी पुष्पिकाओंकी छानबीन की जाय तो शायद पीछेतकका भी सम्बन्ध ज्ञात हो। तिब्बती इतिहाससे मालूम होता है कि तेरहवीं सदीके अन्तमें जिङ्मल, कल्याणमल, और प्रतापमल नामके राजा गूगेमें राज करते थे। गूगे-वालोंका राज्य कब कहाँतक रहा, अब यह खोजकी बात है, जिसके लिए हमारे भोटान्तिक प्रदेशसे कुछ सामग्री मिल सकती है।

तेरहवीं सदीके अन्तको—जब कि गूगेके तिब्बती राजवंशमें भी कल्याणमल और प्रतापमल जैसे शुद्ध हिन्दू नाम प्रचलित हो गये थे—वह समय मानना युक्तिपूर्ण मालूम होता है, जब कि इधरके हिमालयमें ब्राह्मण-धर्मने पूरी तौरसे बौद्ध-धर्मका स्थान लेना आरम्भ किया, क्रमशः खसोंको राजपूत,

शिल्पकारोंको अछूत बनाते हुए कुछ शताब्दियोंमें उसने सारे मध्य हिमालयपर अपना एकच्छत्र प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इसी विजययात्रामें भाग लेनेमें जान पड़ता है, चन्द-वंश और देशके ब्राह्मण यहाँ पहुँचे।

अब जिलेके जोहारी-भिन्न भोट्यान्तिक लोगोंमें ही बौद्ध-धर्म पाया जाता है। यदि सामाजिक समस्याओंका हल करना भी धर्मके प्रसार और सफलताका कारण है, तो यहाँके शिल्पकारोंको सामाजिक समानता दिलानेमें फिर बौद्ध-धर्मका हाथ हो सकता है; वैसे, साधारण शिक्षित लोगोंमें बौद्ध-धर्मके प्रति इधर जिज्ञासा और अनुराग बढ़ चला है। दरमा-तल्ला (३४५), दरमा-मल्ला (१८०९), चौदंस (२४९९), ब्यांस (३६) तथा जोहारमें भी प्रायः तीन हजार बौद्ध १९३१ में थे।

(२) ब्राह्मण-धर्म—हिन्दू शब्द वस्तुतः जाति या संस्कृतिका बोधक रहा है, किन्तु अंग्रेजोंकी कृपासे एक धार्मिक सम्प्रदाय—ब्राह्मण-धर्मके—लिए इसका दुरुपयोग होने लगा, जिसे जितना ही जल्दी हटाया जा सके, उतना ही अच्छा है। वैसे कुमाऊँमें आर्यसमाजी भी हैं, विशेषकर शिल्पकारोंमें काफी प्रचार हुआ है, किन्तु अधिकांश जनता सनातनी, शैव या शाक्त है। उदासीन (नानकपंथी), नाथ (कनफटे), जंगम, वैरागी, संन्यासी और साधु मुख्य तौरसे यहाँके सनातन धर्मके सम्प्रदाय हैं।

(i) हिन्दू सम्प्रदाय—

(१) **उदासीन**—इनके स्थान बहुत कम हैं।

(२) **नाथ**—जिन्हें कनफटे भी कहते हैं, गोरखनाथके अनुयायी हैं। इनमें बिना कान-फाड़ोंको औघड़ भी कहते हैं। गोरखनाथ वज्रयानी (बौद्ध) ८५ सिद्धोंमें एक प्रमुख सिद्ध थे, किन्तु बहुत शताब्दियाँ हो गयीं, जब नाथ-पंथ ब्राह्मण-धर्ममें शामिल हो गया, तब कुमाऊँको एक समय इन्हींका देश कहना पड़ता। अब भी भारी संख्यामें इनकी शिष्यपरम्परा नहीं, रक्त-परम्परा सारे कुमाऊँमें फैली हुई है। इनके साधु गेरुआ वस्त्र पहिनते हैं और कटे कानोंमें सींग या स्फटिककी मुद्राओंके अतिरिक्त इनका वेष संन्यासियों जैसा ही होता है। सिद्धचर्याका अवशेष वाममार्ग अब भी इनमें पाया जाता है। कैड़ारो पट्टीमें **कायाके पीर** नाथोंके एक गुरु (महंत) हैं, जो विवाहित नहीं होते।

(३) **जंगम** या शैव जिलेमें बहुत कम पाये जाते हैं। मुख्यतः यह सम्प्रदाय कर्नाटक देशका है और इधर हिमालयकी महिमाके कारण तीर्थ-यात्राके लिए कोई साधु आ पड़े। जंगमोंका प्राचीन पाशुपतों अथवा लकुलीशोंसे भी कोई सम्बन्ध अवश्य था। आठवींसे दसवीं सदीतक सारा हिमाचल किन्नर और कुलूत (कुल्लू) तक लकुलीश सम्प्रदायको मानता था, जिनके अवशेषोंको देखकर यदि लिंगायत शैवोंका ध्यान इधर आकृष्ट न होता, तो भी आश्चर्यकी बात नहीं होती। जंगमोंमें वीरशैव ब्राह्मणोंकी छायासे बचना चाहते हैं, जब कि **आराध्योंने** उनसे समझौता कर लिया है।

(४) **वैरागी**—'उत्तरे मांसभोजनं' द्वारा जहाँके लिए डंकेकी चोटसे मांसभोजनका विधान है, वहाँ भला घास-पातपर जीवनयापन करनेवाले वैरागी वैष्णव कैसे टिक सकते? तो भी कुछ वैरागी विरक्त तथा उनसे भी अधिक उनके सरक्त अनुयायियोंकी सन्तानें जहाँ-तहाँ पायी जाती हैं।

(५) **संन्यासी**—शंकराचार्यके दशनामी अनुयायियोंके भी कितने ही मठ हैं। गृहस्थ दशनामियोंके तो बैजनाथकी भाँति कितने ही गाँव बसे हुए हैं। पठित ब्राह्मण दण्डी संन्यासियोंका अधिक सम्मान करते हैं, क्योंकि उनमें केवल ब्राह्मण-पुत्र ही सम्मिलित किये जाते हैं, तथा अपेक्षाकृत अधिक साक्षर भी होते हैं। मध्यकालमें संन्यासियोंके अखाड़े साहसयात्रियों, योगाभ्यासियों तथा जनतन्त्रता-प्रेमियोंकी बड़ी उपयोगी संस्था रहे।

(६) **साधु**—सन्त-परम्पराके सात्विक सन्तोंके अवशेष ये साधु लोग हैं। इनके संस्थापक वीरभान थे। साधु लोग तमाखू नहीं पीते और स्वच्छतासे रहते हैं।

(ii) **हिन्दू त्योहार**—

स्थानीय त्योहारोंके अतिरिक्त उत्तर भारतीय हिन्दुओंके मुख्य-मुख्य त्योहार यहाँ भी माने जाते हैं, जिनमें से कुछ हैं—

(१) **संवत्सरारम्भ**—चैत्र शुक्ला प्रतिपदाको संवत् (विक्रमीय) आरम्भ होता है, इसी दिन नवरात्र भी आरम्भ होता है।

(२) **चैत्र (शु०) अष्टमी**—शाक्तोंका पर्वदिन है, इस दिन बहुत बलिपूजा होती है।

(३) **रामनवमी**—चैत्र शुक्ला नवमी, रामका जन्मदिन।

(४) **दसाई**—चैत्र सुदी (शुक्ला) १०, नवरात्र व्रतकी समाप्तिका पारण।

(५) **बिखौती**—मेष-संक्रान्ति। इस दिन बहुत जगहोंपर वैशाखीके मेले लगते हैं। मिष्टान्न पक्वान्नकी धूम रहती है।

(६) **वैशाखी पूर्णिमा**—स्नान-दर्शनका महत्त्व है।

(७) **वटसावित्री**—ज्येष्ठ अमावस्याको स्त्रियोंका त्योहार है।

(८) **गंगादशहरा**—(ज्येष्ठ शुक्ला दशमी) गंगास्नानके अतिरिक्त इस दिन ब्राह्मण कागजपर 'अगस्त्यश्च पुलस्त्यश्च···' लिखकर घरोंके सामने लगाके दक्षिणा लेते हैं।

(९) **कर्क संक्रान्ति या हरियाला**—श्रावणकी संक्रान्तिके दस-बारह दिन पूर्व खेतीके अनाजोंका 'हरियाला' (पौध) तैयार करते हैं। घरके भीतर सूर्यके प्रकाशसे वंचित यह हरियाले वस्तुतः पीले होते हैं। हरकाली महोत्सव हरियालेकी पूजाको कहते हैं। इसमें भक्त लोग पूजा-स्तुति करते, रात-रात-तक 'जागा' करते हैं।

(१०) **हरिशयनी एकादशी**—प्रसिद्ध व्रत है, इस दिनसे चातुर्मास्य व्रत लिया जाता है।

(११) **श्रावणी पूर्णिमा**—नवीन यज्ञोपवीत धारण करने (उपाकर्म) तथा रक्षाबन्धनका दिन है।

(१२) **सिंह (घृत) संक्रान्ति**—राजाओंके समय इस दिन बड़े लोगोंके पास 'ओलगिया' (भेंट) भेजी जाती थी, इसलिए इसे ओलगिया भी कहते हैं।

(१३) **संकट चतुर्थी**—भादों बदी ४ को गणेश चौथ है। यह विशेषकर स्त्रियोंका पर्व है।

(१४) **हरितालिका व्रत**—भादों बदी ३ को स्त्रियों का व्रत।

(१५) **कृष्णजन्माष्टमी**—भादों बदी ८ को।

(१६) **गणेश चतुर्थी**—भादों सुदी ४ को गणेशपूजा, चन्द्र-दर्शन वर्जित।

(१७) **ऋषिपंचमी**—या नागपंचमी भादों सुदी पंचमी ; नाग पूजा होती है।

(१८) **अमुक्ताभरण सप्तमी**—भादों सुदी ७। उमामहेश्वर-पूजा करके स्त्रियाँ डोरा धारण करती हैं।

(१९) **दूर्वाष्टमी**—भादों सुदी ८।

(२०) **नन्दाष्टमी**—भादों सुदी ८। नन्दा देवीकी पूजा (नन्दा कुमाऊँकी राष्ट्र-देवी रही हैं)।

(२१) **अनन्त चौदस**—भादों सुदी १४।

(२२) **खतड़वा**—कन्या संक्रान्ति, बालकोंके खेलका त्योहार।

(२३) **पितृपक्ष**—आश्विनका सारा कृष्ण पक्ष।

(२४) **नवरात्र**—आश्विन (क्वार) सुदीके पहिले नौ दिन, दुर्गाकी पूजा और बलि होती है।

(२५) **विजयादशमी**—क्वार सुदी दशमी, नवरात्र व्रत-पारण तथा रामके लंका-विजयका त्योहार।

(२६) **दीपोत्सव**—कार्तिक बदी ११को हरिदीप, १३को यमदीप, १४को शिवदीप जलाया जाता है।

(२७) **नरकचतुर्दशी**—कार्तिक बदी १४।

(२८) **दीवाली**—कार्तिक सुदी अमावास्या।

(२९) **गोधन**—कार्तिक सुदी १ को गोधन-पूजा।

(३०) **यमद्वितीया**—कार्तिक सुदी २ जो भ्रातृद्वितीया भी है।

(३१) **हरिबोधिनी**—कार्तिक सुदी ११।

(३२) **कार्तिक पूर्णिमा**—गंगा-स्नान, तीर्थस्नान।

(३३) **भैरवाष्टमी**—मार्गशीर्ष (अगहन) बदी ८, कालभैरवकी पूजा।

(३४) **मकरसंक्रान्ति**—(या उत्तरायणि संक्रान्ति) बागेश्वरका मेला होता है। लड़के घीके पक्वान्न—'घुघुता' कौओंको खिलाते हैं।

(३५) **संकष्टहर व्रत**—माघ बदी ४, गणेशपूजा।

(३६) **वसन्त पञ्चमी**—माघ सुदी पञ्चमीसे होलीके नाच-गाने आरम्भ होते हैं।

(३७) **शिवरात्रि**—फागुन बदी १४। बहुतसे शिवस्थानोंमें मेले लगते हैं।

(३८) **होली**—फागुन सुदी १४ से होली शुरू हो जाती है।

(३९) **टीका द्वितीया**—चैत बदी २को दम्पतिको टीका लगाया जाता है।

(iii) **हिन्दू देवता**—

अलमोड़ा-नैनीताल या कूर्मांचल (कुमाऊँ)के हिन्दू सभी हिन्दुओंकी भाँति सर्वस्वीकृत देवताओंकी पूजा करते हैं। यहाँके देवताओंके प्रतापके कितने ही कथानक प्रसिद्ध हैं। अलमोड़ाकी दुर्गा देवीको कमिश्नर ट्रेलने किलेसे हटा दिया। साहब उसी समय उत्तरमें कहीं घूमने गये थे। देवीने उन्हें हिमान्ध कर दिया। ट्रेलको नाक रगड़नी पड़ी, और देवीको उसके उपयुक्त स्थानपर स्थापित कर देना पड़ा। इस कथाको मिस्टर ओकलीने अपने ग्रन्थ 'होली हिमालय'में उल्लिखित किया है।

ट्रेलने[1] इस प्रदेशके बहुतसे देवी-देवताओंका वर्णन किया है। जिनमेंसे कुछ हैं—

(१) **भूत**—अकालमृत्युसे मारे व्यक्तिकी प्रेतात्मा। राजा ज्ञानचन्दका बड़ा भाई मारा जानेपर भोलानाथके नामसे भूत और उसकी स्त्री भूतनी हुई। अलमोड़ामें उसके आठ मन्दिर हैं।

(२) **मसान**—बच्चेकी प्रेतात्मा।

(३) **तोला**—अविवाहित पुरुषकी प्रेतात्मा।

(४) **ऐरी**—शिकारमें मारे व्यक्तिकी प्रेतात्मा।

(५) **अछेरी**—तरुण-तरुणियोंकी प्रेतात्मा।

(६) **देव**—गाँवके देवता, भूत।

(७) **नन्दादेवी**—यह नन्दादेवी शिखरपर विराजती स्वयं पर्वतराज हिमालयकी पुत्री पार्वती हैं। सारे कुमाऊँमें इनकी पूजा होती है। जगह-जगह इनके मन्दिर हैं। कहीं-कहीं इन्हें ही नैना या नैनादेवी कहते हैं।

---

१. Statistical sketch.

(८) कैलास, मानसरोवर, बदरी, केदार—सबके पूज्य देवता हैं।

(३) इस्लाम—१९३१ में ३१५८ मुसलमान अलमोड़ा जिलेमें रहते थे। जिलेकी चारों तहसीलोंमें उनकी संख्या निम्नलिखित प्रकार थी—

अलमोड़ा	१४८२ (६५८ स्त्रियाँ)
चम्पावत	१४८ (८५ ,,)
पिठौरागढ़	३९६ (२१२ ,,)
रानीखेत	११३२ (४९५ ,,)

स्त्रियोंकी कम संख्या होनेसे मालूम होता है कि अलमोड़ा और रानीखेत तहसीलोंके मुसलमानोंमें बाहरसे आये अस्थायी निवासी अधिक थे। सांस्कृतिक समझौतेके अभावके कारण देशके विभाजनके बाद जो मुसलमान पाकिस्तान गये, उनकी संख्या बहुत नहीं होगी।

(४) ईसाई-धर्म—१९३१ ई० की जनगणनामें अन्य (हिन्दू-मुसलिम-भिन्न) लोगोंकी संख्या ५३७६ (२७६९ स्त्रियाँ) थीं। वे प्रायः सभी ईसाई थे। बीससे अधिक संख्यामें ईसाई निम्न पट्टियोंमें थे—

अलमोड़ा	२७१ (१७०)	दारोन	६१६ (३०२)
अस्कोट-तल्ला	२८ (४७)	पलवेलोन-तल्ला	१५७ (६६)
कत्यूर-तल्ला	८५ (४१)	,, -मल्ला	१७१ (१२७)
,, -विचला	४८ (२९)	बराँव	६३ (५४)
,, -मल्ला	१२८ (६०)	बाराबीसी	२१ (११)
खरही	६४३ (३४४)	महार	३७२ (२५७)
खासपरजा	२६२ (१२३)	रनगोढ	११६ (५६)
चरल-तल्ला	४३ (२१)	सुई बिसुङ्	२५ (२३)
चलसी	२३ (१५)	सेती-तल्ला	११९ (६१)
चौदंस	३१ (१५)	सेती-मल्ला	२३ (९)

भोटान्तिक लोगोंने अपनेको हिन्दू लिखा था, इसलिए इस संख्यामें बहुत थोड़े ही बौद्ध या दूसरे धर्मवाले सम्मिलित हैं।

१८१५ में ब्रिटिश शासन स्थापित होनेके साथ ही ईसाई धर्मका भी प्रवेश कुमाऊँमें हुआ था। किन्तु उसकी प्रगति उन्नीसवीं सदीके मध्यसे होने लगी, जब कि मैदानसे कितने ही मिश्नरी पहाड़की ओर आये। पादरी जेम्स केनेडी[1] उनमेंसे एक थे। वह १८३९में भारत आये। तबसे १८६९ तक उनका कार्यक्षेत्र बनारस रहा, जहाँ ईसाई धर्मका प्रचार १८१६ में सिरामपुरसे आकर विलियम स्मिथने आरम्भ किया था। स्मिथके साथी बौलेने पहिले-पहल हिन्दीमें बाइबिलका अनुवाद किया। मिश्नरियोंके कार्यसे प्रसन्न होकर राजा जयनारायणने अपने स्कूलको एक अच्छी निधिके साथ उन्हें दे दिया, तबसे अबतक बनारसके जयनारायण स्कूल (अब कालेज)का प्रबन्ध ईसाई मिश्नरी ही करते चले आये हैं। आरम्भिक दिनोंके अपने अनुभवका केनेडीने अच्छा वर्णन किया है। उस वक्त पादरी लोग बनारसकी सड़कोंपर भाड़ेके मुन्शी रख उनसे बाइबिल पढ़ाया करते थे—उन्हें विश्वास था कि इस भाँति धर्मका बीज किसी चलते-फिरते उर्वर-हृदयमें भी पड़ जायगा। केनेडी बड़ी तत्परतासे अपने

१. 'Life and works in Benares and Kumaon—by James Kennedy (London 1882)',

कायस्थ मुन्शीको ईसाई बन जानेको कहते थे। मुन्शी बाइबिल जैसी कथाओंको पुराणोंमें भी पा सकता था। पादरीके कथनानुसार वह बाइबिलके सत्यको स्वीकार करता था, किन्तु कहता था—"मुझे यह कहना बेकार है, चाहे हिन्दू धर्म झूठा हो या सच्चा, मैंने वैसे ही मरने और जीनेका निश्चय कर लिया है, जैसे कि मेरे बापदादा मरे और जिये।[1]" ईसाई बन जानेके लिए कहनेपर हिन्दुओंका वही एक-सा उत्तर होता था।[2]—"हमें बापदादाके रास्तेपर चलना चाहिये। जो हमारे बापदादा मानते थे, हम वही मानते हैं। जैसे हमारे बापदादा आचरण करते थे, हम भी वैसा ही करते हैं। अच्छा पुत्र कभी अपने मातापिताको नहीं छोड़ता। अच्छी पत्नी कभी दूसरेके पास जानेके लिए अपने पतिको नहीं छोड़ती।"

अल्मोड़ामें मिशनका बाकायदा काम सन्१८५० में आरम्भ हुआ। इससे पहिले कुमाउँनियोंने शायद कभी चलते-फिरते ही किसीके मुँहसे बाइबिलकी बातें सुनी हों। लन्दन मिश्नरी सोसायटीके पादरी ज० ह० बडन सन् १८५० में अल्मोड़ा आये थे, वह पहिले बनारस और मीरजापुरमें काम कर चुके थे। सोसायटीको उनका अल्मोड़ेमें काम करना पसन्द नहीं था, इसलिए सहायता देनेसे इनकार कर दिया। लेकिन बडनको उस समयके कमिश्नरके सहायक कसान तथा पीछे स्वयं कमिश्नर[3] जेनरल सर रामजे तथा मित्रोंने सहायता देकर काममें बाधा नहीं पड़ने दी।

कैनेडी उस समय (सन् १८६९)[4] लन्दन मिश्नरी सोसायटीकी ओरसे रानीखेत भेजे गये जब, कि वहाँ गोरा छावनी बनने लगी थी। उनका काम भी अधिकतर गोरोंमें था। ईसाके समताके धर्मके प्रचारके लिए आये सहृदय धर्मदूतोंको यह देखकर बड़ा खेद होता था कि अपनी जातिकी स्त्री न ले आनेके कारण भारतीय स्त्रियोंसे अंग्रेजोंने जो सन्तान पैदा की थी, जो धर्म तथा चाल-ढालमें अँग्रेजोंका पूरा अनुसरण करते थे, उनके साथ उनका बर्ताव बुरा होता था[5]—"वे (यूरेसियन) बहुत उचित करते हैं, जो अपने लिए अर्धजाति (वर्णसंकर) शब्दके प्रयोगका विरोध करते हैं। जैसे भावोंके साथ यूरोपियन लोग इस वर्गके लोगोंको जिस दृष्टिसे देखते हैं, उसे देखकर बहुत आश्चर्य और अफसोस होता था। यद्यपि अपने धार्मिक विचारों, यथाशक्य यूरोपीय चाल-ढाल तथा अंग्रेजी भाषाके प्रयोग-को स्वीकार कर वह यूरोपियनोंके नजदीक आना चाहते हैं, किन्तु उन्हें यह अनुभव करनेके लिए मजबूर किया जाता है कि तुम हमारे समाजके नहीं हो।"

हिन्दुओं द्वारा सहस्रों वर्षोंसे उत्पीड़ित तथा उपेक्षित जातियोंमें कितनोंको ईसाई धर्म स्वीकार करनेके लिए कारण भी था, किन्तु बड़ी जातिवाले जिस भावको लेकर ईसाई बनना चाहते थे, उसका एक उदाहरण कैनेडीके ग्रन्थमें इस प्रकार है—"कुर्गका भूतपूर्व राजा उस समय बनारसमें राजबन्दी था। उसकी लड़कीको श्रीमती केनेडी कुछ समय पढ़ाती रहीं। वह प्रतिदिन हमारे घर लायी जाती और हमारे साथ मेजके पास बैठकर हमारे बच्चोंके साथ पढ़ती थी। राजाकी इच्छा थी कि उसकी शिक्षा-दीक्षा एक ईसाई अंग्रेज-महिलाके अनुरूप हो। राजाको आशा थी कि इस प्रकार वह शायद राज्य लौटानेमें सहायक हो। अन्तमें वह इंग्लैण्ड गयी, कॅण्टरबरीके आर्कबिशपने उसे बप्तिस्मा दिया,

---

१. 'Life and works in Benares and Kumaon', पृष्ठ ३२।

२. वही, पृष्ठ ११५।

३. नैनीतालमें सन्१८५७, द्वाराहाटमें १८७६ (स्कूल १८८१), पिठौरागढ़में १८८४-८५ में मिशनका कार्य आरम्भ हुआ। पीछे धारचूला, चौदंस, तथा जोहारमें मिश्नरी गये एवं कत्यूर, बेनीनाग और लोहाघाटमें मिशन-केन्द्र बने।

४.–५. 'Life and works in Benares and Kumaon', ३६-३७।

रानी (विक्टोरिया) संरक्षिका बनीं और उसका विवाह एक अंग्रेज अफसरके साथ हुआ, किन्तु वह विवाहके बाद थोड़े ही समय जिन्दा रह सकी।"[1]

आगे चलकर अलमोड़ामें अमेरिकन तथा अंग्रेज मिशनरियोंने और कितने ही स्थानोंपर शिक्षण संस्थाएँ, चिकित्सालय आदि खोले। उन्हें सफलता अछूत जातियोंमें ही कुछ हदतक मिल सकी, क्योंकि ईसाई बननेपर उनका सामाजिक उत्पीड़न हट जाता था। और भी सफलता हुई होती, यदि आर्यसमाज मैदानमें न उतरता। आज अलमोड़ाके अधिकांश शिल्पकार अछूत आर्य-समाजी हैं।

---

१. 'Life and works in Benares and Kumaon', पृष्ठ ३४७।

अध्याय ५

आजीविका

१. कृषि—(१) आँकड़े—कृषि इस जिलेकी मुख्य आजीविका है। हजारमें ९२४ आदमी इसीपर गुजर करते हैं। सन्१९२१ की ५,३०,३३८ की जनसंख्यामें ४,९८,७२० कृषिजीवी थे। जिलेमें कत्यूरी राज-वंशके वंशज अस्कोटके रजवार ही बड़े तालुकदार थे, नहीं तो ९५% हिस्सेदार या जमींदार १० एकड़से कमके ही मालिक थे, जिनमें ५०% के पास तो ३ एकड़से भी कम जमीन थी। आजसे तीस वर्ष पहिलेकी बात है, अब तो अवस्था और भी बुरी हो गयी है। १९२१ में कृषिजीवी वर्गोंकी संख्या निम्नलिखित प्रकार थी[1]—

जीविका	पुरुष	स्त्री	उपजीवी
मालगुजारी	१५१	८९	२९०
साधारण कृषि	१,५८,१२७	१,७२,२२९	१,५६,४२२
कारिन्दा	१०	—	१
खेती-नौकर	८५२	४	५०७
खेत-मजदूर	२८०	५११	२५७
योग	१,५९,४२०	१,७२,८३३	१,५७,४७७

सन् १९२१ में आबादीकी घनता (प्रति वर्गमील) आदि निम्नलिखित प्रकार थी—

घनता	क्षेत्रफलका प्रतिशत		कर्षणीयका प्रतिशत		वर्षा (इंच)
	कर्षणीय	कृष्ट	कृष्ट	सिंचित	
९८.४	९.६	८.६	८९.५	८.१५	६३.९३

जिलेके ११ पर्गनोंमें बस्ती तथा कृषि सम्बन्धी आँकड़े निम्नलिखित प्रकार हैं—

पर्गना	ग्रामसंख्या	क्षेत्रफल	कृषिभूमि	जनसंख्या	बस्ती-घनता	उपत्यकाएँ
१. पाली	१,१४३	५००	१०८	१,५६,५०५	३१३	रामगंगा, गगास, बनाड, देवगाड
२. फल्दाकोट	१२४	४०	१३.४	११,२९९	२८२	कुचगर, सिरौंट
३. गंगोली	५७०	३००	४२	४१,१६६	१३७	सरजू, रामगंगा
४. काली-कुमाऊँ	७७६	२५०	६१.८७	५५,५६९	२१०	काली, पनार, लढिया, लोहावती
५. बारामंडल	१,०५८	४००	६२.५	१,०९,१९०	२७३	कोसी, सुआल, गगास, पनार, सई, जैंगर, मनसारी, सरजू
६. सीरा	२६७	१६०	१५	२०,४९८	१३०	कल्यानीगाड

१. 'The Social Economy of the Himalayas' by, Dr. S. D. Pant pp. 77-80.

पर्गना	क्रमसंख्या	क्षेत्रफल	कृषिभूमि	जनसंख्या	बस्ती-घनता	उपत्यकाएँ
७. शोर	३६५	७५	२३·५९	३७,२५३	९४०	कल्यानीगाड, चन्द्रभागा
८. दानपुर	५७०	६००	४४·४४	५८,२१२	९७	गुमती, गरुड़ लाहूर, कनलगाड़, पिण्डार, सरजू रामगंगा
९. अस्कोट	१४२	४००	६·४९	१९,५०६	४८	गोरी, काली गजीगाड, चारनगाड
१०. जोहार	२१३			१५,६२९	५१०	गोरी, रामगंगा
११. दारमा	५२			४,५१६	५१०	काली, धौली

(२) **भूमिके भेद**—अलमोड़ाकी भूमि सारी पहाड़ी है, इसलिए खेत यहाँ चौड़ी सीढ़ियोंके रूपमें ही बन सकते हैं, जिनके बनानेमें बहुत परिश्रम करना पड़ता है। पत्थरोंको चुनकर एक दीवार खड़ी की जाती है, फिर ऊपरकी ओरसे जमीनको खोदकर नीचेकी ओर फेंका जाता है। पहाड़में मिट्टीकी तह पतली होती है, इसलिए यहाँके खेत पत्थरोंके ऊपर मिट्टीकी पतली तह बिछाकर बनते हैं। खेतोंकी दीवारोंकी बराबर मरम्मत करनी पड़ती है और काँटे-झाड़ियोंकी ओरसे जरा भी गफलत करनेपर वह दखल जमा बैठती है। सबसे अच्छे खेत तलाँव (निचली भूमि)की सेराकी जमीन है, जहाँ भूमि अधिकतर समतल, पानी सुलभ और स्थान गर्म है। अच्छे किस्मका चावल यहीं पैदा किया जाता है। **पनछाड़ तलाँव** कुछ ऊपर होता है, जिसे नहरसे समय-समयपर सींचा जा सकता है, यदि वर्षासे काम न चले। ऊपरवाले खेत **उपराँव** कहे जाते हैं, जो गेहूँ, जौ जैसी खेतीके उपयुक्त होते हैं। इसमें जहाँ पानीका अभाव होता है उसे **ऊखर** कहते हैं। इसमें बहुत कम खेती की जाती है। करनेपर भी खेतको बीचमें दो-तीन साल परती छोड़ रखा जाता है, जिसे **खल** कहते हैं। सबसे उपेक्षित ढंगका खेत **इजरात** है, जिसकी मेंड़की दीवारें बहुत दरिद्र होती हैं, जोतने और खाद देनेकी ओर भी ध्यान नहीं दिया जाता और उसे दो-दो,तीन-तीन सालतक परती छोड़ दिया जाता है। तीनसे पाँच हजार फुट खेतीके लिए यहाँ सबसे उपयुक्त स्थान है। अस्कोट और कपकोटको मिलानेवाली रेखासे ऊपरके 'भोट' प्रदेशका क्षेत्रफल जिलेका तिहाई है, तो भी वहाँ कृषिकी भूमि ८००० एकड़ भर और जनसंख्या २७,३३६ है।

सिंचाईके लिए मील-आधमीलकी छोटी-छोटी नहरें किसान स्वयं बना लेते हैं, जिन्हें गुल (कुल्या) कहा जाता है। इनके पानीकी मात्राको गराट (पनचक्की)से नापा जाता है—जितने पानीमें एक गराट चलता है, उससे नापकर एक या अधिक गराटकी नहर कही जाती है। सरकारने वार्षिक कर लेकर पानीपर गराटियोंको अधिकार दे रखा है, इसलिए बाज वक्त नहर निकालनेमें ये गराट बाधक सिद्ध होते हैं। भारत स्वतन्त्र हो गया है, किन्तु मालूम नहीं अभी कितना समय और लगेगा, जब कि बड़ी-बड़ी नदियोंका पानी सींचनेकी बड़ी नहरोंमें बहने और बिजली पैदा करनेके लिए नाधा जायेगा।

(३) **फसलें**—धान अप्रैलमें बोया और सितम्बरमें काटा जाता है, फिर उसी खेतमें अक्तूबरमें गेहूँ बो दिया जाता है, जो अप्रैलमें कट जाता है, फिर मँडुआ मईमें बोकर अक्तूबरमें काट लिया जाता है। और तब अप्रैलतक खेत खाली पड़ा रहता है। कहीं-कहीं धानका स्थान झँगोरा और गेहूँका

जौ लेता है। उड़द, मूँग, भट(मास), गहत जैसी दालके अनाज खरीफमें, विशेषकर मँडुआके साथ बोये जाते हैं। खेतोंको परती छोड़ते समय गाँवके गाँव अपने एक ओरके खेतोंको छोड़ देते हैं, जिससे ढोरोंके चरनेमें सुभीता रहता है। धानकी फसल पहाड़के ऊपरी भागमें आरम्भ होकर निचले भागकी ओर जाती है, जब कि रबीकी फसल नीचे पहिले शुरू होकर अन्तमें ऊपर पहुँचती है। इसीलिए सिंचाईवाले खेतोंमें सालमें दो फसलें—एक चावल और दूसरी गेहूँकी—हुआ करती हैं। फसल कट जानेपर डण्ठल प्रायः खेतमें खड़ा ढोरोंके चरनेके लिए छोड़ दिया जाता है। यहाँ उगात (फाफड़) और गन्ना (पौंडा) भी पैदा होता है। गन्ना अधिकतर चीमने (खाने) के काम आता है। ६ हजार फुटसे ऊपरकी ऊँचाइयोंपर उगात और छुवा होते हैं। ७ हजार फुटपर रबी अप्रैलमें बोयी और जूनमें तैयार होती है, ८ हजार फुटपर वह जुलाईमें पकती है। ६ हजार फुटसे ऊपर **उआ जौ** (नंगा जौ) पहिले और फिर फाफड़ और छुवा तैयार होते हैं। हिमानियोंके पास अधिक ठण्ढी जगहोंपर **नपल** नामक एक अच्छा गेहूँ पैदा होता है। वह बर्फ पिघलनेपर मई या जूनमें बोया और नवम्बरमें काट लिया जाता है, यदि बरफ जल्दी नहीं पड़ गयी। निचले पहाड़ोंमें मसूर भी कहीं-कहीं बोयी जाती है, किन्तु चनेकी फसल पहाड़में कहीं नहीं होती।

(४) **तरकारियाँ**—आलू, इन्द्रायन (पलवल), गाजर, गोभी, चुकन्दर, मूली, सलगम, सेम यहाँ होती है। अलमोड़ा और रानीखेतके आसपास फूलगोभी, बन्दगोभी, फलियाँ आदि बहुत पैदा होती हैं। दानपुरके दक्षिण-पूर्वमें हल्दी, मिर्च और अदरखकी खेती काफी होती है। शहरों और छावनियोंके नजदीक अस्परगस और सलाद भी होती है।

२. **शिल्प-उद्योग**—(१) **भाँग, भँगेला**—गंगोली और बारामंडलके परगनोंमें विशेषतौरसे और काली-कुमाऊँमें कुछ कम, भाँगकी खेती होती है। इसकी छालसे रस्सी और भँगेला (बोरेका टाट) बनता है, तथा बीजका तेल खानेमें काम आता है। पक्की पत्तियों तथा मादा पौधेके डण्ठल और बीजसे चरस बनाया जाता था, जिसका बनाना अब निषिद्ध है। भाँगकी खेती अच्छी नहीं समझी जाती। गढ़वालमें खसिया लोग इसकी खेती करते हैं, जो जनेऊ नहीं पहनते। अलमोड़ामें शिल्पकार इसकी खेती करते हैं; खसिया उसकी रस्सी बना सकते हैं, टाट बुननेका काम कोली लोग करते हैं।

(२) **चाय**—चाय-बगान अब इतिहासकी चीज है। सन् १८२७ में इसकी ओर पहिले-पहल ध्यान गया था। सन् १८३४ में इसके लिए एक कमेटी बनायी गयी, जिसने अपनी रिपोर्ट पक्षमें दी। सन् १८३५ में चीनसे चायका बीज मँगाकर कलकत्तेमें उसकी पौधें तैयार की गयीं, जिन्हें आसाम, कुमाऊँ और गढ़वाल भेजा गया। सहारनपुर वनस्पति-उद्यानके डाक्टर फाकनर इसके अधीक्षक बनाये गये। अलमोड़ाके पास लछमेश्वरमें चायबगानका स्थान ठीक किया गया। सन् १८४१ में इस बागमें ३,८४० पौधे लगे थे। अप्रैल सन् १८४२ में चाय बनानेके लिए चीनी मजदूर मँगाये गये। सन् १८४३ में कुमाऊँकी चायकी इंग्लैण्डमें प्रशंसा हुई। सन् १८३५में पता लगा, कि भारतसे आयी चाय अच्छी जातिकी नहीं थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनीने सन् १८४८ में मिस्टर फारचुनको भेजा। इसके फलस्वरूप मध्यचीनकी काली और हरी चायके बीस हजार पौधे हिमालयमें लगाये गये। चायके लिए प्रसिद्ध ह्वोचाङ् जिलेसे प्रथम श्रेणीके चाय बनानेवाले, दो सीसागर और बहुत परिमाणमें हथियार लाये गये। सन् १८५१में जिलेमें चायका भविष्य बहुत अच्छा मालूम हुआ। लछमेश्वरके अतिरिक्त हवालबाग (सन् १८४१ में अर्जित) में चायके बाग लगे। कत्यूरमें भी कप्तान रेम्सेने सन् १८५० में अपना चार एकड़का बाग तैयार किया। सारी शुभ भविष्यद्वाणियोंके होते भी सन् १८६४–६५ में सरकारी बाग

बेंच देने पड़े। सन् १८९२ में चायके निकासके लिए अलमोड़ातककी गाड़ी-सड़क भी बना दी गयी, तो भी भाग्य नहीं पलटा। सन १९०८ में २,१०२ एकड़में चायके बाग थे, जिनसे २,५८,५२२ पौण्ड काली और १८,०७५ पौण्ड हरी चाय तैयार हुई। उस समय सबसे बड़ा चाय-बगान था, मल्ला-कत्यूरका (५०६ एकड़, उपज ८८,९७६ पौण्ड) और दूसरे नम्बरपर उसके पास ही कौसानी (३९६ एकड़, ५६,७९२ पौण्ड)। लछमेश्वरका बाग तब खतम हो चुका था, वही अवस्था हवालबागकी भी एक भारतीयके हाथमें जाकर हो गयी। उसके १८७ एकड़में सन् १९०८ में ७,३१७ पौण्ड हरी चाय पैदा हुई थी।

(३) **टोकरी-चटाई**—ऊन और चायके बाद टोकरी और चटाई बनाना यहाँका अच्छा शिल्प है। इसके लिए रिंगाल (पतली बाँसियाँ) काममें लाया जाता है। मल्ला दानपुर (दानपुर परगना)के लोग जाड़ेमें यही काम करते हैं। इनकी बनाई **कण्डी** बहुत मजबूत होती है। और मजबूत करनेके लिए किसी-किसीपर कच्चा चमड़ा भी मढ़ा रहता है। बागेश्वरके मेलेमें यहाँकी चटाइयाँ और टोकरे बहुत बिकते हैं।

(४) **ऊन-कताई**—ऊनकी कताई-बुनाई जोहार-दरमाके लोग करते हैं, यह बतला आये हैं। उत्तरी पट्टियोंके लोग अधिकतर अपने घरकी भेड़ोंका ऊन इस्तेमाल करते हैं। मोटे ऊनी कपड़े बहुधा लोग अपने ही इस्तेमालके लिए बनाते हैं। भोटान्तिक लोग मानसरोवर प्रदेश (तिब्बत)की भेड़ोंके ऊनका उपयोग करते हैं। सन् १९०९ में ऊन-बुनाईको प्रोत्साहन देनेके लिए अलमोड़ामें एक बुनाई-स्कूल खोला गया और विद्यार्थियोंको आकृष्ट करनेके लिए ६ रुपया मासिक छात्रवृत्ति दी जाती रही। उस समय प्रतिवर्ष १२ हजार मन तिब्बती ऊन कानपुर भेजा जाता था। चरखा संघने भी बागेश्वर आदि स्थानोंमें ऊनी कपड़ा बुनने-बुनानेके केन्द्र खोले हैं। किन्तु ऊनका पूरा उपयोग छोटी मशीनोंसे पनबिजली पैदाकर विद्युच्चालित चरखों-करघोंसे ही हो सकता है। अपनी भेड़ोंकी नसल सुधारना भी जरूरी है, क्योंकि लाल-तिब्बत कच्चे ऊनकी जगह कपड़ा भेजना ज्यादा पसन्द करेगा।

३. **व्यापार**—(१) **बाहरी व्यापार**—अलमोड़ाका बाहरी व्यापार तिब्बत तथा नेपालके साथ है। तिब्बतके व्यापारके सम्बन्धमें हम भोटान्तिक लोगोंके बारेमें कहते समय बतला चुके हैं। नेपालके साथका व्यापार कुछ जौलजीवी मेलेमें होता है और कुछ काली नदीके आरपारसे।

(२) **भीतरी व्यापार**—खानेसे बचे अनाजको पहाड़के लोग भोटान्तिक व्यापारियोंके हाथमें बेच देते हैं, अथवा वह छोटे-छोटे बाजारमें चला जाता है। आजकल तो शायद ही किसी परगनेमें अतिरिक्त अन्न पैदा होता है। सालामवाले अच्छा बासमती पैदा करते हैं, जिसे वह अलमोड़ाके व्यापारियोंके हाथ बेंच देते हैं। सीरा और शोर अपने गेहूँ-चावलके लिए प्रसिद्ध हैं। इनका हाट पिठौरागढ़ या अलमोड़ा है। सोहागाका बाजार गिरनेके कारण लोहाघाट तथा सैनिक छावनीके हट जानेसे चम्पावत भी श्रीहीन हो गये हैं—चम्पावत उतना नहीं हुआ, क्योंकि अब भी तहसीलके कार्यालय हैं। काली-कुमाऊँ, द्वारस्यूँ, रिउनी, महरुरी, उच्युर, बिसौडसे बहुत-सा आलू अलमोड़ा और रानीखेतको जाता है। पाली (द्वाराहाट) की सभी सड़कोंपर दुकानें लगाकर बनिये बैठते हैं, जो यहाँकी हल्दी, मिर्च, फाफड़, उगलको खरीदकर रामनगर बाजारमें पहुँचा देते हैं। शोरमें भी काफी फाफड़ होता है, और काली-कुमाऊँकी हल्दी और अदरक प्रसिद्ध है।

(३) **नापतोल**— (क) **नाप**—जिलेमें नापके परिमाण निम्नलिखित प्रकार हैं—

दो सेर गेहूँ बोनेका खेत = १ नाली = १२ गज × २० गज = २४० वर्गगज।

२० नाली = १ बीसी (१ मन) = ४८०० वर्गगज = १ एकड़ ।

(ख) भार माप—

१६ मुट्ठी—१ नाली—२ सेर ।

१६ नाली—१ पराई—३२ सेर ।

(५) मेले—शहरों और गाँवोंके बाजारों, दूकानों, व्यापारिक मेलों (जौलजीवी, थल और बागेश्वर) के अतिरिक्त जहाँ-तहाँ कितने ही धार्मिक मेले भी लगते हैं, जहाँ खाने-पीने-पहिननेकी चीजें बिकती हैं, जिनमेंसे कुछ हैं—

पर्गना	स्थान	नाम	जनसंख्या
काली-कुमाऊँ	तपनीपाल[1] (फरका)	दसहरा (अक्तूबर)	५,०००
	गुमदेश[2] (चामदेव मन्दिर)	दसमी (अप्रैल)	५,०००
	,, (नीधरघाट, गढ़मुक्तेश्वर[3]	कार्तिक-पूर्णिमा	४,०००
	खिलपतीफाट[4]	आषाढ़-पूर्णिमा	३,०००
	लोहाघाट[5]	महाष्टमी (अक्तूबर)	६,०००
	देवीधुरा[6] (चलसी)	श्रावण-पूर्णिमा	६,०००
	चम्पावत[7] (तल्ला-चराल)	कर्क-संक्रान्ति	२,५००
	करक्युरा (तल्ला-चराल)	दीवाली	१,५००
	देवरी[8] मल्ला (पलविलोन)	कार्तिक-पूर्णिमा	५००
	,,	वैशाख-पूर्णिमा	५००
	विशुन[9]	नन्दाष्टमी (अगस्त)	१,५००
गंगोली	रामेश्वर (पट्टी बेल)	उत्तरायण-संक्रान्ति (जनवरी)	७,०००
	,,	वैशाख-पूर्णिमा	५,०००
	,,	कार्तिक-पूर्णिमा	५,०००
	कमस्यार[10] (बोधानमन्दिर)	नागपंचमी (अक्तूबर)	३,०००
	,,	नवरात्रपंचमी (अक्तूबर)	३,०००
	तल्ला-बरौंव (पाताल भुवनेश्वर)	शिवरात्रि (फरवरी)	२,५००

१. नरसिंह देवता ।
२. चामदेव ।
३. शिव ।
४. खिलपती देवी ।
५. रिखेश्वर महादेव ।
६. वाराही देवी ।
७. गुराल देवता ।
८. कैलपिल देवता ।
९. झुमा देवी ।
१०. शिव ।

पर्गना	स्थान	नाम	जनसंख्या
दानपुर	बागेश्वर (तल्ला-कत्यूर)	उत्तरायण (जनवरी)	१५,०००
	,,	शिवरात्रि (फरवरी)	४,०००
	,,	होली चतुर्दशी (मार्च)	४,०००
	रनचूला[1] (मल्ला-कत्यूर)	नन्दाष्टमी (अगस्त)	८,०००
	,,	होली-चतुर्दशी (मार्च)	३,०००
	पल्ला-कमस्यार (गोपेश्वर)	शिवरात्रि (फरवरी)	४,०००
	,, (धौलनाग)	नागपंचमी (सितम्बर)	५,०००
	कमस्यार (भद्रकाली)	चैत्र शुक्लाष्टमी (मार्च)	४,५००
	नकुरी[2] (संगर)	,,	७,०००
	,, (मल्ला-ऊपर)	,,	५,०००
	बनलेख (दुगपट्टी)	,,	४,०००
	शिकार (भनारपट्टी)	,,	४,०००
पाली-पछाँव	पल्ला-गिवाड[3] (गनेयाँ)	(अप्रैल)	५,०००
	तल्ला-गिवाड (सोमनाथ)	(मई)	२०,०००
	बिचला-डोरा[4] (द्वाराहाट)	बिक्कू (वृष-संक्रान्ति) (अप्रैल)	५,०००
	मल्ला-डोरा[4] (द्वाराहाट)	(अप्रैल)	१०,०००
	पल्ला-नया (बूढाकेदार)	कार्तिकपूर्णिमा (नवम्बर)	५,०००
	,, (मनिलादेवी)	बिखौती (अप्रैल)	४,०००
	भिकिया-साईं (नौलेश्वर)	(फरवरी)	५,०००
	मल्ला-ककलासाँव[5] (बगलिया-तल्ला)	शिवरात्रि (फरवरी)	७,०००
	पल्ला-अथागुली (बगवाली पौखर[6])	टीकादिन (नवम्बर)	३,०००
फलदाकोट	ककरियाघाट[6] (कन्दरखुआ)	(मई)	५,०००
वराहमण्डल	अलमोड़ा	कृष्णजन्माष्टमी	२,५००
	,, (नन्दादेवी)	नन्दाष्टमी (अगस्त)	४,०००
	,,	दसहरा	५,०००

१. ब्रह्मारीदेवी ।
२. देवी ।
३. अगवेरीदेवी ।
४. विभाण्डेश्वर ।
५. सियालदे ।
६. शिव ।
७. बगवाली ।
८. शिव ।

परगना	स्थान	नाम	जनसंख्या
	तल्ला-स्युनरा (देवथल)	शिवरात्रि	३,०००
	मल्ला-स्युनरा (गननाथ)	कार्तिक चतुर्दशी	४,०००
	,,	होली चतुर्दशी (मार्च)	५,०००
	कालीगढ़ (कुवाली)	श्रावण पूर्णिमा	६,०००
	जगेश्वर	वैशाख-चतुर्दशी (जुलाई)	३,०००
	,, दरुन	वैशाख-पूर्णिमा	५,०००
	झंकर शाइम[1]	मई	३,०००
सीरा	माली (बालेश्वर मन्दिर)	वृष-संक्रान्ति	१०,०००
	,, देचूला[2]	नागपंचमी (अगस्त)	४,०००
	,,	अनन्त-चतुर्दशी (सितम्बर)	४,०००
शोर	सेती (मोशता[3] मन्दिर)	नागपंचमी (फरवरी)	५,०००
	तल्ला-बलदिया (पुछेश्वर[4])	उत्तरायण (जनवरी)	३,०००
	,, (थल-केदार)	गणेशचौथ (अक्तूबर)	३,०००
	ध्वज-खरयात[5]	हरताली तृतीया (")	३,०००
	चौपखिया-शोन[6]	रामनवमी (अक्तूबर)	२,५००

४. पशुपालन—(१) आँकड़े—सन् १९१२ की पशुगणनामें ढोरोंकी संख्या निम्नलिखित प्रकार थी—

बैल	१,६४,३७९
गाय	२,००,८२३
बछड़े	१,३१,४९८
भैंसा	३,२१२
भैंसें	१,०१,७४९

(२) पशु—(क) ढोर—पहाड़ी गायें कम दूध देती हैं, और मैदानी गायोंके लिए पहाड़ी भूमि अनुकूल नहीं पड़ती। संकरीकरणका अभी रवाज कम है, यद्यपि बरेलीमें इसके बहुत सफल तजर्बे हुए हैं—हरियानाके साँड़से पहाड़ी गायकी बछिया ५ महीनेमें मौंसे दुगुनी दीख पड़ती थी। इस प्रकार दूध भी बढ़ जाता है। चौकुरीमें मिस्टर स्टेवन्सनने मैदानी साँड़ोंसे संकरित करके अच्छी दूध देनेवाली गायें पैदा की हैं, किन्तु पहाड़ी लोग हल्के पहाड़ी बैलको जोतनेके लिए तथा भैंसको दूधके लिए अधिक पसन्द करते हैं।

(ख) याक (चँवरी)—यह १०,००० फुटसे नीचे नहीं रह सकती। उससे गायसे संकरित

१. स्थानीय देवता।
२. भंगलिङ्नाग।
३. स्थानीय देवता।
४. चामू देवता।
५. जयन्तीदेवी, महादेव।
६. चामू।

जुबू और बैलसे संकरित गरजोंको रखा जाता है। जंगली याक जिलेमें बहुत दुर्लभ है, वह आकारमें भी बहुत बड़ा है।

(ग) **भेड़-बकरी**—भेड़ ऊनके लिए कम किन्तु मांसके लिए ही पाली जाती है। पहाड़ी भेड़ोंकी पूँछ छोटी होती है। बकरियाँ भी मांसके लिए पाली जाती हैं। देवताके लिए भेड़की नहीं, बकरीकी बलि देते हैं। भोटान्तिक लोगोंकी बोझा ढोनेवाली भेड़ें अपने लम्बे पैरोंसे ही दूसरी जातिकी मालूम होती हैं। वे लोग इन्हें चम्बावालोंसे खरीदते हैं। एक भेड़ १० सेर बोझा ढो सकती है। भोटान्तिक बकरी भी बड़ी और लम्बे बालोंवाली होती है, जिसे यह पश्चिमी हिमालयसे खरीद कर लाते हैं। इसका बोझ १२ सेरका होता है। सन् १८९८-९९ की पशुगणनामें यहाँ १,०,१३७३ भेड़ें तथा ८४,७१५ बकरियाँ थीं।

(घ) **टट्टू-खच्चर**—सन् १८९८-९९ में इस जिलेमें ३,६५३ टट्टू और ४९१ खच्चर थे। भोटान्तिक लोगोंके टट्टू तिब्बतसे आते हैं और वे अधिकतर सवारीका काम देते हैं। लादू टट्टू मैदानी जातिके होते हैं।

दानपुर, शोर और सीराके पर्गने तथा बराहमण्डल परगनेकी दोलफाट तथा दोनों तिखुनोंकी पट्टियोंमें चरनेकी अनुकूलता है। लोग वहाँ ढोर रखते हैं, और अपने घीको अलमोड़ा, रानीखेत अथवा भाबरके बाजारोंमें ले जाते हैं। कुछ दवाईकी जड़ी-बूटियाँ भी जिलेसे बाहर जाती हैं।

(३) **पशुपरिचारण**—जब नीचेकी भूमिमें खेतीकी प्रधानता हो गयी होगी, उस समय भी हिमालय पशुपालोंका स्वर्ग रहा होगा। आज भी उसके कुछ स्थान कुछ समयके लिए स्वर्ग बन जाते हैं। पहाड़के ही लोग नहीं, पंजाब और उत्तरप्रदेशके घुमन्तू आज भी अप्रैल-मईके महीनोंसे अपनी हजारों भैंसोंको लेकर हिमालयके 'घास मैदान'की ओर आते दीख पड़ेंगे। गढ़वालके पशुपाल इस बातके लिए उतने उद्योगपरायण नहीं हैं, किन्तु कुमाउँनी अब भी अपने खस-पूर्वजोंके रूपमें कभी-कभी दीख पड़ते हैं—खस लोग पशुपाल ही अधिक थे और पशुपरिचारणके लिए ही उन्होंने मध्य एशियासे कराकुरमके दुर्गम घाटोंको पारकर हिमालय प्रदेशको अपना नाम दे उसे खस-देश बनाया। नेपाली (गोरखा) भाषाका तो नाम ही खस-कुरा (खसोंकी भाषा) है। जिलेके लोग पशुचारणके लिए ८ हजारसे १० हजार फुटकी ऊँचाईकी गोचर-भूमियोंमें जाते हैं, बहुतेरे तराईके भाबरमें भी जाकर महीनों धूनी रमाते रहे।

यह पशुपरिचारण कितने ही स्थानोंमें चार बार होता है—(१) नजदीकी चरभूमियोंमें पशु मार्चमें भेज दिये जाते हैं, जहाँसे वह मईमें लौटते हैं, जब कि रबीकी कटाई और धानकी बोवाईके लिए अधिक आदमियोंकी आवश्यकता होती है। इस समय गेहूँ-जौके डण्ठल घरके पास ही खेतोंमें चरनेके लिए पर्याप्त रहते हैं। (२) जूनमें फिर वह चरभूमियोंमें भेज दिये जाते हैं। उस समय घरमें खेतीका काम हो गया रहता है और उधर चरभूमियोंमें घास लहलहा उठती है। इस बार वह **हरियाला** (प्रथम श्रावण) त्योहारके समय घर लौटते हैं। वर्षाके यौवनपर होनेके कारण घरके पासके पर्वतपृष्ठोंपर सब जगह हरी घासोंके बढ़ जानेके कारण चारेका कहीं टोटा नहीं रहता। (३) अगस्तमें फिर चारणयात्रा शुरू होती है। यद्यपि इस समय घरके आस-पास भी घासका अभाव नहीं होता, किन्तु चरागाहोंका आकर्षण तथा घासकी पोषकताकी प्रसिद्धि पशुपालोंको वहाँ खींच ले जाती है, साथ ही गाँवके पासकी घासको बचा रखनेका ख्याल भी काम करता है। खरीकी कटाईके समय पशु लौट आते हैं। (४) अन्तिम परिचारण खरीफ कटते ही शुरू होता है। सर्दी बढ़नेके साथ पशुपाल फिर घरकी ओर लौटते हैं।

यह चार बारकी पशुचारण-यात्रा हर एक गाँव नहीं करता। कामके लिए जिनको आदमियों और पशुओंकी आवश्यकता नहीं होती, वह मार्चके गये अक्तूबरमें ही लौटते हैं। उनकी चरभूमि भी दूरके रास्तेपर होती है, जैसे दानपुर पर्गनेकी ढकुरी और गढ़वालकी दूदाटोली; ढकुरीमें कश्मीरी गूजर भी अपनी भैंसे लेकर पहुँचते हैं।

पशुपाल अधिकतर पुरुष और वह भी स्वस्थ तथा हृष्ट-पुष्ट होते हैं। बच्चे, बूढ़े, बीमार घरपर छोड़ दिये जाते हैं। यही बात गर्भिणी तथा बच्चेवाली स्त्रियोंकी भी है। घरसे आदमी आकर उन्हें गेहूँ-मँडुवाका आटा पहुँचाते तथा समय-समयपर छुट्टी भी दिलाते रहते हैं।—दही, मट्ठा गोरखियोंकी अपनी चीज है, जिसमेंसे कुछ कभी-कभी घर भी भेजा जाता है। जब घरसे कोई रसद पहुँचाने आता है उसी समय जमा किया मक्खन या घी भी घर भेज दिया जाता है। इस पशुपाल-जीवनमें एक बार फिर गाँवका व्यक्तिवाद दूर हो जाता है और कई-कई परिवारोंके पशुपाल एक संघमें बँधकर काम बाँट लेते हैं, यद्यपि सबका खाना-पीना-रहना एक झोपड़ी (खरक) में होता है। उनकी चरभूमि (खाता) भी एक उपत्यकाके कई ग्रामोंकी सम्मिलित सम्पत्ति होती है। खाताके बीचमें एक जैसी चौरस-सी ऊँची भूमि खरक बनानेके लिए चुनी जाती है, जहाँ ईंधन, पानी और घनदरका सुभीता रहे, हिंस्र पशुओंका अधिक डर न रहे। **खरक** अस्थायी झोपड़ा होता है, इसलिए वह ऐसा ही सीधा-सादा बनाया जाता है, जिसमें श्रम कम लगे। खरकके भीतर बछड़े भी आदमियोंके साथ रहते हैं। बहीं बीचमें आग बलती है, जो धूनी और चूल्हे, दोनोंका काम देती है। पासमें लकड़ीके पटरों या पत्थरसे घेरकर जगह बना ली जाती है, जहाँ दूध, मक्खन, आटा आदि रखा जाता है। पहाड़में पके चावल (भात) को कच्ची रसोई और रोटीको पक्की रसोई समझा जाता है, इसलिए धूनीपर भात नहीं पकाया जा सकता। शामको गायें खरकके पास जमा कर ली जाती हैं। भैंसोंका चीता कुछ नहीं बिगाड़ सकता, इसलिए वह रातको भी घण्टी घन-घन करती चरती रहती हैं। गोठोंके पास जमा हुए गोबरका उपयोग कहीं-कहीं गोरखिये अपने आलू या सागके छोटे-मोटे खेतोंकी खादके तौरपर करते हैं; सुभीतेके स्थानमें कुछ खेत बना लिये जाते हैं। खरकोंमें दूध बेचनेकी प्रथा नहीं थी, आगन्तुकको मुफ्त आतिथ्य प्राप्त होता था। अब अवस्था बदल गयी है किन्तु मक्खन निकाल लेनेपर मट्ठा अब भी मुफ्त मिल सकता है। (साहसी शिक्षित तरुणोंके लिए कुछ समय हिमालयके इन पशुपालोंके साथ बिताना कम आनन्दप्रद न होगा।)

ढकुरीके अतिरिक्त भातकोट, दूनागिरि भी जिलेकी प्रधान चरभूमियाँ हैं, जहाँ दानपुर, शोर सीरा, बोरारु, अठागुली, डोरा और तिखुनके पशुपाल जाते हैं। पश्चिमी पाली के लोग दूदाटोली (गढ़वाल) अपने पशुओंको ले जाते हैं। लेकिन खस पूर्वजोंके समयसे चला आता पशुपाल-जीवनका आनन्द कम होता जा रहा है। कितनी ही चरभूमियोंके जंगलोंको काटकर खेती शुरू कर दी गयी है। चरभूमिकी सांघिक सम्पत्ति वैयक्तिक रूपमें परिणत की जा रही है।

जाड़ेके दिनोंमें गाँवमें रह जानेवाले पशुओंको खिलाना एक समस्या है। धान, मँडुवाके पुवाल और डण्ठल (भुस यहाँ कम ही बनता है) पर्याप्त नहीं होते। कितने ही स्थानोंपर पत्थरों या काँटोंसे भूमि घेर दी जाती है, जिसकी घास लोग अक्तूबरमें काट लेते हैं। सल्ट, चौकोटा, गिंवाडकी भाँति कितने ही स्थानोंमें वृक्षोंके पत्ते जाड़ोंमें पशुओंका मात्र सहारा होते हैं। भूयूँल पशुओंके लिए बहुत स्वादिष्ठ खाद्य माना जाता है। यह खेतोंकी मेड़ों या खाली जगहोंमें लगा दिया जाता है। लोग इसकी टहनियोंको नवम्बरसे तोड़ कर खिलाते लगते हैं। बंज (वज्र) काष्ठ या ओकके पत्ते आड़े वक्तमें बड़े काम आते हैं। इसकी नरम पत्तियाँ—जो मार्च-अप्रैलमें आती हैं—बड़ी पुष्टिदायक मानी जाती हैं। उन्हें रख छोड़ा जाता है।

(४) **घमतप्पी**—ऊपरी पहाड़ोंकी तरह पशुपाल नीचे भी बड़ी काफी संख्यामें अपने ढोरोंको लेकर जाते हैं, इन्हें **घमतप्पा** कहते हैं। नवम्बरसे मार्चतक पहाड़में सर्दी तीव्र हो जाती है और पशुओंके लिए चारेकी भी कठिनाई होती है। इस समय खेती-बारीका काम भी नहीं रहता। इस समय विशेषकर पाली-पछाँव, काली-कुमाऊँ और फल्दाकोट पर्गनोंके ग्रामवासी घर छोड़ अपने पशुओंको ले भाबर-तराईकी ओर चले जाते हैं। यह यात्रा पूरी तैयारीके साथ की जाती है, क्योंकि इसमें सारा परिवार प्रवास करता है। जोतिषी शुभ मुहूर्त बतलाता है, घरमें अच्छा भोजन बनता है। भोजन करके लोग अच्छे-अच्छे कपड़े पहनते हैं। स्त्रियाँ भालमें सिन्दूर लगाती हैं। ग्रामदेवताकी वन्दना और कुछ पैसे चढ़ाना भी आवश्यक समझा जाता है, क्योंकि भाबरके जंगलोंमें बाघ और चीतोंसे पशु-प्राणियों-की रक्षा मनुष्यकी शक्तिके भीतरकी बात नहीं है। लोग बीस-बीस या अधिककी जमातमें अपने गाय-भैंसोंको लिये एक साथ चलते हैं। जहाँ बैलगाड़ीका रास्ता है, वहाँ स्त्रियाँ भी बैलगाड़ी हाँकती अथवा उसपर लदे सामानपर बच्चोंके साथ बैठी रहती हैं। कहीं-कहीं वह टट्टुओंपर भी चढ़ी दिखाई देती हैं और कितनी ही पीठपर टोकरीमें सामान लिये भी अनुगमन करती हैं। एक दिनमें १०-१५ मीलसे अधिक नहीं चला जा सकता। जहाँ मोटरोंका डर नहीं रहता, वहाँ दिनमें यात्रा होती है। सूर्यास्तसे बहुत पहले ही लोग निश्चित मंजिलपर जाकर ठहर जाते हैं। सात-आठ दिन चलकर लोग भाबरमें अपने स्थानपर पहुँच जाते हैं।

हर एक गाँवका अपना-अपना गोठ होता है और चरभूमिपर उनका अधिकार भी निश्चित रहता है, जिसके लिए उन्हें सरकारको थोड़ा-सा चर-कर देना पड़ता है। जंगलमें वृक्ष काटकर तैयार की हुई एक जगहमें **घमतप्पा** लोग अपना खरक तैयार करते हैं, जो वैसे ही होते हैं, जैसे पर्वतमस्तकके चरागाहोंमें हैं। उन्हें इसके लिए हर तीसरे वर्ष लकड़ी, फूस मुफ्त मिलता है। हाँ, यहाँ बाघ-चीतोंका डर बहुत ज्यादा रहता है, इसलिए पशुओंके लिए रातको रखनेके वास्ते १०० गज लंबे, ३० गज चौड़े विशाल बाड़े बनाने पड़ते हैं। पशुओंकी अधिक संख्या होनेपर और बड़ा हाता बना लेते हैं, जिसे चारों ओर मजबूत लकड़ियोंसे घेर दिया जाता है। पशु-विक्रेता प्रायः बड़े हाते बनाते हैं, क्योंकि उनके पास पशु भी अधिक होते हैं। उन्हें दूहने और घी बनानेका काम नहीं होता, दूध बछड़े पी जाते हैं। घी बेचनेवाले घमतप्पोंके पास पशु भी कम होते हैं और दूध निकालना-जमाना पड़ता है, इसलिए उन्हें झोपड़े बनाकर अपने पशु रखने पड़ते हैं। पशुविक्रेता घमतप्पोंके पशु ऐसे ही जंगलमें चरते रहते हैं, और हिंस्रजन्तुओंके आक्रमणके समय अपनी रक्षा आप करते हैं, भयके समय तगड़े पशु घेरा बनाकर सींगोंको बाहर किये खड़े हो जाते हैं, बछड़े तथा दुबले जानवर घेरेके भीतर ले लिये जाते हैं।

घी-विक्रेताओंके पास भैंसें ही अधिकतर रहती हैं, कई आदमी अपने हजार-हजारतक पशुओंको इकट्ठा रखते हैं, ये लोग अपना घी रामनगर, तनकपुर, हलद्वानी, कोटद्वारकी मंडियोंमें बेचते हैं।

कुछ घमतप्पोंके पास अपने पशु नहीं होते, वह जाके अपना जाँगर चलाकर खेत-मजदूर, या नगर-मजदूरके रूपमें जीविका करते हैं, इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी घमतप्पे हैं, जिनके पहाड़पर और नीचे भी स्थायी घर होते हैं, दोनों जगह उनका खेती या दूसरा कोई व्यवसाय रहता है। भाबरमें हलद्वानी जैसे बहुतसे स्थान हैं, जो पहाड़के लोगोंकी ही भूमि हैं। काली-कुमाऊँ और फल्दाकोटके घमतप्पे तो अपने पहाड़ी ग्रामोंको गर्मीके स्वास्थ्याश्रम सा मानते हैं, जिससे वहाँ आनेपर खेतोंमें पूरी मेहनत नहीं करते और खेती उपेक्षित-सी रहती है।

अध्याय ६

यातायात

१. रेल—अवध तिरहुत रेलवे (अ० ति० रेल) तीन जगहोंपर जिलेकी दक्षिणी सीमाके पास पहुँचती है, किन्तु भीतर नहीं घुसती। बरेली और लखनऊ-पीलीभीतसे आनेवाली लाइनका अन्त काठगोदाममें होता है। यहाँ रेल सन् १८८४ में पहुँची। काठगोदामसे चार मील दक्षिण हलद्वानी, अलमोड़ा और नैनीताल जिलेके व्यापारके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण बाजार है। सन् १९०७ में मुरादाबादसे एक रेल लाइन रामनगर लायी गयी, जहाँसे एक लाइन लाकर लालकुआमें बरेली-काठगोदाम लाइनसे मिला दी गयी। काठगोदाम और रामनगर दोनों नैनीताल जिलेमें हैं और इन्हींसे अलमोड़ा जिलेके पश्चिमी-दक्षिणी भागका व्यापार होता है। पीलीभीतसे एक लाइन तनकपुर गयी है, काली नदीके किनारेका व्यापार-मार्ग यही है, तिब्बतके व्यापारके लिए भी विशेष महत्त्व रखता है।

२. सड़कें—(१) राज्य-लोककार्य-विभागीय सड़कें—

(क) प्रथम श्रेणी पक्की सड़क—

	लम्बाई मील		लम्बाई मील
रानीखेत–अलमोड़ा	३४'५	बरेली–रानीखेत (खेरना-रानीखेत)	१४'५

(ख) द्वितीय श्रेणी कच्ची सड़क (जिलेके भीतर)—

काठगोदाम–अलमोड़ा (टट्टू सड़क)	३	चौबतिया–बामशोन (टट्टू सड़क)	४
करनप्रयाग (")	४६	रानीबाग–रानीखेत	१४'५

(ग) कच्ची सड़कें (गाड़ी)—

रामनगर–रानीखेत (पहाड़में)	६४'५	भतरौंजखान–भिकियासाईं	१५
भाबरमें (अंश)	१०	गनाई–भिकियासाईं (टट्टू सड़क)	१८

(२) जिला बोर्डकी सड़कें—

(क) प्रथम श्रेणी कच्ची सड़क (स्थानीय)—

१. हवालबाग–बैजनाथ (गरुड़तक लो० का० वि०)	३४

(ख) द्वितीय श्रेणी (कच्ची सड़कें)—

अलमोड़ा–चम्पावत	५०	बैजनाथ–कटारमल	१०
–झूलाघाट	६७	विश्वनाथ सड़क	२
–खरबगर	४४	धूनाघाट–लोहाघाट	७
–पोड़ी	३२	द्वाराहाट–रानीखेत	१२
–करबला	२	दाल–महारगाँव	२
असकोट –बरेछिना	६१	रिउनी (छोटी सड़क)	१
–तनकपुर	९१	सिउली–सोलियाथान	२
बैजनाथ –हवालदम	७		

(ग) तृतीय श्रेणीकी सड़कें—

अस्कोट–गरब्याङ्	६७	गरजिया–मिलम	६१
बागेश्वर–बैजनाथ	१४	घण्टाखाल–हवालबाग	१
–बेरीनाग	२०	गरब्याङ्–मल्ल कल्पानी	२१
–द्वाराहाट	२७	जैन्ती–मोरनौल	५
– मवानी	४४	खरबागढ़–पिंडारी	३०
बैतालघाट–ताराखेत	७	– तेजम्	१५
छारोड्–देवीधुरा	१५	खेला–दरमा	२१
देवलथल–कनाली-छिन्ना	६	नरायनतिवारी–सितोली	१/२
द्वाराहाट–सराईखेत	२९	रायलकोट–उडियारी	१
धारीघाट–मझली	२	सतिसिलिङ्–तेजम्	३७
धूनाघाट–दन्दकथेत	२०		

(३) जंगल विभागीय सड़कें—

(१) पूर्वी (अलमोड़ा) डिवीजन—

(क) जोगेश्वर रेंज—

दुरम–डुंगरा	११	चरोंज–पनुआनौला	१७
मनोलीसेरा–ककरीघाट	२६	लमगरा–बरेछिना	१३
दनिया–ककरीघाट	१८	भातगाँव–चितई	७
लोधोला–आरा	१३	–दुरमदेव	७
डुडकियागाँव–कोटूरा	१६		
धौलछिना–जौला चंज	५	कठपुरिया–मल्ला सेरा	८ या ६
बिनसार–पहाड़	६	आसानन्द–कनारीचीना	३

(ख) बेनीनाग रेंज—

सुनारगाँव–रामगंगा	१०	हरिलगोलान–जतरकोट	११
सतासिलिंग–मकरगाँव	५	कालीनाग	९
बागेश्वर–नौगाँव	५		

(ग) पिठौरागढ़ रेंज—

चन्दग–कमतोली	१७	अस्कोट–गौराली	४
बुङ्चीना–रामगंगा	५		

(घ) लोहाघाट रेंज—

धूनाघाट–लंदोनखान	२०	मैथानी–कूनीगढ़	७
निमलचीना–बिआलीचीना	९	कूनीगढ़–देवीधुरा	१०
डंगरा बंकू	१०	सिदोरिया–लिंगुरानी	१०
लोहाघाट–रौसल	१३		

(च) गरखेत रेंज—

ग्रेचीना–बागेश्वर	७	डरखुली–वागेश्वर	७

अलमोड़ा	६. यात्रायात		१९३
डरखोल–गगरगोल	७. कठपुरिया–बेलोनसेरा		६
कठपुरिया–ग्वालदम	१०. देवरखेत–सूखाताल		८
–बालीघाट	१५ छना–परकोट		११
–कौसानी	६ गननाथ–बागेश्वर		९
(ख) पश्चिमी अलमोड़ा डिवीजन–			
कोसी-नदी–सीतलखेत	६ रिंची–बिल्तेश		७
काफरखान–अलमोड़ा (गाड़ी-सड़क)	९ गानिदेवली (गाड़ी-सड़क)		१
सितोली–बीजशाला (गाड़ी-सड़क)	१ द्वालमोटी–कालीरो (गाड़ी-सड़क)		४
मजखाली–बासुरीखेत (गाड़ी-सड़क)	६ –चौरवाटगढ़		३
–सोमेश्वर	५ फूरकूखाल–बिनसार-मलखोरी		१०
बसला–गाड़लेस	८ मेहलचौरी–खनसार		१६
मानव–ऐरादेव	६ चितली–मेहलखाली–तरगताल		७
सोमेश्वर–सूखाताल	१३ गोडी–बसरखेत		५
पोखरी–तकुला	६ तल्लागाजर–चीरखरक		६
गननाथ पहाड़–सोमेश्वर	५ चनोलापिंगलानी–कोट		१४
गननाथमानन–जैनखंदक	११ तामाधोम–पचपोला		११
गोडी–मोहन	६ –जौरासी		७
रामगंगा–दिसमोली	३ जौरासी–दुर्गादेवी		५

३. डाकबँगले––जिलेके सैलानियोंके ठहरनेके लिए यहाँ कोई विशेष प्रबन्ध न सरकारकी ओरसे हुआ है, न व्यवसायियोंकी ओरसे, यद्यपि सैलानी-व्यवसाय सारी दुनियामें बहुत लाभका माना जाता है। अँग्रेज सैलानियोंके लिए जिलाबोर्ड और जंगलातके बँगले खुले-से रहते थे, पहलेसे अनुज्ञा लेनेमें उन्हें दिक्कत न होती थी, केवल थोड़ा-सा पैसा देना पड़ता था। भारतीय सैलानियोंके लिए तब भी कठिनाई थी, और अब भी। सैलानियोंको आकृष्ट करनेके लिए सरकारको चाहिये कि बँगलोंको खोलनेमें और भी उदारतासे काम लेवे तथा अधिक स्थानोंपर उपाहारगृहोंका भी प्रबन्ध करे।

(१) लोक-कार्य-विभागके डाकबँगले—(अनुज्ञादायक, जिला इंजीनियर)

टोटाम	रानीखेत
देवरीकटारमल	रिंची
बमगाँव	शिनोरा
बलाना (कौसानी)	सियाही देवी
मछोरे	

(२) जंगल-विभागीय बँगले—(अनुज्ञादायक, कंजर्वेटर, जंगलात, अलमोड़ा)

अस्कोट	तामाधूम	मरियोंज
उखल्यान	थल	भातगाँव
ऐरादेव	दनौर	मटियाबंज
कनारीबीना	दरुन	मंडला
कवलेश्वर	दालमोटी	महारपाली
कालादेव	दीनापानी	लमगढ़

गननाथ	दोफ़र	लोद
गणाई	धुरापन	सिउनी
मरखेत	पथरिया	सियाही देवी
गैराल	परकोट	सोनापानी
गुलियापानी	बजवार	
चौबटिया	बराचीना	
डंडा	बसारखेत	
डींडीहाट	बिललेख	
	बेरीनाग	
	बोदियार	

४. डाक तारघर—अलमोड़ासे रानीखेत, पिठौरागढ़ और लोहाघाटको तार गया है, जिनके ऊपर कुछ तारघर भी हैं। जिलेमें निम्नलिखित डाकघर युद्धके पहिले मौजूद थे—

डाकघर	पट्टी	डाकघर	पट्टी
अलमोड़ा	खासपरजा	झूलाघाट	नयादेश
अस्कोट	अस्कोट	डंगोली	कत्यूर-मल्ला
एबटमौट		तमाघौं	
कंडा		ताकुला	स्यूनरा-मल्ला
कनालीछीना		तारीखेत	
कपकोट	दानपुर-तल्ला	थल	माली
कौसानी	कत्यूर-बिचला	देघाट	चौकोट-मल्ला
क्वैरासा	सल्ट-वल्ला	देवलथल	बाराबीसी
खेतीखान	गंगोली	देवलघार	
खेला	चौदंस	देवीधुरा	खरही
गंगोलीहाट	भेरंग	द्वाराहाट	दोरा-मल्ला
गणाई गंगोली	अठगाँव-वल्ला	धरचूला	अस्कोट
गरन्याङ्	ग्यांस	धरमघर	नाकुरी
गुरना		धूनाघाट	अस्सी
ग्वालदम	कत्यूर-मल्ला	नगलिङ् (फ०)	
चंडाक	खासपरजा	नागोली	कमस्यार (प०)
चंपावत	चारआलत	पनुवा-नौला	लखनपुर (म०)
चित्रेश्वर	गिंवाड़-वल्ला	पिठौरागढ़	खासपरजा
चौकूरी		बगवालीपोखर	अठागुली (प०)
चौपखिया	सौण	बलधोती	
चौबटिया	चौगाँव	बागेश्वर	कत्यूर (त०)
जैनाल		बाडे-छीना	लखनपुर (त०)
जैन्ती	सालम-तल्ला	बिनकोट	
जौलजीवी (फसली)		बिनसार	खरही
		बेनीनाग	बड़ाँव (म०)

डाकघर	पट्टी
बैजनाथ	कत्यूर (म०)
बैसखेत	तिखून (म०)
बोन्स	
मिकियासैण	नया (व)
मतरौचखान	ककलासौं
मजखाली	अठागुली (प०)
मनाण	बोरारौ (व०)
मायावती	बिसुंग
मासी	गिंवाड़ (व०)
मिरतोला	
मिहलचौरी	
मीलम (फ०)	जौहार
मुनसियारी	धूराफाट
रानीखेत	चौगाँव

डाकघर	पट्टी
रानीखेत सदरबाजार	चौगाँव
लमगड़ा	बिसौत
लालबाजार	खासपरजा (गोर)
लोइबा	
लोहाघाट	बिसुंग
लोहारखेत	दानपुर (म०)
बोड्डा	
शामा	दातपुर (बि०)
सानी उडियार	कमस्यार (प०)
सीतलाखेत (फ०)	
सेसारी	
सोमेश्वर	बोरारौ (व०)
स्योनी	
हवालबाग	स्यूनरा (त०)

अध्याय ७

स्वास्थ्य और शिक्षा

१. स्वास्थ्य—अलमोड़ा जिलेमें माबर और तराईके इलाके नहीं हैं, इसलिए यह जिला प्रायः स्वास्थ्यकर है। १९२२ से १९३३ ई० के बारह वर्षोंके जन्ममृत्युके आँकड़ोंसे स्वास्थ्यकी अवस्थाका पता लग जाता है—

(१) जन्ममरण-आँकड़े—

सन्		संख्या	प्रतिहजार
१९२२	जन्म	१४९०८	२८·११
	मृत्यु	१६८५०	३१·७७
१९२३	जन्म	२१४०६	४०·३६
	मृत्यु	१३७४०	२५·९१
१९२४	जन्म	२२५२०	४२·४६
	मृत्यु	१४०२५	२६·४४
१९२५	जन्म	२०९१३	३९·४३
	मृत्यु	१२१५३	२२·९१
१९२६	जन्म	१९९४१	३७·६०
	मृत्यु	११५४३	३१·५९
१९२७	जन्म	२३३३१	४३·९९
	मृत्यु	१३४६०	२५·३८
१९२८	जन्म	२५४५९	४८·००
	मृत्यु	१२०६२	२२·७४
१९२९	जन्म	२२४८२	४२·३९
	मृत्यु	१३८२२	२६·०६
१९३०	जन्म	२४२३८	४५·७०
	मृत्यु	१३३०९	२५·०९
१९३१	जन्म	२४१९०	४५·६१
	मृत्यु	१३११८	२४·७३
१९३२	जन्म	२५२५५	४३·२९
	मृत्यु	१२७८९	२१·९२
१९३३	जन्म	२५९१६	४४·४
	मृत्यु	९७१४	१६·६

प्रथम विश्वयुद्धसे सन् १९२२ तक मृत्युकी संख्या अवश्य अधिक बढ़ गयी थी, जो कभी-कभी जन्मसंख्यासे अधिक हो गयी, किन्तु यह अवस्था बराबर ऐसी न रही, यथा—

सन्	जन्म (प्रतिसहस्र)	मृत्यु (प्रतिसहस्र)	वृद्धि
१९०१	३९·१२	२०·८९	+१८·२३
१९०६	४६·८७	२८·४०	+२२·४७
१९०८	४०·९७	३७·९३	+ ३·४
१९११	४६·६६	३२·७७	+१३·८९
१९१५	४०·२३	३४·७६	+ ५·४७
१९१७	३१·६८	२७·३८	+ ४·३
१९१८	४२·६१	४३·३३	− ·७२
१९१९	३८·०८	३८·७६	− ·६८
१९२०	३८·४४	३७·३६	+ १·८
१९२१	३३·०५	४६·४६	−१३·४१
१९२२	२८·११	३१·७७	− ३·६६
१९२३	४०·३६	२५·९१	+१४·४५
१९२८	४८·००	२२·७४	+२५·२६
१९३२	४३·२९	२१·९२	+२१·३७
१९३३	४४·४	१६·६	+२७·८

इस प्रकार १९२१ और १९२२ ही ऐसे वर्ष थे, जब कि जन्मकी अपेक्षा मृत्यु (१३·४१ और ३.६६ प्रतिसहस्र) अधिक हुई। १९२८, १९३२ और १९३३ में मृत्युसंख्या काटकर वृद्धि २५·२६, २१·३७ एवं २७·८ प्रतिसहस्र हुई।

(२) रोग—प्लेगका प्रकोप इस जिलेमें नहीं-सा है। केवल सन् १९११ में ३, १९१६ में ९, १९२७ में ७ और १९२८ में ६ मृत्युएँ प्लेग से हुई थीं। दूसरे रोगोंका जोर निम्नलिखित मृत्यु-संख्यासे मालूम होगा—

सन्	हैजा	चेचक	ज्वर	उदररोग
१९०१	०	१	६८८५	१५४७
१९०३	१३९५	५०	९८१४	२३५०
१९०७	११४३	२६५	९२२६	१८८१
१९०९	१४२४	१०	८८३४	१४७९
१९१२	६२५	१४	९१२६	२१६२
१९१४	५९९	१३२	९८९८	१३९०
१९१५	५०८६	१९	९७००	१४७४
१९१६	११३८	३४	१०९५९	१७३९
१९१८	२५६८	१०	१६५६८	१४७४
१९१९	१७८	४३	१७३८६	८७६
१९२०	५६	२०	१४४७७	१०९२
१९२१	४३६४	२	१६९५७	१५१९
१९२२	११	१	१४५७४	९६८
१९२७	१६४०	४७	९७९३	६३५
१९३३		४२	८१२०	४८४

प्लेगका तो इधर एक प्रकार अभाव-सा है, चेचक भी बहुत जोरका नहीं होता, चेचकका टीका लगवानेमें यहाँके लोगोंको हिचकिचाहट नहीं हुई, जिसका कारण इसी तरहके उपचारका यहाँ पहलेसे चले आना था, अधिकांश मृत्यु ज्वर तथा पेटके रोगोंसे होती है।

(३) **चिकित्सालय**—१९५० में जिलेमें १३ एलोपेथी और १४ आयुर्वेदिक औषधालय थे, जिनमें अलमोड़ा और रानीखेतमें सरकारी बड़े चिकित्सालय हैं, अधिकांश चिकित्सालय जिलाबोर्डके हैं, गणाई तथा मिखियासैणमें सदावर्ती चिकित्सालय बदरीनाथके यात्रियोंके लिए स्थापित हैं।

(४) **कुष्ठरोग**—यह रोग यहाँकी एक बड़ी समस्या है। गोरा छावनियों द्वारा उपदंश (सिफलिस) का प्रसार अधिक हुआ, जिसके कारण कुष्ठमें भी वृद्धि हुई, अलमोड़ामें रामजेका ध्यान सन् १८३६ में इस ओर गया। १८४० में एक कुष्ठालयका उसकी सहायतासे लन्दन मिशन सोसायटीने छोटे रूपमें आरम्भ किया, जिसे पीछे अलमोड़ासे एक मील दक्षिण एक रमणीय स्थानमें स्थानान्तरित कर दिया गया। बढ़ती संख्याके लिए अब वह पर्याप्त नहीं है, पिठौरागढ़के ऊपर चंदबागमें भी अमेरिकन मिशनरियोंने एक कुष्ठालय खोल रखा है।

२. **शिक्षा**—(१) **इतिहास**—शिक्षामें यह जिला उत्तरप्रदेशके बहुत आगे बढ़े जिलोंमें है, इससे अधिक लाभ ब्राह्मणोंने उठाया है—अधिक शिक्षाके कारण आज सभी अच्छी नौकरियाँ तथा धनागमके सभी पेशे उनके हाथमें हैं। इस विषमताने राजपूतों और दूसरी जातियोंमें उनके प्रति द्वेषका भारी बीज बो दिया है। यह विषमता अँग्रेजी शासनके आरम्भमें भी थी, कमिश्नर ट्रेलने सन् १८२३ में लिखा था—"(इंग्लैण्डके) स्कूलोंके ढंगकी यहाँ कोई सार्वजनिक शिक्षण-संस्थाएँ नहीं हैं। निजी पठनपाठन केवल उच्च जातियोंतक सीमित है। अध्यापक साधारणतया ब्राह्मण हैं, जो अपने विद्यार्थियों-को लिखना-पढ़ना तथा हिसाब-किताब सिखलाते हैं। प्रतिष्ठित ब्राह्मणोंके बच्चोंको संस्कृत पढ़ायी जाती है, जिनमेंसे कुछको कभी-कभी शिक्षा पूरी करनेके लिए बनारस भी भेजा जाता है।"

संक्षेपमें अलमोड़ामें शिक्षाका इतिहास निम्नलिखित प्रकार है—सन् १८४१ में कमिश्नर लसिंगटनने एक संस्कृत-पाठशाला खोली, किन्तु आठ सालके बाद वह बन्द हो गयी। १८४२ में २० रुपया मासिक खर्चवाले कुछ स्कूल खोले गये, १८४४ में ईसाई मिशनरियोंने एक प्राइवेट अँग्रेजी स्कूल खोला, (यही पीछे रामजे कालेजके रूपमें परिणत हो गया)। सौ साल पहले (१८५०) भी, जब कि सरकार अपनेको शिक्षाका जिम्मेवार नहीं समझती थी, बैटन और रामजेकी रिपोर्टोंके अनुसार कुमाऊँ और गढ़वालमें १२१ हिन्दी और संस्कृतकी पाठशालाएँ अपने मकानों या अध्यापकोंके घरोंमें लगती थीं। उनके १२१ अध्यापकोंमें ५४ निःशुल्क शिक्षा देते थे, बाकीका वेतन साढ़े नौ रुपया मासिक औसतन पड़ता था। इन शिक्षणालयोंसे ५२२ विद्यार्थी थे, जिनमेंसे ४/५ ब्राह्मणोंके लड़के थे। १८५७ में कुमाऊँमें लोकशिक्षण-विभागकी शाखा खोली गयी। १८५८ में सोमेश्वर, धमार, सतरानी, द्वाराहाट और तराईमें पाँच तहसीली स्कूल खोले गये, जिनमें २२५ विद्यार्थी पढ़ते थे। मार्च १८५९ में चंपावत, पिठौरागढ़, गंगोलीहाट, स्याल्दे, गणाई, मिकियासैण, देईघाटमें सात और स्कूल स्थापित हुए। इस साल छात्रोंकी संख्या ९०० थी। १८६७ में २२ स्कूल थे। १८७२में इनमेंसे १६ को तहसीलीसे कम करके हल्काबन्दी स्कूल बना दिया गया। उस समय हल्काबन्दी स्कूलके अध्यापकको ५ रुपया मासिक वेतन मिलता था। रामजेकी नीति थी 'योग्य और अधिक खर्चीले अध्यापकोंको रखकर थोड़ेसे आदमियोंको बेहतर शिक्षा देनेकी जगह यही अच्छा है कि अधिक संख्याको रोजके उपयोगके लिखने-पढ़नेका पर्याप्त लाभदायक ज्ञान करवाया जाये।' इसीलिए जुलाई १८८७ में सभी तहसीली स्कूलोंको तोड़कर हल्का-बन्दी बना दिया गया और केवल अलमोड़ामें एक तहसीली स्कूल रहा। तहसीली स्कूलोंको पीछे

मिडिल स्कूल कहा जाने लगा। वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें अलमोड़ा पाली, पिठौरागढ़, कंडा और खेतीखानके पाँच तहसीली स्कूल थे।

सन् १८७२ से सहायित स्कूलोंका आरम्भ हुआ, जब कि ऐसे २४ स्कूलोंमें १२६२ विद्यार्थी पढ़ते थे।

(२) **स्त्री-शिक्षा**—यह आश्चर्यकी बात नहीं है, जो १८७६ में प्रथम कन्या-पाठशाला मोटान्त (मिलम) में खोली गयी, क्योंकि मोटान्तिक लोगोंमें स्त्रियोंकी स्थिति अपेक्षाकृत अधिक अच्छी थी। १८७१ में इस पाठशालामें १८ लड़कियाँ पढ़ती थीं। वर्तमान शताब्दीके प्रारम्भमें जिलेकी १० कन्या-पाठशालाओंमें २४४ लड़कियाँ पढ़ती थीं।

(३) **स्कूल**—सन् १९५० में अलमोड़ामें एक डिग्री कालेज, तथा अलमोड़ा, रानीखेत और दूसरे कितने ही उच्चतर हाई स्कूलोंके अतिरिक्त अन्य स्कूलोंकी संख्या निम्नलिखित प्रकार थी—

स्कूल	कुल	जिलाबोर्ड	सहायित	निजी
जुनियर हाईस्कूल	८१	३०	४	४७
प्रारम्भिक	३१९	२९०	२९	
दलित्वर्ग	१२	९	३	
इस्लामिया (बालक-बालिका)	५(४–१)			
शिल्पकार सभास्कूल	२३		२३	
	४४०			

१९३१ में निम्नलिखित स्थानोंमें मिडिल स्कूल थे—

अलमोड़ा	खेतीखान	जैती	पिठौरागढ़
अस्कोट	गंगोलीहाट	डिंडीहाट	बागेश्वर
कंडी	गरुड़	जेवलीखेत	बेनीबाग
कपकोट	चंपावत	द्वाराहाट	मनीला
पाली	रानीखेत	सोमेश्वर	

प्राइमरी स्कूल-सूची

नाम	पट्टी	डाकखाना
अघार	तिखुन-तल्ला	शीतलाखेत
,,	,,	अजेरा
अजोली	सल्ट-तल्ला	भिकियासैन
अतलगाँव	अठाबीसी-तल्ला	थल
,,	,,	अनाचौरा
अंदोली	दरुन	मिरतोला
अमटोरा	कत्यूर-तल्ला	बागेश्वर
अमथल	पुनग्राँव	थल
अम्स्यारी	कत्यूर-मल्ला	दंगोली
अरे	कत्यूर-तल्ला	बागेश्वर
अलगढ़ा	बारबीसी	देवलथल

अलम-दरमा	गोरीफाट	नचिनी
,,	,,	अलमोड़ा
,,	,,	असगोली (द्वाराहाट)
असौन	रीठागढ़-मल्ला	कनारी-छीना
*अस्कोट	अस्कोट-तल्ला	अस्कोट
अस्सौन	दानपुर-तल्ला	कपकोट
,,	,,	आगर
आरा-सल्पर	दरून	दनिया
उतरौरा	दानपुर-तल्ला	कपकोट
उद्यमथल	नकुरी	सनेटी
,,	,,	उपरारी
उभियारी	अठागुली-तल्ला	कफरा
उदोली	द्वारसोन	माजखाली
उल्सेटी	उच्यूर	धौरा
एरा	डोरा-बिचल्ला	मासी
ऐथान	दानपुर-तल्ला	कपकोट
ओखल-इसिराद	रीठागढ़-मल्ला	देवलघार
ओलीगाँव	बेल	गंगोलीहाट
कंकर-पमड़ा	रेगरूवन	लोहाघाट
कंटली	बरारो-पल्ला	कौसानी
कंटोली (कन्या०)	डोरा-तल्ला	भिकियासैन
*कठपुरिया	तिखुन-तल्ला	कठपुरिया
*कंडा	कम्स्यार-मल्ला	कंडा
कंडाकोट	नया-वल्ला	भिकियासैन
कंडाघार	अस्कोट-तल्ला	कंडाली-छीना
कंडाली-छीना	अस्कोट-तल्ला	कंडाली-छीना
कनारा	सलाम-मल्ला	जैन्ती
*कनारी-छीना	रीठागढ़-तल्ला	कनारी-छीना
कनियालीकोट	दानपुर-तल्ला	कपकोट
*कपकोट	दानपुर तल्ला	कपकोट
कपरी	दानपुर-विचल्ला	शामा
कपरीगाँव	बाराबीसी	देवलथल
,,	,,	कफरा
कमरार	नया-वल्ला	नौला
कमेरीदेवी	कम्स्यार-पल्ला	सानी-ओडियार
कयाला	तिखुन-मल्ला	कठपुरिया
करमी	दानपुर-मल्ला	लोहारखेत
करास	रीठागढ़-तल्ला	देवलघार

* चिह्नांकित स्थानोंमें डाकखाना भी है।

कर्न-करायत
कलसींधार
कानेखाल
कामद
कालिका
किलपरा
कीचर
कुठेरा
कुती
कुमडार
कुरीदार
कुलन्तेश्वर
कुलसेबी
कुँवाली
कुसमन
कोटकेन्द्री
कोटला
कोठलगाँव
कोथर
,,
क्वेटार
क्वीटी
क्वेराला
क्वेराली
क्वेरीजिमिया
खंकार
खजुरानी
खटियारी
खटेरा
खतनागढ़
खतियानी
खनोलिया
खबडोली
खलझूनी
खली
,,
खाईधार
खातीगाँव

गंगोल-बिसुंग
बराँव-तल्ला
सल्ट-पल्ला
भेरंग
अस्कोट-मल्ला
दानपुर-मल्ला
चौकोट-तल्ला
बेल
व्यास
महार
नया-पल्ला
चौकोट-बिचल्ला
कालीगढ़
कालीगढ़
अठीगाँव-वल्ला
पलाबिलोन-तल्ला
गुमदेश
सल्ट-तल्ला
सिलोर-मल्ला
,,
नया देश-सौन
जोहार तल्लादेश
सल्ट-वल्ला
कत्यूर-तल्ला
जोहार मल्ला
खराही
गेवाड-वल्ला
खसपरजा
खिलपाटी-फाट
गेवाड-पल्ला
खरक-देश
डोरा-तल्ला
कत्यूर-तल्ला
दानपुर-मल्ला
स्यूरा-मल्ला
,,
तिखुन-तल्ला
सेटी-तल्ला

लोहाघाट
बेरीनाग
भिकियासैन
गंगोलीहाट
धरछूला
करमी
तामाघोन
गंगोलीहाट
गरब्यांग
चौपखिया
नौला
देघाट
माजखाली
माजखाली
गणाई-गंगोली
सूखीढाँक
पुलहिंडोला
भिकियासैन
टारीखेत
कौसानी
वड्डा
तेजम
खुमार
बागेश्वर
मुनस्यारी
देवलधार
चौखुटिया
अलमोड़ा
लोहाघाट
चौखुटिया
झूलाघाट
भिकियासैन
बागेश्वर
लोहारखेत
बिनसर
खाई खाल
शीतलाखेत
बाँस

खान	कंडारखुवा	उपरारी
खानटोली	कम्स्यार पल्ला	सनी-ओडियार
खिरमंडे	अठीगाँव-पल्ला	दुगाई-अगार
खीरकोट	बरारो-पल्ला	चनौडा
खीरा	गेवाड-वल्ला	चोखुटिया
,,	,,	खुमाड़ (० र)
खुमार	सल्ट-वल्ला	भिकियासैन
खुरेरी	नया-वल्ला	भिकियासैन
खेटार	अठाबीसी-मल्ला	दीनीहाट
खेत	दरमा-तल्ला	खेला
खेती	दरुन	दनिया
†खेती-खान	सिपटी	खेती-खान
खेतीगाँव	बेल	गंगोलीहाट
†खेला	दरमा-तल्ला	खेला
खैरखेत	अठागुली-वल्ला	रानीखेत
खैरोली	अठीगाँव-पल्ला	बाँसपटन
खौल	रीठागढ़-पल्ला	कठपुरिया-छीना
खानकोट	अस्कोट-तल्ला	कनाली-छीना
†गंगोलीहाट	मेरंग	गंगोलीहाट
गडसरी	गेवाड-वल्ला	चित्रेश्वर
†गणाई	अठिगाँव-वल्ला	गणाई-गंगोली
गदूरा	राव-तल्ली	खेतीखान
गदेरा	दानपुर-तल्ला	कपकोट
गनेशपुर	दुग	कंडा
गरखा	अस्कोट-तल्ला	अस्कोट
गरगाँव	खरकदेश	तोतानौला
†गरब्यांग	ब्यांस	गरब्यांग
गरसरी-गुम	अस्सी-फर्का	खेतीखान
गलाटी	अस्कोट-मल्ला	घरछूला
गल्ली	रंगोर	दनिया
गागरगोल	कत्यूर-मल्ला	बैजनाथ
गिरगाँव	जोहार-तल्लादेश	तेजम
गुंजी	व्यास	गरब्यांग
†गुदलेख	चौकोट-पल्ला	गुदलेख
गुबाल	अठीगाँव-पल्ला	गणाई-गंगोली
गुमटी	चौकोट-तल्ला	तामाधोन
गुरना	रावल	पिठौरागढ़
गुलेर	दानपुर-विचल्ला	मल्लादेश

† चिह्नांकित स्थानोंमें डाकखाना भी है।

गूठ-गर्सरी	सिपटी	खेतीखान
गौंदाली	अस्कोट-तल्ला	कनाली-छीना
गैरखेत	चौकोट तल्ला	मस्सी
गैरार	दरुन	मिरतोला
गो	दरमा-मल्ला	बलुवाकोट
गोगिना	दानापुर-बिचल्ला	शामा
गोदी	गेवाड-वल्ला	चौखुटिया
गोरीहाट	नयादेश-सौन	झूलाघाट
गोलमानू	अठाबीसी-मल्ला	डींडीहाट
गौना	उच्यूर	लमगढ़ा
,,	,,	ग्वाल्दम
ग्वालाकोट	स्यूरा-तल्ला	मानन
घसार	अठाबीसी-तल्ला	थल
घिगरू-टोला	कम्स्यार-वल्ला	कंडा
घिर्मोली	अठाबीसी-मल्ला	भातर (थल)
घुगुटी-कैलानी	चौकट-मल्ला	देघाट
घुरसिल	अठीगाँव-पल्ला	गणाई-गंगोली
चईखान	बिसोह	लमगढ़ा
चकचौन	अठिगाँव-पल्ला	गणाई-गंगोली
चगाती	रंगोर	भनौली
चतौरखाल	डोरा-मल्ला	द्वाराहाट
चनौली	चौकोट-बिचल्ला	गुदलेख
,,	,,	चनौडा
चन्द्राकोट	लखनपुर-तल्ला	बाडेछीना
चबुकाथल	पुनग्राँव	बेरीनाग
चम्पावत	चराल-तल्ला	चम्पावत
चम्यारी-गनीजा	चौकोट-मल्ला	देघाट
चापर	मल्ली-डोटी धुराफाट	रानीखेत
चामदुनगिरि	बेल	चाहज
चामदेवल	गुमदेश	लोहाघाट
चामी	रेगरुवन	मिरतोला
चामी	लखनपुर-मल्ला	लोहाघाट
चामी-डुगरी	रावल	जाखपुरान
चाहज	बेल	गंगोलीहाट
चितगल	भेरंग	गंगोलीहाट
चितलगाँव	अठाबीसी-मल्ला	मुवानी
†चिताई	खसपरजा	चिताई

† यहाँ डाकघर भी है।

चितौर-खाल	चौकोट-तल्ला	मटेला
,,	,,	चित्रेश्वर
चिलरासीम	गेवाड-वल्ला	चौखुटिया
†चिलिया-नौला	अठागुली-वल्ला	चिलिया-नौला
,,	,,	चिलीनौला
चिल्ल	रंगोर	दनिया
चौकुरी	अठागुली-वल्ल	माजखाली
चौकोली	रंजोर	दनिया
चौगाँव	सिलोर-तल्ला	सौनी-सगनेती
,,	,,	चौखुटियागणाई
†चौपखिया	नयादेश-सौन	वड्डा
चौमू	उच्यूर	धौरा
चौमू	बाराबीसी	देवलथल
चौरपाल	बेल	गंगोलीहाट
चौरमनिया	बराँव-तल्ला	राई-आगर
चौरा (कुम)	राव-तल्ला	खेतीखान
चौरा (दान०)	दानपुर-मल्ला	लोहारखेत
चौरा (दुग)	दुग	बागेश्वर
चौरा (स्यू०)	स्यूनरा-तल्ला	हवालबाग
चौराकोट	गंगोलविसुंग	धूनाघाट
चौरा-चामा	बराँव-तल्ला	राई-आगर
,,	,,	चौरा सनेटी
चौरसाला	दानपुर-बिचल्ला	धमरघर
छानामेट	अठागुल्ली-पल्ला	बगवालीपोखर
छानी	बोरारो-पल्ला	कौसानी
जखेरा	कत्यूर-मल्ला	दंगोली
जगथाना	दानपुर	कपकोट
जडियाथल	अठाबीसी-तल्ला	थल
जनकंडे	गंगोल-विसुंग	धूनाघाट
जबुकाथल	बराँव-मल्ला	बेरीनाग
जमटारी	अस्कोट-तल्ला	अस्कोट
जमरार	गेवाड-पल्ला	चौखुटिया-गणाई
जमीरा	सल्ट-तल्ला	भिकियासैन
जरती	नकुरी	सनेटी
जलना	बिसौद	लमगढ़ा
†जलाली	डोरा-बिचल्ला	जलाली

† चिह्नांकित स्थानों में डाकघर भी है।

अलमोड़ा	उच्यूर	घौरा
जसकोट	गोरीफाट	मुनस्यारी
जसपुर-खान	सल्ट-तल्ला	भिकियासैन
जाख	नयादेश-सौन	चौपखिया
जाख-पस्त	रावल	पिठौरागढ़
जाख-पूरन	दसन	मिरतोला
जागेश्वर	ककलासोन—मल्ला	मतरौंजखान
जीनापानी	अस्कोट-मल्ला	अस्कोट
जीरा-जिबुली	संती-तल्ला	बाँस
जुगुराली	दुग	चौरा-सनेटी
जुनयाल	अस्कोट-मल्ला	खेला
जुम्मा	गेवाड-तल्ला	गणाई-चौखुटिया
जेठुला	चौदंस-मझ्री-डोटी	खेला
जैकोट	धुराफाट	टारीखेत
जैना	चौगाँव	रानीखेत
जैनोली	सलाम-तल्ला	जैन्ती
†जैन्ती	जोहार-मल्ला	मुनस्यारी
जैन्ती-मिलकोटिया	गेवाड-पल्ला	गणाई-चौखुटिया
जैरम्बाखाल	रंगोर	मनोली
जोल	स्यूरा-तल्ला	मनान
जोल	अस्सी-फर्का	धूनाघाट
जोस्यूरा	अठाबीसी-तल्ला	देघाट
जौरासी	चौकोट-मल्ला	अजेरा
जौरासी	,,	जौलजीबी
,,	तिखुन	कठपुरिया
ज्यूली	सल्ट-पल्ला	भिकियासैन
झारगाँव	सलाम-मल्ला	तकुला
झाल-डुंगरा	नया-पल्ला	नौला
झीमार	सेती-तल्ला	भुरमुनी
झूनी	नयादेश-सौन	झूलाघाट
†झूलाघाट	डोटी-मल्ली-धुराफाट	रानीखेत
टारीखेत	रंगरूवन	लोहाघाट
टारीगाँव	जौहार-मल्ला	तेजम्
टोला	गुमदेश	पुलहिंडोला
ठाटा	पलवेलौना-मल्ला	खेतीखान
डंडा	अठाबीसी-मल्ला	डिंडीहाट
†डिंडीहाट		

† चिह्नांकित स्थानोंमें डाकघर भी हैं।

डिबडिया
डुगत्
डुंगरा
डुंगराकोट
डोरे
ढुंगाटोली
ढुंगा-पतली
तकनागुरोन
"
तंगा
तमिली
तरगताल
तरमोली
तलचौना
ताकुल्ती
†तामाधोन
तामानौली
ताया
तिटोली
तिमिलखाल
तूनापानी
तूपेर
"
तोता-आम
"
त्यूनेरा
थरकोट
थल
"
थूवासीमल
दंगुला
"
दधुली
"
दफौट
दरमिया

लखनपुर-तल्ला
दरमा-मल्ला
रंगोर
नयादेश-सौन
जोहार-तल्लादेश
अस्कोट-मल्ला
कमस्यार-वल्ला
चलसी
"
गोरीफाट
तल्लादेश
गेवाड़-वल्ला
रीठागढ़-तल्ला
दरुन
डोरा-तल्ला
चौकोट-बिचल्ला
भेरंग
सल्ट-तल्ला
कम्स्यार-वल्ला
गेवाड़-तल्ला
डोर-तल्ला
दुग
"
सल्ट-तल्ला
"
सलाम-मल्ला
रावल
अठाबीसी-तल्ला
"
सलेम-मल्ला
सल्ट-वल्ला
"
डोरा-मल्ला
"
कम्स्यार-मल्ला
बरारो-पल्ला

दीनापानी
खेला
भनोली
वड्डा
तेजम्
बलुवाकोट
बागेश्वर
देवीधुरा
तकुलाभैंसोरी
मदकोट
चम्पावत
चित्रेश्वर
कनारी-छीना
खेती
चौखुटिया-गणाई
तामाधोन
पोखरी
भिकियासैन (जैनाला)
कंडा
मस्सी
भिकियासैन
बागेश्वर
तेजम्
भिकियासैन
तोतानौला
बसन्तपुर
पिठौरागढ़
थल
थल-तेजम्
जैन्ती
खुमाड
दंगोली
द्वाराहाट
दनिया
बागेश्वर
रनमन

† यहाँ डाकघर भी है।

दवरा	सल्ट-वल्ला	भिकियासैन
दसलेख	गुमदेश	दिगली-च्यूर
दाँग	गेवाड़	मस्सी
दाड़िमखेत	कत्यूर-मल्ला	दंगोली
दामदे	बेल	गंगोलीहाट
दार	दारमा-तल्ला	खेला
दिसली चौर	खिलपटीफाट	लोहाघाट
†दीनापानी	स्यूनरा-तल्ला	दीनापानी
†दुगाई-आगर	अठीगाँव-पल्ला	दुगाई-आगर
दुगेती	अठाबीसी-मल्ला	डिंडीहाट
दुबरा	तल्लादेश	चम्पावत
†देघाट	चौकोट-मल्ला	देघाट
देवटोली	कमस्यार-म०	नरगोली
देवरारी	रेगरुवन	लोहाघाट
देवलखेत	कत्यूर-मल्ला	दंगोली
†देवलथल	बाराबीसी	देवलथल
देवलीखान	तिखुन-तल्ला	कठपुरिया
देवलीखाल	ककलासोन	सिनौरा
देवस्थल	कैरारो	बिनता
देवाधोन	चौकोट-मल्ला	देघाट
देवायाल	सल्ट-पल्ला	जैनाला
देवीखाल	सल्ट-मल्ला	भिकियासैन
देवीथल	सलाम-मल्ला	बसन्तपुर
†देवीधुरा	चलसी	देवीधुरा
दोफर	दुग	चौरा
दोरम	दरुन	बसन्तपुर
दौदा-पानी	सिलोर-तल्ला	सौनी
,,	,,	दौरी
दौला	बराँव-मल्ला	राई-आगर
दौलाघाट	तिखुन-मल्ला	भैंसखेत
द्यारटोली	सिपटी	चम्पावत
द्यूनाथल	लखनपुरा-मल्ला	लमगढ़ा
†द्यूरी (देवरी)	पल्लेलोना-तल्ला	द्यूरी
द्वारसोन	द्वारसोन	माजखाली
धनचौरा	रीठागढ़-तल्ला	नैनी
धनीगौर	खरकदेश	तोतानौला

† चिह्नांकित स्थानोंमें डाकघर भी हैं।

धरखोला	बिसौद	लमगढ़ा
†धरछूला	अस्कोट-मल्ला	धरछूला
,,	,,	धरमघर
धरमौर	अठागुली-पल्ला	कफरा
धामस	तिखुन-तल्ला	शीतलाखेत
धामदेवल	गेवाड़-पल्ला	चौखुटिया-गणाई
धामीगाँव	जोहार-तल्लादेश	बाँसबगड
धारी-चौहाना	कत्यूर-तल्ला	बागेश्वर
धारी-बेलतारी	नयादेश-सौन	बड्डा
धूनाघाट	अस्सीफर्का	खेतीखान
†धौनीगढ़	बरारो-वल्ला	धौनीगढ़
†धौरा	उच्यूर	धौरा
†धौलछीना	लखनपुर-तल्ला	धौलछीना
धौल-नैनी	रीठागढ़ा-तल्ला	नैनी
धौलादेवी	रंगोर	दनिया
ध्यारी	रंगोर	भनोली
,,	,,	ध्युरी
,,	,,	ध्योरा
नई	स्यूनरा-मल्ला	तकुला
नखनोली	बारबीसी-पल्ला	देललथल
नगचुलखाल	सल्ट-तल्ला	भिकियासैन
नगरखान	लखनपुर-तल्ला	बाडेछीना
नगलिंग	दरमा-मल्ला	खेला
नचती	दानपुर-बिचल्ला	लोहारखेत
†नचिनी	जोहार-तल्लादेश	नचिनी
नबी	व्यास	गरब्यांग
,,	,,	नरगोली
नरुवाघोल	अठीगाँव-वल्ला	गणाई-गंगोली
नवघरकियारी	कत्यूर-बिचल्ला	कौसानी
नाकोट	लखनपुर-मल्ला	बाडेछीना
नानकुरी	अठाबीसी-मल्ला	आजेरा
नाली	बेल	चाहज
नीर	तल्लादेश	चम्पावत
नैनी	दरुन	रायनगर
†नैनी	बराँव-तल्ला	नैनी
नैनी-भनार	सेती-तल्ला	पिठौरागढ़

† चिह्नांकित स्थानोंमें डाकघर भी हैं।

नैनीवालपली	नया-पल्ला	भिकियासैन
नैनोली	स्यूनरा-तल्ला	हवालबाग
नैल-कत्यूर	कत्यूर-तल्ला	बागेश्वर
नौगाँव	चौगाँव	उपरारी
नौधर	कत्यूर-बिचल्ला	बैजनाथ
नौबारा	डोरा-तल्ला	मासी
†नौला	नया-वल्ला	नौला
पंगला	दरमा-तल्ला	खेला
पंगू	दरमा-तल्ला	खेला
पछतोरा	सिलोर-तल्ला	सौनी
पटिया	स्यूनरा-मल्ला	दीनापानी
पट्टी-चौरा	नया-वल्ला	मस्सी
पंडरा पाली	कत्यूर-तल्ला	बागेश्वर
पतली-कत्यूर	कत्यूर-बिचल्ला	कौसानी
पतली-रानीखेत	चौगाँव	रानीखेत
पनघट	सिलोर-मल्ला	रानीखेत
पनचौरा	कम्स्यार-वल्ला	कंडा
पनत्यूरी	नयादेश-सौन	वड्डा
पनिया	चलसी	देवीधुरा
पनुआ-देवखान	सल्ट-तल्ला	भिकियासैन
पन्तकोटूली	अठागुली	रानीखेत
पंतगाँव	ककलासोन	सिनौरा
परकुनी	दानपुर-तल्ला	कपकोट
परकोट	कैरारो	बिनता
परकोटी	कत्यूर-मल्ला	दंगोली
परथोली	चौकोट-तल्ला	मस्सी
परेवा	राव-तल्ला	खेतीखान
पलसोन	पलबिलोना-मल्ला	चम्पावत
पलारीछीना	खरही	देवलघार
पल्यान	लखनपुर-तल्ला	बाडेछीना
पवाधार	बेल	गंगोलीहाट
पाचौ	जोहार-मल्ला	मुनस्यारी
पाथरखोली	चौकोट-मल्ला	देघाट
पान	गेंवाड	चित्रेश्वर
पापदेव	सेटी-तल्ला	पिठौरागढ़
पापौन	दुग	कपकोट

† चिह्नांकित स्थानमें डाकघर भी है।

पाभे	सिपटी	बांस
पाली मनिया	डोरा-मल्ला	मासी (मस्सी)
पाली-रंगौर	रंगौर	जैन्ती
†पिठौरागढ़	सेती	पिठौरागढ़
पिपली	अस्कोट-तल्ला	अस्कोट
पिपली (कन्या०)	बराँव	बैरीनाग (गरतीर)
पिपली-सलाम	सलाम-तल्ला	जैन्ती
पिपली-सिलौर	सिलौर-मल्ला	सौनी
पिलखा	स्यूनरा-तल्ला	अलमोड़ा
पीपलताना	अठागुली-वल्ला	मुआनी
पीपलताना	बराँव-मल्ला	माजखाली
पुनाकोट	मली	थल
पुनाकोट	सल्ट-मल्ला	भिकियासैन
पुरानाथल	बराँव-मल्ला	बेनीनाग
†पुलहिंडोला	गुमदेश	पुलहिंडोला
पेटसाल	लखनपुर-तल्ला	चिताई
पेठी	दानपुर-मल्ला	लोहारखेत
पैया	अस्कोट-मल्ला	धरचूला
पैंसिया	सल्ट-मल्ला	खुमार
पोखरी	भेरंग	गंगोलीहाट
पोथिंग	दानपुर-तल्ला	कपकोट
पौनाली	डोरा-बिचला	असगोली-द्वाराहाट
फरसाली	दानपुर-तल्ला	कपकोट
फलयन्ती	दुग	बागेश्वर
फूलचारी	दानपुर-तल्ला	कपकोट
बकरीथल	अठाबीसी-तल्ला	थल
बिगरीहाट	अस्कोट-तल्ला	अस्कोट
†बगवालीपोखर	कैरारो	बगवालीपोखर
बंगीधार	सल्ट-मल्ला	जैनाला
बछाड़	दानपुर-मल्ला	लोहारखेत
बघाड़	बिसौद	लमगढ़ा
बजधार	सलाम-तल्ला	जैन्ती
बजिना	चौगाँव	उपरारी
बजेठी	उच्यूर	लमगढ़ा
बजेर	कमसिर-पल्ला	सनी-ओडियार
बजौन	पलबिलोना-मल्ला	ध्युरी

† चिह्नांकित स्थानोंमें डाकघर भी है।

बटुला	डोरा-तल्ला	मस्सी
बटुलिया	डोरा-बिचल्ला	द्वाराहाट
बडोली	पलबिलोना-मल्ला	चंपावत
बदनीधार	गोरीफाट	मदकोट
बनकोट	अठीगाँव-वल्ला	गणाई-गंगोली
बनगोरा	तल्ला-सिलोर	सौनी
बनटोला	कत्यूर-बिचल्ला	बैजनाथ
बनलेख	दुग	धरमघर-
बनेगाँव	कम्स्यार-पल्ला	सनी-ओडियार
बमरारी	कत्यूर–तल्ला	खाईखाल
बरबे	वल्डिया-तल्ला	चौपखिया
बरम	अस्कोट-मल्ला	जौलजीबी
बराल्	नयादेश-सौन	चौपखिया
बरीट	अठागुली-पल्ला	कफरा
बलतरी	नयादेश-सौन	झूलाघाट
बलता	खसपरजा	अलमोड़ा
बलथी	गौरीफाट	मदकोट
†बलुवाकोट	अस्कोट-मल्ला	बलुवाकोट
बल्तरी	अस्सीफर्का	खेतीखान
बसई	चौकोट-बिचल्ला	तामाधोन
,,	,,	बसन्तपुर
बसते	नकुरी	बांस
बसेरा	डोरा-बिचल्ला	द्वाराहाट
बसेरी	नया-पल्ला	भिकियासैन
बसौत	ककलासोन-तल्ला	भतरौंज-खान
बसौली	रंगौर	भनौली
बसौली	स्यूनरा-मल्ला	तकुलाभैंसोरी
बस्ती	नकुरी	घरमघर
†बागेश्वर	कत्यूर-तल्ला	बागेश्वर
बाडेछीना	लखनपुर-तल्ला	बाडेछीना
बामसोन	चौगाँव	रानीखेत
बाराकोट	दानपुर-मल्ला	लोहारखेत
बाराकोट	रेगरुवन	लोहाघाट
बाराकोट	सलाम-तल्ला	जैन्ती
बासपानी	डोरा-तल्ला	मासी
बासर	तिखुन-तल्ला	कठपुरिया

† चिह्नांकित स्थानोंमें डाकघर भी है।

†बांस	तल्ला-सेती	बांस
बांसबगाड़	जोहार-तल्ला देश	नचिनी
बिठोली	डोरा-मल्ला	द्वाराहाट
बिनकोट	खरकदेश	तोतानौला
†बिनता	करारो	बिनता
,,	,,	बिनसर
बिभाण्डेश्वर	डोरा-मल्ला	द्वाराहाट
बिरगुल	सिपटी	खेतीखान
बिरगोली	भेरंग	पोखरी
बिरौरा	खसपरजा	चिताई
बिलखेत	दुग	बागेश्वर
बिलगू	गौरीफाट	मुनस्यारी
बिलाई	वल्डिया-तल्ला	वड्डा
बिलोना	खराही	बागेश्वर
बिलौरी	खरही	देवलधार
बिल्लेख	डोटी-मल्ली धुराफाट	रानीखेत
बिसाबजेर	खरकदेश	पिठौरागढ़
बीना	लखनपुर-मल्ला	मिरतोला
बुंगीधार	नया-पल्ला	भिकियासैन
बुंदी	व्यास	गरब्याङ्
बुनगली	बेल	चाहज
बुरसुम	बेल	गंगोलीहाट
बुर्फू	जोहार मल्ला	तेजम्
बृषभेश्वर	बोरारो-पल्ला	सोमेश्वर
,,	,,	बेनीनाग बराँव-तल्ला
†बेरीनाग	बराँव-तल्ला	बेरीनाग
बैजनाथ	कत्यूर-बिचल्ला	बैजनाथ
बैरती	गेवाड़-मल्ला	चित्रेश्वर
बैलनैकना	नया-बल्ला	मासी
बैसानी	दानपुर-तल्ला	कपकोट
बोरा-बुंगा	अठाबीसी-तल्ला	देवलथल
बोहला	रीठागढ़-मल्ला	कठपुरिया-छीना
बौन	दरमा-मल्ला	खेला
भटेरी	नयादेश-सौन	झूलाघाट
भटोरा	दुग	चौरा (दुग)
,,	,,	भतरौंजखान

† चिह्नांकित स्थानोंमें डाकघर भी है।

भनटोला	नकुरी	सनेटी
मनार	दानपुर-बिचल्ला	शामा
,,	,,	भनोली
भरकटिया	बल्डिया-तल्ला	बड़ा
भल्या	रावल	गुरना
भाटीगाँव	पुनगराँव (पुनग्राम)	थल (लेजम)
भाडा	अठाबीसी-मल्ला	डींडीहाट
,,	,,	भातर थल
भामा	बेल	गंगोलीहाट
,,	,,	भिकियासैन
भीटाकोट-खाल	सल्ट-मल्ला	भिकियासैन
भुमकिया	डोरा-मल्ला	द्वाराहाट
,,	,,	भुरमुनी
भुवनेश्वर	बराँव-तल्ला	आगर
भुवाली	सल्ट-मल्ला	भिकियासैन
भूमवारी	अस्सी-फर्का	खेतीखान
भूलगाँव	खरकदेश	पिठौरागढ़
भूलगाँव	बरारो-पल्ला	भैंसरगाँव
मेटा	कमस्यार-पल्ला	सनी-ओडियार
मेरंगखाल	सल्ट-पल्ला	जैनाला
भैंसकोट	जोहार-तल्लादेश	तेजम्
†भैंसखेत	तिखुन-मल्ला	भैंसखेत
भैंसरगाँव	बोरारो-पल्ला	सोमेश्वर
,,	,,	भैंसोरी
मऊ	रेगरूबन	लोहाघाट (एबटमौंट)
मगरी-स्टेट	कत्यूर-मल्ला	बैजनाथ
मंगललेख	राव-तल्ली	देवीधुरा
मचियार	राव-तल्ली	खेतीखान
मझेरा	खिलपतिफाट	लोहाघाट
मटेना	कत्यूर-बिचल्ला	बैजनाथ
मटेला	खसपरजा	अलमोड़ा
मण्डलसेरा	दुग	बागेश्वर
मताई	कत्यूर-मल्ला	दंगोली
मदकोट	गौरीफाट	मुनस्यारी
मधया	कमस्यार-पल्ला	नरगोली
मनले	खरकदेश	तोतानौला

† चिह्नांकित स्थानमें डाकघर भी है।

मरतोली	जोहार-मल्ला	तेजम्
मलभीरा	चौकोट-मल्ला	देघाट
मलसुना	कमस्यार-पल्ला	सानी-ओडियार
,,	,,	मल्लादेश
मसमोली	चौकोट-मल्ला	देघाट
†मस्सी (मासी)	गेवाड-तल्ला	मस्सी
महतगाँव	गेवाड़-वल्ला	हवालबाग
महतगाँव	स्यूनरा-तल्ला	महाकालेश्वर
महरखोला	वल्दिया-तल्ला	पिठौरागढ़
महरगाँव	लखनपुर-मल्ला	लमगढ़ा
महरूरी	नकुरी	धरमघर
महाकालेश्वर	गेवाड़-वल्ला	चित्रेश्वर
महारगरी	दानपुर-बिचल्ला	सामा
माजकोट	कत्यूर-मल्ला	ग्वाल्दम
†चल्ला माजाखाली	कालीगढ़	माजखाली
माजखेत	दानपुर-बिचल्ला	शामा
माजगाँव	सल्ट-वल्ला	क्वैराला
माजपीपल	गुमदेश	लोहाघाट
मानकोट	दुग	बागेश्वर
†मानन	बरारो-वल्ला	मानन
मालन	अस्कोट-तल्ला	अना-चौनरा
मालन	अस्कोट-तल्ला	कंडालीछीना
माला	बोरारो-पल्ला	सोमेश्वर
,,	,,	मिरतोला
मिरतोली	रेगरूवन	बड़ाकोट
मिलमा	जोहार-मल्ला	मुनस्यारी
मिलारी-गाँव	अस्कोट-तल्ला	कंडालीछीना
मुआनी	बाराबीसी	थल
मुनकोट	दुग	वड्डा
,,	,,	मुनस्यारी
मुसोली	डोटी-मल्ली धूरफाट	बिल्लेख-रानीखेत
मूसनौला	डोरा-मल्ला	द्वाराहाट
मूलकोट	चलसी	देवीधुरा
मेगरी धनलेख	स्यूनरा-तल्ला	मानन
मेरगाँव	विसोद	लमगढ़ा
मेरथी	अठाबीसी-मल्ला	डिंडीहाट

† चिह्नांकित स्थानोंमें डाकघर भी है।

मेहरोली	चौकोट-तल्ला	मटेला
मैथानी	सल्ट-पल्ला	भिकियासैन
मोढी	बाराबीसी	देवलथल
मोरारी	पलबिलोना-मल्ला	चम्पावत
रतवे	कत्यूर-मल्ला	बागेश्वर
रतमटिया	कत्यूर-बिचल्ला	बैजनाथ
रतीर	दानपुर-बिचल्ला	शामा
,,	,,	रनमान
रंथी-बोरगाँव	अस्कोट-मल्ला	धरछूला
रमरी	दानपुर-बिचल्ला	शामा
,,	,,	राई-आगर
राई	बराँव-तल्ला	बेरीनाग
राँठी	अस्कोट-मल्ला	मुनस्यारी
रानीखेत माली	अठाबीसी-तल्ला	भतार-थल
रामपुर	गेवाड़-पल्ला	चौखुटिया
,,	,,	रायनगर
रालम्बुई	जोहार-मल्ला	मुनस्यारी
रावतसेरा	कम्स्यार-पल्ला	नरगोली
रावतगाँव	गंगोल-विसुंग	लोहाघाट
रावींखाल	कत्यूर-तल्ला	बागेश्वर
रिंगू	गोरीफाट	मदकोट
रिंन्-बी-छूल	बाराबीसी	देवलथल
रीठाखाल	चलसी	देवीधुरा
रेगरू	रेगरूवन	लोहाघाट
रेवाडी	रेउनी	माजखाली
रैगाँव	रेगरूवन	लोहाघाट
रोढीपाली	सेती-तल्ला	पिठौरागढ़
रौतेरा	बेल	चाहज
रौंदल	तिखुन-तल्ला	शीतलाखेत
रौलमैल	अस्सी-फर्का	धूनाघाट
लखटोली	अठीगाँव-वल्ला	गणाई-गंगोली
वखनारी	बरारो-बल्ला	सोमेश्वर
†लमगढ़ा	लखनपुर-मल्ला	लोहारखेत
लहूर	दानापुर-मल्ला	लोहारखेत
लीती	दानपुर-बिल्चला	शामा
लीली	दानपुर-तल्ला	कपकोट

† चिह्नांकित स्थानमें डाकघर भी है।

,,	,,	लेजम-थल
लेती	गुमदेश	पुलहिंडोला
†लोहाघाट	गंगोल-बिसुंग	लोहाघाट
लोहार-चौरा	कत्यूर-मल्ला	बैजनाथ
,,	,,	वड्डा
शामा	तिखुन-तल्ला	कठपुरिया
†शामाधुरा	दानपुर-बिचल्ला	शामाधुरा
शीतलाखेत	तिखुन-तल्ला	शीतलाखेत
श्रीकोट	सल्ट	भिकियासैन
†सकनेती	सिलोर-तल्ला	सकनेती
सकुन	नयादेश-सौन	वड्डा
सगनेती	डोरा-मल्ला	बिठोली
सकनोली	बराँव-मल्ला	कण्डा
सँगरी	अस्कोट-तल्ला	कंडालीछीना
संगोर	पुनगराँव	घरमघर
सतराली	स्यूनरा-मल्ला	तकुला
सतशीलिंग	खरकदेश	पिठौरागढ़
सत्यून	उच्यूर (उचौर)	धौरा
सनरका	पलबिलोना-मल्ला	दौरी
†सनी-ओडियार	कमस्यार-पल्ला	सनी-ओडियार
सनेंटी	नकुर	धरमघर
सपुली	दानपुर-मल्ला	करमी
रसन	दानपुर-मल्ला	करमी
सराईखेत	चौकोट-बिचल्ला	देघाट
सलखेत	डोटी-मल्ला धुराफाट	रानीखेत
सलांग	बरारो-वल्ला	सोमेश्वर
सल्ला	चराल-मल्ला	चम्पावत
सल्लाचिंगारी	वल्डिया-तल्ला	वड्डा
साईं-दर्क	सिपटी	चम्पावत
सासीखान	सिलोर-मल्ला	रानीखेत
सिंगली	अस्कोट-तल्ला	अस्कोट
सिंगली	सिलोर-मल्ला	रानीखेत
सिनलेख	बेल	चाहज
सिनी-चामा	अठाबीसी-मल्ला	नचिनी
सिनोरा	ककलासोन-वल्ला	भतरौंजखान
सिमकोट	जोहार-तल्लादेश	बांसबगड

† चिह्नांकित स्थानोंमें डाकघर भी है।

सिमगरी	नकुरी	धरमघर
सिमलखोला	कैरारो	बगवालीपोखर
सिरखा	दरमा-तल्ला	खेला
सिरदाङ्	दरमातल्ला	खेला
सिरमाली	जोहार-तल्लादेश	नचिनी
सिरमोली	ककलासोन	सिनोरा
सिलपारा	सलाम-तल्ला	जैन्ती
सिलमगढ़	कत्यूर-मल्ला	दंगोली
सिलिंग	सलाम-मल्ला	जैन्ती
सलिंगबारी	कत्यूर-तल्ला	कौसानी
सिलोरमहादेव	सिलोर-तल्ला	सौनी
सीम	कैरारो	बिनता
सीमलकोट	वल्डिया-तल्ला	वड्डा
सुगोली	वल्डिया-बिचल्ला	पिठौरागढ़
सुनौली (चौ०)	चौकोट-मल्ला	देघाट
सुनौली स्यू०	स्यूनरा-मल्ला	भैंसोरी
सुमगढ़	दानपुर-मल्ला	लोहारखेत
सुरकाल	बेल	गंगोलीहाट
सूई	गंगोल-बिसुंग	लोहाघाट
*सूखीढांक	पलबिलोना-तल्ला	सूखीढांक
सूपाकोट	बरारो-पल्ला	रनमान
सूपी	दानपुर-मल्ला	लोहारखेत
सूरी	कंडारखुवा	कठपुरिया
सेराकैलानी	चौकोट-बिचल्ला	गुदलेख
सेराघाट	अठीगाँव-वल्ला	कनारीछीना
सेवाली	कंडारखुवा	रानीखेत
*सोमेश्वर	बरारो-वल्ला	सोमेश्वर
सोरग	दानपुर-वल्ला	लोहारखेत
सौंग	दानपुर-वल्ला	लोहारखेत
*सौनी	सिलोर-मल्ला	सौनी
”	”	सौनी-सगनेती
स्याईधार	खसपरजा	अलमोड़ा
स्यानकुरी	दरमा-तल्ला	खेला
स्यानकोट	नकुरी	धरमघर
स्यालदे	चौकोट-बिचल्ला	तामाधोन
स्यूनराकोट	स्यूनरा-तल्ला	हवालबाग

* चिह्नांकित स्थानोंमें डाकघर भी है।

स्योली	पुनगराँव	धरमघर
हचिला	अठाबीसी-मल्ला	अस्कोट
हरडा	सल्ट-तल्ला	कलसीरा
हरसाथल	भेरंग	गंगोलीहाट
हरसिंगिया-बगड	दानपुर-बिचला	शामा
हरसिल	दानपुर-तल्ला	कपकोट
*हवालबाग	स्यूनरा-तल्ला	हवालबाग
हिमटार	वल्डिया-तल्ला	गुरना
हीप	पुनगराँव	लेजम (थल)
हुनेरा	अठाबीसी-मल्ला	डींडीहाट
होकरा	जोहार-तल्ला देश	तेजम्

विशेष स्कूल

*अस्कोट (कन्या)	अस्कोट-तल्ला	अस्कोट
आगर (हरिजन)	डोरा-मल्ला	द्वाराहाट
कण्डा (कन्या)	कमस्यार-वल्ला	कण्डा
*कपकोट (कन्या)	दानपुर-तल्ला	कपकोट
कालाकोट (हरि०)	रेगरूवन	लोहाघाट
गरतीर (हरि०)	बराँव-मल्ला	बेरीनाग
चनटोली (हरि०)	कमस्यार-पल्ला	नरगोली
चम्पावत (क०)	चराल-तल्ला	चम्पावत
*चौखुटिया (क०)	गेवाड-वल्ला	चौखुटिया-गणाई
*दनिया (क०)	रंगोर	दनिया
देवरारी-पत्त (हरि०)	अठीगाँव-वल्ला	गणाई-गंगोली
*देवलधार (हरि०)	खराही	देवलधार
*द्वाराहाट (क०)	डोरा-मल्ला	द्वाराहाट
नरायणतेवारी	खसपरजा	नरायणतेवारी
देवल (क०)	...	देवल
नौगाँव (हरि०)	चौगाँव	उपरारी
पिठौराढ़ (ह०)	सेती	पिठौरागढ़
पिलखी (हरि०)	अठिगाँव –वल्ला	गणाई -गंगोली
पुनेरी (क०)	माहर	पिठौरागढ़
*पोखरी (क०)	भेरंग	पोखरी
*बागेश्वर (क०)	कत्यूर-तल्ला	बागेश्वर
बिसाढ़ (क०)	वल्डिया-तल्ला	पिठौरागढ़
*भुरमुनी (क०)	सेती-तल्ला	भुरमुनी
मनिहारगाँव (हरि०)	चराल-मल्ला	लोहाघाट

* चिह्नांकित स्थानोंमें डाकघर भी है।

माजबे (क०)	कत्यूर-तल्ला	बागेश्वर
मिराई (हरि०)	डोरा-बिचल्ला	द्वाराहाट
मिलम (क०)	जोहार-मल्ला	मुनस्यारी
रानीखेत (इस्लामिया)	चौगाँव	रानीखेत
रानीगाँव (हरि०)	पुनगराँव	थल
सरना (हरि०)	खराही	देवलधार
*सोमेश्वर (क०)	बरारो-बल्ला	सोमेश्वर
स्यालदे (क०)	चौकोट-बिचल्ला	तामाधोन
स्युनइबढ़ (हरि०)	दुग	चौरा (दुग)

हाई स्कूल

*अलमोड़ा	खसपरजा	अलमोड़ा
*कंडा	कमस्यार-वल्ला	कंडा
*कंडाली-छीना	अस्कोट-तल्ला	कंडालीछीना
कमलेश्वर	स्यूनरा-तल्ला	ह्वालबाग
*करमी	दानपुर-मल्ला	करमी
कुनेलाखेत	चौगाँव	उपरासी
कोट	पलबेलोना-तल्ला	भतरौंजखान
*खेतीखान	सिपटी	खेतीखान
*गंगोलीहाट	भैरंग	गंगोलीहाट
*गणाई-गंगोली	अठीगाँव-वल्ला	गणाई-गंगोली
गरखा	अस्कोट-तल्ला	अस्कोट
गरुड़	कत्यूर-बिचल्ला	बैजनाथ
गोरंगचौर	सेटी-तल्ला	पिठौरागढ़
चौकोली	रंगोर	दनिया
*चौखुटिया	गेवाड-पल्ला	गणाई-गेवाड
चौपखिया	नयादेश-सौन	वड्डा
चौमेल	रेगलवन	एबटमौन्ट
चौराथल	दानपुर-मल्ला	लोहारखेत
*जलाली	डोरा-बिचल्ला	जलाली
*जैन्ती	सलाम-तल्ला	जैन्ती
*डिंडीहाट	अठाबीसी-मल्ला	डिंडीहाट
*थल	अठाबीसी-तल्ला	थल
*देघाट	चौकोट-मल्ला	देघाट
देवटोली	कम्स्यार-पल्ला	नरगोली
*देवलथल	बाराबीसी	देवलथल
देवलीखेत	सिलोर-तल्ला	सौनी

* चिह्नित स्थानोंमें डाकघर भी हैं।

*देवीधुरा	चलसी	देवीधुरा
दोफर	दुग	कंडा
दौलाघाट	तिखुन-मल्ला	भैंसखेत
*द्वाराहाट	डोरा-मल्ला	द्वाराहाट
पंखू	दरमा-तल्ला	धरमघर
पंगू	चौदंस-दरमा	खेला
...	तल्ला	...
पाली	डोरा-तल्ला	मासी
*पिठौरागढ़	सेती	पिठौरागढ़
*बगवालीपोखर	कैरारो	बगवालीपोखर
*बागेश्वर	कत्यूर-तल्ला	बागेश्वर
*बाडेछीना	लखनपुर-तल्ला	बाडेछीना
बाराकोट	रेगरूबन	लोहाघाट
*बिनता	कैरारो	बिनता
बीसबजेर	खरकदेश	पिठौरागढ़
*बेरीनाग	बराँव-तल्ला	बेरीनाग
*भनोली	रंगोर	भनोली
भातखोला	खराही	देवलधार
मनीला	नया-पल्ला	जैनाला
महाकालेश्वर	गेवाड-मल्ला	चित्रेश्वर
*माजखाली	द्वारसोन	माजखाली
*मानन	बोरारो-वल्ला	मानन
मासी	गेवाड-तल्ला	मासी
मुनस्यारी	जोहार-मल्ला	मुनस्यारी
*लमगढ़ा	लखनपुर-मल्ला	लमगढ़ा
वाजूला	कत्यूर-मल्ला	दंगोली
*शामा	दानपुर-बिल्ला	शामा
*शीतलाखेत	तिखुन-तल्ला	शीतलाखेत
श्रीखेत	कालीगढ़	माजखाली
सनेती	नकुरी	धरमघर
सरकोट	स्यूनरा-मल्ला	तकुला
*सिंगली	अस्कोट-तल्ला	सिंगली
सोमेश्वर	बरारो-वल्ला	सोमेश्वर
स्यालदे	चौकोट-बिल्ला	तामाधोन
हरडा	सल्ट-तल्ला	जैनाला

* चिह्नित स्थानोंमें डाकघर भी है।

शिक्षाप्रचार—वाचनालय-पुस्तकालय

अलमोड़ा	खसपरजा	अलमोड़ा
*कंडा (हा०)	कम्स्यार-वल्ला	कंडा
*कंडालीछीना	अस्कोट-तल्ला	कंडालीछीना
*कपकोट (हा० से०)	दानपुर-तल्ला	कपकोट
*खेतीखान (हा०)	सिपटी	खेतीखान
*गंगोलीहाट	भैरंग	गंगोलीहाट
*गणाई-गंगोली	अठोगाँव-वल्ला	गणाई-गंगोली
*गरब्याङ्	व्यास	गरब्याङ्
गरुड़ (हा०)	कत्यूर-बिल्ला	बैजनाथ
मुरना-शोर	रावल	पिठौरागढ़
गोरंगचौर	सेटी-तल्ला	भुरमुनी
*डिंडीहाट (हा०)	अठाबीस-मल्ला	डिंडीहाट
*डुंगराभनोली	रंगोर	भनोली
*चम्पावत	चराल-तल्ला	चम्पावत
चामदेवल	गुमदेश	पुलहिंडोला
*चाहज	बेल	चाहज
*चौखुटिया	गेवाड-वल्ला	गणाई-चौखुटिया
*चौपखिया	नयादेश-सौन	वड्डा
*चौरा-दुग	दुग	चौरा (दुग)
छानी	बोरारो-पल्ला	कौसानी
*जैन्ती (हा०)	सलाम-तल्ला	जैन्ती
*थल	अठाबीसी-तल्ला	थल
दधुली	डोरा-मल्ला	द्वाराहाट
देवयाल	सल्ट-पल्ला	भिकियासैन
*देवलथल	बाराबीसी	देवलथल
*देवलधार	खराही	देवलधार
देवलीखेत (हा०)	सिलोर-तल्ला	सौनी
*दौलाघाट	तिखुन-मल्ला	दौलाघाट
*द्वाराहाट (क०)	डोरा-मल्ला	द्वाराहाट
*धरछूला	अस्कोट-मल्ला	धरछूला
धामस	तिखुन-तल्ला	शीतलाखेत
नौला	नया-वल्ला	भिकियासैन
*पिठौरागढ़	सेटी	पिठौरागढ़
पिलखोली (पंचायत)	चौगाँव	उपरारी
बलनैकाना	नया-वल्ला	मस्सी

* चिह्नित स्थानोंमें पुस्तकालय भी है।

बसौली	स्यूनरा-मल्ला	तकुला
*बैरीनाग (हा०)	बराँव-तल्ला	बेरीनाग
मनीला (हा०)	नया-पल्ला	भिकियासैन
मासी	गेवाड-तल्ला	मासी
मिलम	जोहार-मल्ला	मुनस्यारी
रावतसेरा	कमस्यार-पल्ला	नरगोली
*लोहाघाट	गंगोली-विसुंग	लोहाघाट
*सनेटी (हा०)	नकुरी	सनेटी
सिनौरा	ककलासोन-वल्ला	भतरौंजखान
*सोमेश्वर (हा०)	बोरारो-वल्ला	सोमेश्वर
सौंग	दानपुर-मल्ला	लोहारखेत
स्यालदे	चौकोट-बिचल्ला	तामाधोन

डिस्पेंसरी-औषधालय सूची[1]

*अलमोड़ा O	खसपरजा	अलमोड़ा
*अस्कोट D	अस्कोट	अस्कोट
*गंगोलीहाट D	भेरंग	मंगोलीहाट
*गणाई-चौखुटिया D	गेवाड-पल्ला	गणाई-गेवाड
*चम्पावतO	चराल-तल्ला	चम्पावत
*जैन्तीO	सलाम-तल्ला	जैंती
*तेजम O	...	तेजम
*देवीधुरा D	चलसी	देवीधुरा
*द्वाराहाट D	डोरा	द्वाराहाट
*पिठौरागढ़ D	सेटो	पिठौरागढ़
*पुलहिंडोला D	गुमदेश	पुलहिंडोला
बसौली O	स्यूनरा-मल्ला	तकुलाभैंसोरी
*बागेश्वरD	कत्यूर-तल्ला	बागेश्वर
*बाडेछीना D	लखनपुर-तल्ला	बाडेछीना
*बेनीनाग D	बराँव-तल्ला	बेनीनाग
*बैजनाथ D	कत्यूर	बैजनाथ
*भिकियासैन D	डोरा	भिकियासैन
*मानिला O	नया-पल्ला	मानिला
*लमगढ़ा O	लखनपुर-मल्ला	लमगढ़ा
*लोहाघाट D	गंगोलबिसुंग	लोहाघाट
*शामा O	दानपुर-बिचल्ला	शामा

१. O = आयुर्वेदिक औषधालय, D = डिस्पेंसरी

* चिह्नित स्थानोंमें पुस्तकालय भी है।

स्यालदे O	चौकोट-बिचल्ला	तामाधोन
हरडा O	सल्ट-तल्ला	कलसीरा

जिलाबोर्डके डाक-बँगले

अलमोड़ा	खसपरजा	अलमोड़ा
*कंडा	कमस्यार-वल्ला	कंडा
कनालीछीना	...	कनालीछीना
*कपकोट	दानपुर-तल्ला	कपकोट
केलानी	,,	,,
*कौसानी	बोरारो	कौसानी
खाती	सेटी-तल्ला	बांस
*गंगोलीहाट	मेरंग	गंगोलीहाट
गणाई	डोरा	चौखुटिया-गणाई
*गरब्याङ्	ब्यास	गरब्याङ्
*गुरना	रावल	गुरना
*चम्पावत	चराल-तल्ला	चम्पावत
छीरा	,,	,,
*तकुला	,,	तकुलाभैंसोरी
देवरी (द्युरी)	पल्बेलोना-तल्ला०	देवरी
*देवलथल	...	देवथल
*देवीधुरा	चलसी	देवीधुरा
*द्वाराहाट	डोरा-मल्ला	द्वाराहाट
द्वाली	,,	,,
धकुरी	,,	,,
धरछूला	अस्कोट	धरछूला
धूनाघाट	अस्सी-फर्का	खेतीखान
*धौलछीना	लखनपुर-तल्ला	धौलछीना (P. W. D का)
नैनी	दरुन	रायनगर
पनुआनौला	,,	,,
*पिठौरागढ़	सेटी	पिठौरागढ़
फुर्किया	,,	,,
*बलुवाकोट	अस्कोट-मल्ला	बलुवाकोट
बागेश्वर	कत्यूर-तल्ला	बागेश्वर
*बांस	सेटी-तल्ला	बांस
*बैजनाथ	कत्यूर-तल्ला	बैजनाथ

* चिह्नित स्थानोंमें पुस्तकालय भी है।

*भैंसखेत	तिखुन-मल्ला	भैंसखेत
*मस्सी	गेवाड-तल्ला	मस्सी (मासी)
*माजखाली	कालीगढ़	माजखाली
*मुनस्यारी	,,	मुनस्यारी (P. W. D. का)
मोरे नौला	,,	,,
रानीखेत	चौगाँव	रानीखेत
*लोहाघाट	लखनपुर-मल्ला	लोहाघाट (P. W. D. का)
*लमगढ़ा	लखनपुर-मल्ला	लमगढ़ा
*शामाधुरा	तिखुन-तल्ला	शामा (P. W. D. का)
*सूखीढाँक	पल्लबेलोना	सूखीढाँक
*सोमेश्वर	चरारो	सोमेश्वर

चिह्नित स्थानोंमें पुस्तकालय भी है।

अध्याय ८

प्रसिद्ध ग्राम-नगर

अलमोड़ा जिलेमें ५,०६६ ग्राम और २ नगर हैं। देशके और भागोंकी भाँति यहाँ भी जीवन-का प्रवाह मन्द गतिसे चलता जा रहा और रहना चाहता है, इसलिए अभी नये नगरों और कस्बोंके बढ़नेका क्या कारण हो सकता है? तो भी मोटरकी सड़कोंके विस्तारसे गरुड़ जैसे नये-नये बाजार पैदा हो रहे हैं। हिमालयके इस भागकी निहित क्षमता अपार है और उसे विकसित करनेके लिए लाख-लाख मानवोंकी नसोंमें खून और मस्तिष्कमें प्रतिभा फूट निकलनेके लिए तैयार है। कबतक उसे सुषुप्त रखा जायगा, जब कि उत्तरी पड़ोसमें नये संसारकी दागबेल पड़ चुकी है।

यहाँके कुछ नगरों और ग्रामोंका संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जाता है—

अलमोड़ा—(उत्तर अक्षांश २९°· ३६′ और पूर्व-देशान्तर ७९°·४०°, ऊँचाई ५४३९ फुट जलपर)। १५६० में चम्पावतसे चन्दोंकी राजधानी यहाँ आयी। यह पूर्वसे पश्चिमकी ओर फैले एक पर्वतके मेरुदण्ड तथा उसके पार्श्वपर बसा हुआ नगर है। हीराडुँगरी इस पहाड़ी-दण्डको सिमतोला (६०६६ फुट) तथा कालीमाट (६४१४ फुट) के अपेक्षाकृत अधिक ऊँचे पहाड़ोंसे मिलाती है। अलमोड़ा-पहाड़ या काषाय-पर्वत कोसी (कौशिकी) और सुवाल (शाल्मलि) नदियोंसे तीन ओर घिरा है—इसके पूर्व और दक्षिणमें सुवाल नदी है और पश्चिममें कोसी। दक्षिण-पश्चिममें अलमोड़ा पहाड़ चारालेखके रूपमें उच्चतम स्थानको प्राप्त हो कई ढलानोंमें तेजीसे नीचे होते कोसी-सुवाल संगमपर पहुँच जाता है।

बाजारके पश्चिमी छोर तथा परेड-मैदानके बीचसे जानेवाली सड़क द्वारा अलमोड़ा पहाड़के दो भाग हो जाते हैं। पश्चिमी भाग छावनी है और पूर्वी भाग नगर। पर्वतकी रीढ़पर पूर्वान्तसे थानातक सँकरी-सी बाजार है, फिर सड़क कुछ चौड़ी होने लगती है। बाजारकी सड़कपर पत्थर बिछे हुए हैं। पहियेवाली सवारीके न चलनेसे कोई अड़चन नहीं है। मकान प्रायः दो-महले या ति-महले हैं। स्थानकी कमीके कारण छतोंको नीची तथा स्थानको सँकरा करके अधिकसे अधिक कोठरियों और कमरोंकी जगह निकालनेकी कोशिश की गयी है। पुराने मकानोंमें ऊपरी तल्लोंके सामनेकी नन्हीं-नन्हीं खिड़कियों और बारजोंको बड़े सुन्दर कारुकार्यसे अलंकृत देखा जाता है। मुख्य बाजार थाना और किलेके बीचमें है।

किलेके भीतर जिलेकी कचहरियाँ तथा दूसरे सरकारी कार्यालय हैं। यहाँसे नीचेकी ओर जगह कुछ खुली हो जाती है। यहींपर अस्पताल, तहसील तथा रामजे कालेज (स्थापित १८७१) है। पहाड़ी डाँड़ेके उत्तर और दक्षिणमें समृद्ध परिवारोंके घर हैं। नीचेसे जानेवाली मोटर सड़कपर डाक-बँगला डाक-तारघर, जिला-स्कूल, अवध-तिरहुत रेल एजेन्सी, मोटरोंका अड्डा तथा कुछ अच्छी-भली दुकानें हैं। थोड़ा पश्चिम चलनेपर यूरोपियनोंके लिए निर्मित गिरजा है। डाँड़ेपर बाजारके छोरपर दीप-चन्देश्वर-नैनादेवीके मन्दिर और थोड़ा-सा आगे, ऊपरकी ओर चलनेपर त्रिपुरा मन्दिर है। और आगे लड़कियोंका स्कूल, ईसाई गिरजा तथा मिशनरियोंकी कितनी ही इमारतें हैं। यहाँसे ऊपर हीराडुँगरी-की ओर जेल है।

गोरखा-शासनकालमें अलमोड़ाके पहाड़ोंके जंगल काटकर नंगा-सा कर दिया गया था। पिछले

सवा सौ वर्षोंमें पर्वत-गात्रको वृक्षोंसे ढाँकनेकी बहुत कोशिश की गयी है। अधिकांश वृक्ष चीड़के हैं, जो अपनी छाया और हरीतिमाकी दरिद्रताके लिए प्रसिद्ध हैं, तो भी उनसे कषाय पर्वतकी नग्नता बहुत-कुछ दूर हो गयी है। बसन्त में अलमोड़ाकी शोभा देखने लायक होती है, जब कि चारों ओर रं-बिरंगे फूल खिलते हैं।

जलवायु अलमोड़ाकी अच्छी है। नैनीतालकी भाँति यहाँ लुभावनी हरियाली नहीं है, किन्तु साथ ही वैसी वर्षा और धुन्ध भी यहाँ नहीं होती। अधिकतम तापमान ८८° से ऊपर शायद ही कभी जाता है। जूनका औसत तापमान ८४° है, किन्तु १९०८ के जूनमें वह ९०° से ऊपर पहुँच गया था। सबसे अधिक तापमान ९४° तक वर्षारम्भमें पहिले कभी देखा गया। अलमोड़ामें पंखेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। घरके भीतर वर्षारम्भके पहिलेके अत्यन्त गरम दिनोंमें भी तापमान ७४° तक रहता है। वर्षामें छायादार बरांडोंमें जब ८६° से अधिक तापमान हो, तो वर्षा जरूर आती है, जिससे तापमान २०° या अधिक नीचे गिर जाता है। जाड़ोंमें दिसम्बर और जनवरीके महीनोंमें तापमान ४०° से ५०° तक रहता है। रातको धरती अकसर जम जाती है, किन्तु हिमवृष्टि शायद ही कभी होती है, सो भी छायादार जगहोंके अतिरिक्त अन्यत्र कुछ ही घण्टों ठहर पाती है। गर्मियोंमें पहाड़पर धुन्ध फैली रहती है, जिससे दूरके दृश्य अस्पष्ट हो जाते हैं और आप फोटो नहीं ले सकते। अप्रैल और मई बहुत सूखे महीने हैं, जब कि पानीके लिए कभी-कभी बहुत कष्ट होता है। वैसे सालका कोई महीना नहीं है, जिसमें वर्षाकी छींटें न पड़ जाती हों। जूनका मध्य मानसूनके आरम्भका समय है और सितम्बरके मध्य या अन्ततक वर्षा चलती रहती है। वार्षिक वर्षाका औसत ४० इञ्च अलमोड़ाको इस योग्य बनाता है कि यहाँ सेब, अंगूर आदि सर्द मुल्कोंके मीठे फल पैदा किये जायँ, किन्तु अंग्रेजोंने जितना चायबगानों को बढ़ानेका असफल प्रयत्न किया, उतना इस ओर ध्यान नहीं दिया।

नगरपालिका—१५६० में चन्दोंकी राजधानी बनानेके पूर्व भी अलमोड़ाके एक छोरपर खगमारामें कत्यूरियोंका कोट (दुर्ग) था, इस प्रकार यहाँकी बस्ती अतिनवीन नहीं है। २७ अप्रैल १८१५ को अंग्रेजोंने अलमोड़ाको लेकर उसे कुमाऊँका शासन-केन्द्र बनाया। तभीसे गढ़वाल भी कुमाऊँके भीतर ले लिया गया। अभी नैतीताल अलमोड़ाका प्रतिद्वन्द्वी नहीं बना था, न कुमाऊँ ही अलमोड़ा और नैनीताल दो जिलोंमें विभक्त था। अलमोड़ा नगरपालिकाका आरम्भ १८५१ से होता है, अर्थात् सन् ५७ के राष्ट्रीय विद्रोहसे छ वर्ष पूर्व। उसी साल स्थानीय उपयोगके मालपर चुंगी १८५० ई०के ३६वें विधानके अनुसार लगायी गयी। नियमपूर्वक नगरपालिका (म्युनिसिपैलिटी)-की स्थापना १४ नवम्बर १८६४ को हुई। १८६९ और १८७७ में ५ प्रतिशत गृहकर लगाया गया, फिर आय बढ़ानेके लिए बाहरसे लाये वध्य पशुओंपर भी कर लगने लगा। १८७६ में गृहकर बढ़ाया गया, जिसे १८८४ में हटाकर उसके स्थानपर चुंगी लगा दी गयी। १८८० में प्रति वर्गफुट एक पैसा वार्षिक भूमि-कर भी लगाया गया।

पहाड़ी डाँड़ेपर बसे कितने ही और नगरोंकी भाँति पानीय जल अलमोड़ाकी बड़ी समस्या है, जो एक बढ़ते नगरके लिए घटनेवाली चीज नहीं थी। परम्परा कहती है कि अलमोड़ाके कभी ३६० झरने थे, जिसमें अतिशयोक्तिसे काम लिया गया है, इसमें सन्देह नहीं। आज जो चश्में हैं, उनमें सितोली पहाड़ी तथा हीराडुंगरीके बीचमें अवस्थित रानीधारा तथा मोटरसड़कसे नीचे हीराडुंगरीके पश्चिमी भागमें स्थित कपिनानौला, दो ही ऐसे चश्मे हैं, जिनसे काफी पानी निकलता है। ये झरने नगरसे काफी दूर हैं। पानी लानेका पहिला प्रयत्न लम्सडेन तथा बैटन (१८४८-५६)के शासनकालमें

हुआ, जब कि सिमतोलाके बँगलेके पासके दो झरनोंका पानी पक्की कुल्या द्वारा वर्तमान मिशन-हाउसके सामने लाया गया, इसे कमिश्नर-धारा कहा गया। कई साल बाद यह धारा मोती-धाराके नामसे बिनसार सड़क और मोटर-सड़कके चौरस्तेतक पहुँचायी गयी।

१८७४में सिमतोलाके दक्षिणी-पश्चिमी पार्श्वके तीस चश्मोंको लेकर बलधोती प्रणालिकाका आरम्भ किया गया, जिसने उन्नीसवीं शतीके अन्ततक काम दिया। खुली प्रणालिको मिट्टीकी तलछट बैठने तथा ७-८ फुट ऊँचे पौधोंके जम जानेसे बाधा होती थी, इसलिए उसके स्थानपर लोहेके तीन इंची पाइप लगा दिये गये। आगे पानी कम होते-होते ४ गैलन प्रति मिनट रह गया। अन्तमें बलधोती प्रणालीकी आशा छोड़ सैल-प्रणालीको बनाना पड़ा। सैलके तीन झरनोंमेंसे दोनों बिचले १२ गैलन प्रति मिनट पानी देने लगे। १९०४में ऊपरी झरनेको भी ले लिया गया। १९०७में तीन इंची गलवनित पाइप लगाये गये। सैलके पानीका आगम वर्षामें ३५ गैलनसे गरमियोंमें १७ गैलन प्रति मिनटतक घटता-बढ़ता रहता है। अलमोड़ाकी पानीकी आवश्यकताकी पूर्तिके लिए झरनोंसे बूँद-बूँद जमा करनेकी जगह नीचे कोसी नदीसे पानी पम्प करनेका प्रबन्ध हो रहा है, फिर अलमोड़ा यथेच्छ पानी प्राप्त करने लगेगा।

अलमोड़ाको आधुनिक ढंगका सुन्दर नगर बनानेके लिए सिवर तथा स्वयंवह पाखानोंका भी प्रबन्ध करना होगा, किन्तु नैनीताल और रानीखेतकी प्रतिद्वन्द्वितामें वहाँ सैलानियोंको अधिक आकृष्ट करनेके लिए इतना ही पर्याप्त नहीं होगा। अलमोड़ा ही नहीं, वारामण्डल-शोरमें वर्षाका ४० इंच होना मीठे फलोंके लिए बहुत अनुकूलता प्रदान करता है। अलमोड़ाको फलोंके लिए दूसरा कश्मीर बना दिया जाय, तो वह स्वयं अपने बलपर आगे बढ़ सकता है।

अलमोड़ा **नगरपालिका**के आयक्रमका अन्दाजा निम्नलिखित आँकड़ोंसे लग सकता है—

आय—

	चुंगी	भूकर	अन्य कर	भाड़ा	ऋण	अन्य	योग
१९२२-२३	१६८२३	४२१६	६२४६	२१६३	,,	८९१३	३८३६४
१९२६-२७	२०३१५	४७००	९६२५	२३९६	,,	१२६२	३८२९८
१९२९-३०	३६०८७	४९७२	२४१५९	४८५१	५००००	१५५६	१२१६२५
१९३०-३१	३६५९९	४६६१	२३८०४	३८०३	३७६७१	१७५८	१०८२९६
१९३३-३४	३३२६१	५०६९	८४९२	४२४१	,,	३९९६	५५०५९

व्यय—

सन्	प्रबन्ध-व्यय	लोक-सुरक्षा	जलकलआदि पूँजी	जलकलआदि रक्षा	जलकलआदि सुरक्षण	चिकित्सा	लोक-कार्य	लोक-संस्थाएँ	अन्य	योग
१९२२-२३	७५१५	१८६०	,,	१४४८	९४५२	९७०	३१४७	३१५१	३७४४	३१२५७
१९२६-२७	८३६९	२२६०	,,	३४४८	१०७८८	१४७०	५६७१	२९२७	५१४८	४००८१
१९२९-३०	१००९२	३१८०	...	८९४१	११८१२	९७०	९५९७	३६१०	६९३२	५५१३३
१९३०-३३	११३४२	३८५०	८८२७८	...	११४३३	१७२०	४४६४	३९५३	१११२५	१३६०६५
१९३३-३४	१३३७६	३७५३	३३७१	३६९३	१३०७७	२१६९	५७९४	५३२७	१२४२७	६३०३२

उन्हीं वर्षोंमें अलमोड़ा जिलाबोर्डका आय-व्यय निम्नलिखित प्रकार रहा—

आय—

सन्	पनचक्की-कर	स्थानीय कर	औषधालय निधि (ब्याज)	शिक्षा	चिकित्सा	वैज्ञानिक आदि
१९२२-२३	२०८६९	२७०४२	३००	४३५५	३६७४	...
१९२६-२७	२२२३४	२७२६०	...	८२४०	४५४८	...
१९२९-३०	२२९१९	२७४२३	२७९	१९१२१	७०६६	...
१९३०-३१	२३११४	२७४६९	२७९	१५६३२	९५२८	...
१९३३-३४	२३७८१	२७६९७	२८७	१४९८८	८६४१	६१९

सन्	फुटकर	असैनिक कार्य	पशुअवरोध	सरकारी अनुदान	योग
१९२२-२३	८२५	४९४३	७९५	२५३५०७	३१७०४०
१९२६-२७	११३६	३६८४	३२४	३०१९६७	३६९३९३
१९१९-३०	८२४४	४५२१	१०१६	२४६९७०	३३७५६९
१९३०-३१	१३५४	४६२५	७१६	३४१२४९	४२३९६६
१९३३-३४	१००४	३६०३	७७४	३१५५९६	३९६९१०

व्यय—

सन्	प्रबन्ध	शिक्षा	चिकित्सा	वैज्ञानिक	फुटकर	लोक-कार्य	पशु-अवरोध	ऋण	योग
१९२२-२३	१६७०२	१४५३६१	४५२८१	४४७२	२०२५	१४५४३६	२१८	...	३५९४९५
१९२६-२७	२३५७३	१८१२५०	४७९३१	४७३७	६००	१२५१७०	५८०	...	३८३८४१
१९२९-३०	२१२१९	१९१२१६	५६२१७	३८२६	११२९	९९८१२	३८६	...	३७३८०३
११३०-३१	१३४२२	२२०४५१	४८८५६	३९४१	११२०	८५७०३	७३९	...	३७५२३२
१९३३-३४	१५८४७	२०६५२७	५१७४६	५५३६	११८०	१०७४३९	६००	...	३८८८५१

अलमोड़ा जिलाबोर्ड—३१ मार्च सन् १९५२ ई० को समाप्त होनेवाले वर्षका जो प्रतिवेदन (रिपोर्ट) बोर्डके अध्यक्ष महाशयने कमिश्नरके पास भेजा था, उससे मालूम हुआ कि इस बोर्डके निर्वाचित सदस्योंकी संख्या ४० तथा बोर्ड-द्वारा नामित ४ थी, जिनमें तीन महिलाएँ थीं—कुमारी गंगोत्री गरब्याल उपाध्यक्ष थीं। बोर्डके आय-व्ययका ब्यौरा निम्नलिखित प्रकार था—

आय—

नाम	१९५०-५१	१९५१-५२	न्यूनाधिक
१. शासकीय अनुदान	६६२४८३	८१४१३१	+ १५१६४८
२. घराट-कर	५५८३१	५८३६८	+ २५३७
३. स्थानीय कर	५३२२२	५३३०४	+ ८२
५. पशुकारा	२२३३	१९४२	− २९१
७. शिक्षा	१०६७२६	१८२९३३	+ ७६२०७
८. औद्योगिक-शिक्षा	६९०	६१२	− ७८
९. चिकित्सा	३९०१	३६०५	− २९६
१०. सार्वजनिक स्वास्थ्य	३६९	३६९	

११. पशु-चिकित्सा	१२६४	१८९९	+ ६३५
१२. बाजार तथा दूकानें	१०९९८	११०३४	+ ३६
१३. सम्पत्तिसे आय	१०५२९	९२५५	− १२७४
१४. कृषि तथा वृक्षारोपण	४९४	७३८	+ २४४
१५. विविध	१३९४१	२३४१३	+ ९४७२
योग	९२२६८१	११६१६०३	२३८९२२

व्यय—	१९५०-५१	१९५१-५२	न्यूनाधिक
१. सामान्य शासनव्यय	४०९७१	४८२२२	+ ७२५१
२. पशुकारा	४५१	७५४	+ ३०३
३. शिक्षा	६४०५०१	१०५५४८	+ ३६५०४७
४. औद्योगिक शिक्षा	६९८४	७७१६	+ ७३२
५. चिकित्सा	९४३८१	८६५६०	− ७८२१
६. सार्वजनिक स्वास्थ्य	३६०१३	३३५७५	− २४३८
७. पशु-चिकित्सा	१०६०४	११७३३	+ ११२९
८. कृषि तथा वृक्षारोपण		१६३९	+ १६३९
९. सार्वजनिक निर्माण	२६७३५१	२२१५८६	− ३५७६५
१०. अवसर प्राप्ति	५२१६	५५१४	+ २९८
११. वापसी	७१	५३	− १८
१२. विविध	२९३२३	२८३३८	− ९८५
योग	११२१८६६	१४६१२३८	+ ३२९३७२

चिकित्सा—जिलेमें रानीखेत, अलमोड़ा और पिठौरागढ़में अस्पताल, १३ डिस्पेंसरियाँ (पिठौरागढ़, बागेश्वर, पुलहिंडौला, बैजनाथ, बाड़ेचीना, मिरतोला, भिखियासैन आदि) हैं। इनके अतिरिक्त १४ आयुर्वेदिक औषधालय भी हैं।

१९५१-५२में जन्म-मृत्युकी संख्या निम्नलिखित प्रकार थी—

सन्	जन्म	मृत्यु	न्यूनाधिक
१९५०-५१	२२५६६	१७८७२	+ १०६९४
१९५१-५२	२०६३५	११०७७	+ ९५५८

इससे मालूम होता है कि जिलेका स्वास्थ्य अच्छा रहा। बिमारियोंमें हैजेसे ४, चेचकसे २४ की मृत्यु हुई।

जिलेमें तीन पशु-चिकित्सालय हैं।

स्थानीय स्वराज्य—जिलेमें ७७३ ग्राम-पंचायतें और १६० अदालतें बालिग मताधिकार द्वारा निर्वाचित की गयी हैं।

यातायात—जिलेमें अलमोड़ाको काठगोदाम और बागेश्वरसे मिलानेवाली मोटर-सड़कें, भिखियासैन रामनगरसे भिखियासेनवाली मोटर-सड़क अब चाँदमारीतक बढ़ा दी गयी है। धरमघर-थल, बाड़ेचीना-अस्कोट, टनकपुर-चम्पावततक मोटरकी सड़कें बन गयी हैं। जिलेमें ४५ डाक-बँगले हैं, जिनमें एक कांडाके हाई स्कूलके साथ लगा हुआ है।

अलमोड़ा नगर—अलमोड़ा नगरपालिकाके अध्यक्ष श्री मथुरारत्न जोशीके १९५१-५२ सन् के प्रतिवेदनसे १ अप्रैल १९५१ से ३१ मार्च १९५२ वाले सालके बारेमें निम्नलिखित बातोंका पता लगता है।

अलमोड़ा नगरकी जनसंख्या १९५१ ई० की जनगणना के अनुसार १०२२९ थी और आय-व्यय निम्नलिखित प्रकार था—

आय—

मद	१९५०-५१	१९५१-५२ (बजट)	१९५१-५२ (वास्तविक)
१. पिछले सालका रोकड़	२७७४०३	२३४०४२	२३४०४२
३. गृह-भूमिका मूल्य-कर	९५७१	१६९००	१४३०८
४. कुत्ता-कर	१३६	१५०	१३९
६. चुङ्गी	९८५१४	११४०००	११५०६६
९. सफाई-कर	८४४८	८०००	७४९२
१२. पशुकारा	३००	५४०	५५७
१४. दूसरे स्रोतोंसे	२२७	२२५	२२१
१६. भूमि-घर-डाकबँगला आदिसे भाड़ा	२१७३३	२५५२०	२३७०९
१९. शिक्षणालयोंसे फीस आदि	१८	३०	२८
२१. (क) बाजार	५१९२	३६५०	३७१७
२१. (ख) कसाईखाना	५९६	६५०	६२१
२३. जल-कर :			
(१) जलकर	१५५९४	१५५००	१७२९९
(२) मीटरका भाड़ा	१९१४	१५००	१८५१
(३) दूसरे मद	२२४४	१०००	९५०
२३. (ख) मेले	२६	३०	३३
२३. (ङ) फुटकर	९२६७	५५००	५४०१
२३. (च) बिजली	—	२९०००	३५११६
मीटर भाड़ा	—	२४००	२११७
बिक्री-कर	१४११०	६००	४५२
दूसरे मद	—	—	१४३
२५. साधारण उपयोग	—	१०१७२	१०१७२
सरकारसे :			
३०. साधारण उपयोगके लिए	११३८२	३८९००	४०२८५
३१. शिक्षाके लिए	१५५०४	१७५४८	१६७८३
३६. दूसरे स्रोतोंसे	२५०	२५०	५००
२४०-४१ भिन्न-भिन्न	५९२	५४०	४८०
४३. रोकड़-सहित वार्षिक आयका योग	२१५६२८	३०२६०५	२९७५४२
४५. सरकारसे ऋण	१७२६००	१०००००	१०००००

५०. डिपाजिट (तहवील)	१५	७००	७१०
५३. सर्वयोग	६६५६४६	६३७३४७	६३२२९४
५४. प्रतिव्यक्ति-कर और भाड़ा	११-६-६	१३-९-६	१३-६-३
५५ प्रतिव्यक्ति ४३वें मदके अनुसार व्यय	२१-०-७	२९-९-३	६१-१३-०
१-७. प्रशासन-व्यय	३६७९३	३७८१४	३६९३१
९. पथदीप	३४३५३	५६०००	४४३१२
१२-३१. सार्वजनिक स्वास्थ्य और यातायात सुविधा	१०५४७३	२०६८६२	१९८१३३
३२-३४. सार्वजनिक शिक्षा	४४१९२	४३३३६	४०७२०
३६. साधारण उपयोगके लिए	५९११	५३२३	५३२३
३७. सूद	४८५६	४६०९	४६०९
४१. छपाई	२७९	३००	२८८
४१. (क) कानूनी खर्च	३६१३	६४००	५२२१
४१. (ख) प्राविडेंट फण्ड	६८७	७००	६८७
४१. (ग) नजूलकी आमदनीमें सरकारका भाग	१९४७	२२००	२१८७
४१. (घ) भाड़ा	३६	३६	३६
४२. योग	१८८९८३	११३४८०	११२६७४
व्यय-योग	४१७१८०	४७७२४४	४५१२०२
४८. कर्ज अदायगी	४४२४	४४७१	४४७१
५१. तहवील (डिपाजिट)		७००	६६०
सर्वयोग	४३१६०४	४८२६१५	४५६५३३

उक्त सन्में प्रारम्भिक अवशेष सहित नगरपालिकाकी सारी आय ६३२२९४ रही, जब कि उससे पहले साल ६६५६४६ रुपये थी। व्यय पिछले वर्षके ४२१६०४ रू० की अपेक्षा इस वर्षमें ४५६५३३ रुपये रहा। इस प्रकार खर्च करके १७५७६१ रु० रोकड़-बाकी हाथमें था।

व्ययमें इस साल ३५१३० रु० शिक्षाके ऊपर खर्च किया गया। अलमोड़ामें जलकी कमी थी। सन् १९५१ की गर्मियोंमें जलस्रोतोंसे प्रतिमिनट ४९·११ गैलन जल मिलता था, जब कि १९५२ की गर्मियोंमें वह घटकर २५·९५ गैलन प्रति मिनट रह गया। इस कमीको पूरा करनेके लिए पहाड़के नीचे कटारमलके पास कोसीसे मोटरों द्वारा जल मँगवाया गया था। यह आवश्यक था, कि कोसी नदीसे यन्त्रों द्वारा पानी ऊपर पहुँचानेकी योजनाको तुरन्त पूरा किया जाय, और यह योजना १९५३ में पूरी हो गयी।

अस्कोट—यह अष्टकोट (आठकिले)का अपभ्रंश है। यहाँके जमींदारकी उपाधि रजवार है। इनका वंश कत्यूरी शाखाओंमेंसे है। जोहार (मिलम) और दरमा (गरब्याङ्) दोनोंसे जानेवाला मानसरोवरका रास्ता यहींसे गुजरता है। दरमा, नेपाल तथा सीरा और शोर परगनेसे घिरा यह एक परगना भी है, जिसके ४०० वर्गमीलके क्षेत्रफलमें १४२ गाँव हैं। ऊपरी (मल्ला) अस्कोट निर्जन पहाड़ोंका इलाका है। भेड़-बकरियाँ यहाँ अधिक पाली जाती हैं। तल्ला-अस्कोट काली नदीकी उपत्यकामें बहुत उर्वर इलाका है।

उंटाधुरा (ऊँचाई १७६०० फुट, ३०°. ३५ × ८०°.११)—यह तिब्बत जानेका घाटा

(जोत) अलमोड़ासे १२० मीलपर (मिलमसे उत्तरपूर्व) १७६०० फुट ऊँचा है। जिस पर्वत-रीढ़पर यह जोत है, वह गढ़वाल (मल्ला-पैनखंडा-पट्टी)की सीमा है। इसके एक ओरका पानी अलकनन्दा होकर बनारसकी गंगामें जाता है और दूसरी ओरका काली या शारदा होकर अयोध्याकी सरयूमें।

कपकोट—यह गाँव अलमोड़ासे ४० मील तथा बागेश्वरसे १४ मीलपर पिंडारी-हिमानीके रास्तेमें है। यहाँ डाकबँगला और दुकानें हैं। कपकोटसे थोड़ी दूरपर खरबगाडमें तेजम और मुनस्यारीके रास्ते अलग होते हैं।

गंगोलीहाट—(ऊँचाई ५५८० फुट) अलमोड़ासे ३४ मील उत्तर-पूर्व, तथा पिठौरागढ़से १८ मीलपर यह गाँव अवस्थित है। यहाँ डाकबँगला और दुकानें हैं। स्थानीय लोग इसे हाट (नगरी) कहते हैं। रामगंगा (पूर्वी) उपत्यकाके दोनों ओरके पहाड़ यहाँ देवदारके घने जंगलोंसे ढँके हैं। डाकबँगलेके पास प्रसिद्ध काली-मन्दिर है, जिसके चारों ओर देवदारका सुन्दर उद्यान है। गाँवके दक्षिण-पश्चिममें कितने ही पुराने मन्दिरोंके ध्वंसावशेष हैं। गंगोली इलाका पहिले बाघोंके उपद्रवके लिए बहुत कुख्यात था। १८४०में बैटनने लिखा था—"नदियोंके पासवाले भूभागमें शायद ही कभी मनुजाद (बाघ) अनुपस्थित हों, किसी समय उनसे काफी संख्यामें मनुष्योंकी प्राण-हानि होती थी।"

गणाई—अलमोड़ा-पौड़ी तथा रानीखेत—बदरीनाथके रास्तेपर द्वाराहाटसे साढ़े ९ मीलपर रामगङ्गाके किनारे यह गाँव बसा है। यहाँ डाकघर, अस्पताल, डाकबँगला और बाजार है। यहाँसे उत्तरकी ओर जानेवाली उपत्यका गढ़वालकी ओर जाती है, जिससे लोहबा (१४ मील) वाला रास्ता आता है। द्वाराहाटके डाकबँगलेकी चढ़ाई चढ़ लेनेपर आगे रास्ता समतल-सा मिलता है। पौड़ी सड़कपर २ मील जानेपर कत्यूरियोंकी एक राजधानी लखनपुरके ध्वंसावशेष मिलते हैं। गणाईसे पूर्वकी ओर उपत्यकामें भातकोटकी ओर ३ मील जानेपर रमणीय तरंगताल है, जिसके चारों ओरके पहाड़ देवदारोंसे ढँके हैं।

गरब्याङ् (१०००० फुट, ३०°·८′ × ८०°·५′)—दारमा परगनेका यह प्रसिद्ध ग्राम मानसरोवरके एक रास्तेपर है, गाँवके भीतर घुसनेसे पहिले एक पत्थर मिलता है, जिसपर यहाँके तत्कालीन तिब्बती शासक अपराधियोंको कोड़े लगवाते थे। गरब्याङ्के अधिकांश मकान दोमहले हैं, जिनके पास मन्त्रांकित पटध्वज खड़े लहराते हैं। भोटान्तिक व्यापारियोंका यह एक समृद्ध गाँव है। यहाँके लोग मिलमवालोंकी भाँति ब्राह्मणोंके अनुयायी न हो अब भी अपने पैतृक बौद्ध धर्मपर आरूढ़ हैं। मानसरोवर-यात्रियोंकी यहाँके लोग बड़ी सहायता करते हैं।

चम्पावत (ऊँचाई ५५४६ फुट, २९°·२०′, ११″ × ८०°·७८४)—काली-कुमाऊँ परगनेमें अलमोड़ासे ५४ मील दक्षिण-पूर्व चन्द-राजाओंकी यह पुरानी राजधानी है। यहाँ डाकघर, स्कूल, तहसील, डाकबँगला, बाजार है। बाजारसे नीचे पुराना किला (कौटोलगढ़) अब भी कुछ अंशमें मौजूद है, किन्तु पुराने राजमहल ध्वस्तप्रायः हैं। बाजारसे नीचे पुराने कोटसे २०० फुटपर एक पहाड़ काटकर समतल बनाये स्थानपर तीन-चार पुराने मन्दिर हैं, जो वास्तुशिल्पकी दृष्टिसे बुरे नहीं हैं। कोटके पास घटकू-देवताका मन्दिर है, जहाँ प्रतिवर्ष मेला लगता है। यही उच्च भूमि स्कन्ध-पुराणका कूर्माचल है, जहाँ विष्णुने कूर्मका अवतार लिया था। यहाँका बालेश्वर मन्दिर तथा बावड़ी भी दर्शनीय है। रामकृष्ण मिशनका **मायावती** आश्रम इसी मनोरम प्रदेशमें है।

जागेश्वर—यह अलमोड़ा-पिठौरागढ़की सड़कपर अलमोड़ासे १६ मील उत्तरकी ओर है। कहावत है, "देवता देखण जागेश्वर, गंगा नाणी बागेश्वर"। यह कुमाऊँके उन तीर्थस्थानोंमें है, जिनको मूर्तिभंजकोंके हाथोंसे कम क्षति पहुँची। जागेश्वर कत्यूरी राजाओंके समयमें भी प्रसिद्ध था।

मन्दिरका पुनर्निर्माण समय-समयपर होता रहा। जागेश्वर, मृत्युञ्जय और दण्डेश्वर, तीनों यहाँके सबसे बड़े मन्दिर हैं। इनके अतिरिक्त माण्डेश्वर, गडारेश्वर, केदार, बैजनाथ, भैरवनाथ, चक्रवाकेश्वर, नीलकण्ठ, बालेश्वर, विमेश्वर, वागीश्वर, वाणीश्वर, मुक्तेश्वर, डुण्डेश्वर, कमलेश्वर, हाटकेश्वर, पाताल-भुवनेश्वर, भैरवेश्वर, लक्ष्मीश्वर, पञ्चकेदार, ब्रह्म-कपाल, क्षेत्रपाल (सैमदेव) आदि और भी छोटे-बड़े मन्दिर हैं। यहाँके लोग जागेश्वरके शिवको द्वादश[1] (बारह) ज्योतिर्लिङ्गोंमें नागेश्वर का पर्याय मानते हैं, किन्तु यह अपने स्थानकी भक्तिभर है।

मन्दिरों-मूर्तियोंकी अधिकतासे नहीं, 'गुण्ठो' (वृत्ति-बँधानों) में भी यह कुमाऊँका सबसे बड़ा मन्दिर है। दायकोंकी मूर्तियोंमें यहाँ राजा दीपचन्द (१७४८-७७ ई०) और राजा त्रिमलचन्द (१६२५-३८ ई०) की चन्दनकी मूर्तियाँ हैं, एक पौण्ड्र राजाकी चाँदीकी मूर्ति है। माधवसेनका[2] अभिलेख (११२३ ई०) और लक्षीचन्दके दानपत्र भी यहाँ मौजूद हैं।

तेजम्—अलमोड़ासे ९८ मीलपर जोहार परगने (भोटान्त)में यह गाँव रामगंगा (पूर्वी) के बायें तटपर अवस्थित है।

थल—पूर्वी रामगंगाके बायें तटपर अवस्थित यह गाँव अपने अप्रैलके बड़े व्यापारी मेलेके लिए प्रसिद्ध है, जिसमें बीसों हजार आदमी दूर-दूरसे आते हैं। यहाँ बालेश्वरका मन्दिर है। डाकघर, डाकबँगला और दूकानें हैं।

दूनागिरि—द्वाराहाटसे ४-५ मील उत्तर-पूर्व यह एक उच्च पर्वत है। यहाँ द्वाराहाटसे लाया १०२९ ई० का एक शिलालेख है। यहाँकी देवी बड़ी प्रतिष्ठित मानी जाती है। यहाँसे लोहबा, बदरीनाथ और श्रीनगरके रास्ते गये हैं।

द्वाराहाट (५०३१ फुट, २०°. ४६′ × ४५″ × ७९. २६′. ८″)—अलमोड़ासे २६ और रानीखेतसे १४ मीलपर अवस्थित यह एक ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक महत्त्वका स्थान है—लखनपुर और भातकोटवाले कत्यूरी राजाओंकी यह भी राजधानी रही थी। बदरीनाथसे जल्दी मोटर पकड़नेवाले यात्री इसी रास्ते रानीखेत आते हैं। गणाई यहाँसे साढ़े ९ मील है। यहाँ डाकघर, तारघर, अस्पताल, हाई स्कूल और डाकबँगला है। रुहेलों द्वारा ध्वस्त हो परित्यक्त प्रायः यहाँ कितने ही पाषाण-मन्दिर हैं, जिनके बारेमें हमने अन्यत्र लिखा है। इन मन्दिरोंकी संख्या तीसके करीब है, जिनमें बदरीनाथ और केदारनाथ अब भी पूजे जाते हैं। यहाँ दसवीं बारहवीं शतीकी कितनी ही मूर्तियाँ मिलती हैं। गूजरदेवका मन्दिर १२वीं शतीका है, इसका निम्न भाग ही अब बच रहा है, जिसपर बड़ी बारीकीसे पाषाण-मूर्त्तियाँ उत्कीर्ण हैं, यद्यपि कलाकी दृष्टिसे उनका अधिक महत्त्व नहीं है। केदारनाथके मन्दिरमें पीतल और एक पाषाणकी छोटी-छोटी दो जैन तीर्थंकर-मूर्तियाँ हैं।

कालिका देवीकी मूर्तिपर अनन्तपाल देव (११२२ ई०)का अभिलेख है। एक नौलेपर आशादत्त त्रिपाठीका २२१४का शिलालेख है।

पिठौरागढ़ (५४६४ फुट, २९°. ३५′ × ८०°. १५′)—अलमोड़ासे ५२ मील पूर्व ओर

१. द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग हैं—
"सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्। उज्जयिन्यां महाकालं ओंकारं परमेश्वरम्।
केदारं हिमवत्-पृष्ठे डाकिन्या भीमशंकरम्। वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी-तटे॥
वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकावने। सेतुबन्धे च रामेशं घुष्मेशं च शिवालये॥"

२. J. A. S. (Bengal) XLvii, 1/369

परगनेमें यह बड़ा गाँव अवस्थित है। यहाँसे १४ मील पूर्व काली नदीपर झूलाघाट है, जहाँसे काली नदी पार हो नेपालमें पहुँचा जा सकता है। तिब्बतसे सीधे तराई (तनकपुर स्टेशन) पहुँचनेका मार्ग पिठौरागढ़ होकर जाता है। किसी समय इसका सैनिक महत्त्व भी था, जिसके परिचायक लोहाघाट-छावनी, फोर्टलन्दन और विल्कीगढ़के दुर्ग अब भी उपेक्षित रूपमें मौजूद हैं। यहाँ अमेरिकन ईसाई प्रचारकोंका अड्डा है। उन्होंने यहाँ अपने स्कूल, अस्पताल और कुष्ठाश्रम खोले हैं। यहाँसे हिमालयका बड़ा सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। पाँच मील लम्बी, तीन मील चौड़ी शोर उपत्यका भी बड़ी हरी-भरी और देखनेमें सुन्दर मालूम होती है। इसके पूर्वमें ७००० फुट ऊँची दुर्गा-पर्वत-माला है, जो कि उत्तरमें ८१४९ फुट ऊँचे धज-शिखरसे सम्बद्ध है, दक्षिण-पूर्वमें थाकिल पर्वतमाला अपने तीन शिखरोंके साथ खड़ी है। उत्तर-उत्तरपूर्वके पर्वतोंपरसे होकर अलमोड़ावाली सड़क जाती है।

पिन्ननाथ (२९°.'५०.'४५"×७९°.३५')—अलमोड़ासे ३२, द्वाराहाटसे ७ और बैजनाथसे ४–५ मीलपर यहाँ पिनाकेश्वरका मन्दिर मातकोट-शिखर (९०८६) की एक बाहींपर कोसी उपत्यकाको देखते हुए बना है। राजा उद्योतचन्द (१६९१ ई०) तथा राजा बाज बहादुरचन्द (१६५४ ई०) के दिये यहाँ दान-पत्र हैं। यह मन्दिर गाँवसे पहाड़के ऊपर पहुँचनेके आधी दूरपर अवस्थित है। पहिले भैरवका मन्दिर आता है, जिसके पास ही उत्तरमें पिनाकेश्वरका मन्दिर है। पानीके अभावको दूर करनेके लिए वर्षा जल-संचयार्थ यहाँ पत्थरमें खोदे कई कुण्ड बने हैं।

मुन्सियारी—जोहार परगने (भोटान्त) का एक गाँव है, जिससे अलमोड़ा ७५ मील और मीलम ३० मील है। यह मरतोली, मीलम तथा दूसरे मल्ला-जोहारके गाँवोंके भोटान्तिक लोगोंके गरमियोंमें रहनेका स्थान है। उन्होंने यहाँ अपने अच्छे मकान बनवा रखे हैं। आसपास सुन्दर खेत हैं। यहाँका जलवायु नरम और स्वास्थ्य-प्रद है। मीलम होकर मानसरोवरका मार्ग यहाँसे जाता है।

बागेश्वर[1] (३१४३ फुट, २९.°५०'.१५"×७९°.४८'.५२")—पट्टी तल्ला-कत्यूर परगना दानपुरमें गोमती और सरयूके संगमपर यह ऐतिहासिक तथा व्यापारिक महत्त्वका स्थान है। यहाँ तक मोटर आती है। कत्यूरियोंके समयमें भी यहाँ मन्दिर थे, किन्तु अब उस समयकी कुछ खण्डित मूर्तियाँ ही रह गयी हैं। कत्यूरी राजा भूदेवका शिलालेख भी अब गायब है। वर्तमान मन्दिरको राजा लक्ष्मीचन्द-ने १४५० ई० में बनवाया था। खशोंकी कब्रें द्वाराहाट, बैजनाथकी भाँति यहाँ भी कभी-कभी निकल आती हैं। यहाँ अस्पताल, डाकघर, तारघर, डाकबँगला और बड़ा बाजार है। सालमें चार मेले (कार्त्तिकपूर्णिमा, गंगादशहरा, शिवरात्रि, उत्तरायणी) लगते हैं, जिनमें उत्तरायणी (१२ जनवरी) कुमाऊँका सबसे बड़ा व्यापारिक मेला है। मुख्य बाजार सरयूके दक्षिण-तटपर है, जिसे पार करनेके लिए गोमतीपर लोहेका झूला-पुल है। यहाँसे कई सड़कें भिन्न-भिन्न दिशाओंमें जाती हैं—दक्षिणमें एक सड़क बिनसर और अलमोड़ाको जाती है। उत्तर-पश्चिममें बैजनाथ तथा गढ़वालको मिलानेवाली सड़क है, जिसे गरुड़ (बैजनाथ) से यहाँतक मोटर लायक बना दिया गया है। उत्तरमें एक सड़क पिंडारी हिमानी और मीलम होते तिब्बतको जाती है, पूर्ववाली सड़क थल और अस्कोट होते दरमाके रास्ते तिब्बत पहुँचाती है।

बिनसर (७९१३ फुट)—अलमोड़ासे १३ मील उत्तर-पूर्व ठंडी जगह है; अलमोड़ासे यहाँका तापमान १० डिग्री नीचे रहता है। पहिले यहाँ राजा कल्याणचन्द (१७३०–४७) ने बीणेश्वर

१. बाघेश्वर—व्याघ्रेश्वर।

नामसे एक शिवका मन्दिर बनवाया, जिससे ही बिगड़कर बिनसर नाम पड़ा। अधिकांश मकान यहाँ पहाड़ी रीढ़से ३००, ४०० फुट नीचे बने हैं। पहिले यहाँ कई अँग्रेजोंने अपने बंगले बनवाये थे। वह यहाँ अँग्रेजी उपनिवेश बनानेकी धुनमें थे, किन्तु दूसरी जगह कमाकर यहाँ बैठकर खानेसे थोड़े ही उपनिवेश बस जाता है!

बैजनाथ (३५४५ फुट, २९°·५४'·२४" × ७९°·३७')—निचला कत्यूर पट्टी (परगना दानपुर) में गोमतीके तटपर अवस्थित यह स्थान सोमेश्वरसे साढ़े १२ मील, बागेश्वरसे १२ और जोलाबगार (नन्दप्रयाग सड़क) से साढ़े १२ मीलपर अवस्थित है। यहाँसे आगे बागेश्वर-तक मोटर जाती है! गोया कत्यूरियोंकी इस पुरानी राजधानीमें भी मोटर पहुँच गयी। कत्यूर-उपत्यका बहुत विस्तृत है। यहाँसे पहाड़ दूर-दूर तथा उत्तरकी ओरके हिमाच्छादित शिखर दिखाई देते हैं। दूसरी ओर दाहिने पिन्नाग और बायें कौसानीकी वृक्षाच्छादित पर्वतश्रेणियाँ हैं। यहाँ कृषिकी बहुत अनुकूलता है, यदि गोमती तथा उसकी शाखाओंका जल पूरी तरहसे उपयोगमें लाया जाय। खुला स्थान, भूमिकी उर्वरता, जलकी सुविधा, कुछ दूर पहाड़ों और संकरे रास्तोंकी स्वाभाविक दुर्गबद्धता नातिशीतोष्ण ऊँचाईको देखनेसे ही पता लगा जाता है, कि क्यों कत्यूरियोंने अपनी राजधानी बनाकर उसे एक समृद्ध कलापूर्ण नगरीमें परिणत कर दिया। आज भी गरुड़में सबसे समीपका और अनुकूल मोटर-अड्डा होनेसे बदरीनाथ-गढ़वालका माल नीचेसे यहाँ होकर जाता है। रुहेले तथा दूसरे मूर्तिभंजक यहाँ भी पहुँचे थे, उनकी ध्वंसलीलाकी गवाही आज भी यहाँके मन्दिर देते हैं। बैजनाथ तथा तेलीहाटमें मुख्य मन्दिर हैं, तेलीहाट कत्यूरी पीठस्थान था। पहाड़पर थोड़ा हटकर रनचूलाका पुराना दुर्ग है, जहाँकी काली बड़ी प्रतापी मानी जाती हैं। बैजनाथ मन्दिर-समूहके सामने परले तटपर डाकबँगला है। गरुड़ अब बड़ा बाजार है। यहाँ स्कूल, डाक-तार-घर भी हैं।

भिखियासैन (२९°४२' × ७९°१८')—बदरीनाथसे नीचे लौटनेके रास्तेमें रामगंगा (पश्चिमी) और गगासके संगमपर यह एक अच्छा खासा बाजार है। दोनों नदियोंके संगमपर नैलेश्वरका मन्दिर है।

मीलम (११४०० फुट, ३०'·२६' × ८०°·९')—भोटान्तके भोहार परगनेका यह प्रधान ग्राम गौरी और गुनका नदियोंके संगमपर बसा है। मकान पत्थरकी दीवारों और स्लेटकी छतोंके बहुत मजबूत बने हुए हैं। गाँव और नदीके बीच खेतोंकी उर्वर भूमि है। भोटान्तिक लोग अपने ग्रीष्म-निवासोंसे यहाँ जूनमें पहुँचते हैं और अक्तूबरमें बरफ पड़ते-पड़ते फिर नीचे चले जाते हैं। यहाँका जलवायु ठंढा और सूखा है, सदा बहती रहती हवा ठंढकको हाड़ चीरनेवाली बना देती है। आसपासके पहाड़ वृक्ष-वनस्पतिशून्य हैं, उपत्यकाके चारों ओर हिमाच्छादित उत्तुंग शिखर दिखाई पड़ते हैं। कितने ही सुन्दर जलप्रपात भी हैं। मीलमसे एक मील ऊपर मीलम-हिमानी गौरी (सरयूशाखा) का उद्गम है। तिब्बत जानेके लिए उंटाधुराका रास्ता बड़ी कठिन चढ़ाईका है, नीचे मुनसियारीका रास्ता उतना कड़ा नहीं है। जिसपर रैलकोट, बागउडियार और बुईके पड़ाव हैं।

रानीखेत (५९८३ फुट, २९°·२९'·५०" × ७९°·२६')—अलमोड़ाकी भाँति रानीखेत भी पहाड़की रीढ़ तथा उसकी अगल-बगलमें बसा है। पहाड़ सारा बंज और चीड़के वृक्षोंसे ढँका बहुत सुन्दर मालूम होता है। यह पहाड़ रीढ़के ऊपर चौरस तथा नीचेकी ओर धीरे-धीरे ढालुआँ है, जो मानो नगर बसानेके लिए ही बना था। नगरके बस जानेपर भी वनवृक्षोंको सुरक्षित रखनेकी

कोशिश की गयी है। ६००० फुटकी ऊँचाई तथा ५०-५२ इंच वार्षिक वर्षा यहाँके जलवायुको बहुत स्वास्थ्यकर और आनन्दप्रद बना देती है। तापमान भी २६ और ८७ डिग्रीतक रहता है। जुलाईसे सितम्बरतक वर्षाका समय है, अक्तूबर-नवम्बर तथा आधे दिसम्बरतक वर्षा नहीं होती, हिमपात कभी-कभी होता है।

कुमाऊँ-विजयके लिए १८१५ ई० में अँग्रेजी सेना जब अलमोड़ाकी ओर बढ़ी, उस समय कम्पुर (वर्तमान अल्मा बैरक pinnacal point)में एक गोरखा सैनिक टुकड़ी पड़ी हुई थी। २८ फरवरी १८१५ ई० को अँग्रेजी सेनाने गोरखा-मोर्चाबन्दीके सामने अपना मोर्चा जमाया, किन्तु २३ मार्चतक आगे बढ़नेकी उसे हिम्मत नहीं हुई, जबतक कि और कुमक नहीं आ गयी, १८१५में कुमाऊँपर अँग्रेजोंका अधिकार जम जानेपर भी आधी शताब्दीतक रानीखेतके भविष्यका फैसला नहीं हुआ। १८६८ में भारतमें अँग्रेजी सेनाके प्रधान सेनापतिने मेजर लैंगको अँग्रेज सेनाके रहनेके लिए इधर ठंढे पहाड़ोंपर छावनीका स्थान ढूँढनेके लिए भेजा। रानीखेत पसन्द आया और तुरन्त भूमि अर्जित करनेका विचार कार्यरूपमें परिणत किया जाने लगा। सरना, कोटली और तानाके ग्रामीणोंको १३०२४ रुपया क्षतिपूर्तिके तौरपर देकर उनसे भूमि ले ली गयी। १८३०-५६ के बीचमें कई अँग्रेज परिवार जो अलमोड़ामें जहाँ-तहाँ बस गये थे, उन्हींमें ट्रूप-परिवार भी था, जिसके कई व्यक्ति सेनामें अफसर रह चुके थे और जिन्होंने चौबतियाके लोगोंसे भूमि खरीदकर अपना चायबगान (ऑकलैण्ड और होल्म इस्टेट) तैयार कर लिया था। ट्रूपकी जायदादको भी ले लिया गया—होल्म-इस्टेटको कप्तान ट्रूपके मरने (१८९३) तक उन्हींके हाथमें छोड़ रखा गया।

१ अप्रैल १८६९को शाखा-खजाना भी यहाँ खुल गया। १८७०में अँग्रेज सैनिकोंके रहनेके लिए लकड़ीके बल्लोंके कुटीरोंको खड़ाकर सैनिकोंको भेज दिया गया, जिन्होंने सड़कों और गृहपंक्तियोंके लिए भूमिको ठीक-ठाक करना शुरू किया। कुछ दिन गवर्नर-जनरल लार्ड मेयो (१८६८-७२) भी रानीखेतमें रहे और वे इससे इतने प्रभावित हुए कि रामनगरसे रानीखेततक रेल-लाइन बनानेके लिए नापी भी करवायी—रेल तो अभी भी नहीं बन पायी, किन्तु आज रानीखेत-रामनगरके बीच नियमपूर्वक मोटरें दौड़ती हैं। अभी शिमालाका भाग्य दुविधामें था, इसलिए उस समय इसे भारतमें ब्रिटिश सेनाका मुख्य स्थान बनानेकी बात भी सोची जा रही थी।

लन्दन मिशन सोसाइटीने मई १८६९ में पादरी जेम्स कनेडीको रानीखेत भेजा। रानीखेतके बारेमें उक्त पादरीने लिखा है[1]—"(यह नाम) सम्भवतः कालीके सम्मानमें पड़ा था, जिसका छोटा-सा मन्दिर कुछ ऊपरी भागमें है, जहाँ पहाड़ी लोग प्रतिवर्ष मेला लगाते हैं···जब हम (पत्नी सहित) रानीखेत पहुँचे, तो वहाँ एक भी घर नहीं था···१८६९ के अन्तमें अँग्रेज सैनिकोंकी दो कम्पनियाँ वहाँ आयीं।" ४ मार्च १८७२ को पादरी रिचार्डको कलकत्ताके लाटपादरीने यहाँका पुरोहित (चैपलिन) नियुक्त किया। १८७३ में बड़े स्कूली कमरोंके रूपमें सेंट पीटर गिरजेका आरम्भ हुआ। १८८२ में चौबतियाके गिरजे सेंट माइकैलका उद्घाटन हुआ। दुलीखेतवाले बड़े गिरजे सेंट मार्टिनकी प्रतिष्ठा ९ जून १९०१ को हुई।

छावनी—रानीखेतको मुख्यतः सैनिक छावनीके लिए आबाद किया गया था। पहिले १८७६ में अल्मा-बैरकमें **डबल-डेकर** बनी। रानीखेतके तीन भाग हैं—अल्मा-बैरक, चौबतिया और दुली-खेत। लखनऊ सैनिक जिलेके गोरे सिपाही (प्रायः २०००) प्रतिवर्ष मार्चके अन्तमें यहाँ पहुँचते थे और नवम्बरमें वह अपनी बैरकको खाली कर फिर लखनऊ लौट जाते थे। अफसरोंके बँगले पहाड़के ऊपरी

१. 'Life and work in Benaras and Kumaon', PP. 139-77.

भागोंमें बनाये गये थे और सिपाही अल्मा-बैरकमें रहते थे, जो कि छावनीके पश्चिमी भागमें है। बैरकके नीचे पलटन बाजार है। पूर्वकी ओर अलमोड़ा-सड़कपर **दुलीखेत** बैरक है, जिसके पश्चिममें सदर-बाजार है। अलमोड़ा सड़कपर अवस्थित सदरबाजारके भागमें गोरोंका 'अन्तःप्रवेश' विहित था। यहाँ फल, तरकारी, खाद्य तथा दूसरी तरहकी चीजोंकी अच्छी दूकानें थीं और हैं। सदरबाजारसे थोड़ा नीचे उसीके समानान्तर जरूरी बाजार है। इन दोनों बाजारोंसे लगे ट्रूपगंज और खड़ी-बाजार है। अल्मा-बैरकसे तीन मीलपर दक्षिणमें चौबतिया बैरक है। स्वतन्त्रताके बाद गोरे सैनिकोंके चले जानेपर इन बैरकों और बँगलोंमें भारतीय सैनिक और अफसर अब भी रहते हैं। यह बहुत मँहगा सौदा है, जिसे विदेशी अँग्रेज शासक ही पसन्द कर सकते थे और सर्द मुल्कके होनेसे उनको ऐसे सर्द-स्थानोंकी आवश्यकता भी थी। किन्तु भारतीय सैनिकोंको अँग्रेजोंकी भाँति ही बहुत खर्चीले ढंगसे पहाड़ोंमें रखकर सुकुमार बनाना क्या उनकी सैनिक कार्यक्षमताके लिए सहायक हो सकता है? वैसे ऐसी पहाड़ी छावनियोंको यदि सैनिक सेनीटोरियम बना दिया जाय, तो किसीको आपत्ति नहीं होगी; किन्तु हमारे नेता तो अँग्रेजोंकी सभी बातोंको आँख मूँदकर कायम रखनेके लिए तैयार हैं, फिर उनसे और क्या आशा रखी जा सकती है?

रानीखेतकी जनसंख्या निम्नलिखित प्रकार रही—

१९०१	१९११	१९२१	१९३१	१९४१
३२४६	५७८१	३६३२	४७४४	४४३४

यह जाड़ोंकी जनगणनाएँ हैं। १९४१ की गरमियोंमें ८८०१ आदमी यहाँ रहते थे, जिनमें २५७० स्त्रियाँ थीं।

रानीखेतसे हिमालय-शिखर पश्चिमसे पूर्वकी ओर निम्नलिखित क्रमसे दिखाई पड़ते हैं—

	दूरी (मील)	ऊँचाई (फुट)
बन्दरपूँछ		२०७३१
जौली		२१७८४
बरताखंता (१)		२१५९४
,, (२)		२२८४४
खरचकुण्डा		२१७८५
बदरीनाथ		२२३९५
कियमठुंग		२१२६६
नीलकण्ठा		२१७१३
कामेत	१०५	२५४४३ (१९३१ में विजित)
माना		२३८६२
गौरीपर्वत	९२	२१७४७
हाथीपर्वत	९१	२२१४१
नन्दाघुंटी	७०	२१२८६
त्रिशूल	६६	२३४०६ (१९०८ में विजित)
त्रिशूल पूर्व	६६	२१८५८
नन्दादेवी	७५	२५६६० (विजित)
नन्दाकोट	७२	२२५३० (विजित)

पंचचूलि	२२६६१
तिलकोट	२१११४
नमपा	२३५२२

हिमालयके सर्वोच्च आठ शिखर निम्नलिखित हैं—

एवरेस्ट	२९००२	टी. ४५	२६८६७
के. २	२८२५०	धौलागिरि	२६७९५
खड्-छेन जुंगा	२८१५६	XXX	२६६५८
मकालू	२७७९०	नंगापर्वत	२६६२०
(नंदादेवी	२५६६०)		

लोहाघाट (५५१० फुट, २९°. ४२.′ २″ × ८०°. ७.′ ५३″)—अलमोड़ासे ५३ मील पूर्व नेपाल-सीमासे १५ मील तथा चम्पावतसे ६ मील उत्तर यह पुराना गाँव है, जो पहिले सैनिक छावनी रह चुका है। इसके पास **लोहावती** नदी है। हरी घासोंकी चढ़ाव-उतारदार भूमि तथा जहाँ-तहाँ खड़े देवदार इस स्थानको बहुत सुन्दर बनाते हैं, नेपालसे भय न रह जानेपर यहाँकी छावनी तोड़ दी गयी।

सोमेश्वर (४७५२ फुट, २९°. ४६′. ४०″ × ७९°. ३८.′ ५५″)—अलमोड़ासे बागेश्वर जानेवाली मोटर-सड़कपर यह एक अच्छा बाजार है। डाकबंगला और हाईस्कूल भी हैं। यहाँसे एक रास्ता द्वाराहाट (माझखाली) को, दूसरा बागेश्वर, तीसरा गणनाथ और तकुला होते अलमोड़ा गया है। यहाँका मन्दिर काफी प्रतिष्ठित है और टूटी-फूटी पुरानी मूर्तियोंसे पता लगता है कि बारामंडल-की यह वल्ला-बोरारु पट्टी पुरातनकालमें भी समृद्ध थी।

अध्याय ६

नैनीताल

प्राकृतिक रूप

नैनीताल कुमाऊँका ही एक भाग है। कुमाऊँके बारेमें बहुत-सी बातें जो लिखी गयी हैं, वह नैनीतालपर भी लागू होती हैं। लेकिन, इसकी कुछ अपनी भी विशेषताएँ हैं, जिन्हें इस अध्यायमें दिया जाता है।

१८९१ ई० तक कुमाऊँ एक जिला था और उसका शासनकेन्द्र अलमोड़ामें था। भाबर भी उस समय कुमाऊँका ही एक भाग था। भाबर तहसीलका शासक एक 'सीनियर असिस्टेंट-कमिश्नर' था, जो कि कुमाऊँके कमिश्नरके अधीन था। उस समय तराई और काशीपुर तराईके नामसे एक अलग ही जिला था, जिसका हाकिम तराईका सुपरिंटेण्डेण्ट कहा जाता था। जिलेके बहुत बड़ा होनेके ख्यालसे कुमाऊँके दो जिले बना दिये गये। तबतक ग्रीष्म नगरी बन जानेके कारण नैनीतालका भी विशेष महत्त्व हो गया था। इसलिए नैनीतालको भी एक जिला-अफसरकी जरूरत थी। इस प्रकार १५ अक्तूबर १८९१ ई० को नैनीताल जिला अस्तित्वमें आया। कुमाऊँके एक भागको अब अलमोड़ा जिला कहा जाने लगा और बाकी भागका डिप्टी कमिश्नरीके अधीन नया जिला बनाया गया। नैनीतालमें छ परगने—छखाता, कोटा, धनियाकोट, रामगढ़, कुटौली, महरूरी और ध्यानीराव शामिल किये गये। पहले सारा भाबर और तराईको नैनीतालमें मिला दिया गया, लेकिन बादमें भारी जंगलके रास्ते पहुँचनेमें दिक्कत देख तल्लादेश (टनकपुर)इलाकेको नैनीतालकी अपेक्षा अलमोड़ाको सुगम देख शारदाके पासवाले इस इलाकेको १८९६ ई० में फिर अलमोड़ामें मिला दिया गया। दोनों जिलोंकी सीमा दक्षिणमें जगबुराको माना गया, जिसके कारण तराईके बिलहरी परगनेमें कुछ भागको भी अलमोड़ामें मिलाना पड़ा। इस परिवर्तनके कारण नैनीतालको उस समय ४३१३ एकड़ जमीन, ५३६७ आदमी और ३५४ रुपये मालगुजारीका घाटा उठाना पड़ा।

१. सीमा और क्षेत्रफल—नैनीताल जिलेकी सीमा उत्तरमें अलमोड़ा जिला, दक्षिणमें पीलीभीत, बरेली, रामपुर और मुरादाबादके जिले, पूर्वमें अलमोड़ा जिला और नेपाल राज्य एवं पश्चिममें गढ़वाल और बिजनौरके जिले हैं। यह उत्तरी अक्षांश २८° ५१′ तथा २९° ३७′ एवं पूर्वी देशान्तर ७८°, ४३′ और ८०°, ५′ के बीचमें है। इसका क्षेत्रफल १७०१०९३ एकड़ अथवा २६५८ वर्गमील है। स्वाभाविक तौरसे इसके पहाड़ी तथा नीचे भाबर, तराई और मैदानके कुल चार भाग हैं, जिनका क्षेत्रफल आदि निम्नलिखित प्रकार है—

भूखंड	क्षेत्रफल (वर्गमील)	जनसंख्या (१९२१)	प्रति वर्गमील घनता
पहाड़ी	४३३	६००११	१३९
भाबर	१२७९	७८५८०	६१
तराई	८२०	९१५५३	११२
मैदान	१८९	४६७३१	२४७
योग	२७२१	२७६८७५	१०२
	=१७०१९३ एकड़		

नैनीताल जिलेमें कुल मिलकर १५२० ग्राम और नगर हैं। नगर नैनीताल, भवाली, हल्द-वानी, रामनगर और काशीपुर हैं।

२. प्राकृतिक विभाग—नैनीतालके चारों विभागोंमें पहाड़ी इलाका सबसे उत्तरमें है। उसके नीचे भाबर, उससे दक्षिण तराई और जिलेके-दक्षिणी-पश्चिमी कोणमें "देश"का है।

(१) पहाड़ी—पहाड़ी इलाकेकी स्थिति बिलकुल वैसी ही है, जैसी अलमोड़ा जिलेकी। साधारण तौरसे पहाड़ साढ़े छ हजार फुटतक ऊँचे मिलते हैं, जिनकी चोटियाँ सौंचलियाके रूपमें ८५०४ फुटतककी हैं। बहुत पुराने कालसे पहाड़ और उसके नीचेके भाबरका एक-दूसरेसे अभिन्न सम्बन्ध रहा है, क्योंकि पहाड़के लोगोंके आर्थिक जीवनके लिए इस सम्बन्धकी बड़ी आवश्यकता थी। अधिक ऊँचे स्थानोंके लोग जाड़ोंके कष्टसे अपने और अपने पशुओंको बचानेके लिए घमतप्पी करने भाबरमें चले आते थे, इस प्रकारसे हर एक पहाड़ी गाँवके भाबरमें भी अपने निवासस्थान निश्चित थे।

(२) भाबर—भाबर पहाड़के सानु (शिखर)से पूर्व और पश्चिममें फैला एक सँकरा-सा भूभाग है, जो तराईकी तरह ही जंगलोंसे ढँका हुआ है, लेकिन यहाँ पानीका बिलकुल अभाव है। नदियाँ भी, जो पहाड़से नीचे गिरती हैं, भाबरमें पहुँचकर अन्तर्धान हो जाती हैं। अक्षांशमें २८°. ५६′ ४६″ और २९°. ३५′ २२″ तथा देशान्तरमें ७८°. ५७′ ४०″ और ८०°. १′ ८″ तक फैली इस भूमिकी धरातलसे नीचेकी बनावट ऐसी है कि वह नदियोंके पानीको सोख लेती है। मिट्टीमें इतनी नमी जरूर है, जिसके कारण यहाँ इतना जंगल दिखाई पड़ता है। पूर्व तरफ ध्यानीराव भाबर अपेक्षाकृत अधिक सँकरा है। उससे पश्चिम छखाता भाबरमें हम उसकी चौड़ाई आठसे १२ मीलकी पाते हैं। भाबरमें चौमैंसी, छखाता, कोटा और चिलकिया नामकी चार पट्टियाँ हैं। यह बतला चुके हैं कि तल्लादेश (टनकपुर) भाबर १८९६ ई०में नैनीतालसे निकाल कर अलमोड़ामें मिला दिया गया। आजकल नैनीतालके भाबरकी पूर्वी सीमा कमीन नदी है। सारे भाबरमें कहीं भी एक चश्मा नहीं दिखाई पड़ता, न एकाध बड़ी नदियोंको छोड़ पानीकी धारा ही दिखाई देती है। इस भूमिके ऊपरी भागमें ही थोड़ी-सी मिट्टी है, नहीं तो नीचे युगोंके प्रस्तरखण्ड पड़े हुए हैं, जिनके भीतर सारा पानी समा जाता है। भाबरको आबाद करनेके लिए पानीकी आवश्यकता थी और अँग्रेजी राज्यसे पहले भी पहाड़में नदियोंपर बाँध बाँधकर नहर निकालनेकी कोशिश की गयी थी। अँग्रेजी शासनने इस ओर विशेष ध्यान दिया और भाबरकी भूकर-व्यवस्था भी नयी तरहकी थी, जिसके अनुसार वहाँकी जमींदार सरकार स्वयं हो गयी। एक तहसीलदार (हल्दवानी), पेशकार (रामनगर) तथा नायब-पेशकार (कालाढुंगी) सरकारी जमींदारीका प्रबन्ध करते हैं।

(३) तराई—भाबरसे दक्षिण रुहेलखण्डके जिलोंतक चली गयी तराईकी समतल जमीन अक्षांशमें २८° ४३′ और २९° २६′ तथा देशान्तरमें ७८° ५३′ और ८०′ के भीतर अवस्थित काशीपुर परगनेसे शारदाके पास अलमोड़ाके टनकपुर इलाकेतक फैली है। इस भूभागकी चौड़ाई उत्तरसे दक्षिण ग्यारह मीलके आसपास है। तराई देखनेमें अपने दक्षिणके मैदान जैसी समतल मालूम होती है—एक मीलमें इसकी जमीन बारह फुटके करीब ही नीची होती है। तराई जंगलों और दलदलोंकी भूमि है, जिनके कारण यह मलेरियाका घर है। मलेरियाने ही इसके जंगलोंको अबतक कटने नहीं दिया था, लेकिन देशकी बढ़ती हुई जनसंख्याके कारण इतनी जमीनको बेकार छोड़ा नहीं जा सकता, इसलिए अब मनुष्यने ट्रैक्टर और डी० डी० टी० की सहायतासे तराईको आबाद करनेका संकल्प कर लिया है। हजारों एकड़ जमीन आबाद हो चुकी है। पहले जहाँ कहीं

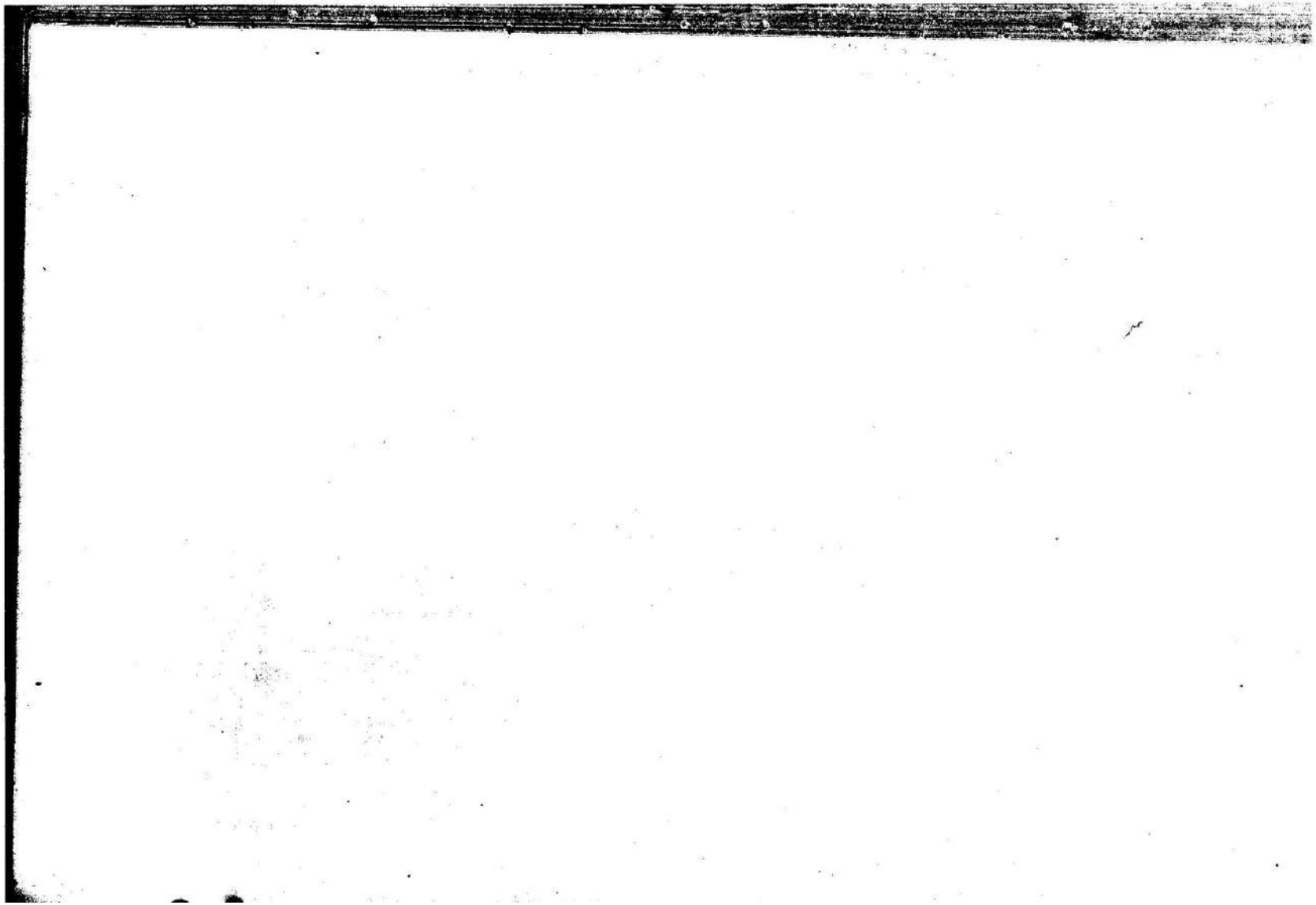

कहीं ही जोती जमीन दिखलाई पड़ती थी, अब वहाँ दूरतक फैले खेत हो गये हैं। भाबर जिस पानीको अपने उत्तरी छोरपर सोख लेता है, उसीको तराईकी उत्तरी सीमापर छोड़ देता है, जिसके कारण तराईमें छोटी-छोटी नदियों और जलाशयोंकी संख्या बहुत है। जमीन अधिक ढालुवा न होनेके कारण यहाँकी नदियाँ पथ खोजनेमें भूल जाती हैं, और वह बहुत टेढ़ी-मेढ़ी चालसे चलती हैं।

(४) **काशीपुर**—१८९ वर्गमीलका छोटा-सा असल मैदानी भाग नैनीताल जिलेमें है। इसका प्राकृतिक स्वरूप वही है, जो कि मुरादाबाद जिलेका, और पहलेसे कुमाऊँके हाथमें होनेके कारण ही वस्तुतः यह मुरादाबाद जिलेमें जानेसे बचा।

३. पर्वत-श्रेणियाँ—नैनीतालके पहाड़ी भागकी कुछ पर्वतश्रेणियाँ और शिखर निम्न-लिखित प्रकार हैं—

(१) **गागर**—गागर (गर्गाचल) जिलेकी मुख्य पर्वत-श्रेणी है। यह कोसी नदीके पश्चिममें रामनगरसे ऊपर मोहनसे आरम्भ पूर्वकी ओर फैली हुई है। इसकी चौड़ाई आठसे दस मीलतक पायी जाती है। पूर्वी भागमें कोस्यान-तल्ला पट्टीकी पूर्वी सीमापर जिलेका एक ऊँचा शिखर सौंचलिया (८५०४ फुट) है और उसके पूर्वमें बधानधुरा (८४०८ फुट), और पूर्वमें भूरा-पाताल चोटी (८२४४ फुट) और उसके पूर्वमें बधानटोला (८६१२ फुट) है—बधानटोला जिलेका सर्वोच्च शिखर है। यह मुख्य श्रेणी आगे दक्षिण-पश्चिमकी ओर थोड़ा घूमकर एकदम दक्षिणकी ओर मुड़ जाती है, जहाँपर ८१८६ फुट ऊँचा विनायक-धुरा है। इसी पर्वत-श्रेणीमें पश्चिममें नैनीतालके ऊपर ८५६८ फुट ऊँचा चीना शिखर है।

(२) **लोहुकोट श्रेणी**—गागर श्रेणीसे दक्षिणमें यह पर्वत-श्रेणी है, जो कि रामगढ़से पूर्वमें गागर श्रेणीसे अपना प्रसार आरम्भ करती है। मुक्तेश्वर (मुक्तेसर)में इस श्रेणीकी ऊँचाई ७६०२ फुट-तक पहुँचती है। पश्चिमकी ओर नथुवाखानसे खैरनाकी ओर बढ़ते इसका उच्चतम स्थान पाथर-गढ़ी (७५३५ फुट) है। मुक्तेश्वरसे प्यौड़ाकी ओर उत्तराभिमुख इसीकी एक बाँही फैली हुई है, जहाँ लालदाना-विनायक है। मुक्तेश्वरसे दक्षिणकी ओर फैली हुई इसकी एक बड़ी शाखा गोला और लधिया नदियोंकी जलविभाजक है। बिसज्युला, चौभैंसी और चौगढ़ ही नहीं, बल्कि कई मीलतक अलमोड़ा जिलेकी सीमा भी यही श्रेणी है। इसकी ऊँचाई कहींपर भी साढ़े सात हजार फुटसे अधिक नहीं है। चौगढ़के पूर्वमें इसका एक शिखर ६१२८ फुट है, जिसके बाद यह अलमोड़ा जिलेके काली-कुमाऊँ परगनेमें चली जाती है।

(३) **देवगुरु श्रेणी**—काठगोदामसे पूर्वकी ओर एक पर्वत-श्रेणी जाकर देवगुरु शिखरपर पहुँचकर समाप्त होती है। पहाड़ी पट्टियोंकी दक्षिणी सीमा यही श्रेणी है। चोरगलियासे ऊपर पूर्वकी ओर गागर श्रेणीसे समानान्तर इसकी एक शाखाश्रेणी जाती है। इन्हीं दोनोंके बीच नंधौर नदीकी दून (द्रोणी) है।

(४) **सिवालिक**—हिमालयकी मुख्य पर्वत-श्रेणियोंके नीचे सिवालिक एक लम्बी शृंखला है, जो बंगालसे बिहार, उत्तरप्रदेश, पंजाब और पश्चिमतक चली गयी है। नेपालमें इसी श्रेणीको चुरिया या चुरे कहते हैं। सिवालिक (निम्न-हिमालय) कहीं-कहीं हिमालयसे अलग साफ-साफ दिखाई पड़ता है, जैसे देहरादून जिलेमें, और कहीं-कहींपर वह हिमालयसे बिलकुल सट जाता है। नैनीताल जिलेमें कोटा-भाबरमें यह कुछ अलग दिखाई पड़ता है, लेकिन उसके पूर्वमें हिमालयसे इतना मिल गया है कि भूतत्ववेत्ता ही उसका पता लगा सकता है। कोटा-भाबरमें ये छोटी-छोटी पहाड़ियाँ

समतल भूमिमेंसे एकाएक सिर निकालकर झाँकती दिखाई पड़ती है। इनकी ऊँचाई कुछ सौ फुटसे अधिक नहीं होती। जिस तरह पश्चिममें सिवालिकने घेरकर देहरादूनकी दूनको बनाया है, उसी तरह नैनीतालमें कोटाकी छोटी-सी दून भी उसीने बनायी है। दूनकी भूमि बहुत-कुछ समतल-सी है, यद्यपि वह समतलता सीढ़ीकी तरह कई ऊँचाइयोंमें विभक्त है। इसका बहुत सा भाग अब भी वनाच्छादित है, लेकिन कोटा और देहचौरीके नीचेकी आबाद उर्वर जमीन बतलाती है कि यह खेतीके लिए बहुत उपयुक्त है।

४. जलाशय—(१) **नदियाँ**—जिलेकी सभी नदियाँ रामगंगाकी शाखाएँ हैं, जो स्वयं हरदोई जिलेमें गंगामें गिरती है। कोसी, गोला, नंधौर, दबका जिलेकी मुख्य नदियाँ हैं, जिनमें कोसी पहाड़की लकड़ीको बहाकर नीचे ले जानेका भी काम देती है।

(क) **पहाड़ी नदियाँ**—रामगंगा वस्तुतः इस जिलेको स्पर्श भी नहीं करती। जिलेकी पहाड़ी नदियोंमेंसे कोई हिमालयसे नहीं निकलती है।

(I) **कोसी**—यह नदी—जिसे पश्चिमी कोसी भी कहते हैं—अलमोड़ा जिलेके बोरारु-पल्लापट्टीमें कौसानीके पाससे निकलती है। फिर सोमेश्वर होते अलमोड़ाके नीचेसे बहती नानाकोसी और सुवालको अपनेमें मिला कितनी ही दूरतक अलमोड़ा और नैनीताल जिलोंकी खैरनाके पासतक सीमा बनती पश्चिमकी ओर बहती हुई उलाबघाड़ और कूचागाड़ नदियोंको लेती धनियाकोट परगनेके उत्तरी भागमें बहती रतीघाट पहुँचती है, जहाँ धौरा इसमें आ मिलती है—धौरा चीना शिखरकी पश्चिमी ढलानसे निकलती है। रतीघाटसे आगे वह फिर कुछ दूरतक कुमाऊँके दोनों जिलोंकी सीमा बनती, मोहनतक उत्तर-पश्चिमकी ओर बढ़ती है, जहाँसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर मुड़ फिर दक्षिण होती १२४० फुटकी ऊँचाईपर बसे रामनगरमें पहाड़को छोड़ती है और आगे सत्तर मीलकी यात्रा करके रामगंगामें जाकर मिलती है। बिहारकी महाकोसीकी तरह ही यह कोसी भी बड़ी ही भयंकर नदी है, और अपनी बाढ़ोंसे आस-पासकी भूमिको बहुत नुकसान पहुँचाती है। रोक-थामके लिए बड़े-बड़े बाँध बनाये गये हैं, लेकिन वह स्थायी तौरसे रक्षा नहीं कर सकते। १८८० ई०की इसकी बड़ी बाढ़से बहुतसे समृद्ध खेतीवाले पहाड़ी गाँव बरबाद हो गये।

(II) **लधिया**—यह मुख्यतः काली-कुमाऊँ (अलमोड़ा) की नदी है और केवल छ मील ही नैनीताल जिलेमें बहती है। सिंचाईके लिए यह बड़ी उपयोगी नदी है। इसीके कारण मल्लीराव पट्टीके सेरा (सींचे हुए खेत) इतने उपजाऊ हैं।

(III) **गोला**—अलमोड़ाके दोलफाटके दोलगाँवके दक्षिणमें तथा चौमैंसी पट्टीके उत्तरी छोरपर इसका उद्गम है। खानस्यूनतक यह प्रायः दक्षिणकी ओर बहती है, जहाँसे पश्चिमाभिमुख हो मालवा तालसे निकलनेवाली धाराको ले फिर दक्षिण, उत्तर-पश्चिमका चक्कर काटती है। भीमताल-की धारा बाराखेरी भी इसके दक्षिण किनारेमें आकर मिलती है। रानीबागमें सातताल और नैनीताल-का पानी बलियाके रूपमें इसमें आकर मिलता है। काठगोदाममें यह पहाड़को छोड़ हल्दवानी होते तराईमें जा किच्छा नदीका नाम लेती अन्तमें रामगंगामें जाकर मिल जाती है। गोला ही भाबरमें दो भागोंमें बँट जाती है, जिसकी एक शाखा धौराके नामसे भाबर और तराई होते फिर अपनी मूल धारामें मिल जाती है। गोला सिंचाईके बड़े कामकी नदी है, और छखाता-भाबरमें इसके पानीसे खेतोंको बहुत फायदा होता है। बाढ़के वक्त यह भी भयंकर रूप धारण करती तथा पुरानी धाराको छोड़ नया रास्ता लेती है।

(IV) **नंधौर**—यह चौगढ़ पट्टीमें पहाड़ोंकी दक्षिणी ढलानसे निकलती है। दक्षिण-पश्चिमकी ओर कुछ दूर चलकर, फिर पश्चिम और बादमें दक्षिण होकर पहाड़ छोड़ चोरगलियाके ऊपर भाबरमें दाखिल होती है। फिर तराई होते पीलीभीत जिलेको पारकर शाहजहाँपुरमें रामगंगासे मिलती है। पहाड़में इसे नंधौरके नामसे पुकारा जाता है, लेकिन चोरगलियाके नीचे देवहा और दक्षिणमें लोग गर्राके नामसे इसे पुकारते हैं। चोरगलियामें इससे निकाली नहरें आस-पासके गाँवोंके खेतोंको सींचती हैं।

(V) **दबका**—यह भी गागर श्रेणीके सौंचलिया और बधानधुरा शिखरोंके बीचसे निकलती है। अपने ऊपरी भागमें यह मल्ला और तल्ला-कोटाकी सीमाका काम देती है। कोटा गाँवके जरा ही ऊपर यह पहाड़को छोड़ती है, फिर दक्षिण-पश्चिमकी ओर बहती बरुवाडाम गाँव हो कोटादूनमें पहुँचती है। इसके दाहिने किनारेपर किचेरी नामकी एक छोटी नदी आकर मिलती है और फिर कुछ मील जाकर इसका नाम गतिया, फिर घूगा हो जाता है। चिलकिया इलाकेमें होते बाजपुरके उत्तर पहुँच फिर यह निहाल नाम धारण करती है। नैनीतालसे कालाढुंगी हो मुरादाबादवाली पक्की सड़क इसके ऊपरसे गुजरती है और मुरादाबाद जिलेमें ही यह जाकर रामगंगामें मिल जाती है।

(ख) भाबरकी नदियाँ—पहाड़ी नदियाँ सभी भाबरसे होकर गुजरती हैं, इसीलिए उन्हें भी भाबरकी नदी कहा जा सकता है। भाबरमें नदियाँ दो शाखाओंमें भी फटती देखी जाती हैं, जैसा कि गोलाके बारेमें हम कह चुके हैं। पहाड़ छोड़नेके बाद अपनी धाराओंकी तरह ही यह अनेक नाम भी धारण करती हैं, जिसके कारण नदियोंका पहचानना मुश्किल हो जाता है। गोलाकी तरह ही नंधौर भी अपनी बीस मीलकी यात्रामें तीन-चार नाम धारण करती है। भाबरमें इसकी दो बँटी हुई धारोंका नाम देवहा और कैलास पड़ता है। भाबरकी अपनी विशेष नदियाँ निम्नलिखित हैं—

भकरा छखाताकी दक्षिणी ढलानसे निकलकर पीपलपड़ावके पाससे गुजरती तराईमें चली जाती है। **बावर** भी भाबरकी नदी है। **दबका, ढेला, फीका** आदि और भी छोटी-छोटी नदियाँ भाबरमें बहती हैं।

(ग) तराईकी नदियाँ—तराई अपनी भूमिमें नदियोंकी संख्याको और बढ़ाती है। जो सभी अन्तमें किसी न किसी तरह रामगंगामें जाकर मिलती हैं। पूर्वसे पश्चिमकी ओर तराईमें निम्न-लिखित नदियाँ मिलती हैं—सनिहा, चौका, खकरा, लोहिया, जगबुरा और कागिन (बिलहरी परगनेमें), नानकमतामें देवहा और कैलास, किलपुरीमें बहगुल, रुद्रपुरमें धौरा, किच्चा, बरोर और पश्चिमी-बहगुल, गदरपुर परगनेमें डिमरी, भकरा, निहाल और बावर। बाजपुरमें दबका, घूगा और नैया एवं काशीपुर परगनेमें कोसी, बहिला, ढेला और फीका नदियाँ हैं।

(२) ताल—पहाड़ी भूभागमें विशेषकर छखाता परगनेमें कई बड़े-बड़े तथा सुन्दर प्राकृतिक ताल मिलते हैं। शायद इसीलिए इस भूभागका पुराना नाम छ-खाता (षष्ठि-खात या साठ तालाब) पड़ा; यद्यपि आज इन साठ तालाबोंका पहचानना और संख्याको पूरा करना मुश्किल है, तो भी नैनीताल (४७०१ फुट × १५१८ फुट), भीमताल (५५८० × १४९०), मलवाताल (४४८० × ८३३), नौकुचियाताल (३०० × २२५०), साठताल (३३५० × १०५०), खुरपाताल, सूखाताल, सारिया-ताल, सुरियाताल जैसे बहुतसे ताल अब भी मौजूद हैं।

५. खनिज—नैनीतालका पहाड़ी भूभाग खनिज सम्पत्तिसे बहुत समृद्ध है। यहाँके खनिज पदार्थ निम्नलिखित प्रकार हैं—

(१) धातु—धातुओंमें यहाँ ताँबा, लोहा बहुतायतसे मिलता है।

(क) ताँबा—ध्यानीराव परगनेके केमूखेतकी ताँबेकी खान किसी वक्त बहुत अच्छी समझी जाती थी, लेकिन जब विदेशी सस्ता ताँबा आने लगा तो उसे बन्द होना पड़ा।

(ख) सोना—ढेला नदीमें नदीके नजदीकके बालूको धोकर पुरानी प्रक्रियासे न्यारिये लोग कुछ सोना निकालते हैं। दूसरी जगहोंपर भी कहीं-कहीं सोनेका पता लगता है, लेकिन सोनेकी धूनका उद्गम कहाँ है, अभी इसकी खोज नहीं हुई है।

(ग) लोहा—लोहा नैतीतालके बहुतसे भागोंमें मिलता है। देइचौरी, कालाढुंगी और रामगढ़ परगना इसके लिए विशेष मशहूर है। रामगढ़की धून अधिक समृद्ध है। कोसीकी उपत्यकामें धनियाकोटमें भी उसी तरहका लोहा मिलता है। यहाँकी धूनोंमें ७०% तक लोहा है। लोहेका बनाना इस जिलेमें बहुत प्राचीन कालसे चला आता है। आगरपट्टीमें अगरिया लोगोंकी बस्ती है, जिनका काम ही था धूनोंसे लोहा बनाना। लुसगनी, नथुवाखान, गुल्ला, गुरखानी, खूनीखोया, कुमानी पाली और सतबंगाकी खानोंमें अभी पिछली शताब्दीतक खानोंमें काम होता था। स्यालगढ़ (कुटौली) और मंगलालेखा (तेल्लोराव)की धूनें भी तमगढ़से घटिया नहीं हैं। किसी समय खैरना और ऊँचाकोट की खानें भी चालू थीं। रामगढ़ परगनेकी खानोंमें १८८४ ई०तक काम होता रहा। अँग्रेज लेखकोंने स्वयं लिखा है "ब्रिटिश शासनके आरम्भके समय यहाँका खनिज उद्योग बड़ी ही समृद्ध अवस्थामें था। रामगढ़की खानोंको नाममात्रकी लगानपर अगरियोंके मुखियाको दे दिया गया था। वही कुमाऊँकी सभी लोहेकी खानोंपर १८२६ ई० तक नियन्त्रण रखता था। अँग्रेजोंके आनेपर जो उपेक्षा दिखलायी गयी, उसके कारण अवस्था बिगड़ती गयी। १८३३ ई०में बेकारीसे भूखे मरते बहुतसे खनक रामगढ़ छोड़कर अलमोड़ाके पाली परगनेके खेतसारी स्थानमें चले गये, जिसके बाद यह उद्योग बिलकुल ठप हो गया।

(कुमाऊँ लोहा कम्पनी)—इतनी समृद्ध धून होते उसकी ओर अँग्रेजोंका ध्यान न जाता, यह हो नहीं सकता था। १८५६ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनीके डाइरेक्टरोंने मिस्टर सोअरबाईको बहुतसे सहायकोंके साथ सरकारकी ओरसे लोहा बनानेके लिए भेजा गया। सोअरबाईने अपनी रिपोर्टमें बतलाया कि यहाँकी धून बहुत अच्छी है, जिससे इंग्लैण्डसे आनेवाले लोहेकी अपेक्षा सस्ता लोहा बनाया जा सकता है। सरकारका इंगित पा 'डेविस कम्पनी'के नामसे कुछ लोगोंने एक उद्योग-संघ कायम कर दबका तथा मकराके बीचकी भूमिको लेनेका प्रस्ताव किया। सरकारने उसे स्वीकार किया। कम्पनीने १८५८ ई०के वर्षाकालमें खुरपातालके कारखानेको अपने हाथमें लिया; जिसे कि सरकार-की ओरसे सोअरबाईने खोला था। १८६३ ई० में कम्पनीने उसका लागत दाम भी सरकारको चुका दिया और कालाढुंगीमें सवा लाख रुपया लगाकर कारखानेके लिए मकान बनवाये। देइचौरी कारखानेको भी सरकारने असफलताके कारण बन्द करना चाहा था, जिसे कर्नल ड्रमण्डने १८६१ ई० में खरीद लिया और वहाँ 'ड्रमण्ड कम्पनी'ने काम शुरू किया। पत्थरका कोयला आस-पासमें नहीं था और यातायातकी कठिनाईके कारण दूरसे लाया नहीं जा सकता था, इसलिए पुराने तरीकेके अनुसार लकड़ीके कोयलेसे ही काम चलाया जाता था। जंगलातके कानूनको ढीला करके सरकारने दोनों कम्पनियोंके लिए लकड़ीका सुभीता कर दिया और अन्तमें आस पासके जंगलोंको भी उन्हींके हाथमें सौंप दिया। १८६२ ई० के नवम्बरमें दोनों कम्पनियाँ "उत्तरभारत कुमाऊँ लौह कार्य कम्पनी' (लिमिटेड)के नामसे एक बन गयीं। इसके बाद ही भारत-सचिवने आदेश दिया, कुमाऊँके लोहेके निर्यातके लिए ईस्ट इण्डिया रेलवेके खुरजा स्टेशनतक एक ट्रामवे बैठायी जाय। ट्रामकी लाइन

को देहचौरीके लोहेसे बनानेका निश्चय किया गया था। खबर पाते ही लाखों मन लोहा कम्पनीने बना दिया, लेकिन इसी बीचमें सरकारने ट्रामको स्वयं बनानेका ख्याल छोड़ अवध-रुहेलखंड रेलवेको सुपुर्द कर दिया। इसपर जबतक लाइन बन न जाय, तबतकके लिए कम्पनीने अपने कारखानेको बन्द कर दिया। सरकारने भी कम्पनीके लिए अपनी शर्तें कड़ी कर दीं। कम्पनीने उन शर्तोंके अनुसार भी आगे बढ़नेकी कुछ कोशिश की, लेकिन जबतक पैदा किये हुए लोहेके बेचनेका निश्चित प्रबन्ध न हो, तबतक और रुपया लगाना मुश्किल था। इसीलिए १८६४ ई० में काम बन्द हो गया। पीछे फिर एक बार असफल कोशिश की गयी, किन्तु अन्तमें १८७६ ई०में कम्पनीने हाथ-पैर ढीले कर दिये। सरकारने तीन सालके लिए काम अपने हाथमें लिया, लेकिन सफलता नहीं हुई। कुमाऊँके दीर्घ-कालीन शासक हेनरी रामजेका विश्वास था कि यदि ठीक तरहसे चलाया जाय, तो कारखानेमें घाटा होनेकी कोई सम्भावना नहीं है। लेकिन इंग्लैण्डके साथ यातायातके सुभीतेके कारण सस्ते विलायती लोहेके सामने अब कुमाऊँके लोहेकी ओर कौन ध्यान देता। लाखों रुपये लगा करके खड़े किये गये मकान और मशीनरी धीरे-धीरे नष्ट हो गयी। आज भी धनागमके इतने अच्छे साधनकी ओर किसीका ध्यान नहीं है—बड़े-बड़े लोहेके कारखाने देशमें दो-तीन जगहोंमें खड़ा करना भी अच्छा है, लेकिन देशकी गरीबीको दूर करनेके लिए यह जरूरी है कि जहाँ-जहाँ उसके लिए साधन मौजूद हों, वहाँ भी कारखाने खोले जायँ। कुमाऊँका लौह-उद्योग आज किसी भविष्यकी प्रतीक्षामें है।

(२) **अ-धातु खनिज**—कोयला, गन्धक, फिटकिरी, जिप्सम तथा अन्य बहुत तरहके मकानके कामवाले खनिज जिलेमें मौजूद हैं।

(क) **कोयला**—रानीबागके पास तथा भमौरीके नजदीक बाराखेरीमें कोयलेका पता लगा है। रानीबागका कोयल बहुत अच्छा है, लेकिन उसकी मात्रा कम बतलायी जाती है। फीका नदीमें भी कोयला मौजूद है। शारदाके जंगल-रेंजमें बरतियामें भी कोयलेकी खानें मिली हैं। भीम-तालमें कच्चे कोयला (पीट) का पता लगा है। इस प्रकार लोहेके लिए अपेक्षित कोयलेका भी नैनीतालमें अभाव नहीं दिखाई पड़ता।

(ख) **गन्धक**—काठगोदाम और नैनीतालके कुछ चश्मोंमें गन्धक थोड़े परिमाणमें मिलती है। किसी-किसी जगहकी हरी लौह-धूनोंमें भी गन्धक मौजूद है।

(ग) **फिटकिरी**—नैनीतालसे खैरना जानेवाले रास्तेपर जाक गाँवमें फिटकिरी काफी पायी जाती है। अलमोड़ाके नीचे कोसीकी धारमें चट्टानोंमें फिटकिरी देखी जाती है।

(घ) **जिप्सम**—रासायनिक खादके लिए आवश्यक जिप्सम पूर्वी छखातामें कालाढुंगी और नैनीतालके बीच निहाल नदीके पुलके पास मिला है। १८६० ई० में बरेली कालेजके श्री० ट्रेगोटने इससे अच्छा पैरिस-प्लास्टर बनाया था।

(ङ) **शिलाजीत**—यह अल्प परिमाणमें इस जिलेमें भी मिलता है, लेकिन अधिकतर नेपालसे आता है।

(च) **गृह-सामग्री**—चूना-पत्थरके कारण यहाँ अच्छी सीमेंट फैक्ट्री चल सकती है। कोटा-भाबरमें चूना-खान नाम इसीके कारण पड़ा है। रामनगरसे छ मील पूर्व तिमलियासोतमें भी चूना-पत्थर मिलता है। गैयामें साधारण चूना-पाषाणके अतिरिक्त नीला भी प्राप्य है। दबका, बावर और गोला नदियोंके किनारे भी चूनेकी शिलाएँ मिलती हैं। तराईमें छतरभोजके नजदीक दलपुराके जंगलोंमें कंकड़ जैसा चूनेका उपकरण मिलता है।

६. ऋतु आदि—भिन्न-भिन्न ऊँचाइयोंके अनुसार अलमोड़ाकी तरह पहाड़ी नैनीतालमें भी जलवायुका अन्तर पाया जाता है, जिससे भाबर तथा तराईकी गरम भूमि और भी भेद रखती है।

(१) तापमान—जिलेके अनेक जगहोंके तापमानका पता नहीं है। लेकिन नैनीतालमें उच्चतम तापमान ८५° से अधिक शायद ही कभी होता हो। सबसे सर्द महीनोंमें वह ३२ डिग्रीके आस-पास होता है। मुक्तेश्वरमें उच्चतम और निम्नतम तापमान ८५° तथा ५५°·५ देखा गया है।

(२) वर्षा—वर्षा जिलेके भिन्न-भिन्न भागोंमें निम्नलिखित प्रकार पायी गयी है—

काठगोदाम	भाबर	९१·२७ इंच
काशीपुर	तराई	४६·४ ,,
किलपुरी	,,	९४ ,,
नैनीताल (६३५० फुट)	पहाड़	९७·४९से ६७·१
रामनगर	भाबर	६५·६६
रुद्रपुर	तराई	५७·९४
हल्दावनी	भाबर	८१·८

७. जंगल—कुमाऊँके जंगलोंके बारेमें हम पहले लिख चुके हैं। १८९१ ई० तक नैनीताल जिला अलग न होनेके कारण यहाँके जंगल भी अलमोड़ा जिलेमें ही सम्मिलित थे। कुमाऊँ लोहा कम्पनीको ईंधन के लिए ३५० वर्गमील जंगल दिया गया था, जो कि दबकासे एक मील पश्चिम मानरगधेरासे कालाढुंगी और हल्दवानीके प्रायः बीचोबीच भकरानदी तक फैला हुआ था। उत्तरमें इसकी सीमा पहाड़ था, और दक्षिणमें सीमा-निर्देशक खम्भे खड़े किये गये थे। कम्पनीके दिवालिया हो जानेपर इस जंगलमेंसे ७२·४८ वर्गमील जंगल (कोटा, देइचौरी और फतेहपुरके ब्लाक) कुमाऊँ जंगलमें ६ फरवरी १८९०में मिला दिये गये। बाकी जंगलके बारेमें अधिकारोंकी जाँच-पड़ताल करके अन्तमें १८९९ ई० कोटा ब्लाकमें गढ़वाल डिवीजनको दे दिया गया। बाकी देइचौरी रेंजके पहाड़ और नीचे मिलकर २७९४५ एकड़—जिसमें १३७९८ एकड़ पहाड़में थे—का इन्तजाम यहाँके जंगल-विभागने अपने हाथमें लिया। देइचौरी, फतेहपुर, छखाता, नंधौर, जौलासाल इस जिलेके जंगलोंके रेंज हैं। देइचौरीके सात ब्लाकोंमें देईगाँव, नरनी और कालाढुंगी पहाड़में पड़ते हैं।

छखाता रेंजमें साल और हलदू जैसे अच्छी लकड़ीवाले जंगल हैं। इसका क्षेत्रफल ३९५२४ एकड़ है, जिसमेंसे आधा रतीघाट, गुरुखरक, जामपोखरा, शिमलिया, पटरौई और असनीके ब्लाक पहाड़में पड़ते हैं, बाकी लखमनमण्डी, होराई, मौलानी, सीला, गोला, उत्तर और दक्षिण डोलपोखरा, कोटखर्रा, सुखी और कैलासके ब्लाक भाबरमें हैं। फरवरी १८९९ ई० में डोलपोखरा, सीला, मौलानी और कोटखर्राको रक्षित-वन घोषित किया गया था और उसी साल सितम्बरमें कैलास, सुखी और गोला भी रक्षित बनाये गये।

नंधौर रेंजके (४८६२३ एकड़) जंगल सारे पहाड़में पड़ते हैं। इसका एक-तिहाई सालका जंगल है, बाकीमें खैर तथा दूसरे वृक्ष हैं। यह बाईस ब्लाकोंमें विभक्त है, जिन्हें शखेरी, कराकोट, उत्तर और दक्षिण सैलानी, रातारात तथा उत्तर और दक्षिण खोपानी, पूर्व और पश्चिम लोबचूला, बुलसानी, उत्तर और दक्षिण आँवलाखेरा, चिल्ला, गौनियाराव, दुर्गा-पीपल, उत्तर और दक्षिण खोलगढ़, कुण्डल, बेत्तर और निचला नाला इन सात बीटों (पालियों)में बाँटा गया है।

जौलासाल रेंजका २४१५३ एकड़ जंगल चूनागढ़, हाथगढ़, चमुवाढुंगा, बीरगोठ और

भारगोठके ब्लाकोंमें बँटा है। इनके अतिरिक्त मैदानी समतल भूमिके २७७०० एकड़ जंगल हौसपुर, पूर्व-पश्चिम जौलासाल, सुतलीमठ और कलगाके ब्लाकोंमें बँटा हुआ है।

(१) **नैनीताल डिवीजन**—नैनीताल डिवीजनमें अलमोड़ाका रानीखेत सब-डिवीजन भी सम्मिलित है। जिलेका जंगल नैनीताल सब-डिवीजनके नामसे मशहूर है, जो हिमालयके दक्षिणी भाग और बाहरी ढलानोंमें अवस्थित है। पहाड़ोंमें यह दो हजारसे आठ हजार फुटतक फैला हुआ है। प्रारम्भिक रक्षित-वन रानीखेत सब-डिवीजनतक ही सीमित था। १८८५ ई०में लोहा कम्पनीके जंगलमेंसे ३०-३६ वर्गमील रक्षित बनाया गया। सन् १८९० ई० में गागर और निंगलाटके १९ वर्गमील जंगल रक्षित किये गये। अगले साल डलमर मोराका छ वर्गमील जंगल ले लिया गया। १८९८ ई० में नैनीतालके पास ३६ वर्गमील जंगल रक्षित किया गया। १८९९ ई० में आठ वर्गमीलके जंगल मुक्तेश्वर, साततात, रामगढ़ और हरियालडाँड़ा रक्षित किये गये। १९०२में खुरपातालकी पुरानी छावनीके जंगलोंको भी विभागने अपने हाथमें ले लिया। इस प्रकार नैनीताल सब-डिवीजनके पास करीब सौ वर्गमील जंगल हो गया। पहाड़ी होनेके कारण यहाँ चीड़ और बंजके दरख्त ऊँचाईके अनुसार ज्यादा मिलते हैं। चार हजार फीटकी ऊँचाईसे नीचे सालके भी जंगल हैं। प्रायः बाईस वर्गमील चीड़के जंगलोंसे ढँका है और छियालीस वर्गमील बंज तथा दूसरे कम मूल्यवान् वृक्षोंसे।

(२) **जिला-जंगल**—१८९६ ई० के आरम्भमें जिलेके पहाड़ी भागकी सभी बंजर जमीनको सरकारी जंगल घोषित करते हुए उन्हें 'पालित' नाम देकर जिलेके अधिकारी डिप्टी कमिश्नरके हाथमें दे दिया गया। लोग जंगलका इस तरह सर्वसंहार कर रहे थे, जिससे डर था कि सारे पहाड़ नंगे हो जायँगे। इस प्रबन्धसे पहाड़के जंगलोंको लुप्त होनेसे बचा लिया गया। १८९६ ई० में 'पालित' जंगल २२०३७१ एकड़ (३४४ वर्गमील) था, जिसमें कुछ लोगोंकी माँगके कारण पीछे कम कर दिया गया। १९०० ई० 'पालित' जंगलको गोला और कोसी दो रेंजोंमें विभक्त किया गया। दोनों रेंजोंका एक रेंजर और उसके नीचे दो अलग-अलग फारेस्टर हैं।

(३) **तराई-जंगल**—१८६५ ई० में जंगल-विभागसे अलग करके तराई और भाबरके जंगलोंको सरकारी जमींदारी या (खास-मोहालों) के हाथमें दे दिया गया, क्योंकि यहाँके जंगलको ज्यादा लाभदायक नहीं समझा गया। यद्यपि सालके जंगल मीलोंतक फैले हुए हैं, लेकिन बरकोलीको छोड़ यहाँके साखू बेकार-से हैं, क्योंकि परिपक्व अवस्थामें पहुँचनेतक उनकी जड़ें सड़ जाती हैं। तराईके दूसरे वृक्ष भी काष्ठके तौरपर मूल्यवान् नहीं हैं, हाँ, भाबरका साल कामका है। बिलहरीके खैर और शीशमका भी मूल्य है। इन जंगलोंका उपयोग गोचरभूमि और ईंधन-चारेके तौरपर ही अधिक है, जिसके लिए लोगोंसे जंगल-कर लिया जाता है।

(४) **उपयोगी काष्ठ**—पहाड़के बाहरी (दक्षिणी) ढलानोंमें फीका नदीसे शारदातक तथा दूनोंमें भी सबसे मूल्यवान् **साल** (साखू) वृक्ष होता है, जो पहाड़पर तीन हजार फुटतक पाया जाता है। यह साठसे नब्बे फुटतक ऊँचा आता है, जिसमें छसे आठ फुट मोटा तथा तीससे चालीस फुट लम्बा तना सबसे कामका है। रेलवे लाइनके स्लीपर इससे बनाये जाते हैं। सालको पानीसे सड़नेका डर नहीं है। उपयोगमें सागौनके बाद इसका नम्बर आता है। मकानोंके बनानेके लिए इसकी बड़ी माँग है। **साईकी** लकड़ी सालके बाद दूसरे नम्बरपर है। दूनोंमें यह अस्सीसे सौ फुटतक ऊँचा और आठसे दस फुट मोटा खड़ा दिखाई पड़ता है। इसकी हीर गहरी भूरी, बहुत

मजबूत, लचकदार और चिरस्थायी होती है। घरकी चीजोंके अतिरिक्त नावोंके बनानेमें भी यह काम आता है। **हलदू** पहाड़के सानुके साथ-साथ समतल भूमिमें शारदासे रामगंगातक पाया जाता है। पहाड़ी घाटियोंमें तीन हजार फुटकी ऊँचाईतक भी इसके जंगल हैं। भाबरमें दससे अठारह फुट मोटे तथा साठसे सौ फुट ऊँचे हलदूके वृक्ष मिलते हैं। लकड़ी पीली होनेके कारण इसका यह नाम पड़ा। यह भी काफी टिकाऊ, बारीक दानोंवाला काष्ठ है। अनूपशहर (बुलन्द-शहर) में इसकी विशेष माँग है। **धौरी** भी निम्न पहाड़ोंका एक सुन्दर वृक्ष है, जो नौ फुटतक मोटा तथा सत्तर फुटतक ऊँचा होता है। इसे धौली (सफेद) साल भी कहते हैं। बाजारमें कितनी ही बार इसे साल कहकर बेचा जाता है। **शीशम** निचले पहाड़ों तथा मैदानमें भी नमीवाली जमीनमें, विशेषकर नदियोंके किनारे तथा उनके टापुओंमें पाया जाता है। फर्नीचर बनानेमें काम आनेके कारण यह बहुत मूल्यवान् काष्ठ है और कुर्सी-मेज आदि बनानेके लिए बहुत भारी मात्रामें बरेली भेजा जाता है। **खैर** भी इसी भूमिका वृक्ष है, जिससे कत्था बनाया जाता है। पहाड़में वे ही वृक्ष हैं, जो अलमोड़ा जिलेमें पाये जाते हैं, अर्थात् तून, सौंदन, हर्रा, मापल, बंज, खरसू, तिलौंज, रियाँज, चीड़, देवदार, कैल, घूपी बाँस।

८. **प्राणि-जगत्**—(१) **वन्यपशु**—जिलेके जंगलोंमें कई तरहके जंगली जन्तु पाये जाते हैं। **हाथी**का मुख्य वासस्थान पतलीदून है, जो कि गढ़वालके अन्तर्गत है, लेकिन जिलेके पूर्वी जंगलोंमें भी हाथी पाये जाते हैं। खेडा (हाथी पकड़ना) और शिकारके कारण हाथियोंकी संख्या बहुत कम हो गयी थी, इसलिए उन्हें निषिद्ध कर दिया गया, और अब विशेष आज्ञाके बिना कोई हाथीको पकड़ या मार नहीं सकता। आज्ञा भी अकेले फिरनेवाले खतरनाक पट्ठोंके मारनेके लिए ही दी जाती है। **बाघ** भाबर और तराईका जन्तु है, लेकिन कभी-कभी पहाड़के भी उच्चतम स्थानोंमें चला जाता है। तराईमें अनुकूलता होनेके कारण बाघ दस फुटतक लम्बे पाये गये हैं। पहले, जब बाघोंसे बहुत नुकसान होता था, सरकारने उनके मारनेके लिए इनाम घोषित कर रखा था, जिसके कारण उस समयके कुमाऊँ जिलेमें १८६०-८० ई० में ६२४ बाघ मारे गये, नैनीताल जिला बननेके बाद १९०२-१९०० ई० के आठ वर्षोंमें सात बच्चे छोड़ १६१ बाघ मारे गये। **चीता** (बघेरा) इस जिलेमें प्रायः सभी जगह मिल जाता है, लेकिन तराई और भाबर इसके अपने स्थान हैं। यद्यपि आदमीपर आम तौरसे चोट नहीं करता, लेकिन अपने आकारकी अपेक्षा यह बहुत अधिक मजबूत तथा अत्यन्त निर्भीक जानवर है, घिर जानेपर यह हाथीपर भी आक्रमण करनेसे बाज नहीं आता। ढोरों और भेड़-बकरियोंको यह बहुत नुकसान पहुँचाता है। १८९२-१९०१ ई० के भीतर जिलेमें ४५४ बघेरोंके मारनेके लिए इनाम दिया गया था। हिमालका भूरा भालू इस जिलेमें नहीं दिखाई पड़ता। हिमालयका काला भालू तीन हजार फुटकी ऊँचाईसे नीचे शायद ही कभी पाया जाता है। दूसरा मैदानी काला भालू अधिकतर तराई और भाबरमें मिलता है। हरिन यहाँ साँभर, चीतल, गौंड, पाढ़ा, काकड़ आदि कई प्रकारके हैं। पर्वत-सानुके जंगलोंमें कहीं-कहीं **नीलगाय** भी मिलती है। **भेड़िया** निम्न पहाड़ियोंतक ही पाया जाता है। पहाड़ोंके भीतर घुसना यह पसन्द नहीं करता। **कूकी** (जंगली कुत्ते) पहाड़में कहीं-कहीं, किन्तु तराई और भाबरमें सब जगह दिखाई नहीं पड़ते हैं। हरिन और साँभर इनके मुख्य शिकार हैं। झुण्ड बनाकर घूमने तथा निर्भीक होनेके कारण यह ढोरोंको बहुत हानि पहुँचाते हैं। इनकी संघ-शक्तिके कारण बाघ भी इनसे डरता है। **गीदड़** पहाड़ और तराईमें सब जगह पाये जाते हैं। **लकड़बग्घा** पहाड़में बहुत कम देखा जाता है। यह केवल रातको कुत्तों या भेड़-

भेड़ियोंका शिकार करता है, लेकिन डरपोक होनेके कारण अधिकतर सड़ी लाशोंपर गुजारा करता है। काले और लाल मुँहवाले दोनों प्रकारके **बानर** यहाँ पाये जाते हैं और इनके कारण खेतीको भारी क्षति पहुँचती है। लंगूर वैसे जंगली फल-फूल और पत्तीपर गुजारा करता है, लेकिन अगस्तसे फरवरीतक यह किसानोंकी खड़ी फसलपर गुजारा करता है।

(२) सरीसृप—साँडा, गोह, साँप इस जिलेमें बहुत पाये जाते हैं। गोह चार फुटतक लम्बी देखी जाती है। साँप जिलेमें तेईस प्रकारके पाये गये हैं, जिनमें पन्द्रह बिलकुल निर्विष हैं। इन्हींमें धामन भी है, जो कभी-कभी सात फुट लम्बी देखी जाती है। अजगर तराईके दलदलोंका साँप है। यह तीस फुटतक लम्बा देखा गया है। इसमें विष नहीं होता। हाँ, अपनी लपेटमें कसकर यह जन्तुओंको मार डालता है। साधारण लम्बाईवाला अजगर भी एक अच्छे चीतलको निगल सकता है। करैत, गेहुँवन आदि यहाँके विषैले साँप हैं, जो पहाड़के ठण्ढे स्थानोंमें बहुत ज्यादा नहीं पाये जाते।

चिड़ियों और मछलियोंके बारेमें वही बात है, जो कि हम अलमोड़ामें लिख आये हैं। नैनीताल, सातताल, मालवाताल, भीमताल, नौकुचियातालमें मछलियाँ बहुत हैं। मनमानी तौरसे मछलियोंका संहार न किया जाय, इसके लिए भारतीय मछली कानूनको १८९९ ई० से यहाँ लागू किया गया, किन्तु १९०२ में उसे हटा दिया गया। हाँ, कोसी, बावर और गोला नदियोंके कुछ भागोंमें इस कानून द्वारा मछलियोंको सर्वसंहारसे अब भी रक्षित किया गया है।

अध्याय १०

शासन-प्रबन्ध

१. रुहेला-आक्रमण (१७४३ ई०)—नैनीतालका इतिहास १८९१ ई० तक वही था, जो कि कुमाऊँके बाकी भागका। १८वीं सदीके मध्यमें, जब कि पुराने उत्तर पंचालको रुहेलोंने अपना नाम देकर रुहेलखण्ड बनाया, यह जिला भी रुहेलोंकी आखेट-भूमि रहा। कुमाऊँके राजा कल्याण-चन्दने अपने गुप्तचर भेजकर रुहेला-सरदार अली मुहम्मद खाँके कैम्पमें अपने दुश्मन हिम्मत गोसाईं और उसके परिवारको मरवा डाला, इसपर अली मुहम्मदका पठान खून खौलने लगा और उसने १७४३ ई० में हाफिज रहमत खाँ, पाइन्दा खाँ और बख्शी सरदार खाँके नेतृत्वमें दस हजार सेना कुमाऊँके राजाको दण्ड देनेके लिए भेजी। इस जबर्दस्त अभियानके लिए उसने काशीपुरमें सारी तैयारी की। रुहेले इधर तैयारी कर रहे थे, और उधर कुमाऊँके शासकोंको आपसी झगड़ेसे ही छुट्टी नहीं थी। शिवदेव जोशीने पैसा माँगा, तो दरबारियोंने कह दिया कि अपनी जेबमें डालनेके लिए माँग रहा है। जो कुछ सेना इकट्ठी हो सकी, उसको लेकर शिवदेवने रुद्रपुरमें मुकाबला किया, लेकिन हारकर उसे भीमतालके नीचे बाराखेरीके किलेमें शरण लेनी पड़ी। हाफिज रहमतने रुद्रपुरमें अपना शासक नियुक्तकर कुमाउँनियोंका पीछा किया, और हल्दवानीके पास छखाता परगनेमें विजयपुर-पर अधिकार कर लिया। राजाने अब कुछ करनेका प्रयत्न किया, लेकिन रुहेलोंने विजयपुरमें फिर कुमाउँनियोंको हराया और रामगढ़ तथा प्योड़ा होते अलमोड़ाके नीचे सुवाल नदीतक पीछा किया। बख्शी सरदार खाँको बुढ़ापेके ख्यालसे बरखेरीके किलेमें मैदानी रास्तेकी रक्षाके लिए छोड़ हाफिज रहमतने आगे बढ़कर अलमोड़ापर अधिकार किया। इस अभियानमें सिर्फ कुमाउँनियोंसे लड़ने और लोगोंको लूटनेमें ही रुहेलोंने अपनी शक्ति खर्च नहीं की, बल्कि यहाँके मन्दिरों और मठोंका भी संहार किया। उस समयके ध्वस्त किये हुए मन्दिर फिर खड़े नहीं हो सके। धातुकी मूर्तियाँ रुहेले अपने साथ गलाकर ले गये और पत्थरकी मूर्तियोंको तोड़-फोड़ दिया। कुमाऊँमें रुहेलोंकी सफलताको गढ़वालका राजा चुपचाप देख नहीं सकता था, लेकिन रुहेलोंने कैराराव (अलमोड़ा)के मैदानमें दोनों राज्योंको करारी हार दी। गढ़वालने तीन लाख रुपया देकर अपनी जान बचानी चाही, किन्तु रुहेले लूटते-पाटते केदारनाथ और बदरीनाथतक गये। सात महीनातक लूटने-पाटनेके बाद वह पहाड़ छोड़ गये। तीन महीने बाद रुहेला सरदार नजीब खाँ (नजीबुद्दौला) दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहकी सेनाके दबावके कारण तराई और पहाड़की तरफ हट आया और उसने बाराखेरीमें अपनी छावनी मजबूत की। लेकिन १७४५ ई० के आरम्भमें शिवदेव जोशीने पठानोंको वहाँसे हटानेमें सफलता पायी। अलमोड़ा और गढ़वालकी तरह नैनीताल जिलेके भी मन्दिरों और प्राचीन स्थानोंमें पठानोंके इस अभियानके ध्वंस-चिह्न मिलते हैं।

२. विभाजन—जिलेके पहाड़ी भागको नैनीताल तहसील कहा जाता है। भाबर तहसीलका ही दूसरा नाम हल्दवानी है। तराई तहसीलका सदर मुकाम किच्छा है और चौथी तहसील काशीपुरकी है, जिसे सब-डिवीजन और वहाँके हाकिमको सब-डिविजनल आफिसर कहा जाता है।

इस जिलेमें निम्नलिखित पुलिस थाने हैं।

थाना-सूची

स्थान	थाना (सब-इन्स्पेटर) या चौकी	स्थान	थाना(सब-इन्स्पेटर) या चौकी
आर्म-पुलिस (नैनीताल)	थाना (१)	तल्लीताल (नैनीताल)	थाना (१)
		बाजपुर	थाना (२)
काठगोदाम		ब्रेवरी	चौकी
कालाढुंगी	चौकी	भवाली	थाना
काशीपुर	थाना (२)	भीमताल	,,
किच्छा	,, (१)	मझोला	,,
केलाखेड़ा	चौकी	मल्लीताल (नैनीताल)	थाना (२)
खतिमा	थाना (१)	रामनगर	,, (१)
खैरना	चौकी	लालकुँआ	चौकी
गदरपुर	,,	सितारगंज	थाना (१)
जसपुर	थाना (१)	सुलतानपुर	चौकी
तनकपुर	चौकी	हल्दवानी	थाना (२)

३. स्थानीय शासन—(१) जिला बोर्ड—स्थानीय स्वायत्त-शासनका अभीतक वही ढंग चला जा रहा है, जो कि अँग्रेजोंके समयमें था। हाँ, वयस्क मताधिकारसे निर्वाचित ग्राम-पंचायतें गाँवोंमें स्थापित हो चुकी हैं। पंचायतोंको प्रबन्ध और न्यायके भी कुछ अधिकार दिये गये हैं, लेकिन शहरोंकी नगरपालिका और जिलेके देहाती भागके जिलाबोर्डको वैसा कोई अधिकार नहीं है, इसलिए उनका ठीकसे सामंजस्य स्थापित नहीं है। सरकार सोच रही है कि ये तीनों संस्थाएँ अलग-अलग न रहकर इनका एक-दूसरेसे सम्बन्ध करते अधिकार-क्षेत्रका विभाजन होना चाहिये।

जनवरी १८९२से यहाँ जिला-बोर्डकी स्थापना हुई, जिसमें पहले सरकारके मनोनीत आदमी ही होते थे। पीछे निर्वाचित सदस्योंकी संख्या बढ़ाते हुए अन्तमें उसे पूर्णतया निर्वाचित बना दिया गया। स्वतन्त्रताके बाद वयस्क-मताधिकारके अनुसार निर्वाचन हुआ। बोर्डके अधिकारमें शिक्षा, स्वास्थ्य-रक्षा, सड़कों आदिका प्रबन्ध है। पिछले बाईस बरसमें बोर्डके अधिकारों, बोर्डके कार्यक्षेत्र और आय-व्ययमें बहुत ही परिवर्तन हुआ है।

(२) नगरपालिका—इस जिलेमें नैनीताल, काशीपुर और हल्दवानीकी तीन नगरपालिकाएँ हैं। देहातमें जो काम जिला बोर्डका है, शहरोंमें वही काम नगरपालिकाएँ (म्युनिसिपल बोर्ड) करती हैं।

(क) नैनीताल नगरपालिका—इसकी स्थापना ३ अक्तूबर १८५० ई० में हुई थी, अर्थात् आज वह एक सौ तीन वर्ष पुरानी है। १८९१ ई० तक सरकारके मनोनीत छ सदस्योंकी कमेटी इसका प्रबन्ध करती थी। उसके बाद सदस्योंकी संख्या आठ और फिर दस कर दी गयी। १९०१ ई० में पहली बार तीन सदस्य मुट्ठीभर वोटरों द्वारा निर्वाचित हुए।

नगरपालिकाके अध्यक्ष श्री० जे० एस० विस्टकी कृपासे ३१ मार्च १९५२ को समाप्त होनेवाले वर्षके प्रतिवेदनसे नगरपालिकाके बारेमें निम्नलिखित बातें मालूम हुई हैं।

१९५१ की गणनाके अनुसार नगरकी जनसंख्या गर्मियोंमें २७०५५ और जाड़ोंमें १२३५० थी, अर्थात् नैनीतालमें स्थायी तौरसे १२००० के करीब लोग रहते हैं। आय-व्ययका हिसाब निम्नलिखित प्रकार रहा—

आय—

मद	१९५०–५१	१९५१–५२ (बजट)	१९५१–५२ वास्तविक
१. पिछले सालका रोकड़बाकी	२००९६६९	२७१५८७	२७१५८७
११. कर और भाड़ा	३७१६७८	३८६७००	३७८०१६
१२. पशुकारा	४९२	५००	३३
१४. दूसरे स्रोतोंसे	८१	४००	५४१
सम्पत्ति और शक्तिसे आय :			
१६. भूमि-गृह-डाकबंगला आदिका भाड़ा	३१७०६	३००००	३२७१
१७. भूमि या उपजकी बिक्री	१८६८३	१६०००	३९२
१८. सफाई	२२	५०	
१९. शिक्षणालय	५१५४	५०००	५७१२
२०. चिकित्सालय	१७९९	१५००	१७९९
२१. (क) बाजार	९५०१	११०००	८४०४
२१. (ख) कसाईखाने	१६३५	२०००	१५४६
२२. आयोजन	३६८	१०००	७१३
२३. जल-बिक्री :			
(१) जल-बिक्री	४३१३०	५००००	४७०८९
(२) मीटर-भाड़ा	५७६२	५०००	५४८३
(३) दूसरे मद	६१३४	१००००	७८३२
२३. (क) काफी-फीस	१२३	१००	७५
२३. (ख) पुस्तकालय-फीस	६५०	१०००	६९७
२३. (ग) रजिस्ट्री-फीस	७२५३	१००००	७९२०
२३. (घ) मछली आदिके लाइसेन्स	३७७	५००	३५६
२३. (ङ) कुत्ता-कर	७४०	१०००	८२५
२४. जुरमाना	१५६०	१५००	१५२२
२४. (क) पन-बिजलीसे प्राप्ति	२७९८९७	२७००००	२८७२४८
लगाये रुपयेका सूद :			
२५. कर्जपर सूद	६०	१००	
सरकारसे अनुदान :			
३०. साधारण उपयोगके लिए	२३१२०	३१२०	८८१२०
३१. शिक्षाके लिए	१७७४५	१७०००	१९५३६
३२. महँगाई भत्ताके लिए	३९७३९	४००००	४०४५४
स्थानीय फण्ड :			
३४. शिक्षाके लिए	१५०	१५०	
३५. चिकित्साके लिए	१४०	१४०	
३८. (क) दूसरे स्रोतोंसे	५७४५	५०००	

फुटकर :			
४०. निजी व्यक्तियोंसे		५००	
४१. दूसरे फुटकर मद	१०९५८	१५०००	१९३५४
असाधारण आय और ऋण:			
४४. सरकारी सेक्युरिटी आदिकी बिक्री	१०७७२		
४६. ऋण	५००	५००	५५६
४९. स्थायी अग्रिम	५००		
५०. अन्य अग्रिम	१००		
५१. तहवील (डिपाजिट)	४२९९	४५००	३०५०
५३. रोकड़बाकी सहित सम्पूर्ण आय	१२०८५९७	११६५९४७	१२३७४३१
५४. प्रतिव्यक्ति वार्षिक कर (११ मद)	१८-१२-२	१९-८-३	१३-१५-६
५५. प्रतिव्यक्ति वार्षिक आय (रोकड़ सहित)	४४-११-११	४४-१४-२	३५-९-०
व्यय—			
१–७. साधारण शासन-प्रबन्ध	७८९२६	८३८००	७८३८७
८–११. सार्वजनिक सुरक्षा	१४५१९६	७५२७५०	१७०८७८
१५. सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुविधा	१०३६८७	१४०८००	१२०१२३
१६. सफाई:			
(क) अधीनस्थ प्रतिष्ठान	१४७८१२	१५३६००	१५०३५६
(ख) पशुओंपर	५१९०	१०४००	५८५९
(ग) दूसरे खर्च	१५३०४	१३०००	१२९७९
(घ) सड़क-सिंचाई		५००	
१७. हेल्थ-आफिसर आदि	६८११	८१००	७७४९
१८. अस्पताल आदि	१०१४९	२७३००	१०९५६
१९. प्लेग	४०	१००	
२०. टीका	२११७	२३००	२२३९
२१. दूसरे सफाई खर्च	१६०४८	२८६००	२७४६०
२२. बाजार और कसाईखाना	३०५०	४३००	३५०६
२३. पशुकारा	६०	१००	६६
२४. डाकबँगला और सराय	७०	१००	७
२५. बाग, बागवानी आदि	१२७५७	९०००	५३५९
२६. पशु-चिकित्सा	५४५७	६०००	५७६७
सार्वजनिक कार्य:			
२८. प्रतिष्ठान	२०८९३	२२०००	२१८४७
२९. इमारतें	६०४८९	१०१०००	८३५२३
३०. सड़कें	३७८१९	६६०००	१५१२५८
३१. गोदाम	८०२०	१००००	३४८६

सार्वजनिक शिक्षाः			
३२. स्कूल और कालेज	३७४९७	४३०००	४२९३७
३२. (क) स्कूली इमारतोंका निर्माण और मरम्मत	३३१८	४७००	३४११
३२. (ख) हिन्दुस्तानी मिडिल स्कूल	१२२६८	१४६००	१४५४१
३२. (ग) कन्या स्कूल	१८३३५	२२५००	२०४८१
३३. चन्दा	४१६०	४५००	४३८०
३४. पुस्तकालय आदि	८४४०	१०३००	५५८१
३६. साधारण उपयोगके लिये	१४७९३	२०७००	११८९९
३८. ऋणका सूद	१४६१६	११७६२	११४७४
४०. निजी व्यक्तियोंके कामपर	१३८	५००	७८
४१. छपाई	६४६६	५०००	३७८९
४१. (क) कानूनी खर्च	१२८	१०००	७०१
४१. (ख) प्राविडेंट फंड	१६४६०	१९०००	१७०२८
४१. (ग) नजूलकी आसदनीमें सरकारका भाग	४०८	१५००	३७५
४१. (च) फुटकर और प्रचार	२३१३३	२४०००	१९७४०
४४. व्यय-योग	८३९५५५	११२१८१२	१००८२२०

नगरपालिकाके अधीन या उससे सहायताप्राप्त शिक्षणालयोंका विवरण निम्नलिखित प्रकार है (३१ मार्च १९५२)—

नाम	स्कूल-संख्या	विद्यार्थी-संख्या	अध्यापक-वेतन	विशेष
हिन्दी मिडिल स्कूल	१	२४५	८९९४	७७ लड़के परीक्षामें बैठे
प्राइमरी स्कूल	५	३७६ + ६७८	२५४०७	
योग	६	१२९९	३४४०१	
अँग्रेजी स्कूलः				
हाई स्कूल	१	४९८	३००० सहायता	
विशेष स्कूल	१	५८	३८०	
मिडिल स्कूल	१	३२६	११३९६	
कन्या स्कूल	१	३३६	११३९६	६६ मैट्रिक परीक्षामें बैठे

निम्नलिखित शिक्षणालय नगरपालिकाके अधीन हैं। अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षाके लिए नगरपालिकाके पाँच प्राइमरी स्कूल हैं। मल्लीतालमें लड़कोंका हाई स्कूल है और तल्लीतालमें लड़कियोंका। उच्च हाई स्कूल और श्रीराम संस्कृत पाठशाला (तल्लीताल) को भी नगरपालिका सहायता देती रही है।

स्कूलोंका विवरण निम्नलिखित प्रकार है—

नाम	३१ मार्च १९५१ को	३१ मार्च १९५२ को
१. आधारिक स्कूल (मल्लीताल)	४०३	४७२
२. ,, ,, (तल्लीताल)	३६८	३८७

३. ,, नारायणनगर	४६	३५
४. ,, चीना हौस	७४	६९
५. ,, ब्रैकेनबरी हाल	९९	९१
६. हाई स्कूल (मल्लीताल)	२१८	२४५
७. नगरपालिका कन्या-स्कूल (तल्लीताल)	३५७	३३६

(ख) काशीपुर नगरपालिका—इस नगरपालिकाके काम और आय-व्यय निम्नलिखित सूचीसे मालूम होंगे—

नाम	१९२७-२८ ई०	१९३१-३२ ई०
चुंगी	१०९९१	१०९०६
गृह और भूमि-कर	७१६२	८३६०
दूसरे कर	२७२६	३०१८
भाड़ा	३०२१	१७२६
दूसरे स्रोत	८५१७	७५७२
कुल आय	३२४१८	३१५८२
प्रबन्ध-व्यय	५२२५	४८१५
सार्वजनिक सुरक्षा	३३१७	२३१६
जलपूर्ति परिरक्षण	३३८	२६३
सफाई	८१४१	७५८८
अस्पताल	६०४७	५७६०
सार्वजनिक निर्माण	७५७	२०१२
शिक्षा	६२९४	१०५८६
दूसरे मद	२७४०	३०५५
व्यय-योग	३२८५९	३६३९५

अध्याय ११

निवासी

१. **जनसंख्या**—पिछली दो गणनाओंसे पहले (१९३१ ई० में) नैनीताल जिलेकी जनसंख्या निम्नलिखित प्रकार थी—(क) तहसीलोंके अनुसार—

तहसील	व्यक्ति	पुरुष	स्त्री	मुसलमान
काशीपुर (१८९ वर्गमील)	४४६९६	२४४४३	२०२५३	१७३०८
नैनीताल (४३३ वर्गमील)	६६६१६	३८६१९	२७९९७	१७४२
किच्चा (८२० वर्गमील)	८७९९१	५१४२९	३६५६२	२२३१३
हल्दवानी (१२७९ वर्गमील)	७७९८३	४७८४६	३०१३७	१०५३७
योग	२७७२८६	१६२३३७	११४९४९	५१९००

(ख) थानोंके अनुसार—

थाना	व्यक्ति	पुरुष	स्त्री	मुसलमान
आगर (पूर्व)	३३६७	१८५४	१५१३	१५
ऊँचाकोट	२६६१	१३५३	१३०६	२
काशीपुर	१६६२२	१४६६१	११९६१	११४८७
किच्चा	१३५४७	७७२६	५८२१	६६६४
कुटौली (तल्ली)	१८८५	९३२	९५३	
कुटौली (मल्ली)	४२८२	२४६८	१८१४	५७
कोटा (तल्ला)	३११७	१६४६	१४१७	
कोटा (मल्ला)	३२०२	१८२८	१३४७	३
कोस्यान (तल्ला)	३१४६	१६०५	१५४१	
कोस्यान (पूर्व मल्ला)	२१२३	१०५५	१०६८	
खातिमा	२६०८०	१५३३१	१०७४९	१८१६
चौगर	४५१६	२५०२	२०१४	८
चौभैंसी	१९६८	९४८	१०२०	
छखाता	४५९४	२५०४	२०९०	७
छखाता (पश्चिम)	८९३४	५०६८	३८६६	३८७
जसपुर	१८०१३	९७२३	८२९०	५८२४
तराई-भाबर जंगल-विभाग	१००७९	७७४८	२३३१	१२०६९
ताल (तल्ली नैनी-)	५८९८	४२९८	१६००	६२२
ताल (मल्ली नैनी-)	४७७५	३३३८	२४३७	५२९
धनियाकोट	३६९५	२१५६	१५३९	१६
नैनीताल जंगल डिवीजन	१६८७	१५०५	१८२	३८

बाजपुर	२२५७२	१२७८६	९७८६	९८३१
बिस्ज्यूला	२६८४	१३७८	१३०६	
रामगढ़	२८९६	१६३८	१२५८	५८
रामनगर	३१४०६	१७८१३	१३५९३	३७५४
रामनगर जंगल-डिवीजन	६०२१	४५४५	१४७६	३६५
राव (मल्ली)	११८६	५४३	६४३	
सितारगंज	१५६७९	८७६८	६९११	३१३८
सुरई जंगल-डिवीजन	६६५	५७२	९३	९६
हल्दवानी	३२०६४	१८४८४	१३५८०	५२७५
हल्दवानी जंगल-डिवीजन	७९२२	५५६१	२३६१	६४२

२. भाषा—जिलेके पहाड़ी भागमें कुमाउँनी भाषा बोली जाती है। तराई और भाबरके निवासी अधिकतर मैदानी लोग हैं, जिनकी वही बोली है, जो रुहेलखण्डमें बोली जाती है। रुहेलखण्डी या उत्तर-पांचाली भाषा व्रज-भाषाकी ही एक शाखा है, जो आगरा-धौलपुरसे यहाँ तराईतक प्रचलित है। तराई-भाबरके निवासी थारू और भुक्सा भी इसी बोलीको बोलते हैं, जिसमें कुछ थोड़ा-सा स्वरमें अन्तर होता है। ये दोनों जातियाँ किरात (मोन-ख्मेर) वंश की हैं, लेकिन शताब्दियों पहले अपनी भाषा भूल चुकी हैं।

३. जातियाँ—पहाड़में वही विस्ट (ब्राह्मण-राजपूत) और शिल्पकार जातियाँ बसती हैं; अलमोड़ा जिलेमें जिनके बारेमें हम पहले कह चुके हैं। मैदानमें उत्तर प्रदेशवाली पड़ोसी जातियाँ तराई और भाबरमें भी बसती हैं, जैसे ब्राह्मण, राजपूत, बनियाँ, अहीर, कुर्मी, कहार, माली, मुराव (कोइरी), लोंध, गूजर, तेली, चमार, गड़ेरिया आदि। हाँ, थारू और भुक्सा जातियाँ विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

(१) थारू—बिलहरी (तहसील किच्छा) परगनेमें थारू लोग अधिक संख्यामें रहते हैं। तराई-भाबरके मलेरिया उत्पीड़ित प्रदेशमें सहस्राब्दियोंसे रहते आये थारू ही अभ्यस्त हैं। हालमें तराई आबाद करनेके लिए जब बड़े पैमानेपर काम होने लगा, तो पहले मलेरियाकी रोक-थामकी कोशिश करनी पड़ी। वर्तमान शताब्दीके आरम्भमें इस जिलेमें थारू लोगोंकी संख्या १६०८५ थी। १८वीं शताब्दीके अन्ततक थारू और भुक्सा कुछ समयके लिए एक जगह खेती करते स्थान बदलते रहते थे। उस वक्त यही लोग तराई-भाबरके राजा थे, क्योंकि बीमारीके डरसे दूसरे वहाँ आनेकी हिम्मत नहीं करते थे। थारू जाति, अपने इसी नामसे मोरंग (पूर्णिया जिलेसे उत्तर)से पश्चिममें हरिद्वारके नजदीकतक सारी तराईमें पायी जाती है, बल्कि मैची लोगोंको किराती होनेसे इनका भाईबन्द मान लेनेपर वह दार्जलिंगकी तराईसे हरिद्वारतकके निवासी कहे जा सकते हैं। थारू लोगोंने अपनी भाषा छोड़कर अपने दक्षिणी पड़ोसियोंकी मैथिली, भोजपुरी, अवधी, और पंचाली भाषाओंको अपनाया है। नैनीताल जिलेमें यह पश्चिम-कोसीके पूर्व, मुख्यतः किलपुरी और नानकमता परगनोंमें पाये जाते हैं। इनके यहाँ स्त्रियोंका दर्जा काफी ऊँचा है। वे अपने पतिका जूठा क्या, साथ भी नहीं खातीं, क्योंकि वे उन्हें हीन समझती हैं। थारू जंगलके पास रहनेमें बहुत आनन्द मानते हैं। उसी तरह नदियोंसे भी उन्हें बहुत प्रेम है। शिकार और मछली मारना एक समय उनकी जीविकाके प्रधान साधन थे। इनके यहाँ भूत-प्रेतकी पूजा बहुत होती है, जिसके लिए भरारा (ओझा-सयानों)की पूछ बहुत है। खेतीमें भी थारू बहुत परिश्रमी हैं। उनके पिछड़ेपनसे पहाड़ी सूदखोर बहुत फायदा उठाते रहे हैं।

शराब और नशेकी बहुतायत थारू लोगोंके लिए एक भारी अभिशाप है, जिसके कारण वह महाजनोंके चंगुलमें पड़ जाते हैं। बिलहरी परगनेके थारुओंमें इतनी शिक्षा थी कि यहाँके प्रायः सभी पटवारी पहिलेसेही थारू हुआ करते थे। थारू लोगोंमें अब शिक्षाका प्रचार होने लगा है, जिसके कारण उनमें आत्मचेतना भी बढ़ गयी है। नेपालकी तराईके पिछड़े थारू भी अब नये जमानेसे प्रभावित होने लगे हैं।

(२) **भुक्सा**—जिस तरह जिलेकी तराईके पूर्वी भागमें थारू रहते हैं, उसी तरह पश्चिमी मार्गमें भुक्सा लोग रहते हैं। पानीके ये भी बड़े प्रेमी हैं। नहर-विभाग इनके पानीके अप-व्ययसे बड़ा शंकित रहा करता था। शताब्दीके आरम्भमें इनकी संख्या साढ़े चार हजारके करीब थी। अपनी शकल-सूरत (मंगोलायित मुखाकृति) और रीति-रिवाजमें ये थारुओंसे बहुत मिलते-जुलते हैं, किन्तु उनकी अपेक्षा अधिक पिछड़े हुए हैं; तो भी वह पुराने समयसे जनेऊ पहनते आये हैं। उनकी परम्परा बतलाती है कि धारा नगरीके राजा जगद्देवने अपने भाई उदियाजितको देश छोड़नेके लिए मजबूर किया। उदियाजित अपने कुछ अनुचरोंके साथ शारदा-तटपर आया। उसकी सेवाओंसे प्रसन्न होकर कुमाऊँके राजाने उसे बनवा प्रदान किया। इस प्रकार भुक्सा अपनेको पँवार-राजपूत कहते हैं। आईन अकबरीमें आजके रुद्रपुर और किलपुरी परगनेको भुक्सा नाम दिया गया है, जिससे जान पड़ता है कि वह १७वीं सदीमें भी इस जगह रहते थे। अपने थारू भाइयोंकी तरह ये भी मलेरियासे सुरक्षित हैं।

(३) **सौंस (अगरिया)**—इस पहाड़ी जातिकी संख्या १९०१की गणनामें ८५६ थी। लोहे और ताँबेकी धूनोंसे धातु निकालना इनका प्रधान पेशा था। आगर इनका मूलस्थान होनेके कारण इनका नाम अगरिया पड़ा। जिस वक्त खनिज-व्यवसाय उन्नतिपर था और विदेशी सस्ती धातुओंसे मुकाबला नहीं था, उस वक्त सौंस लोगोंकी अवस्था बहुत अच्छी थी। उनमेंसे कुछके पास भाबरमें अपनी भूमि थी। लेकिन, विदेशी प्रतियोगिताने चौपट कर कामकी तलाशमें धूनवाले स्थानोंको छोड़-कर इन्हें दूर-दूर बिखेर दिया।

४. **धर्म**—हम पीछे आँकड़ोंमें देख चुके हैं कि इस जिलेमें हिन्दू ही प्रधान धर्म है। पहाड़की ६६६१६ आबादी (१९३१ ई०) में केवल १७४२ मुसलमान थे, जिनमें भी अधिकतर नैनीतालके ग्रीष्म-राजधानी होनेके कारण रहते थे। तराई-भाबरमें अवश्य उनकी संख्या काफी थी। १९३१ ई० में सारे जिलेकी २७७२८६ की जनसंख्यामें २०५०३५ हिन्दू थे। शताब्दीके आरंभमें ईसाइयोंकी संख्या १४७० थी।

(१) **हिन्दू**—हिन्दुओंके मुख्य-मुख्य मन्दिर इस जिलेमें भीमताल, नैनीताल, अमेल कोस्यान, रानीबाग, कैलास, मुक्तेश्वर, खैरना, नौकुचियाताल और काशीपुरमें हैं। कोई बड़ा तीर्थ यहाँ नहीं है। हिन्दू देवी देवता यहाँ भी वही हैं, जो कि अलमोड़ामें हैं। पहाड़के स्थानीय देवताओंमें गोरिल (गोरेया) के बसाँत (ऊँचाकोट), हैरियागाँव (छखाता) और रानीबाग (चौथान) में प्रसिद्ध मन्दिर हैं। गोरेयाके नामसे यह देवता उत्तरी बिहारतक पूजा जाता है, इसलिए गोरिलको हम केवल स्थानीय देवता नहीं मान सकते। हो सकता है, यह आर्य-भिन्न जातियोंका बहुत पुराना देवता हो। बघान और हरू भी इसी तरहके स्थानीय देवता हैं।

(२) **इसलाम**—हम देख चुके हैं कि काशीपुर (१७३०८), किच्छा (२२३१३) और हल्द्वानी (१०५३७) की तहसीलोंमें मुसलमानोंकी काफी संख्या है। इनमें भी काशीपुर

(११४८४) और बाजपुर (९८३१) थानोंमें तो कितने ही गाँवके गाँव मुसलमान शेखोंके हैं। मुसलमानोंमें तुर्क, पठान जैसी बाहरसे आई हुई जातियोंके अतिरिक्त जुलाहा, फकीर, राई, तेली, बढ़ई, बेहना और मेवाती जैसी पीछे मुसलमान बनी जातियाँ भी सम्मिलित हैं। सबसे अधिक संख्या शेखोंकी है, जिनके सिद्दीकी और कुरैशी दोनों भागोंमें कुरैशी भाबरमें ज्यादा पाये जाते हैं। शेखोंके बाद जुलाहोंका नम्बर है। खानदानी पेशेसे हाथ धोकर अब यह ज्यादातर खेतीपर गुजारा करते हैं —तराईके मुसलमानोंमें इन्हींकी संख्या अधिक है।

(३) ईसाई—ईसाई धर्मका प्रचार अँग्रेजी राज्यकी स्थापनाके बादसे ही होने लगा, और जैसा कि हम बतला चुके हैं, हेनरी रामजेके शासनकालमें उन्हें बहुत प्रोत्साहन मिला। प्रेसबेटेरियन, रोमनकैथलिक, अंग्लिकन, अमेरिकन, एपिस्कोपल, मेथोडिस्ट जैसे कई सम्प्रदायोंके मिशन यहाँ प्रचारका काम करते रहे हैं। अमेरिकन मिशनका काम आज भी पहले की ही तरह अच्छी हालतमें है। १८५७ ई० के गदरमें बरेलीसे भागकर पादरी व० बटलर नैनीतालमें शरणार्थी हुए। उसी समय उन्होंने मल्लीतालमें किरायेका घर लेकर पूजा-प्रार्थना शुरू की। तबसे इस मिशनका काम आगे बढ़ता ही रहा। १८५९ ई० में उन्होंने मिशनहाल नामक पहला गिर्जा नैनीतालमें बनाया, फिर कई स्कूल खोले। आजकल दूसरे ईसाई मिशनोंका धनस्रोत सूख-सा गया है, लेकिन अमेरिका धार्मिक क्षेत्रमें भी डालरकी वर्षा कर सकता है, इसलिए अमेरिकन मिशनके ह्रास होनेकी कोई सम्भावना नहीं है, बल्कि उसके नये-नये प्रचारक कुमाऊँकी उत्तरी सीमाके पासतक पहुँचनेकी कोशिश कर रहे हैं।

अध्याय १२

आजीविका

जीविकाके साधन भारतकी अन्य जगहोंकी तरह इस जिलेमें भी वही प्राचीन कालसे चले आये पेशे हैं।

१. कृषि—शताब्दीके आरम्भमें ६३ प्रतिशत लोग केवल खेतीपर गुजारा करते थे, लेकिन इसमें वे खेतवाले खेतिहर मजदूरोंको जोड़ देनेपर वह संख्या ८० सैकड़ातक पहुँचेगी। ग्रामोद्योग जैसे पेशोंमें १३ सैकड़ासे कुछ ही अधिक लोग जीविका कमाते थे। दूकानदारों और दूसरे बुद्धिजीवी पेशावालोंकी संख्या २ सैकड़ासे भी कम थी। आज भी जिलेके लोग उसी तरह खेतीके ऊपर निर्भर करते हैं, जैसे आधी शताब्दी पहले। सन् १३३८ फसली (१९२१ ई०)में नैनीताल और उससे अगले साल (१९२२ ई०)में बाकी तहसीलोंके खेती सम्बन्धी आँकड़े (एकड़) निम्नलिखित प्रकार हैं—

परगना या तहसील	कुल क्षेत्रफल	बंजर	कृषि-योग्य	नहरी	सूखी	योग
नैनीताल तहसील—						
कुटौली	५१७३	१९४	१७२४	९१	३१६४	३२५५
कोठा	४०२७	२२९	९५६	३३९	२५०३	२८४२
छखाता	६०९७	८८२	१५२७	५६३	३१२५	३६८५
धनियाकोट	१०४३२	१६६९	१९६१	१२९९	५५०३	६८०२
ध्यानीराव	१४७०२	१७३६	३०५८	५६५	९३४३	९९०८
महरारी	४८०९	४००	१३३१	४१	२६३२	२६७६
योग तहसील	४९३८२	५५०५	११८६८	२९००	२१११९	३२०११
भू-कर (१९०२ ई०) ४९१७१ रु०						
भाबर तहसील—						
कोटा	१७४१९	१७४२	७७१८	७२१३	७५६	७९६९
कोटा-भाबर	५९२०	६९७	३०४१	२११७	६५	२१८२
चिलकिया	२२५७१	२१२०	९०५३	११००४	३९४	११३९८
चौभैंसी-भाबर	२६१८	१३९	१५९६	८८१	२	८८३
छखाता-भाबर	३३११५	२३५४	१३५७१	१६८०५	३८५	१७१९०
योग-तहसील	२१६४३					२९६२२
भूकर (१९२४ ई०) ६७४२२ + १५९७२२ = २२७१४४ रु०						
तराई तहसील—						
किलपुरी	३५१५५	१६३८५	२४००७	३४५९	५३४५	८८०४
गदरपुर	४७१९१	३८३७	३३९०९	५९१७	३४७४	९४४५
टनकपुर	६६५७	९२६	४९९८		७३३	७३३
नानकमता	४३१६५	३८८५	२७७९१	७२१	१०७६८	११४८९

बाजपुर	६५६२२	६६२५	४४३३९	१८५८	१२०००	१४०५८
मानाझुण्डी	८७८१	७८०	४१७५	१३६२	२४६४	३८२६
रुद्रपुर	७७९०४	६०८८	५६९७०	२३०७	१२५३९	१४८४६
योग-तहसील	२८३८७५					६३२०१
भू-कर (१९२४ ई०)	२१७३५९ रु०					
काशीपुर-तहसील	१०८६६१	११९१२	६३९९०	४७०९	२८०५०	३२७५९
भू-कर (१९१५ ई०)	७७९७२					
योग जिला	५२३५६१					१६७५९३
भू कर शेष सहित	५८१७०६ रु०					

ऊपरकी तालिकासे मालूम होगा, कि भाबरकी खेती अधिकतर नहरकी सिंचाईपर निर्भर करती है। दूसरे भागोंमें बे-नहरी सूखी खेती भी काफी है। सिंचाईके लिए भाबरमें सरकारने बहुत ध्यान दिया है।

नहरोंका विवरण निम्नलिखित प्रकार है—

चोरगलिया-नहर—यह भाबरकी मुख्य नहर है, जिसे नंधौर नदीसे उस जगह निकाला गया है, जहाँ वह पहाड़से नीचे उतरती है। यह सितारगंज-सड़कके साथ-साथ चलती है।

गोला—गोला नदीसे पार और वार दो नहरें निकाली गयी हैं। इनमेंसे **गोलापार** गोलाके पूर्वी तटसे सुखी नदीके तटकी भूमिको सींचती है। यह काठगोदामके झूलापुलके पाससे निकाली गयी है। **गोलावार** गोला नदीके पश्चिमसे काठगोदाम पुलसे चौथाई मील ऊपरसे निकलकर ५६ मीलतक गयी है। इस नहरको प्रायः सभी जगह पक्का बनानेकी जरूरत पड़ी। यह भकराके पासतककी भूमिको सींचती है।

रामनगर-नहर—यह २८ मील लम्बी नहर प्रायः सारी पक्की है। यह कोसीसे निकाली गयी है, जो हमेशा इसे छिन्न-भिन्न करनेकी कोशिश करती है।

चिलकिया—यह १३ मील लम्बी नहर काशीपुर-मुरादाबादकी पुरानी सड़कके साथ-साथ जाती है।

इनके अतिरिक्त जस्सागंजा, फतेहपुर, चौंसिला, गयागाँव, देइचौरी, कोटा, कमोला, धमोला पावलगढ़, किचेरी, बरैल, दबका, ढिकुली, सवालदह, ढेला, फीका आदि कितनी ही और भी छोटी-छोटी नहरें हैं।

तराईकी नदियोंसे सिंचाईका काम बहुत पुराने समयसे लिया जाता है। यहाँ भाबरकी तरह धरतीके भीतर नदीकी धाराओंके अन्तर्धान होनेका डर नहीं है। यहाँ नदियोंकी धार मोड़नेका सुभीता है और पानी भी बहुतायतसे पाया जाता है, लेकिन यहाँ नहर-निर्माणकी ओर सरकारने उतना ध्यान नहीं दिया। किलपुरीमें कटना-नहरका निर्माण १८८९ ई० में हुआ। बहगुल और पहजकी नहरें नैनीतालकी तराईके अतिरिक्त बरेली जिलेमें भी सिंचाई करती हैं। लोहिया नहर भी तराईमें ही है। बाजपुर परगनेमें पथरी नदीसे बाजपुर और नारायणपुरकी नहरें निकाली गयी हैं, जिनकी लम्बाई १४ मीलके करीब है। गंदलीकी नहर खेलाखेरा ९ मील लम्बी है। रमपुरा और रतनपुराकी नहरें कुल ७ मील लम्बी हैं, जो घुंगी जोगीपुरा नदीसे निकाली गयी हैं। इनके अतिरिक्त करीब ३३ मील लम्बी नहरें लेबदूआ, कुकरेंदा और संदलाकी धाराओंसे निकाली गयी हैं।

तराईके गदरपुर परगनेमें भी कई नहरें हैं, जिनमें ज्यौनार, रामसागर, कज्जिया, भखरा, चन्दनपुरा आदि प्रायः ७८ मील लम्बी नहरें हैं। रुद्रपुर परगनेमें डिमरी, बघैया, मदनी और नवबहार

नदियोंसे निकाली नहरें हैं। लालपुर और महाराजपुरकी कुछ बड़ी (१४ मील लम्बी) और बहगुल, बरोर और बराईकी छोटी-छोटी नहरें हैं। किलपुरी परगनेकी महत्त्वपूर्ण नहर कटना २४ मील लम्बी है।

काशीपुरमें—अँग्रेजी राज्यसे पहले भी नहरें थीं। तराईकी नहरें सरकारी जमींदारी विभागके प्रबन्धमें हैं, जिनमेंसे मुख्य चार हैं। किलौली (ऊपरीढेला) नहर, दोनासागर नहर, खण्डेसरी नहर और महादेव नहर।

२. बागवानी—पहाड़के भिन्न-भिन्न उन्नतांशोंके कारण वहाँ अच्छे-अच्छे फलोंके बाग लगानेका बहुत सुभीता है, लेकिन फलोंकी ओर कभी उतना ध्यान नहीं दिया गया। निम्नलिखित स्थानोंमें फलोंके बगीचे पाये जाते हैं—

स्थान	फल	मौसम
जेयलीकोट (सरकारी बाग)	केला	प्रायः सदा
तराई-भाबर	अमरूद	जुलाई
	आम	,,
	पपीता	फरवरी-मार्च
धारी	सेब	अगस्त-सितम्बर
भीमताल (४५०० फुट)	अखरोट, चेस्टनट, (पाँगर)	अक्तूबर
रामगढ़ (५८७२ फुट)	गिलास (चेरी), आड़ू, खूबानी	मई-जून

३. उद्योग—उद्योगके नामपर यहाँ कुछ गृहशिल्प ही देखनेमें आते हैं। 'कुमाऊँ लोहा कम्पनी'ने दिवाला निकालकर लोगोंकी हिम्मत ही तोड़ दी। सुहागा साफ करनेके पाँच-छ छोटे-छोटे कारखाने रामनगरमें काम करते थे, जिनके लिए सोहागा तिब्बतसे आता था, और केवल उसकी सफाई करना ही इन फैक्टरियोंका काम था। रामनगरसे गढ़वालकी ओर मोटरकी सड़क नहीं है, और उधर कोटद्वारासे जोशी मठके पासतक मोटरें दौड़ने लगी हैं, इसलिए भोटान्तिक व्यापारी अब रामनगरकी जगह कोटद्वारा जाना ज्यादा पसन्द करते हैं। वैसे भी सोहागाका बाजार पहलेसे ही गिरा हुआ था।

चमड़ेका काम पुराने ढंगसे होता है, जिसके कारण अच्छे किस्मका चमड़ा तैयार नहीं हो सकता। सरकारकी ओरसे कुटीर-उद्योगके तौरपर आधुनिक रसायनोंसे चमड़ेकी सिझाई करनेकी शिक्षा होनी चाहिये, लेकिन यह न करके सिलाईकी विद्या सिखलायी जाती है, जिसे यहाँके मोची लोग स्वयं कर सकते हैं।

लकड़ीका कोयला, कत्था बनाना, जड़ी-बूटियोंका संग्रह, शहद जमा करना, टोकरी और रस्सी बनाना जैसे काम थोड़े-बहुत किये जाते हैं।

४. व्यापार—शहरों और कितनी ही बड़ी बस्तियोंमें दूकानें हैं, जिनमें कहीं-कहीं खास-खास दिनोंपर बाजार भी लगता है। इनके अतिरिक्त मेलोंके समय भी चीजोंकी बिक्री होती है। इस जिलेके बाजार और मेले निम्नलिखित प्रकार हैं—

बाजार-सूची

नाम	तहसील	दिन
आलापुर	बाजपुर	सोमवार
कालाढुंगी	हल्दवानी	शुक्र
काशीपुर	काशीपुर	मंगल, शनि
किच्छा (खास)	किच्छा	सोम, शुक्र

नाम	तहसील	दिन
केलाखोरा	बाजपुर	शुक्र
कोटाबाग	रामनगर	शनिवार
खातिमा	खातिमा	मंगल, शुक्र
चोरगलिया	हल्दवानी	शुक्र
जसपुर	काशीपुर	सोम, शुक्र
टनकपुर बाजार	खातिमा	प्रतिदिन
बरूखेड़ा	बाजपुर	रविवार
बारा	किच्छा	बुध,रवि
बैलपड़ाव	रामनगर	बृहस्पति
भुवरा	काशीपुर	रवि
मडुआखेरा	काशीपुर	बृहस्पति
मझोला	खातिमा	सोम, बृहस्पति
महुआडबरा	काशीपुर	मंगल
रायपुर	,,	शनि
रुद्रपुर	किच्छा	मंगल, रवि
सितारगंज (खास)	सितारगंज	बृहस्पति, रवि
सुल्तानपुर	बाजपुर	बुध
हल्दवानी	हल्दवानी	मंगल

मेला-सूची

स्थान	नाम	परगना
अटरिया	अटरियादेवी	रुद्रपुर
आलापुर	रामलीला	बाजपुर
उजैन	देवी	काशीपुर
घरखण्डी	शिवरात्रि	बाजपुर
चन्दायन	शिवरात्रि	गदरपुर
झारी	झारी	किलपुरी
नानकमता	गुरुनानक	नानकमता
बाजपुर	मुहर्रम	बाजपुर
बिजटी	जियारत	भैनाझुण्डी
बिलहरी	शारदास्नान	बिलहरी
	शिवरात्रि	
	जेठ-दसहरा	
मसूत	मुहर्रम	गदरपुर
सुल्तानपुर	रामलीला,	बाजपुर
	गंगास्नान, मुहर्रम	

अध्याय १३

यातायात

रेल और सड़कें, जिलेमें यातायातके साधन हैं। मोटरोंका प्रचार बढ़नेके साथ यातायातकी सुविधाएँ भी बढ़ी हैं।

१. रेल—इस जिलेमें केवल छोटी लाइन है, जिसे पहले रुहेलखण्ड-कुमाऊँ, फिर अवध-तिरहुत और आजकल उत्तरी रेलवे कहते हैं। बरेली और लखनऊ दोनों तरफसे आनेवाली लाइनें भोजपुरीमें मिलकर काठगोदामतक जाती हैं। इसी लाइन (लालकुआँ)से एक शाखा तराई पार करती काशीपुर जाती है, जहाँ मुरादाबादसे रामनगर जानेवाली लाइन मिल जाती है। पहली रेलवे लाइन जिलेमें २४ अक्तूबर १८८४ को खुली थी।

२. सड़कें—पहाड़ी सड़कोंमें अधिकतर अब भी पहियेवाली सवारियोंके लिए उपयुक्त नहीं है, लेकिन प्रथम विश्वयुद्धके बाद मोटरवाली सड़कोंके बनानेकी ओर विशेष ध्यान दिया गया। नैनीतालसे अब सीधे बरेली और मुरादाबादकी बसें मिलती हैं और आदमी ट्रेनें बदलनेकी दिक्कतसे बच जाता है। यहाँकी सड़कें प्रान्तीय एवं स्थानीय (सरकारी जमींदारी), दो तरहकी हैं। बरेलीसे नैनीतालकी सड़क प्रान्तीय कही जाती है, जिसके ऊपर किच्छा, लालकुआँ, हल्दवानी और काठगोदाम पड़ते हैं। यह रेलवे लाइनके साथ-साथ चलती है। इसके अतिरिक्त छ और प्रान्तीय सड़कें हैं, जिनमेंसे अधिक कच्ची हैं। रामनगरसे रानीखेतकी पहाड़ी सड़क बहुत पहले ही बैलगाड़ियोंके उपयोगके लिए बनायी गयी थी। इस जिलेमें यह सड़क तीस मील लम्बी है। इसीके कारण रामनगर पहाड़ी मालके लिए सबसे बड़ी मण्डी बन गया था।

ये प्रान्तीय सड़कें पहाड़ और तराई-भाबर, दोनोंमें पायी जाती हैं, जब कि सरकारी जमींदारीकी सड़कें अधिकतर भाबर और कुछ तराईमें भी हैं।

कुछ सड़कोंका विवरण (१९३१ ई०) निम्नलिखित प्रकार है—

(क) प्रान्तीय—

नाम	मील	फर्लांग	
१. बरेली-रानीखेत	६१	३	मोटर-सड़क
२. बरेली-नैनीताल	१०	३	,,
३. रानीबाग-अलमोड़ा	३७		,,
४. रामनगर-रानीखेत	२९	६	,,
५. नैनीताल-रानीबाग	१०	४	,,
६. काठगोदाम-अलमोड़ा	३१	२	,,
७. पश्चिमी मालरोड, भीमताल	१		
८. नैनीताल-रामगढ़	९		,,
९. भवाली-भीमताल	३	६	,,
१०. नथुवाखान-मुक्तेश्वर	३	४	,,
११. भीमताल-धारी-मुक्तेश्वर	१३	५	,,

(ख) स्थानीय—

(i) रामनगर सरकारी जमींदारी (तराई-भाबर)

१. हरद्वार-बरमदेव (भकरासे लालघान)	३१		
२. मुख्य तराई (सुल्तानपुर-घुमरी)	२३		
३. धनौरी-खजिया (कोसी-खोजिया)	१८		
४. कनौरी-रामनगर (कनौरीसे ज्वालावन)	९		
५. बाराखेरा-हल्दवानी-पीपलपड़ाव	९		
६. बाराखेरा-सकेनिया	४		
७. नैनीताल-मुरादाबाद (कालाढुंगी-रामपुर सीमा)	१८	६	
८. छोई-बाजपुर आदि छोटी सड़कें	७	३	
९. रामनगर-कोटा (खियारीसे कोटा)	८	३	
१०. चिलकिया-जसपुर	७	६	
११. रामगगर-बनकुआँ	८	५	
१२. रामनगर-शिवनाथपुर (सामलदेव तक)	७	६	
१३. रामनगर-चोरपानी (मिल)	१		
१४. बैलपड़ाव-ज्वालाभान	५		
१५. छोई-किच्छा	२	७	
१६. बैलपड़ाव-पावलगढ़	४	५	
१७. देइचौरी-मूसाबाँगर	३	२	
१८. कोटाबाग-बजुनियाहल्दू	५	२	
१९. देवरामपुर-देवचोरिया	३		
२०. गुरानीबाग-पटोलिया	१		
२१. कालाढुंगी-अमडोली	१		
२२. कालाढुंगी-मुरादाबाद	१		
२३. अमडोली-नयागाँव	१		
	६९ प्रायः		

(ii) हल्दवानी सरकारी जमींदारी सड़क—

१. दुनिमी-रुद्रपुर	४	४	मुख्य तराई सड़क
२. रुद्रपुर-किच्छा	८		
३. किच्छा-सितारगंज	१५		
४. सितारगंज-खातिमा	१७		
५. रुद्रपुर-टाँडा	८		
६. टाँडा-हल्दवानी	१२		
७. सितारगंज-डोलाबाँट	१२		
८. किच्छा-दराव	६		
९. सितारगंज-पीलीभीत	६		

१०. सितारगंज-हुरई	१२	
११. हुरई-कुँअरपुर	८	
१२. कुँअरपुर-सीतलानगरी	४	
१३. सितारगंज-चोरगलिया		
१४. खातिमा-टनकपुर	१५	
१५. टनकपुर-बरमदेव	५	
१६. खातिमा-पीलीभीत	१०	
१७. खातिमा-मेलाघाट	८	
१८. हल्दवानी-चोरगलिया	१२	
१९. हल्दवानी-भाबरा	८	
२०. हल्दवानी-फतेहपुर	५	४
२१. फतेहपुर सड़ककी शाखा	२	२
२२. लालकुँआ		४
२३. सितारगंज-बिजटी	४	४

३. घाट—इस जिलेमें निम्नलिखित नदियोंके घाट पड़ते हैं—

घाट	नदी	परगना
१. कुण्डेसरा	पथरी	काशीपुर
२. केलकलेरा	दबका	बाजपुर
३. गावघाट	घोसा	रुद्रपुर
४. झनकोट	लोहिया	बिलहरी
५. टाँडा	कोसी	काशीपुर
६. मोहनपुर	भखरा	गदरपुर
७. सुल्तानपुर	नाया	बाजपुर

४. डाकबँगले—इस जिले में चार तरहके डाकबँगले हैं—यात्राबँगले (या० बं०) जो लोक-निर्माण-विभागके अधीन हैं। निरीक्षण-भवन (नि० भ०) भी लोककार्य विभागके हाथमें हैं। जंगल बँगला (जं०बं०) जंगल-विभागके अधीन हैं और सरकारी जमींदारी बँगले (स० जमीं०) सरकारी जमींदारी विभागके हैं।

डाकबँगलोंकी सूची

१. आँवलाखेरा	जंगलबँगला	९. खातिमा (१८९२ ई०)	स० जमीं०
२. कलोना	जं० बं०	१०. खेरना (१८६४ ई०)	या० बं०
३. काठगोदाम	यात्राबँगला	११. गदरपुर	स० जमीं०
४. कालदेव	जं० बं०	१२. गरजिया	नि० भ०, जं० बं०
५. कालाढुंगी	सरकारी जमींदारी	१३. चोरगलिया	जं० बं०, स० जमीं०
६. किच्चा	निरीक्षण-भवन (लोककार्य)	१४. छोई	स० जमीं०
७. किलबरी	जं० बं०	१५. जौलासाल	जं० बं०
८. कोटा	स० जमीं०	१६. झालूदेव	जं० बं०

१७. डंडाकठोती	जं० बं०	३१. भीमताल (१८६५ ई०)	नि० भ०
१८. ढेला	जं० बं०	३२. मंगोली	स० जमी०
१९. देइचौरी	जं० बं०	३३. मालधन	जं० बं०
२०. धनौर	जं० बं०	३४. मालवाताल	या० बं०
२१. धारी (१८९४ ई०)	या० बं०	३५. मोहन	जं० बं०
२२. नलेना	नि० भ०	३६. रतीघाट	नि० भ०
२३ निंगलाट	जं बं०	३७. रानीबाग (१८६६ ई०)	या० बं०
२४. प्यौड़ा (१८६७ ई०)	या० बं०	३८. रामगढ़	नि० भ०, या बं० (१७६७ ई०
२५. बाजपुर	स० जमी०	३९. रामनगर	जं० बं०, स० जमी०
२६. बालदेवखान	नि० भ०	४०. रुद्रपुर	स० जमी०
२७. बेतालघाट	नि० भ०	४१. शिवतरा	जं० बं०
२८. बैलपड़ाव	स० जमी०	४२. सैनापानी	जं० बं०
२९. ब्रेवरी	या० बं० होटल	४३. हल्दवानी	जं० बं०, नि० भ०, स० जमी०
३०. भवाली (१८६४ ई०)	या० बं०, सं० जमी०	४४. होराई	जं० बं०

इस प्रकार मालूम होगा कि जिलेमें डाकबँगलोंकी संख्या काफी है, लेकिन यात्रियोंके सुभीतेका ध्यान नहीं है, और उनमें ठहरनेके लिए आज्ञा पानेके वास्ते कई दरवाजोंको खटखटाना पड़ता है—यात्राबँगले और निरीक्षण-भवनोंके लिए लोककार्य-इञ्जीनियर या डिस्ट्रिक्ट बोर्डके इञ्जीनियरको (नैनीताल) लिखना पड़ेगा और जंगल-विभाग तथा सरकारी जमींदारीके अफसर अपने बँगलोंमें ठहरनेकी इजाजत दे सकते हैं।

संचार—

तारघर और डाकखाने संचारके साधन हैं। डाकखानोंकी संख्या अब बहुत बढ़ गयी है। तारघर, रेल-स्टेशनोंके अतिरिक्त नैनीताल, भवाली जैसे स्थानोंमें पाये जाते हैं। जिलेके डाकखानोंकी सूची (१९३१ ई०) निम्नलिखित प्रकार है—

डाकखाना-सूची

नाम	श्रेणी	नाम	श्रेणी
उत्तरप्रदेश सरकार कैम्प (नैनीताल)	उप-डाकखाना	टनकपुर	शाखा०
काठगोदाम	उप०	तल्लीताल	उप०
कालाढुंगी	शाखा-डाकखाना	दरौंव	शाखा०
काशीपुर	उप०	नैनीताल	मुख्य डाक०
किच्चा	,,	पटवाडाँगर	उप०
कैलाखेड़ा	शाखा०	प्युरे	शाखा०
कोटा	,,	भवाली	,,
खातिमा	,,	भवाली सेनीटोरियम	उप०
खानस्यून	,,	भीमताल	,,
खैरना	,,	मुक्तेसर-कुमाऊँ	,,
गदरपुर	,,	रामगढ़	,,
गरमपानी	,,	रामनगर	,,
चोरगलिया	,,	लालकुआँ	शाखा०
जसपुर	,,	सितारगंज	,,
जेवलीकोट	उप०	सुल्तानपुर	,,
		हल्दवानी	उप०

अध्याय १४

शिक्षा

जिलेमें उच्चशिक्षाके लिए नैनीतालमें डिग्री कालेज तथा लड़कियोंके लिए इण्टर कालेज है। नैनीतालमें ही बिड़ला विद्याभवन तथा दूसरे कई यूरोपियन ढंगके स्कूल हैं। यूरोपियन स्कूलों-की संख्या १९४७ के बाद पहलेसे कम हो गयी। भवाली, रामगढ़, काठगोदाम, हल्दवानी, काशीपुर, रामनगर आदिमें हाई स्कूल हैं। पिछले तीन-चार वर्षोंमें गावोंमें स्कूलोंकी संख्या बहुत तेजीसे बढ़ी है और अब शायद ही कोई ऐसा बड़ा गाँव हो, जिसमें लोअर-प्राइमरी, अपर-प्राइमरी या मिडिल स्कूल न हो। १९३१ के आँकड़ोंके अनुसार इस जिलेमें निम्नलिखित शिक्षालय हैं—

नाम	श्रेणी	तहसील
अंगदपुर	प्राइमरी (प्रारम्भिक)	काशीपुर
अघौरा	प्रा०	चौगठ N
आबादनगर	प्रा०	बाजपुर
उल्हैटापुर	प्रा०	बाजपुर
ऊँचाकोट	प्रा०	ऊँचाकोट N
ओखलकण्डा	मिडिल०	बिसज्यूला N
कठघरना	प्रा०	हल्दवानी
कण्डा	प्रा०	राव N
कनिया	प्रा०	रामनगर
कनौरा	प्रा०	बाजपुर
काठगोदाम	प्रा०, हाई०	हल्दवानी
कालाढुंगी	कन्या०, प्रा० मिडिल०	हल्दवानी
काशीपुर	कन्या०, प्रा०, हाई०	काशीपुर
कासिमपुर	सहायताप्राप्त	काशीपुर
किच्चा	प्रा०	किच्चा
कुँवरपुर	प्रा०	हल्दवानी
कुसमखेरा	प्रा०	हल्दवानी
कूल	प्रा०	कुटौली N
केलाखेरा	प्रा०	बाजपुर
कोटाबाग	कन्या०, प्रा०, मिडिल०	रामनगर
खतिमा	प्रा०, मिडिल०	खतिमा
खमारी	प्रा०	पहाड़कोटा N
खानस्यून	प्रा०	बिसज्यूला N

N = नैनीताल तहसील

खालीमेहवट	प्रा०	खतिमा
खितरसरा	प्रा०	खतिमा
खुरपाताल	प्रा०	पहाड़कोटा N
खुशालपुर	प्रा०	बाजपुर
खूनीगढ़	प्रा०	छखाता N
गदरपुर	प्रा०	बाजपुर
गरगरी	प्रा०	चौगढ़ N
गुरखुरा	प्रा०	खतिमा
गुलरिया	सहायताप्राप्त	काशीपुर
गैबुवा	प्रा०	रामनगर
चमोली	प्रा०	चौगढ़ N
चरुवेटा	प्रा०	खतिमा
चोरगलिया	प्रा०	हल्दवानी
च्यौरीगढ़	प्रा०	बिसज्यूला N
जंगलियागाँव	प्रा०	छखाता N
जमनसिंह नवार	प्रा०	हल्दवानी
जमरारी	प्रा०	बिसज्यूला N
जसपुर	इस्लामिया०, कन्या०, स० प्राप्त, प्रा०, मिडिल, हाई०	काशीपुर
जसागजा	प्रा०	रामनगर
जेवलीकोट	प्रा०	छखाता N
जोस्युरा	प्रा०	चौमैंसी N
जौरासी	प्रा०	कुटौली N
झनकट	प्रा०	खतिमा
टंडी	प्रा०	आगर N
टनकपुर	प्रा०	खतिमा
टुसरार	प्रा०	बिसज्यूला N
ढिकुली	प्रा०	रामनगर
ढुंगसील	प्रा०	छखाता N
ढोलीगाँव	प्रा०	राव N
तिंबर	प्रा०	चौगढ़ N
दराँव	प्रा०	किच्छा
दुदुली	प्रा०	छखाता N
दूदावाला	प्रा०	काशीपुर
देवदारा	प्रा०	कुटौली N

N = नैनीताल तहसील

देवरी	प्रा०	खतिमा
देवीपुरा	प्रा०	काशीपुर
देवीरामपुर	प्रा०	रामनगर
दोनपरेवा	प्रा०	पहाड़कोटा N
दौलतपुर	प्रा०	हल्दवानी
धनियाकोट	प्रा०	धनियाकोट N
धरमपुर	प्रा०	काशीपुर
धारी	प्रा०	आगर N
नकटपुर	इस्लामिया०	खतिमा
नई	प्रा०	चौभैंसी N
नदन्ना	प्रा०	खतिमा
नदेही	प्रा०	काशीपुर
नबदिया पस्तोर	प्रा०	खतिमा
नरायनपुर	प्रा०	बाजपुर
निगलाट	प्रा०	धनियाकोट N
निवारमंडी	प्रा०	काशीपुर
नैगीगाँव	प्रा०	पहाड़कोटा N
नैनीताल	कालेज (डिग्री) कन्या० (इन्टर०) आदि	
नौकुचियाताल	प्रा०	छखाता N
पंगरारी	प्रा०	कुटौली N
पटको	प्रा०	रामनगर
पटपरा	प्रा०	खतिमा
पड़ली	प्रा०	धनियाकोट N
पतलिया	कन्या०, प्रा०	रामनगर
पतसाझाव	प्रा०	खतिमा
पावलगढ़	प्रा०	रामनगर
पिंडराव	प्रा०	छखाता N
पैंगा	प्रा०	काशीपुर
पोखरी	प्रा०	चौगढ़ N
प्योडा	प्रा०	कुटौली N
फुलैया	प्रा०	खतिमा
बगड	प्रा०	छखाता N
बजुनिया (हल्दू)	प्रा०	रामनगर
बड़ाखेड़ा (पांडे)	प्रा०	काशीपुर
बनना	प्रा०	छखाता N

N = नैनीताल तहसील

बनफूलपुरा	इस्लामिया०	हल्दवानी
बबयार	प्रा०	छखाता N
बबरखेड़ा	प्रा०	काशीपुर
बाजपुर	प्रा०	बाजपुर
बाझ	प्रा०	कुटौली N
बामनपुरी	प्रा०	किच्चा
बारा	प्रा०	,,
बाँसखेड़ा	प्रा०	काशीपुर
बासगाँव	प्रा०	रामगढ़ N
बिगराबाग	प्रा०	खतिमा
बिदौरा	प्रा०	,,
बेरिया	प्रा०	,,
बेरिया मझोला	प्रा०	,,
ब्रेवरी	प्रा०	छखाता N
बैलपड़ाव	प्रा०	रामनगर
भकर	प्रा०	छखाता N
भदयून	प्रा०	कुटौली N
भागा	प्रा०	किच्चा
भालुन	प्रा०	पहाडकोटा N
भीमताल	कन्या०, मिडिल	छखाता N
भुवरा	प्रा०	काशीपुर
भूमिया धार	प्रा०	छखाता N
भुरिया	प्रा०	किच्चा
भखवारा	प्रा०	खतिमा
मजुली	प्रा०	चौभैंसी N
मझेरा	कन्या०, प्रा०	धनियाकोट N
मढरागाँव	प्रा०	छखाता N
महवाखेड़ागंज	इस्लामिया०	काशीपुर
महवाडबरा	इस्लामिया० प्रा०	,,
महेशपुरा	प्रा०	,,
मुक्तेश्वर	प्रा०	कुटौली N
मुहम्मदपुर	प्रा०	खतिमा
मौना	प्रा०	कुटौली N
राजपुरा (रानी)	प्रा०	काशीपुर
रामगढ़	कन्या०, हाई०	रामगढ़ N
रामगढ़-तल्ला	प्रा०	रामगढ़ N

N = नैनीताल तहसील

रामगढ़-मल्ला	प्रा०, हाई०	रामगढ़ N
रामनगर	कन्या० प्रा०, हाई०	रामनगर
रायपुर	प्रा०, सहायताप्राप्त०	काशीपुर
रावलजंगल	प्रा०	आगर N
रौसिल	प्रा०	छखाता N
लमाखेड़ा	प्रा०	खतिमा
लवार	प्रा०	चौगढ़ N
लालपुर	प्रा०	किच्छा
लोहली	प्रा०, मिडिल	धनियाकोट N
ल्वेसाल	प्रा०	कुटौली N
वारी	प्रा०	चौभैंसी N
विनायक	प्रा०	छखाता N
शरीपुर बिचवा	प्रा०	खतिमा
शिमालखलिया	प्रा०	रामनगर
शिमाल्खा	प्रा०	ऊँचाकोट
श्यामखेत	प्रा०	छखाता N
सतबुंगा	प्रा०	रामगढ़ N
संन्यासीवाला	प्रा०	काशीपुर
सरमाखेत	प्रा०	आगर N
सहदौरा	प्रा०	किच्छा
सिगौली	प्रा०	कुटौली N
सितारगंज	प्रा०	किच्छा
सिमैल	प्रा०	कुटौली N
सिलौरी	कन्या०	छखाता N
सिसौना	प्रा०	किच्छा
सीतापुरी	प्रा०	बाजपुर
सुनखरी	प्रा०	खतिमा
सुन्दरखाल	प्रा०	आगर N
सुयालखेत	प्रा०	कुटौली N
सुल्तानपुर	प्रा०	बाजपुर
सूपी	प्रा०	रामगढ़
सैजना	प्रा०	किच्छा
हल्दवानी*	कन्या०, प्रा०, हाई०	हल्दवानी
हजिरा	प्रा०	बाजपुर

N = नैनीताल तहसील

अध्याय १५

प्रसिद्ध ग्राम-नगर

आगर पट्टी--यह रामगढ़के पहाड़ी परगनेमें सबसे बड़ी पट्टी है। पट्टीके पहाड़ काफी ऊँचे हैं, जिनके उपरी भागोंमें बंजके जंगल हैं। इस पट्टीमें पहले कई लोहेकी खानें थीं, जिनमें सौंस लोग काम करते थे। पट्टीके कारण उनका नाम ही अगरिया पड़ गया।

बाजपुर (२९° ९′×८९° ७′)--मुख्य-तराई-सड़कके उत्तर तथा धूगा नदीके बायें तटपर यह पुराना ग्राम अवस्थित है। यहाँसे गदरपुर १२, काशीपुर-कालाढुंगी १४ और मुरादाबाद ३२ मील है। यहाँसे थोड़ी दूरपर मुड़ियामें बाजार है। शफाखाना परगनेका मुख्य-केन्द्र है, जो कि मुड़ियासे एक मीलपर रेल स्टेशन भी है।

बाजपुर परगना--तराईका यह सबसे स्वास्थ्यकर परगना है। उँचाईपर होनेके कारण यहाँ बहुत-सी जगहोंपर रबीकी फसल भी होती है। मुसलमानोंकी संख्या यहाँ करीब-करीब आधी है, जिनमें शेख और बंजारा प्रधानता रखते हैं। हिन्दुओंमें भुक्सा, पँवार, राजपूत और लोध ज्यादा हैं।

उजैन--काशीपुरसे एक मील पूर्वमें अवस्थित है। कनिंघमके अनुसार स्वेन्-चाङ् वर्णित गोविषाण नगरका ध्वंसावशेष यही है। कनिंघमने इसके बारेमें लिखा है--"उजैनका पुराना किला बड़े विचित्र आकारका है। पूर्वसे पश्चिम यह तीन हजार फुट लम्बा और पन्द्रह हजार फुट चौड़ा। सारा घेरा नौ हजार फुट यानी करीब ढाई मीलसे कुछ कम है। स्वेन्-चाङ्ने गोविषाणके घेरेको बारह हजार फुट या करीब ढाई मील बतलाया है, लेकिन इस नापीमें उसने दक्षिणवाले ध्वंसावशेषके टीलेको भी जरूर गिना होगा, जो कि पुराने उपनगरका अवशेष है। पुराने नगरके इस भागको ले लेनेपर घेरा ग्यारह हजार फुटसे अधिक, अर्थात् स्वेन्-चाङ्के बतलायेके करीब हो जाता है। स्थानके चारों तरफ अब भी बहुत-से बाग, तालाब मौजूद हैं। पाँच या छ फुट नीचे ही पानी होनेके कारण यहाँके वृक्ष बड़े हरेभरे हैं, और इसी कारण जलयुक्त तालाब भी बहुत अधिक हैं। सबसे बड़ा तालाब द्रोणसागर है, जो छ सौ वर्गफुटमें है। इसे बहुत पवित्र माना जाता है।'''इसके ऊँचे भीटोंपर हालतकके समयकी शतियोंके स्मृतिस्तम्भ गड़े हुए हैं। किलेकी दीवारें १५×१०×२॥ इञ्चकी ईंटोंसे तथा बहुत मजबूत बनी हुई हैं। ईंटोंका आकार, किलेकी प्राचीनताको बतलाता है। खेतोंसे दीवारें ३० फुट ऊँची हैं।'''पूर्व छोड़कर बाकी ओर अब भी उथली खाइयाँ मौजूद हैं।

"द्रोणसागरके पश्चिमी किनारेपर कुछ छोटे-छोटे मन्दिर हैं। किलेके पूर्व ६०० फुटके फासलेपर ज्वालादेवीका आधुनिक मन्दिर अधिक पूज्य माना जाता है। ज्वालादेवीका ही दूसरा नाम उजयिनीदेवी है, जिसके लिए चैत शुक्ल अष्टमी(नवरात्र)को मेला लगता है। भूतेश्वर, मुक्तेश्वर, नागनाथ और जगेश्वरके नामसे छोटे-छोटे शिवालय भी यहाँ हैं, जो सभी हालके (तथा) छोटे-छोटे टीलोंपर बने हुए हैं।'''इन टीलोंमें सबसे महत्त्वपूर्ण किलेकी उत्तरी दीवारके भीतर अवस्थित है, जिसे भीमगदा कहते हैं।'''शायद बड़े शिव-लिंगके कारण यह नाम पड़ा।'''किलेके उत्तर-पूर्व कोनेसे पाँच सौ फुटपर बत्तीस फुटसे अधिक ऊँचा एक दूसरा उल्लेखनीय टीला है। यह छ सौ फुट लम्बी तथा पाँच सौ फुट चौड़ी जगहके बीचमें खड़ा है।" कनिंघमके अनुसार यहाँ कभी एक बड़ा चौकोना मन्दिर था। इस चौकोनके भीतर ही पूर्व ओर दो छोटे-छोटे मन्दिरोंके ध्वंसावशेष हैं। ज्वालादेवी मन्दिरके पूर्व तरफ ६८ फुट व्यासका एक गोल-सा टीला है, जो सातसे

ग्यारह फुट ऊँची ईंटकी दीवारोंसे घिरा है। इसे रामगिर गोसाईंका टीला कहा जाता है। जगेश्वर मन्दिरके नजदीक किलेसे दक्षिण २२ फुट ऊँचा एक बड़ा टीला है, जिसके ऊपर कभी २० वर्गफुट-का मन्दिर खड़ा था। कनिंघमके अनुसार जगेश्वर महादेवके दक्षिण-पश्चिम तथा खागपुर गाँवके नजदीकका २० फुट ऊँचा तथा २०० फुट व्यासका ईंटोंका टीला किसी बौद्धस्तूप या विहारको प्रकट करता है।

ऊँचाकोट पट्टी—धनियाकोट (पहाड़ी) परगनेकी यह पट्टी कोसी-उपत्यकामें अवस्थित है। इसका अधिकांश भाग जंगल है और पट्टीके उनतीस गाँव कोसीके उपत्यकामें बसे हुए हैं। मल्लागाँव, तल्लागाँव और दादिमा यहाँके बड़े-बड़े गाँव हैं। खेतीके लिए यहाँकी भूमि बहुत उर्वर है।

काठगोदाम (२९° १६′×७९° ३३′)—पहाड़की जड़में इस जिलेका बहुत महत्त्वपूर्ण स्टेशन है। मोटरोंके रिवाजसे पहले रेलयात्रा ही सबसे सुभीतेकी थी, उस वक्त काठगोदामका महत्त्व और भी अधिक था। उत्तरी रेलवेकी छोटी शाखाका यहीं अन्त होता है। यहाँ डाकखाना, तारघर, डाकबँगला, उपाहारगृह मौजूद हैं। यहींसे नैनीताल, रानीखेत और अलमोड़ाकी मोटर-बसें मिलती हैं। बस्ती बढ़ते-बढ़ते काठगोदाम और रानीबाग अब एक हो गये हैं।

कालाढुंगी (२९° १७′×७९° २१′, ऊँचाई १३०० फुट)—छखाता-भाबर पट्टीमें पर्वतसानुपर यह कस्बा बसा हुआ है। यहाँसे नैनीताल १६ और मुरादाबाद ४७ मील है। नैनीताल नगरके आयरपाठा पहाड़से आनेवाली निहाल नदी यहीं होकर गुजरती है, जो बरसातमें विकट रूप धारणकर कालाढुंगीको बहुत नुकसान पहुँचाती है। यहाँ डाकबँगला है। रेलके आनेसे पहले बरेलीसे नैनीतालका रास्ता यहींसे मंगोली और खुरपाताल होते देवपाठ और आयरपाठके बीचसे नैनीताल-उपत्यकामें पहुँचता था। उस समय कालाढुंगी और भी अधिक समृद्ध कस्बा था।

काशीपुरा (२९° १३′×७८° ५८′)—तराई तहसीलका यह सदर मुकाम तथा अच्छा खासा नगर गेला नदीके बायें तटपर बसा हुआ है। रेलके आनेके बाद इसकी आर्थिक अवस्था अच्छी हो गयी। यहाँसे ठाकुरद्वारा होकर मुरादाबादको मोटरकी सड़क गयी है। जसपुर यहाँसे ९, ग्रामनगर १६, ठाकुरद्वारा ६ और बाजपुर १२ मील है। यहाँ हाई स्कूल, डाकखाना, तारघर और अस्पताल हैं। नगरपालिका नगरका प्रबन्ध करती है। पक्काकोट, कटोराताल, खालसा, कानूनगोयान, रजवाड़ा, किला, लाहोरियान, अलीखानपठान, थाना, खत्रियान, बाँसफोरान, कटरामालियान, सिक्खान, रहीमखानपठान, बगीचाकाशी और रसतलैया नगरके पुराने मुहल्ले हैं। किसी समय पहाड़के मालकी यह सबसे बड़ी मण्डी थी, लेकिन अब रामनगर और काठगोदामतक रेलोंके चल जाने तथा मोटरकी सड़कोंके हो जानेसे व्यापारपर काशीपुरका एकच्छत्र अधिकार नहीं है। हफ्तेमें मङ्गल और शनिवारको दो दिन यहाँ हाट लगती है।

कुमाऊँ-राजाके राज्यपाल काशीनाथ अधिकारीने इस नगरको बसाया, जिसके कारण इसका यह नाम पड़ा। लेकिन उजैन यहाँसे एक मील ही पूर्वमें है, जहाँ कभी ईसवी सनकी तीसरी-चौथी शताब्दीकी लिपि और ईंटोंवाली गोविषाण नगरी थी। १७४४ में कुमाऊँके राज्यपाल शिवनाथ अधिकारी यहाँ शासन करते थे। अगले साल मंत्री शिवदेव जोशीने यहाँ एक किला बनाया। पहले हरिराम शासक रहे, फिर शिरोमणिदास। १७६४ ई० में शिवदेव जोशीको यहीं सैनिकोंने मार डाला। शिरोमणिदासके बाद उसके पुत्र नन्दराम और हरगोविन्द काशीपुरके शासक रहे। अंग्रेजोंके अधिकार होनेके समय हरगोविन्दका पुत्र शिवलाल काशीपुरका जमींदार था। कुमाऊँ राजवंशके राजा शिवराजसिंहने १८४० में पहले-पहल यहाँ अपने लिए घर बनाया।

किच्चा (२८° ५४′ × ७९° ३२′)—तराई तहसील और रुद्रपुर परगनेका यह सदरमुकाम तथा बरेली-काठगोदाम रेलवेके ऊपर बरेलीसे यह ३८ और हल्दवानीसे २१ मीलपर अवस्थित है। मुख्य तराई-सड़क—जो हरिद्वारकी गंगासे बरमदेवकी शारदातक चली गयी है—यहाँसे होकर गुजरती है। उसी सड़कपर किच्चासे १४ मीलपर सितारगंज और ८ मीलपर रुद्रपुर है। किच्चामें रेलवे स्टेशन, डाकखाना, तारघर, थाना, सरकारी जमींदारी बँगला, निरीक्षण-भवन, स्कूल और औषधालय हैं। हफ्तेमें दो दिन—सोमवार और शुक्रको यहाँ हाट लगती है।

किच्चा तहसीलमें थारू लोगोंकी काफी बस्ती है। उनके बाद चमार, भुक्सा, कुर्मी, राजपूत, ब्राह्मण, लोद आदिका नाम आता है। मुसलमानोंमें सबसे अधिक जुलाहा और उनके बाद शेख, तुर्क, राईं, फकीर, पठान और मेवाती हैं।

किलपुरी (परगना)—यह किच्चा तहसीलका परगना पूर्वी तराईमें रुद्रपुर और नानकमता पट्टियोंके बीचमें है। स्वास्थ्यके लिए यह परगना बहुत बदनाम है, इसीलिए शायद थारू लोगोंकी संख्या यहाँ काफी है। गोला (किच्चा), सुखी (बहगुल) और कैलास यह तीनों यहाँकी मुख्य नदियाँ हैं। बहगुल और कैलासके बीचमें उत्तरकी ओर थारू लोगोंके गाँव हैं।

कुटौली (परगना)—नैनीताल तहसीलमें अर्थात् जिलेके पहाड़ी भागमें धनियाकोट और महरूरीके बीचमें यह परगना कोसीकी घाटीमें एक भाग है, इसमें कुटौली मल्ला, कुटौली तल्ला, बिसौद बिचला और बिसौद तल्लाकी चार छोटी-छोटी पट्टियाँ हैं। यहाँके अधिकांश लोग जाड़ोंमें सरदीसे बचनेके लिए भाबरमें चले जाते हैं। कुटौलीकी दो पट्टियाँ केदारनाथ और बदरीनाथके मन्दिरोंकी सदावर्तके लिए चढ़ी हुई हैं।

कैलास (२९° १६′, ७९° ३९′, ५८८६ फुट)—छब्बीस दुमोला पट्टीमें मालवातालके नीचे यह पर्वत है। पवित्रता और कुछ आकृतिकी समानताके कारण इसे कैलास नाम दिया गया। अक्तूबरके अन्तमें तीन दिनके लिए यहाँ महादेव और ज्वालादेवीका मेला लगता है।

कोटा (२२° २२′ × ७९° १८′)—हल्दवानी तहसीलके कोटा-भाबर पट्टीमें यह गाँव स्थित है। यहाँ एक टूटा-फूटा किला है, पासका गाँव देवीपुरा दाबका नदीके पहाड़से नीचे उतरनेकी जगह बसा हुआ है। रामनगर यहाँसे १२ मील तथा कालाढुंगी और बैलपड़ाव दोनों ९ मीलपर है। गोरखा-शासनके समय कोटाके किलेमें उनकी सेना रहा करती थी।

कोटा परगनामें कोटातल्ला कोटामल्ला नामकी दो पट्टियाँ भी हैं।

कोटादून—हिमालय-श्रेणी और शिवालिकके बीचमें यह दून भी उसी तरह बनी है, जैसे देहरादून। यहाँ शिवालिककी छोटी-छोटी पहाड़ियाँ जमीनसे जहाँ-तहाँ निकली हुई दीख पड़ती हैं। हम यह बतला चुके हैं कि शिवालिक श्रेणी इस जिलेमें हिमालय-श्रेणीसे इतनी मिल गयी है कि उसका पहिचानना मुश्किल है। कोटादूनकी भूमि बड़ी उर्वर है, यह वहाँके गाँवोंके खेतोंको देखकर बतलाया जा सकता है।

कोटा-भाबर—भाबर (हल्दवानी) तहसीलका यह इलाका पूर्वमें भकरा नदीसे, पश्चिममें जिलेकी सीमातक फैला हुआ है। कोसी, दबका, बावर और भकरा यहाँकी मुख्य नदियाँ हैं। रामनगर और कालाढुंगी, बैलपड़ाव और ऑवलाकोट इसी इलाकेमें हैं। इसका बहुत-सा भाग अभी हालतक जंगलसे आच्छादित था, कोटादून इसी इलाकेका एक भाग है, जिसमें पन्द्रह गाँव हैं। इन गाँवोंके निवासी पहाड़के ही लोग हैं। पटकोटदून (१५ गाँव) भी कोटा-भाबरमें ही है।

कोस्यान—धनियाकोट परगनेमें कोस्यान् तल्ला और कोस्यान् मल्ला नामकी दो पट्टियाँ

कोसी नदीके उत्तरी किनारेपर अवस्थित हैं। इनके ऊपरी भागको मल्ला और निचले भागको तल्ला कहते हैं। मल्ला कोस्यानमें बरमदेव, धारी और बरदनके बड़े-बड़े गाँव हैं। अमेल और सेतीके अत्यन्त उर्वर खेतोंवाले गाँव तल्ला कोस्यानमें पड़ते हैं। अनाज, घी और लाल मिर्चे यहाँ बहुत होते हैं।

खातिमा (२८° ५५′×७९° ५९′)—किच्चा तहसीलके बिलहरी परगनेमें यह गाँव पीलीभीतसे २३, शारदाके मेलाघाटसे ८, टकनपुरसे १५ और सितारगंजसे १६ मीलपर मुख्य तराई-सड़क तथा पीलीभीत-टनकपुर सड़कके चौराहेपर अवस्थित है। यहाँ एक अच्छा यात्रा-बँगला, स्कूल और डाकखाना भी है।

खुरपाताल (२९° २२′×७९° २६′, ५३६५ फुट)—कोटा परगनेकी मल्लाकोटा-पट्टीमें यह स्थान नैनीतालसे पाँच मीलपर कालाढुंगी जानेवाली सड़कपर अवस्थित है। किसी समय कुमाऊँ लोहा कम्पनीने लाखों रुपया लगाकर यहाँ अपना लोहेका कारखाना खड़ा किया था। १८९१ ई० तक गोरा पलटनकी यहाँ छावनी थी। उस समय खुरपाताल एक बहुत ही समृद्ध बस्ती थी। दोनोंके खतम हो जानेपर १९०२ ई० में भूमि जंगल-विभागको दे दी गयी। खुरपातालसे नैनीतालकी ओर जानेपर सरियाताल आता है, जहाँ धोबीघट्टा है। आगे हण्डीबण्डी होते डाँडा पारकर नैनीताल पहुँचा जा सकता है।

खैरना (२९° ३०′ × ७९° २९′)—काठगोदाम-रानीखेत-अल्मोड़ाकी मोटर-सड़कपर कोसीके बाँये यह गाँव अवस्थित है। नैनीतालसे एक पैदल सड़क भी यहाँ आती है। सड़कपर चाय और दूसरी चीजोंकी कितनी ही दूकानें हैं। ठहरनेके लिए यात्रा-डाकबँगला और निरीक्षण-भवन हैं, गाँवमें स्कूल और डाकखाना भी हैं।

गदरपुर (२९° २′×७९° १४′)—किच्चा (तराई) तहसीलके गदरपुर परगनेका यह सदर-मुकाम रुद्रपुरसे १०, बाजपुरसे १२, हल्दवानीसे २३ और कालाढुंगीसे २२ मीलपर अवस्थित है। तराईका यह सबसे अस्वास्थ्यकर स्थान माना जाता है। रविवारके दिन यहाँ हाट लगती है।

गदरपुर परगनेके ६५ गाँवोंमें गदरपुर, पासका बाराखेरा, लामाखेरा, कनकट्टा, कूल्हा और सकैनिया बड़े-बड़े गाँव हैं। इस परगनेमें आधेसे अधिक मुसलमान रहते हैं, जिनमें भी तुर्कों और पठानोंकी संख्या अधिक है। हिन्दुओंमें राजपूत, लोद और भुक्सा अधिक पाये जाते हैं—खेमपुर और कापा भुक्सा लोगोंके गाँव हैं।

चिलकिया-भाबर (पट्टी)—तहसील हल्दवानी (भाबर)की यह सबसे पश्चिमकी पट्टी है। इसके पश्चिममें गढ़वाल और बिजनौरके जिले हैं, जिन्हें रामगंगा और फीका नदियाँ अलग करती हैं। पूर्वमें कोसी नदी इसे कोटा-भाबरसे पृथक् करती है। इस पट्टीकी दक्षिणी सीमापर बाजपुर परगनेकी तराई है। मुख्य नदियाँ कोसी, दबका, ढेला और पथरिया हैं। निवासियोंमें प्रधानतः पहाड़ी राजपूत, तेली, चौहान लोगोंके अतिरिक्त काफी संख्या पहाड़ी शिल्पकार जातियोंकी है। मुसलमानोंमें रुहेले पठानोंकी संख्या काफी है। पट्टीमें १४९ गाँव हैं, जिनमें मुख्य हैं—चिलकिया, सवालदेह, लालढाँग, टाँड़ा, ढेला। चिलकिया काशीपुरकी सड़कपर रामनगरसे दो मीलपर अवस्थित है।

चोरगलिया (२९° ७′ × ७९° ४३′)—नंधौरनदीके पहाड़से उतरनेकी जगह यह गाँव बसा हुआ है—नदियाँ जहाँ पहाड़से नीचे उतरती हैं, वहाँ पहाड़में घुसनेका द्वार या गली होती है। इस रास्ते कभी चोर-डकैत घुसते रहे होंगे, इसीलिए इसका यह नाम पड़ा। यहाँसे हल्दवानी १२ और टनकपुर २७ मील है। सितारगंजसे भी किलपुरी होकर एक सड़क यहाँ आती है, जो १४ मील लम्बी

है। यहाँ सरकारी जमींदारी और जंगल विभाग, दोनोंके बँगले, स्कूल, डाकखाना आदि हैं। चोरगलिया नहर यहींसे निकलती है।

चौगढ़ (पट्टी)--पहाड़में ध्यानीराव परगनेमें अवस्थित इस पट्टीमें भाबर और नैनीतालसे पहुँचना काफी मुश्किल है। यहाँके पहाड़ घने जंगलोंसे ढँके हैं और बजाइट, गरगरी, पटेल, दलकनिया यदि इसके तैंतीस गाँव चारों ओर जंगलोंसे घिरे हैं। यहाँके लोग सर्दियोंमें भाबर अपने नीचेवालेमें टोलोंमें चले जाते हैं। जंगल अधिकतर चीड़के हैं, लेकिन दक्षिण और पश्चिममें कुछ अच्छे शालके वृक्ष भी हैं। जंगल और गोचरभूमिके सुभीतेके कारण लोगोंके पास ढोर बहुत हैं, और घी उनकी आमदनीका अच्छा खासा जरिया है।

चौथान (पट्टी)--धनियाकोट पहाड़ी परगनेकी यह पट्टी जिलेके उत्तरी भागमें कोसी नदीके दाहिने किनारेपर अवस्थित है। घनी बसी पट्टीकी खेतोंसे भरी भूमि बड़ी उर्वर है। लालमिर्च यहाँ बहुत होती है, जो आमदनीका एक अच्छा जरिया है। बिनकोट, घघरेटी, छिउनी, हलपटी, जोशीखोला आदि यहाँके प्रधान गाँव हैं। रानीखेत यहाँसे आसानीसे पहुँचा जा सकता है।

चौभैंसी (पट्टी)--ध्यानीराव परगनेकी यह पहाड़ी पट्टी अलमोड़ा और नैनीताल जिलोंको अलग करनेवाली ऊँचे पर्वतदण्डकी ढलानोंपर अवस्थित है। इसकी सीमाएँ (औसतन साढ़े ६ हजार फुट ऊँचाई) छ-सात मीलतक चली गयी है। बंज और चीड़के घने जंगलोंके बीच यहाँके चौदह गाँव बसे हुए हैं, जिनमें दीनी और मझौली काफी बड़े हैं। दीनीमें आलू बहुत होता है। पट्टीके लोगोंके पास भाबरमें भी अपनी जमीन है, जहाँ चोरगलियाके रास्ते ये अपने ढोरोंको लेकर घमतप्पी करने जाते हैं

चौभैंसी-भाबर (पट्टी)—यह भाबरकी सबसे पूर्वी पट्टी छखाता-भाबरसे पूर्व अलमोड़ा जिलेके भाबर तल्ला देशतक चली गयी है। इसके उत्तरमें ध्यानीरावका पहाड़ी परगना और दक्षिणमें नानकमता तथा किलपुरी परगनाकी तराई है। पूर्वी सीमापर कामिन, पश्चिमी या सुखी (पूर्वी-बहगुल) नदियाँ हैं। नंधौर (देवहा, देवा या गर्रा) निहाई, डामा, कैलास यहाँकी नदियाँ हैं। भाबरके और इलाकोंसे इस पट्टीकी विशेषता यह है कि नदियाँ पहाड़से उतरते ही यहाँ अन्तर्धान नहीं हो घने जंगलोंके बीचसे दक्षिणकी ओर चली जाती हैं। बेत और खैरके जंगल कहीं-कहीं दुष्प्रवेश्य हैं। यह पट्टी भाबरकी और पट्टियोंसे ज्यादा अस्वास्थ्यकर है, तथा जंगली जानवरोंके कारण भी खेती करना मुश्किल है। पहाड़के लोग जाड़ोंमें जहाँ तहाँ झोंपड़े बनाकर अपने ढोरोंके साथ घमतप्पी करने आते हैं। पट्टीमें सब मिलाकर पैंतीस गाँव हैं, जिनमें डोलपोखरा और चाँदनीचौक सुखी नदीके पूर्व हैं। नलाई और रनसाली थारू लोगोंके गाँव हैं।

छखाता (पट्टी)—यह जिलेकी सबसे बड़ी पट्टी इसी नामका परगना भी है, जिसमें एकसठ गाँव हैं। नैनीताल नगरसे काठगोदामके पहाड़ोंतक यह पट्टी चली गयी है। बलिया और गोलाकी उपत्यकाएँ तथा भीमताल, नौकुचियाताल और सातताल की भूमि इसी पट्टीमें पड़ती है। काठगोदामसे नैनीताल और रानीखेत जानेवाली सड़कें इसीमेंसे गुजरती हैं। रानीबाग, बेलवाखान, भुरखण्डा, छपरा और जेबलीकोट यहाँके बड़े गाँव हैं। भाबरमें छखाता भाबर यहींके लोगोंका है। नैनीताल शहर और भाबरके कारण यहाँके लोगोंकी आर्थिक दशा अच्छी है। छखाता षष्ठिखात (साठ ताल) के कारण नाम पड़ा, यह बतला चुके हैं।

छखाता-भाबर (पट्टी)—हल्दवानी तहसीलकी यह पट्टी चौभैंसी-भाबरके पश्चिम तथा कोटा-भाबरके पूर्वमें अवस्थित है। इसके उत्तरसे छखाता और छब्बीस-दुमोलाकी पहाड़ी पट्टियाँ और

दक्षिणमें तराई परगनेकी किलपुरी, रुद्रपुर और गदरपुरकी पट्टियाँ हैं। काफी बड़ी होनेपर भी इस पट्टीका अधिक भाग जंगलोंसे ढँका हुआ है। गोला यहाँकी मुख्य नदी है, जो काठगोदामके ऊपरके पहाड़ोंसे उतरकर दक्षिणकी ओर बहते किलपुरीमें किच्चाके नामसे पुकारी जाती है। बरेलीसे काठगोदाम जानेवाली रेल-सड़क इसी पट्टीसे होकर गुजरती है। यहीं लालकुआँ, हल्दवानी और काठगोदामके स्टेशन हैं। रेलवे-लाइनके साथ-साथ नैनीतालसे बरेली जानेवाली मोटर-सड़क जाती है। हालमें जंगलोंको काटकर आबाद करनेका उत्तरप्रदेशकी सरकारने जो काम किया है, उसके कारण इस पट्टीमें खेती और बढ़ी है।

छब्बीस-दुमोला (पट्टी)—ध्यानीराव परगनेमें छखाता और बिसज्यूला पट्टियोंके बीचमें यह पहाड़ी पट्टी है। इसके दक्षिणमें भाबर, पूर्वमें चौगढ़ और पश्चिममें छखाताकी पट्टियाँ हैं। इसमें बाईस गाँव हैं, जिनमेंसे सत्रह बनियाढ़के सम्भल लोगोंके हैं। हलदी और लालमिर्चकी खेती यहाँ अधिक होती है। पशुओंके चरनेके लिए काफी जगह होनेसे घीकी उपज भी यहाँ काफी होती है। बनियाढ़ और पूर्वार यहाँके बड़े गाँव हैं। पट्टीके भीतर गरम जगहोंके होनेके कारण यहाँके लोग सर्दियोंमें भाबर नहीं जाते।

जसपुर (२९°, १७′×७८°, ६०′)—काशीपुर परगनेमें वहाँसे साढ़े आठ मील तथा नैनीतालसे साढ़े तिरपन मीलपर यह कस्बा अवस्थित है। यहाँ एक अच्छा बाजार है और हर हफ्ते हाट भी लगती है। किसी समय यहाँके जुलाहे अपने कपड़ोंके लिए मशहूर थे, और पहाड़ी महिलाएँ कपड़ोंको बहुत पसन्द करती थीं। किसी समय जसपुरका परगना था, जिसका पुराना नाम सहजगिरि था। तराईके भीतर होनेपर भी इस परगनेमें सरकारी जमींदारी नहीं थी।

ढिकुली (२९°, २८′×७९°९′, १३८० फुट)—रानीखेत जानेवाली सड़कपर रामनगरसे ६ मील तथा मुरादाबादसे २५ मीलपर कोसी नदीके दाहिने किनारे यह गाँव है। भाबरकी अपेक्षा पहाड़ी गाँव-सा मालूम होता है, क्योंकि यह पहाड़की ढलानपर बसा हुआ है। कोसी नदीकी एक छोटी-सी नहर यहाँके खेतोंको सींचती है। गाँव बहुत पुराना मालूम होता है, यहाँ पुरातात्विक महत्त्वकी कितनी ही चीजें पायी जाती हैं। लोगोंने पुराने समयके मकानोंके पत्थरोंको घरोंके बनानेमें प्रयुक्त किया है। ऊपर मोहनके पास कुआकाचौरमें भी पुराने ध्वंसावशेष हैं। कुछ लोग उजैनको नहीं, बल्कि ढिकुलीको ही गोविषाण राज्यकी राजधानी बैरातपत्तन बतलाते हैं। स्थानीय लोगोंकी परम्परा कहती है कि यहाँके राजाका राज्य भाबरसे गनाइ (चौखुटिया) तक फैला हुआ था।

धनपुर (२९° ४′×७९°, १७′)—यह तराईका गाँव पहले रामपुरके नवाबके राज्यमें था, यद्यपि चारों तरफ नैनीतालके जिलेसे घिरा था। कई बार बदलनेकी कोशिश की गयी, किन्तु सफलता नहीं मिली। अब तो रामपुर भी उत्तरप्रदेशका एक जिला है। धनपुरका इलाका शालके जंगलोंसे ढँका हुआ है। गदरपुर यहाँसे पाँच मील दक्षिण-पश्चिम है। गाँवमें एक बँगला है।

धनियाकोट (पट्टी)—इसी नामके परगनेकी यह पट्टी जिलेकी सबसे बड़ी पट्टियोंमें है। दक्षिणमें चीना और लड़ियाकाँटाके शिखरोंसे, उत्तरमें काँसी नदीतक, पूर्वमें कुटौली (तल्ली) मल्ला-तल्ला रामगढ़से पश्चिममें सिमालखातक यह पट्टी फैली हुई है। इसके अधिकांश गाँव रतीघाटकी नदी और खैरनाके बीचमें पड़ते हैं। पट्टीमें रक्षितवन भी काफी हैं। चीनाशिखरसे पूर्वमें सरकारी महालके गाँव हैं, जहाँ अधिकतर आलूकी खेती होती है। सर्दियोंमें इन गाँवोंके लोग अक्सर भाबरमें घमतप्पीके लिए चले जाते हैं। पट्टीके चालीस गाँवोंमें बजेटी, धूना, भवाली और पतली बड़े गाँव हैं।

ध्यानीराव (परगना)—यह पहाड़का सबसे बड़ा परगना जिलेके पूर्वी छोर अलमोड़ाकी

सीमापर अवस्थित है। इसके दक्षिणमें चौभैंसी और छखाताके भाबर हैं और पश्चिममें पहाड़ छखाता तथा महरौरी। चौभैंसी उत्तरमें, मल्लीराव पूर्वमें, बिसज्यूला बीचमें और चौगढ़ तथा छब्बीस-दुमोला दक्षिणमें, इसकी पाँच पट्टियाँ हैं। बबियाढ़, कालाअगर इसके बड़े गाँव हैं।

नानकमता (२८°, ५०′×७९°, ४९)—किच्चा तराई तहसीलके नानकमता परगनेमें यह बड़ागाँव है। नानकपंथी मठके कारण इसका यह नाम पड़ गया। गाँव सितारगंजसे छ और खातिमासे दस मीलपर मुख्य-तराई-सड़कके ऊपर बसा हुआ है। बाशिन्दोंमें थारू लोगोंकी संख्या काफी है। सोमवार और शुक्रको यहाँ हाट लगती है। औरंगजेबके शासनकालमें भी वहाँका नानकपन्थी मठ कुछ ख्याति रखता था। मठके पास चौमहला गाँव एवं नानकमतोंके भाग मुआफी मिले हुए हैं।

नानकमता परगना जिलेकी तराईके पूर्वी छोरपर अवस्थित है। इसके पूर्वमें बिलहरी और और पश्चिममें किलपुरीके इलाके हैं। उत्तरमें चौभैंसी-भाबर और दक्षिणमें पीलीभीत जिला है। परगनेका क्षेत्रफल ५११३६ एकड़ अर्थात् प्रायः ८० वर्गमील है, जिसमें ७७ गाँव बसे हुए हैं। उत्तरी भाग मलेरियाके कारण इतना खतरनाक है कि वहाँ थारू लोग ही बस सकते हैं—परगनेमें उन्हींकी संख्या अधिक है। दक्षिणी भागके गाँवोंमें किसान, चमार और कुर्मी लोग भी रहते हैं। इस शताब्दीके आरम्भमें यहाँकी केवल चालीस सैकड़ा जमीनमें खेती होती थी, जिसमें भी अधिकतर खरीफ और धानकी खेती होती थी। नानकमता गाँव अधिकतर थारू लोगोंकी जमींदारी है। मैनाझुंडीमें उन्हें जमींदारी अधिकार न देकर अँग्रेजोंने मुसताजिर बनाये रखा। माफीवाला गाँव देवीपुरा नानकमताके महन्तका है।

नैनीताल(२९°, २४′×७९°, २८′, ६३१० फुट)—यह जिलेका सदरमुकाम और हिमालयकी ग्रीष्म-नगरियोंमें प्रसिद्ध नगर है। लेकिन उन्नीसवीं शतीके मध्यसे पहले सिवाय आस-पासके पहाड़ी लोगोंके कोई इसका नाम भी नहीं जानता था। १८१४-१५ ई० में अँग्रेज-गोरखा-युद्धके समय नैनीतालके घेरनेवाले पहाड़ोंके पाससे अँग्रेजी सेनाएँ गुजरीं, लेकिन उनको भी पता नहीं लगा कि वहाँ ६००० फुटसे ऊपर प्रायः इग्लैंडकी आबोहवामें एक असाधारण लम्बी-चौड़ी झीलके किनारे ऐसा रमणीय स्थान मौजूद है।

गोरखोंसे लड़ते समय हिमालयके साथ अँग्रेजोंका सम्पर्क हुआ और पीछे दार्जिलिंग, कुमाऊँ, गढ़वाल, शिमलाके पहाड़ोंके हाथमें आ जानेपर सर्द आबोहवाले यहाँके स्थानोंके महत्त्वको समझा। तभीसे अँग्रेजोंकी आँख इन सदाबहार स्थानोंपर गड़ी। कुमाऊँके प्रथम अँग्रेज कमिश्नर ट्रेलने इस तालके अस्तित्वका उल्लेख किया, लेकिन उसके महत्त्वको नहीं समझ पाया। मार्च १८३९ में बैटन अपने साले तथा शाहजहाँपुरके सौदागर पी० बैरन (Barron)के साथ शिकार करनेके लिए इधरके पहाड़ोंमें घूमते भीमताल होते खैरनाकी ओरसे नैनीताल पहुँचे और रामगढ़के रास्ते लौटे। पूछे जानेपर आसपासके लोगोंने म्लेच्छोंको देवीके पवित्र स्थानके पास ले जाना पसन्द नहीं किया, और उन्होंने ताल होनेसे अनभिज्ञता प्रकट की। १८४१ ई० में कलकत्ताके "इंगलिशमैन" ने नैनीतालकी घोषणा पहले-पहल बाहरी दुनियामें की। इसके बाद ही "आगरा अखबार" में मिस्टर बैरनने "पिलग्रिम" के नामसे निम्नलिखित पंक्तियाँ लिखीं—

"एक ढलानवाला रमना काफी समतलभूमि है, जिसमें बीच-बीचमें बंज, देवदार और दूसरे सुन्दर वृक्षोंके झुरमुट हैं। यह रमना सरोवरके तटसे ऊपर एक मीलतक एक बड़े ही भव्य पर्वतसानुके पासतक चला गया है। पर्वत इस विशाल रंगभूमिके अन्तिम छोरपर खड़ा है। सरोवरको और

दिशाओंमें भी बड़े भव्य पहाड़ और शिखर घेरे हुए हैं। वह नीचे पानीके किनारेतक घने जंगलोंसे ढँके हैं। उच्चतम शिखर और सरोवर तटके बीचमें जो ढालुवाँ जमीन है, उसमें घुड़दौड़का मैदान, क्रिकेटकी भूमि आदि तथा चारों तरफ एक बड़े शहरके मकान बनानेके लिए काफी जमीन है।"

१८४२ ई० में मिस्टर बैनरने फिर नैनीतालको देखा और बैटनसे बारह बँगलोंके बनानेके लिए एक ठेकेदार माँगा। बैटनने अलमोड़ाके लाला मोतीरामका शाह परिचय दिया, जिन्होंने बँगला बनानेका जिम्मा लिया। इसी समय कुमाऊँके कमिश्नर लुशिंगटनने एक छोटा-सा घर बनवाना शुरू किया। १८४५ ई० में ही कुमाऊँ-कमिश्नरने जमीन देनेके बारेमें नियम बनाये, जिसके अनुसार मकान बनानेवालोंको थोड़ा-सा कर देना निश्चित हुआ और उन्हें यह भी स्वीकार करना पड़ा कि सरकारकी मंजूरीसे स्थानीय अधिकारी जो नियम बनायेंगे, उनका वह पालन करेंगे। इस प्रकार १८४२ ई० में नैनीतालकी नींव पड़ी। नये बँगले बनते जाते, उनका विज्ञापन दिया जाता और तुरन्त मैदानकी गर्मीसे त्राण पानेके लिए अँग्रेज इन बँगलोंको आबाद करने चले आते। पहले देशी लोगोंको मकान बनानेका अधिकार केवल तल्लीतालमें ही दिया गया। आरम्भिक बँगले सरोवरके पूर्वमें बनाये गये थे। बैरन पहला आदमी था, जिसने तालमें नाव चलायी, और आयरपाथमें एक बाघके घायल होनेका उल्लेख किया। १८४५ ई० तक भी अभी मल्लीतालके बाजारकी जगहमें बाँसोंका जंगल था, जिसमें बाघ रहा करते थे। चीते, गुराल, साँभर आदि वन्य प्राणी अब भी अपने पुराने स्थानका मोह नहीं छोड़ते थे। वहाँ जंगलमें १८४६ ई० में बने गिर्जेका नाम "सेण्ट जान जंगलमें" पड़ा। गिर्जेके बाद तो चारों ही तरफ नये घर खड़े होने लगे। गायवाला खेतमें कप्तान अरनौडने शेरवुडकी इमारत बनायी।

नैनीताल ग्रीष्मकालीन प्रवासियोंके रहनेकी एक छोटी-सी जगहके ही तौरपर प्रसिद्ध हो चुका था। उसकी स्थापनाके पन्द्रह वर्ष बाद १८५७ ई० का गदर हुआ। नीचे दिल्लीसे लेकर पटनातक सारा उत्तरी भारत अंग्रेजोंके हाथसे निकल गया और उनके प्राणोंके लाले पड़ रहे थे। इसी समय हिमालय उनको सहायता और शरण देनेके लिए तैयार था। कुमाऊँ-गढ़वालके पुराने स्वामी नेपालके हर्ता-कर्ता जंगबहादुरने गोरखा सेना लेकर भारतीय स्वतन्त्रताके योद्धाओंसे लड़ाई लड़ते अंग्रेजोंकी मदद की। कुमाऊँ-गढ़वालके लोगोंने निष्क्रिय रहकर अंग्रेजोंकी सहायता की। ऐसे समय रुहेलखण्ड और दूसरी जगहोंके अंग्रेज अपने परिवारोंको लेकर नैनीतालकी ओर भागे। तत्कालीन कमिश्नर हेनरी रामजेने भी अपना हेडक्वार्टर अलमोड़ासे नैनीतालमें ला रखा, और वहाँसे तराईमें विद्रोहियोंका मुकाबला किया। इस प्रकार गदरने नैनीतालको छलांग मारकर आगे बढ़नेमें सहायता की। १८६२ ई० में पश्चिमोत्तर (उत्तर) प्रदेशके तत्कालीन लेफ्टिनेण्ट गवर्नरने नैनीतालको अपने प्रदेशकी ग्रीष्म-राजधानी बनानेका निश्चय किया, फिर तो नैनीताल अपनी समृद्धिकी चरम सीमातक पहुँचनेके लिए तैयार हो गया। पश्चिमोत्तर-प्रदेशके लाटने स्टोनले (Stoneleigh) के नामके बंगलेमें १८६२ ई० में निवास किया। यह बंगला उसी जगहपर था, जहाँ आजकल रामजे अस्पताल है। यही अस्थायी निवासस्थान था, १८६५ ई० में लेफ्टिनेण्ट-गवर्नरने मैल्डनकी भूमिमें शेरका डाँडा पहाड़के ऊपर दूसरा घर बनवाया और अपने पदको छोड़ते समय उसे ४० हजार रुपयेमें लाला मोतीराम शाहके हाथ बेंच दिया, जो १८७९ ई० तक नये लाटोंको ३६०० रुपया वार्षिक किरायेपर मिलता रहा। १८८० ई० में शेरका डाँडामें जो भीषण पर्वत-पात हुआ, उससे यह बाल-बाल बचा। इसके बाद १८७५ ई० से शुरू करके १८७९ ई० में नया लाट-भवन मैल्डनसे कुछ ऊपर बनकर तैयार हुआ, जिसमें १८९५ ई० तक लेफ्टिनेण्ट गवर्नर या कुमाऊँके चीफ कमिश्नर

आकर रहा करते थे। इसके बाद लेफ्टिनेण्ट-गवर्नर अस्थायी तौरसे शेरवुडमें आकर रहने लगे। फिर पश्चिमोत्तर प्रदेशकी सरकारने अपने गर्मियोंके निवासके लिए तालके पश्चिमवाले आयरपाथाके शिखरसे नीचेतककी जमीन लेकर १८९६ ई० में सरकारी इमारतें बनवानी शुरू कीं, जो १९०० ई० में बनकर तैयार हुईं।

लेकिन इस समयतक नैनीताल कहाँसे कहाँ चला गया। झीलके पासकी जगहोंमें दूकानोंकी पाँती खड़ी हो गयी, जगह-जगह रहायशी मकान, होटल, स्कूल, बँगले आदि बन गये। तल्लीताल बाजारके नीचे गोरखा पलटनके लिए बैरकें बन गयी और कालेखानमें सैनिक रोगियोंके लिए डिपो तैयार हो गया। दूसरी तरफ कालाढुंगीके रास्तेमें खुरपातालमें एक गोरी छावनी खड़ी कर दी गयी। पहले मुरादाबादसे कालाढुंगी होकर लोग आते थे। कहीं वह पालकीका सहारा लेते और कहीं घोड़ा-गाड़ीका। मुरादाबाद खुरपातालके रास्तेको कठिन समझकर बरेलीसे रानीबागकी गाड़ीवाली सड़क तैयार की गयी। फिर १८८२ ई० में बरेलीसे काठगोदामतककी रेल तैयार कर दी गयी, जिसके कारण नैनीताल पहुँचना सुगम हो गया।

पर्वत-पात (१८८० ई०)—१८८० ई० में नैनीतालमें ऐसा भीषण पर्वत-पात हुआ, जिससे डर लगा कि शायद नैनीताल बदनाम न हो जाय। मिस्टर ई० टी० एटकिन्सनने इस भूपातके बारेमें अपने 'कुमाऊँ गजैटियर'में उद्धृत किया है—

"बृहस्पतिवार १६ सितम्बर १८८० ई० को जोरकी वर्षा शुरू हुई, और वह रविवारको १९ तारीखकी शामतक लगातार चलती रही। इस बीचमें तैंतीस इंच वर्षा हुई, जिसमेंसे बीससे पच्चीस इंच शनीचरकी शामके पहलेवाले चालीस घण्टोंमें हुई। वर्षाके साथ पूर्वकी ओरसे बड़ी जबर्दस्त हवा चली। सड़कें टूट गयीं, नाले भर गये। उत्तरी पर्वतश्रेणी ढीले पत्थरों और मिट्टीसे ढँकी है, उसके भीतर पानी खूब अन्तर्हित हो गया। नये मकानोंके बनानेके लिए वहाँ बहुतसे जंगलोंको पिछले साल काट दिया गया था, और बनानेवालोंने स्वाभाविक जलप्रणालियोंकी गड़बड़ीको ठीक करनेकी ओर ध्यान नहीं दिया था। कितनी ही जगहोंपर पानी पहाड़की खोखली जगहोंमें समाकर नया रास्ता ढूँढ़नेके लिए मजबूर किया गया।...१८६६ ई० में वर्तमान स्थानसे कुछ पश्चिममें एक छोटा-सा भू-पात हुआ था, जिससे पुराना विक्टोरिया होटल नष्ट हो गया। १८६९ ई०में उसे बढ़ा दिया गया। १८८० ई० में जहाँ भू-पात हुआ, वहीं विक्टोरिया होटल और उसके कार्यालय थे। होटलके नीचे तथा तालके किनारेपर, जहाँ बेल्की दूकानके नजदीक नैनादेवीका मन्दिर था और आगे तालके किनारे एसेम्बली रूम थे, शनीचरके १० बजे सवेरे विक्टोरिया होटलके पीछेकी पहाड़ीके एक भागमें भू-पात हुआ, जिससे होटलके औटहौस, तथा उसका पश्चिमी पार्श्व नीचे बह गया और उसीके नीचे एक अंग्रेज बच्चा, उसकी आया और कुछ देशी नौकर दब गये। तुरन्त सहायता मँगायी गयी और मिस्टर ल्योनार्ड टेलर सी० एस०, ओवरसियर मार्गेन तथा डिपोसे आयी सैनिकों और अफसरोंकी टुकड़ीने दबे हुए लोगोंको खोदकर निकालनेका काम शुरू किया। इसी बीचमें होटलके सभी निवासियोंको वहाँसे सुरक्षित स्थानमें हटा दिया गया, किन्तु कर्नल टेलर (आर० ई०) होटलके नीचेके एक अलग-थलग कमरेमें चले गये, जिसे अधिकतर बिलियर्ड रूमके तौरपर इस्तेमाल किया जाता था। मेजर और श्रीमती मर्फी सहायताके लिए आयी हुई श्रीमती टर्नबुलके साथ एसेम्बली रूममें चली गयीं। सभी लोग घर छोड़नेकी तैयारी कर चुके थे, क्योंकि अब और कुछ करना सम्भव नहीं था। प्रायः १ बजकर २० मिनटपर मैं होटलसे बाजारकी ओर जा रहा था, जब कि मिस्टर राइटने एक

आवाज सुनी और देखा कि ऊपरी शिलासे एक भारी चट्टान होटलकी ओर गिरी। मैं उसका कुछ ख्याल न कर आगे बढ़ गया। दस मिनट और बीते, इसी समय भू-पात हुआ।

"सारा पर्वत-पार्श्व अर्धतरल अवस्थामें था, उसे गति देनेके लिए बहुत कम शक्तिकी जरूरत थी।···(वह) चालक शक्ति भूकम्पका एक धक्का था, जो कि इन पहाड़ोंमें साधारण-सी बात है। ऊपरी नीचे भाबरमें और स्वयं नैनीतालमें देखनेवालोंने अनुभव किया।

"नगरमें बहुतोंने थर्राहटकी आवाज उसी तरह सुनी, जैसे कि भारी परिमाणमें मिट्टीके गिरनेसे सुनाई देती है। भू-पातकी तरफ जिन लोगोंको देखनेका अवसर मिला, उन्होंने वहाँसे धूलका एक विशाल बादल साफ उठते देखा। साफ दिखाई दिया कि होटलके पीछेके पहाड़का एक बड़ा भाग··· बड़े तीव्र वेग और भीषणताके साथ नीचेकी ओर खिसका और वह होटलको पूरी तरहसे दबाते अरदली-रूम, दूकान और असेम्बली रूमको सत्यानास करता नीचे चला गया।···यह सारी दुर्घटना कुछ ही सेकेण्डोंमें हुई, इसलिए भू-पातके रास्तेमें पड़े किसीके लिए बच निकलना मुश्किल था।

"मृत और लुप्त आदमियोंकी संख्या १५१ रही, जिनमें ४३ यूरोपीय और एंग्लो-इण्डियन थे। इन्हींमें कर्नल-टेलर, मेजर मर्फी, कप्तान बल्डरस्टोन, कप्तान गुडरज, कप्तान हेन्स, लेफ्टिनेण्ट हलकेट, ल० सलीवन, ल० कार्माइकल, ल० राबिन्सन, टेलर (सी० एस०) पादरी ए० रबिन्सन, डा० हन्ना और नोड, बेल, नाइट, मोज, टक्कर, २ मोर्गन, ४ शेल्स, ड्रिउ, ५ नानकमीशण्ड आफिसर, ९ गोरे सिपाही, श्रीमती मर्फी, श्रीमती टर्नबुल और दो बच्चे थे। १०८ नेटिव (देशी) भी थे। कमिश्नर हेनरी रामजे तालके पूर्वी छोरके कामकी निगरानी कर रहे थे। वह मलबाके कारण उठी भारी लहरमें पड़कर तालमें फेंका गए। और एक बार छातीतक पानीमें हो किसी तरह ऊपरी रास्तेकी सुरक्षित जगहमें पहुँचनेमें सफल हुए।···सचिवालयके मिस्टर वाकर कन्धेतक कीचड़में दबकर भी बच निकले। एक सैनिक और देशी लड़का तालमें फेंका गए थे, वहाँसे वह तैरकर बचे। मिसेज नाइट और मिसेज ग्रे बेल्की दूकानके ऊपरी तलपर थीं, जो मकानके साथ नीचे चली गयी, किन्तु वे अक्षतशरीर निकलीं। भू-पातके तुरन्त बाद पहाड़के भीतरसे पानीके फुहारे निकलने लगे।··· शनिवारकी रातको अब भी वर्षा हो रही थी और चट्टानें पहाड़से नीचेकी ओर गिर रही थीं, इसलिए कोई निश्चय नहीं था कि कब फिर भू-पात हो। जगह-जगह बड़ी-बड़ी दरारें पैदा हो गयी थीं।···दरारें भूकम्पके कारण हुई थीं, जिनसे अलमा और चीना शिखरोंकी ढलानोंको उसी तरह हानि पहुँची, जैसी घाटीके भीतर। हेनरी रामजेने बिलकाक (सी० ई०) और लाडर (सी० ई०) दोनों इञ्जीनियरोंके साथ तुरन्त काम शुरू कर दिया और सड़कें, नालियाँ पहलेसे भी अच्छी हालतमें कर दी गयीं।"[१]

"भू-पातके बाद नगर-निर्माताओंको नगरके सुधारनेका अच्छा अवसर मिला। जल-प्रणालियोंका उन्होंने अब पहलेसे अधिक विस्तृत और मजबूत जाल बिछा दिया। तालके ऊपरी छोरके फ्लैट (समभूमि)को और बड़ा बना दिया गया, जिसमें पोलो, क्रिकेट, हाकी और फुटबाल खेलनेके लिए ही नहीं, बल्कि घुड़दौड़के लिए भी जगह निकल आयी।

नैनीतालकी वृद्धिका अनुमान इसीसे मालूम होगा कि सितम्बर १८८० ई० में—जब कि उस सालका सीजन प्रायः बीत चुका था—१००५४ आदमी रहते थे, १८८१ की फरवरीमें जन-गणनाके समय लोगोंकी संख्या ७५८९ थी, जो कि सभी स्थायी निवासी थे, इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं। १८९१ ई० में नगरपालिका और छावनीमें कुल मिलाकर ८४५५ व्यक्ति रहते थे। १९०१

१. Mr. H. C. A. Conybeare's report of 11th. october 1880.

की मार्चकी गणनामें ७६०९ व्यक्ति जिनमें ५२४८ पुरुष थे, किन्तु ७ सितम्बर १९०० ई० में संख्या १४२२० थी, जिनमें १०१४२ पुरुष थे।

इतने लोगोंके रहनेके लिए मकानोंकी भी उसी परिमाणमें बनाना पड़ा। मसूरी भी उसी प्रदेशमें है, जिसमें नैनीताल, लेकिन जहाँ मंसूरीमें अंग्रेजोंने बहुतसे मकान स्वयं बनवाये, वहाँ नैनीतालमें अधिकतर भारतीयों—उनमें भी अलमोड़ाके शाह लोगोंके बनवाये मकानोंमें ही किराये देकर रहते रहे। इसका कारण यही था कि नैनीताल सरकारी अफसरोंका ग्रीष्म-निवास था, जो अपनी नौकरी भर ही भारतमें रहनेवाले थे; इसलिए वह अपने लिए मकान क्यों बनाने लगे? मंसूरीमें व्यापारी और दूसरी तरहके अंग्रेज भी आया करते थे, इसलिए उन्होंने स्वयं मकान बनवाये। शेरवुड सबसे पुराने मकानोंमें है, यह बतला चुके हैं। गिरजामें तल्लीतालके बाजारके ऊपर मैथोडिस्ट गिरजा १८८० ई०में बना। अमेरिकन मिशनका ही एक और गिरजा १८५९ ई०में बना था, यह बतला चुके हैं। सरकारी भवनके पास आयरपाटापर सेंट निकोला ओर सेंट मेरीके गिरजे बने, जिनकी प्रतिष्ठा १८९६ ई० में हुई थी। रोमन कैथलिकोंके दो गिरजे यहाँपर हैं, जिनमें सेंट मेरी कान्वेंटका गिरजा एक है, दूसरा माल रोडपर है। मल्लीतालमें तालके किनारे नैनादेवीका मन्दिर है। पहले यह मन्दिर तल्लीतालमें वर्तमान डाकखानेकी जगह था। पीछे इसे नौकाभवन बगीचेके पास लाया गया। १८८० ई० के भू-पातसे मन्दिर ध्वस्त हो गया, तब उसे वर्तमान जगहपर बनाया गया। तालके दाहिने किनारेपर हनुमानजीका झोंपड़ा और शिला भी काफी लोकप्रिय है। मल्लीतालमें आर्य-समाजका मन्दिर अच्छे मौकेपर है और उसके साथ ठहरनेके लिए धर्मशाला भी है।

ताल—पहाड़के सभी नगरोंमें नैनीतालकी शोभा निराली है। कलिम्पोंग, दार्जिलिंग, अलमोड़ा, मंसूरी, शिमला, धर्मशाला, सोलन आदि नगर भी सुन्दर हैं और गर्मियोंमें शीतल होनेके कारण लोगोंको आकृष्ट करते हैं, लेकिन वह सभी पहाड़की रीढ़ों या ढलानोंपर बसे हैं। उनसे उत्तरकी हिमालयश्रेणीका सौन्दर्य देखनेमें आता है, (जिसका नैनीतालमें अभाव है, जबतक कि आप ८५०० फुटकी ऊंचाईपर चीना शिखरपर नहीं पहुँचते) तो भी इतना विशाल ताल क्या, ताल भी कहीं नहीं है। तालका जलीय धरातल समुद्रतलसे ६३५० फुट ऊपर है। इसकी लम्बाई १५६७ गज, चौड़ाई ५०६ गज और घेरा ३९६० गज अर्थात् दो मीलसे थोड़ा अधिक एवं क्षेत्रफल १२०·५ एकड़ है। सबसे अधिक गहराई ९३ फुट है, और सबसे कम गहराई २० फुट, जो कि उस पर्वतबाहीं के कारण है, जो कि झीलके बीचमें आरपार चली गयी है। झीलका पानी बहुत स्वच्छ और पीने लायक होता, किन्तु शहरकी नालियाँ इसीमें आकर गिरती हैं। झीलके भीतर दो गंधकके चश्मे हैं, जिनमेंसे एक ६३ फुट गहराईके नीचे स्मगलर-चट्टानके करीब-करीब सामने है और दूसरा तल्लीताल-बाजारके पास तालसे बाहर।

शिखर—नैनीतालकी एक तरफ निकास है, वह है तल्लीताल। १८७७ ई० के आस-पास यह भी योजना बनायी गयी थी कि नीचेकी रुकावटको तोड़कर झीलको नीचे ड्रेनरीकी सुंदर उपत्यकामें ले जाया जाय, जिससे उस सुन्दर उपत्यकाकी शोभा और भी बढ़ जाय और आने जानेवालोंके लिए सुभीता भी हो जाय, और सूखी झीलकी जगहपर मकान बनाये जा सकें। इसमें शक नहीं इस बिलकुल सम्भव योजनाको काममें लानेपर नैनीतालकी नाक कट जाती। अच्छा ही हुआ, जो वैसा नहीं किया जा सका। आज मोटरोंके कारण नैनीताल पहुँचना बिलकुल आसान है। तल्लीतालकी तरफ छोड़ बाकी तीन तरफ पर्वतश्रेणियाँ इसे घेरे हुए हैं। मल्लीतालके उत्तर या सचिवालयके

पीछे वह पर्वतश्रेणी है, जिसमें नैनीताल जिलेका सर्वोच्च शिखर चीना (८५६८ फुट) खड़ा है। तालके तटसे यह सवा मीलके फासलेपर है। इसकी उत्तर तरफ बंज और बुरांसके वृक्षोंसे ढँकी चीनाकी एक पर्वतबाहीं बढ़ी हुई है; दक्षिणी ढलान देवदारोंसे ढंकी है। यह आश्चर्यकी बात है कि देवदार अलकनन्दाकी घाटीके बाद नेपालकी त्रिशूलकी श्रेणीमें ही मिलते हैं। यहाँ अलग-थलग स्वयं-जात देवदारोंका होना विचित्र-सा मालूम होता है। इनके कारण नैनीतालकी शोभा बहुत बढ़ गयी है, इसमें सन्देह नहीं। चीनाशिखरसे उत्तरकी तरफ देखनेपर गंगोत्री, केदारनाथ, बदरीनाथ नालीकंटा, नन्दादेवी (२५६४५), नन्दाकोट (२०५१०), पंचचूली (२२६५०) तथा नेपालके उत्तर-पश्चिमी सीमाके हिमशिखर दिखाई पड़ते हैं। पंचचूलीको एक लालबुझक्कड़ लेखकने पाँच चुल्ही समझा और व्याख्या करते यह भी कह दिया, कि पाण्डवोंने कैलास जाते वक्त इन पाँचों चूल्होंमें अपने लिए खाना बनाया था। उसी देवपाठाश्रेणीमें चीनाशिखरसे पूर्वमें अलमाशिखर (७९८०) है। देवपाठा दीवारकी तरह तालके उत्तरी किनारेपर खड़ा है। इसीसे पूर्वका पहाड़ शेरका डाँडा जुड़ा हुआ है, जिसकी सर्वाधिक ऊँचाई ७८९० फुट है। शेरका डाँडा पारकर खैरनाका रास्ता जाता है। रास्ता छोड़ कुछ दाहिने ८१४४ फुट ऊँचा लड़ियाकाँटा शिखर है, जहाँसे एक ओर हिमालका सुन्दर दृश्य दिखलाई पड़ता है, तो दूसरी ओर तराईका मैदान भी देखा जा सकता है। चीनाशिखरके पश्चिम तरफ उसी श्रेणीमें देवपाठाशिखर (७९८९ फुट) है, जिसके बाद ७६३९ फुटका आयरपाठा है। आयरपाठा पश्चिमी श्रेणी है। देवपाठा और आयरपाठाके जुड़नेकी जगह ७१५३ फुट ऊँचा शिखर हण्डी-बण्डी है, जिसके पाससे कालाढुंगीका रास्ता जाता है। आयरपाठाके उत्तरमें एक विचित्र शिलाओंका शिखर ऊँटपीठ (Camel's Back) है।

नैनीतालके पर्वतवेष्टित दुर्गसे बाहर जानेके कई रास्ते हैं। तल्लीतालमें उपत्यकाके दाहिनेसे मोटर-सड़क सीधे काठगोदाम जाती है और बाँयेंवाली भवाली। हण्डी-बण्डीकी सड़क, जो अब पैदल चलनेवालोंके ही कामकी रह गयी है, खुरपाताल तथा कालाढुंगी पहुँचती है। चीनाशिखरके पूर्वसे रास्ता (पगडंडी) चीनाखालके गाँवकी ओर ले जाता है और लड़ियाकाँटाकी ओर जानेवाला रास्ता खैरनामें मोटर-सड़कसे मिल जाता है।

जलवायु—नैनीताल समुद्रतलसे ६३०० फुटसे ७००० फुटकी ऊँचाईतक बसा हुआ है, जिसके कारण गर्मीमें भी यहाँका जलवायु शीतल है। तापमान मुश्किलसे कभी ८५ डिग्रीसे ऊपर जाता होगा। अप्रैल-मई-जून यहाँके सबसे सुन्दर महीने हैं, उसके बाद वर्षाके कारण सर्दी बढ़ जाती है और चलने-फिरनेमें भी दिक्कत होती है। वर्षाके बाद सितम्बर-अक्तूबरमें फिर सैलानियोंके लिए छोटा-सा मौसिम आ जाता है। इस वक्त बरसातसे सिक्त वनाली अधिक हरी-भरी मालूम होती है, आकाश भी नीरज और निरभ्र रहता है, जिससे पहाड़के मेरुदण्डपर पहुँचकर दूर-दूरके दृश्यको देखा जा सकता है। जनवरी-फरवरीके महीने अधिक सर्दीके हैं, जब कि कभी-कभी तापमान ३२ डिग्रीसे नीचे चला जाता है और इसी समय कभी-कभी बर्फ पड़ा करती है। गर्मीके दिनोंमें भी नीचेके जाड़ों जैसी सर्दी पड़ती है, इसलिए वैसे ही गर्म कपड़ोंकी यहाँ जरूरत पड़ती है। १९५१-५२ में वृष्टि ८५ इंच और हिमवृष्टि १६·५ इञ्च हुई।

रामलीला क्वार, दधिकाँदो कार्त्तिक और नन्दाष्टमीको यहाँ मेले लगते हैं।

यात्रा—काठगोदामतक रेल और उसके बाद मोटर होनेसे नैनीताल पहुँचनेमें बहुत आसानी है। कलकत्तासे आनेवाले सीधे पंजाबमेल या देहरादून एक्सप्रेससे बरेली या मुरादाबाद पहुँच सकते

हैं, जहाँसे सरकारी बसें सीधे नैनीताल पहुँचाती हैं। यदि रेलसे यात्रा करना चाहें, तो बरेलीसे उत्तरी रेलवेकी छोटी लाइनकी ट्रेनें सीधे काठगोदाम जाती हैं। कलकत्ता यहाँसे ८२८ मीलके करीब है और यात्रामें ३२ घंटे लगते हैं। बम्बई, दिल्ली जानेवाली ट्रेनें आगरासे गुजरती हैं। उत्तरी रेलवेकी छोटी लाइनकी ट्रेन आगरा किला स्टेशनपर पकड़नेपर वह सीधे काठगोदाम पहुँचाती है। यह सारी दूरी ९७० मीलकी है, जिसके तै करनेमें करीब ४६ घंटे लगते हैं। बम्बईके यात्री सीधे दिल्ली भी आकर मुरादाबादकी ट्रेन पकड़ सकते हैं, जहाँसे रोडवेजकी बसें नैनीताल ले जानेके लिए तैयार मिलती हैं। मद्राससे नैनीताल पहुँचनेका भी वही रास्ता है, जो बम्बईका, क्योंकि मद्राससे दिल्ली आनेवाली ट्रेनें आगरा पार करती हैं। मद्रास नैनीतालसे १६७५ मील और ८६ घंटेकी दूरीपर है। पटनासे आनेवाले कलकत्तेके रास्तेको पकड़ सकते हैं। प्रयागसे सीधी गाड़ी बरेलीको मिलती है, जहाँसे बस या ट्रेन पकड़ी जा सकती है। लखनऊसे तो छोटी लाइनकी ट्रेन सीधे काठगोदाम पहुँचाती है।

काठगोदाम स्टेशनपर सरकारी बसें नैनीताल (२२ मील) के लिए मिलती हैं। चाहनेवाले वहाँसे टैक्सी भी ले सकते हैं। काठगोदामसे निकलते ही मोटर पहाड़ोंके भीतर घुसती है। आगे उसके दो रास्ते हो जाते हैं, बायेंवाला रास्ता सीधे नैनीताल जाता है और दाहिनेवाला कितनी ही दूरतक भवाली-अलमोड़ावाली सड़कपर नैनीतालके लिए अलग होता है। नगरके आनेसे पहले ही चुंगी-चौकी मिलती है, जहाँ म्युनिसिपैलिटी कारके मुसाफिरोंसे प्रतिव्यक्ति दो रुपया और बसके यात्रियोंसे एक रूपया वसूल करती है। पैदल जानेवालोंसे कोई कर नहीं लिया जाता। आगे दोनों रास्तेसे आनेवाली मोटरें तल्लीतालमें जा एक ही अड्डेपर खड़ी होती हैं। अड्डेपर खड़े होते ही भरिया (कुली) चारों ओरसे दौड़ पड़ते हैं, जिनमेंसे अधिक पश्चिमी नेपालके हैं। पता देकर आप अपना सामान उनके जिम्मे लगा सकते हैं। अड्डेसे आगे मोटर नहीं जा सकती, लेकिन वहाँ रिक्शे और डंडी काफी तैयार मिलती हैं। यदि चाहें, तो आठ आना देकर नाव द्वारा झील पारकर मल्लीताल पहुँच सकते हैं। झीलमें नावपर झिझिरी खेलना बड़ा ही सुन्दर मालूम होता है। यह एक चीज है, जो नैनीतालके मूल्यको बहुत बढ़ाये हुए है।

ठहरनेके स्थान—बाहरसे आनेवालोंके लिए नैनीतालमें ठहरनेके बहुतसे स्थान हैं। अधिक समय रहनेवाले अकेले या मिलकर बंगला ले सकते हैं। बंगलोंका किराया सालभरका देना पड़ता है, चाहे उसमें आप सालभर रहें या दस दिन। अंग्रेजोंके वक्तमें भी यहाँके प्रायः सभी बंगले भारतीयोंके थे, जिन्हें अंग्रेज किरायेपर लिया करते थे। १९वीं शतीमें और २०वीं शतीमें भी प्रथम युद्धके पहले चीजें बहुत सस्ती थीं, नौकर-चाकर बहुत कम वेतनपर मिल जाते थे, इसलिए एक-एक साहबबहादुरके पास दर्जनों नौकर हुआ करते थे। वह पूरी पल्टनके साथ पहाड़में आते थे, इसका सबूत हर बँगलेके साथ आधे दर्जन, एक दर्जन या उससे भी अधिक कोठरियोंवाले औटहौस हैं, जो अब अधिकतर खाली रहते हैं। बँगले वैसे बहुत अच्छे हैं, लेकिन फ्लशका इन्तिजाम न होनेसे आधुनिकता और सफाईकी कमी कही जा सकती है। लेकिन नालियाँ सभी जाकर तालमें ही गिरती हैं, इसलिए फ्लशका इन्तिजाम सामूहिक रूपसे न होकर अलग ही अलग हो सकता था। बँगलोंका किराया बहुत ज्यादा नहीं है, आजकलके नीचेके शहरोंसे तुलना करनेपर तो वह बहुत ही सस्ते मालूम होते हैं। जो बँगले तालके किनारेसे जितनी ही अधिक ऊँचाईपर हैं, उनका किराया भी उसीके अनुसार कम है। दो-तीन-सौ रुपयेमें दो-तीन कमरे आसानीसे मिल सकते हैं। आर्य-

समाजमें भी मामूली किरायेपर ठहरनेके लिए कमरे मिल जाते हैं। वैसे यहाँ देशी और विदेशी, दोनों ढंगके बहुतसे होटल हैं।

मल्लीतालमें—

मेट्रोपोल होटल	७७ कमरे	ग्रांड	१६ कमरे
रायल हो०	७१ ,,	इंडिया	१५ ,,
वाई. एम्. सी. ए.	३१ ,,	मेलविल	१२ ,,
वल्डोर्फ अस्टोरिया	२० ,,	सफोकहोल	११ ,,
शेरका डाँडा—		मेट्रो	१० ,,
नैनी हो०	७० ,,	वलेरिया	७ ,,
एवरेस्ट हो०	४६ ,,	एवलिन लाज	६ ,,
एल्फिन्स्टन हो०	३५ ,,	**आयरपाटा—**	
सिल्वरटन हो०	२६ ,,	इम्पायर होटल	३४ ,,
वाई. एम्. सी. ए.	२१ ,,	हिमालय	३३ ,,
सेण्ट्रल	२० ,,	हिन्दुस्तान	१२ ,,

नैनीताल जिलाबोर्ड—जनवरी १८९२ ई० में इसकी स्थापना हुई। जिलेके प्रारंभिक शिक्षा, चिकित्सा, सड़कों और बँगलोंका इन्तजाम इसके हाथमें है। स्वतन्त्रताके बादसे इसके सदस्य वयस्कमताधिकारके अनुसार चुने जाते हैं और अध्यक्षका भी उसी तरह सार्वजनिक चुनाव होता है। जिलाबोर्डके कामोंके बारेमें अन्यत्र लिखा जा चुका है।

पुस्तकालय—सरकारी पुस्तकालय कभी यहाँका बहुत अच्छा पुस्तकालय था, लेकिन अब वह बन्द हो चुका है। नगरपालिकाकी लाइब्रेरी मालरोडपर तालके बिलकुल किनारे है। यहाँ हिन्दी-अंग्रेजीकी पुस्तकोंका अच्छा संग्रह है। अस्थायी मेम्बर बनकर वहाँसे पुस्तकें ले जा सकते हैं। इनके अलावा नारायण, रेनाल्ड जैसे कुछ पुस्तक-विक्रेता भी पुस्तकें पढ़नेके लिए उधार देते हैं।

खेल-तमाशे—बँगलोंमें घोड़ोंके रखनेका भी इन्तिजाम है, क्योंकि मोटरके युगके पहले साहब लोग अपने घोड़े भी लाया करते थे। घुड़दौड़का छोटा-सा मैदान (मल्लीताल) कभी इस्तेमाल किया जाता था। पोलो, फुटबाल, हाकी और क्रिकेट खेलनेके लिए खुले मैदान हैं। कभी यहाँ क्रिकेट क्लब, जिमखाना आदिके अच्छे संघटन थे, जिनमेंसे कुछ अब भी मौजूद हैं। बोट क्लबकी ओरसे सालमें नावोंकी दौड़ करायी जाती है। मेट्रोपोल होटल तथा रायल होटलमें होटलके हातेके भीतर टेनिस खेलनेके लिए क्षेत्र मौजूद है। गोल्फका रवाज अब अंग्रेजोंके चले जानेसे उतना नहीं रहा, लेकिन राजभवनमें अठारह छेदोंवाला अच्छा गोल्फमैदान मौजूद है। सवारीके लिए घोड़े भी यहाँ किरायेमें मिल जाते हैं। स्केटिंगके लिए भी इन्तजाम है और नगरमें कैपिटल, राक्सी अशोक आदि सिनेमा-घर हैं।

शिकारियोंके लिए नैनीतालमें काफी आकर्षण हैं। लाइसेन्स लेकर तालमें मछलीका शिकार किया जा सकता है। तालमें महासिर और पहाड़ी रोहूको खास तौरसे पालकर रखा गया है। उनकी संख्या कभी इतनी बढ़ गयी थी कि कभी-कभी वह किनारेपर भी घमतप्पी करती दिखाई देती थीं। १९४२ ई० में मछलियोंकी महामारी आयी, जिसके कारण सैकड़ों-हजारों मर गयीं, तो भी मछलियाँ बहुत हैं। तीन सेरतककी महासिर बंसीमें फँस जाती हैं। वह कभी-कभी पन्द्रह सेरतककी

भी पकड़ी गयी है। नगरपालिकाके सेक्रेटरी मछली मारनेका लाइसेन्स देते हैं। मछलीका शिकार खुरपातालमें भी किया जा सकता है, जो नैनीतालसे तीन मीलपर पड़ता है। भीमताल बारह मीलपर है, वहाँ भी इसके लिए जाया जा सकता है। भीमतालमें होटल, डाकबँगले और नौका नैनीतालकी तरह ही मौजूद हैं। नौकुचियाताल, मालवाताल, सातताल में भी मछलियाँ हैं, किन्तु वहाँ ठहरनेके लिए डाकबँगले नहीं है, अतः लौटकर भीमताल, भवाली या नैनीताल ही ठहरना पड़ेगा। नैनीतालसे भाबर बहुत दूर नहीं है, जहाँ बाघ, चीता, तेंदुआ आदि वन्यजन्तु पाये जाते हैं। नैनीतालके आस-पासके जंगलोंको ये जन्तु बहुत पहले छोड़ चुके हैं, लेकिन साँभर, चीतल, गुराल, काकड़ आदि हरिनकी जातिवाले जन्तु अब भी मौजूद हैं। कोकला, चकोर, जंगली मुर्गी, कालिज आदि पक्षी भी शिकारके लिए मौजूद हैं। भीमताल और नौकुचियातालमें साइबेरियासे जाड़ोंमें भारतके मैदानोंमें आनेवाली 'तलही' चिड़ियाँ कभी-कभी पायी जाती हैं।

बैंक—यहाँ इम्पीरियल बैंक, इलाहाबाद बैंक, पंजाब नेशनल बैंक आदिकी शाखाएँ हैं।

आस-पासकी सैर—झील और उसकी सैकड़ों डोंगियाँ स्वयं सैलानियोंके लिए भारी आकर्षण रखती हैं। शाम-सवेरे नौका-चालनमें बड़ा आनन्द आता है। अक्सर लोग मल्ली और तल्लीतालके बीचमें यात्रा भी नावोंसे किया करते हैं। आस-पासके पहाड़ोंमें घूमना, पिकनिक करना भी एक बड़े आनन्दकी चीज है, जिसके लिए भोजन और गर्म चाय साथ ले जाना चाहिये।

चीनाशिखर (८५६८ फुट) यहाँका सर्वोच्च शिखर बड़ा ही दर्शनीय स्थान है। लेकिन जितना ऊँचा है, उतना रास्ता कठिन नहीं है। इसपर पहुँचनेके लिए दूरका लेकिन अच्छा रास्ता मल्लीतालके डाकखानेसे चक्कर-सड़क (सर्कुलर रोड) का है, ओ अलमालाजके पास चीनाखालकी ओर जानेवाले रास्तेपर पहुँचाती है। फिर पीछेकी ओरसे परिक्रमा करते रास्ता ऊपर उठता है। साढ़े तीन मीलकी यात्रा पूरा करके आदमी चीनाशिखरके बिलकुल ऊपर पहुँच जाता है। वहाँसे हिमशिखरोंको देखा जा सकता है और उनके पहचाननेके लिए पत्थरपर निशान बनाकर रखा हुआ है। वनभोजके लिए सचमुच ही बहुत सुन्दर स्थान है। वहाँ पहुँचकर आदमी चढ़ाईके सारे परिश्रमको भूल जाता है। जिनको चढ़नेमें कोई दिक्कत हो, वह डंडी या घोड़ा ले आरामसे ऊपर पहुँच सकते हैं। लौटते वक्त वह देवपाटा (ऊँटपीठ ७९९१ फुट) की ओरसे नीचे उतरकर राज्यभवन (सचिवालय) के हाते अथवा कालाढुंगीसे आनेवाली सड़क पकड़कर मल्लीताल आ सकते हैं। इसकी सड़कें हैं—चक्कर-सड़क, माल्डन-सड़क, अमला-सड़क, टान्नीची सड़कसे जाकर व्यास बिलाके पास चीनाशिखरकी सड़क पकड़ना। दूसरा रास्ता है—राज्यभवनके भीतरसे।

हिमदर्शन (Snow view)—यह मल्लीतालसे प्रायः दो मीलपर है। वहाँके डाकखानेसे दाहिनेकी सड़कपर चढ़ते ओकलाजके ऊपर चक्कर-सड़कको पकड़ लेना चाहिये। फिर उसे छोड़ कहालाके चुंगीघरके पास दाहिनी ओर हिमदर्शन-सड़क मिल जाती है, जहाँसे नातिदूर हिमदर्शन स्थान है। यहाँ भी वनभोजके लिए अच्छा इन्तजाम है, लेकिन पानी अपने साथ ले आनेकी जरूरत है।

लड़ियाकाँटा (८१४४ फुट)—यह शिखर नैनीताल परकोटाके बाहर होते हुए भी मल्लीतालसे साढ़े तीन मीलपर ही है। यहाँसे हिमालय तथा देश, दोनोंका सुन्दर दर्शन होता है। चक्कर-रोड और हिमदर्शन-सड़क होते कहालाकी चुंगी-चौकीके पास सैरना जानेवाली सड़क मिल जाती है। आगे वनोंसे ढँकी हुई शान्त पर्वतस्थलीमें चलनेका आनन्द आता है। यदि काफल या हिसालूके पकनेका समय है, तो जंगली फल खानेका आनन्द भी मिल सकता है। बुराँस अप्रैल-

मईमें अपने लाल रंगके फूलोंसे वनकी शोभाको और भी बढ़ा देते हैं। लड़ियाकाँटाके आखिरी चन्द फुट कुछ डर पैदा करनेवाले जान पड़ते हैं, लेकिन वहाँसे दूरबीन द्वारा आकाश निरभ्र होनेपर रेलवे लाइनको देखा जा सकता है।

आयरपाटा (७६८९ फुट)—नैतीतालके पश्चिमवाले पहाड़का यही नाम है, जिसका उच्चतम स्थान मल्लीतालसे दो मीलपर है। वनभोजके लिए इस पर्वतके अनेक स्थानोंपर लोग बराबर जाया करते हैं। तल्लीतालसे भी चक्कर-सड़क और औबरी सड़क द्वारा इसपर पहुँचा जा सकता है। टिफनटापके सीमेंटसे बने चबूतरेसे परकोटाके भीतरकी कितनी ही जगहोंको देखा जा सकता है। झीलके अतिरिक्त शेरवुड, राज्यभवन तथा मल्लीताल यहाँसे दिखलाई पड़ता है। ऊपर-वाले टिफनटापसे भाबर और तराईका नजारा आँखोंके सामने आता है। मल्लीतालसे मैट्रोपोल होटलके पाससे होते आयरपाटापर पहुँचा जा सकता है।

भूमिका अन्त (७०१० फुट)—यह भी वनभोजके लिए बड़ा सुन्दर स्थान है, जो मल्लीतालसे सवा दो मीलपर है। कालाढुंगीका रास्ता जहाँ डाँड़ेको पार करता है, वहाँसे भूमिका-अन्त-सड़क मिल जाती है। इस जगहसे खुरपाताल और नीचे भाबरकी भूमि दिखलाई पड़ती है।

छोटी-मोटी यात्राएँ—नैनीतालके सैलानियोंके लिए यहाँसे खुरपाताल, भीमताल, नौकु-चियाताल, सातताल, मालवाताल जैसे छखाता पट्टीके बहुतसे तालोंको देखनेका सुभीता है, उसी तरह यहाँसे मोटर द्वारा भवाली, खैरना, रामगढ़, रानीखेत, अलमोड़ा, बैजनाथ, बागेश्वर आदि देखनेका भी सुभीता है। सभी जगहोंपर होटल या डाकबँगले मौजूद हैं। रामगढ़में दूकानोंमें खानेका इन्तजाम हो सकता है।

तालोंकी सैर—यह बतला चुके हैं कि तालोंकी बहुतायतके कारण ही इस प्रदेशका पुराना नाम साठखात (षष्ठी खात, छखात) पड़ा।

खुरपाताल मल्लीतालसे तीन ही मीलपर है, इसलिए सबेरे जाकर आरामसे शामतक लौटा जा सकता है। मल्लीतालसे कालाढुंगी-सड़कसे बड़ापाथर डाँड़ेपर पहुँचकर उतराई शुरू हो जाती है। बड़ापाथरसे दाईं ओर भूमिका-अन्त छूट जाता है। खुरपातालमें भी मछलियाँ बहुत हैं, लेकिन मछलीका शिकार करनेके लिए जिलाधीशसे आज्ञा लेनी पड़ती है। **भीमताल** जानेके लिए मोटरसे भवाली पैदल वा घोड़ेपर चार मीलका रास्ता तै करना पड़ेगा। यहाँ ठहरनेके लिए होटल और डाकबँगलेका इन्तजाम है। तालके चारों तरफ सड़क जाती है, इसलिए घूमनेका बड़ा आनन्द है। नौकाविहार और मछलीका शिकार भी यहाँ हो सकता है। **नौकुचियाताल** भीमतालसे ढाई मील और आगे जानेपर पड़ता है। यह नौ कोनावाला ताल भी अपने प्राकृतिक सौन्दर्यकी विशेषता रखता है। कमलके फूल अपने मौसममें खिलकर दर्शकके आनन्दकी वृद्धि करते हैं। **सातताल** भवालीसे साढ़े तीन मीलपर है। भीमताल जानेवाले रास्तेके आधेसे इसका रास्ता दाहिनी ओर फटता है। यहाँ होटल और डाकबँगलोंका सुभीता नहीं है, लेकिन ईसाई मिशनरियोंके अपने आश्रम हैं। कुछ छोटे-छोटे बँगले भी तालके किनारे हैं। सातताल्लोंका दृश्य सुन्दर है। **मालवाताल** करीब-करीब उतना ही लम्बा है, जितना नैनीताल, लेकिन धीरे-धीरे सूख रहा है। इसके चारों तरफ भी हरे-भरे पर्वतोंका सौन्दर्य फैला हुआ है। रास्ता भवालीसे नौ मील है। ठहरनेके लिए यहाँ डाकबँगला और तालमें सैर करनेके लिए नौकाएँ भी मौजूद हैं।

भवाली—समुद्रतलसे ६००० फुटकी ऊँचाईपर है। नैनीतालसे भवाली मोटर जाती है। ब्रेवरी यहाँसे दस मील है, जहाँ काठगोदामेकी मोटर-सड़क आकर मिल जाती है। वहाँसे दस

ील और आगे भवाली है। सेनिटोरियम भवाली बाजारसे मीलभर पहले ही मिलता है। उत्तरी ारतका यह सबसे बड़ा टी० बी० सेनिटोरियम है, जहाँ तपेदिकके रोगियोंकी चिकित्सा और रहनेका न्तजाम है। नैनीतालसे पैदल जानेपर भवाली सात ही मील दूर है। रास्ता तल्लीतालसे छावनी होते ाता है। भवालीमें अलमोड़ा, रामगढ़, काठगोदाम और नैनीतालकी मोटर-सड़कें मिली हैं, तथा ालोंपर भी पहुँचनेके लिए यहाँसे जाना पड़ता है। बाजार यहाँका काफी बड़ा है और ठहरनेके ए होटल तथा धर्मशालाओंके अतिरिक्त दो डाकबँगले भी हैं। मई-जूनमें यहाँ खूबानी, आड़ू और ब बहुत मिलते हैं। रामगढ़के लिए मोटर यहाँसे मिलती है, जो पैदल जानेपर पाँच मील पड़ता है। मगढ़ अपने सेबके बगीचोंके लिए बहुत मशहूर है। ठहरनेके लिए वहाँ होटल, डाकबँगला तथा रीक्षण-भवनमें जगह मिल सकती है। भवालीसे दो मीलपर भोराखाल है, वहाँ भी कुछ सेबके गीचे हैं। मुक्तेश्वर जानेके लिए रामगढ़तक मोटरसे जा ११ मीलकी चढ़ाई-उतराई करके मुक्तेश्वर हुँचा जा सकता है। **रानीखेत**की मोटर भवालीमें मिलती है, जिससे ही अलमोड़ा भी पहुँचा जा कता है। रानीखेत नैनीतालसे ४८ मील है।

नौकुचियाताल (२९° १९′ × ७९° ३५′, ४००० फुट)—यह कुमाऊँकी सबसे सुन्दर झील त्तरसे दक्षिण सौ गज लम्बी तथा अधिकसे अधिक ७५० गज चौड़ी है। आसपासके ऊँचे पहाड़ ीचेसे ऊपरतक बंजके घने जंगलोंसे ढँके हैं। झील तीन तरफ पहाड़ोंसे घिरी और केवल उत्तरी रफ खुली हुई है, जहाँ पानी रोकनेका बाँध है। इस बाँधके ऊपर खड़ा होकर भीमताल और ासपासके पहाड़ोंका सुन्दर दृश्य देखा जा सकता है। इसका पश्चिमोत्तर भाग उथला है, जिसमें नेक रंगके कमल और सेवार आदि पायी जाती है। मछलीके शिकारके लिए भीमतालसे भी यह च्छी झील मानी जाती है, जिसके लिए पास लेनेकी जरूरत पड़ती है।

प्यौड़ा (२९° ३०′ × ७९° ३७′, ५६९० फुट)—यह रामगढ़से दस, अलमोड़ासे साढ़े ाठ और नैनीतालसे तेईस मीलपर अवस्थित है। गाँवमें डाकबँगला है। मुक्तेश्वर-पर्वतश्रेणीके उत्तरी र्श्वपर होनेके कारण जाड़ोंमें स्थान अधिक सर्द रहता है। अलमोड़ाका पुराना रास्ता कभी यहींसे कर जाता था, लेकिन मोटरने अब उसको बदल दिया है। प्यौड़ासे लम्बी उतराई उतरकर वालके गरारी पुलपर पहुँचा जाता है, जहाँसे सख्त चढ़ाई चढ़के अलमोड़ा पहुँचते हैं।

बाजपुर (२९° ५′ × ७९° ७′)—मुख्य-तराई-सड़कपर घुरा नदीके बायें तटपर यह व गदरपुरसे १२, काशीपुरसे १२, मुरादाबादसे ३२ और कालाढुंगीसे १५ मीलपर अवस्थित है। जपुरसे अधिक महत्त्व वहाँसे थोड़ा ही दूर पूर्वमें अवस्थित मुंडियाका है, जो कि कालाढुंगीसे रादाबाद जानेवाली पड़कपर बाजारका गाँव है। मुड़ियासे एक मील उत्तर शफाखाना है, जहाँ स्पताल तथा लालकुआँसे काशीपुर जानेवाली रेलवे सड़कका स्टेशन भी है।

बाजपुर तराईका एक परगना भी है, जो कि पूर्वमें गदरपुर, उत्तरमें कोटा भाबर, पश्चिममें ालकिया तथा काशीपुर परगना और दक्षिणमें रामपुर जिलेसे घिरा हुआ है, सदर मुकाम शफा- ाना है। परगनेमें ११९ गाँव हैं, जिनमें सुल्तानपुर, बाजपुर, केलाखेड़ा और इसलामनगर बड़े व हैं। यह परगना तराईका सबसे स्वास्थ्यकर परगना माना जाता है। यहाँ रबीकी फसल भी च्छी होती है। भुक्सा लोग धानकी खेती करना अधिक पसन्द करते हैं। परगनेमें हिन्दू और ुसलमान दोनोंकी संख्या करीब-करीब बराबर है। हिन्दुओंमें बहुसंख्यक भुक्सा, पँवार और लोद जब कि मुसलमानोंमें शेख और बंजारा अधिक संख्यामें मिलते हैं। कोसीके पश्चिम ओरके सात गाँव इस परगनेमें पड़ते हैं। १८८० ई० की बाढ़के पहले यह गाँव कोसीके पूर्वमें थे,

लेकिन नदीने अपनी धार बदलकर उन्हें पश्चिममें कर दिया। दबका नदीके उत्तर भुक्सा लोगोंके गाँव हैं और दक्षिणमें मुसलमानोंके।

बिलहरी परगना—तराईका यह सबसे पूर्वका परगना नेपाल तथा शारदा नदीके पास पड़ता है। इसके उत्तरमें भाबरतल्ला-देश अलमोड़ा जिलेमें है, दक्षिणमें पीलीभीत जिला है, पश्चिममें चौभैंसी-भाबर और नानकमताके परगने हैं, जिनको कामिन और देवहा नदियाँ अलग करती हैं। इस परगनेमें ९१ गाँव हैं और शासनकेन्द्र खातिमा परगनेके केन्द्रमें है। बिलहरी एक मामूली-सा गाँव है। मुसलमान यहाँ नाममात्र हैं। हिन्दुओंमें अधिक संख्या थारू लोगोंकी है। उनके बाद लोद, किसान और चमार लोग हैं। खातिमा, मझुवाला, सोन-पहाड़ और नवगाँव यहाँके बड़े गाँव हैं। खातिमा और मझुवालामें हफ्तेमें दो दिन हाट लगती है। हरिद्वारसे शारदाके किनारेतक जानेवाली मुख्य-तराई-सड़क मेलाघाटसे खातिमा और सितारगंज होती पूर्वको जाती है। दक्षिणसे पीलीभीतकी सड़क मझुवाला, खातिमा और बिलहरी होते टनकपुर जाती है। इसीके साथ-साथ पीलीभीत-टनकपुर रेलवे-लाइन गयी है। यहाँकी नदियोंमें देवहा काफी बड़ी नदी है। बिलहरी परगना तराईका सबसे अस्वास्थ्यकर इलाका माना जाता है, इसीलिए यहाँके किसान अधिकतर थारू हैं। धान यहाँकी प्रधान फसल है, उसके बाद खरीफ और कुछ-कुछ रबीकी भी खेती होती है। सारे परगनेका क्षेत्रफल १४०७०६ एकड़ या करीब २२० वर्गमील है। १९०२ ई० में इसमेंसे केवल १४ प्रतिशतमें खेती होती थी।

अंग्रेज गोरखा युद्धके वर्णनमें कप्तान हियरसीका नाम हम सुन चुके हैं। १८१४ ई० में मेजर हियरसीने बिलहरीके सारे ताल्लुकेको नीलाममें खरीद लिया। गदरके समय (१८५७ ई०) अब भी बिलहरी हियरसी परिवारके हाथमें था। इसे कप्तान एच० जे० हियरसीकी विधवाने मिस्टर डब्लू० एन० हियरसीको इस शर्तके साथ बेंच दिया कि वह उसे २४ सौ रुपया वार्षिक दिया करे। सरकारने मिस्टर हियरसीसे तीन लाखमें जमींदारी खरीद ली और यह निश्चय हुआ कि इस धनमेंसे कुछ अलग रख दिया जायगा, जिससे १२ सौ रुपया उक्त विधवाको मिला करेगा। मिस्टर हियरसीने इस शर्तका पालन नहीं किया। अन्तमें १८८२ ई० में सरकारने १६ हजार रुपयेपर वह वार्षिक देन भी खरीद ली, इस प्रकार नानकमताकी थोड़ीसी जमींदारीको छोड़कर तराईकी सारी भूमि सरकारी जमींदारी हो गयी, जिसका प्रबन्ध एक सब-डिविजनके तौरपर सुपरिण्टेण्डेण्ट द्वारा होता था और एक प्रकार यह अलग जिला-सा था, जिसे १८७० ई० में काशीपुरमें मिला दिया गया। १८८४ ई० में यद्यपि भाबर ज्येष्ठ-सहायक कमिश्नरके हाथमें दे दिया गया, लेकिन तराई पहलेकी तरह तबतक अलग रही, जबतक कि १८९१ ई० नैनीतालका नया जिला नहीं बन गया।

बिसज्यूला (पट्टी)—ध्यानीराव पहाड़ी परगनेमें यह पट्टी है। इसमें कुरौली, पीपाकोट, दुसगर आदि चौबीस गाँव हैं। ऊँचाई बहुत ज्यादा नहीं है, जिसके कारण यहाँ लालमिर्च और हल्दी खूब होती है। ऊपरी पहाड़ोंवाले ग्रामीण जाड़ोंमें भाबरकी अपनी जमींदारियोंमें चले जाते हैं, किन्तु गोला उपत्यकावाले बारहों महीना वहीं रहते हैं। अनाज भी यहाँ अच्छा पैदा होता है।

बिसौद (पट्टी)—कुटौली परगनेमें तल्ला और बिचल्ला बिसौद नामकी दो पट्टियाँ हैं। चुपारा और कमोली तल्ला बिसौदके बड़े-बड़े गाँव हैं। इस पट्टीकी भूमि बड़ी उर्वर है। यहाँके लोगोंकी काफी भूमि चिलकिया-भाबरमें भी है। तल्लामें पाँच गाँव हैं, और बिचल्ला बिसौदमें दस। यह प्यौड़ा डाकबंगलासे नीचे सुवाल नदीकी ओर जाती हुई मुक्तेश्वर पर्वतश्रेणीकी ढलानमें है। प्यौड़ा और सून यहाँके बड़े-बड़े गाँव हैं।

बैलपड़ाव (२९° १८′×७९° १३′)—रामनगर–हल्दवानी रास्तेपर रामनगरसे सात और हल्दवानीसे दो मीलपर यह पहाड़की तराईमें बसा बाजार-गाँव है। यहाँसे नौ मीलपर काठगोदामका रेलवे-स्टेशन है। यहाँ एक सरकारी जमींदारीका बँगला है। गाँवके पाससे ही बैलपड़ाव-नहर निकाली गयी है। बृहस्पतिवारको यहाँ हाट लगती है।

भीमताल (२९° २१′×७९° ३४′, ४५०० फुट)–भीमताल अपनी बड़ी झीलके लिए मशहूर है। काठगोदामसे रामगढ़ होकर अलमोड़ा जानेवाले रास्तेपर यह पड़ता है। तालका पानी गोला नदीमें जाता है। नैनीतालके प्रकरणमें बतला चुके हैं कि भवालीसे यहाँ जानेका रास्ता है। तालकी लम्बाई ५५०० फुट, सबसे अधिक चौड़ाई १४९० फुट और सबसे कम ९२५ फुट, क्षेत्रफल १५५ एकड़ है। ऊपरी भागको सुर्यातल कहते हैं। पानी नीलिमा लिये हुए हरा है और नैनीतालकी तरह नगरकी नालियोंके न आनेसे इसका पानी पीने लायक है। उत्तर-पश्चिमी किनारेसे कुछ गज हटकर एक छोटा-सा द्वीप (६०–७० फुट व्यास) है। भाबरकी सिंचाईके लिए ५०० फुट लम्बा तथा बीचमें ४८५० फुट ऊँचा, ऊपर १० फुट और नीचे ३६ फुट चौड़ा बाँध बँधा हुआ है। पानीके निकासपर लोहेके फाटक लगे हुए हैं। बाँधसे दक्षिण कुमाऊँके राजा बाजबहादुर चन्द्रका बनवाया तीन सौ वर्ष पुराना एक मन्दिर है। बाँधके परले पार डाकबँगला है, जिससे थोड़ा और उत्तर सरकारी जमींदारीका निरीक्षण-भवन है। १९०२ ई० में दक्षिणी अफ्रीकासे बोअर राजबन्दी लाकर सरोवरके उत्तरी किनारेपर रखे गये थे।

मल्लीराव (पट्टी)—ध्यानीराव परगनेमें जिलेके उत्तर-पूर्वी छोरपर लढ़िया नदीके दोनों किनारोंपर अवस्थित है—तल्लीराव अलमोड़ा जिलेके काली-कुमाऊँ परगनेमें है। पट्टीके ऊपरी भागके गाँवोंकी जमीन उतनी उर्वर नहीं है, जितना निचले भागकी। निचले गाँव वस्तुतः असाधारण रूपसे उर्वर हैं। लालमिर्च और हल्दी यहाँकी पैसेवाली फसलें हैं। इनके अतिरिक्त बासमती चावल भी यहाँका बहुत मशहूर है। गुराना और बरेत गाँव अलमोड़ाकी बाराहीदेवीको गुप्त (धर्मादा) मिले हैं। पट्टीके अधिकांश लोग जाड़ोंमें भाबर नहीं जाते।

मालवाताल (२९° २०′×७९° ३९′ २३०० फुट)—यह ताल बहुत टेढ़ा-मेढ़ा है। बीचमें इसकी लम्बाई ४४८० फुट है और सबसे अधिक चौड़ाई ८३३ फुट, क्षेत्रफल १२१·७६ एकड़ और सबसे अधिक गहराई १२८ फुट है। यह छखाताकी झीलोंमें है, यह हम बतला चुके हैं। भीमतालसे ९ और नैनीतालसे २१ मीलपर अवस्थित यह झील सैलानियोंके लिए बहुत आकर्षण रखती है। यहाँ डाकबँगला है। पानी नीले रंगका है। मछलियाँ भी बहुत हैं।

मुक्तेश्वर (२९° २८′×७९° ४०′ ७५००–७७०२ फुट)—स्थानीय लोग इसे मोतेसर भी कहते हैं। प्यौड़ासे धारी जानेवाली सड़कपर प्यौड़ासे पाँच मील दक्षिण-पूर्व यह स्थान अवस्थित है। प्यौड़ासे रामगढ़ जानेवाले रास्तेपर नथुवाखानसे एक रास्ता मुक्तेश्वर गया है। यहाँसे नैनीताल २३ मील और अलमोड़ा १५ मील है। मोटर रामगढ़में मिलती है। काठगोदाम यहाँसे साढ़े चौबीस मीलपर पड़ता है। १८८९ ई० से पहले मुक्तेश्वर अपने महादेवके मन्दिरके लिए थोड़ी-बहुत ख्याति रखता था।

१८८९ ई० में भारत सरकारने ढोरोंकी बीमारियोंके लिए वेकसीन तैयार करनेके वास्ते पूनामें एक प्रयोगशाला स्थापित करनेका संकल्प किया। इसके लिए सितम्बर १८९० ई० में डा० लिनगार्ड इंग्लैण्डसे पूना आये। सब कुछ देखने-भालनेके बाद पूना उसके लिए अनुकूल स्थान नहीं समझा गया और उसे हिमालयके किसी भागमें स्थापित करना ठीक माना गया। जहाँ-तहाँ देखनेके बाद

अगस्त १८९३ ई० में मुक्तेश्वरको इसके लिए सबसे अनुकूल पाया गया, लेकिन काम १८९६ ई० के मध्यमें शुरू हुआ। प्रयोगशाला सितम्बर १८९८ ई० में तैयार हो गयी। अभी सालभर ही काम करते हुए थे कि २७ सितम्बर १८९९ ई० को अकस्मात् आग लग गयी और ६ सालोंका काम ३ घण्टोंमें स्वाहा हो गया। लेकिन मकानोंको फिरसे बनानेका काम शुरू करके १९०१ ई० के अन्ततक प्रयोगशालाको फिर चालू कर दिया गया। प्रयोगशालाके पास रक्षितवन तथा बहुत काफी जमीन मुक्तेश्वर-पर्वतश्रेणीके पार्श्वपर उत्तर-पश्चिमसे दक्षिण-पूर्व ५००० फुटकी ऊँचाईतक ढलती चली गयी है। कोसीकी शाखा फरकामें इसका पानी बहकर जाता है। मुक्तेश्वर प्रयोगशालाकी जमीन ३००० एकड़ है, जिसमें ऊपरी भागमें बंज और निचले भागमें चीड़के जंगल हैं। इसी सुहावनी भूमिमें प्रयोगशाला तथा राष्ट्रीय जीवाणुशास्त्रीय विभागके मकान खड़े हैं। यहाँपर तारघर-डाकघर और एक बाजार भी है। आध मील उत्तर तरफ संस्थाका नर्सरी-बगीचा है, जिसे कुमाऊँके कमिश्नर हेनरी रामजेने बकबागके नामसे स्थापित करके पहाड़में फलोंका प्रचार करना चाहा था। वैकसीन निकालनेके लिए रखे गये पशुओंको ६१०० फुटकी ऊँचाईपर रितानीमें रखा जाता है। यहाँकी ऋतु-वेधशाला ७६०० फुटपर अवस्थित है। अपने प्राकृतिक दृश्य और प्रयोगशालाके महत्त्वके कारण मुक्तेश्वर एक दर्शनीय स्थान बन गया है, इसे कहनेकी जरूरत नहीं।

महरूरी (पट्टी)—महरूरी परगनेमें तल्ली, बिचल्ली और मल्ली नामकी ये तीनों पट्टियाँ जिलेके पहाड़ी भागोंमें अवस्थित हैं। तल्ली महरूरी ४००० से ८००० फुटकी ऊँचाईतक चली गयी है। यह उत्तरमें आगर तथा रामगढ़-मल्लासे, पश्चिममें धनियाकोट, पूर्वमें चौमैंसी और छब्बीस-दुमोला तथा दक्षिणमें छखाताकी पट्टियोंसे घिरी हुई है। इस पट्टीका पश्चिमी आधा भाग रक्षितवन है। आलू यहाँ बहुत होता है। जाड़ोंमें यहाँके लोग हल्दवानीके आसपासके भाबरमें चले जाते हैं, जो इनके बहुसंख्यक ढोरोंके लिए उस समय बहुत आरामका स्थान है। श्यामखेत, सरना और ससबानी यहाँके बड़े-बड़े गाँव हैं। बिचल्ली-महरूरी जिलेके पूर्वोत्तर कोणपर अवस्थित है, इसके पूर्वमें मल्ली-महरूरी और पश्चिममें तल्ली कुटौली और आगरकी पट्टियाँ हैं। पट्टीमें उन्नीस छोटे-छोटे गाँव हैं, जिनमें गहना और सतौली कुछ बड़े हैं। जाड़ोंमें यहाँके लोग भी भाबरमें चले जाते हैं। मल्ली-महरूरी अल्मोड़ाकी डोलफाट पट्टीके साथ लगी हुई है। मुक्तेश्वर इसी पट्टीमें है। यहाँके लोग भी जाड़ोंमें भाबर चले जाते हैं। यह पट्टी गढ़वालके मन्दिरों (केदारनाथ, बदरीनाथ) की गुण्ठ है, जैसे कि बिचल्ली-महरूरी।

रानीबाग (२९° १७′ × ७९° ३३′)—छखाता परगनेमें पर्वतसानुपर यह गाँव बलिया नदीके दाहिने तटपर अवस्थित है। काठगोदाम बढ़ते-बढ़ते अब रानीबागसे मिल गया है, इसलिए इसका नाम भी लोग भूलते जा रहे हैं। किसी समय यहाँ गढ़वालकी एक रानीने बाग बनवाया था, जिसके ही कारण इसका यह नाम पड़ा। रानीबागमें डाकबँगला है।

रामगढ़ (२९° २६′ × ७९° ३४′, ५८७२ फुट)—इस जिलेके सेब और दूसरे फलोंके सबसे अधिक बाग यहीं हैं। भवालीसे मोटर-सड़क हो जानेसे यहाँ पहुँचाना बहुत आसान हो गया है और नीचेसे भी गर्मियोंमें कुछ लोग यहाँ आने लगे हैं। यहाँ धर्मशाला, डाकबँगला, निरीक्षण-भवन हैं। आगे दस मीलपर प्यौड़ा और उन्नीस मीलपर अल्मोड़ाको सड़क जाती है, जो मोटरोंके चालू होनेसे पहले काफी चलती थी। पानीके नलका यहाँ इन्तजाम है। तल्ला और मल्ला रामगढ़की दो पट्टियाँ हैं, जिनमें रामगढ़ मल्ला-रामगढ़में पड़ता है। यहाँ नायक लोगोंकी काफी आबादी है, जिनके पास भाबरमें भी जमीन है, जहाँ जाड़ोंमें अपने ढोरोंको लेकर चले जाते हैं। वह बड़े धनी हैं, और

हल्दवानीके आसपासकी सारी भूमि उनकी है, जिनमें उनके सुन्दर घर और बगीचे खड़े हैं। रामगढ़में हाई स्कूल है। मल्ला-पट्टीमें नायकाना बड़ा गाँव है।

रामनगर (२९° २३′ × ७९° ९′, १२०४ फुट)—कोटासे १२, ढिकुलीसे ६, मोहनसे १२, सेतीसे २०, खैरनासे ३६, अलमोड़ासे ५६ मीलपर यह नगर पहाड़की जड़में अवस्थित है। रेल यहाँतक चली आयी है, जिसके कारण इसका महत्त्व बढ़ गया था। कभी बदरी-केदारके यात्री हरद्वारसे अपनी यात्रा शुरू करके यहीं उसका अन्त किया करते थे। लेकिन, जबसे कोटद्वारासे जोशीमठके पासतक मोटरें दौड़ने लगी हैं, तबसे बहुत कम ही लोग रामनगर या रानीखेत आते हैं। किसी समय कुमाऊँका सबसे बड़े बाजार टनकपुर, हल्दवानी और रामनगर थे, जिनमें पहले दोनोंका स्थान अब भी अक्षुण्ण है। परिस्थितिके प्रतिकूल होनेपर भी गढ़वाल और कुमाऊँके कुछ भागोंकी हल्दी, मिर्च और अनाज यहाँ आता है। यहाँसे भिकियासैन और चाँदमारीतक मोटर-सड़क गयी है। शहरमें डाक-तारघर, थाना, हाई स्कूल, दो डाकबँगले (जिनमें एक सरकारी जमींदारी और दूसरा जंगल-विभागका) हैं। यहाँ कोसीसे नहर निकाली गयी है, जो भाबरके कितने ही भागोंको सींचती है।

रुद्रपुर (२८° ५८′×७९° २५′)—किच्छा (तराई) तहसीलके इसी नामके परगनेका यह बड़ा गाँव है, जो किच्छासे ८ मील पश्चिम, गदरपुरसे १०, हल्द्वानीसे २० और रामपुरसे २६ मीलपर अवस्थित है। यहाँ इतवार और बृहस्पतिको हाट लगती है, चैतके महीनेमें मेला भी लगता है। इस गाँवको कुमाऊँके राजा रुद्रचन्द्रने १५८८ ई० के आस-पास बसाया था। तबसे अक्सर यही तराईकी राजधानी रहा। कप्तान जोन्सने १८४३ ई० में इसके बारेमें लिखा था—"कुछ साल पहले यह बहुत बड़ा और जनसंकुल गाँव था। यह कुछ ऊँची भूमिपर स्वच्छ और बेगवाली नदी बहगुलके किनारे बसा हुआ है। अब यह करीब-करीब सूना हो चुका है। आबाद झोपड़ोंसे ध्वस्त या खाली झोपड़े तिगुने हैं। पुलिसके आदमियोंमें अधिक मृत्यु होनेके कारण थानाको यहाँसे दक्षिण ओर ले जानेको सोचा जा रहा है।" रुद्रपुरके इतने अस्वास्थ्यकर होनेका कारण काशीपुरके राजा शिवराज सिंह का बनवाया बहगुलका बाँध था, जिसके कारण सारे इलाकेमें पानी भर गया। गाँवके नीचे रामपुरके नवाबने भी दूसरा बाँध बनवा दिया। इस प्रकार दोनों बाँधोंके बीचमें एक बड़ी दलदल तैयार हो गयी। कप्तान जोन्सने नहरको ठीक तौरसे निकालकर अवस्थाको सुधारा, लेकिन तराई तहसीलका केन्द्र यहाँसे हटकर किच्छा चला गया, जिसके साथ लक्ष्मी भी गाँव छोड़कर चली गयी। पुराने अच्छे दिनोंके चिह्न अब कुछ सतीके खम्भे, छोटे-छोटे मन्दिर और पुराने कुएँ हैं। मिट्टीके किलेकी दीवारें बहुत कम ही देखनेको रह गयी हैं। रुद्रपुर परगना तराईका केन्द्रीय परगना है, जो उत्तरमें पहाड़की जड़से दक्षिणमें रामपुर और बरेली जिलोंकी सीमातक चला गया है। इसके पूर्वमें किलपुरी और पश्चिममें गदरपुरके परगने हैं। यह परगना १२ मील लम्बा, १२ ही मील चौड़ा है और क्षेत्रफल ७७९०६ एकड़ (प्रायः १२२ वर्गमील) है। परगनेके ७७ गाँवोंमें ७१ सरकारी जमींदारीके थे। किच्छा इसी परगनेमें पड़ता है, जहाँ तराईकी तहसीलका सदर मुकाम है। रुद्रपुर, दराव, ढिंकी, बारा और सहदौरा यहाँके बड़े गाँव हैं। मुख्य-तराई-सड़क काशीपुरसे रुद्रपुर होते किच्छाकी ओर जाती है। इसीके साथ रेललाइन-भी काशीपुरसे लालकुआँको जाती है। परगनेके बहुतसे गाँव शेखों और पठानोंके हैं, मुसलमानोंकी संख्या हिन्दुओंसे कुछ ही कम है। कुर्मी, चमार, अहीर और मुक्सा हिन्दुओंकी बहुसंख्यक जातियाँ हैं। डिमरी, पश्चिमी-बहगुल, बघैया, मदनी, बरोर, किच्छा और पूर्वी बहगुल परगनेकी मुख्य नदियाँ हैं।

लालकुआँ (२९° ४′ × ७९° ३२′)—छखाता-भाबरमें यह बरेली-काठगोदाम और

लालकुआँ-काशीपुरकी रेलवे-लाइनका जंकशन भाबरके दक्षिणी छोरपर अवस्थित है, इसके बाद ही तराई शुरू हो जाती है। रेल-स्टेशनके होनेपर गाँवकी समृद्धि कुछ बढ़ी है।

सातताल (२९° २१′ × ७९° ३३,′ ३३५० फुट)—भवालीसे साढ़े तीन मीलपर यह झील अवस्थित है। सात तालोंमें दो बरसातके दिनोंमें ही दिखाई पड़ते हैं। जिलेका यह बहुत सुन्दर ताल माना जाता है। इसकी लम्बाई २२०० फुट और चौड़ाई ७०० फुट है। तालोंमें तीन काफी बड़े और एक-दूसरेसे जुड़े हुए हैं। भाबरमें नहर ले जानेके लिए यहाँ एक बाँध है, जिसे हेनरी रामजेने १८६९ ई० में बनवाया था। नहरका निकास जब बन्द कर दिया जाता है, तो नीचेके दोनों ताल—सीतातल और रामताल—एक हो जाते हैं। सातताल का पानी नैनीतालसे निकलनेवाली बलिया नदीसे मिलकर डेढ़ मील आगे गोलामें चला जाता है।

सितारगंज (२८° ५६′ × ७९° ४३′)—तराईके किलपुरी परगनेमें मुख्य-तराई-सड़कपर खातिमासे १८, पीलीभीतसे २२, किच्चासे १४, हल्दवानीसे २३, चोरगलियासे १४ मीलपर यह बड़ा गाँव अवस्थित है। उक्त सभी स्थानोंसे कच्ची सड़कों द्वारा इसका सम्बन्ध भी है। यहाँ डाकखाना, स्कूल, औषधालय और पुलिस-थाना-सरकारी जमींदारी और रुहेलखण्ड नहर-विभागके दो डाकबँगले भी हैं। गाँव बीमारीका घर बतलाया जाता है।

सिमालखा (पट्टी)—धनियाकोटके पहाड़ी परगनेमें यह पट्टी है, जिसका बड़ा गाँव सिमालखा कोसीकी उपत्यकामें है। यहाँके लोगोंकी भाबरमें भी काफी जमीन है। यहाँकी जमीन भी बहुत उर्वर है, जिसमें लालमिर्चकी खेती बहुत होती है, लोगोंकी आमदनीका वह अच्छा साधन है।

सुल्तानपुर (२९° ९′ × ७९° ४′)—तराई तहसीलके बाजपुर परगनेका यह बड़ा गाँव कोसी नदीसे थोड़ा-सा पूर्व तथा मुख्य-तराई-सड़कसे उत्तरमें है। सारी तराईमें यह सबसे बड़ा और समृद्ध गाँव समझा जाता है। बुधवारको यहाँ हाट लगती है।

हल्दवानी (१९° १३′×७९° ३२′, १४३४ फुट)—बरेली-नैनीतालकी मोटर-सड़क तथा रेलवे-लाइनपर भाबर तहसीलका यह सदर मुकाम है। हल्दू वृक्षोंका कभी यहाँ जंगल था, इसीलिए इसका यह नाम पड़ा। कुमाऊँके प्रथम कमिश्नर ट्रेलने १८३४ ई० में जाड़ोंमें भाबरमें रहनेवाले पहाड़ी लोगोंके लिए इस हाटको बसाया था। नैनीताल-अलमोड़ाके रास्तेपर पड़नेके कारण आगे इसका महत्त्व बहुत बढ़ा। कुमाऊँ कमिश्नरी और नैनीताल जिलेके अफसर तथा कचहरियाँ भी अक्तूबर-से अप्रैलतक यहाँ रहने लगीं, जिससे हल्दवानीके बढ़नेमें बड़ी सहायता मिली। १८८५ ई० में वह अब ऐसी अवस्थामें हो गया कि इसे कस्बा (टौन) मान लिया गया और १ फरवरी १८९७ ई० में नगरपालिका (म्युनिस्पैलिटी) भी कायम हो गयी, किन्तु १ अप्रैल १९०४ ई० में नगरपालिकाको सूचीकृत क्षेत्रके रूपमें परिणत कर दिया गया। लेकिन, हल्दवानी बढ़ती ही गयी और वह फिर म्युनिस्पैलिटी बन गयी।

हल्दवानीमें एम० बी० इण्टरकालेज, ललित महिला विद्यालय, संस्कृत पाठशाला और जुलाहा स्कूल नगरपालिका द्वारा सहायता-प्राप्त शिक्षणालय हैं। प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य होनेसे कई प्रारम्भिक स्कूल भी हैं, जिनमें सात उच्च आधारिक (बेसिक) प्राइमरी स्कूल और दो निम्न प्राइमरी स्कूल हैं। ३१-३-१९५२ में इन स्कूलोंमें विद्यार्थियोंकी संख्या निम्नलिखित प्रकार थी—

७. अपर-प्राइमरी स्कूल	१७२५
२. लोअर-प्राइमरी स्कूल	२२७
बालिका प्राइमरी स्कूल	६०
	२०१२

लड़कियोंकी शिक्षा अभी भी सन्तोषजनक नहीं है, तो भी यह प्रसन्नताकी बात है कि २ सितम्बर १९५२ से यहाँ लड़कियोंका हाई स्कूल खुल गया है।

हल्दवानी और काठगोदाम, दोनोंमें बिजली हो गयी है।

हल्दवानी तहसील भाबर तहसीलका ही दूसरा नाम है, जिसमें भाबर-चौभैंसी; भाबर-छखाता, भाबर-कोटा और चिलकिया-भाबरकी चार पट्टियाँ हैं। इनमें कोटा और चिलकिया-भाबरका पेशकार रामनगरमें रहता है और नायब-पेशकार कालाढुंगीमें। यह तहसील बहुत लम्बी पश्चिममें बिजनौर जिलेसे पूर्वमें नेपालकी सीमाके पास अलमोड़ा जिलेके तल्ला देश भाबरतक चली गयी है। इसके उत्तरमें पहाड़ और दक्षिणमें किच्चा (तराई)की तहसील है। हल्दवानीके अतिरिक्त रामनगर, कालाढुंगी और रामनगर-काठगोदाम भी इसी तहसीलमें हैं। तहसीलमें अधिक संख्या हिन्दुओंकी है, जिनमें पहाड़के ब्राह्मण, राजपूत और शिल्पकार और मैदानी जातियोंमें चमार, माली, दर्जी, बनिया, गड़रिया आदि हैं। मुसलमानोंमें अधिकतर जुलाहा, बंजारा और तेली हैं।

चिकित्सा—मनुष्य-चिकित्साके लिए जिलेमें डाक्टरी और आयुर्वेदिक, दोनों प्रकारके चिकित्सालय हैं—

१.	हल्दवानी (मर्दाना)	एलोपैथी
२.	,, (जनाना)	,,
३.	रामनगर	,,
४.	कालाढुंगी	,,
५.	किच्चा	,,
६.	बाजपुर	,,
७.	खातिमा	,,
८.	भीमताल	,,
९.	जसपुर	,,
१०.	खनस्यूँ	,,
११.	हल्दवानी	,,
१२.	काशीपुर	,,
१३.	सितारगंज	,,
१४.	रामगढ़	,,
१५.	ज्यौलीकोट	,,

उपर्युक्त चिकित्सालयों और अस्पतालोंपर १९५१-५२ ई० में ७३२८६ रुपया खर्च हुआ, जब कि उससे पहले साल वह ८८६४९ रुपया था, जिसमें १८८०० रुपया (१८९००) दवाइयोंपर खर्च हुआ।

एलोपैथीके अतिरिक्त (१) पहाड़पानी, (२) खैरना और (३) भौरसामें तीन आयुर्वेदिक औषधालय भी हैं।

पशुचिकित्सालय—जिलेमें (१) भीमताल और (२) काशीपुरमें दो जानवरोंके अस्पताल हैं। इनके अतिरिक्त (३) विद्या, (४) खातिमा, (५) रामनगर, (६) नथुवाखान, (७) खनस्यूँ, (८) कालाढुंगी, (९) लालकुआँ, (१०) टनकपुर, (११) सितारगंज, (१२) जसपुर, (१३) बाजपुर, (१४) कोटाबाग और (१५) गरजियामें जानवरोंकी दवा बाँटनेके लिए आदमी रखे गये हैं।

विश्रामगृह (डाकबँगले)—जिलेमें प्रथम और द्वितीय श्रेणीके पन्द्रह डाकबँगले हैं। मोटरोंके चलनेके कारण बहुतसे डाकबँगलोंमें लोग नहीं ठहरते और वे बेमरम्मत होते जा रहे हैं।

परिशिष्ट १

यात्राओंकी तैयारी

१. यात्रा-माहात्म्य—किसी वर्द्धमान देशकी प्रगति केवल कृषि, उद्योग-धन्धे, साहित्य-निर्माण, राजनीतिक और सैनिक बल आदिके एक-एक क्षेत्रमें ही सीमित नहीं देखी जाती, बल्कि बढ़ते हुए राष्ट्रके मनसूबोंकी छाप जीवनके सभी पहलुओंपर दिखलाई पड़ती है। सैर-सपाटे, साहस-यात्राएँ भी उसी जीवनका अंश है। पुराने समयमें, जब कि भारत एक सबल और वर्धिष्णु शक्ति था, उसके साहसी पुत्र और पुत्रियाँ भी दुनियाके कोने-कोनेमें पहुँची थी। आज फिर इस क्षेत्रमें हमें अपनी हिम्मतको दिखलाना है। देश-देशान्तरोंकी साहस-यात्राएँ प्रत्येक व्यक्तिके करनेकी बात नहीं है। हिमालयमें ऐसे स्थान हैं, जहाँ अल्प समय और अपेक्षाकृत अल्प साहसवाले व्यक्ति भी अपनी उमंगोंको पूर्ण कर सकते हैं। दार्जलिंग, कलिम्पोङ्ग, गङ्टोक, खरसान् अथवा अलमोड़ा, रानीखेत, नैनीताल, मसूरी, चकरौता, शिमला, सोलन हिमालयके ऐसे आकर्षक स्थान हैं, जहाँ आदमी बड़ी आसानीसे रेल और मोटर द्वारा पहुँच सकता है। जो लोग कुछ और कष्टके लिए तैयार हैं, और जिन्हें हिमालयमें विश्वके अद्वितीय प्राकृतिक दृश्योंको देखनेका शौक है, वह कहीं घोड़ेसे और कहीं पैदल, कितने ही और भी मनोरम स्थानोंकी यात्रा कर सकते हैं। ऐसी यात्राओंके लिए रास्तोंको बतलानेके पहले आवश्यक है, कि हम यात्राकी पूर्ण तैयारीके सम्बन्धमें कुछ सूचनाएँ पाठकोंके सामने रख दें।

२. यात्रा—यात्रीके सामने पैसेका प्रश्न पहले आता है। उसको मालूम होना चाहिये कि यात्राके लिए कितने रुपयेके साथ उसे प्रस्थान करना चाहिये। यात्रा सप्ताहकी हो सकती है। फिर कितने ही ऐसे यात्री हो सकते हैं, जो तीन-चारकी टोलीमें आवश्यक चीजोंको अपनी पीठपर लादकर हिमालयके भिन्न-भिन्न स्थानोंका पैदल चक्कर लगा सकते हैं। यदि पथ-प्रदर्शिका (गाइड-बुक) और मानचित्र हाथमें है, तो उनका खर्च उतना ही होगा, जितना खानेकी चीजोंका; हाँ, आवश्यक वस्त्रों और बर्तनोंपर कुछ और लगेगा। अपनी पीठपर सामान लेकर चलनेवाले यात्रियोंके लिए यह सबसे आवश्यक है कि उनके पास अत्यावश्यक तथा कमसे कम सामान हो। ऐसा व्यक्ति सौ रुपये मासिकमें अपनी यात्रा कर सकता है। यदि दो-तीन आदमी मिलकर कम सामान, किन्तु कुछ अधिक आरामके साथ यात्रा करना चाहते हैं, तो वे सामानके लिए एक सम्मिलित भारवाहक रख सकते हैं। आजके मँहगाईके दिनोंमें तीन रुपया प्रतिदिनसे कममें भारवाहक मिलना मुश्किल है और मिले भी तो उससे कम देना नहीं चाहिये, क्योंकि आजकल एक स्वस्थ-प्रकृति आदमीके खानेपर दो रुपये रोजसे कम नहीं खर्च आ सकता है। भारवाहक बोझा ही नहीं ढोयेगा, बल्कि वह साधारण खाना भी बना देगा। उसे, या अलग लिये रसोइयेको आपके भोजनमेंसे कुछ मिलना चाहिये। बेहतर यही होगा कि भारवाहक या नौकरका भोजन अपने ऊपर ले लिया जाय और ऊपरसे डेढ़-दो रुपया दैनिक मजूरी बाँध दिया जाय। इस प्रकार साधारणतया भारवाहकपर दैनिक तीन-चार रुपये तक खर्च होगा।

जो यात्री अधिक पैसा खर्च कर सकते हैं और अनावश्यक कष्ट उठानेके लिए तैयार नहीं हैं; उनके खर्चके बारेमें हम पुरानी यात्राओं या पथ-प्रदर्शिकाओंमें दिए आँकड़ोंसे आजके खर्चका निश्चय नहीं कर सकते। उदाहरणार्थ, मई १९२१ में चार अंग्रेज यात्रियोंके दलने दार्जिलिंगकी ओर अपनी

९ दिनकी यात्रापर ६००) खर्च किये–अर्थात् प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन १७ रुपयेके करीब पड़ा, जिसमें बँगला और मदिराका खर्च सम्मिलित नहीं था। उसे भी मिला देनेपर प्रतिव्यक्ति २५) प्रतिदिनके करीब पड़ा, अर्थात् महीनेका ७५०) । आजकल भी २५) रुपये रोजमें यात्रा आरामसे की जा सकती है, लेकिन जिस यात्राका यहाँ वर्णन है, वह कई नौकरों-चाकरोंके साथ अपना तम्बू और सामान लेकर की गयी थी, खाने-पीनेपर भी बहुत अच्छी तरह खर्च किया गया था, आजकल तो वैसी यात्रा सौ रुपये रोजसे कममें नहीं हो सकती। एक पथ-प्रदर्शिकाने १९२१-१९२२ में एक आदमीका २० रुपया प्रतिदिनकी बतलाया है। इन यात्राओंमें नौकरोंका क्रम इस प्रकार था—

३. नौकर—(१) **सरदार**—यदि आपको ३-४ भारवाहक, रसोइया और दूसरे नौकर भी रखने हैं, तो एक सरदारकी आवश्यकता पड़ेगी। वह सभी चीजोंकी देखभाल करेगा। यदि आप खुद देखभाल करना चाहते हैं, तो सरदारकी आवश्यकता नहीं। सरदारपर भोजनके अतिरिक्त प्रतिदिन ४-५ रुपयेसे कम खर्च नहीं आयेगा। ऐसे सरदार अलमोड़ा, नैनीताल, मंसूरी या श्रीनगरमें मिल सकते हैं, जिन्होंने ऐसी यात्राओंमें यात्रियोंका साथ दिया है और जिनके पास पूर्व-यात्रियोंके प्रशंसा-पत्र भी होते हैं। वह हिन्दी समझ लेते हैं और कितने ही टूटी-फूटी अंग्रेजी भी बोलते हैं।

(२) रसोइया आदि—रसोइया खानेके अतिरिक्त दोसे तीन रुपये रोजमें मिल जायगा। बहुतसे स्थानोंके बँगलोंमें जमादार (भंगी) नहीं होते और जबतक यात्रीके पास अपना भंगी न हो, उसे इन बँगलोंमें ठहरनेका अनुज्ञापत्र नहीं मिल सकता। भंगीके लिए भी खानेके अतिरिक्त डेढ़-दो रुपया रोज देनेकी आवश्यकता पड़ेगी।

(३) भारवाहक—अंग्रेजोंकी यात्राओंमें एक व्यक्तिपर ५ से १० भारवाहकोंकी आवश्यकता होती थी, यदि वह १० दिनसे अधिककी यात्रा नहीं होती थी। नौकरोंके लिए भी आहारकी चीजें साथ ले जानी पड़ती हैं, इसलिए अधिक नौकर होनेपर भारवाहकोंकी संख्या बढ़ानी पड़ेगी। चार यात्रियोंके लिए १५ से १८ भारवाहक चाहिये। घोड़ा ले जानेपर कहीं-कहीं उसके लिए दाना-चारा ढोनेके लिए भी भारवाहककी अवश्यकता पड़ती है। यह भी याद रखना चाहिये कि पहाड़में ३० सेरका बोझ एक मजबूत आदमीका पूरा बोझ समझा जाता है। इसके अतिरिक्त भारवाहकको कुछ सेरका अपना सामान ओढ़ना-बिछोना आदि भी ढोना पड़ता है। बक्सों या होल्डालमें सामानको रखते समय इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि बोझ २५ से ३० सेरके भीतर हो। यदि यात्रा बँगलों और चलते राजपथोंसे हो रही हो, तो नौकरोंको ८ आना या १२ आना और देना पड़ेगा। ८-९ हजार फुटके ऊपरकी ऊँचाईपर ले जानेके समय यदि यात्रा अधिक समयकी हो, तो नौकरोंको ऊनी कम्बल या कोट भी देना चाहिये। वर्षासे अपने सामानको बचानेके लिए सामान बाँधनेकी बरसाती चादरें और भारवाहकोंके उपयोगके लिए बरसाती कोट साथ होनी चाहिये, नहीं तो आपका बिस्तरा और दूसरे सामान भीग जायँगे। नौकरोंके लिए भोजन-सामग्री प्रतिदिन निम्नलिखित प्रकार आवश्यक होगी—

चावल	१० छटाँक
आटा	४ ,,
दाल	२ ,,
घी	½ ,,
चाय	१ तोला

मसाला	१ तोला
नमक	१ ,,
चीनी या गुड़	१ ,,

(४) खच्चर—अलमोड़ामें सामान ढोनेके लिए खच्चर भी मिल जाता है। वह दो मनतक बोझा ले जाता है। लेकिन अच्छा होगा, यदि बोझ पौने दो मनसे अधिक न हो। एक खच्चर ढाई भारवाहकके बराबर सामान ले जा सकता है। सस्तीके जमानेमें खच्चरका भाड़ा डेढ़-दो रुपया रोज था, आजकल १२ आना मीलसे कम नहीं होगा।

४. सवारी—अलमोड़ा या नैनीताल, मंसूरी, श्रीनगरमें सवारीके लिए किरायेके घोड़े मिल जाते हैं। लड़ाईसे पहिले उनका किराया ३-४ रुपया प्रतिदिन था, जिनमें काठी (जिन) भी सम्मिलित थी और साईस भी; किन्तु आजकल खाद्य सामग्रीका भाव तिगुनासे भी ज्यादा हो गया है। इसलिए घोड़ेका किराया बारह आना या एक रुपया प्रति मील हो गया है। घोड़ेको किरायेपर लेनेसे पहिले देख लेना चाहिये, विशेषकर यदि यात्रा सप्ताहोंकी हो कि वह भड़कनेवाला या अधिक चंचल तो नहीं है। उसकी पीठ कटी तो नहीं है। अच्छा यही है कि घोड़ेको चढ़ाईमें ही इस्तेमाल किया जाए। कड़ी उतराईमें तो सवारी बिलकुल नहीं करनी चाहिये, क्योंकि इससे घोड़ेकी पीठ कट जाती है और सवारको भी उतराईमें घोड़सवारी सुखकर नहीं मालूम होती। ढालुवाँ उतराईमें सवारी की जा सकती है। कितने ही घोड़े सड़कके किनारे-किनारे ऐसी जगहसे चलते हैं, जहाँ कुछ ही अंगुलोंपर भयानक उतराई या खड्ड रहते हैं। अनभ्यस्त सवार ऐसे समय घबड़ा जाते हैं। घबड़ानेकी आवश्यकता नहीं है। घोड़े खुद खतरेको समझते हैं। उनपर विश्वास रखना चाहिये। पुलों, विशेषकर झूलेके पुलोंपर अच्छा है, एक-एक करके पार किया जाय। घोड़ेकी सवारी न कर सकनेवाले यात्रियोंके लिए पहाड़में डण्डी मिल जाती है, जिसमें चार आदमी लगते हैं। उनका वेतन भारवाहकके समान ही होता है। डण्डी रुपये डेढ़ रुपये रोजपर किरायेमें मिल सकती है। रिक्शाके लिए अधिकांश पैदल सड़कें अयुक्त होती हैं। बच्चों या हल्के आदमियोंके लिए कण्डी (डोका) भी मिल सकती है, जिसे एक भारवाहक अपनी पीठपर ले जाता है।

५. परिधान—यहाँकी यात्राओंमें कितनी ही बार ऐसे स्थानोंमें जाना होगा, जहाँ मई-जूनमें भी उत्तरी भारतकी दिसम्बर-जनवरीकी सर्दी रहती है। हाँ, हजार फुटसे कमकी उपत्यकाएँ गर्मियोंमें दुःसह होती हैं, ऊपरके सर्द स्थानोंमें सप्ताह-दो-सप्ताह बिताकर लौटे यात्रियोंके लिए तो और भी। जिन्हें नैनीताल, भवाली या अलमोड़ा, श्रीनगर, मंसूरीतक ही रहना है, उनका साधारण गरम कपड़ोंसे काम चल जायगा, किन्तु अधिक ऊँचाईमें जानेके लिए अच्छे कपड़ोंका होना आवश्यक है। बदरीनाथ, केदारनाथतक ही जानेवालोंके लिए अधिक कपड़े नहीं बाँधने चाहिये, क्योंकि वहाँ बदरीनाथ केदारनाथमें ही सर्दी है, जहाँ पण्डोंसे या भाड़ेमें ओढ़ने-बिछौने मिल जाते हैं।

सर्द स्थानोंके लिए कपड़े आदि—

(१) पुरुषोंके लिए—

बूट दो जोड़ा (एक काँटीदार)		जाँघिया	४
ऊनी मोजा दो जोड़ा (मोटा ऊनी)		बनियान	४
स्लीपर या चप्पल	१ जोड़ा	ऊनी सूट	२
सूती ब्रीचेस	२	कमीज या कुर्ता	४
सूती मोजा	६ जोड़ा	चमड़ेका दस्ताना	१ जोड़ा

रात्रि-पोशाक या लुंगी	२	बरसाती कोट	१
धोती	१ जोड़ा	स्वेटर	१
फेल्ट टोप	१	ड्रेसिंग गाऊन या ओवरकोट	१
मंकी कैप	१	रंगीन चश्मा	१
मफलर	१	तौलिया	३
थर्मस	१	टार्च	१
पानी बोतल	१	लालटेन	१
स्टोव	१		

(२) महिलाओंके लिए—

बूट	२ जोड़ा	रात्रि-पोशाक	२
ऊनी मोजा	२ ,,	ब्लाउज	४
सूती मोजा	६ ,,	ब्रीचेस या पाजामा (ऊनी)	१
साड़ी	४	अण्डरवियर	२
पेटीकोट	४	ड्रेसिंग गाऊन या ओवरकोट	१
बनियान	४	मंकी कैप	१
ऊनीकोट	२	चमड़ेका दस्ताना	१ जोड़ा
मफलर	१	स्लीपर या चप्पल	१ जोड़ा
ऊनी दस्ताना	१ जोड़ा	थर्मस	१
तौलिया	३		

६. आवश्यक वस्तु आदि–(१) बिस्तर आदि—कपड़ा धोनेके लिए साबुन पासमें रहे, तो शहरोंसे दूर जानेपर धुलाई नौकर कर लेंगे। बिस्तरेमें निम्नलिखित चीजें रहनी चाहिये—

कम्बल	३ या ४	तकिया-खोल	२
चादरें	२	मसहरी	१
तकिया	१		

(२) दूसरी वस्तुएँ—

पुस्तकें	फौण्टेन स्याही	सूई २	कैमरा
नक्शे	डोरी १० हाथ	आलपीन	फिल्म
सुतली १० हाथ	छुरी	काँटी	रसोईके बर्तन
सूआ २	कैंची	स्क्रूड्राइवर	चम्मच
हथौड़ी	चाय (टिन)	हजामतका सामान	लेमन-जूस
टिन-बंद-दूध	न टूटनेवाली प्लेट	बिस्कुट	सूखे फल
,, माँस	,, प्याला	चीनी	
,, मक्खन	केतली	सूतगोली २	
,, तरकारी	पानी-बोतल	नहानेका साबुन ४	

आटा, चावल, सूखे फल आदि चीजें मोटे कपड़ेके थैलोंमें रखी जा सकती हैं; उसी तरह मसाला, हल्दी आदिको छोटी थैलियोंमें रखा जा सकता है। मुर्गी, अण्डा और दूध बहुत स्थानोंपर मिल जाता है। मांस हाटके दिनोंको छोड़ कभी ही कभी मिलता है। मौसमपर साग मिलता है,

किन्तु आलू-प्याज सदा सुलभ है। नैनीताल, अलमोड़ा तथा मसूरीमें बहुत-सी दूकानें हैं, जहाँ यात्रोपयोगी खाद्य-सामग्री तथा दूसरी चीजें मिल सकती हैं।

(३) **पैकिंग**—२४ इंच लम्बे, १४ इंच चौड़े तथा १४ इंच ऊँचे तालेवाले लकड़ीके साधारण बक्स चीजोंको पैक करनेके लिए अच्छे होते हैं। उन्हें घोड़ों और भारवाहकों, दोनोंपर आसानीसे ले जाया जा सकता है। खच्चरोंपर लोहेके बक्सोंके टूटनेका डर रहता है और चमड़ेके सूटकेसोंकी तो गत बन जाती है। चमड़े या फाइबरके सूटकेस भारवाहकोंकी पीठपर भी मुश्किलसे सुरक्षित रह पाते हैं। पानीसे बचनेके लिए मोमजामा या चमड़ा-मढ़े बक्स होने चाहिये। चार बक्सोंमें चार आदमियोंके लिए दो सप्ताहकी आहार-सामग्री आ सकती है। कुछ स्थानोंमें दीमक बहुत लगते हैं, वहाँ बक्सोंको डाकबँगलेकी मेज या कुर्सियोंपर रखवाना चाहिये अथवा पायोंके नीचे केरासिनमें भिगोया कागज या लत्ता रख देना चाहिये।

(४) **भेंट-इनामकी चीजें**—कितनी ही जगह पहाड़में सिगरेट पीनेका बहुत रिवाज है, पुरुष ही नहीं, स्त्रियाँ भी धूम्रपान करती हैं। हिमालयके अन्तिम गाँवोंमें भी सूखी तम्बाकूको मामूली कागजपर लपेटकर पीते नर-नारियोंको आप देखेंगे, फिर ऐसी जगह सिगरेटका माहात्म्य बढ़ जाय, तो कोई आश्चर्य नहीं, इसलिए भेंट या बख्शीशके लिए सिगरेट हाथमें रख लेना अच्छा है। बच्चोंमें बाँटनेके लिए लेमनजूस, रेवड़ी तथा मिश्रीके टुकड़े अच्छे हैं।

(५) **पड़ावोंपरके खर्च**—चार आदमियोंके लिए प्रतिदिन निम्न मात्रामें स्थानीय चीजोंकी आवश्यकता होगी, हाँ, यदि किसीको दूधके साथ विशेष प्रेम न हो तब—

दूध	१ सेर	ईंधन	आधा मन
मुर्गे या चूजे	१ या २	केरासिन	आधा बोतल
अण्डे	१ दर्जन	चौकीदारको बख्शीश	१ रुपया

(६) **दो सप्ताहका खाद्य**—चार आदमियोंको १४ दिनके लिए भारतीय खाद्य-सामग्री निम्नलिखित मात्रामें आवश्यक होगी—

आटा	२० सेर	सूखे मेवे	२ सेर
सूजी	४ सेर	मकरोनी या सेवइयाँ	½ सेर
बेसन	४ सेर	पापड़	½ सेर
चावल	८ सेर	बरी	१ सेर
दाल (मूँग, मसूर या उरद)	७ सेर	घी	४ सेर
मक्खन	२ सेर	लड्डू-पेड़ा	१ सेर
पनीर	२ सेर	पेठा	२ सेर
डालदा या तेल	२½ सेर	मटरी (मीठी)	१ सेर
चीनी	८ सेर	,, (नमकीन)	१ सेर
चाय	२ पौंड	नमक	१ सेर
मांस (टिन)	२½ सेर	सरसों (चूर्ण)	½ पाव
बिस्कुट (मीठा)	१ सेर	काली मिर्च (चूर्ण)	½ ,,
,, (सादा)	१ सेर	लाल मिर्च	१ ,,
मुरब्बा	½ सेर	हल्दी	½ सेर
अचार	१ सेर	मसाला (चूर्ण)	½ सेर

चार आदमियोंको १४ दिनके लिए यूरोपीय खाद्य-सामग्री निम्नलिखित मात्रामें आवश्यक होगी—

चाय	२ पौंड	कोकोजम या दालदा	२ सेर
काफी	२ ,,	पनीर	२ ,,
क्वेकरओट	३ टिन	मुरब्बा (आम)	६ टिन (सवा पावके)
मक्खन	ढाई सेर	मर्मलाद	४ टिन ,,
घी	१ सेर	आटा	२ सेर
चीनी	५ सेर	नमक	पावभर
मांस	ढाई सेर	सरसों (चूर्ण)	१ छटाँक
मीठा बिस्कुट	१ सेर (टिन)	काली मिर्च	आध छटाँक
सादा बिस्कुट	१ सेर (टिन)	मसाला (चूर्ण)	१ पाव
केक	२ (डेढ़ सेरकी)	बेसन	आध पाव
सूखे मेवे	२ सेर	चावल	आध सेर
सूजी	आध सेर	मकरोनी या सेवइयाँ	१ पाव

बीमारी, चोट या बर्फकी सर्दीके लग जानेपर उपचारार्थ एक बोतल बरांडी रख लेनी चाहिये, जो स्प्रिटके अभावमें स्टोव जलानेका भी काम देगी।

(७) **प्रतिदिनका खाद्य**—भारतीय भोजन करनेवाले व्यक्तिकी प्रतिदिनकी आहार-सामग्री निम्नलिखित प्रकार होगी—

चावल + आटा	½ सेर	चीनी	२ छटाँक
दाल	१½ छटाँक	मुरब्बा	१ छटाँक
आलू, साग-भाजी	४ छटाँक	अचार	२ तोला
मांस या मिठाई	४ छटाँक	सूखा मेवा	३ छटाँक
घी	१ छटाँक	दूध	१ सेर
मक्खन	½ छटाँक	नमक	१ तोला
पनीर	½ छटाँक	हल्दी मसाला	½ छटाँक
चाय, काफी	२ तोला		

यूरोपीय भोजन करनेवाले व्यक्तिके लिए—

चाय	आध छटाँक	आलू	३ छटाँक
काफी	२ तोला	चीनी	डेढ़ ,,
टिन-मांस	२ छटाँक	जाम (मुरब्बा)	१ ,,
मक्खन	आध छटाँक	मर्मलाद	१ ,,
पनीर	आध छटाँक	सूखा मेवा	३ ,,
क्वेकरओट	एक चौथाई तोला	मांस	पावभर
पावरोटी	२ या ३ पाव	दूध	१ सेर
बिस्कुट	१ पाव		

(८) **पावरोटी**—सप्ताह-दो-सप्ताह टिकनेवाली पावरोटियाँ मसूरी, अलमोड़ाकी किसी अच्छी दूकानमें मिल सकती हैं, नहीं तो दिल्लीकी किसी अच्छी रोटीवाली कम्पनीसे मँगा लेना चाहिये, पावरोटियोंको तेल-कागजमें लपेटकर हल्के काठके बक्सोंमें रखना चाहिये। देरतककी यात्रा होनेपर चपातियाँ या पराठे ही यात्राके लिए अच्छे होते हैं।

(९) **लालटेन**—सभी बँगलोंमें टेबुल लैम्प होते हैं, किन्तु आजकल केरासिन सुलभ नहीं है। अच्छा है कि दो गैलनवाले पेट्रोल टिनमें मिट्टीका तेल भरवाकर साथ ले लिया जाय, वह चार आदमियोंको दो सप्ताहके लिए पर्याप्त होगा। स्टोव, बैटरी-टार्चके अतिरिक्त एक लालटेन और कुछ मोमबत्तियाँ भी साथमें रहनी चाहिये। ६-६ मोमबत्तियोंके ३ पैकेट दो सप्ताहके लिए पर्याप्त होंगे।

(१०) **पेय**—निचली उपत्यकाओंमें उबला पानी पीना चाहिये। शामको उबालकर पानी बोतलमें डाल लेनेपर वह सबेरे ठंढा हो जाता है और पीनेमें अरुचिकर नहीं प्रतीत होता। तीन-साढ़े-तीन हजार फुटसे ऊपरके स्थानोंमें नदी या चश्मेका ताजा पानी स्वादिष्ठ और स्वास्थ्यके लिए अहानिकर होता है। पहाड़में कहीं-कहीं महुआकी कच्ची शराब बनती है, जो हल्की होती है। इसे बाँसके पोंगोंमें डालकर दिया जाता है और नलीसे सुड़ककर पिया जाता है।

(११) **मनीआर्डर, चिट्ठियाँ**—अलमोड़ाके डाकघरोंकी सूची अन्यत्र दी हुई है, जहाँ मनी-आर्डर आदि मँगाया जा सकता है।

पहलेसे ही बात कर रखनेपर नैनीताल, रानीखेत, अलमोड़ा, बागेश्वर, द्वाराहाटके शाह लोगोंकी कोठियोंपर चेक भुनाया जा सकता है। पासपोर्ट पास रहनेपर डाकघरोंमें मनीआर्डर मिलनेमें तरद्दुद नहीं होता। सौ या अधिकके नोटोंका भुनाव दूरके स्थानोंमें मिलनेमें कुछ कठिनाई होती है, इसलिए दस या कमके नोट साथमें हों तो अच्छा है।

७. **यात्रामें**—बँगला छोड़नेसे पहले उसकी सफाई और व्यवस्थितिको देख लेना चाहिये, तथा टूटी फूटी चीजोंका दाम तथा बँगलेका शुल्क दे रजिस्टरपर हस्ताक्षर कर देना चाहिये। भार-वाहकोंको आठ बजे सबेरे आगे रवाना कर देनेपर वह अपने पहुँचनेसे पहिले पड़ावपर पहुँचे रहेंगे। आठ बजेतक चाय या नाश्ता कर लेना चाहिये। भारवाहकोंमेंसे कुलको जल्दी कराके आगे भेजनेसे कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि रास्तेमें वह एक-दूसरेके साथ बैठते-उठते ही आगे चलते हैं। साईस और रसोइयेको मालिकके साथ बँगला छोड़ना चाहिये। यदि रसोइयेको मध्याह्न-भोजन साथ नहीं ले चलना है, तो उसे भी आगे भेजा जा सकता है, किन्तु ऐसी दशामें खानेकी कुछ चीजें अपने साथ घोड़ेपर रख लेनी चाहिये। पानीकी बोतल साईसके गलेमें रहनी चाहिये। यदि तिब्बती ढंगके टट्टू और जीनपर चलना हो, तो घोड़ेकी जीनपर दोनों तरफ लटकते थैले (ताङ्)में १०-१२ सेर सामान रखा जा सकता है। उसमें या साईसके साथ चायकी कैटली, न टूटनेवाले प्याले भी रखे जा सकते हैं। अथवा इस तरद्दुदसे बचनेके लिए आप चायको थरमसमें ले सकते हैं। साधारण तौरसे देखते-भालते कुछ फोटो या स्केच लेते आप घंटेमें दो मील चल सकते हैं, इस प्रकार नौ बजेसे डेढ़ दो बजेतक ९-१० मील (एक पड़ाव) चलकर अगले बँगलेपर मध्याह्न-भोजन कर सकते हैं, अन्यथा रास्तेके किसी सुन्दर स्थानमें उसके लिए ठहर सकते हैं। डबल यात्रा करनी हो, तो सबेरे आठ बजे चल देना चाहिये, अगले पड़ावके बँगलेपर अथवा दूसरी जगह मध्याह्न-भोजनके लिए एक बजे एक घंटेके लिए ठहरकर शामतक ठहरनेके डाक-बँगलेपर पहुँच सकते हैं। इसके लिए भारवाहकों और अन्य नौकरोंको दूना वेतन देना होगा, और रास्तेके ठहरनेके बँगलेके चौकीदारको भी कुछ बखशीश देनी होगी। डबल मार्च करना पहिले ही दिनसे शुरू नहीं करना चाहिये, इसके लिए आदमियों और

जानवरोंको थोड़े अभ्यासकी आवश्यकता होती है। रात्रि-निवासके स्थानमें आनेपर पहला काम है चायपान। आम तौरसे घोड़ेके मालिक घोड़ेके साथ नहीं जाते, इसलिए पर्यटकको चाहिये कि वह घोड़ेके दाने-चारेकी ओर भी ध्यान रखे। यह मानवोचित ही नहीं है, बल्कि स्वार्थोचित भी है, क्योंकि घोड़ेके दुर्बल या घायल हो जानेपर यात्राको जारी रखना कठिन हो जाता है।

रोगादि—आठ-दस हजार फुटसे ऊपरकी ऊँचाइयोंपर कड़ी सर्दी या पतले वायुमंडलकी तीव्र धूपके कारण नरम चमड़ेवाले व्यक्तियोंका चमड़ा जल उठता है। इसके लिए 'पॉण्ड्स-क्रीम' जैसी क्रीम या वैसलीन लगा लेनी चाहिये। यदि ऐसे स्थानोंपर जाते समय पहिलेसे ही वैसलीन या क्रीम शरीरके खुले भागोंपर मल ली जाय तो चमड़ा नहीं जलता। ऊँची चढ़ाइयों, विशेषकर बड़ी-बड़ी जोतों (डाँड़ों) को पार करके आनेपर चेहरा तथा दूसरे खुले अंगोंके चमड़ेका रङ्ग बदल जाता है—गोरा रङ्ग ताम्रवर्ण और पक्का रंग काला हो जाता है। इससे रक्षाके लिए तिब्बती महिलाएँ मुँहपर कत्थेका लेप कर लेती हैं और ऊपरसे सारे मुँहको ढँक लेती हैं। वैसलीन या कोल्ड-क्रीम लगाकर यदि चेहरेको गुलबन्द या मंकीकैपसे पूरी तरह ढाँक दिया जाय तथा आँखोंपर रंगीन चश्मा लगा रखा जाय तो रंगपर असर नहीं होता। होठोंको फटनेसे बचानेके लिए कपूरी क्रीम या ग्लेसियर क्रीमका लेप अच्छा होगा। जोतोंको पार करनेसे पहली रातको कोल्ड-क्रीम लगाकर सो जाना चाहिये और सबेरे चेहरेको धोना नहीं चाहिये। यदि इसके साथ मंकी-कैपसे मुँहको अच्छी तरह ढँककर जोत पार की जाय, तो चमड़ेके विवर्ण होने तथा रंग बदलनेका डर नहीं रहता। जाड़े या असाधारण ठण्डकके समय हाथ या पैर जैसे किसी अङ्गके खुले रहनेपर उसके हिम-जड़ हो जानेका भय रहता है। ऐसे समय विशेष सावधानी न रखनेपर अनर्थ हो सकता है। ऐसी नौबत जाड़ोंमें ही आ सकती है, जब कि पर्याप्त गरम कपड़ेसे न ढँकनेके कारण हाथ या पैरका पंजा जम जाता है। यदि ऐसा हो जाय, तो आदमीको घबड़ाना नहीं चाहिये। यदि हृदय और शरीरके अन्य अंगोंमें गरमी है, तो वह धीरे-धीरे हिमीभूत अंगमें भी पहुँच जायेगी, किन्तु आदमीने यदि उस अंगको आगपर सेंक दिया तो उस हिमीभूत अंगका सर्वनाश समझिये। सेंकनेपर पहिले एक तीव्र वेदना उठेगी, फिर शान्ति। कुछ सप्ताहोंमें अंगुलियाँ सूखकर लकड़ी हो जायँगी और हाथमें लकड़ी जोड़कर घूमनेकी जगह आप बढ़े नखोंकी भाँति उन्हें काट डालना ही पसंद करेंगे। पहाड़की उतराईमें भलामानुस जूता भी काटने लगता है, इसलिए परीक्षित जूतेको ही इस्तेमाल करना चाहिये। उतराईमें भारी सर्दी या बर्फ न हो, तो बाटा कान्वेस जूता अच्छा रहेगा, किन्तु चढ़ाईमें एड़ियों और उतराईमें पञ्जोंके बल चलना जूतेकी आयुको बहुत कम कर देता है, इसका भी ध्यान रखना चाहिये। जहाँ कटनेका डर हो, वहाँ समय-समयपर पैरको नमकके पानीमें रखकर कड़ा कर लेना चाहिये। चलते समय प्रतिदिन मोजेमें फिटकिरीका चूर्ण डाल लेना भी सहायक होता है। यदि छाले पड़ जायँ, तो परिशोधित सूईसे फोड़कर पानी निकाल देना चाहिये और वहाँ बोरिक चूर्ण या 'सिवाजोल' मलहम लगाके औषधित रुई लगा लेनी चाहिये। छालोंसे बहुत सावधान रहना चाहिये। घावके उपचारके लिए 'सिवाजोल', टिंकचर या टिंकचर बेंजीन साथमें रहनी चाहिये। मधुमेहके रोगियोंको तो 'रिपु रुज पावक पाप, इनहिं न गनिये छोट करि'की पंक्ति सदा याद रखनी चाहिये। टिंकचर और सिवाजोलके साथ उन्हें पेनिसिलीन तथा इंसोलीन भी इन्जेक्शनके सामानके साथ पास रखनी चाहिये। पेनिसिलीन लगानेमें सूइयोंको स्प्रिटमें नहीं, पानीमें उबालकर निष्क्रमित रखना चाहिये।

चारसे आठ हजार फुट ऊँचे स्थानोंमें वर्षा-बूँदीके समय वृक्षोंके नीचे या घासमें छोटी-बड़ी जोंकें भी एक बाधा हैं। आदमीकी आहट पाते ही यह नेत्रहीन जन्तु सहस्रोंकी संख्यामें पत्तोंके भीतरसे

अपने सूँड़ निकालकर चिपकनेकी घातमें रहते हैं, जोंकें जूतेके भीतर भी चली जाती हैं; कसकर बँधी पट्टीके भीतर घुसना इनके वशका नहीं। जोंकोंके लगनेसे पीड़ा नहीं होती, किन्तु वह खून चूसकर निर्बल तो अवश्य करती हैं। पेटभर पीकर जब मोटी हो गिर जाती हैं तब भी इनके मुँहसे निकलकर लगे एक रासायनिक तत्त्वके कारण खून कुछ देरतक नहीं रुकता, फिर अपने आप बन्द हो जाता है। हाँ, खून न जमनेवाले आदमीके लिए यह बुरा है। इसके लिए अढेसिव या झिल्ली जैसे पतले कागजकी एक-दो तहोंको घावपर साट देना चाहिये। जोंकोंको खींचकर नहीं निकालना चाहिये, नहीं तो घाव हो जानेका डर रहता है। नमक उनका भारी शत्रु है, उसके स्पर्श मात्रसे वह गिर पड़ती है। नमक न होनेपर जलते सिगरेट या दियासलाईकी तीलीका स्पर्श उनके लिए काफी है। तम्बाकूका पानी या नीबूका रस लगा लेनेपर जोंकें नहीं चिपकतीं। निचले स्थानमें मलेरियाके मच्छर और मक्खियोंसे बचनेके लिए मसहरी जरूर साथ रखनी चाहिये। ऊपरी भागोंमें खटमल और पिस्सू नींद हराम कर देते हैं। सौभाग्यसे अधिकांश डाकबंगले इनसे मुक्त हैं। भेड़-बकरियोंके रहनेके स्थानोंमें पिस्सुओंका बड़ा जोर रहता है, इसलिए शिविर-गाड़ते वक्त उनका ध्यान रखना चाहिये। फ्लिट इनके लिए अच्छी दवा है, उसकी पिचकारियाँ दीवार, चारपाई आदिपर मार लेनी चाहिए।

८. **कलाकी वस्तुएँ**—अलमोड़ा-गढ़वाल-टेहरी सीमापर तिब्बत है, जहाँ भारतीय और चीनी कला-परम्परा अविच्छिन्न रूपसे अबतक चली आयी है। भोटान्तके लोगोंका तिब्बतसे धर्म और कलाके विषयमें घनिष्ठ सम्बन्ध है। उनके यहाँ कला-पूर्ण कितनी ही तिब्बती वस्तुएँ आती रहती हैं, यहाँसे प्राप्य कलाकी चीजें हैं—

चित्रपट	शूल (फुरबा)
घण्टा	डमरू (कपालका)
अस्थिभूषण	कुण्डल (फीरोजेका)
पुस्तक पट्टिका	मूर्तियाँ
जूता (शोम्पा)	मसीपात्र
काष्ठ-चषक (फोरबा)	धूपदानी
धातु-डब्बा	कुकड़ी
टोपी (श-मो)	मानी (जपचक्र)
प्रतिमा-पेटिका	चौकी (चोक्-री)
घण्टापात्र (रोल्-मा)	चायपात्र
चाय-प्याला	चकमक (चक्-ना)
,, बैठकी	दुन्दुभी
वज्र (दोर्जे)	पाइप (तम्बाकूका)

९. **फोटोग्राफी**—फोटो खींचनेवालोंको अधिक ऊँचाइयोंपर कुछ विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता है, क्योंकि वहाँ नील तथा अति-बैंगनी किरणोंकी अधिकतासे प्रकाश प्रखर होता है, और अधिक एक्सपोजर हो जानेका डर रहता है। सफेद बर्फका अच्छा फोटो फिल्टरके बिना लेना कठिन है। वैसे भी अच्छे फोटोके लिए इन पहाड़ोंपर फिल्टरकी आवश्यकता होती है। कोडकके पाससे अच्छे फिल्टर मिल सकते हैं। फिल्मोंमें वेरीक्रोम अधिक उपयुक्त होते हैं। अच्छे परिणामके लिए कुछ फिल्मोंको अलग-अलग एक्सपोजर-समय देकर देख लेना चाहिये।

परिशिष्ट २

यात्राएँ

१. मानसरोवर-यात्रा—मानसरोवरकी यात्रा कई दृष्टियोंसे आकर्षक है और वह शताब्दियोंसे होती आयी है। अलमोड़ा होकर यह यात्रा बहुत सुविधासे होती है तथा समय भी कम लगता है। (काठगोदामसे ९० मील मोटरके भी ले लेनेपर) अलमोड़ासे मानसरोवर, तथा कुछ दूसरे स्थानोंसे मानसरोवरकी दूरी निम्नलिखित प्रकार है—

(क) मानसरोवरकी दूरी—	मील
अलमोड़ा—मानसरोवर (उँटाधुरा घाटा)	२०२–९०=२९२
,, ,, (दारमा घाटा)	२२२–९०=३१२
,, ,, (लीपूलेख घाटा)	२२९–९०=३१९
ऋषिकेश—मानसरोवर (गंगोतरी, जेलू-खागा)	३८८
,, ,, (जोशीमठ, अमजन, नीती)	३०८
,, ,, (जोशीमठ, होती, नीती)	३०६
,, ,, (बदरीनाथ, माणा)	४०५
कश्मीर (श्रीनगर)—मानसरोवर (लदाख)	६०५
नेपाल— ,, (मुक्तिनाथ)	५२५ (?)
ल्हासा— ,,	८०० (?)
शिमला— ,, (कनौर, गरतोक)	४४५
,, — ,, (,, थोलिङ्)	४७३

(ख) मानसरोवरके स्थान—

कैलास-परिक्रमा	३२
कैलास—गू-नि-मा (मंडी)	३८
,, —तीर्थपुरी	२८
,, —दुलवु (गोम्पा)	२१
,, —मानसरोवर	१६
,, —सिन्धुउद्गम (ताप्-छेना)	४६
बरखा—तग् चङ् पो उद्गम	६५
,, —ब्रह्मपुत्र-उद्गम	९२
,, —सतलज-उद्गम (दुलवु गोम्पा)	२२
मानसरोवर-परिक्रमा	५४
रावणह्रद-परिक्रमा	७७

(ग) मानसरोवरके मार्ग[1]—

(१) अलमोड़ा-मानसरोवर-अलमोड़ा (उँटाधुरा)

(४५२ मील, ३० दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील	
अलमोड़ा	५४१४	०	(डाकबँगला, जंगलाती)
दीनापानी		६॥	(दूकान, चाय)
कपड़खान		१	(दूकान, यहाँतक मोटर)
१. ताकुला		६॥	
२. वागेश्वर	३२००	१२।	(डाकबँगला, बाजार)
लाहुगडका पुल		३	
३. कपकोट		११	(डा० बँ० दूकान)
श्यामाधुरा	६९००	७॥	(दुकानें)
खैना		४।	
४. तेजम	३२८०	७	
गिरगाँव		८।	(डा० बँ०)
५. मुनसियारी (राथी)		१०	(डा० बँ०, दूकान)
सुरिङ्घाट		२	
लीलम्		२।	
६. वाग उडियार	८६००	७॥	(डेरे)
रिलकोट	१२२००	७।	
मरतोली	११०७०	२।	(स्कूल)
बुरफू (मल्ला)		२	(धर्मशाला, बड़ागाँव)
बिलजू		२॥	(स्कूल)
७. मिलम्	११२३२	३	(अन्तिम जोहारगाँव, धर्मशाला)
८. दुङ् (दुङ्गा)	१३७२०	२।	
बोमलास मल्ला	१५०१०	२।	
उँटाधुरा	१७९५०	६॥	
जन्तीधुरा	१८५००	३॥	
कुङ्री विङ्री (घाटा)	१८३००	३॥।	(भारतसीमा)
९. छिर-चिन	१६३९०	५	(पड़ाव)
१०. ठाजङ्		१२	
सूखा ठाजङ्		२।	(पड़ाव)
११. गु ने-यङ् ती		९	
दारमा-यङ् ती		२।	
१२. ग्यानीमा मंडी		११॥।	

१. मानसरोवर-यात्राके लिए अधिक जानना हो, तो स्वामी प्रणवानन्दकी पुस्तक 'कैलास-मानसरोवर' देखिये।

	मील
१३. छू-मिक्-शा-ला	१६।
१४. कैलास (दर-छेन्)	२१॥
१५. मानसरोवर	१६
१६-३०. अलमोड़ा	२२६
	४५२ मील

(२) अलमोड़ा-मानसरोवर (लिपूलेख, छुजूला)

(६०० मील, ४४ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील
अलमोड़ा	५४१४	० (डाकबँगला)
१. बाडेछीना	४०००	८॥ (डा० बँ० जंगलाती, बाजार)
२. धौलछीना	६०६०	५ (डा० बँ०, दूकान, चाय)
कनारी छीना		५। (डा० बँ० जंगलाती, दूकान)
२. सेराघाट		५। (दुकान, चाय)
गणाई		६ (डा० बँ०, दो जंगलाती भी, दूकान)
बांसपटान		६ (डा० बँ०, दूकान, चाय)
सुकल्याडी		३ (दूकान, चाय)
३. बेरीनाग	७०००	३। (डा० बँ० जंगलाती, बाजार)
थल	३०००	९॥ (डा० बँ० जंगलाती, दूकान, चाय)
सान्देव	६४००	७॥ (दूकान)
५. डींडीहाट	६०००	२॥ (डा० बँ० जंगलाती, दूकान, चाय)
अस्कोट	५०००	७ (डा० बँ० जंग०, बाजार)
६. जौलजीवी	३१०० (?)	५
बलवा	३०००	६॥ (दूकान)
७. धारचूला	३०००	१० (डा० बँ०, दूकान)
८. खेला	५५००	८ (दूकान)
पङ्गू	६९००	६ (प्रथम भोटान्तिक गाँव)
९. सोसा	८४०० (?)	३ (धर्मशाला)
तिथलाकोट	९०६८	१॥
सिरदंग		१॥। (धर्मशाला)
सिरखा		॥ (धर्मशाला)
१०. जीपती	८०००	११ (धर्मशाला)
निजङ् (जलप्रपात)		५॥।
११. मालपा	७२००	२॥ (धर्मशाला)
बुदी	८८००	८॥। (धर्मशाला)
१२. गरब्याङ्	१०३३०	५ (धर्मशाला, भारतका अन्तिम गाँव)

	ऊँचाई (फुट)	मील	
१३. कालापानी	१२०००	११	
लीपूलेख (घाटा) (तिब्बत-सीमा)	१६७५०	९।	
१४. पांला	१४०००	६	(धर्मशाला)
तकलाकोट	१३१००	५।	(मंडी)
तोयो		३	(बड़ागाँव, जेनरल जोरावर सिंहकी समाधि)
मब्-छू (करनाली)		७॥	
१५. हरकोङ्		३॥	
मयूचा चुंगो		८॥	
मय्-छू		२	
१६. ञनलङ्		३॥	
शिङ्-लथ्-चेला.		१॥	
छू-जू-ला		९॥	
छकरा मंडी		४	
१७. ग्य-नि-मा मंडी (खरको)		५	
ग्य-नि-मा-रब्		४॥	
१८. शी-ठुम्		११।	
तर-ला		३	
१९. तीर्थपुरी		८।	
ट्रोक-पो-शर्-छू		६	
२०. दुल्-छू-गोम्पा[1]		८॥	
२१. दरछेन् (कैलास)		२१।	
ञन्-री-गोम्पा		५	
२२. दिरफुग गोम्पा		७।	
२२. डोल्-मा-ला		४	
गौरीकुण्ड		।	
जुङ्-ढुल-फुग् गोम्पा		९।	
२३. जोङ्-छू		३	
गु-मा-छू		११॥	
२४. कुग्-लुङ्-छू		२॥	
पल्-छेन-छू		८॥	
पल्-छुङ्-छू		१।	
स-मो-छङ्-पो		२॥	
२५. से-रा-लुङ् गोम्पा		३॥	
तग्-छङ्-पो		९।	
येर्-न-गो गोम्पा		५॥	

१. गोम्पा = गोम्बा = बौद्ध विहार।

	ऊँचाई (फुट)	मील
२६. ठुगो-ल्हो (गोम्पा)		
मानसरोवर (मि-फम्-छो)	१४९५०	२।
गुरलाला	१६२००	९॥
गुरला-फुग (गौरी उड्यार)		४ (पड़ाव)
२७. बलडक	१५०००	४॥ (पड़ाव)
२८. तकलाकोट		१६
२९. खोचरनाथ		१२
३०. तकलाकोट		१२
३१-४४. अलमोड़ा		१७७
		६०० मील

(३) अलमोड़ा-मानसरोवर (लीपूलेख, गुरला)

(५५७ मील, ५५ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील
१-१४. ···तकलाकोट	१३१००	१७६॥
तोपो		३
रिगुङ्-छू	१४०००	१०॥ (पड़ाव)
१५. बलडक	१५०००	४॥ (पड़ाव)
गुरला-फुग (गौरी उड्यार)		४॥ (पड़ाव)
गुरला-ला	१६२००	४
१६. मानसरोवर	१४९५०	९
गोछुल-गोम्पा	५१००	४
१७. गंगा-छू		८।
बर-खा	१५०५०	९
१८. दर-छेन्	१५१००	७॥ (कैलास-परिक्रमारम्भ)
मेरशुङ्		३॥
ङ-री-छु-कू (गोम्पा)		५
१९. दिरफुग (गोम्पा)	१६४००	७।
डोल्माला		४
गौरीकुण्ड		।
ग्यु-ठुल्-फुग (गोम्पा)		९।
२०. दर-छेन् (कैलास)	१५१००	६। (कैलास-परिक्रमा समाप्त)
बर-खा	१५०५०	७॥
गोछुल (गोम्पा)	१५१००	९ (मानसरोवर-परिक्रमारम्भ)
ग्यु (गोम्पा)		८॥
चेरकिप् (गोम्पा)		४

	ऊँचाई (फुट)	मील	
२१. लङ्पोन (गोम्पा)		४॥	
पोन-री (गोम्पा)		८	
२२. से-रा-लुङ् (गोम्पा)		११॥	
येर-ना-गो (गोम्पा)		१४॥	
ठु-गो-व्हो (गोम्पा)		२॥	(ठोकर-मंडी भी)
२३. गो-चुल (गोम्पा)	१५१००	१०।	(परिक्रमा समाप्त)
२४. खो-चर-नाथ		१२	
२५-३८. ···अलमोड़ा		१७६॥	
		५५७ मील	

(४) अलमोड़ा-मानसरोवर (दारमा घाटा)

(४६० मील, ३६ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील	
१–७. अलमोड़ा-धरचूला	३०००	९०॥	(यात्रा १ की भाँति)
८. खेला		१०॥	(अन्तिम डाकघर)
न्यो		९॥	(प्रथम भोटान्तिक गाँव)
९. दर		२	(गाँवसे एक मील ऊपर तप्त-जल)
१०. नागलिङ्		१४	
११. गगो		१२	(दो मील आगे अन्तिम गाँव)
विदङ्		६	(अगस्तमें मंडी लगती है)
१२. डावे		११	(धर्मशाला)
दारमा घाटा (भारत सीमा)	१८१०	५॥	
१३. मङ्युल		४	(पड़ाव)
लामा छोर्-तेन		४।	
१४. छकरा मंडी		१२	(दारमाकी मंडी)
१५. गूयानीमा मंडी		५	(जोहारकी मंडी)
१६. छू-कम एशला		१६।	(डेरे)
१७. कैलास (दर-छेन्)		२१॥	
१८. मानसरोवर		१६	
१९-३६···अलमोड़ा		२३०	
		४६० मील	

(५) ऋषिकेश-मानसरोवर-ऋषिकेश (गंगोतरी, जेलूखागा)

(७८६ मील, ६४ दिन)

	मील
ऋषिकेश-हरसिल (गंगोतरी)	१३१
हरसिल	०

	ऊँचाई (फुट)	मील	
जङ्ला		७	(दूकान)
कोपङ्		१	(यहाँसे गंगोतरी साढ़े ७ मील)
डाँडा		२॥	(देवदारकी छायामें पड़ाव)
करचा		३॥	
१. लामाथाङ्		२॥	
नेलङ्		७॥	(बड़ागाँव)
२. दो-सुम-दो		८॥	(२ मीलपर जाथुङ् गाँव)
३. तिपानी (१)		११।	
४. मंडी		९।	
जेलू-खागा (घाटा)	१७४९०	३।	
५. ओप नदी		४।	
६. पुलिङ्-मंडी		१६।	(नेलङ् और कनौरकी मंडी, जुलाई-अगस्त)
७. शरबा-रब्		९।	
८. थोलिङ् (गोम्पा)		२२	
९-१९ मङ्-नङ्-मानसरोवर		१५४	
		३९३×२=७८६ मील	

(६) ऋषिकेश-मानसरोवर-ऋषिकेश (गुनला-नीती द्वारा)

(७२९ मील, ५० दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील	
ऋषिकेश		०	(डाक-तार-घर, डा० बँ०)
लछमन झूला		३	
बिजनी		११॥	
कोटली भेल		११	
व्यासघाट		९	
देवप्रयाग	१५५०	१०	(डा० ता० डा० बँ०, अस्पताल)
कीर्तिनगर		२१	(यहाँतक मोटर)
१. श्रीनगर	१७०६	३	(डा० ता०, डा० बँ०, अस्पताल)
२. छटीखाल		९	
३. रुद्रप्रयाग		९	(डा० ता०, अस्पताल)
४. नागरसू		१०	
५. कर्णप्रयाग	२३०७	१०	(डा० ता०, डा० बँ०)
६. नन्दप्रयाग	२८८०	१२॥	(डा० ता०, डा० बँ०)
७. चमोली	३१५०	७	(डा० ता०, डा० बँ० अस्प०, कोटद्वारासे यहाँतक मोटर)

१. यहाँसे एक मार्ग माणाघाटा जाता है, दूसरा २०मील चलनेपर दोपङ् (१०मील) और मङ्-नङ् (१० मील) जाता है।

	ऊँचाई (फीट)	मील
८. पीपलकोटी	४०००	९॥ (डा० ता०, अस्पताल)
९. गुलाबकोटी	५३००	१० (डा० बँ०)
हेलङ्	५०००	२
१०. जोशीमठ	६२००	६॥ (डा० ता०, डा० बँ०, अस्पताल)
नीती (मोटान्त)		४
११. सुरई ठोटा		१२ (ध० शा०)
तमक		(ध० शा०)
१२. मलारी	१०१५०	१८
१३. बम्पा		५ (ध० शा०, बड़ागाँव)
गमशाली	१०३१७	१॥ (ध० शा०)
१४. नीती		८
१५. ख्युङ् लुङ्	१४७०३	१५॥
नीतीघाटा	१६६००	४। (भारत-सीमा)
१६. चङ्लूस		१२ (पड़ाव)
१७. नब्रा-मंडी		११॥ (नीतीवालोंकी मंडी, जुलाई-सितम्बर)
१८. डोङ्-पू (गोम्पा)		१४
१९. दोन गू-छू		४। (पड़ाव)
२०. सिब्चिलिम्-मंडी		१९ (छोटी मंडी, जुलाई-अगस्त)
२१. गुनि-यङ् ती		४। (पड़ाव)
२२. ग्यनिमा मंडी		९। (मंडी, जुलाई-अगस्त)
२३. छु-मिक् श-ला		१६।
२४. कैलास (दर-छेन्)		२२
२५. मानसरोवर		१६
२६-५० ऋषिकेश		३५१
		७०२ मील

(७) ऋषिकेश-मानसरोवर-ऋषिकेश(डमजन-नीति)

(६४९ मील, ४४ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील
(ऋषिकेश जोशीमठ)		१४८॥ (यात्रा छ दिनके अनुसार)
११-१२ मलारी	१०१५०	३४ (धर्मशाला)
१३. नीती		९॥
बोमलास् घाटा		७
१४. डमजन		३॥
डमजन-नीतीघाटा	१६२०० (!)	५॥
१५. होती		५॥ (पड़ाव)
तोनजेन-ला	१६३५०	३॥

	मील
१६. छलम्-पा	२॥
१७. सिब्-चिलम्	१५॥
१८. गु-नी-यङ्-ती	१५
१९. ग्यानिमा मंडी	१२॥
२०. छु-मिक् शा-ला	१६॥
२१. कैलास (तर्छेन्)	२१॥
२२. मानसरोवर	१६
२३-४४. ऋषिकेश	३२४॥
	६४९ मील

(८) ऋषिकेश-मानसरोवर (होती-नीतीघाटा)

(६४५ मील, ४४ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील
१-१०. जोशीमठ		१४८॥ (यात्रा छ दिनके अनुसार)
११. सुरई ठोटा		१६
१२. मलारी		१८
१३. तिमरसिम		८॥
१४. कालाजबर		६ (पड़ाव)
छोती-नीतीघाटा	१६३९०	७
रिमखिम	१४२५०	१॥ (पड़ाव)
१५. होती		६ (पड़ाव)
१६-२२. मानिसरोवर		१०८
२३-४४. ऋषिकेश		३२२॥
		६४५ मील

(९) ऋषिकेश-मानसरोवर-ऋषिकेश (माणाघाटा)

(८४३ मील, ६४ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील
१-१०. ऋषिकेश-जोशीमठ		१४८॥
१२. बदरीनाथ	१०२४४	१९
१३. माणा	१०५६०	२
१४. घसतोली		९॥
१५. सरस्वती		८॥
माणाघाटा (चिरबिटिया) (भारतसीमा)	१८४०२	८॥
१६. पोती		९

	ऊँचाई (फुट)	मील
१७. जोगोराव		८
च-रङ्-ला	१६४००	६
१८. रामूराव		१०
१९. शंकरा		१०
२०. सत्तूखाना		२२ (!)
२१. थोलिङ् (गोम्पा)	१२२००	७ (!)
२२. मङ्-नङ्		१३
२३. दाबा	१४०००	१४
२४. नव्रा मंडी		६॥
२५. डोङ्-पू (गोम्पा)		१४
२६. रानगूछू		५॥
२७. सिञ्चिलम्		१९
२८. गु-नि-य्ङ-ती		१५
२९. ग्य-नि-मा मंडी		१३
३०. छू-मिक-श-ला		१६।
३१. दर छेन् (कैलास)		२१॥।
३२. मानसरोवर		१६
३३-६४. ऋषिकेश		४२१॥
		८४३ मील

(१०) कश्मीर-मानसरोवर—कश्मीर (लद्दाख)

(९२२ मील, ८२ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील	
श्रीनगर	५२६०	०	
१. गंदरबाल		१३	(डा० बँ०, दूकान)
२. कांगन	५७९५	११	(,, दूकान)
३. गुंड	६५००	१३	(,,)
४. सोनमर्ग	८७५०	१४	(,,)
५. बालतल	९४५०	९	(,,)
जोजीला	११५७८	२॥	(,,)
६. मटयन		७	(,,)
७. द्रास	१०६३६	१२॥	(,, दूकान)
८. समसा-खरबू		२२॥	(,,)
९. करगिल	१०७९०	१६।	(,, दूकान, डाकघर)
१०. मुलबेक	१०३५०	२२॥	(,,)
नाम्मिकला	१३०००		

	ऊँचाई (फुट)	मील
११. बोद-खरबू		८॥ (,,)
पोतूला	१३४४६	१०
१२. लामाउरू	११४००	५ (,,)
खलचे		१०। (,, दूकान, डाकघर)
१३. नूरला		८॥ (,,)
१४. ससपूला		१४॥।
१५. नीमू		११॥
पितोग गोम्पा		१३॥।
१६. ले	१३५०३	४ (डाकबँगला, डाकघर, बाजार)
१७. छुशो		१२
१८. मर चे- लङ्		१३
१९. उपशी		१०
भीरू		७
२०. गया	१३५००	१०
तगलङ्ला	१७५००	१२
२१. डेब्रिङ्	१५७८०	४
२२. थुपजे		१५
२३. पूगा	१४३००	१६ (तप्तजल, गंधक-खान)
२४. लङ्शम्		१८ (आयातकर-घर)
२५. दुङ्-तीं		१८
२६. निगोचे		१३
२७. फुग-चे		१४
२८. लगनखेल		१२
२९. देमछोग (भारत सीमा)		१२
३०. टशीमङ्	१३९००	१९ (गोम्पा)
३१. लङ्मर		१६ (गाँव)
३२. गर-गोन-सा	१४०६५	१८ (गरपोन (जेनरल) का शीतनिवास)
३३. नमरू		२४ (गाँव)
३४. गरतोग	१५१००	१५ (पश्चिमी तिब्बत राजधानी)
३५. नोक्यु तासम	१५०००	६
दो क्यु		८
३६. वर-छू		५
लङ्-छेन-छू		३
३७. छोब्-ता		५
चर्-गोद्-ला	१६२००	२
डिङ्री		२

	ऊँचाई (फुट)	मील
३८. मिसर-ता-सम	१४३००	१४
३९. तीर्थपुरी		४ (तप्तजल)
४०. दुल-छू-गोचा		१४॥
४१.दरछेन (कैलास)		२१।
४२. मानसरोवर		१६
४३-८२. श्रीनगर		४६१
		९२२ मील

(११) ल्हासा-मानसरोवर-ल्हासा

(१०२ दिन)

० ल्हासा	१९. सङ्-लिङ्	३८. टदोम
१. नेथङ्	२०. डग्-रिङ्	३९. लङ्-वरमा
२. छुशुल	२१. राछुङ्	४०. टोटो
३. खम-ब-ला	२२. कोन-दोन्	४१. डग्-सुम्
४. पेटा	२३. कोरगे	४२. डग्-चग्-सुम्
५. न-गर-चे	२४. सङ्-सङ्	४३. तम्-सङ्
६. रिंवोङ्	२५. शे-रू	४४. सुमदो
७. डुबशी	२६. के-तो-नङ्	४५. ल्होछुङ्
८. ग्यांची	२७. के-तो	४६. डग्-करपो
९. टोकरी (!)	२८. रो-छेन्	४७. थोग-छेन्
१०. पाना-जोङ्	२९. रब्का	४८. ङ लुग्रा
११. शिगर्चे (टशील्हुन्पो)	३०. समकू	४९. वर-खा
१२. नरथङ् (गोम्पा)	३१. ओग-शू	५०. दर-छेन (कैलास)
१३. क-छेन (गोम्पा)	३२. सका-जोङ्	५१. मानसरोवर (मि-फम-छो)
१४. शिपकी दिङ्	३३. ला-लुङ्	५२-१०२. ल्हासा
१५. टशीगङ्	३४. न्युकू	
१६. फुनछोग-लिङ्	३५. चाङ्-पो (नदी)	
१७. चग्-दोङ्	३६. लुगचङ्	
१८. मो-री	३७. तम्-सक्-रङ्	

(१२) शिमला-मानसरोवर-शिमला (गरतोक)

(९२२ मील, ७४ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील
० शिमला	७०४३	०
१. फागू		१२ (डाकबँगला)
२. मटियाना		१७ (,, बाजार)
३. नारकंडा		११ (डा० बँगला, बाजार)

	ऊँचाई (फुट)	मील	
४. ठाणादार (कोटगढ़)		११	(,, डाक-तारघर)
५. निरत		११	(,, दूकान)
६. रामपुर		९	(,, बाजार, डाक-तारघर)
७. गौरा		७	(,, दूकान)
८. सराहन		१३	(डाकबँगला, बाजार, डाकघर)
९. तरन्दा		१४	(,,)
१०. नचार		१०	(,, दूकान, डाकघर)
११. उडनी		१३	(,, दूकान)
१२. चिनी		१५	(,, दूकान, स्कूल, डाकघर)
१३. जंगी		१०	(,, दूकान)
१४. कनम्		१४	(,, स्कूल)
१५. स्यू		१६	(,, स्कूल)
१६. नम्ग्या		१०	(,, भारतका अन्तिम गाँव)
शिपकी-घाटा	१५४००	४	
१७. शिपकी	१०६००	८	(पड़ाव)
१८. गूगे		५	(गाँव)
१९. ठि-ओग्		१५	(गाँव)
२०. मियङ्		१२	
२१. शि-रिङ्-ला (तल)		८	
शि-रिङ्-ला	१६४००		
२२. नुह		१५	(गाँव[1])
२३. हू-ले		१२	
२४. खि नि-फुग		१३	(गाँव)
२५. शङ्-छी-जोङ्	१३७६०	१३	(गाँव, जोङ्का ग्रीष्म-निवास)
२६. शङ्		६	(गाँव)
२७. नदी		१४	
२८. नदी		१४	
लो-आचे-ला	१८५१०		
जोङ-छुङ्-ला	१७४००		
२९. गरतोक नदी		१२	
३०. गरतोक	१५१००	९	(पश्चिमी तिब्बतकी राजधानी)
३१. नो-क्यु-ता-सम्	१५०००	६	
३२. छोपता		१६	
चरगोतला	१६२००	२	
३३. मिसर-ता सम	१४३००	१८	
३४. तीर्थपुरी (टेटापु)	१४६००	४	

१. यहाँसे २ मील आगेसे थोलिङ्का मार्ग दाहिने फूटता है।

	मील
३५. दुल-छू (गोम्पा)	१४॥
३६. दर–छेन (कैलास)	२१।
३७. मानसरोवर	१६
३८-७४. शिमला	४६१
	९२२ मील

(१३) शिमला-मानसरोवर-शिमला (थोलिङ्)

(९७८ मील, ७६ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील	
१–१६. शिमला-नमग्या		१९८	(डाकबँगला)
१७. शिपकी पड़ाव	१०६००	१२	
१८. गूगे		५	
१९. ठिओग्		१५	
२०. मियङ्		१२	
२१. शि-रिङ्-ला (तल)		८	
शि-रिङ् ला	१६४००		
२२. नुह		१५	
२३. हू-ले		१२	
२४. खि-नि-फुग		१३	(गाँव[1])
२५. टिबू		२०	
२६. नियङ्		९	
२७. थोलिङ् (गोम्पा)		१६	
२८. मङ् नङ्		१३	(गाँव, गोम्पा)
२९. दाबा	१४०००	१४	(जोङ्)
३०. नव्रामंडी		६॥	
३१. ङोङ् पू (गोम्पा)		१४	
३२. दोन-गूछू		५॥	
३३. सिब् चीं लम् (मंडी)		१९	
३४. गुनिया यङ् ती		१५	
३५. ग्य-निमा मंडी		१३	
३६. छू मिक-शा-ला		१६।	
३७. दर्-छेन् (कैलास)		२१॥	
३८. मानसरोवर		१६	
३९-७६. शिमला		४८९	
		९७८ मील	

१. गाँवसे दो मील आगे बायेंसे गरतोकका रास्ता फूटता है।

२. अलमोड़ासे अन्य यात्राएँ—

(१४) अलमोड़ा-काठगोदाम-अलमोड़ा (पैदल)

(७६ मील, ८ दिन)

	मील
अलमोड़ा	०
१. प्योड़ा	९
२. रामगढ़	१०
३. भीमताल	१०
४. काठगोदाम	९
५-८. अलमोड़ा	३८
	७६ मील

(१५) अलमोड़ा-काठगोदाम-अलमोड़ा (मोटर द्वारा भी)

(१५४ मील, २ दिन)

	मील
अलमोड़ा	०
कटारमल	
मझखाली	२०
रानीखेत	९
खैरना	१५
भवाली	१२
ब्रेवरी	९
१. काठगोदाम	१२
२···,–अलमोड़ा	७७
	१५४ मील

(१६) अलमोड़ा-केदारनाथ-अलमोड़ा (चमोली द्वारा)

(३०० मील, २८ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील	
१–१०. अलमोड़ासे चमोली		९७॥	(यात्रा ३० दिनके अनुसार)
११. पाँगरबासा	(तुंगनाथ १२०७२)	११।	
पोठीबासा		४।	
१२. ऊखीमठ	४३००	७॥	(डा० घ० डा० बँ०)
गुप्तकाशी		२	(डा० घ०)
फाटा		७	(डा० घ०)

	ऊँचाई फुट	मील (भारत-सीमा)
१३. गौरीकुण्ड	६८००	१० (डा० बँ०, डा० घ०)
१४. केदारनाथ	११७५०	८॥
१८–२८···–अलमोड़ा		१५०
		३०० मील

(१७) अलमोड़ा-केदारनाथ-अलमोड़ा (रुद्रप्रयाग द्वारा)

(३२५॥ मील, ३२ दिन)

	मील
अलमोड़ा–कर्णप्रयाग	९२॥ (यात्रा ३० दिनके अनुसार)
छतवा पीपल	४
नगरसू	५
शिवनन्दी	१॥
रुद्रप्रयाग	८ (धर्मशाला, बाजार, डाकघर)
छतोली	५ (ध० शा०, बाजार)
तिवारा	॥
मठ	१
रामपुर	॥
अगस्तमुनि	४ (मन्दिर, ध० शा०, डा० घ०)
सौरी	॥
भीरी	४॥ (ध० शा०, मन्दिर)
कुण्ड (ऊखीमठ)	२॥ (चमोलीका रास्ता)
गुप्तकाशी	१॥ (ध० शा०, मन्दिर, डा० घ०, बाजार)
नाला	१॥
भेत	१। (बद्रीश्वर महादेव)
ब्युङ् (तल्ला)	१॥।
ब्युङ् (मल्ला)	॥
माईखण्ड	२
फाटा	२
ढाब	३।
बदलपुर	।
रामपुर	२।
सोमद्वारा	४॥
गौरीकुण्ड	३ (धर्मशाला, डा० बँ०, डा० घ०)
सर्गनिशेनी	३।
रामबाड़ा	२

	मील
केदारनाथ	४॥ (ध० शा०, डाकघर)
···, अलमोड़ा	१६२॥।
	३२५॥

(१८) अलमोड़ा-कोटद्वारा-अलमोड़ा (पौड़ी)

(३७४॥ मील, ३६ दिन)

	मील
अलमोड़ा–रुद्रप्रयाग	११०॥।
पुनार	॥
गुलाबराय	१
नरकोटा	३॥
खंकरा	२॥
छंटीखाल	२॥ (डाकबँगला)
भट्टीसेरा	१ (डा० घ०, दूकान)
सुकरता	२॥
श्रीनगर	५ (नगर, डा० बँ०, हाई स्कूल, अस्पताल)
पौड़ी	८ (नगर, गढ़वालका सदर)
अदवानी	१० (डा० बँ०, ध०शा० रानीगढ़-शिखर)
क्लेठ	७ (डा० बँ०)
वनघाट	६॥ (डा० घ०, ध० शा०, डाकघर)
द्वारीखाल	५ (डा० बँ०)
दादामंडी	६॥ (डा० घ० दूकान)
दोगड्डा	५ (डा० बँ०, डा० घ०, बाजार)
कोटद्वारा	१० (रेल स्टेशन)
	१८७। + २ = ३७४॥ मील

(१९) अलमोड़ा–कोटद्वारा–अलमोड़ा (लैंसडौन)

(२९८ मील, २६ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील
१–७ अलमोड़ा–बुंगीधार		७२ (तालिका १३, १६ अनुसार)
८. बैजराव		१२
९. पोखरा		१०
सङ्लाकोट		६
१०. चनमासू		१०
तिलसिया		८
११. लैंसडौन	५५००	७
१२. दोगड्डा		९
१३. कोटद्वारा		१०
१४–२६···–अलमोड़ा		१४७
		२९४ मील

(२०) अलमोड़ा–चम्पावत–अलमोड़ा (मोरनौला होते)

(१०० मील, १० दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील
अलमोड़ा		०
जलना		८
१. लमगरा		२
२. मोरनौला		९
३. देवीधुरा		१०
४. धूनाघाट		१०
५. चम्पावत	५५००	११
६–१०'''अलमोड़ा		५०
		१०० मील

(२१) अलमोड़ा–जोशीमठ–अलमोड़ा (बैजनाथ होते)

(२४० मील, १८ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील	
१. अलमोड़ा–बैजनाथ		३३	(मोटर द्वारा)
२. ग्वालदम		८	
देवल		४	
३. लोहाजङ्		८	
४. वान		८	
कनौल		६	
५. रमनी		९	
सेमखरक		९	
६. कालीघाट		८	
७. ढकवानी		८	
कुआरी डंडा	१२४००		
८. खुलरा		९	
तपोवन		६	
९. जोशीमठ		७	
१०–१८'''–अलमोड़ा		१२०	
		२४० मील	

(२२) अलमोड़ा–तनकपुर–अलमोड़ा

(२३४ मील, १८ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील
अलमोड़ा		०
१. पुनवानौला		१४
२. नैनी		१०॥

	ऊँचाई (फुट)	मील
३. गंगोलीहाट		१०॥
४. वंस		१०
५. पिठौरागढ़	५४००	७
गुरना		७
६. चीरा		१०
लोहाघाट		९
७. चम्पावत		६
८. धुरी		१५
९. तनकपुर		१८
१०–१८···–अलमोड़ा		११७
		२३४ मील

(२३) अलमोड़ा–नीतीघाटा–अलमोड़ा

(३४९ मील, ३२ दिन)

	मील
१–१३ अलमोड़ा–जोशीमठ	१३४ (तालिका १३)
तपोवन	७
१४. सराई-तोता	९॥
जेलम	१०
१५. मलारी	५॥
बम्पा	७
१६ नीती	३॥
१७–३२···–अलमोड़ा	१७४॥
	३४९ मील

(२४) अलमोड़ा–नैनीताल–अलमोड़ा (पैदल)

(६२ मील, ४ दिन)

	मील
अलमोड़ा	०
१. चोपरा	१५
खैरना	४
२. नैनीताल	१२
३–४···अलमोड़ा	३१
	६२ मील

(२५) अलमोड़ा-नैनीताल–अलमोड़ा (मोटर द्वारा)

(१२६ मील, २ दिन)

	मील
अलमोड़ा	०
रानीखेत	२९

	मील
खैरना	१५
भवाली	१२
नैनीताल	७
···–अलमोड़ा	६३
	१२६ मील

(२६) अलमोड़ा–भीमताल–नैनीताल–अलमोड़ा (पैदल)

(८० मील, ८ दिन)

	मील
अलमोड़ा	०
१. प्योड़ा	९
२. रामगढ़	१०
३. भीमताल	१०
भवाली	४
४. नैनीताल	७
५–८···–अलमोड़ा	४०
	८० मील

(२७) अलमोड़ा–पिंडारी हिमानी–अलमोड़ा

(१४९ मील, १४ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील	
अलमोड़ा		०	
दीनापानी		६	(डाकबँगला, जंगलाती)
१. तकुला	५२५	९	(डा० बँ०)
२. जागेश्वर	३२००	१२	(,,)
३. कपकोट	३७५०	१४	(,,)
४. लोहारखेत	५६५०	८॥	(,,)
ढकुरी	८९००	५॥	(,,)
५. खाटी	७६००	५	(,,)
द्वाली	९०००	७	(,, यहाँसे १० मील काफिनी-हिमानी)
६. फुरकिया	१०७००	३	(,,)
७. पिंडारी-हिमानी	१२२७५	४॥	
८–१४···-अलमोड़ा		७४॥	
		१४९ मील	

(२८) अलमोड़ा–पौड़ी–अलमोड़ा (लैंसडौन द्वारा)

(३०६ मील, २६ दिन)

	मील	
१–११. अलमोड़ा-लैंसडौन	१२८	(तालिका १३, १६, १७ अनुसार)
तिलसिया	७	

		मील	
१२.	विलखेत	९	
१३.	पौड़ी	९	
१४–२६'''–अलमोड़ा		१५३	
		३०६ मील	

(२९) अलमोड़ा–बदरीनाथ–अलमोड़ा[1] (बैजनाथ द्वारा)

(३०५ मील, २६ दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील	
अलमोड़ा		०	मोटर
१. सोमेश्वर		१७	
कौसानी		६	
२. बैजनाथ		९	
ग्वालदम		९	
थराली		७।	
५. डुँगरी		५	
६. घाट		१२॥।	
७. नन्दप्रयाग	२८८०	११	
७–१३. नन्दप्रयाग-बदरीनाथ		६६॥	(तालिका १३ अनुसार)
१४–२६'''–अलमोड़ा		१४॥	
		३०५ मील	

(३०) अलमोड़ा–बदरीनाथ (रानीखेत)

(३३६॥ मील, २४ दिन)

	मील	
अलमोड़ा	०	मोटर
१. रानीखेत	३०	
कोटूली	३	
बलना	१	
दडमाड	१	(दूकान, घोड़ा किराया)
सुनोली	२	(दूकान)
कपड़ा	१	
चण्डेश्वर	३	(दूकान)

१. ऋषिकेशसे यमुनोत्तरी	११८
यमुनोत्तरी–गंगोत्तरी	९८॥
गंगोतरी–केदारनाथ	१२३
केदारनाथ–बदरीनाथ	१०१
बदरीनाथ–ऋषिकेश	१६७॥
	६०८ मील

	ऊँचाई (फुट)	मील	
२. द्वाराहाट		३	(बाजार, डा० बँ०, डाकघर, अस्पताल)
खनरधार		२	
चित्रेश्वर		२	(मन्दिर, दूकान)
महाकालेश्वर		२	(मन्दिर, दूकान)
ग्वाली		२	
३. गणाई (चौखुटिया)	३२००	३	(रामनगरकी सड़क)
दिगोत		॥	
त्रिखेश्वर		२	
रामपुर		१	
विजरानी		॥	
सेमलखेत		२	
मेलचौंरी		२॥	
(लोहबा गणाई से ११ मील)			
४. मेलगुवार		३	
सैंजी		१	
दरिमद्वली		।	
धुनारघाट		१॥	(डाकघर)
ग्वारगधेरा		१।	
रसिया		२॥।	
कालीमाटी		॥।	
गंडाबंज		१	
जंगल चट्टी		२	
खेती		१॥	(धर्मशाला, मन्दिर, डाकघर)
५. आदबदरी		३।	
भटोली		४।	
सरोली		१॥	
सिमची		२।	(धर्मशाला, जेठाखदककी सड़क)
६. कर्णप्रयाग	२३०७	३॥।	
जैकन्दी		४॥।	
लंगासू		२।	
सौला		३	
७. नन्दप्रयाग	२८८०	३।	(बाजार, डाकघर)
मैथाना		२।	
कुँमर		१॥।	
८. चमोली	३१५०	१॥	(डाकघर, डाकबँगला, बाजार, तहसील, केदारनाथका मार्ग)
मठ		२।	

	ऊँचाई (फुट)	मील	
छिंका		१॥	
बौंला		॥	
सियासेन		२॥	
धोबीघाट		॥	(डाकबँगला, डाकघर)
९. पीपलकोट	४०००	२	(डाकबँगला, डाकघर)
गरुड़गंगा		५	(धर्मशाला)
थंगनरी		३	
पातालगंगा		२	
गुलाबकोटी	५३००	२	(डाकबँगला)
१०. हेलङ्	५०००	३	(धर्मशाला, अलकनन्दासे परे रमणीय कल्पेश्वर)
खनोरी		३	
झरकूला		२	
अनीमठ		१॥	(वृद्धबदरी-मन्दिर)
सिंगधर		॥	
११. जोशीमठ	६१०५	१	(मन्दिर, बाजार, नीतीका मार्ग)
विष्णुप्रयाग		२	
बलदूरा		१	
घाट		३	
नन्दकेशरी		१	
१२. पण्डेश्वरी	६०००	१	(योगबदरी-मन्दिर, डा० बँ०)
लामबगड		३	
हनुमान चट्टी		३।	
१३. बदरीनाथ	१०२४४	४॥	(डा० बँ०, अस्पताल, डाक-तारघर)
बसुधरा		४	
१४–२६···अलमोड़ा		१६८।	
		३६६॥ मील	

(३१) अलमोड़ा–बैजनाथ–अलमोड़ा (पैदल)

(६० मील, ४ दिन)

	मील
अलमोड़ा	०
हवालबाग	५
१. सोमेश्वर	१२
कौसानी	६
२. बैजनाथ	७
३–४···अलमोड़ा	३०
	६० मील

(३२) अलमोड़ा–बैजनाथ–अलमोड़ा (मोटर द्वारा)

	ऊँचाई (फुट)	मील	
अलमोड़ा		०	
हवालबाग		५	
सोमेश्वर		१२	
कौसानी		८	
गरुड़		६	(मोटर मार्ग समाप्त)
१. बैजनाथ	४७३६	१	
२···–अलमोड़ा		३२	
		६४ मील	

(३३) अलमोड़ा–मसूरी–अलमोड़ा (पौड़ी द्वारा)

(३४२ मील, ३० दिन)

	ऊँचाई (फुट)	मील	
१–५. अलमोड़ा–गणाई		५३	(तालिका १३ की भाँति)
६. कैलानी		९	
७. बुंगीधार		१०	
८. कैयूर		१२	
सकन्याना		७	
९. चीपलघाट		६	
१०. पौड़ी	५३००	१२	
११. श्रीनगर	१७००	९	
टकूली		१३	
१२. टेहरी		१२	
१३. कौडियाला		१२	
१४. घाना उल्टी		१३	
लंढौर		१३	
१५. मसूरी		३	
१६–३०···–अलमोड़ा		१७१	
		३४२	

(३४) अलमोड़ा–रामगढ़–अलमोड़ा (पैदल)

(३८ मील, ४ दिन)

	मील
अलमोड़ा	०
१. प्योड़ा	९
२. रामगढ़	१०
३–४···अलमोड़ा	१९
	३८ मील

(३५) अलमोड़ा–रामगढ़–अलमोड़ा (मोटर द्वारा)

(१३० मील, २ दिन)

	मील	
अलमोड़ा	०	
कटारमल		(सूर्यमन्दिर)
मझखाली	२०	
रानीखेत	९	
खैरना	१५	
भवाली	१२	
१. रामगढ़	०	
२. ···–अलमोड़ा	६५	
	१३०	

(३६) अलमोड़ा–हरद्वार–अलमोड़ा (पहाड़-पहाड़)

(४०० मील, ३८ दिन)

	मील	
१–८. अलमोड़ा–कर्णप्रयाग	८५॥	(तालिका १३ अनुसार)
९. नगरासू	१०॥	
१०. रुद्रप्रयाग	१०	
११. चारीखाल	१०	
१२. श्रीनगर	१०	
१३. रानीबाग	१०	
१४. देवप्रयाग	९	
१५. ब्याँसघाट	९	
१६. कोट्टीभेव	१०	
१७. बिजनी	९	
१८. लछमनझूला	१२	
ऋषिकेश	३	
१९. हरद्वार	१२	
२०–३८···–अलमोड़ा	२००	
	४०० मील	

परिशिष्ट 3

कत्यूरी-भूमिकी यात्रा

(१) **अलमोड़ा**—कत्यूरी कुमाऊँका प्रथम ऐतिहासिक राजवंश है। कुमाऊँके इतिहासपर लेखनी चलाते समय कत्यूरियोंके पुराने अवशेषोंको देखना आवश्यक है, यही सोच हमने मईके अन्तिम सप्ताहमें कत्यूर पट्टीकी यात्रा की। नीचे होता तो मईके मासमें ऐसी यात्रा करनेवाले व्यक्ति-पर सन्देह हुए बिना नहीं रहता, किन्तु हमें शायद ही कहीं समुद्रतलसे ३००० फुटसे नीचे उतरना पड़ा। अधिकतर तो ५-६ हजारपर रहे। सभी यात्रामें तो नहीं, पर काफी दूरतक मोटरोंका रास्ता था, किन्तु पहाड़में मोटरोंकी सवारी सभीको नहीं सहती। हमारे साथी थे श्री प्रभाकर माचवे। समान-धर्मा आदमीके साथ यात्रा करनेमें कितना आनन्द आता है, यह कहनेकी आवश्यकता नहीं। किन्तु शरीरसे स्वस्थ और बलिष्ठ होते भी माचवे पहाड़ी मोटरके लिए मजबूत गोइयाँ नहीं साबित हुए। नैनीतालसे चलनेपर प्रथम वास हमारा भवाली सेनीटोरियममें डाक्टर धर्मानन्द केसरवानीके यहाँ रहा। हृदय और मस्तिष्कके ऐसे शल्यचिकित्सक भारतमें दुर्लभ हैं और केसरवानीजी सिद्धहस्त चिकित्सिक ही नहीं हैं, बल्कि संस्कृत-साहित्य और दर्शनके भी विद्वान् हैं, फिर 'सन्तसमागमम हरिकथा' कितनी सुन्दर रही होगी, इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं।

२५ मईको १० बजे जब हम भवालीमें अलमोड़ाकी मोटरपर बैठने लगे, तो सामने सुन्दर रक्तपीत खूबानियाँ आयीं। वह असाधारण बड़ी तथा मधुर थीं, किन्तु मेरा उनसे पुराना परिचय है। उन्हें फसलमें दो ही दिन रुचिसे खाया जा सकता है। वह आम नहीं है कि 'पेट भरे और जी न भरे।' लेकर मैंने भी खाया और माचवेजीने भी। हमारी बस पहाड़की टेढ़ीमेढ़ी सड़कपर चढ़ती-उतरती आगे चली। यात्रियोंमें हमारे सामनेकी सारी पंक्ति एकके बाद एक 'भूमिशायी' होने, लगी—वहाँ दोनों तरफ जंगलोंसे मुँह निकालकर कैकी होड़ लग रही थी, हमारी और माचवेजीकी पंक्तियाँ आमने-सामने थीं। मैं तो खैर पहाड़ी मोटर क्या, बिगड़े समुद्रके जहाजकी भी परवाह नहीं करता, किन्तु हमारी पंक्ति दृढ़ रही। माचवेजीकी पंक्ति दृढ़ रही। माचवेजीकी पंक्तिमें प्रथम पुरुष पहिले प्रभावित हुआ, यह चिन्ताका विषय था, किन्तु अभी माचवेजी दृढ़ रहे। जब उनकी बगलका आदमी भी पैरोंपर खड़ा नहीं रह सका, तो माचवेजीके लिए सम्हालना मुश्किल हो गया। तीन पुरुषोंकी सारी पंक्तिने पराजय स्वीकार की। माचवेजीके ऊर्ध्व-विरेचनमें पहिले आयीं वही लाल-पीली खूबानियाँ। उन्होंने समझ लिया कि कैका कारण वही खूबानियाँ हैं। उन्हें बेचारी खूबानियोंपर इतना क्रोध और घृणा आयी कि पूछिये मत। शरदजीने लौटनेपर जब खूबानी सामने रखना चाहा, तो पतिदेवता साधारण रीतिसे नाराज नहीं हुए। नौबत तो यहाँतक पहुँच रही थी कि माचवेजी खूबानीके नामपर चिढ़नेके लिए तैयार हो जाते। खैर कितनोंका पेट खाली करवा, नाकों और आँखोंसे पानी गिरवा, बस रानी खैरनासे ऊपर उठती रानीखेत हो कटारमलके पास पहुँच रही थी। पहाड़ी ड्राइवरोंका स्वभाव सा है कि मोटर चलाते समय 'कश्ती खुदापर छोड़ दो, लंगरको तोड़ दो'-के मन्त्रपर आचरण किया जाय। हार्न देना वह बेकार समझते हैं या देते भी हैं तो तब जब कि टक्करको बचाया नहीं जा सकता। यह सनातनधर्म कूर्माचलके ड्राइवरोंका ही नहीं है, दार्जिलिंगवाले

भी इसी पथके पथिक हैं। कटारमल कुछ दूर था। हमारी बस इधरसे सर्राटा भरती जा रही थी, इसी समय उधर पहाड़ी मोड़पर दूसरी ओरसे दूसरी मोटर आ पहुँची। हमारी बस पहाड़से बाहरकी ओर थी, ड्राइवरने बचानेकी कोशिश की, अधिक कोशिक करनेका अर्थ था सीधे पाताललोकमें पहुँचना। लोगोंके रोंगटे खड़े हो गये, किन्तु बसकी दाहिनी आँख (लैम्प) बलिदान करले छुट्टी मिल गयी। थोड़ी-सी तू-तू मैं-मैंमें ड्राइवर-युगल ही नहीं, यमदंष्ट्र-योगसे बाल-बाल बचे कुछ यात्री भी शामिल हुए। मनुष्यका जीवन कितना चंचल—पद्मपत्रपर जलविन्दु जैसा है!

अलमोड़ा नया नगर है। १५६० से ही उसे कुमाऊँकी राजधानी बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ, किन्तु कत्यूरी काल (९वींसे १२वीं शती) में भी खगमाराका दुर्ग मौजूद था। अलमोड़ा पहुँचकर बिना ढुंढनव्रत पूरा किये कैसे रहा जा सकता था। यशपाल भी यहीं थे। माचवे, वह और मैं तीन साहित्यकार हो गये। तरुण वकील श्री हरिश्चन्द्र जोशीकी तो इस यात्रामें बड़ी सहायता रही। वह कत्यूर (बैजनाथ) तक साथ गये। श्री लक्ष्मीदत्त जोशीके घर—जिन्हें वकील होनेपर भी लोगोंने सेठ बना रखा है—उसी शामको पहुँचे। उन्होंने कुमाऊँके धर्मगीतों तथा हस्तलेखोंके साथ कितनी ही पुरानी कलाकी वस्तुओंका अच्छा संग्रह कर रखा है। किन्तु उस दिन वह घरपर नहीं थे। दूसरे दिन हमें चायपानके साथ उनके संग्रहको देखकर अतिसन्तोष हुआ। अगले दिन कितने ही और मन्दिरों और पुराने स्थानोंको देखने गये, किन्तु पहिली शामको जो त्रिपुरसुन्दरी (त्रिपुरा) मन्दिरके दर्शनका फल प्राप्त हुआ, वह दुहराया नहीं जा सका। यह मन्दिर दो-तीन ही शताब्दी पुराना है, किन्तु नये मन्दिर तथा देवताओंके वृक्ष-चबूतरे हमारे देशमें असली महात्तमवाली मूर्तियोंके स्वाभाविक म्यूजियम होते हैं, इसलिए हम त्रिपुरसुन्दरीकी ओर घूम ही पड़े। दक्षिणा उपस्थित हो, और स्थानीय परिचित सहायक मिलें, तो भगवान्का द्वार भी खुल जाता है। अँधेरा था, टार्चसे कोनेमें देखा तो कुछ शिलाखण्ड दिखाई पड़े—शिलाखण्ड नहीं, वह तो रत्न साबित हुए। यह उस समयकी खण्डित मूर्तियाँ थीं, जब कि हमारे देशमें मूर्तिशिल्पपर महमूदके आक्रमण (११वीं शतीके आरम्भ)के बादवाला विश्वकर्माका शाप नहीं पड़ा था।

२६ मईका सारा दिन अलमोड़ाके लिए था। सवेरेसे ही निकल पड़े, त्रिपुराके मन्दिरमें पहुँचकर सपार्षदि विष्णुके चार शिलाखण्डोंको बाहर निकाल लाये। इसी समय पुजारिन वहाँसे खिसक गयी। साथियोंने भय करना शुरू किया कहीं बुढ़ियाको यह पसन्द न आया हो और वह गोहारके लिए न गयी हो। मैंने कहा—परवाह नहीं, जबतक गोहार आयेगी तबतक ब्रांड-न्यू रोलफ्लेक्स अपना काम कर चुका रहेगा। बुढ़िया आयी तो देखा, उसके शरीरपर धराऊँ अच्छे कपड़े हैं। वह अपना फोटो उतरवाना चाहती थी। हमारे आनन्दका क्या कहना, अन्धेको चाहिये दो आँखें ही न। मैंने कहा—माई, तू भी बैठ जा देवताके साथ। बुढ़ियाका भी विष्णु भगवान्के साथ चित्र उतर गया। इस नवीं-दसवीं शतीकी भव्य मूर्तिको विष्णु कहना जरा साहसका काम है, क्योंकि पासमें पड़ा चक्र तथा पार्षदके ऊपरकी शंख हो सकता है, किसी दूसरी मूर्तिके हो। मूर्ति काले पत्थरकी है, अंग-प्रत्यंगको बड़े कौशलके साथ बनाया गया है। किसी भव्य मन्दिरके अधिष्ठाताके तौरपर इसे कहीं प्रतिष्ठित किया गया था। १४वीं, १६वीं और १८वीं शतीके (दो बारमें) चार बार मूर्तिभंजकोंके अभियान कूर्मांचलपर हुए। वह यदि पहली ही बार नृशंसताका शिकार हो गया होगा—इतनी सुन्दर कलाकी प्रतीकको देखकर जिस हृदयपर कोई प्रभाव न हो, उसे आततायीका हृदय कहना चाहिये। मूर्तिभंजकोंको पता नहीं था कि उनके कल्पित अल्लाह जैसे हजार इस मूर्तिकी कानी अँगुलीके षोडशांशको भी नहीं प्राप्त कर सकते। एकेश्वर कवियोंकी ऐसी ही असहिष्णुता उन्हें सहृदय विचारकोंकी

घृणाका पात्र बना देती है। नातिदूर नैनादेवी दीपचन्देश्वर मन्दिर है। इसे राजा दीपचन्द-(१७४८-७७) ने कला और सुरुचिके नितान्त अवसादके समय बनवाया था। मन्दिरकी दीवारोंके बाहरी निचले भागपर बहुत ही भद्दे तथा अश्लील 'चौरासी आसन' उत्कीर्ण हैं, जो धर्मकी तत्कालीन परम पतितावस्थाको प्रदर्शित करते हैं।

अपराह्नको 'सेठजी'के यहाँ चायपान था, जिसके बाद श्री हरिश्चन्द्रजीके यहाँ भी मित्र-मण्डली तथा साहित्य-मण्डली जुटी। यशपालजीने सुन्दर निबन्ध पढ़ा, मैंने भी कुछ कहा, प्रो० प्रकाशचन्द्र गुप्त और दूसरे भी बोले।

२७ मईको सबेरे पहिली ही बससे हम दोनों अलमोड़ासे चल पड़े। पहिले जाना था कटारमल। कुछ साल पहिले तक कटारमलके यात्रीको लोग अच्छी दृष्टिसे नहीं देखते थे, क्योंकि यह नायक लोगोंका गाँव है, जिनकी पुत्रियाँ देवदासी-प्रथाके अवशेषके रूपमें गणिका बना दी जाती थीं। अब वह धब्बा धुल सा गया है। खशपुजारीने गम्भीरतासे किन्तु गाँवमें होनेसे धीमे स्वरमें बतलाया—'दो-तीन ही लड़कियाँ ब्याहनेको हैं, नहीं तो सबका ब्याह हो गया है।' कटारमल एक और बातके लिए प्रसिद्ध है कि १८१५ में अलमोड़ा-विजयके समय यह अँग्रेजी सेनाका मुख्य अड्डा था। किन्तु हमारी यात्रा शुद्ध अहिंसक, यहाँके प्रसिद्ध सूर्यमन्दिरके लिए थी। यहाँके सूर्य रथवासी नहीं, बूटधारी थे, इसलिए इनके दर्शनका माहात्म्य भी अधिक था। डाकबँगलेतक हम उसी बससे लौट आये, फिर पहाड़ पार करनेपर कटारमल गाँव आया। खशों, ब्राह्मणों और शिल्पकारोंके ९० के करीब अधिकांश श्रीहीन घर हैं। मन्दिर गाँवसे बाहर है। आज, इसे सुन्दर स्थान नहीं कह सकते, क्योंकि पर्वतकी शोभा वनकी वृक्षावली है, जिसे मनुष्यके हाथोंने सदियों पहिले ध्वस्त कर डाला है। पत्थरका एक सुन्दर शिखरदार विशाल मन्दिर है, जिसका एक अंश गिर चुका है। पासमें और भी कितने ही मन्दिर थे, जिनमें अब कुछ ही लड़खड़ाते खड़े हैं। आगेका 'जगमोहन' पीछेसे जोड़ा-सा जान पड़ता है। द्वारपर प्रायः पुरुषप्रमाण एक धातुमूर्ति खड़ी है। क्यों मुहम्मद तुगलक (१४वीं शती), टुकड़िया हुसेनखाँ (१६वीं शती) या रुहेला हाफिज मुहम्मदखाँ (१८वीं शती) के गाजियोंने हजारों दूसरी मूर्तियोंकी भाँति इसे भी गलाकर धन और पुण्य अर्जित नहीं किया? यह देवताकी नहीं, बल्कि किसी राजा या 'जंगम राउल जोगी, जोत राउल जोगी' जैसे महन्तकी मूर्ति है, इसलिए पुण्यार्जनका शायद उतना मौका नहीं था। मूर्ति अच्छी है, यद्यपि दूसरी पाषाणमूर्तियोंकी भाँति उत्तर-कत्यूरी कालीन होनेसे मूर्तिकलाके ह्रासका प्रभाव इसपर भी साफ दीखता है। तीन बूटधारी पाषाण-मूर्तियोंके अतिरिक्त कितनी शिव, विष्णु तथा दूसरे देवताओंकी मूर्तियाँ भी हैं। सभी खण्डित, रुहेलोंके आक्रमण (१७४३–४४ ई०) से पहिलेका काष्ठकपाट पुरातत्त्वविभागकी ओरसे म्यूजियममें जानेके लिए तैयार है। इसका काष्ठकार्य सुन्दर है। मन्दिरके बाहर, दीवार-स्तम्भपर तीन पंक्तियोंका शिलालेख है, जिसका 'मल्लदेव' शब्द बतलाता है, कि चन्द्रवंशकी प्रधानतासे पहिले भी यहाँके आदित्यदेवकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। रुहेलोंके आक्रमणसे पहिले मूर्ति-भंजकोंके हर प्रहारके बाद मन्दिरका पुनरुद्धार होता रहा। यद्यपि इसका यह अर्थ नहीं कि उसके साथ मूर्तिकलाका भी उद्धार किया जाता रहा। अब तो कालकी प्रतीक्षा तथा पुरातत्त्वविभागके हस्तावलम्बके सहारे यह पाषाणका ढाँचा खड़ा है। कभी यहाँ कोड़ियों गाँव लगे रहे होंगे। सैकड़ों अर्चक और दास-दासी सेवा-पूजा करते होंगे, फूलोंकी महमह और धूपबत्तीकी सुगन्धमें नायिकाओंके संगीत और नृत्यका आनन्द लेने सारे हिमवान्के देवी-देवता सजधजकर जमा होते रहे होंगे और आज उसकी यह अवस्था! कटारमल सोमनाथ नहीं है कि इसे कोई पटेल-मुंशी

मिलेंगे। उसकी आवश्यकता भी नहीं, कार्लेबलीसे लड़ना बुद्धिमत्ता नहीं, पुरातन कृतिके नाते इसकी रक्षा होनी चाहिये।

दोपहरको हम कोसीतटपर उतर आये। दूकानदारोंने रोटी बना देना स्वीकार कर लिया। मैंने कहा—'यदि मक्खीका अचार हो तो थोड़ा उसे भी देना, हम आमिषाहारी जीव हैं।' उसने 'नहीं' किया, किन्तु मैं देख रहा था, अचारपर वैसे ही मक्खियाँ झुक रही थीं, जैसे पद्मिनियोंके मुखपर भँवरे। कुछ समय बाद हरिश्चन्द्रजी भी दो सीट रिजर्व कराये गरुड़की बसपर चले आये और हम आगेको चले। नंगे पहाड़ोंको चीड़ने बहुत जगहोंपर ढाँक रखा है, किन्तु देवदारोंके देशमें चीड़ोंका वही सौन्दर्य है, जो हंसोंके देशमें कौवोंका। सोमेश्वरमें बस थोड़ा ठहरी। हम मन्दिर देख आये। यहाँ भी कत्यूरी कालकी कुछ खण्डित मूर्तियाँ हैं। प्रशंसा बहुत सुन रखी थी, इसीलिए बड़ी उत्सुकताकी दृष्टिसे सड़कके उच्चतम स्थानमें अवस्थित कौसानीमें पहुँचे। सारा पर्वत-गात्र वृक्षाच्छादित है, किन्तु उनमें देवदारु नहीं, बाँज, ओक ही अधिक हैं। उस श्रीहीन घर को भी देखा जिसके वैभवके दिनोंमें पचास साल पहिले हिन्दीके अमर कलाकार सुमित्रानन्दन पन्तने प्रथम प्रभात-उदयको देखा था।

(२) **बैजनाथ**—कौसानीके डाँड़ेसे सामने दूर नगाधिराजके श्वेत हिममण्डित सैकड़ों शिखरोंकी श्रेणियाँ दिखाई पड़ती हैं या पर्वत निःश्रेणियोंके निचले भागमें विशाल कत्यूर-उपत्यका लेटी पड़ी है—सोई हुई है, यह कहना आजके लिए बिलकुल यथार्थ है, क्योंकि अलमोड़ाके विद्या-उद्योगमें यह सबसे पिछड़े हुए स्थानोंमें है। यहाँकी सदा-स्रोतोवहा नदियोंके जलका पूरा उपयोग सींचनेके लिए भी नहीं होता, फिर पनबिजलीके लिए उसके उपयोगकी क्या आशा? हाँ, प्राचीनपन्थी कत्यूर-उपत्यकाका आधुनिक युगसे सम्बन्ध जोड़नेके लिए मोटर-सड़क गोमतीतट (गरुड) तक पहुँच गयी है और यदि दिल्लीसे रुपया वर्षाकी आशा छोड़ कत्यूर-वासियोंके बाहुबल तथा कूर्माचलियोंके प्रज्ञाबलको भी धन समझा गया होता, तो हजारों रुपया लगा बागेश्वरकी ओर जहाँ-तहाँ बनी सड़कोंको बीचमें ही छोड़ना नहीं पड़ता। लेकिन कबतक ऊपर-ऊपर चलते हम पैरके नीचे छिपी निधिको नहीं पहचानेंगे? मोटर टेढ़े-मेढ़े रास्तेसे नीचे उतरती जा रही थी, जब बंज (बान) वृक्षोंकी बहुलताका स्थान चीड़ने लिया था, फिर खेत बढ़ने लगे। गोधूलिका परिचय हिमालयके रजत-शिखरोंपर प्रतिभासित स्वर्ण-किरणें ही नहीं, बल्की जंगलसे गाँवकी ओर लौटती पहाड़ी छोटी-छोटी गायें भी दे रही थीं। अभी सूर्य असली अस्ताचलके पीछे नहीं पहुँच पाये थे कि हम गरुड़ बाजारमें दाखिल हो गये।

गरुड़ किसी समय गोमतीके इस पार एक छोटा-सा गाम्ड़ा था, किन्तु नयी सभ्यता जंगलमें नये नगर बसाती, पुरानेको उजाड़ती है—पुराना कत्यूर तो खैर पहिले ही उजड़ चुका था। गरुड़ अब एक बड़ा बाजार है, यहाँ तरह-तरहकी सैकड़ों दूकानें हैं। तिब्बत और बदरीनाथतकके लिए माल लारियोंपर लदकर यहाँ आता है। समीपतम मोटर-अड्डा होनेसे क्यों न बदरीनाथके व्यापारकी धार इधर मुड़ न जाय। तिब्बती व्यापारके इजारेदार कितने ही मोटान्तिक लोगोंकी भी यहाँ दूकानें हैं और कितनी ही गढ़वालियोंकी भी। मोटरके अड्डेपर पहुँचते ही भारवाहक दौड़े। हमारे लिए गरुड़ अपरिचित स्थान मालूम नहीं हुआ, क्योंकि हमारे साथी तथा पथप्रदर्शक उदीयमान तरुण वकील श्री हरिश्चंद्र जोशी थे, जिनके मुवक्किल यहाँ मौजूद थे। बिस्तरोंका चार्ज दूसरोंने लिया। हमारे गिर्द कितने ही भद्रपुरुष एकत्र हो गये, जिनमें श्री जयवल्लभ ममगाईके सौहार्द और सहायता हमारे लिए सदा स्मरणीय रहेगी। वह साठ वर्षके बूढ़े हैं, लेकिन उन्होंने अपने सारे केश धूपमें नहीं, देशसेवामें सफेद किये हैं, धन कमानेका रास्ता छोड़ गरीबीको अपनाया, अब भी वह उसीपर आरूढ़

और बहती गंगामें डुबकी लगानेवाले अपने साथियोंसे कहीं अधिक शिक्षित, संस्कृत तथा देश देखे होने-पर भी यह सब कुछ।

हमारे रहनेका प्रबन्ध डाकबँगले या किसी और जगह न करके बैजनाथके मन्दिर-समूहके बीच पुरातत्त्व-विभाग द्वारा स्थापित मूर्ति-संग्रह कुटीके ऊपर किया गया था, यह अच्छा ही था। यहाँ हमें अपने आराध्य देवताओंमें दो-चार नहीं, चौबीसों घण्टे रहना था। गरुड़से यह स्थान एक मीलके करीब होगा। बाजारसे निकलनेके बाद भी सड़कपर जहाँ-तहाँ दूकानें हैं। खेतों तथा नालेको पार हो अन्तमें गोमतीका लोहेका झूला-पुल आता है। यह प्रथम विश्व-युद्धके समय बनकर तैयार हुआ था, और इसके बनानेमें बैजनाथके न जाने कितने उजाड़ मन्दिरोंको अपने चिह्नमात्रको भी लुप्त करनेके लिए तैयार होना पड़ा। बैजनाथके कितने ही देवताओंको वरुणाके पुल (बनारस)में सारनाथके देवताओंकी भाँति नींव बनना पड़ा या नहीं, नहीं कहा जा सकता। उन्नीसवीं सदीके उत्तरार्धमें अँग्रेज हिमालयके इस अँचलकी आबोहवा तथा घनागमके सहज स्रोतोंपर मुग्ध हो इसे अँग्रेजोंका उपनिवेश बनाना चाहते थे, किन्तु हिमालय आस्ट्रेलिया या दक्षिण-अफ्रिकाकी भाँति न निर्जन था, न आदिम अवस्था में ही। इसलिए उनका स्वप्न इतना ही भर वास्तविकताका रूप ले सका कि आज १९५० के उत्तरार्धमें मसूरी, नैनीताल जैसे स्थानोंमें हमारे सारे पहाड़, सारी सड़कें, सारे मुहल्ले ही नहीं, सारे घर अँग्रेजी नामवाले हैं। हिन्दू-आँग्लियन शासकोंका जबतक बोलबाला रहेगा, तबतक 'राष्ट्रभाषा' अंग्रेजीकी भाँति भारतभूमिको अपवित्र करनेवाले यह नाम-कलंक भी बने रहेंगे। अस्तु, किसी समय कौसानीके आसपास चायके बगीचे लहलहा रहे थे, जगह जगह अँग्रेजोंके बँगले थे। उस समय बैजनाथके खण्डहरोंसे अरक्षित पड़ी न जाने कितनी मूर्तियाँ उठ गयी होंगी तथा आज पृथिवीके किस संग्रहालय या निजी घरोंको अलंकृत करती होंगी। आज यहाँ जो कुछ बच रही हैं वह इस लूट-खसूटकी अवशेष हैं। पुरातत्त्व विभागने अच्छा किया जो यहाँ एक छोटा-सा संग्रहालय बना उसमें २८ मूर्तियाँ एकत्र कर दीं, जिनमें बूटधारी सूर्य-मूर्तियाँ कलाकी दृष्टिसे ही नहीं, कत्यूरियोंकी शक-वंशिताके लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं।

उस शामको भी बैजनाथ मन्दिर-समूहका सरसरी दर्शन किये बिना हम नहीं रह सके। सदानीरा गोमती पास ही बहती है, किन्तु कमसे कम यहाँ उसने अपनी हिंसक वृत्तिको छोड़ रखा है, नहीं तो अ-दुर्गबद्ध ये मन्दिर-समूह सहस्राब्दीसे यहाँ खड़े न रहते। परलेपार नदी डाक-बँगलेवाली पहाड़ीकी जड़से टकराती है, फिर मुड़ावपर गहरा-छोटा सरोवर बना देती है। इस तीर्थमें डुबकी लगाकर स्नान किया जा सकता है। इसकी मछलियाँ राजरक्षित और धर्मरक्षित भी हैं। इसलिए मत्स्य-प्रेमियोंको—जिनकी संख्या यहाँ कम नहीं है—ऊपर या नीचे जाकर घात लगानी पड़ती है। झूलेके इस पार भी पाँच-सात दूकानें हैं। जान पड़ता है, सारे हिमालयने तराजूकी डण्डी थाम ली है। चाहे दार्जिलिंग जाइये या नेपाल, अलमोड़ा जाइये या गढ़वाल, सर्वत्र मील-मील, आध-आध मीलपर छोटी-छोटी दूकानें रखे दिनभर लोगोंको अगोरते देखेंगे। मुझे तो यह समझना भी मुश्किल हो जाता है कि जहाँ घर-घर दूकानें खुल गयी हैं, वहाँ खरीदनेवाले कहाँसे आते हैं। वैसे हमारे जैसे यात्रियोंकी दृष्टिसे यह अच्छा है, इन दूकानोंमें तुरन्त चाय मिल जाती है, यद्यपि चीनीकी चोरबाजारीके कारण अब बहुधा गुड़पर सन्तोष करना पड़ता है। कितनी ही दूकानोंमें थके-माँदे मुसाफिरोंको आश्रय मिल जाता है और अगर अक्ल सहूर हो तो पका-पकाया खाना भी मिलना कठिन नहीं है।

चाय हमारे लिए दूकानसे आ गयी। राम-रसोइयाँ धीरे-धीरे बननेवाली थी। उसकी हमें चिन्ता नहीं थी। हाँ, यह देखकर खेद हो रहा था कि खाद्य सामग्रीकी कमी तथा मँहगाईके कारण

अब हमारी परम्परागत आतिथ्यकी भावना बड़ी तेजीसे लुप्त होती जा रही है। यहाँ पहाड़की देहातमें जब कद्दूका साग आठ आना सेर बिक रहा हो, तो किस बलपर किसीको आतिथ्य करनेकी हिम्मत होगी! गृहपतिसे भी बढ़कर धर्मसंकट तो आज अतिथिके लिए है, वह अपना भार किसीके ऊपर लादा जाता कैसे देख सकता है? सौभाग्यसे हमें किसी आदमीका नहीं बल्कि सहेलों द्वारा अन्तिम बार ध्वस्त तथा दुर्दशाग्रस्त देवताओंका अतिथि बनना पड़ा, जिनके पास 'तृणानि, भूमि, उदक' तो पर्याप्त थे, किन्तु उनकी 'वाक् चतुर्थी'का काम खुद हमें ही करना था।

वैजनाथ (वैद्यनाथ) का पुराना नाम कार्त्तिकपुर (कार्त्तिकेयपुर) था, जिसका अपभ्रंश कत्यूर आज इस सारी गोमती-उपत्यकाका नाम है। कत्यूरी राजाओंकी पुरानी राजधानी जोशीमठ (जोशिका) थी, जहाँके साथ सम्बन्ध मोटरके कारण अब फिर व्यापार द्वारा हो गया है और दोनोंके बीचके ९० मीलके अन्तरको आदमी ६ दिनमें आसानीसे पार कर सकता है। शक्तिके ह्रास तथा राज्यके छिन्न-भिन्न होनेपर यह बैजनाथ शिवका धाम (वैजनाथ) नये कार्त्तिकपुरके नामसे एक शाखाकी राजधानी बना। यहाँ नवीं-दसवीं शताब्दीकी (प्रतिहारयुगीन) मूर्तियाँ पर्याप्त हैं, जिसकी पुष्टि तत्कालीन शैव-चिह्नों (मुख-लिंग तथा ऊर्ध्व-लिंग) वाले लकुलीश सम्प्रदायकी प्रधानतासे भी होती है। जान पड़ता है, कत्यूरी शासनके मध्याह्नकालमें भी वैद्यनाथ एक महत्त्वपूर्ण स्थान था। शायद उस कालमें सारी काली (सरयू) तथा उसकी शाखाओंकी उपत्यकाओंका उपरिक (राज्यपाल) यहीं रहता था। बैजनाथके एक दर्जन मन्दिरोंमें मुख्य मन्दिरकी निचली दीवारेंभर रह गयी हैं, जिनपर पुरातत्त्व-विभागने टिनकी छत डलवा दी है। मूर्तिभंजकों द्वारा अनेक बार मर्दित सिबजी महाराज अब भी भक्तोंके पूजनीय हैं, किन्तु लकुलीशोंके पुराने मुख-लिङ्ग या हरगौरीकी जगह अब एक साधारण-सा शिवलिंग धारा-संचित रखा है। बैजनाथकी सर्वोत्तम मूर्ति—भगवती—यहाँ द्वारपालकी भाँति द्वारपर खड़ी कर दी गयी हैं। प्रायः पुरुष-प्रमाण यह मूर्ति तत्कालीन मूर्तिकलाका एक उत्कृष्ट नमूना है। मन्दिरोंमें वामणी देवल अधिक सुरक्षित अवस्थामें है। मूल मन्दिरोंके बाहर बहुत-सी खण्डित मूर्तियाँ हैं, जिनमें एक अर्धासन मारे कुबेर जैसी मूर्ति है, जिसे ही शायद लोगोंने भ्रमसे बुद्धकी मूर्ति समझ ली। संग्रहालयमें हरगौरी और देवीकी कई मूर्तियाँ कत्यूरियोंके 'परमभट्टारक' होनेके गर्वकी पुष्टि करती हैं। लकुलीश पाशुपतोंके अवशेषके बाद नाथ-योगियोंकी महन्ताई रही, जिसके परिचय पासके मन्दिरपर उत्कीर्ण 'भयंकरनाथ जोगी' वाक्य देता है।

तेलीहाट—कत्यूरी राजधानीसे बाहर प्रायः मीलभर पूर्व हटकर वैद्यनाथ धाम बना था। राजधानीको आजकल तेलीहाट कहा जाता है—हाट यहाँ बाजार नहीं, प्राचीन नगरी या राजधानी-का वाचक है। २८ मईके सवेरे ही हम तीनों तेलीहाट गये। कत्यूर राजधानीकी जगह अब डेढ़ दर्जन श्रीहीन घर हैं, जिनकी दीवारें पुराने प्रासादोंके पत्थरोंसे बनी हैं। एक छोटा-सा चबूतरा, जो शायद सिंहासनस्थान हो, राजा-रानीका चौपड़ खेलनेका स्थान बतलाया जाता है। राजा-रानी चौपड़ न भी खेलें, जनताके भाग्यका चौपड़ तो यहाँ अवश्य खेला जाता था। पासमें एक और पत्थरका चबूतरा है। यहीं था कत्यूरी राजाओंका अन्तःपुर। अन्तिम कत्यूरी वीरदेव शायद यहीं रहता मीलों दूर 'हर्य-छिना'का ताजा पानी आदमियोंकी पाँती खड़ा करके हाथोंहाथ मँगवाता था। यहाँके राजाओंकी अत्याचारकी गाथाएँ आज भी देवता सिरपर चढ़ते समय दुहराते हैं—

"हँकारो, तुम्हारा बाबा जिन ऊँचा गढ़ नीचा बनाया,
हँकारो तुम्हारा बाबा सुलटी नाली ले ल्हिंछा,
उल्टी नालीले दिंछ, तरुणी तिरिया रहोण नि दिना,

बरुणी बाकरी र्‌होण नि दिना,
महाराजनके राजा पेड़ोंपर फल फूल नि र्‌होण दिना।"

श्री जयवल्लभ ममगाई हमारे साथ थे, जिन्होंने यह गाथा सुनायी। क्या ही अच्छा होता यदि ममगाईजी पुरानी गाथाओं, कहानियों और गीतोंका एक अच्छा संग्रह कर डालते। गाँवके भीतर नारायण और राकसके शून्य मन्दिर अब भी खड़े हैं, जिनकी रक्षाका श्रेय पुरातत्त्व-विभागको भी देना चाहिये। नारायण-मन्दिरकी मूल मूर्ति, कहते हैं, गणनाथमें ले जाकर रखी गयी है। मन्दिरका सुवर्णकलश शायद रुहेले (१७४२–४३) ले गये, जिसे कि १३०२ ई० (शाके १२२४) में राजा हमीरदेव, लिंगराउदेव तथा (रानी) धारलदेईने चढ़ाया था। १४९९ (शाके १४११) में अब भी 'रावल पाल्ह' यहाँकी महन्ती कर रहे थे। क्या पंद्रहवीं शतीके अन्ततक यहाँके देवालय अक्षुण्ण चले आये? गाँवके दूसरे किनारेपर 'राकस' देवल है। राकसका देवल मूल नामका उल्टा अपभ्रंश होगा। गाँवके बाहर नदीतटतक प्रायः चौरस-सी विस्तृत भूमिको जहाँ कभी कत्यूर नगरकी अट्टालिकाएँ खड़ी थीं—खेतोंमें परिणत करके लोगोंने हमारी आहार-समस्याको हल करनेमें कुछ सहायता तो की है। यहाँ खेतोंके बीच एक विशाल मन्दिरकी अवशिष्ट दीवारोंपर छत डलवाकर सत्यनारायणजी विराजमान हैं—सत्य कहाँ रहा, जब मूर्तिभंजकोंने उन्हें इस अवस्थामें पहुँचा दिया। भला हो रामानन्दके किसी शिष्य घुमक्कड़का, जिसने सत्यनारायणके भोग-रागको फिरसे जारी किया और उत्तराखण्डकी किसी निन्द्य या अनिन्द्य सुन्दरीके भ्रूबाणोंसे घायल हो वैराग्यका चोला उतार फेंक पूजा करनेके लिए यहाँ अपनी पौध लगा दी। यहाँकी मूर्ति अखण्डित किन्तु नातिप्राचीन है। यहाँ थोड़ी ही दूरपर कुछ पाषाण-खण्डोंके बीच मृत्युंजय (लिंग) अपने नामको झूठा करते बैठे हैं, अपने मन्दिरके पत्थरोंको झूला-पुलमें लगवा दिया, यह उपकार उन्होंने अवश्य किया है।

कत्यूरके मन्दिरों और मन्दिरविशेषोंका वर्णन इतनेसे समाप्त नहीं हो सकता, पाँच-छ मीलके भीतर गोमतीके दोनों ओरकी उपत्यकामें वे बिखरे हुए हैं, जिनमें कोटकी देवी थोड़ा पहाड़पर ऊपरकी ओर है। हम लौटकर बैजनाथ आये, महन्त श्यामगिरिने अपने पंचम पूर्वज शंकरगिरि—एक दूसरे संसार-त्यागीके पतनकी कथा सुनायी, जिसने गोरखा शासन-कालमें १८१५ ई० से कुछ पहिले आकर अपनी सन्तानोंसे आज एक पूरा गाँव बसा लिया। हमारे देशमें ऐसे शंकरगिरियोंका कहीं भी अभाव नहीं है, फिर मुंशीजी आहारकी समस्या कैसे हल कर सकेंगे?

(३) **बागेश्वर**—हरिश्चन्द्रजीको अगले दिन (सोमवार २९ मई) अपनी कचहरी देखनी थी, इसलिए दोपहरको वह तो अलमोड़ाके लिए रवाना हो गये। बागेश्वर (व्याघ्रेश्वर)के लिए उन्होंने अपने मुवक्किलसे दो घोड़े किराया करवा दिये थे। जयवल्लभजी भी मध्याह्न-क्रियाके लिए चले गये। अब भी 'सन्त समागम हरिकथा' हो रही थी। लेकिन जब दोसे तीन बज गये और घोड़े नहीं आये, तो हमें चिन्ता हो गयी। हमें आज ही १२ मील चलकर बागेश्वर पहुँचना था। चार बजनेपर धैर्यका बाँध टूटने लगा और साढ़े चार बजे हमने 'भगवान्'की दी हुई सवारीका सहारा लिया। साढ़े तीन हजार फुटकी ऊँचाई गरमीभर कम रहती है, जाड़ा बढ़ाना उसके वशका नहीं, इसलिए अपने पास प्रायः शरीरभरका मार रख छत्ता और डण्डा ले निकल पड़े। सोचा, उतराईका रास्ता है; तीन मीलकी चालसे साढ़े सात बजे-अँधेरा होते-होते—बागेश्वर पहुँच जायँगे। दूकानें तो मीलभरपर क्या, कहीं-कहीं तो कुछ फर्लांगोंपर भी हैं, इसलिए टिकानकी कठिनाई न होगी। हम झटकते पैर बढ़ाते चल रहे थे। सन्देह था कि माचवेजीकी यही गति बारहवें मीलतक कायम रहेगी। एक या दो दूकानें पार की थीं कि जयवल्लभजी दौड़ते-हाँफते पहुँचे। वृद्ध शरीरको इतना कष्ट देनेका अफसोस हुआ। हम

तो कह आये थे, किन्तु वह माननेवाले कहाँ थे। हमने उन्हें लौटानेका बहुतेरा प्रयत्न किया, किन्तु वह इसके लिए तैयार नहीं थे। घोड़ेवालोंने बेपरवाहीकर कत्यूरकी नाक कटवानी चाही, तो वह भी तो कुछ पीढ़ियोंसे गढ़वाल छोड़ कत्यूरके बन गये हैं, उन्हें तो उस नाककी रक्षा करनी चाहिये। हार मानकर साथ लेनेके लिए तैयार होना पड़ा। झोली भी उन्होंने ले ली। ऐसा मार्गदर्शक कहाँ मिलता, हमने भी सन्तोष कर लिया।

ममगाईजी चलते समय महन्तजीको कह आये थे, कि घोड़ोंको आते ही दौड़ा देना। हम कुछ फर्लांग ही गये होंगे कि घोड़ोंने हमें पकड़ लिया। ममगाईजी अब भी चलनेको तैयार थे, किन्तु हम दोनों घोड़ेपर और वह पैदल व्यर्थ ही २४ मील धरती नापें, यह सोच हमने उन्हें लौटा दिया। घोड़ोंमें एक बड़ा था, दूसरा छोटा। दोनों हृष्टपुष्ट थे। माचवेजी चाहे कुछ इंच मुझसे छोटे हों किन्तु बोझमें हर्गिज नहीं, इसलिए घोड़ोंको हम कोई सुभीता प्रदान नहीं कर सकते थे। सवारीके अनुभवका बिलकुल अभाव माचवेजीने नहीं बतलाया था। यह मराठा शानके खिलाफ होता, भला जिसके पूर्वज घोड़ोंकी पीठपर चलते ही नहीं, सोते भी, सारे भारतसे चौथ वसूल करते फिरे, वह किस मुँहसे कहता कि मैं केवल गुरुत्वाकर्षणके भरोसे सवारी कर सकता हूँ, तो भी मैंने दूधके जलेकी भाँति पूछकर दोनोंमेंसे अधिक सीधे-साधे घोड़ेको उनके हवाले कर दिया। थोड़ा ही आगे गये कि 'उमड़ि घुमड़ि काली बदरिया' तजर्बेकार यात्रीकी भाँति हम पहिली ही दूकानपर रुक गये। बेकार मुफ्तमें ठहरना अनुचित समझ हमने चाय बनानेके लिए कहा। चीनी न होनेपर 'शर्करा वा गुडस्तथा'का मन्त्र पढ़ा। इसी समय उनचासों पवन अपने साथ जोरकी वर्षा लेकर पहुँचे। घोड़े बाहर भीगनेके लिए छोड़ दिये गये थे, हमें भी बूँदोंसे बचनेके लिए उस छोटी-सी दूकानमें कई स्थान बदलना पड़ा। जैशर गाँव कुछ हट कर था। गाँववालोंकी जीविकाका साधन सड़कपर जहाँ-तहाँ बिखरी चार-पाँच दूकानें नहीं, खेती थी, जिसके लिए यहाँ वर्षाकी बड़ी बाट जोही जा रही थी। उन रस नहीं, अमृतकी बूँदोंको मूसलाधार बरसते देख जैशरियोंको क्यों न प्रसन्नता होती? हम असमंजसमें थे, बागेश्वर पहुँचनेमें कहीं देवता लोग विघ्न करना तो नहीं चाहते, यद्यपि इसकी आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि हम उनके सिंहासनको दखल करने तो नहीं जा रहे थे।

आध-पौन घंटेमें वर्षा बन्द हो गयी। हम फिर रवाना हुए। जैशर (जयशालीमें) शाली (चावल) का नाम देख हमें इसके बढ़िया चावलकी भूमि होनेका सन्देह हो गया था, इसलिए रह जानेपर 'शाल्यन्नं सघृतं', सम्भवतः 'पयोयुतं' भी मिलता, यही मनमें सोचते हम आगेको बढ़े। रास्तेमें कहीं-कहीं सड़कको मोटर लायक चौड़ी करनेके लिए पत्थर काटे गये थे, कहीं-कहीं पुल भी बाँधे गये थे, किन्तु अब तो बागेश्वरको मोटरका जाना अनिश्चित कालके लिए रुक गया है। बीच-बीचमें छोड़-कर जो सड़क बढ़ानेपर लाख-हजार रुपये लगाये गये, वह बेकार न होते, यदि मील-मील करके आगे बढ़े होते, ऐसी स्थितिमें गरुड़से आगे उतनी दूरतक मोटर-सड़क बन गयी होती।

माचवेजीने जब दूसरा टट्टू माँगा, तो मुझे ख्याल आया कि जरूर उनकी धमनियोंमें पूर्वजोंका खून जोश मार रहा है, किन्तु मैंने सीधे घोड़ेसे बलिष्ठ घोड़ेको बदलना अभी पसन्द नहीं किया। मेरा घोड़ा आगे बढ़ गया। घोड़े भी तो सवारोंको पहिचानते हैं। माचवेजी पीछे रह गये, सुना कि एक जगह घोड़ेसे गिर गये। घोड़ेका दोष नहीं बल्कि इसका कारण गुरुत्वाकर्षणपर अधिक अवलम्ब रखना था। खैर चोट ज्यादा नहीं लगी। अब ज्यादा आगे बढ़ना अच्छा नहीं था। छड़ी मारनेपर घोड़ा जरा भी तेज कदम बढ़ाता तो माचवेजीका बैलंस बिगड़ने लगता। आज ही रात-बिरात बागेश्वर पहुँचनेकी आशा नहीं थी, तो भी सबेरे सूर्योदय होते-होते वहाँ पहुँच जायें, यह सोच हम

९ बजे राततक चलते गये और कमेडी गाँवकी एक दूकानपर जाकर ठहरे। दूकानदार जोशी शिक्षित थे, अखबार भी मँगाते थे, कुछ राजनीतिकी भी बातें करते थे, यदि उन्होंने राहुलजीका नाम नहीं सुना था, तो इसके लिए माचवेजीको आश्चर्य करनेकी आवश्यकता नहीं थी। भोजन-सामग्री लेकर हमारे घोड़ेवालोंने राम-रसोइयाँ बनायी। सोनेके लिए जोशीजीने अपना दर्जीखाना खोल दिया। सोनेके बाद मालूम हुआ कि सर्वव्यापी मत्कुण (खटमल) देवता यहाँ भी पहुँचे हुए हैं।

रास्ता नीचेकी ओर जा रहा था, दूसरे दिन पाँच बजे ही हम चल पड़े और डेढ़ घण्टेमें साढ़े चार मीलकी मंजिल मार बागेश्वर पहुँच गये।

गोमती और सरयूके संगमपर हरे-भरे पहाड़ोंसे घिरे बड़े रमणीय स्थानमें बागेश्वर बसा हुआ है। यह गाँव नहीं, अच्छा खासा बाजार है। गोमती और सरयू, दोनोंपर लोहेके सुदृढ़ झूला-पुल बने हुए हैं। सरयू हिमानीसे निकलकर आती है, इसलिए उसे सम्मान और आकारमें बड़ा होना ही चाहिये। सरयूकी दूसरी तरफ भी दूकानें काफी हैं। साधु-साधुनियोंके मठ और मन्दिर तो दोनों तटोंपर हैं। मकर-संक्रान्तिके मेलेके समय तो इस त्रिवेणीपर एक खासा नगर बस जाता है। मेलेकी कितनी ही इमारतें खाली पड़ी थीं। अभी दूकानें नहीं खुली थीं, किन्तु चायवाले हमारी सेवाके लिए तैयार थे। हाँ, बेचारे चोरबाजारीके मारे हमें गुड़की ही चाय पिला सकते थे। हमें मोतीगिरिकी दूकान ढूँढ़नी थी, जिसमें घोड़ोंको रखकर खाने-पीनेका प्रबन्ध किया जा सके। गिरिजी बाहर गये थे, किन्तु आ जानेवाले थे। हम चाय पीकर पहले बागेश्वर मन्दिरकी ओर गये।

कत्यूरियोंके समय क्या, उससे भी पहिले यहाँ मन्दिर रहा होगा। वर्तमान मन्दिर कत्यूरियोंका वह मन्दिर नहीं है, जिसके लिए कत्यूरी राजा भूदेवने नवीं दसवीं सदीमें अनेक गाँव दिये थे। बागेश्वर आनेका हमारा एक प्रयोजन था, इस शिलालेखको पढ़ना और फोटो लेना, किन्तु मालूम हुआ, वह तो कई सालों पूर्व गुम हो गया। मन्दिरको सरसरी तौरसे देखकर हम लौट आये, क्योंकि भोजनादिके बारेमें निर्देश देना था। मन्दिर गिरिजीकी दूकानसे दूर नहीं था। गिरिजी आ गये थे। सुमधुर शाल्यन्नके साथ सरयूका पुनीत मत्स्य भी सुलभ था; केले, मिठाई तथा फल भी बागेश्वरमें प्राप्य थे। चाय-जलपानसे निश्चिन्त हो हमने दरस-परसकी ओर ध्यान लगाया। कितनी ही खण्डित मूर्तियाँ मन्दिरके आँगन तथा फाटक (सरयूद्वार) से बाहर जहाँ-तहाँ पड़ी हैं। आँगनमें पड़ा मुखलिंग अपने असाधारण शिल्पकौशलसे बतला रहा था, कि मैं ही प्राचीन मन्दिरका अधिष्ठाता था। एक लिंगके ऊपर रेखांकित ऊर्ध्व-शिश्न सूचित कर रहा था कि उस समय लकुलीश पाशुपतोंका यहाँ जोर था। पुरानी खण्डित मूर्तियोंमें हरगौरीकी कितनी ही प्रतिमाएँ थीं। यह देखकर खेद हुआ कि बैजनाथकी भाँति यहाँकी मूर्तियोंको सुरक्षित रखनेके लिए पुरातत्त्व-विभागने कोई कुटी नहीं बनायी। लेकिन, लोगोंको सभी बातोंके लिए सरकारी विभागपर ही आशा नहीं बाँधनी चाहिये। इतने बड़े देशकी इतनी प्राचीन संस्कृति तथा इतिहासकी सारी सामग्रीके उत्खनन और संरक्षण सरकारके बसकी बात नहीं है। सरयूद्वारके बाहर दो हाथ ऊँची पद्मासनस्थ दो पाषाण मूर्तियोंने हमारा ध्यान आकर्षित किया। पद्मासनके साथ यहाँ भूमि-स्पर्श-मुद्राकी भी रूपा-रेखा दिखलाई पड़ती थी। हमने अपनी सारी यात्रामें इन्हें छोड़ और कोई बुद्ध-मूर्ति नहीं देखी, यद्यपि मूर्तियुगमें सातवींसे नवीं सदी-तक यहाँ तिब्बतके बौद्ध सम्राटोंका प्रभुत्व रहा। कमसे कम इस कारण भी बागेश्वर जैसे भोटद्वारमें बौद्ध मन्दिर होना अनिवार्य था। इन मूर्तियोंके सामनेके भागकी एक मोटी तह जान पड़ता है, आग लगनेसे फटकर निकल गयी, इसलिए पहिचाननेमें दिक्कत हो रही थी।

हम सरयूपार भी दूरतक गये, वहाँ भी मन्दिर-मठ थे। बाजारमें जाते समय देखा, डाँडीपर

दूल्हेको उठाये बड़े बाजे-गाजेसे बरात निकल रही है। यह नेपाली शिल्पकारोंकी बरात थी। कुछ ही वर्षों पूर्व हिमालयके सबसे छोटे इस वर्गको सरेबाजार राजपथपर इस तरह जाते देख क्या बड़ी जातिवालोंका खून गरम हुए बिना नहीं रहता होगा, किन्तु अब कोई उधर ध्यान भी नहीं देता। बाजारमें अब भी पुराने मकान हैं, जिनमें काष्ठ-शिल्पकी दक्षता देखी जा सकती है। जीवनके इन महार्घ दिनोंमें किसको हिम्मत है कि कुशल बढ़इयोंको एक फूल काढ़नेके लिए पाँच-पाँच दिन बैठाये। ऐसी ही उपेक्षाके कारण मूर्तिकला पहिले समाप्त हुई, अब काष्ठ-शिल्पकी भी वही दशा हो रही है।

मध्याह्नतक हमारा परिदर्शन भी समाप्त हो गया था और उधर सुमधुर भोजन प्रतीक्षा कर रहा था। बागेश्वरसे जा गरुड़ (बैजनाथ)में मोटर पकड़नेकी जगह हम उसे सोमेश्वरमें जाकर पकड़ सकते थे और दूरी भी प्रायः समान थी—चढ़ाई अधिक जरूर थी, किन्तु हमने आने-जानेके घोड़े कर लिये थे। चलते समय अस्पतालमें माचवेजीकी दवा लेनी थी। यह प्रसन्नताकी बात है कि अब हमारे डाक्टर भी साहित्यप्रेमी होते जा रहे हैं। उनके पास जो साप्ताहिक पत्र आया था, उसमें माचवेजीका एक लेख भी था। पास ही खादी-केन्द्रसे माचवेजीने एक ऊनी चादर ली। हमें पीछे मालूम हुआ कि वहाँ एक पहुँचे हुए महात्मा जब-तब रहा करते हैं। हमें उनके दर्शनका सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। दो मीलपर फिर उनचासों पवनोंके आक्रमणसे डरकर दूकानमें शरण लेनी पड़ी। उसी शाम सूर्य रहते बैजनाथ पहुँच गये।

(४) द्वारहाट—३० मईको साढ़े सात बजे गरुड़से पहिली ही मोटर द्वारा हम चले। इधर मोटरें सरकारी रोडवेज द्वारा नियन्त्रित हैं, तो भी यात्रियोंकी सुख-सुविधाके लिए पूरा ध्यान नहीं दिया जाता। स्थान सुरक्षित करनेकी अधिकांश स्थानोंमें परिपाटी नहीं है—गरुड़में भी यही बात थी, बस भाग्य-भरोसे अड्डेपर चले जाइये। पहलेसे सीट रिजर्व हो जानेपर आदमीको एक इतमीनान रहता है। अस्तु, भाग्यने सहायता की और उस मोटरपर बैठ गये, पहिले रामेश्वरसे ही हमारा इरादा द्वाराहाट जानेका था, वहाँके सरपंच बल्कि घोड़े भी ठीक कर चुके थे, किन्तु पीछे हमने रानीखेतसे जानेका निश्चय कर लिया। अगले तजर्बेने बतलाया कि हमारा निश्चय अच्छा नहीं था। परिचित सड़कसे हम चार घण्टेमें रानीखेत पहुँच गये।

'अशोक'जी (श्री यमुनादत्त वैष्णव) से लौटते समय ठहरनेकी बात हो चुकी थी। पहले हमने मोटर-अड्डेके पास 'डीसेंट होटल'में 'डीसेंट' भोजन किया, भोजन वस्तुतः यथानाम था और सस्ता भी। होटल-स्वामीने हमारे सामानको रख लेनेकी स्वीकृति दे दी, बाहर गये ही थे कि 'अशोक' जी मिल गये। सामान उनके घर पहुँचाया। घोड़े यहाँसे मिल जाते, किन्तु पाँच मील-की उतराईमें उनका उपयोग नहीं होता और हमें बतलाया गया था कि गगासके पुलपर घोड़े तैयार मिलते हैं, इसलिए घटा देख हमने घोड़ा छोड़ दिया और बारह बजेकी दुपहरीमें चल पड़े।

रानीखेतसे द्वाराहाटका रास्ता बदरीनाथके रास्तेका एक अंश है। लौटते समय सैकड़ों यात्री कोटद्वारा या रामनगर न जा रानीखेत आकर मोटर पकड़ काठगोदाम जाते हैं, इसलिए हमें बिहार, उत्तरप्रदेश तथा बंगालके कितने ही यात्री रास्तेमें मिले। यात्रियोंके कारण इस सड़कपर नजदीक-नजदीक दूकानें तथा टिकानके स्थान हैं। एक जगह लम्बे केशवाला एक लड़का खूबानी बेंच रहा था। खूबानीका नाम अभी माचवेजीको सह्य नहीं था। हमने ऐसे और भी केशधारी लड़के देखे थे और समझा था कि सिख लड़के हैं, किन्तु इधरके पहाड़ोंमें इतने सिख कहाँ? हमने लड़केसे पूछ लिया। मालूम हुआ कि इधरके ब्राह्मण-पुत्र जबतक जनेऊ न हो जाय, सकेश रहते हैं—यह पाबन्दी अब कम

होती जा रही है। वृक्षच्छाया सब जगह नहीं थी, इसलिए कहीं-कहीं धूप कड़ी मालूम होती थी। हमारे पास बातकी कमी नहीं थी। दो घण्टेमें गगासके पुलकी दूकान भी आ गयी। इधर दूकानें उतनी दरिद्र नहीं मालूम होतीं। वहाँ मिठाई भी थी, सिगरेट-पान तथा चाय भी, एक अच्छा घोड़ा भी तैयार खड़ा था। हम चाय पीने बैठ गये, घोड़ेवाला चार या पाँच रुपया माँग रहा था। आगे चढ़ाईका रास्ता ६-७ मीलका था, इसलिए घोड़ा जरूरी था, किन्तु एक घोड़ा कैसे बाँटते ? यदि भविष्यज्ञ होते तो वह एक घोड़ा भी ले लेते। अन्तमें बिना घोड़ेके ही वहाँसे चल पड़े। एक लद्दू घोड़ेवालेका संग

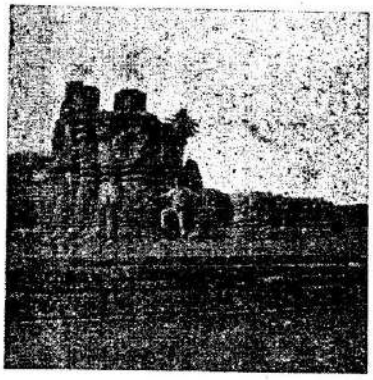

द्वाराहाट—गूजर मन्दिर

द्वाराहाट—नेपाली कचहरी

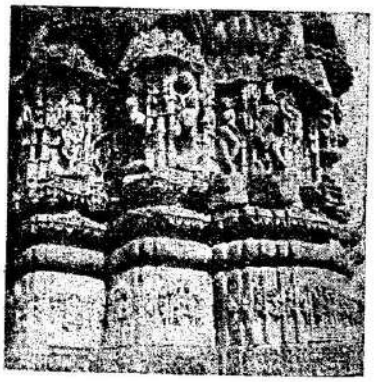

द्वाराहाट—गूजर मन्दिर

हो गया। उसने दिलासा दिलाया कि अगले गाँवमें घोड़ा मिल जायगा। घोड़ा तो नहीं मिला, किन्तु उसकी आशापर माचवेजीको डोरी लग गयी। दड़माड़ भी खाली रहा, कहीं घोड़ेका पता नहीं। कपड़ासे पहिले ही एक छोटी-सी दूकान मिली, जिसमें मिट्टीकी कुछ चिलमें तथा एकाध दूसरी चीजें पड़ी थीं। बूदें पड़ने लगीं, इसलिए हम वहाँ बैठ गये, चायकी आशा नहीं थी। दूकानमालिक दोनों पैरोंसे लुंज एक राष्ट्रीय कर्मी था, जिसने अनेक बार जेल-यात्रा की थी। उसके कपड़े, घर और सारे वातावरणसे दरिद्रता टपक रही थी, किन्तु कृश चेहरा कुछ दूसरी ही बात बतला रहा था, बात करनेपर

मालूम हुआ, वह काफी संस्कृत तथा कुछ पढ़ा-लिखा है। चार-चार बच्चे, पत्नी तथा अपने इन छ व्यक्तियोंका भरण-पोषण वह कैसे इन मिट्टीकी चिल्मोंसे करता होगा—हमारे समझनेके लिए यह एक बड़ा प्रश्न था। मालूम हुआ उसके पास खेत भी नहीं है और सबसे छोटा बच्चा अभी दूध पी रहा है, अर्थात् अभी भविष्यका मार्ग रुद्ध नहीं हुआ है। हम उसपर इन अवांछनीय सन्तानोंके उत्पादनके लिए गुस्सा नहीं हो सकते थे। आगतोंको अवांछनीय नहीं, स्वागमनीय कहना चाहिये। उनका क्या अपराध! कौन जाने इनमेंसे भी ध्रुव-प्रह्लाद, नहीं, रावण-मेघनाथ निकल सकते हैं, यदि अवसर मिलता। पुरुषको सबसे बड़ी चिन्ता यदि थी तो यही कि उसके बच्चे किसी तरह पढ़ जायें, किन्तु यह समस्या तो उसकी अकेली नहीं थी, वह तो सारे देशके सामने है। हमारे राष्ट्रकर्णधारोंको इसे हल करना होगा, नहीं तो दूसरोंके लिए बड़ी बेइज्जतीके साथ अपने स्थानको खाली करना होगा। हम उसे 'हेयं दुःखं अनागतम्' (आनेवाले दुःखको हटाओ), पर लेक्चर झाड़कर अपनेको भड़ामसिंह नहीं बना सकते थे। आखिर इस अपराधके अपराधी तो उससे कहीं अधिक सोच-समझ रखनेवाले लोग देखे जाते हैं, जो पहिलोंके बोझसे दबे जाते भी सन्तानपर सन्तान पैदा करते जाते हैं। उसे यह कहना भी अयुक्त था कि तुमने ब्याह क्यों किया? आज वह पत्नी न होती तो लोटाभर पानी कौन देता? घर-बाहरका काम कौन करता? कुछ ही वर्षों पहले वह अच्छा स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट मनुष्य था, आज मुहताज-लाचार। मैंने मुश्किलसे उसे एक रुपया लेनेके लिए मजबूर किया। शायद वह न लेता, यदि हमारी समवेदनापूर्ण बातचीतने उसके दिलमें आत्मीयता न पैदा की होती।

बूँदें बन्द होते ही हम चल पड़े। कफड़ा बाजारमें भी घोड़ेका डौल नहीं लगा। चढ़ाई बढ़ती ही जा रही थी, जिसका प्रभाव हमारे साथीके पैरोंपर ही नहीं, मुखपर भी पड़ रहा था। नंगे पर्वतों-पर बादलोंकी छायामें धीरे-धीरे पग बढ़ाते तल्ली मराई पहुँच गये, डर लग रहा था, कहीं माचवेजी यहीं ठहरनेके लिए न कह दें। दूकानें थीं, घर तो कितने ही चिमनीदार भी थे। पता लगा, मल्ली मराईतक ही चढ़ाई है। 'अब नहीं' मुँहसे न निकलने पाये, यही मेरी कोशिश थी। तल्ली मराईसे आगे बढ़ते मुझे विश्वास हो गया कि अब तो मल्ली मराई पहुँचे बिना गति नहीं, किन्तु फरलांग या दो फरलांग जाते ही चढ़ाई और भी तेज हो गयी। उससे भी भयंकर बात यह हुई कि सामने बहुत ऊँचाईपर दिखलाई दिया, डाँडा; माचवेजी हिम्मत हार गये। शायद पैर पीछे करना पड़ता, इसी समय एक खाली घोड़ा ऊपरसे आ गया। डाँडा मीलभर भी नहीं होगा, घोड़ेवालेने एक रुपये-पर डाँडेतक पहुँचा देना स्वीकार कर लिया। मेरी उलटी टंगी साँस चलने लगी, डाँडेपर दूकानें मिलीं, चाय-पान हुआ। लोगोंने बतलाया कि अब थोड़ी-सी उतराईके बाद समतल-सा रास्ता है। उतराई पार करके चण्डेश्वरका मन्दिर और कितनी ही दूकानें मिलीं। चण्डेश्वर बहुत पुराना स्थान है, वह वहाँकी नवीं-दसवीं सदीकी खण्डित मूर्तियोंसे पता लग रहा था। आत्मविश्वास बढ़ चुका था, उधर ज्येष्ठ चतुर्दशीके चन्द्रदेव पूर्ण कलासे उग रहे थे। हमने ढाई मील और चलना पसन्द किया।

चण्डेश्वरके आगे दाहिनी ओर कुछ दूरके पहाड़ोंको छोड़, मालूम होता था हम छोटा नागपुरकी भाँति कुछ ऊँची-नीची भूमिके दूरतक फैले खेतोंमें चल रहे हैं, लेकिन जल-धाराएँ कहीं, दीख नहीं पड़ रही थीं। पानी यहाँ सदा दुर्लभ रहा होगा, तो भी द्वारा (द्वारिका) राजधानीके हजारों मुखोंका भरण पोषण यह भूमि करती रही होगी। वर्षापर लोगोंका तब भी शायद अटल विश्वास रहा होगा। चाँदनीमें रातको द्वारिकादर्शन किसे करना था। अशोकजीने नाम बतला दिया था और हम श्री अमरनाथ शर्मा(पन्त)की दूकानपर नौ बजे पहुँच गये। बिना चिट्ठी-पत्री-जान-पहिचान गये थे, किन्तु अमरनाथजीने स्वागत किया। उनके अनुज हरिश्चन्द्र शर्माने तो अगले दिन घूम-

घूमकर द्वाराकी हर एक चीज दिखलायी। ममगाईजीकी भाँति यह भी अकारण सुहृद साबित हुए। चाय पीकर हम लोग ऊपर तिमहलेपर लेट गये, रातको ग्यारह-बारह बजे न जाने कब भोजन करने उठना पड़ा।

प्रातः ही हम दोनों टहलने निकल पड़े। रास्तेमें हलवाईके यहाँ चाय पी, दोपहरका भोजन बनानेके लिए वह द्वाराकी विस्तृत नगर, ध्वंस-भूमिपर चलते नजर दौड़ाने लगे। पृष्ठ-भूमिमें वृक्षाच्छादित पहाड़को विशेष बात नहीं कहा जा सकता, किन्तु ५०३१ फुटकी ऊँचाईपर खड़े खजूरके वृक्ष विचित्रसे मालूम होते थे। इन्हीं खजूरों तथा जगतब निकल आतीं पुरानी कब्रोंको देखकर लोग द्वाराको कभी मुसलमानोंका गढ़ होना बतलाते हैं। लेकिन यहाँ निकलनेवाली कब्रें मुसलमानोंकी नहीं, प्राचीन खशोंकी हैं, जिनकी पानपात्र और आहार-पात्रसे युक्त समाधियाँ लदाख, चम्बा, कनौर, बागेश्वर, सभी जगह मिलती हैं।

द्वारामें पुराने मन्दिरोंकी संख्या ३० के करीब है। १७४३-४४ में रुहेलों द्वारा मूर्तियोंको तोड़ने तथा देवलोंके भ्रष्ट-ध्वस्त किये जानेके बाद ये मन्दिर फिरसे आबाद न हो सके। जिस तरह पुरातत्त्व-विभागके अवलम्बपर खड़े ये मन्दिर झाड़े-बुहारेसे दीख पड़ते हैं, उससे पता लगता है कि यहाँकी खण्डित मूर्तियाँ रानीखेतके अँग्रेज सैलानियोंके हाथमें पड़ी होंगी। रतनदेवके मन्दिरोंके झुण्डमें सात मन्दिर हैं, किन्तु वहाँ कोई मूर्ति नहीं दीख पड़ती। मृत्युंजय तथा और कुछ मन्दिरोंको देखकर हम नन्हीं-सी स्रोतस्विनीको पार हुए, जिसे नदी कहना इस शब्दका उपहास करना है; तो भी ३१ मईको जलकी क्षीण धारा दिखलाई दे रही थी। पार कूदते-फाँदते रास्ते-बेरास्ते हम केदारनाथके मन्दिरमें पहुँचे, यह तथा परले पारके बदरीनाथ जैसे दो-एक ही मन्दिर अब पूजे जाते हैं। इस मन्दिरका उद्धार करनेवाला कोई साधु यहाँ पहुँचा, जिसकी सन्तान अब यहाँकी पुस्तैनी पुजारी है। बुढ़िया पुजारिनने भगवान्‌के दर्शन कराये, किन्तु हमें तो पुण्य मिलता है, लूले-लँगड़े भगवान्‌के दर्शनसे। यहाँ कई खण्डित मूर्तियाँ हैं, जिनमें एक भगवान् महावीर (जैन तीर्थंकर)की पाषाण-मूर्ति शोभाके लिए बनी थी। बुढ़ियाने कहा—'और हमारे यहाँ बालगोपाल भी हैं।' मैंने कहा—'उन्हें जरूर लाओ' और वह भी जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथकी पीतलकी मूर्ति। दोनों ग्यारहवीं-बारहवीं सदीकी होंगी। बौद्ध मूर्तियोंके दर्शनोंके लिए तो हम तरसते ही रह गये। यह जैन-मूर्तियाँ बतला रही थीं कि किसी समय द्वारा—हिमालयका यह भाग जैन-धर्मसे शून्य नहीं था। बुढ़िया पुजारिनको एक रुपया दक्षिणा दे, डाकबँगलेके पाससे उतरते स्रोतस्विनी पार हो हम शर्माजीके घरपर पहुँचे।

हरिश्चन्द्र बड़े उत्साहपूर्वक हमारे साथ चलनेको तैयार हुए। अब हम द्वाराकी बड़ी परिक्रमापर निकले। मृत्युंजय, रतनदेव होते मान्यामन्दिर गये, जिसकी चहारदीवारीमें एक जैनमूर्ति लगी है। द्वाराके विशाल कंकालमें बाजारको छोड़ जहाँ-तहाँ खेतोंमें बसे लोगोंके कुछ मकान हैं, एक छोरपर बदरीनाथके मन्दिरसे कुछ ऊपर द्वाराका सबसे पुराना घर है, जो अब ढह रहा है। १८०० ई० में यह गोरखा-शासकका निवासस्थान था, बना तो उससे भी बहुत पहिले था, मरम्मत कर देनेपर शायद अब भी उसकी आयु दो सौ साल आगे बढ़ायी जा सकती है। पुरातत्त्व-विभागने इसे उपेक्षित कर रखा है। क्या देवताओंके घरोंसे पलासीके युद्धका समकालीन यह मानवनिवास कम पुरातात्त्विक महत्त्व रखता है? यह कारुकार्य-विभूषित तिमंजिला भवन इस योग्य है कि इसे सुरक्षित रखा जाय। डाँडेके साथ-साथ कभी राजा और अमात्योंका निवास था। उसके पीछेसे होकर हम श्री शिवदत्त उपाध्याय (जवाहरलालजीके निजी सचिव)के घरके पास ही कालिकाको देखने गये। वहाँ दूसरी खण्डित मूर्तियोंके साथ तथा पशुबलिके स्थानमें महावीर और पार्श्वनाथकी तीन प्रतिमाएँ भी

विराजमान थीं। इधरका मुहल्ला ईसाइयोंका है। इसे अँग्रेजी शासनका अवशेष कह लीजिये, किन्तु क्या ईसाके धर्मने हिन्दुओंके इन अपावन मानवोंका उस समय उद्धार नहीं किया?

कचेड़ीके मन्दिरोंके रास्तेमें मिशन-स्कूल मिला; जो अलमोड़ाके सबसे पुराने स्कूलोंमेंसे है। कचेड़ी (कचहरी, दरबार)के दसों मन्दिरोंमें कोई खण्डित-अखण्डित मूर्ति नहीं दीख पड़ी। नीचे कुण्ड (नौल) पर कुछ लड़के मिले, जिनमें एक १६ वर्षका (आनन्दकुमार चौधरी) लाल बालोंवाला था। खशोंके आरम्भिक युगमें रक्तकेश, पिंगलकेश नर-नारी यहाँ दुर्लभ नहीं रहे होंगे।

गूजरदेवका मन्दिर बाजारके पास है। इसका शिखर तथा बहुत-सा नीचेका भी भाग विलुप्त है, केवल नीचेकी थोड़ी दीवारें कड़ी हैं। मालूम होता है, यह विशाल मन्दिर नीचेसे ऊपर-तक भिन्न-भिन्न मूर्तियोंसे अलंकृत था। ग्यारहवीं-बारहवीं सदीमें, जिस समय वह मन्दिर बना था, मूर्तिकला हमारे देशमें अभिशप्त हो चुकी थी। साथ ही निर्माताओंने दूरसे सुदृढ़ काला पाषाण मँगानेकी जगह स्थानीय निर्बल पत्थरोंको इस्तेमाल किया, तो भी यह मन्दिर अपने वास्तुशिल्पके लिए प्रशंसनीय रहा होता, यदि मूर्तिभंजकोंने इसे ध्वस्त कर अपने मस्तकपर कलंकका टीका न लगाया होता। मन्दिरके भीतर एक पुरुष-प्रमाण मूर्ति-कबन्ध काले पत्थरका पड़ा है। मालूम नहीं, यह इसी मन्दिरका है व. दूसरेका। बाजारमें भी एक मन्दिरमें कितनी ही खण्डित मूर्तियाँ पड़ी हैं। उसके पास ही सियालदेकी कमलोंवाली पोखरी अब क्रीड़ा-क्षेत्र बनी हुई है।

रानीखेतके लिए हमें दो घोड़े किरायेपर मिल गये थे, इसलिए गगाससे रानीखेततककी तीव्र चढ़ाईका भय नहीं था। भोजनोपरान्त रास्तेमें यहाँके हाई स्कूलोंके अध्यापकोंके सामने कुछ कहा। हरिश्चन्द्रजीसे बिदाई ली और ६ घण्टेमें शामतक हम रानीखेतमें 'अशोक'जीके आतिथ्य लिए हाजिर थे। वहाँ एक छोटी-सी साहित्य-गोष्ठी भी हो गयी।

पहिली मईको मोटरसे चलकर हम नैनीताल लौट आये, कत्यूरियोंकी भूमिकी यह यात्रा इस प्रकार समाप्त हुई।

परिशिष्ट ४

जनसाहित्य

दरमा और ब्यांसकी तिब्बती बोलियों तथा थारु और बोग्साकी देशी बोलियोंको छोड़ देनेपर कुमाऊँकी सात बोलियाँ हैं, जिनके नमूने चौथे अध्यायमें दिये जा चुके हैं। कुमाउँनी जनकहानियोंके कुछ अंग्रेजी अनुवाद छपे हैं।[1] किन्तु जनसाहित्यके संग्रह और अध्ययनका काम नहीं-सा हुआ है, जिसे आशा है, कुमाऊँके तरुण शीघ्रतासे करेंगे और यह कहनेका मौका नहीं देंगे कि 'अब पछताये होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।' हाँ, इस निधिके रक्षक वृद्ध-वृद्धाएँ बड़ी शीघ्रतासे हमें छोड़ रहे हैं। संग्रह करनेके लिए हमारे पास अधिकसे अधिक दस-पन्द्रह साल ही रह गये हैं। हमने जिन कहानियों(गद्य)का संग्रह किया है, वह जनभाषामें है, किन्तु जनकथा नहीं है। कविराज रामदत्त-ग्रथित गीतोंकी भी वही बात है, किन्तु कुछ जनगीत भी हैं, जिनको देखनेसे मालूम होगा कि कुमाऊँकी ग्रामवासिनी सरस्वती बहुत सरस और सुन्दर है।

१ गद्य

(१) जूँ हो[1]

"पिरुली, हिट चेली, घर जानूं, आपणा मै कें घात लगाधें, अबेर हैगे।"

पिरुली और बचिये मैल् पिरुलौ गढल ख्वारमें उचै और घरहूँ बाट् लागि।

छम्म छम्म खुटा झाँवर बजूँनी पिरु बचिया पास दौड़नी गे। उ का ला बोटमें बढ़ि बेर, लाल, नील, धुमैल दाँण चै खाँणौ छी।

"इज वलूणै, हिट, घर जानूं"–पिरुलीले कै।

बचियैल् बैंणि कें गिजूण हूँ काफलै चटाड् लगै वेर कै—"अहा, के बढ़ी स्वादिल है रई।"

काला-काला भिट्ठ काल देखि पिरु मुखन पाणि ऐगे—"हँ रे, द्वि दाण मकैं लै दि दे"

"हाइ, कि लै नि कौली, चै चै वेर मैं खाण रयूँ।"

पाल् डान वै इजैल फिर घात लगै।

"पिरु, वे पिरु बचिया, उ-उ-ई।"

डरा मारि बचियैल बोट वै तली फाल मारि अदौड़ा दौड़ इजा पास पुज, और बीक दगड़ै दगाड़ घरहुँ बाट् लाग्। घरमें आ ज नान तिनैंनू न्यारी रंगत देखीं गै, तई चौंण अई मैं। उननकन देखते ई इजैल अम्बो धूँट गाड़ि ल्ही।

"को छन इजू, तौ ?"—बचियैल पुछ।

"यार दी शौर। बीक ये म्हैण व्या होल्, अब सयाणि है गे, सरास जालि" इजैल पालडै साग काटन-काटनै च्याल् कें यो बात समझै।

---

१. Himalaya Folklore by Rev. E. S Oakley and Tara Dutta Jairola, Govt. Press, Allahabad, 1935.

२. लेखक—कविराज रामदत्त पन्त, रानीखेत।

"तब तौ बहार छ हो, पिरु दगै मलै जाने रै मयूँ।"—बचियल् कै।

"छि आग लागौ पाप, लिकें शरमनि उनी ? दि सरासी लियैं पुछड़ लगू कौल।"—कूनै-कूनै इजाक खितक पडि गै।

"कूण दे, मकैं उनार बावै डर जे कै पड़ि रे।"

"हाई, कथपन सयाण है उणौ छै नू," त्यार के समझेमें निउन।

× × × ×

पिरुलि मै बचि मै, गुडिना खेल लागि रौ छी, उतुकै में सारै घर मंगल गीतनैल गुंजि उठ। रणसीङ् तुरि बजून—बजूनी बरात लै ऐ गे।

"बरात ऐ गे।" पिरुलिल् लै सुण।

आपण छटकाई बालन कैं बाँदि वैर पिरुलिल् बची यें क कै—"यो पिङ्लि धोतिल् असज् उणै, इजैल म्यौर झगुल जाँणि काँ लुकै दै। हिट बची, बरात कै रे वल। देखनू घै, वर कस छाजि रौ छ।"

एतु कै में उनरि कारिब दोड़न दौड़नी ऐ गे, वील पिरुलि कैं देखि वैर कै—"पिरु, लुकि जा चेली, तेरि बरात, उणै।"

पिरुलिल् गलाड़न हात धरि बैर बुड़ि आमें जस न्यात् मुख मटकै बैर कै—"हाई, किलै नि कौ ली, मेरी जै बरात, मैं किलैनि देखुँलो।"

काखिक् क्ये कूण जाणै, पिरुलि बचियौ हाथ पकड़ि धिरधिरानी पाखै धुरिमें पुजि गे।

"अहारे, म्यार् बरैल् कास् हौसनाइ लुकुड़ लगै राखीं बची ?"

ऐतु में काखि ऐ बैर पिरुँ कें तीर रघोडि लिगे।

* * * * *

चेलि पैट्यूण बखत लै ए, पिरुकैं भेंटण हू बची लै डाड़ हालनै ए, पिरुक लम्ब घूँट घुन-घुन जाणै अई मै, इजैल घूँट मलिकै टिप, पिरु बिल्कूलै बदली मै, आठ बरसै बान, पिरुलि नाख म नथुलि, रुपणों पिठ्या, ख्वारम मुकुट, लाल-लाल मखमलै आड़ुमे सुनू पानै पचि झकझक करणै, पिरु हूँ त यो सब गुड़िया खेल जास है रै। उ कम तै कपालन हात लगै बैर टिक चाणै, कम तै आर आरसी मुनडिमें आ पण नान-नान मुख देखणै, कभ तै हातै पहुँचि तलि कटि मलि हुँ खसकूणै, कभ तै मूडै माल रणन कै चाणै, कभ तै आपण किनारी दौड़े पिछौड़ ल घूँट गाड़ि बैर बची यें पुछणे—"बचि, मैं कसि छाजणै यूँ ?"

बची के नि कै सक, चइयै रै गे।

* * *

घूँट घुन-घुन मै, पिरु डानि में मैटी मै, कुछ देर जाँणै विकें डानि में भलै लाग, पछा क्याप् झस्स जै मै, क्याप—"याद जै ए, घूँट मालिक करन्छी, ता लै कथप वणमें जै जाण चितहीण, घबैड़ बैर वील घात लगै—"बचिया, बची।"

वाँ बची छियैं काँ जो "हो" कुन। पिरुकें विश्वास लागि गे, बचियो ख्याल ऐ बैर गल भरी ऐ, और भू याँ करनै डाड़ ऐ गे, कतुकुप सरासी बोल्यूणै, पिरुल् धो थाँ णि करि दी।

"बचिया, हाई म्यर बची काँ, मेरी इजु काँ, म्यार अल्माड़ौ बाट को छ, मैं तुमन दगै नि उन्यू, मैं घरै जाँ"—पिरुलिल सरसकानै कै।

गँगोली उज्याणि सरास मै, द्वि दिना बास्। पिरुलिक ड़ड़ाड़ाड़ कत्रे घडिन जाणै सरासी

सुणिहै छी, वो त्यूणै ला गि रौ छी, पर जब वील गहौण भौ रुयण लगै, पै वीकें डरैं धमकै बेर चुप करै, जसिक-तसिक घर पुज, पिरुक् आते ही सासु कें भौतै खुशि मै, वी लै आपण मनमें उभतै वै ठैरेल्ही कि आब मैं।

ये कैं मैत नि भेजूँ। फूल जसि नानि पिरु हर घड़ि बुतिमें पेलि खेर मै, ऊँच-ऊँच डा ननमें घा तिताड़ चाण हूँ जानेर मै, क्याड़-म्याड़ भ्योल, कफालन है चै त्यूण मै, दूर टाँड़ बटि सीरौ ठंड पाणि त्युनेर मै, हिट नै हिट नै विचारिक खुटन ग्वालछीण पडि गैन, मड़ू पिसनै उखल कुटनै हा तन छाल पडि गै। रुख-सुक ग्वाटा ग्वाटा खाण हुँ मिलनेर मै। के करौ दिन है। दिन, झुरि ऐ, ह थूँना दिननले एक फाटि चियड़ ग्वारन हालिवे लिपा गोठ पन जाड़ैल् थरथर थरथरानी टोप दि राखनेर मै, वीक तातताप आँसुनैल गलाड़नों तलियो पराल भिजिबेर तै तौरान है जानेर भै। हर घड़ी उकैं मैते कि फाम उनेर मै पिरुलि मनैं मन आँसू पिनेर मै।

दिन बितै रात बितै, ऐसे कि म्हैणन बिति गै, तैतौ म्हेण लै ऐ गे। सबना बाँ भेटण ऊँण फैट, पिरुकें फै बीचयै अन्धेरै नरै लागी मै। हर घड़ी वीकै ऊणों खुटुक-खुटुक हनेर मै—"जाणि-जाणि म्यर बची कतण मै हुनल "यह ख्याल विकै बरबखत उनेर मै, रत्तै समझनेर मै दिनमें आल, मैकें नि हुँण देखि वीक आँखनवट टुपटुप आँसु ढरकी उनेर मै, और उ आपण मनमें कुनेर मै—"हाइ, म्यार मैती लै कास् निरमोही है गई। यो चौरंगा पार खिति बेर मैंके फिर पल्टी बेर चाण हूँ लै नि ऐ, हाइ, यसि जै मैं नि चैनी छ्यूँ त, मैके हुनहुनै मारि तारि दिन, गाड़ बगै दिन, ज्यूनैं खाड़ हालि दिन। हाइ, बचीलै भुल मकै।"

एक दिन एसीकै सौचणै छी, कि पार वे बची उँण देखी गै। दौड़नी उ वि कैं ल्हिणहूँ पुजिगे। पट्ट कनें मै कैं कड़कड़ अँग्वाल हालि, फिर, सकसक करण फैटि। थोड़ी देर बाद मै कें ल्हि बेर सासु थैं पुजि। वीक खुटन मुनलि धरिबेर बलाणि—"ज्यू मै मै दर्गा दगड़ि मैक हुँ जाँ? सासुल मै कें ख्वार बै खुटन जाँणै देखिबेर कै। भोल जयै, पै आज त्यार मैले थकि रैं हुनाल, माँ ले एक सिकड़ लाकौड़ी न्हैति जा तभलै एक गढल लि आ।"

पिरु आड़ आज स्यूँ जौ तराण अइ मै, उ बण बै एक अशक्क लाकड़े घात लि ऐं, विसै बेर पिरुल पुछ—"पै जूँ ले मै दगड़ि? कब जूँल पै?"

"भोल-भोल-भोल" सासुलकै त नभालै घट बै म्यूँ पिलै त्या" पिरु घट हूँ बाट लागि। यै बीच सासुल सुन्दर खीर पकै। खीर थालिमें पसिकि बेर आयू भ्यैर गे। येतुकै में एक स्याप निकल। बीच् थालीकि खीर जुठै दि। स्यापक् जहर लाग्। बची भुकान छियै, पेट भरी खैगे। रातकर पिरु पिरु सासु थें पुछ—"बची कां"?

सासुन कै "वीकै नीन ऐ रे।"

पिरुलिल् सासु थैं फिर पुछ—"पै जूँ लै हो? क दिन जूँल?"

"कई हालौ, कतुक बखत कउँ छै, भोल जाली, भोल-भोल-भोल।"

खुसि हुनी पिरु सिण पड़ि, कीन केहु आलि उकैं, विकैं पाँख लागि मै कब रत्तै हो कब जूँ कै बेर।

रत्तै मै पिरु उठी, सासुथैं जै बेर वील कै: "जूँ हो।"

सासुल् नड़क छाड़िबेर कै: "जूँ हो जूँ हो, के लगै राखी। जा टोकी, मै आई रौ जा।"

पिरुके नि बलाणि, सिदि वें पुजि जाँ बचि पड़ी छी। वील बची कैं घचोलनै कै—"बची, हिट।"

वाँ छियै को जो जवाब दिन। पिरुल् बची फरकै, बीक मुख देखि बेर बील एक जोरै टोक्याल छाड़ि और उत्ती मै ख्वारन यसि टोप दी कि दिइयै रै। ठीक बी बरस वै हर चैता म्हैण एक सुन्दर चड़ि उ गौं में उ, रात व्याण बखत, दिनमें साँसकर उ बलाँ छ—"जूँ हो, जूँ हो, जूँ हो।"

बनमें गाड़-गध्यारनमें, दूरा डान-काननमें यो धुनि फैलि जैं जाँ बटि लै यनै स्वरन कै जाणि के दुहस्यूनै कूँ—"जूँ हो, जूँ हो, जूँ हो।"

यैक बाद एक दुसरि चड़ि लै एकारि एकारि मै कूँ—"भोल-भोल-भोल।"

(२) भ्यौरड़ी और प्यौरडि—यै संसारमें प्रथम सृष्टि हुई माथै प्रथम वसन्ताक आगमनाक उपरान्तै जब फूल फुलण फैटा, त श्री विष्णु भगवान ज्यू कै अलबलाट माँचो कि जै बेर अब फूलन कें वरण चैं छ। फूल उनन अत्ती मानेर मै तबै कमल सदै सर्वत्र उनार हाथ है भीं''टनै रै निमै। बस लागा बाटा। उनै उनै पैली डीठ पड़ि प्यौरडि में।

प्यौरड़ि फुलि बेर आपण रुपमें आकाशैक चई मै, भीं बीकको चाँ छी। बाल मै लै ऐसी कि रङ् में रुप में वी जसि क्वे मै लै नै। घरै बणै सब बीकै रुपाक गीद गैलैर मै। योत सबनै कैं ज्ञानत की छि आज फूल बरी जाला। पै आपण रंग रुप और जोबनाक आगतिर प्यौरड़ि कैं संसार सारै उपन है लै नान देखीण लागि रै।

माठू-माठू विष्णु भगवान प्यौरड़िक काख लै ठाड़ मै। प्यौरड़ि कैं पैंलिये। विश्वास मै कि क्वै लै कैले नि ऐ जी वी कैं देखि को जै नि मोहित है जालो सो बील चइयौक नी चई कर दी, पैली बलाला त मैं लै बलाँल कै त समझी राख छी पै विष्णु भगवान लै के के हूँ बलांछी। प्यौरडि में मोहित है बेर बोलीण हूँ उनन कैं पै क्ये है। रौछी। फिर प्यौरड़ि लै जसि जै क्ये उनीर देखी नी मै त उनरि सृष्टि की त प्यौरडि लैमै नै, मुणि देर चुप रै बेर विष्णु भगवानै लै परसण हूँ जसो क्वे—

"क्ये हो प्यौरड़ि लीली, क्ये है रई रङ् राज?"

प्योरडि ओछी बेर बलाणि—"म्यार रङ् राज क्ये हुण है रई तुम आपणि कौ औ।

विष्णु आनमाना जास है बेर—"मैं आपणि क्ये कूँ, आज यो फूलन कैं वरण ऐ रे छ्यू यो।

प्यौरडि पुठ फरउके बेर—"आजी टिक पिठ्या नि मै। मकैं त ऐल झिट्ट घड़िक लै सोबुत न्हाँति, बींचे में तुम जै ऐ ठाड़ा है गया। वरणे हूँ ऐ रौ छा, त बरौ बारौ बाट लागौ।"

विष्णु (मनै कि रीस मनै मन व्यापि बेर)—पै तुमारा त लली, आजि टिकपिठ्या जै नै नि मै। मैं औरन कैं बरि उँ, तुम उति जाँले आपणि न थुलि विन्दुलि चुड़ चख्यो पुर कर करनै रहा लालि, मैं त ऐल यो जाँ पै।"

यो कै बेर विष्णु बाट लागा, अधि नै भौरड़ि देखीण। भौरड़िल पैलि ब्यालै सुणि हाल छी—भोल भगवान उनेर छनै कै सो रातै लाड़ि उठि बेर बासाक पाणिल नैबेर दाँत माँजि खोरो कटोरि मुनलि निच्चि करिबेर बाट चई मै। मधूरी कै गैण लागी रै (छाया तट)—

भ्वासै थैं ठाड़ि छूँ वै आला कै बेर तुम। आँखि लै पटाणि चानै-चानै बाटाका खुम मनसुप भौतै छन पै जाणी कब मनैकी मनैमें रुँ छे को जाणो पै अब तब। अथिरौ पै मेरो हियो हई जलाँछ सुमगुम। भ्वालै।

रचीणामें जै छाया कमणिय देखी जौ हं हो। पछ्याणणो लै घो हो लो उँछा जै पै के अहो आफी "मैं छूँ" कै कै दिया बेरै एबेर तुम भ्वालै।

फिर दूरै बाटि भगवान कैं उण देख छियो त बीक मनै मन हिरघिराट है गूबे—

"अब क्ये जाणि भगवान मैं जसि सीदीसादी गौंपनें बाट थें ठाढ़ि हुई बिन गहण—पात नै कि चेलि उजाणि चानी किनै।"

ती लौकै कि जाणनेर विष्णु यो सब मनैमना तत्काल जाणि गै और हँसने मुस्कुरानै वीक मुख यें ऐबेर आफी जै ठाढ़ है गै। भौरड़िल झपक कन ढोग दी और कूण लागि—

"भगवान, कालि कलच्यूनि जसि प प लै छूँ, तुमरि रण छूँ। मकैं त तुमन निभूणै पडौलो, और और मैं क्ये कूँ?"

विष्णु यो चौड़ चपड़याट देखि बेर सच्ची मोहितै है गे। झिट घड़ि जांले त उनार मुख बाटि बाचै जै नि ए, गलो भरी जसो गवे, पै कैं भौरडि क्ये और नि समझि हछ्यौ कै गलो खकारि बेर अलबली बेर प्यौरड़ि कैं सुणैबेर, च्चि कै कुण लागा—

"भौरड़ि, तू मकै सब फूलन थें अधिक प्रिय भाई। मैं त आपूँ लै की लै छूँ। कालो क्ये भैंस नि भयै। मन उज्यालो चैं छ, भैर काल हुणै लै क्ये हुँ छ? और भितर जै कालो भयो त उँ भैरौ गोर उज्योलो कै भलो लागौलै? मैं लै आजाक दिन पैंल वरण तै रे करौ छ, त्योरो नाम भौरड़ि, "विष्णुकान्ता" हो लो, तू आपूँ काली लै भई, सुहागिलि नौकौ मुनलो उज्योलो करलो, रोगी व्याधि-नाक आड् शौर अनाड़ा उज्याल कर लौ, दहामें ठंड पाड़ली, घर बड़ानौ को शृंगार कर ली, तू भै रे कालि भितिरे उत्यालि—मकैं क्वे जासै भाल लागनी काल कस्तूरी मोल गोरु मोल।"

प्यौरड़ि यो सुणि मुख मटकूण लागि। यो देखि विष्णु कैं सच्ची रीसै जै ऐ गे। कब विष्णुल भौरड़ि कैं फिर सुणै" हपार तती तौ प्यौरड़ि जैक जती पिसि बेर लगई जां छ्यू, वीक उती पाकि जां छ। उ मै रै गोरि भितरै अन्यारि आपणै अहं गर्वमें टुथें छ। वीक फूल ढांट फूल कई जालो। उ मकैं लैं नी चड़ौं।"

रीसै लै प्यौरड़िक पहलो मुख बाँकी पिंहलो है गयै। विष्णु यों कैबेर अधिन कै जाण फैट छिया। त भौरड़ि फि गैण लागि। यो गीत उ आपण मनै मन नित्य प्रभात में गैनी हैं छ्या—

प्रभू यै मनमें ऐ विचरौ।
क्षणिक कनी यस जीवनको सकल तुच्छ अभिमान हरौ।
जब धन बल कुछ मैं लै स्वेर।
तब अहंकार लै ओ सै बेर।
पखार समझ मैं ल सुखै कि खाण,
पर्दा फटाण और स्वप्न व्याण।
तब रोम शोक और दुख पीड़ आया,
सब यो करिबेर भीड़।
तब दर्प डाल जसो हो विलाण,
अब समज्यूँ यो पै ठीक करो। प्रभु ०।

भगवानै लै अखिल जै बैर मालती, जाई, सुनुजाई, घनेली, कुंजसिंवाली, बुरुश, शिलिड, अलूबीन, पारिजात, बेला, हंसकली, रजनीगन्धा, टोकर, डलिया, कुसुम, और सबै फूलनाक मुखनैं थें जै बेर उन सबन बरिदी। तबै ज्ञानवान भाल भैंस कती भाला भाला फूलने छब जै हई देखीं त तत्काल विष्णुक स्मरण करिबेर कै दिनी 'श्री विष्णोरर्पणमस्तु' (अयिन जै बेर आँक, धतुर, कन्युर, जास जहरील फूल) जां लै महादेव ज्यू हूँ बरिबेर धरि दी, पै प्योर प्यौरड़ि कित जन्मै हूँ आनै रै गे।

नानतिन मैले देलि पुज करण हूँ जब और के फूल उनन नि मिलात टोड़ि लिया त टोड़ी रही। ठुलठुल बोटनमें उँ पुजि सकनेरे नि भै, पै प्यौरड़ि कैं और पुज-पातिनमें कक्वे कुकुर लैनी पुछि दिन। प्यौरड़ि लै मनैमन भौतै पछतई छ पै वीक गर्व आजी नी ग्वै, क्ये शरमत लागि हुनलि पै, जो अब उ कनाल भिड़ गध्यार नाक आँख काखै लागि देखीं छ। उथ कै भौरड़ि आपणौ सुकुमार गांत और निचि खोरिल देश पहाड़ सबना हातै चान छ। गर्व ख्वे दिणी विनय बणै दिणी ऐसी छ।

२ पद्य

(१) रितुरैण

रितु मै गे हेरी फेरी गरमा रितु,
ओ जाप[1] माणिसा पलटी ती[2] ऊनो[3]
ऊँचा ऊँचा डिना[4] छदुवे[5] बाँस लो[6]
गैला मैला[7] पाँतली[8] न्यूलड़ी[9] बाँसली
तू बाँसिये[10] कपुवा रे मेती[11] का दिसा।

मेतीकी नराई[12] लागिया चेली[13]
इजू[14] मेरी सुणली मैमेटौइ[15] लगालो।
कपुचड़ो[16] बाँसों घड़ो घड़ो[17] लगालो
न्यूली चडी बाँसली रणामणी लगाली।

टुटीमूटी[18] दातुली[19] को घास वे[20] नी हूनो,
बगैरी महेडी[21] को मैत[22] ने वी हूनो,
पाणी[23] कसी[24] तीसा[25] छाँस[26] लैनी जानी
इज्यूकी नराई बौज्यू[27] लै नी जानी।

(वीको[28] भाई)
इजू मेरी वैणी कै[29] दिसा होली
कै दिसा होली वैणला हमारी ?

(इजा)—नी छी[30] तेरी वैणा वे साधो[31]
नी छी वीको भाई
तू नाबालो[32] साधो नामड़ो[33] जनमें

(भाई)—नीमड नी हुनो[34] इजू, चीचनो काकडो[35]
माणसिया जाय[36] अ (निमड़) नामणौ काँ देखो।

---

१. गया, महा, २. नहीं, ३. आवनो, आता, ४. पहाड़, ५. चिड़िया, ६. बोलेगा, ७. रास्ता-ऊपर, ८. पतली, तनुका, ९. चिड़िया, १०. बोलना, ११. मायके, १२ चाह, १३. लड़की, १४. माँ, १५. भाई, भेंट-सौगात, १६. चिड़िया, १७. स्वर, १८. टूटे-मूटे, १९. दराती, २०. री, २१. माँ, २२. आयका, २४ जैसी, २५. ता, २६. छछ, २७. पिता, २८. उसका, २९. कौन, ३०. नहीं है, ३१. साधुनाम, ३२. बालक, नादान, ३३. अकेला, ३४. होता, ३५. चीचिंड़ा, खीरा, ३६. जनमें।

(इजा)—हिया-पन्था[1] खैं छी[2], मैंले जड़िये बूटी,
तब इये बाल रे चाँवरी[3] बालो,
(भाई)—आजी[4] खातड़[5] इजू मेरी जडिये बूटी
पीठी लै[6] पाछिलो भाइलो होलो[7],
(इजा)—तेरी बैणी[8] साधो चौगंगा पारो।
(भाई)—उँलो-उँलो[9] बैणा पछिली हरियाली[10]
क्वे सूँ[11] बैणा अंगिथा बणूलो[12] लाछा[13]
अंगिया बणूलो माजी[14] लागा छयै मासा
पिछोड़ी[15] बणूणा मैं लागा बार सासा
(इजा)—कौन साधो चेला गंगा ज्यू तारलो[16] ?
कौन चेला मेरा बाटली देखालो ?
(भाई)—खुटी[17] साधो इजू मेरी गंगा ज्यू तारला
आँखा जोइ[18] ओ इजू बाटूली देखा ला
मेर देखू इजू मेरी आवै[19] की छापरी[20]
मैं ना जानूँ इजू मेरी बैणवा भेटनी[21],
कड़नमें छापरी धरी हाथ छ कनूली[22]
सूरो-सूरो[23] न्है गोछ[24] चौगंगापार
देराणी जेठाणी उखला फूटनी[25]
(ननद)—तुमारी अन्वारी[26] को पाहुना ऐक रौ छ[27]
भौजी वे भरड़ा[28] भौजी तुम कैं बुलानी[29]
तुमारी अनारी[30] को पाहुना ऐ रौ छ
(भावी)—ततरा[31] दुछुणा[32] ना दे ननदा हमारी
(ननद)—आपणा आलुदैक[33] को मैं वाना[34] झन[35] दिये
तुम्हारी सपथ भौजा बबा जू[36] की दुहाई
तुमरी अन्वारीको पाहुना ऐ रौ छ
पूरबा झरोखी दिठी[37] दीछाणि[38] छ
(भावी)—साँची कै छ[39] ननदा भाई हमारो
छुटोई-भेटोई[40] हई[41] नेतार[42] छाड़िछ[43]
(ननद)—ए कति आया भाई आया चौगंगापार

---

१. निडला, २. खाया था, ३. सुन्दर, ४. फिर, ५. खाले, ६. पीठपर, ७. होगा, ८. बहन, ९. आऊँगा, १०. हरिया त्यौहार श्रावण गते १, ११. तेरे लिए, १२. बना, बनाऊँगा, १३. लच्छा, १४. मध्य, १५. पिछौरी, १६. उतारैगा, १७. मार्ग १८. पैर, १९. जोड़ी २०. आवनहारी, २१. डलिया, २२. जाऊँ, २३. भेटने, २४. कंछा, २५. कंडी, २६. शनैः-शनैः, २७. चला गया, २८. कूटनी। २९. अनुहार, ३०. आया हुआ है, ३१. शोख, ३२. बुला रहे, ३३. तितने, ३४. दोष, ३५. तोहका, ३६. बोंट, ३७. नहीं, ३८. पाप, ३९. दृष्टि, ४०. बिस्तरा (दसाव) ४१. सच कहो, ४२. भेंट-प्रणाम ? ४३. होकर, ४४. निस्तार, ४५. हो जायगा।

(२) रितु रैण[1]

जो भागी जियलो, यो दिना भेटलो।
नयी रितु नयो काल, जो भागी जियलो, यो दिना भेटलो।
ऊँच-ऊँच डाना कपुवा रणमणि लगालो।
हँसि-हँसिके भलि कुंज लपट चलालो।
इचाला निशाला घुघुती कुरकुर कुराली।
ताला माला भिड़ा पिरुड़ी न्यूड़ी हँसली।
गैला मैला पातला न्यूलड़ि पूँछ हलाली।
बिन भै की बैनवा आँसू वै ढाल्ली।
यो दिना यो मासा जुगा जुगा भेटिया।
बौर म्हैणा मैतिका, को म्हेणो प्यारो।
जेठ म्हैणा जेठिको रंगीलो बैशाख
रंगीलो बैशाख हलो, लाड़िलो चैत
पैजा ली मैतालीको, लाड़िलो चैत।
बाँस भया कपुवा, मैतिनका देस
इजू मेरी सुणली, मैं भेटों लगाली।
सब चेली लाड़ली भया, अलमोड़ि हाट दिया।
मैं चेली कुलाड़ भयूँ, चौ गंगा पार दियूँ।
पका इजू मेरी, लाड़ली छापरी।
मी त द जानूँ इजी, मैनोई का देस।
"नी छ तेरी बैनवा, नी छ वीको भाई।
तू न बबा साध, नमड जनम,
चिचिना काकड़ा न भड़ै नि हूँना।
मनखिया जाया, नमडै काँ देखा।

(३) शी-री-री-री[2]

शी-री-री-री मेरो नगीना, शा-रा-रा-रा मेरो नगीना[3]
ओ सहेली मेरो नगीना, अहा सहेली मेरो नगीना। शी-री-०
बुढ़िया-शैणी[4] कभी त्यूँ णी, बात-बात खुचणों नी कु नी। शी-री-०
इकन्नी दुअन्नी खोटो डवला[5], तेरी नथुली[6] में मेरो रुपौला। शी-री-०

(४) झोड़ा

छाना-बिलारी जनपिया बाबुल, लागला बिलारीको घाम।
हाथकी हातुली हाथमें रौली, लागला बिलारीको घाम। छाना ०
नाककी नथुली नाकमें रौली, लागला बिलारी को घाम। छाना ०

---

१. कविराज रामदत्त पन्त (रानीखेत) द्वारा संगृहीत। २. कुमारी माया पाण्डे (अध्यापिका, नैतीताल) द्वारा संगृहीत। यहाँ पतिकी लायी जड़ाऊ पहुँचियोंको दिखाते नववधू प्रसन्नता प्रकट कर रही है। ३. जड़ाऊ पहुँची, ४. सयानी, ५. डबल, पैसा, ६ नथुनी।

कानकी कनफुली कानमें रौली, लागला बिलारी को घाम । छाना०
रेसमका लकड़ा धरिय रौला, लागला बिलारी को घाम । छाना०

(५) गंगोली चेली[1]

मैं है बेर गंगोली चेली
मैं नौ जमाता पढ़ छूयूँ, और हाथविच छतरी धर छूयूँ ।
चुन-मुनि उँगलि दबू छूयूँ । मैं है बेर ०
मेरी इजा यो शो कूँ छै, ये चेली हाथमें मुचि गे छ ।
दिनमान उपन्यास पढ़न छै । मैं है बेर ०
मैं बी० ए पास करूँ लो, पढ़ि बेर बिलैइत जूँ लो ।
सब कणि करि पास पिसूँ लो । मैं है बेर ०

(६) गाँधी गीत[2]

मनधाता महीपती जा राज रजि गया । धरती क्वे नी खै गया धरती लै खया ।
मरी बेर अमर उ जै को छ सुनाम । ज्यौं नै उ मै मरीयों जौ जै कौ मै कुनाम
संसारमें हुने रुनी मरनें लै रुनी । कुल उज्यालो जैले करो च्योलो वीथैं कुनी ।
च्योलो कि हो म कत कि पै दाता कि हो शर, कि पै इजा बाँजीहै जौ ज्वानी नी हो चूर
यो कै बेर कूणी आज गाँधीज्यूकी बात, मैसें को छी जात जै की धरती छी थात ।
बसुधा कुटुंब जै को सबै छिया च्याला, हियाकै सबै छी जै का क्वेलैनी ह्याथा ।
गुजराती गाँधी भया वणिया पंसारी, उनीका सौज्यू यों भया यो लिया विचारी ।
पोखंदर राज वाँ मैं वीका मै दीवान । **करमचंद** बौज्यू भया भला ज्ञानवान ।
इजा मै **पुतलीबाई**, नेमधरमवाली, नाना छनै बटी जै लै गाँधी ह्ही समाली ।
असोजका कृष्णपक्ष तै की छी द्वादशी । शर-पक्ष-निधि सूर्य संवत्[3] छी यशी !
सुदामापुरी मैं **मोहनदास** अवतार । भारतै नौ जै लै लगै मँवर है पार ।
तेरुवें बरसमें जो व्या इनरो भया नानैमें यै व्याह याको धड़ो-धड़ो रयो ।
सती साध्वी धर्मपत्नी छी **कस्तूरीबाई**, देसैकी सेवामें जै लै आयु दी बितायी ।
सतरवाँ बरसमें बिवैत ह्है गया । बारिस्टरी वाँ बटी पै पढ़ी बेर आया ।
घर उण हुणी कुंछा इजा मरी भयी । यो लै टकटकी तब च्यालै की रै गयी ।
कुछ दिन फिर बम्बई रई बेर, दक्षिण अफरीका गया वकीलीका फेर ।
ग्वारै हूँ मै यो जगत कालो क्ये न भयो, गाँधी लै जो यो वाँ देखो वै उ रमी रयो ।
नैटालैकी इंडियन कांग्रेस वणाई, पैंली पैंली सत्याग्रह वैं दियो जमाई ।
सत्य खड्ग, अहिंसाकी ढाल ह्ही यो धीर, स्वदेशीको कवच ह्ही चरखा तूणीर ।
ठुली ठुली लड़ाई पै यै लै जीती दीन । भारत स्वतंत्र करो खद्दर अधीन ।
ग्वारनाका देखी बेर नाका अत्याचार । अफ्रीकाका बोर लडा भई बोर-बार ।
गाँधी भया स्वयंसेवी घायल बचाया, वाँ लै नाम भयो पै मैडल झपकाया ।
काला काननौ जो करै दियो मुखकालो, जीती गयो गाँधी पै सत्य-अहिंसावालो ।
साबरमतिमें लियो आश्रम विचारी, भारतमें आई भयो महात्मा औतारी ।

---

१. कुमारी माया पाण्डे द्वारा संगृहीत । २. कविराज रामदत्त पन्त-कृत । ३. १९२५ विक्रमी ।

भारतका ज्वान फिर जरमनी भेजा, जरमन हारी गया, जीता अंगरेजा।
लड़ाई कै जीती बेर मिली उपहार, रोलटबिल पै डायर का अत्याचार।
लाख-लाख भारतीय कृष्ण जन्मस्थान, गया फिर वणै गाँधी कै प्रधान।
बिहारमें घूमी फिरी किसानका ध्यान, करी गया उनरा लै दुख अवसान।
कतू करा उपवास तूण लै बणायो, हरिजन-उद्धारमें पै मन लगायो।
नोवाखाली पन हिंडी बेर क्लेश दूर, करी दिया आपू उठै क्लेश भरपूर।
पन्द्रा अगस्त सन सैंतालीस का दिन, स्वतन्त्र भारत भयो खुशी मनै ल्हीन।
यों नड़ारा निशाण जो ये देशधिरका, गाँधी ज्यूका परसाद यों रिटा फिरका।
हिन्दू मुस्लिम-ऐक्यको पाठलै पढ़ायो, जब क्वे नीमाना तब व्रतै लै मनायो।
बम मारनेर कणी दियो क्षमादान, संसारमें शान्तिकर योसो को महान।
सवा सौ बरस ज्यून रुलों कुँ छिया, रामधुन प्रारथनामें हुँ छिया।
आयो एक हत्याकारी गोली गयो मारी, तीस जनवरी ब्याल बखत विचारी।
वै दिनै भारतराष्ट्र छोरो मूल्या भयो, राष्ट्रीको ऊ बापू आज जबै मरी गयो।
च्याला नौ को काम छ बाबूको नौ घर ल्या, जो काम अधूरा-छन ऊँ पूरा कर ल्या।
कै कै भाई बाबा यारौ सदानी मै रुँना, मैं बाबूको दुख ल्ही पै नी रुणौ में रुना।
अधिलकै देखौ छोड़ो पछिलौ विचार, हिली मिली बेर करो भारत उद्धार।

(७) आपणो घर[1]

ठंडी पौन ठंडो पाणी, उजेला अति भला।
बाड़ा भिड़ा गाड़ छिड़ा, उजेला अति भला।
नीला बी आकाश माँथ, बादलन बिजुली नाच।
सूर्य चन्द्र तारा साथ, उजेला अति भला।
चाँदी लै छाई हिमाचल तली जनरा छन् ह्यूँका गल।
ऋषी मुनीना का यों थल, उजेला अति भला।
चरण जई दूधै धार, जंगलन वारपार।
बुरुश शक्ल बांज धार, उजेला अति भला।
सिड़ी जसी उपरुँ, सार हरी भरी स्यारा पार।
गूल घट, गाड़ वार, उजेला अति भला।
धरण हुणी इनरी शरम, बचूण हुणी याँ को धरम।
करुँला 'राम' अपणा करम, उजेला अति भला।

(८) चेलीकी विनय (कन्याकी विनय)

बूड़ा बरै कणि जन दिया बौज्यू, होलो बड़ो बदनाम।
मनैकी हौस मनैमें रौली, होलो बड़ो बदनाम।
ढेपुवाका लोभमें नी बेचौ चेली, आपणी लै करों फाम।
आपणै खुटन मारि कुल्याड़ी, होलो०
बूड़ा बालै की विधि क्ये लागैली। घरै लागली लाम।

१–२. कविराज रामदत्त पन्त-कृत।

यै बीलै बौज्यू हाथ जोड़नूँ, होलो०
अज्ञान भयूँ शरम लागै, नी कुन्यूँ यै बीलै 'राम'।
चाम समझी बेर दाम नी लियो, होलो०
गोरु कसाई कै चेलि बुढ़ै कणि, बिगाड़नी परनाम।
यै लोकमें लै यै व्योपारै लै, होलो०।
नानी मैं भयूँ ऐलत जै बेर, चुलि फूकणैको काम।
ज्वान जसै हुँलो उ बुड़ीला फिर होलो०।
सौतेली सौतेला न्यार उच्येड़ला, छाल्ला लगै देला घाम।
गौंका कुतकिया टेड़ि आँखि चाला, होलो०।
उमशा सी खाँसी घेगारवाला, बूड़ा बराक ख्वार डाम।
यासा वरै कणि दी बेर चेली, होलो०।
कुथाउन भरि बेर गाड बगै दिया, करि दिया, करि दिया काम तमाम।
बूड़ा बरै कणि तब लै न दिया, होलो बड़ो बदनाम।

परिशिष्ट ५

सांस्कृतिक समझौता

स्वार्थोंके संघर्षोंने आदिकालसे अबतक कितने खूनी नाटक खेले हैं, यह तो इतिहासके पन्ने-पन्नेसे दिख[illegible] देता है। संस्कृतियोंके संघर्षोंने भी उनमें कम उग्रता नहीं दिखलायी है, यद्यपि इस उग्रता में भी स्वार्थ छिपे मालूम होते हैं। इतना अन्तर जरूर है कि संस्कृतिका सुन्दर नाम और सुन्दर वेश जहाँ संघर्षकी बीभत्सताको कम करता है, वहाँ नग्न स्वार्थ अधिक निन्दा और जुगुप्साका पात्र होता है, क्योंकि वह भोग-लिप्साकी तृप्तिका साधनमात्र समझा जाता है। आज अमेरिकाके अरब-पतियोंने यद्यपि अपने विश्वशोषणके मंसूबेमें बाधा जानकर ही कोरियामें युद्ध जारी किया है, किन्तु वह इसे अपनी उच्च सभ्यता-संस्कृतिकी प्रतिरक्षाका प्रयत्न बतलाते हैं। अमेरिका (और गोरी जातियों) की यह सभ्यता कैसी सुन्दर है, जहाँ दो सदियोंसे बसे हब्शी लोग आज भी नर नहीं स्वीकार किये जाते, दक्षिण अफ्रिकामें असली देशवासी ही नहीं, एशियाई भी मानव कहलानेके अधिकारी नहीं।

धार्मिक संघर्ष संस्कृतियोंके संघर्षके ही भेद हैं। अपने शुद्ध रूपमें वह इसलाम-ईसाइयत, हिन्दू-इसलाम, इसलाम-पारसी संघर्षोंके रूपमें भी थी, यह मानना सम्भव नहीं है, क्योंकि अनेक बार धर्मप्रचारकी आड़में भी (भौतिक) स्वार्थ-विस्तारका उपक्रम होते देखा गया है, स्वार्थ-रहित सांस्कृतिक संघर्ष भी कभी-कभी हो जाते हैं, किन्तु ऐसे संघर्षोंको सांस्कृतिक समझौतेसे रोका जा सकता है। अपने आरम्भिक तथा चरम उत्कर्षके कालमें ईसाई तथा मुस्लिम प्रचारकोंने समझौतेका रास्ता नहीं पकड़ा, 'हम भी जीयें, तुम भी जीओ' के सिद्धान्तकी अवहेलना की, जिसके कारण दुनियामें कितने क्रूर काण्ड हुए, इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं है। बौद्ध धर्मने इसलाम या ईसाईसे कम प्रचार नहीं किया, किन्तु उसने संस्कृतियोंका संघर्ष नहीं, समझौतेका पथ स्वीकार किया, जिसके कारण उसने इतिहासके पन्नेको खूनी रंगसे रँगने नहीं दिया और साथ ही सफलता भी उसे किसीसे कम नहीं मिली।

चरम असहिष्णु सांस्कृतिक विचारधाराओंको भी संघर्षके पागलपनसे गुजर कर कितने ही अंशोंमें समझौता करना ही पड़ता है, क्योंकि संघर्ष निरन्तर युगोंतक जारी नहीं रखे जा सकते। हाँ, बहुधा इन समझौतोंको समझौता माननेसे इनकार किया जाता है। ईसाइयतने भी पहिले तथा रोमक देव-देवियोंकी उत्तम कलापूर्ण मूर्तियोंका मुसलमानोंसे कम दिल खोलकर संहार नहीं किया था, किन्तु अन्तमें कलाकी उत्तम प्रतीकके तौरपर इन खण्डित मूर्तियोंके प्रति उनके आजके वंशज अनुयायियोंकी अपार श्रद्धा है। वह अपने मूर्ति-भंजक पूर्वजोंकी असहिष्णुताके लिए अभिमान नहीं, घृणा प्रकट करनेसे बाज नहीं आते। यही बात अफगान और ईरानके आजके मुसलमानोंमें भी देखी जाती है, जो बामियान, परसे-पोलिस (तख्ते-जमशीद) या नक्शे-रुस्तमकी सुन्दर कलाकृतियोंके भग्न कणोंको आँसुओंसे जोड़ते अपने पूर्वज मूर्ति-भंजकोंकी इस बर्बरतासे धरतीमें गड़ेसे जाते हैं। नवीं-दसवीं सदियोंमें जब प्राचीन ग्रीसके ज्ञान-विज्ञानका अरबीमें अनुवाद हुआ, तो उसने उच्च कोटिके मुसलिम मस्तिष्कोंको झुकाया जरूर, किन्तु उतनी ही मात्रामें नहीं, जिसमें कि अरब-अनुवादोंको पढ़कर प्रभावित हुए यूरोपके मस्तिष्कोंको उसने किया। साइंस-युगके आरम्भके साथ तो यूरोपकी रही-सही संकीर्णता भी जाती रही। ईसाइयतकी वह पुराने कालकी संकीर्णता ईसाके उपदेशोंसे अनुप्राणित नहीं कही जा सकती, जब कि वही बात

पैगम्बर मुहम्मदके लिए नहीं कही जा सकती और इसी कारण इसलामकी असहिष्णुता अभीतक बहुत कम कुण्ठित हो पायी। लेकिन कालके सामने उसे भी नतमस्तक होना ही पड़ेगा।

उपर्युक्त कथनका यह अर्थ नहीं लेना चाहिये, कि हिन्दू धर्म और संस्कृति बिलकुल दूधकी धुली चली आ रही है। यदि ऐसा होता तो हमारे देशमें जात-पाँत न होती, हजारों वर्षोंसे मानव-अधिकारोंसे वंचित हमारे भाई अछूत न होते। तो भी यह मानना पड़ेगा कि संस्कृतियोंके संघर्षके समय इसने 'जियो, जीने दो' को बहुत दूरतक माना। यदि इसलामने भी उसे [illegible]पूर्वक माना होता तो शायद भारतके विभाजनकी नौबत ही न आती। किन्तु उस असहिष्णुता[illegible] होते भी क्या समझौता होते नहीं देखा गया? १९१५ ई० में आगरेके पुराने ढंगके [illegible] प्रका[illegible] [illegible] मैंने कुरानका मूल-सहित हिन्दी अनुवाद किया—कारण-वश वह अनुवाद दो सिपारों [illegible] छप सका। अनुवाद करते समय मेरे लिए यह समझना मुश्किल था कि नागरी अक्षरोंमें छपी यह पुस्तक मुसलमानोंके पढ़नेके लिए है। लेकिन कुछ वर्षोंके बाद उसके दूसरे सिपारोंको कानपुरकी हाटमें आसमानके नीचे सूई-कंघियोंके साथ मैंने अपनी आँखोंसे बिकते देखा। यह संस्कृतियोंका समझौता था। कठमुल्ले क्या हिन्दू चिह्नमात्रको भी बर्दाश्त करनेको तैयार होते? आज ३५ वर्षके बाद संस्कृतिके संघर्षकी ज्वालामें जलकर पाकिस्तान भाग गये। एक उत्तरप्रदेशके मुसलमानके १ अगस्त, १९५० को भाईके नाम नागरी-हिन्दीमें भेजे गये पत्रको पढ़िये—

"बखीजमत सरीफ भाई अस तरफ अपना भाईको सलाम और दुवा कबूल करना (।) बाकी अपनी भाबी कै तरफ सै सलाम कबूल करना (।) कैती है कै मेरा सलाम **हात जोड़कर** कबूल करना (।) बाकी भाई जी सब खैरायेत है (।) आपकी खैरीयेत हमैसा खुदासे नैक चाता हुँ (।) खुस रहो सलामत रहो (।) बाकी आप का खत हमको तारीख ३१८७ को मीला (।) पढ़कर दीलको भौत खुसी हुई (।) खुदा आपको बी खुस रखै (।) इस तरै मालूम हुआ कै मेरा भाई··· मेरे पास बैटा है (।) बाकी अगर आपनै बहीनके वासते इस तरै करा है जीस तरह आप लीखते हो कै सब जैजाद बहीनकै नाम करा दीइ है तो भाइ आपने भौत ही अछा कीया (।) मैं इस बातसे भौत खुसी हूँ (।) बड़ा अछा आपने कीया (।) खुदा आपको नैकी देगा (।) बाकी जब आप पाँच दीनकी छुटीपर गये थे तो घर बी गये होंगे (।) बाकी **भाई जी घरका खयाल सबसे पैले रखना** (।) जो कुछ हो अपने छोटे भाईको भी साहारा देना (।) आपको मालूम हो कै **मै कोसीश कर राहा हुँ** (।) **जीनदगी रहैगी तो इनसाअला मुलाकात जरुर होगी** (।) आप कोई तराका खयाल ना करना (।) **ये जुदाई कीसमतकी बात है** (।) लेकीन खुदाये मुकरायान हो कै **हम आप तनदुरस्त रहैंगे तो फीर बी मील जावैंगे** (।) बाकी आप **की भावी तो रातदीन यही कैती है कै चलो घर चलो** (।) **अगर हो सकता हो तो मुझको··· के पास छोड़ आव** (।) इस तरै कैती है (।) सो भाई जी कोई फीकर ना करना (।) **मगर घरका खयाल रखना** (.) **अपनी इजत घर सै है** (।) **और सबको अपनेसे अछा समजो** (।) बाकी गलती माफ हो तो जरा खत लीखनेवाले को मेरा भौत भौत सलाम पौछे (।) **और जरा अपनी हीनदीको साफ लीखें क्यों कै मेरी समजमें बड़ी मुसकील सै आती है** (।) बाकी भाई जी जब आपका काम वहाँ परसै खतम हो जायगा **तो सीदा अपने घरको चलना** (।) **खबरदार इधर उधरका खयाल ना करना** (।) सबर और सूरसे सब कुछ होता है (।)

"फकत सबको मेरा सलाम कैना जो कोई आपके पास मीलने आता होगा (।) और मैंने येक खत देहली भी भेजा है (।) जवाब आनेपर वहाँका हाल लीखूँगा (।) जादा सलाम आपकी (।)"

यह खत सांस्कृतिक समझौतेका जीता-जागता उदाहरण है। सांस्कृतिक संघर्षके परिणाम-स्वरूप उसे पाकिस्तान भागना पड़ा, किन्तु पाकिस्तानी सेंसरकी कोई परवाह न कर वह पत्रको किसीसे उर्दूमें न लिखवाकर हिन्दीमें लिखता है। भाईको भी हिन्दीमें जरा 'समजमें' आने लायक लिखनेको कहता है। भाभीने देवरको 'सलाम हात जोड़कर' भेजते समय ख्याल भी नहीं किया होगा कि वह यहाँ अभिवादनके हिन्दू ढंगको इस्तेमाल कर रही है।

आगेकी पंक्तियाँ कितनी करुणा भरी हैं? पति घर लौटनेकी कोशिश कर रहा है। किस्मत फूटी जो [illegible] अपना वतन छोड़ना पड़ा, किन्तु यही इच्छा है कि फिर मिल जायें। पत्नी तो पाकिस्तान-को [illegible] और [illegible] घर चलो, घर चलो की रट लगाये हुए है। पतिदेव, यदि तुम न चल [illegible] मुझे ही देवरके पास छोड़ आओ, कैसे मासूमाना शब्द हैं! उसे क्या मालूम कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके बीच कितनी बड़ी खाई खुद गयी है। सांस्कृतिक समझौतेके अभावके कारण ही तो ऐसा हुआ? ये सभी भाई हिमालयके नीचे किसी गाँव या कस्बेमें पूर्वजोंकी भाँति सदियोंसे रहते आये थे। अगस्तसे सितम्बरतक मसूरी जैसे पहाड़ी नगरोंके होटलोंमें काम करते, दो पैसा बचाकर अपनी राम-मँड़ैयामें चले जाते, वहाँ बीबी-बच्चे बड़ी आशासे प्रतीक्षा करते रहते। वह अपने पुरखोंके घरका ख्याल रखते थे, क्योंकि 'अपना ईज्जत घरसे है।' हाँ, उसी घरके रहनेसे वह अपनी इज्जतको सुरक्षित समझते थे—या इज्जत बनाये रखनेकी कोशिश करते थे। पाकि-स्तान पराया देश है, यह अब उन्हें मालूम हो रहा है। क्या वे स्वेच्छासे घरसे बेघर हो अपने आशियानेको उजाड़ गये? आज भी उनका हृदय घर लौटनेकी आशामें पागल है। हर तरफ हाथ-पैर मार रहा है कि फिर अपने वतनमें पहुँच जायँ, जबतक ऊँट पहाड़ नहीं देखता तबतक बलबलाता है, छोटे भाईने अभी ठोकर नहीं खाई है, इसलिए बड़ा भाई सावधान कर रहा है कि कामके खतम होते ही सीधे अपने घरको जाना, खबरदार इधर-उधरका ख्याल न करना।

सांस्कृतिक समझौतेका अभाव पाकिस्तान बननेका एक मुख्य कारण हुआ, उसीसे लाखोंको पूरी पीढ़ीभरके लिए बेघर-बारका बनना पड़ा, व्यक्तियोंकी मानसिक अवस्थाका परिचय यह पत्र दे रहा है। पत्र-लेखक जिस गाँव या कस्बेसे भाग कर गया होगा, वहाँ कितना खून बहा होगा, कलके पड़ोसी उस दिनके शत्रुओंने कितनी क्रूरता दिखलायी होगी, किन्तु आज सात खून माफ 'सबको अपनेसे अच्छा समझो', यही तो समझौतेका महामन्त्र है।

महान् अकबरके दिखाये मार्गसे यदि सांस्कृतिक समझौता कर लिया गया होता, तो क्यों देश खण्डित होता? ठीक है, समझौता एकतरफा नहीं होता, किन्तु आज भी भारतमें रह गये तीन करोड़ मुसलमानोंका सुखमय भविष्य उसी समझौतेपर निर्भर करता है। मुसलमान रह पाँच नहीं, दस बार नमाज पढ़ो, किन्तु समझो कि तुम्हारा वतन यहाँ है, तुम्हारा गर्व या लज्जाका अपना इतिहास उसी मिट्टीका इतिहास है, जिसमें तुम्हारी इतनी पीढ़ियाँ गल गईं। यदि सांस्कृतिक समझौतेके लिए तैयार नहीं, तो सारी दुनियाके हजारों वर्षोंके कोढ़को दूर फेंकनेवाले साम्यवादसे ही अच्छे दिनोंकी आशा हो सकती है, यदि उसमें देर लगी, तो अपनेको बारूदकी ढेरपर खड़ा समझो। तब तो बेहतर यही है कि आबादीका शान्तिपूर्ण अदला-बदला हो जाये। यदि नामके बदल देनेभरसे सन्तुष्ट नहीं, यदि पाकिस्तान पुरानी हिन्दी संस्कृतिके साथ भी कोई नाता नहीं रखना चाहता और वह सांस्कृतिक क्षेत्रमें दक्षिण अफ्रीकाकी नीति वर्तना चाहता है, तो हजार समझौतेके बाद भी पूर्वी पाकिस्तानमें बच रहे हिन्दुओंका वहाँ रहना सम्भव नहीं है। और यदि वहाँसे सारे एक करोड़ हिन्दू निकले तो जबर्दस्त आर्थिक प्रश्न—जो जीवन-मरणका भी प्रश्न है—उठ खड़ा होगा, वह प्रश्न तो सहृदय मानवको वज्रसे भी कठोर बना

देता है। पाकिस्तानसे आनेवाला प्रति पाँच व्यक्ति एक टन अर्थात् एक करोड़ आदमी बीस लाख टन वार्षिक अनाजके खर्चका बोझ रखकर हमारी नैयाको बोझिल बनायेगा। ऐसे ही पिछले साल चालीस लाख टनका टोटा रहा, जिसे ५० लाखकी सालाना जनवृद्धि १० लाख टनके हिसाबसे प्रतिवर्ष बढ़ा रहा है। 'अधिक अन्न उपजाओं'के नारे तथा बहुत-सी कागजी योजनाएँ आज कितनी थोथी हैं, इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं। फिर देश इच्छा करके भी कैसे एकतरफा आयात—पाकिस्तानसे सारे हिन्दुओंको निकल आने—को बर्दास्त कर सकेगा [illegible] प्रतिक्रिया भारतमें बच रहे मुसलमानोंके लिए बुरी होगी।